अंक 16, अप्रैल 2022

भारती मंडन

मैथिलीक बहुआयामी लेखनक अनियतकालीन पत्रिका



























संपादक

केदार कानन

भारती मंडन : युवा साहित्यकार विशेषांक

कहल जाइत छैक जे कोनो भाषा-साहित्यक उत्कृष्टता देखबाक हुअय, तँ ओहि भाषा-साहित्यक युवा रचनाशीलता कें देखू। कियैक तँ युवा रचनाकार लग ओ आगि होइत अछि, ओ ऊर्जा होइत अछि जे साहित्यक असली चमक सँ परिचय करबैत अछि। बहुत दिन सँ मैथिलीक कोनो पत्रिकामे युवा रचनाकारक टटका रचना पर केंद्रित कोनो विशेषांक नहि बहरायल अछि, तें भारती मंडन परिवार युवा साहित्यकार विशेषांक निकालबाक नेयार कयलक अछि। एहिमे युवा रचनाकारक भूमिका सबसँ महत्वपूर्ण अछि, कियैक तँ हुनके सभक रचनाक बदौलति ई विशेषांक संभव भ' सकत। ओना तँ अस्सी बरखक बुजुर्गो अपन रचनात्मक सक्रियता, तेवर आ मिजाज सँ युवा कहा सकैत छथि आ 35 बरखक नौजवान सेहो अपन सोच-विचारमे बुढ़ायल प्रतीत भ' सकैत अछि। तें एहि विशेषांक लेल संभावित युवा रचनाकार सभक अधिकतम आयु 45 वर्ष राखल गेल अछि।

—45 वर्ष सँ कम उम्रक रचनाकार सभ सँ जुलाइ 2022 धरि मेल पर रचना पठेबाक आग्रह।

—रचनाक रूपमे कथा, कविता, आलेख, ललित निबंध, व्यंग्य रचना, पुस्तक चर्चा, उपन्यास अंश, लघुकथा, गीत, गजल आदि पठाओल जा सकैत अछि।

—कथा, उपन्यास अंश क शब्द-सीमा 2500 सँ 3,000 शब्द अछि। पुस्तक चर्चा, व्यंग्य, ललित निबंधक शब्द सीमा 1000 सँ 15,00 शब्द अछि। —कवि लोकनि अपन उत्कृष्ट पांच कविता पठाबी, जरूरी नहि अछि जे सब कविता प्रकाशित होयत।

—रचनाक गुणवत्ते रचना प्रकाशनक गारंटी होयत। जरूरी नहि जे सभ प्राप्त रचना प्रकाशित कयले जायत। हँ, उत्कृष्ट रचना कें पत्रिकामे स्थान देब पत्रिका परिवार लेल गौरवक बात होयत।

—कृपया अपन रचनाक संग अपन फोटो, पता, परिचय, फोन नंबर आदि जरूर पठाबी।

एहि विशेषांक में युवा सृजनशीलता पर वरिष्ठ रचनाकार द्वारा विशेष आलेख सेहो प्रकाशित कयल जायत।

1. युवा कथाकार सभक कथा-रचना पर-अशोक
2. युवा कवि सभक काव्य रचना पर-कमलानंद झा
3. युवा रचनाकार सभक किछु महत्वपूर्ण पोथीक चर्चा

एकर अलावे पत्रिकाक सभ स्थायी स्तंभ सेहो रहत। उम्मीद अछि युवा रचनाकारक रचनात्मक ऊर्जा सँ ई विशेषांक उल्लेखनीय होयत।

भारती मंडन

मैथिलीक बहुआयामी लेखनक अनियतकालीन पत्रिका

सहलहुँ बहुत सहब नहि आबहु मैथिलीक दुर्गंजन
अनलहुँ मातृ भारती-मण्डित अपन भारती मंडन
अछि आशा अपने तन-मन-धनसँ एकरा स्वीकारब
पड़ल नाह मझधार मैथिलिक मिलिजुलि पार उतारब

संस्थापक-सह-प्रबंधक
तारानन्द झा 'तरुण'

सम्पादक
केदार कानन

सम्पादन सहयोग
सुस्मिता पाठक
अखिल आनन्द

प्रकाशक
कामाख्या-झिंगुर साहित्य कला परिषद, मलाढ़
एवं
किसुन संकल्प लोक, सुपौल

भारती मंडन : अंक-16/नवक्रमांक-04 (अप्रील 2022)
संपादन/संचालन/प्रकाशन : अवैतनिक/अव्यावसायिक/अनियतकालीन
(एहि अंकमे व्यक्त विचार लेखकक थिक। एहिसँ सम्पादकीय सहमति आवश्यक नहि। विवाद लेल न्यायालय क्षेत्र, सुपौल)
संस्थापक-सह-प्रबंधक : तारानन्द झा 'तरुण'
मुख्य संरक्षक : चन्द्रमोहन कर्ण
संस्थापक सदस्य : बाबा वैद्यनाथ
: गंगा प्रसाद साह
: चन्द्रशेखर झा
सलाहकार : डा. सुभाषचन्द्र यादव, डा. महेन्द्र, डा. तारानन्द वियोगी, डा. नवीन कुमार दास, रमण कुमार सिंह
प्रबन्धन सहयोग : सतंजीव सुमन, अभुआड़
सम्पादक : केदार कानन
email : kedarkanan3@gmail.com
सम्पादन-सहयोग : सुस्मिता पाठक, अखिल आनन्द
आवरण पर चित्र : पहिल पंक्ति मे ऊपर सँ नीचाँ
चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', जितेन्द्र नारायण झा
रामचन्द्र मिश्र 'मधुकर', राजनन्दन लाल दास
दोसर पंक्ति मे–डा. विश्वेश्वर मिश्र, डा. रामदेव झा
श्रीमती लिलीरे, नाजिम रिजवी
तेसर पंक्ति मे–रामलोचन ठाकुर, सुकान्त सोम
श्याम दरिहरे, प्रणव नार्मदेय
आवरण : Prida Creations
email : pridacreations@gmail.com
प्रकाशक : कामाख्या झिंगुर साहित्य कला परिषद, मलाढ़ एवं किसुन संकल्प लोक, सुपौल
मुद्रक : आर.के. ऑफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
टंकण : मनीषा कुमारी, किराड़ी, दिल्ली, मो. 7011503212
ले-आउट : हर्ष कंप्यूटर्स, किराड़ी, दिल्ली, मो. 9910024837
सम्पादकीय सम्पर्क : किसुन कुटीर, गुदरी बाजार, सुपौल–852131, बिहार मो. 7004917511/7542043991/9471062706
प्रबंधकीय सम्पर्क : तरुण निकेतन, मलाढ़–852138, थरबिट्टा, सुपौल (बिहार) मो. 9006292627, 9507633641
एहि अंकक सहयोग राशि :160/- (एक सय साठि) टाका मात्र

रचना क्रम



अपन बात

सम्माननीय सहभागीजन एवं पाठक-वृन्द।

नव वर्षक पूर्वार्द्ध मे भारती मंडनक सोलहम अंकक संग उपस्थित छी। विगत अंकक अपेक्षा ई अंक ससमय प्रकाशित भ' सकल, तकर प्रसन्नता अछि।

एहि अंक सँ दू गोट आजीवन सदस्य पत्रिकाक निरन्तरता लेल नव योजनाक अनुरूप फेरसँ अपन सहयोग देलनि। ओ छथि सरायगढ़, भपटियाही सँ श्री सम्पत्ति कुमार यादवजी एवं ड्यौढ़ (घोघरडीहा) सँ श्री अरुण कुमार झाजी। हुनक एहि उदात्त सहयोग लेल आभारी छी। एकर अतिरिक्त अंक 13 सँ वित्त संपोषक बननिहार सदस्य मे सँ किछु व्यक्ति पत्रिकाक प्रत्येक अंक मे अपन सहभागिता बनौने रखबाक लेल एहि अंक सँ प्रस्तावित मानद वित्त संपोषक सम्बन्धी योजना मे सम्मिलित भेलाह। ओ छथि नवानी सँ श्री प्रवीण भारद्वाज, पुरी सँ डा. उदयनाथ झा 'अशोक', पटना सँ श्री धीरेन्द्र मोहन झा एवं हैदाबाद सँ श्री स्वप्निल सौरभ (दीपक)। सहयोगक लेल अनेक आभार।

क्षेत्रीय प्रतिनिधि लोकनिक सहयोग महत्वपूर्ण अछि। दरभंगा सँ श्री हीरेन्द्र कुमार झा जी पन्द्रहम अंकक समूल्य वितरण मे जाहि उत्साहक संग सहयोग देलनि अछि, से हुनकहि सँ संभव।

विश्वम्भर फाउण्डेशन, रांचीक कर्त्ता-धर्त्ता श्री नवीन कुमार झाजीक प्रति आभार जे अंक 15-16 लेल संस्थाक विज्ञापन देलनि।

हिनका लोकनिक अतिरिक्त पत्रिकाक प्रकाशन मे आर्थिक सहयोगक विभिन्न योजना सँ फराक रहि एहि बेर पटना सँ श्री नागेशचन्द्र मिश्र जी 15,000/- टाका, इलाहाबाद सँ प्रो. डा. मीना कुमारी 2,000/- टाका, बड़ोदरा सँ श्री संजीव कुमार झाजी 1,100/- टाका, दिल्ली सँ श्री शुभेन्दु शेखर जी 1,000/- टाका संगहि डा. श्रीधरमजी 1,000/- टाकाक सहयोग द' अपन उदारताक परिचय जाहि रूपें देलनि, से महत्वपूर्ण अछि।

मैथिलीक अनेक साहित्यकारक अतिरिक्त पत्रिकाक विशिष्ट वित्तीय सहभागी जीवानन्द मिश्र (बलुआ) आ विनय कुमार यादव (महीपट्टी)क आकस्मिक निधन सँ पत्रिका परिवार मर्माहत अछि। विनम्र श्रद्धांजलि।

अंतमे पत्रिकाक समस्त संपोषक आ सहभागीक संग पाठक लोकनि सँ विशेष आग्रह जे स्नेह-सहयोगक प्रांजल प्रवाह बनौने राखथि आ अपन अमूल्य सुझाव ओ प्रतिक्रिया पठा मार्गदर्शन करथि।

तारानन्द झा 'तरुण'
संस्थापक-सह-प्रबंधक
भारती मंडन



हस्तक्षेप

हम सब वचनबद्ध रही जे एहि अंक मे मिथिलांकक हिंदी अंश प्रकाशित करब। दोसर दिस अनेक रचनाक घोषणा सेहो कयने रही। कुल मिला क' साढ़े छओ सौ पृष्ठक पत्रिका तैयार भ' गेल। एतेक विराट स्वरूपक पत्रिका कें डाक द्वारा पठायब मोसकिल छल आ प्रकाशनक बजट से भारी भ' गेल। तें एहि अंकमे, अंतिम समय मे मिथिलांकक हिंदी अंश कें स्थगित करय पड़ल। आब अगिला अंक मे ओकर आ घोषित 'युवा विशेषांक'–ई दुनू सामग्री आबि सकत। किछु आत्मीय आ मिथिलांकक हिंदी अंश कें देखबाक अभिलाषी पाठक लोकनि सँ व्यतिरेक लेल तत्काल क्षमाप्रार्थी छी। एहि बर्खक अंतधरि अगिला अंक प्रकाशित करबाक प्रयास रहत।

विभूतिगाथाक अन्तर्गत एहि बेर अत्यन्त परिश्रमसँ डा. कीर्तिनाथ झा पं. काशीनाथ झा का.ती. पर सामग्री तैयार कयलनि अछि। हमरा बुझने एहि विरल, अन्हारमे हेरायल, परम तेजस्वी रचनाकार पर पहिल बेर एतेक महत्वपूर्ण सामग्री आबि रहल अछि। हिनका विषयमे अनेक नव तथ्यक उद्घाटन-विवेचन एहि लेखमे भेटत। एहि लेख लेल डा. झाक प्रति आभारी छी।

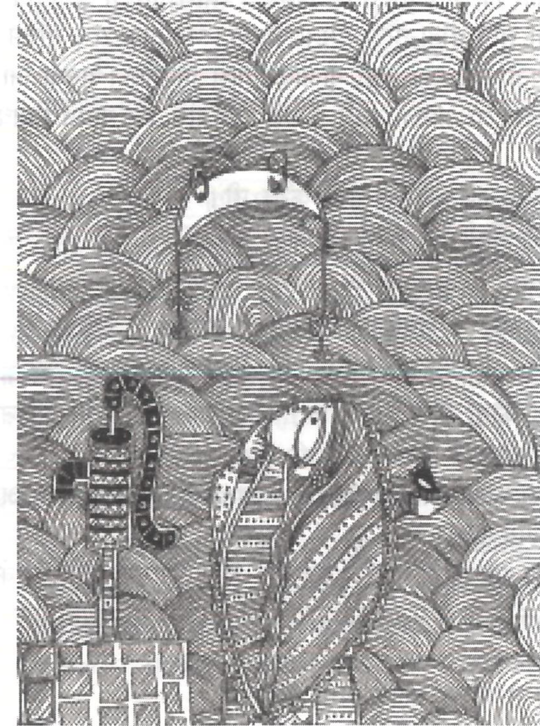
आने अंक जकाँ एहू अंक मे विशिष्ट सामग्री सभक प्रकाशन भ' रहल अछि। 'अयना'क अन्तर्गत स्वनामधन्य अमरजी, राजमोहनजी आ रामदेव बाबू पर सारगर्भित आ उल्लेखनीय लेख अछि तँ विविधा मे शोभाकांत बाबा यात्रीक जीवनक महत्वपूर्ण पक्ष कें सोझाँ अनलनि अछि। तहिना डा. उदयनाथ झा 'अशोक' सरिसव गामक ऐतिहासिक परिचय देलनि अछि। गायक चूड़ामणि पं. रघू झा पर एतेक विस्तृत लेख मैथिलीमे पहिल बेर आबि रहल अछि, तँ पं. राजेश्वर झा आ डा. जयकान्त मिश्र पर अत्यन्त आत्मीयतासँ कथाकार अमरनाथ झा आ आचार्य डा. किशोरनाथ झा लिखलनि अछि। शेखरजी, राजेश्वर बाबू आ कुलानन्द मिश्रक साक्षात्कार एहि अंकक विशिष्ट आकर्षण थिक, जे डा. भीमनाथ झा उपलब्ध करौलनि अछि। स्मरणीय जे शेखरजीक ई जन्मशती वर्ष सेहो थिक।

हरिमोहन झाक कथाक अतिरिक्त नौ गोट कथा, अनेक कविता, व्यंग्य, ललित निबंध, भाषान्तर, लघुकथा, अबैत लोक, धीयापूता, समांग आदिक संग भारती मंडन पुष्ट कलेवर मे अपनेक हाथमे अछि। डा. कमलानन्द झा एहि अंकमे चारि गोट समर्थ कथाकारक संग्रह पर विचार कयलनि अछि।

–केदार कानन

दिवंगत रचनाकार सभक प्रति श्रद्धांजलि

एहि बीच योगमाया झा (23.12.2020), डा. योगानन्द सुधीर (17.01.2021), प्रणव नार्मदेय (18.01.21), डा. उमारमण झा (28.01.21), रुद्रकांत पाठक (06.03.21), धर्मनाथ झा (08.03.21), डा. रामदेव झा (18.03.21), पं. चन्द्रनाथ मिश्र अमर (01.04.21), रामलोचन ठाकुर (05.04.21), जितेन्द्र नारायण झा (26.04.21), सुकान्त सोम (30.04.21), डा. नबोनाथ झा (09.05.21), ई. नमोनाथ झा (14.05.21), कामेन्द्रनाथ झा अमल (17.05.21), डा. धीरेन्द्र कुमार झा (16.05.21), नाजिम रिजवी (23.05.21), डा. विश्वेश्वर मिश्र (24.05.21), श्याम दरिहरे (25.06.21), राजनन्दन लाल दास (04.07.21), डा. उमाकान्त (06.01.22), रामचन्द्र मिश्र मधुकर (26.01.22), श्रीमती लिली रे (03.02.22) एवं मुरारि मधुसूदन ठाकुर (22.02.22) हमरा सभकें छोड़ि विदा भ' गेलाह। पत्रिका परिवार हिनकालोकनिक प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित करैत अछि।





हरिमोहन कथाधारा

मैथिलीक पाठक लेल हरिमोहन झाक कथा सहजहि उपलब्ध नहि, तें प्रत्येक अंकमे हुनक एक कथा देल जाइत अछि। एहि अंकमे हुनक कथा 'पुराणक चाशनी' प्रस्तुत अछि, जे बहुत पुरान कथा थिक, जाहिमे ओ अपन तर्कसँ, वैदुष्यसँ कतेको धारणाकें खंडित करैत छथि।

पुराणक चाशनी

हरिमोहन झा

खट्टर कका पुराण देखैत रहथि। हमरा देखि पुछलनि—हौ, कोम्हर जाइ छह?

हम कहलिऐन्ह—ब्रह्मस्थान पर भागवत भ' रहल छैक।

खट्टर कका बजलाह—तखन महा अनर्थ भ' रहल छैक।

हम—से किऐक, खट्टर कका?

खट्टर कका—हौ, भागवत सुनने गामक स्त्रीगण दूरि भ' जाएत। चीर-हरण ओ रासलीलाक कथा सुनि छौंड़ा-छौंड़ी उमता जाएत। नवयुवक सभ रातिमे सीटी बजबैत चलताह। नवयुवती सभ घाटे बाटे बौआएल भेल फिरतीह। यमुना ओ वृंदावन नहि छैक तैं की? पोखरि ओ आमक गाछी त छैक। हौ बाबू, हम गाममे भागवत नहि होमय देबोह।

हम—खट्टर कका, अहाँ त हँसी करैत छी।

खट्टर कका—हँसी की करैत छिऔह? देखह,

ता वार्यमाणाः पितृभिः पतिभिर्भ्रातृभिस्तथा,
कृष्णं गोपांगनाः रात्रौ रमयन्ति रतिप्रिया।

बाप, भाइ, स्वामी, मने करैत रहि जाथिन्ह ता गोपी लोकनि रास करक हेतु बहरा जाथि। कहह, ई कोनो नीक बात थीक? जौं गामक बेटी-पुतोहु एहिना करय लागि जाय, तखन कोन उपाय हैत?

हम—खट्टर कका, किछु विद्वानक कथ्य छैन्ह जे चीर-हरण ओ रासलीलाक आध्यात्मिक तात्पर्य छैक।

खट्टर कका भङ्गघोंटना पटकैत बजलाह—हमरा परतारह जुनि। ई केश रौदमे नहि पाकल अछि। हम अठारहो पुराण धाङ्गि गेल छी। एखनो ब्रह्मवैवर्त्तपुराण आगाँमे राखल अछि।

हम—एहिमे त केवल ब्रह्मक चर्चा हैतैन्हि?

खट्टर कका भभाक' हँसि पड़लाह। कृष्णजन्म खंड उनटबैत बजलाह—अगुताइ त नै छौह? तखन बैसि जाह। चीर-हरणक कोना वर्णन छैक से देखह। गोपी सभ यमुना-जलमे नग्न ठाढ़ि छथि। भगवान सभक वस्त्रहरण कैने कदम्ब वृक्ष परसँ कहै छथिन्ह—

भो भो गोपालिकाः नग्नाः इदानीं कि करिष्यथ?

ऐ नग्न गोपीगण? आब अहाँ लोकनि की करैत जाएब? तखन राधा सखी सभकें कहैत छथि जे चलू, एहि छैलाकें बान्हि क'ल' अनै जाउ।

बस,

सर्वा राधाज्ञया तूर्ण समुत्थाय जलात् क्रुधा।
प्रजग्मुर्गोपिकः नग्ना योनिमाच्छाद्य पाणिना।।

युवतीक दल हाथसँ आधोभागकें झँपने चलल हुनका पकड़य! परंतु वृंदावन-विहारी तँ एहि फौजक सामना करय लेल तैयारे छलाह। रभसैत कहलथिन—

युष्माकमीश्वरी राधा किं करिष्यति मेऽधुना

अहाँ सभक लीडरानी राधा हमर की क' लैत छथि से देखैत छिऐन!

ई सुनितहिं राधाक क्रोध काममे परिणत भ' गेलैन्ह।

श्रुत्वा जहस सा राधा बभूव कामपीडिता।

और तकरा बाद त सभ गोपिका मिलि कय—

नग्नाः क्रीड़ाभिरासक्ताः श्रीकृष्णार्पितमानसाः।

भगवानक इच्छा पूर्ण भेलनि। गोपी सभक इच्छा पूर्ण भैलैन्ह। और कथा सुननिहार युवती लोकनिक इच्छा सेहो पूर्ण होउन्ह, ताहि हेतु पुराणकर्त्ता अशीर्वाद दैत छथिन्हे—

भक्त्या कुमारी स्तोत्रं च शृणुयात् वत्सरं यदि।
श्रीकृष्णसदृशं कांतं गुणवंतं लभेत् ध्रुवम्।।

अर्थात् यदि कुमारी लोकनि भक्तिपूर्वक सालो भरि ई स्तोत्र सुनथि त निश्चय श्रीकृष्ण सन रसिया केओ भेटिए जइथिन्ह!

हम—खट्टर कका, रासलीलाक किछु दोसरे अभिप्राय हैतैक।

खट्टर कका बजलाह—तखन कनेक ओकरो चाशनी चाखि लैह।

पुनः प्रजग्मुस्ता मत्ताः सुंदरं रासमंडलम्,
पूर्णेन्दुचंद्रिकायुक्तं रतियोग्यं सुनिर्जनम्।
काश्चिदूचुरहो कृष्ण स्वक्रोडेऽस्मांश्च कुर्विति।
गृहीत्वा श्रीहरेः स्कंधमारुरोह च कांचन।

काचिज्जग्राह मुरलीं बलादाकृत्य माधवम्।
जहार पीतवसनं कृत्वा नग्नं च कामिनी।
उवाच काचित् प्रेम्णा तं गंडयोः स्तनयोर्मम,
नाना-चित्र-विचित्राभ्यां कुरु पत्रावलीमिति।

पूर्णिमाक राति। यमुनाक तीर। एकांत स्थान। गोपीगण निःसंकोच भय केलि करैत छथि। केओ भगवानक मुरली छीनि लैत छथिन। केओ पीतांबर फोलि लैत छथिन। केओ फानि क' कोरमे चढ़ि जाइत छथिन। केओ छड़पि क' कन्हा पर सवार भ' जाइत छथिन। सभ मिलि क' चरोबरो क' लैत छथिन। केओ कहै छथिन जे हमरा गालमे दाँत काटू। केओ कहै छथिन जे हमरा स्तनमे चेन्ह क' दिय।...हौ, ई पुराणकार लोकनि रसिक-शिरोमणि छलाह। खट्टर कका आगाँ बाचय लगलाह–

काचित् कामातुरा कृष्णं बलादाकृष्य कौतुकात्।
हस्ताद्वंशीं निजग्राह वसनं च चकर्ष ह।
काचित् कामप्रमत्ता च नग्नं कृत्वा तु माधवम्।
निजग्राह पीतवस्त्रं परिहास्य पुनर्ददौ।
चुचुम्ब गंडे बिम्बोष्ठे समाश्लिष्य पुनः पुनः
सस्मितं संकटाक्षं च मुखचंद्रं स्तनोन्नतम्
कांचित् कांचित् समाकृष्य नग्नां कृत्वातु कामतः।
कांचिच्छ्रोणं सुललितां दर्शयामास कामतः।

हम–खट्टर कका, कनेक अर्थ बुझा क' कहिऔक।

खट्टर कका–हौ, की कहिऔह? युवती-गण कामोन्मत्ता भय लज्जा छोड़ि दैत छथि! केओ भगवानकें नग्न कय अपना दिस खीचि लैत छथिन्ह। केओ गाल ओ ठोरमे चुम्मा लैत छथिन। केओ अपना छातीमे सटा लैत छथिन। केओ अपन अंग खोलि क' समर्पित क' दैत छथिन्ह। केओ अपना सखीकें नग्न कय भगवान पर ठेलि दैत छथिन्ह।... हौ, गामक छौंड़ी सभ एहन एहन कथा सुनति त मर्यादाक बंधन राखति?

हम–खट्टर कका, भगवान युवती सभकें डँटलथिन किएक नहि?

खट्टर कका बजलाह–हौ, डटने होइतैन्ह की? मदमत्ता युवती ओ धार नदीक जखन एक बेर बाँध तोड़ि दैत अछि तखन ओकर प्रवाह के रोकि सकै अछि! भगवानो अवग्रहमे पड़ि गेलाह। ई एकसर बालक, ओम्हर ओतेक रासे तरुणी! सभक इच्छा एके बेर कोना पूर्ण होइन्ह! अगत्या भगवानकें नाना रूप धारण कय सभसँ मंडलाकार भोग करय पड़लैन्ह।

कामिनीनां मनोहारि नानामूर्त्तिं विधाय च, रेम गोपांगनाभिश्च सुरम्ये रासमंडले अगैरंगानि प्रत्यगैः प्रत्यंगानि स्मरातुरः, चकाराश्लेषणं तत्र कामुकीनां सुखावहम्।

हौ, हमरा त बूझि पड़ै अछि जे एही रास-चक्रसँ भैरवी चक्रक उत्पत्ति भेल अछि।

हम–खट्टर कका, कतेको संप्रदाय रासलीलाक दोसरे व्याख्या करैत छथि।

खट्टर कका व्यंग्य पूर्वक बजलाह–हँ। जेना वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति। तहिना पौराणिको व्यभिचारो व्यभिचारो न भवति। हौ, तोरा बूझि पड़ैत छौह जे रासक्रीड़ामे योगाभ्यास होइत छल?

हम–परंतु योगीश्वर कृष्ण स्वयं त अविचलित रहैत छलाह?

खट्टर कका बजलाह–तखन देखह जे योगीश्वर केहन भोगीश्वर छलाह!

कृष्णः कररुहाघातं ददौ तासां कुचोपरि।
श्रोणीदेशे सुकठिने नखचित्रं चकार ह।।
आलिंगनं नवविधं चुम्बनाष्टविधं मुदा।
श्रृंगारं षोडशविधं चकार रसिकेश्वरः।।

आब एहिसँ बेसी की होइ छैक?

हम कहलिएनि–खट्टर कका, ओ प्रेम शारीरिक नहि छलैन्ह।

खट्टर कका बजलाह–तों ओना नहि बुझबह। तखन और खोलिक' सुनह–

जगाम राधया सार्द्धं रसिको रतिमंदिरम्।
सुष्वाप राधया सार्द्धं रतितल्पे मनोहरे।।
कृष्णो राधां समाकृष्य वासयामास वक्षसि।
श्रोणी देशे च स्तनर्योनखच्छिद्रं चकार ह।

आबो मनमे संदेह छौह?

हम–परंतु...

खट्टर कका बजलाह–तोरा एखन धरि मन नहि भरलौह अछि। तखन और देखह। स्थलक्रीड़ाक बाद कोना जलक्रीड़ा होइ छैन्ह!

स्थले रतिरसं कृत्वा जगाम यमुनाजलम्, वस्त्रं जग्राह तस्याश्च सा च नग्ना बभूव ह तां, च नग्नां समाश्लिष्य निममज्ज जले हरिः सा वेगेन समुत्थाय बलाज्जग्राह माधवम् उत्थाय माधवः शीघ्रं तां गृहीत्वा प्रहस्य च, कृत्वा वक्षसि नग्नां च चुचुम्ब च पुनः पुनः।

हौ, एहन उन्मत्त विहार होइ अछि। और तथापि तोरा होइ छौह जे ओ भोग नहि, योग छल। हाय रे कर्म!

हम–परंतु...

खट्टर कका डँटैत बजलाह–राउत बुझाबय से मर्द। एतबा रासे कहि गेलिऔह तथापि तों 'परंतु' लगबितहि छह? तखन और नीक जकाँ कान खोलि क' सुनि लैह–

माधवो राधया सार्द्धमन्तर्धानं चकार ह, अतीव निर्जने स्थाने भृशं रेमे तया सह विलुप्तवेशां कामार्त्ता नग्नां शिथिल-कुन्तलाम्, गंडयोः स्तनयोश्चित्रं चकार मधुसूदनः एवं रेमे कौतुकेन कामात् त्रिंशत् दिवानिशिम्, तथापि मानसं पूर्णे न किंचित् बभूव ह।

लगातार तीस दिन तीस राति धरि रमण होइत रहलैन्ह, तथापि दूनू गोटाक मन नहि भरलैन्ह। ओ दृश्य देखबाक हेतु आकाशमे देवी-देवताक मेला लागि गेलैन्ह। देवता लोकनि विस्मय-विमुग्ध भ' गेलाह। देवी लोकनि सौतिया डाहसँ जरि गेलीह। पुराणकर्त्ता ओहि पर टिप्पणी करैत छथि—

न कामिनीनां कामश्च श्रृंगारेण निवर्त्तते अधिकं वर्द्धते शश्वत् यथाग्निर्घृत-धारया।

जेना घृतक धारसँ अग्निक ज्वाला शांत नहि होइ छैन्ह तहिना संभोगसँ कामिनीक तृप्ति नहि होइ छैन्ह।...आबो तोहर संदेश दूर भेलौह कि नहि?

हम कहलिऐन—खट्टर कका, पुराण-कर्त्ता लोकनि राधाकृष्णक एहन नग्न चित्रण किऐक कैने छथिन्ह?

खट्टर कका बजलाह—हौ, एहन एहन वर्णन नहि दितथिन त श्रोतागणकें रस कोना भेटितैन्ह? तैं सभ देवी-देवताक संभोग-वर्णन छैन्ह। चाहे राधा-कृष्ण होथि वा शिव-पार्वती। एही द्वारे पुराणक एतेक प्रचार छैक।

हम कहलिऐन—खट्टर कका, शिव-पार्वतीक एना वर्णन नहि हैतैन्ह।

खट्टर कका बिहुँसैत बजलाह—तखन 'गणपति-खंड' देखह जे कोना वर्णन छैन्ह—

तां गृहीत्वा महादेवो जगाम निर्जनं वनम् शय्यां रतिकरीं कृत्वा पुष्पचंदन-चर्चिताम् स रेमे नर्मदा-तीरे पुष्पोद्याने तया सह सहस्रवर्ष-पर्यन्तं देवमानेन नारद! तयोर्बभूव श्रृंगारं विपरीतादिकं परम्, रतो रतश्च निश्चेष्टो न योगी विरराम ह।

देवताक वर्षसँ सहस्र वर्ष धरि लगातार शिव-पार्वतीक संभोग होइत रहलैन्ह! तथापि शिवजी स्खलित नहि भेलाह। तखन विष्णु भगवानकें चिंता भेलैन। ओ ब्रह्माकें आज्ञा देलथिन—

येनोपायेन तद्वीर्य भूमौ पतति निश्चितम् तत कुरुष्व प्रयत्नेन सार्द्ध देवगणेन च।

अहाँ देवता सभक संग जाउ और तेहन उपाय करू जाहिसँ शिवजीक वीर्य भूमि पर स्खलित भ' जाइन्ह। तखन इंद्र, चंद्र, सूर्य, पवन आदि देवता ओहिठाम जा शिवजीक स्तुति करय लगलथिन। एहिसँ शिवजीक रति-समाधि भंग भ' गेलैन्ह।

विजहौ सुख-संभोगं कंठलग्नां च पार्वतीम्
उत्तिष्ठतो महेशस्य त्रस्तस्य लज्जितस्य च
भूमौ पपात तद्वीर्य ततः स्कंदो बभूव ह।

शिवजी लज्जित भय पार्वतीकें छोड़ि देलथिन्ह और जहिना उठय लगलाह कि नीचा भूमि पर वीर्य खसि पड़लैन्ह। ताहीसँ कार्तिकेय प्रकट भ' गेलाह।

देवता लोकनि पार्वतीक भयसँ पड़ैलाह तथापि पार्वती शाप दइए देलथीन—

अद्य प्रभृति ते देवा व्यर्थवीर्या भवन्तिवति।

हे देवतागण! आइसँ अहाँ लोकनिक वीर्य व्यर्थ भ' जाएत... ।...हौ, स्वाइत देवता लोकनि असुर सभसँ हारैत छलाह!

हम पुछलिऐन—पार्वती रुष्ट किऐक भेलथिन्ह?

खट्टर कका क्षुब्ध होइत बजलाह—तोरा सात वर्ष विवाह भेना भेलौह। तथापि एतबा अनुभव नहि भेल छौह? देखह, पार्वती स्वयं ई रहस्य अपना मुहै खोलि क' महादेवकें कहैत छथिन्ह—

रतिभंगो दुःखमेकं द्वितीयं वीर्यपातनम् रतिभंगेन यद्दुःखं तत्समं नास्ति च स्त्रियाः।

अर्थात् जौं संभोग-कार्यक बीचेमे बाधा पड़ि जाइक किंवा पुरुषक वीर्य अन्यत्र स्खलित भ' जाइक, त एहिसँ बाढ़ि दुःख स्त्रीक हेतु दोसर नहि भ' सकैत छैक।

तखन महादेवजी बहुत तरहें हुनका मनबैत छथिन और पुनः दोसर संभोगक रचना होइछ।

रहसि स्वामिना सार्द्धं सुष्वाप परमेश्वरी, कैलासस्यैकदेशे च रम्ये चंदनकानने।

परंतु—

रेतः पतनकाले च स विष्णुर्विष्णुमायया विधाय विप्ररूपं तु आजगाम रतेर्गृहम्।

जहाँ फेर स्खलित हैबाक बेर अबै छैन्ह कि विष्णु भगवान् विप्रक रूप धारण कय ओहिठाम पहुँचि जाइ छथिन्ह और कहै छथिन्ह जे हम सात साँझक उपासल छी; पारण कराउ। ई सुनि—

उत्तस्थौ पार्वती त्रस्ता सूक्ष्मवस्त्रं विधाय च

पार्वती झटपट देह पर नूआ रखैत उठि जाइ छथि। और—

पपात वीर्यं शय्यायां न योनौ प्रकृतेस्तदा।

शिवजीक वीर्य ओछाओन पर चुबि जाइत छैन्ह। ओही वीर्यसँ गणेशक जन्म छैन्ह।

हमरा मुँह तकैत देखि खट्टर कका बजलाह—एहि कथाक तात्पर्य बुझलहौक? जौं संभोगो काल ब्राह्मण आबि जाथि त चटपट उठि क' पहिने हुनका भोजन कराबक चाही। धन्य छथि ई पेटू देवता!

खट्टर कका मुसकुरा उठलाह। बजलाह—गणेशकें लोक विघ्नेश कहौन्ह। परंतु हुनक अपने जीवन विघ्नसँ भरल छैन्ह। एक तँ गर्भाधानेमे विघ्न भ' गेलैन्ह। दोसर

जनमितहिं शनिक दृष्टि पड़ि गेलैन्ह। मस्तक कटा गेलैन्ह तँ गजानन भ' गेलाह। एकटा दाँत टूटि गेलैन्ह त एकदंत बनि गेलाह।

हम—एकटा दाँत कोना टूटि गेलैन्ह?

खट्टर कका कहय लगलाह—हौ, एक बेर शिव-पार्वती एकांत कर्ममे संलग्न रहथि। गणेश द्वारपाल भ'क' ठाढ़ रहथिन। ओही बीचमे परशुराम शिव-पार्वतीकें प्रणाम करक हेतु पहुँचि गेलथिन्ह। गणेश रोकि देलथिन्ह जे—

क्षणं तिष्ठाऽधुना भ्रातः ईश्वरः सुरतोन्मुखः।

औ भाइ! एखन कनेक थम्हि जाउ; ओ लोकनि संभोग क' रहल छथि।

परंतु परशुरामकें एतबा धैर्य कहाँ! ओ फरुसा ल'क' गणेश पर छुटलाह। आब दुनूमे घोर युद्ध होमय लगलैन्ह। गणेशजी हुनका सूँढ़मे लपेटि लेलथिन्ह और लगलथिन्ह घुमाबय। तखन परशुराम खिसिया क' एक फरुसा मारलथिन जाहिसँ गणेशक एकटा दाँत टूटि गेलैन्ह। ओ दाँत जे टूटि क' खसल तकरा शब्दसँ संपूर्ण कैलास डोलि उठल। ताहिसँ शिवपार्वतीक रतिबंध छूटि गेलैन्ह। पार्वती रोसाक' बहरैलीह और परशुरामकें मारय छुटलीह। ई देखि परशुराम सटक सीताराम भ' गेलाह और लगलथिन स्तुति करय जे—

त्रिपुरस्य महायुद्धे सरथे पतिते शिवे, यां तुष्टवुः सुरा सर्वे तां दुर्गा प्रणमाम्यहम्।

अर्थात् हे दुर्गे! जखन त्रिपुरसँ युद्ध करैत महादेव रथ सहित खसि पड़लाह, तखन देवता सभ अहींक आराधना कैलन्हि ...हौ, बूझह त ई लोकनि भारी मौगा छलाह।

हम—खट्टर कका, पुराणमे एहन एहन बात हैतैक से हमरा नहि बूझल छल।

खट्टर कका—तोरे किऐक? बहुतो गोटाकें नहि बूझल हैतैन्ह। ब्रह्मा किऐक अपूज्य भेलाह से जनैत छह?

हम—नहि।

खट्टर कका पुराण उनटबैत बजलाह—तखन सुनह। एक बेर मोहिनी यौवनक मदसँ मत्त भय ब्रह्मासँ संभोग-याचना कैलथिन। वृद्ध ब्रह्मा अपन असमर्थता प्रकट करैत कहलथिन जे कोनो रसिक युवाकें पकडू। बारंबार उसकैलो पर ब्रह्मा तैयार नहि भ' सकलाह। तखन मोहिनी हुनका धिक्कारय लगलथिन जे—

इंगितेनैव नारीणां सद्यो मत्तं भवेन्मनः करोत्याकृष्य संभोगं यः स एवोत्तमो विभो।
ज्ञात्वा स्फुटमभिप्रायं नार्या संप्रेषितो हि यः पश्चात् करोति संभोगं पुरुषः स च मध्यमः।
पुनः पुनः प्रेषितश्च स्त्रिया कामार्त्तया च यः तथा न लिप्तो रहसि स क्लीवो न पुमानहो।

अर्थात् उत्तम पुरुष ओ थीक जे बिनु कहने, नारीक मन पाबि, अपना लग खींचि, संभोग क' लेबय। मध्यम पुरुष ओ थीक जे नारीक कहला पर संभोग करय। और जे बारंबार कामातुरा नारी द्वारा उसकौलो पर संभोग नहि करय से पुरुष नहि, नपुंसक थीक।

परंतु एतेक धुसैलो उत्तर ब्रह्माकें उत्तेजना नहि भेलैन्ह। तखन मोहिनी क्रोधसँ उन्मत्त भय शाप देलथिन—

अये ब्रह्मन् जगन्नाथ वेदकर्त्ता त्वमेव च, स्वकन्यायां यत् स्पृहा स कथं हससि नर्त्तकीम्।
दासीतुल्यां विनीतां च दैवेन शरणागताम्, यतो हससि रार्वेण ततोऽपूज्यो भवाऽचिरम्!

अर्थात् हे ब्रह्मा! अपना कन्याक संग त विचारे नहि रहल और अहाँ हमरा लग धर्मात्मा बनै छी! जाउ, अहाँ आइ दिनसँ अपूज्य भ' गेलहुँ।

आब ब्रह्माक चारू मुँह मलीन भ' गेलैन्ह। दौड़ल दौड़ल विष्णुलोक गेलाह। ओतय भगवानो डाँटय लगलथिन—

यदि कामवती दैवात् कामिनी समुपस्थिता
स्वयं रहसि कामार्त्ता न सा त्याज्या जितेन्द्रियैः
ध्रुवं भवेत सोऽपराधी तस्या अद्यावमानतः

यदि संयोगवश कामिनी एकांतमे आबि स्वयं उपस्थित भ' जाय त ओकरा कथमपि नहि छोड़ी। जे कामार्त्ता स्त्रीक एहन अपमान करैत अछि से निश्चय अपराधी थिक। लक्ष्मी सेहो ब्रह्मा पर छुटलथिन—

ब्रह्मा कथं न जग्राह वेश्यां स्वयंमुपस्थिताम्
उपस्थितायास्त्यागे च महान् दोषो हि योषितः।

जखन वेश्या स्वयं मुह खोलि क' संभोगक प्रार्थना कैलकैन्ह तखन ब्रह्मा किऐक ने ओकर इच्छा-पूर्ति कैलथिन्ह? ई नारीक भारी अपमान भेल।

बेचारे ब्रह्मा बहुत कानय-कलपय लगलाह। तखन जाक' कोनहुना उद्धार भेलैन्ह जे—

तव मंत्रं न गृह्णन्ति केऽपिवेश्याभिशापतः त्वदन्य-देव-पूजायां तव पूजा भविष्यति।

वेश्याक शापसँ अहाँक मंत्र त केओ नहि लेत। तखन जाउ, आन आन देवताक पूजाक संग अहूँक पूजा भ' जाएत।...तैं देखै छह नहि, डाली झाड़ि क' ब्रह्माक पूजा होइ छैन्ह।

हम कहलिऐन—खट्टर कका, पुराण-कर्त्ता लोकनि ब्रह्माक एहन दुर्दशा किऐक कैने छथिन्ह?

खट्टर कका—हौ, एहूसँ बेसी दुर्दशा कैने छथिन्ह। स्वयं अपना कन्यासँ अपवाद लगा देने छथिन्ह।

तां संभोक्तुं मनश्चक्रे सा दुद्राव भिया सती।

ब्रह्मा कन्याक पाछाँ दौड़लाह। ओ भयभीत भ' पड़ैलीह। तखन ऋषिगण ब्रह्माकें गंजन करय लगलथिन–

त्वं स्वयं वेदकर्त्ता च कन्यां संभोक्तुमिच्छसि, अस्माकं दूरतो दूरं गच्छ कामार्त्त मानस!

ब्रह्मा ग्लानिसँ आत्महत्या कर' लेल उद्यत भ' गेलाह।

ब्रह्मा शरीरं संत्यक्तुं व्रीडया च समुद्यतः।

आइकाल्हि ककरो विषयमे एना लिखितथिन्ह त तुरंत मानहानिक मोकदमा चला दितैह। परंतु देवतागण त मूक छलाह। ब्रह्माकें चारिटा मुहे रहने की हैतैन्ह?

हम–खट्टर कका, ब्रह्मवैवर्त्त पुराणमे ब्रह्माक एहन दुर्दशा?

खट्टर कका बजलाह–हौ, तुलसीदल कोन छोट, कोन पैघ? सभ पुराणमे त देवताक तेहने दुर्दशा दैखैत छिऐन्ह। ब्रह्मपुराणेमे ब्रह्माकें कोन महत्त्व देल गेलैन्ह अछि? बेचारेकें गौरीक विवाहमे दुर्गति क' देल गेल छैन्ह।

हम–से की?

खट्टर कका–देखह, ब्रह्मा स्वयं अपना मुहसँ की कहैत छथि!

तामदर्शमहं तत्र होमं कुर्वन् हरान्तिके दृष्टोऽगुंष्ठे दुष्टबुद्धया वीर्यं सुस्रावमे तदा लज्जया कलुषीभूतःस्कन्नं वीर्यमचूर्णयम्। मद्वीर्यात् चूर्णितात् सूक्ष्मात् बाल्यखिल्यास्तु जज्ञिरे!

भावार्थ ई जे ब्रह्मा महादेवक समीप बैसि होम करैत रहथि। ताहीकाल गौरी पर दृष्टि पड़ि गेने स्खलन भ' गेलैन्ह। तखन लाजे कठुआ गेलाह और चुपचापसँ ओकरा मलि देलथिन्ह। ताही वीर्यकणसँ बाल्यखिल्य मुनिक जन्म भेलैन्ह।

हम क्षुब्ध होइत कहलिऐन्ह–खट्टर कका, पुराणकर्त्ताकें एहन एहन बात कोना लिखल गेलैन्ह?

खट्टर कका बजलाह–हौ, ओ लोकनि निर्लज्ज छलाह। जहाँ देखू, तहाँ 'स वीर्यं प्रमुमोच ह।' 'तद्वीर्यं निपपात ह।' देवताक वीर्य की भेलैन्ह? शीतल प्रसाद भेलैन्ह! एक चूरू चुआ देलनि। से जत्तहि पौलनि, तत्तहि। घृत आँच देखि क' पिघलैत अछि, ओ आँचर देखि क' पिघलि जाइ छलैन्ह। कतहु मोहिनी पर, कतहु वृंदा पर, कतहु गौरी पर, कतहु हुनका सखी पर!

हम कहलिऐनि–खट्टर कका, हमरा नहि बूझल छल जे पुराणमे एतबा अश्लीलता भरल हैतैक।

खट्टर कका बजलाह–हौ, अश्लीलता त तेहन तेहन छैक जे कहबा सुनबा योग्य नहि। देखह, पद्मपुराणमे केहन वर्णन छैक! जालंधर शंकरक छद्मवेश बना गौरीक समीप जाइ अछि। गौरी अपना सखीकें सिखा पढ़ा क' ओकरा लग पठबैत छथिन्ह। जालंधर हुनका पकड़ि लैत छैन्ह और लगै छैन्ह भोग करय।

ततो जालंधरः सद्यो वीर्यं स प्रमुमोच ह, अल्पेन्द्रियश्च संयातो वेगतः कुरुनन्दन! तदा हि प्रोहितो दैत्यः न त्वं रुद्रो भविष्यसि, अल्पवीर्योऽधमाचारो नाहं गौरी हि तत्सखी।

थोड़बे कालमे जालंधर स्खलित भ' अल्पेन्द्रिय भ' जाइ अछि। ई देखि सखी कहै छथिन–अहाँ महादेव नहि छी दैत्य छी, से हम बूझि गेलहुँ। परंतु हमहूँ अहाँकें छका देलहुँ। हम गौरी नहि, हुनकर सखी थिकहुँ।

हम–खट्टर कका, पुराणमे एहन एहन व्यभिचारक उपाध्यान किऐक भरल छैक?

खट्टर कका–हौ, एहन एहन व्यभिचार-पुराण गढ़ि कय कवि लोकनि अपना मनक विकार बहार कैने छथि। एही द्वारे एक पंडित खिसिया क' कहै छथि जे–

पौराणिकानां व्यभिचार-दोषो नाशंकनीयः कृतिभिः कदाचित्
पुराणकर्त्ता व्यभिचारजातः तस्यापि पुत्रः व्यभिचारजातः।

हम–खट्टर कका, ई सभ देखि क' त यैह बूझि पड़ैत अछि जे पुराणमे यौन वासनाक समुद्र लहरा रहल अछि।

खट्टर कका–ताहिमे कोन संदेह? तेहन तेहन विकृत वासनाक उदाहरण छैक जे देखि क' गुम्म रहि जैबह। एकटा ब्रह्मपुराणोक उपाख्यान लैह–

सहस्र वर्षक वृद्ध गौतम अपनोसँ अधिक वृद्धा तपस्विनीक संग संभोग करैत छथि। से देखि गौतमी कहैत छथिन–

अभिषिंचस्व भार्या त्वं वृद्धां विगलितस्तनीम् नवयौवनसम्पन्ना रम्यरूपा भविष्यति

ओहि गौतमी-तीर्थमे स्नान करैत देरी विगलितस्तनी वृद्धा पुनः नवयौवना सुंदरी बनि जाइत छथि।

एक मही नामक तरुणी विधवा भेला पर वेश्या बनि जाइ छथि। ओ अपना युवा पुत्रसँ संभोग करैत छथि।

मेने न पुत्रमात्मीयं स चापि न मातरम् तयोः समागमश्चाऽसीद्विधिना मातृपुत्रयोः।

और ई मातृ-समागमक दोष कटैत छैन्ह गौतमी-तीर्थमे स्नान कैलासँ।

सप्तर्षिक पत्नी गंगाजीमे जा क' गर्भपात क' अबैत छथि। ओ पाप-प्रक्षालन होइत छैन्ह गौतमी-तीर्थमे स्नान कैलासँ। इन्द्र गौतम पत्नी (अहल्या)मे गमन करैत छथि। गौतम शाप दैत छथिन–

भगभक्त्या कृतं पापं सहस्रभगवान् भव।

ओहि शापसँ हुनका देहमे सहस्र टा भग भ' जाइ छैन्ह। पाछाँ गौतमी-तीर्थमे स्नान कैने ओ सहस्र टा आँखि बनि जाइ छैन्ह।

चंद्रमा गुरु-पत्नी (तारा)मे गमन करैत छथि। जखन ओ तारा अपन पति वृहस्पतिक संग गौतमी-तीर्थमे स्नान करै छथि तखन शुद्ध भ' जाइ छथि।

तथाऽकरोच्चैव तारा भर्त्रा स्नानं यथाविधि, पुष्पवृष्टिरभूत्तत्र जयशब्दो व्यवर्त्तत।

केवल शुद्धे नहि होइ छथि, हुनकर जयजयकारो होइ छैन्ह, देह पर पुष्पवर्षो होइ छैन्ह! हौ, हमरा त बूझि पड़ै अछि जे ई सभ पंडाक प्रॉपगंडा छैक। केहनो घोर पाप करू, अमुक तीर्थमे आबि क' स्नान करू, शुद्ध भ' जाएब। जौं एना माहात्म्य-वर्णन नहि होइतैक त पंडा-पुरोहितकें आमदनी कोना होइतैन्ह?

हम कहलिऐनि–खट्टर कका, अहाँ त तेहन पुराण-चर्चा चला देलहुँ जे हमरा एहीठाम भागवतक रस भेटि गेल। आब आज्ञा दिय। घड़ी घंटा बाजि रहल छैक। कथा प्रारंभ हैतेक। कहलकैक अछि–

येषां श्रीकृष्ण-लीला-ललित-रसकथा-सादरौ नैव कर्णौ
धिक् तान् धिक् तान् धिगेतान् कथयति सततं कीर्त्तनस्थो मृदंगः।

खट्टर कका मुसकुराइत बजलाह–हौ, गुरुजनक रस-कथा सुनब कि कोनो नीक बात छैक? हम त ई बुझैत छी जे–

येषां श्रीकृष्ण-लीला-ललित-रसकथा-लौलुपो धृष्टकर्णौ
धिक् तान् धिक् तान् धिगेतान् कथयति सततं कीर्त्तनस्थो मृदंगः।

खैर, तों नव-नौतार छह। जाह। परंतु तोरा काकीकें हम ओहिमे नहि जाय देबैन्ह, से कहि दैत छिऔह। बूढ़ पुरानकें भागवत-पुराणसँ कोन मतलब?



विभूतिगाथा

एहि अंकमे एक एहन विरल आ महत्वपूर्ण लेखक पं. काशीनाथ झाक विषयमे जानकारी देल जा रहल अछि, जनिका विषयमे साहित्यक इतिहस मौन अछि अथवा अत्यल्प जनतब दैत अछि। मुदा डा. कीर्तिनाथ झाक ई आलेख सिद्ध करैत अछि जे काशीनाथ झा अत्यन्त सृजनात्मक लेखक छलाह। ओ अपन लेखनमे अनेक नव प्रयोग करैत रहलाह। दुर्भाग्य जे ओ अल्पायु भेलाह, तें मैथिलीकें हुनकासँ बहुत रास अनमोल वस्तु हमरा सभकें नहि भेटि सकल। कीर्तिनाथजीक आलेख ओहि महान व्यक्तित्वक विषयमे बहुत रास अनुद्घाटित पक्षकें प्रकाशित करैत अछि। हुनक एहि आलेखक संग पं. काशीनाथ झाक मौलिक कथा 'यथार्थ प्रेम'क पहिल बेर प्रकाशन भ' रहल अछि, जे एहि पत्रिकाक सौभाग्य सेहो थिक।

पं. काशीनाथ झा, का.ती. (1902-1944)

कीर्तिनाथ झा

जाहि व्यक्तिकें नहि देखने हेबैक, तनिकर छवि कागतपर कोना उतारब? ओहिना ने जेना विद्यापति ठाकुरक फोटोमे हुनका झमटगर मोछ छनि, ललाट पर त्रिपुण्ड चानन छनि। तिरुवल्लुवरक केशकें खोपा-जकाँ बान्हि कय माथ पर राखल छनि। किन्तु, हम एहि लेखमे जनिकर स्केच बनबय जा रहल छी, हुनकर कमसँ कम एकटा फोटो हमरा लग उपर भेल। हँ, एहि लेखक विषय थिकाह पं. काशीनाथ झा का. ती. उर्फ बलदेव जी।

हमर माता आ काशीनाथ झाक छोट बहिन स्व. विन्देश्वरी देवी, कहथि, 'भाइ अपन नाम एहिना लिखैत रहथिः 'काशीनाथ झा का.ती.'।

व्यवसायसँ शिक्षक आ रुचिसँ स्वयं-शिक्षित वैद्य, स्व. काशीनाथ झा बीसम शताब्दीक तेसर-चारिम दशकमे साहित्यकारक रूपमे परिचित रहथि, जकर संकेत आचार्य रमानाथ झा द्वारा सम्पादित आ 1941मे प्रकाशित मैथिली कविता संग्रहमे आचार्य द्वारा लिखल स्व. काशीनाथ झा का.ती.क परिचयसँ भेटैत अछिः 'धर्मपुर (दरभंगा) ग्रामवासी सहित्योपाध्याय पं. काशीनाथ झा मिथिलाभाषामे लब्ध- दरभंगा-राजकीय-धौतप्रतिष्ठ ओ मैथिलीक व्युत्पन्न कवि ओ लेखक छथि। ई अनेको काव्य नाटक ओ उपन्यास लिखने छथि जे सब अमुद्रिते छनि। एहिठाम उद्धृत तीनू कविता हिनक रचनाक दृष्टान्तस्वरूप देल गेल अछि।'

आचार्य रमानाथ झा एतबे परिचयमे हिनका सम्बन्धमे लगभग सब किछु कहि देने छथिन। साहित्य अकादेमी दिल्लीक मैथिली कथा शताब्दी संचयनमे पं. काशीनाथ झाक एकटा कथा, सतमाय, अवश्य संकलित अछि। हालमे 'मिथिला दर्शन' पत्रिकामे हिनक एकटा कथा 'न.न.रे.कं' धरोहरक रूपमे प्रकाशित भेल। धर्मपुर, उजानक किरण साहित्य शोध संस्थान अपन वार्षिक स्मारिकाक एक अंकमे काशीनाथ झाक एकटा दीर्घ कविता 'मन्दोदरी विलाप' प्रकाशित केने अछि। किन्तु, एकर अतिरिक्त, हमरा जनैत, मैथिली

साहित्य हिनका सम्बन्धमे बौक अछि। संयोगसँ हालमे स्व. काशीनाथ झाकेर हाथें लिखल किछु सामग्रीक प्रतिलिपि हमरा हाथमे आयल, जाहिसँ हिनका संबंधमे कतेक रास बात स्पष्ट होइत अछि। हम ओही सामग्रीक, आ काशीनाथ झाक सोदर लोकनि (स्व. किरणजी, आ हमर माता, स्व. विन्देश्वरी देवी) क मुँहे सुनल काशीनाथ झाक संस्मरणक आधार पर एहि लेखमे काशीनाथ झाक साहित्यिक छवि बनेबाक प्रयास क' रहल छी।

सुनल अछि 'काशीनाथ झा अद्भुत प्रतिभाशाली व्यक्ति छलाह आ मैथिलीमे धुरझार लिखैत रहथि'। स्मरण रखबाक थिक, अल्पायु व्यक्तिक हेतु प्रति परिवार आ समाजमे अनेरो मात्सर्य होइत छैक। तें, ई आवश्यक जे ममत्वसँ दूर, काशीनाथ झाक व्यक्तित्वक आ कृतित्वक निरपेक्ष आकलन हो आ मैथिली साहित्यमे हिनक योगदान प्रकाशमे आबय।

पं. काशीनाथ झा का. ती., पण्डित मुकुंद झाक पहिल पुत्र आ स्व. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क जेठ भाइ छलाह। किरणजीक आने सब भाइ-जकाँ काशीनाथ झाक माध्यमिक शिक्षा रजौर गाओं (आजुक कटियार हाट गाओं, अविभाजित भारतक दिनाजपुर जिला, आ वर्तमान बंगलादेशक ठाकुरगांव जिला)मे भेल छलनि। काशीनाथ झा ओतुके बुद्धिनाथ इंस्टीच्यूट हाइ स्कूलसँ 1922 ई.मे मैट्रिक पास कयने छलाह। पारम्परिक पद्धतिसँ पं. काशीनाथ झा साहित्य शास्त्री आ काव्यतीर्थक सेहो रहथि। एकर अतिरिक्त अध्यवसाय आ अध्ययनसँ ई जाहि प्रकारक विद्वता हासिल कयने छलाह तकर प्रमाण, शीर्ष पण्डित लोकनिकें सम्मानित करबाक हेतु दरभंगाक महाराज द्वारा संचालित 'धौत परीक्षा'मे हिनक सफलतासँ भेटैत अछि। 1941मे आयोजित, धौत-परीक्षाक अंतिम संस्करणक एक प्रतियोगी, पण्डित दुर्गाधर झा, अपन संस्मरण, 'राज दरभंगाक धौत-परीक्षा'मे लिखैत छथि, 'धौत-परीक्षाक एहि संस्करणक संपादक छलाह म. म. सर गंगानाथ झा आ ओहि परीक्षामे मैथिली (विषय)मे उजानक अंतर्गत धर्मपुरक स्व. काशीनाथ झा उर्फ बलदेवजी प्रथम भेल छलाह'।

आरम्भमे जीविकाक हेतु काशीनाथ झा किछु दिन रजौरहिंमे रहि राजा टंकनाथ चौधरी द्वारा स्थापित स्कूलमे मैथिलीक प्रथम शिक्षकोक रूपमे काज कयलनि। पछाति किछु दिन ई कटिहारक महेश्वरी एकेडेमीमे सेहो शिक्षक छलाह। किन्तु, स्वतंत्रतापूर्व अविभाजित भारतक पूर्णिया आ दिनाजपुर जिलामे मलेरिया, काला-जार आ ब्लैक-वाटर फीवर (ज्वर)सँ प्रति वर्ष असंख्य लोकक जान जाइत छलैक। रजौरमे पं. काशीनाथ झा 'ब्लैक-वाटर फीवर'सँ ग्रस्त भेल रहथि आ 'किरणजी' सेहो ओतहि काला-अजारसँ मरैत-मरैत बचल रहथि, से किरणजीक मुँहे सुनल अछि। अस्तु, रोग-व्याधि आ आन कतिपय कारणसँ हिनका लोकनिक परिवार धर्मपुर आपस आबि गेल रहथिन। गाम आपस अयलाक पछाति काशीनाथ झा, कटिहारक जमींदार उमानाथ मिश्रक जमींदारीमे, पहिने कटिहारमे, आ पछाति मिथिलांचल स्थित बगहांत गांओक मौजेपर, किछु दिन तहसीलदारी (revenue collection clerk) क काज सेहो केने छलाह। पछाति, तहसीलदारी छोड़ि काशीनाथ झा सरिसब-पाहीक समीप भट्टपुरा गाममे एकटा प्राथमिक विद्यालय स्थापित कय ओतहु स्थानीय छात्र सबकें पढ़ओने रहथि। अध्यापनक अतिरिक्त पं. काशीनाथ झाक रुचि वैदागरी आ ज्योतिषमे सेहो रहनि।

हमर माता, स्व. विन्देश्वरी देवी कहथि, 'भाइ पढ़बामे अत्यंत तेज रहथि। जतय

जाथि, फस्ट आबथि। धौत-परीक्षामे महराज साल-चद्दरि देने रहथिन। भाइ वैदागरी सेहो करथि।' हमर माता कहथि, 'परिवारमे जनमैत धियापुताक सबहक टिप्पनि सेहो भाइ अपने बनाबथि। किन्तु, मरिए गेलाह बड़ थोड़ वयसमे। आ सेहो, ओ मरबासँ बहुत पहिनहि लीखि गेल छलाह जे कोन दिन मरब। आ से सत्यो भेल।'

संयोगसँ किरणजी, स्व. काशीनाथ झाक अपन मृत्युक समयक अचूक भविष्यवाणीकें हुनक आत्महत्याक प्रमाण बूझैत छलाह। सत्य जे हो, काशीनाथ झाक मृत्यु करीब बयालीस वर्षक वयसमे 1944 ई. भ' गेल रहनि।

'महाकवि तन्त्रनाथ झा आ हम' नामक लेखमे पं. काशीनाथ झा का. ती.क संबंधमे काञ्चीनाथ झा किरण लिखैत छथि, 'हुनक प्रतिभा ओ अध्ययन असाधारण रहनि। संस्कृत-हिंदी-बांग्ला ओ मैथिली तथा अंगरेजी भाषामे समान गतिएँ अपन भाव चमत्कारपूर्ण रीतिएँ प्रतिपादित करैत छलाह। अतः जखन गाम आबथि, नव रचनाक खोज स्व. भैयाजी (स्व. रमानाथ झा एवं तन्त्रनाथ झाक पिता) करबे करथिन आ मनसँ सुनैत छलथिन। हुनक काव्य रचनाक प्रवृत्ति आ रचनाक कारणे प्राप्त गुरुजनक स्नेह हमरो सभक सर्जनात्मक शक्तिकें जगा देलक।'

स्व. पं. काशीनाथ झाक बांग्ला भाषाक 'राजपूत जीवन संध्या' क अनुवाद मिथिला मोदक 1923 ई.क एक अंकसँ प्रकाशित होबय लागल। हुनक लेखनी नियमित रूपें मैथिली गद्य-पद्य साहित्यकें समृद्ध बनबय लागल।

प्रश्न उठैछ, पैघ परिवार, बाढ़ि-पलायन, गरीबी आ रोगक भार उठबैत, बयालीस वर्षक आयु धरि काशीनाथ झा कतेक रचना कयने छल हेताह। सत्यतः, एकर सही अनुमान करब असम्भव अछि। किन्तु, आचार्य रमानाथ झा एतबा तँ अवश्य लिखने छथि, 'ई अनेको काव्य नाटक ओ उपन्यास लिखने छथि'। यद्यपि आचार्य रमानाथ झाक एहि उक्तिपर संदेह करबाक हमरा कोनो सशक्त आधार नहि भेटैछ, तथापि, हमरा जनैत, पं. काशीनाथ झाक नाटक ओ उपन्यासक अद्यावधि कोनो साक्ष्य प्रकाशमे नहि आयल अछि।

हमरा नहि मोन अछि, किरणजी सेहो कहियो हमरा समक्ष स्व. काशीनाथ झाक कोनो पुस्तकाकार कृतिक चर्चा केने हेताह। यद्यपि, तकर कारणो छैक, स्व. किरणजी अध्ययन आ नौकरी-चाकरीक कारण 1930सँ 1946 ई. क अवधिमे किछु समय कलकत्तामे, आ बांकी अधिकांश समय काशीमे बितौलनि। संयोगसँ, 1944 ई.मे पं. काशीनाथ झाक असामयिक मृत्युक समय, स्व. किरणजीक काशीएमे रहथि। अस्तु, पं. काशीनाथ झाक सक्रिय साहित्य-सृजनक अवधिमे किरणजी अधिक काल गामसँ बाहरे बितओलनि। तथापि, जेना उपर कहल अछि काशीसँ प्रकाशित 'मिथिला मोद' पत्रिकामे पं. काशीनाथ झाक सहभागितासँ किरणजी परिचित तँ रहथि। आब हमरा तकर सोझ प्रमाण सेहो भेटल अछि काशी पञ्चशतीमे अनेक ठाम 'मिथिला मोद...मे प्रेषित' हुनक अपने हाथें टिपल भेटल अछि।

हमर माता श्रीमती विन्देश्वरी देवी एतबा अवश्य कहथि, 'भाइ (पं. काशीनाथ झा)

भरि-भरि राति बैसिकय लिखथि। कएक राति लिखैत-लिखैत भोर भ' जाइनि।' 'भाइ बाइस टा किताब लिखने रहथि' आदि। ओ इहो कहथि जे 'भाइ रामायण सेहो लिखने रहथि।' आ ओ गौरवसँ काशीनाथ झाक रामायणक किछु पद सेहो सुनाबथि। किन्तु, तकर चर्चा आन ठाम कतहु नहि भेटल अछि। संगहि, 'बाइस टा किताब' सेहो अतिशयोक्ति-सन लगैछ। एहि अनुमानक अशुद्ध हेबाक एकटा आओर कारण छैक। हमर माता कुल एगारह वर्षक वयसमे सासुर चलि गेल रहथि!

तथापि, एतबा अवश्य जे, पं. काशीनाथ झा 'मिथिला-मोद' आ 'भारती' सहित ओहि समयक आनो पत्रिकामे लिखैत छलाह। पं. काशीनाथ झाकेर 'मिथिला मोद'मे प्रकाशित रचनाक चर्चा, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयमे पी.एच-डी.क उपाधिक हेतु प्रस्तुत स्व. किरण जीक पुत्र स्व. कैलाशनाथ झाक शोध-प्रबंधमे सेहो छनि। किन्तु, ओ शोध-प्रबंध एखन उपलब्ध नहि भेल। तें, ओकरा सम्बन्धमे किछु कहब असंभव हयत। किन्तु, 1986 ई.मे श्री महेन्द्रनाथ झा द्वारा स्व. किरणजी निर्देशनमे संपन्न आ पी.एच-डी. उपाधिक हेतु ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगामे प्रस्तुत, 'उजान परिसरक विशिष्ट मैथिली साहित्यकारक कृतिक समीक्षात्मक अध्ययन' नामक अप्रकाशित शोध-प्रबंधक किछु अंश काशीनाथ झाक जन्म-मृत्युक तिथिक संग व्यक्तित्व आ कृतित्व पर सेहो प्रकाश दैत अछि। एहि शोध-प्रबंधमे किरणजीक सहभागिता एहि कृतिकें प्रामाणिक आ मौलिक श्रोतक दर्जा दैत अछि। तें, काशीनाथ झा सम्बन्धी एहि दुनू शोध-प्रबंधमे उपलब्ध सूचना प्रामाणिक थिक, से मानबामे हमरा कोनो दुविधा नहि।

आब हम अपना लग उपलब्ध काशीनाथ झाक अप्रकाशित कृतिक चर्चा करी। एखन हमरा लग स्व. काशीनाथ झा केर जाहि कृति सबहक छायाप्रति उपलब्ध अछि से निम्नलिखित अछिः

काव्यकृति : काशी पञ्चशतीः पूर्वार्ध, उत्तरार्द्ध, आ परिशिष्ट (शृंगारहार), धृतराष्ट्र विलाप, मन्दोदरी विलाप

गद्य : यथार्थ-प्रेम-स्वकल्पित मौलिक गल्प, प्रेमक रंग निराला-दीर्घ कथा

बांग्लासँ अनूदित कथा : स्वामी, सतमाय, न.न.रे.कं.

काशी पञ्चशती

काशी पञ्चशती तीन भाग पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध आ परिशिष्टमे विभक्त काव्य-ग्रन्थ थिक। 'काशी पञ्चशती' क पूर्वार्द्धक 'विज्ञप्ति'मे पं.काशीनाथ झा कहैत छथि, 'भोज्यमे आचारचटनी, मरिचाइक यैहस्थान—साहित्यमे सुभाषित, उज्झह वा प्रस्तावित श्लोकहुक सैह स्थान अछि। संस्कृत साहित्य तँ एतादृश रत्नसूक्तिक रत्नाकरे अछि, हिन्दीअहुमे दोहा, छंद, कवित्त, कुंडलियाक प्राचुर्य अछि। किंतु, मैथिलीमे एखनहुँ तक एकर सर्वथा अभावे देखल जाइछ। अतः माननीय विद्वत् समाजक ध्यान एहिदिशि आकर्षण करैत मैथिली साहित्यक ई अभाव पूर्ण करबाक प्रयासमे श्रीगणेश करबाक अभिलाषासँ ई क्षुद्र पंचशती लिखल गेल अछि। पूर्वार्द्धमे दोहावली ओ उत्तरार्द्धमे संस्कृत तथा भाषाक छन्दमे

पद्य रचना कय गुणावगुण विचारार्थ सुधी समाजक समक्ष उपस्थित कयल। एहिसँ मैथिलीक किंचित मात्रो सेवा भय सकय तँ श्रम सार्थक बुझब। अलमितिविस्तरेण 'इतिशम्'

धर्म्मपुर विनीत

श्री. शु. पूर्णिमा 1344 साल / 3-8-36 ई. श्रीकाशीनाथझा का. ती.

काशी पञ्चशतीकें कवि अपन पितामह 'जनिक काव्य प्रतिभा देश विश्रुत अछि'कें समर्पित केने छथिन। ई आराध्य पितामह प्रायः कवि पं. हर्षनाथ झा थिकाह।

काशी पञ्चशती पूर्वार्द्ध 6 × 4 इंचक डायरी 36 पृष्ठमे समेटल अछि। प्रत्येक पृष्ठ पर दू-दू पाँतिक छौ-छौ टा दोहा (कुल 250 दोहा) छैक। काशी पञ्चशती पूर्वार्द्धक बेसी दोहा सब सुपरिचित संस्कृत श्लोक आ किछु हिंदीक दोहा सबहक मैथिली अनुवाद थिक, जकर श्रोत चिन्स्ब असंभव नहि। कतहु-कतहु किछु दोहा कविक स्वतः स्फूर्त उक्ति सेहो थिकनि। किन्तु, सबटाकें बेरायब-फुटकायब आ श्रोत ताकब श्रमसाध्य काज थिक। एहिले समय चाही, तथापि किछु बानगी देखी :

यौवनधनसंपत्ति ओ प्रभुता ओ अविवेक।।
चारू मिलि की नहि करय थिक दुरंत प्रत्येक।। 4।। (हितोपदेश)
छारु दबाबै पैरतर नहि पुनि क्यो चिनगारि।।
तैं मानी प्राणो तजथि तेज न दै छथि छाड़ि।। 16।।
मातृतुल्य परनारिकै परधन माटि समान।।
आत्मतुल्य सबजीवकै बूझथि विज्ञ सुजान।। 36।। (संस्कृत सूक्ति)
मणि जौं पयरो तर पड़ै काच चढ़य जौं भाल।।
काच काच मणि मणि रहत कीनब बेचब काल।। 121।। (प्रायः मौलिक)
अमिय हलाहल मद भरल स्वेत श्याम ओ लाल।।
जिबय मरय झुकि झुकि खसय चकितहिं हाल बेहाल।। 138।। (हिंदीसँ)

जहाँ धरि संभव अछि, उक्त उद्धरणक हिज्जे लेखकक हाथक लिखलक यथावत अनुकरण थिक।

काशी पञ्चशती उत्तरार्द्ध

जेना कि विज्ञप्तिमे कवि कहने छथि, उत्तरार्द्धमे 'संस्कृत तथा भाषाक छन्दमे' अछि। निर्विवाद काशी पञ्चशतीक उत्तरार्द्धक किछु काव्य सेहो अनूदित थिक। किन्तु, एहि खण्डमे कविक मौलिक कवित्व सेहो अनेको ठाम देखबामे अबैछ। ततबे नहि, जें कि उत्तरार्द्धक शैली श्लोक, चौपाई, कवित्त आ कुण्डलिया-जकाँ अछि, जाहिमे प्रत्येक छंद चारि पाँतिक अछि। तें, ई खण्ड पूर्वार्द्धक तुलनामे आकारमे दुगुना अछि। द्रष्टव्यः

क्यो न करै सादर सम्भाषण संगो क्यो न करैछ।
उत्सवमे जौं जाय धनिक घर तौं अवमान पबैछ।।
नीक वस्त्र तन पर नहि तै सौं सबसँ हटल रहैछ।
तै निर्द्धनता जगमे छद्म महापाप कहबैछ।। 73।।

बाजै तँ कहबय वकवादी चुप रहलै कहबय मुंहचोर।
कानय जँ तँ ताली कहबय हँसलक जँ तँ दांतनिपोड़।।
हँटल रहय तँ देह छिपाबय लगमे रहलै होइछ धृष्ट।
बुद्धिगम्य नहि होइछ ककरो सेवाकर्म्म कठिन अपकृष्ट।। 122।।

'शृंगारहार' पञ्चशतीक परिशिष्ट थिक। एहि शृंगारहारकें कवि पहिने 'सहधर्मिणीक कर कमलमे प्रदत्त' केने छथि। मुदा, पछाति तकरा काटि 'पितामहक चरण कमलमे अर्पित' कयल गेल अछि। ई शृंगारहार की थिक से लेखकीय विज्ञप्तिएमे सुनू।

'स्वकृत पञ्चशतीक परिशिष्ट स्वरूप ई शृंगारहार मैथिली-साहित्य सरोजपानलोलुप सुधी समाजक सेवामे उपस्थित कयल गेल अछि। रसज्ञ चित्त विनोदनक संगहि साहित्यक यत्किंचित सेवा उद्देश्यक सफलताक आशा करब धृष्टता वा नहि एकर निर्णय पंडित समाज करता।'

धर्म्मपुर / 2.8.36 — काशीनाथ झा का. ती.

काशी पञ्चशतीक परिशिष्टमे कवि एकाबन गोट नितांत शृंगारिक रचनाक समावेश कयने छथि, जाहिमे आरंभिक छंद जँ नितान्त पारंपरिक आ संस्कृत श्लोकक तर्ज पर अछि, तँ अनेक स्वकल्पित छंद वस्तुतः चमत्कृत करबा योग्य अछि। जेना,

शीघ्र जाउ घर बैसू सुंदरि बाहर जनु रहु ठाढ़ि।
चंद्रग्रहण काल लागिचायल उठय हृदयरस बाढ़ि।।
अहंक वदन जनु निष्कलंक शशि राहु देखि जौं लेत।।
तजि देत ओ चंद्र कलंकी झट एकरे गसि लेत।। 38।।

विद्यापति एतबा तँ लिखने छथि, 'तोहर वदनसन चान होथि नहि, जदपि जतन विधि देल, कय बेरि काटि छांटि नव विरचल, तुलित तथापि ने भेल'। किन्तु, काशीनाथ झा तँ अभिसारिकाक प्रशस्तिमे एक डेग अओरो बढ़ि गेलाहः 'अहंक वदन जनु निष्कलंक शशि राहु देखि जौं लेत, तजि देत ओ चंद्र कलंकी झट एकरे गसि लेत'! कविक ई मौलिक कल्पना बेजोड़ अछि।

धृतराष्ट्र विलाप

धृतराष्ट्र विलाप महाभारतक द्रोण पर्वक एकटा आख्यान थिक। धृतराष्ट्र विलापक विज्ञप्तिमे कवि लिखैत छथि–'धृतराष्ट्र विलाप–महाभारतक सारांश मानल जाइछ। प्रायः समस्त प्रधान घटनाक उल्लेख एहिमे कैल अछि। व्याख्या पुरस्सर एकर पाठ केलासँ समग्र महाभारतक पाठ भय जाइत छैक। तें विद्यालयादिमे ई छात्रगणक हेतु पाठ्य विषय थिक। मैथिल विद्यार्थीक हेतु एकर मैथिली भाषानुवाद उपकारक बूझि प्रयत्न कैल। अनुवादक रूपमे किछु घसल मांजल, घटल बढ़ल ई धृतराष्ट्र विलाप उपस्थित अछि। मैथिल समाज एकरा प्रति सहान्नुभूति देखाबय ई प्रार्थना। अलमिति शुभम्।'

एहि भूमिकासँ एतबा तँ अवश्य प्रतीत होइछ जे पं. काशीनाथ झाकें मैथिलीकें पाठ्यक्रममे अनबाक मनोरथ अवश्य रहनि। तें, अपन रचनाकें छात्रोपयोगी बनयबाक

उद्देश्य सेहो संगमे ल' कय चलैत रहथि। अद्यावधि ई रचना सब प्रकाशमे नहि आबि सकल से मैथिलीक दुर्भाग्य थिक।

पं काशीनाथ झा अपन एहि कृतिकें मातृमातामहीक चरणकमलमे अर्पित कयने छथि। जेना कवि विज्ञप्तिमे कहने छथि, ई काव्य महाभारतक आदिपर्वक आख्यान थिक जाहिमे महाभारतक 'प्रायः समस्त प्रधान घटनाक' चर्चा अछि। ओही सब घटनाक स्मरण कय संजयक समक्ष धृतराष्ट्र विलाप करैत छथि। निम्नलिखित चौपाई धृतराष्ट्र विलापक अंतिम चौपाई थिक :

अभिमानक वश जिद्द कैल, परिणाम पराजय,
भेल, राज्यधनविभव नाश, जँ जाति कुलक्षय।
गांधारी नित शोक करथि शतवधूसुता लय।
विजयाशा की रहल आब इति करू औ संजय।।

धृतराष्ट्र विलापकें कवि यद्यपि मैथिली भाषानुवाद कहैत छथि, फलतः एहिमे कोनो स्वकल्पित नाटकीयता देखबामे नहि अबैछ। किन्तु, ई कविक कवित्वक प्रमाण तँ थिके।

मन्दोदरी विलाप

एकावन टा चौपाई युक्त 'मंदोदरी विलाप' रावण-वधक पछाति मंदोदरीक मनकथा थिक, जाहिमे रामायणक अनेक घटनाक उल्लेख छैक। शैलीक दृष्टिऐं नितान्त पारम्परिक शैलीक, ई तुकान्त दीर्घ कविता थिक। काशी पञ्चशतीए-जकाँ मन्दोदरी विलापमे प्रयुक्त कतेको शब्द, जेना, शूनल (सुनल), यखने (जखने), रूषि (रूसि), शूनि (सुनि), भाय (भाइ), तौं (तं), करै (करय), टिकै (टिकय), सङ (संग), क ओहने प्रयोग अछि जे बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे प्रचलित छल। संयोगसँ, काशीनाथ झाक कथा सबहक वर्तनी एहिसँ भिन्न आ अनेक अर्थमे एखनुक समसामयिक-जकाँ अछि। एहि कवितामे दू गोट सुपरिचित मैथिली लोकोक्ति 'भाबी करय बुद्धिहुक नाश' आ 'घरफूटै तौं लुटय गमार' क प्रयोग भेल अछि। आब, ई कविता पं. काशीनाथ झाकेर ओहि मैथिली रामायण अंश थिक जकर चर्चा स्व. विन्देश्वरी देवी करैत छलीह वा ई स्वतंत्र दीर्घ कविता थिक, से कहब कठिन।

मुक्तक : आशा, कर्तव्य, आ सांध्यभ्रमण

ई तीनू कविता आचार्य रमानाथ झा द्वारा सम्पादित 'मैथिली कविता संग्रह'मे संकलित अछि। विषय वस्तुक दृष्टिऐं एहि कविता सबहक विषय वस्तु नवीन नहि। 'आशा' कविता पढ़िकय कतहु स्व. सुमनजीक संस्कृतनिष्ठ काव्यक स्वाद प्रतीत भेल। किन्तु, शैली आ शिल्पक दृष्टिऐं ई कविता सिद्धहस्त कविक कृति बूझि पड़ैछ, जकर शिल्प आ शब्द काशी-पञ्चशतीसँ भिन्न अछि।

निम्नलिखित अंश 'आशा' नामक कवितासँ उद्धृत अछि–

संकटमे जी जँ दहलै अछि, अपनों लोक न घूरि तकै अछि,
साहस दृढ़ता जखन तजै अछि, तखनहु तों चिरसंगिनी!
ढाढ़स दए नव पथ देखबै छह, आशे! संकट-हरणी।।

'कर्तव्य' शीर्षक कविता वीररसक तीन गोट उद्‌बोधन थिक। एहि कविताक भाव (भाषा आ शैली नहि) कतहुसँ किरण जीक विजेता विद्यापतिमे 'दाढ़ी-मोंछ न पुरुखक लच्छन' सदृश कवितासँ समानता प्रतीत होइछ। देखू :

ढाढ़स बान्हु, हृदय करू थीर।
अंत अनंत रूप धए आबओ, तें जुनि होउ अधीर।।
राखू सतत अपन अबलम्ब, स्थापू निज जय-कीर्ति-स्तम्भ,
रुधिर मांस मज्जास्थि लगाकय;
शत शत सूर्य्य चूरिकए यूंड, गढू सतत उज्वल ओ चूड़;
देखय नभसँ अमर शरीर।।

तेसर कविता 'सांध्यभ्रमण' साँझुक कालक प्रकृति-वर्णन थिक जाहिमे कवि तत्कालीन दृश्यक वर्णन करैत छथि। एहि कविताकें कविक सौन्दर्य-प्रेमक प्रतीक कहि सकैत छियनि, जाहिमे प्रचुर तत्सम शब्द भेटत–

निशिगंधा तजलक अवगुंठन, मूढ़ मधुप रटइत अछि वन वन;
चतुर पवन कए कए रस-चुम्बन, परिमलसँ पाटय संसार।
श्रान्त जगतपर हिमकर वर्षण करथि सुधाकर शांत्युपचार।।

संयोगसँ काशीनाथ झाक एहि कोटिक आओर कोनो कविता हमरा हाथ नहि लागल, किन्तु, कोन ठेकान कहिया कतय की भेटि जाय!

पं. काशीनाथ झाक 91 पृष्ठक उपलब्ध कथा-संग्रहमे निम्नलिखित कथा क्रमशः संकलित अछि :

1. न. न. रे. कं. (नरक नंदन रेल कम्पनी)

बांग्लासँ अनूदित न. न. रे. कं. (नरक नंदन रेल कम्पनी) बाबू भोला लाल दास द्वारा सम्पादित 'भारती' नामक पत्रिकाक 1937क वर्ष 1 अंक 9मे प्रकाशित बांग्लासँ अनूदित व्यंग-कथा थिक। एहि कथाक शैली आ कथानक दुनू समकालीन अछि। न. न. रे. कं. नामक कथामे स्वर्ग आ नरकक बीच बेरोक टोक यातायातक हेतु स्थापित नरक नंदन रेल कम्पनीक स्थापनाक चर्चा अछि। एहि रेलसँ स्वर्गमे अवांछित लोकक प्रवेशकें रोकबाक हेतु, कठिन प्रक्रियाक द्वारा चुनिकय, टिकट चेकिंगक हेतु, महात्मा बुद्ध, ईसा आ युधिष्ठिर-सन सत्यवादी आ इमानदार प्रहरी नियुक्त होइत छथि आ द्वारि पर तैनात कयल जाइत छथि। किन्तु, अवांछित लोकसब बुधिबधियासँ एहि विशिष्ट प्रहरीलोकनिकें बुझा-सुझा कय उपहार देबामे सफल होइत अछि आ स्वर्गमे अनधिकार प्रवेश करैत अछि। ई कथा अवांछित लोकसबहक स्वर्गमे अनधिकार प्रवेशमे सफलताक रोचक वर्णन थिक। ततबे नहि, एहि कथाक अंत एक मनोरंजक विन्दुपर होइत अछिः अपन काजमे विफल हयबाक कारण ई तीनू प्रहरी स्वर्गसँ निष्कासित होइत छथि। से तँ उचिते, किन्तु, स्वर्गसँ निष्कासनक पछाति, पृथ्वीपर आबि, ई तीनू गोटे उत्तर बिहारक वन्योद्धारक नामे चंदा असूलैत स्वयंसेवी लोकनिक दलमे मीलि स्वयंसेवक बनि गेलाह, से जतबे सांकेतिक आ समकालीन अछि, ततबे, तत्कालीन बिहारमे व्याप्त भ्रष्टाचारपर कठोर प्रहार। एहि कथाक प्रवाह आ शैली

हास्य-सम्राट हरिमोहन झाक गल्पकेर स्मरण तँ करबैत अछि, ई कथा समकालीन पाठकहुकें हँसैत-हँसैत लोट-पोट कय देत। करीब दू वर्ष पूर्व ई कथा 'मिथिला दर्शन'मे धरोहरक रूपें पुनः प्रकाशित भेल। किन्तु, इहो कथा मूल बांग्ला कथाक मैथिली अनुवाद थिक, से पाण्डुलिपिक अंतमे लेखक अपने हाथें लिखने छथि–(1936 ई. शारदीय संख्या आनंद बाजार पत्रिकामे प्रकाशित प्रमथनाथ निशीक एक गल्पक भावानुवाद। 1937 ई.मैथिली साप्ताहिक भारतीमे प्रकाशित)

2. सतमाय-बांग्लासँ अनूदित

सतमाय नामक कथा बांग्लासँ अनूदित कथा थिक, यद्यपि, साहित्य अकादेमीक 'शताब्दी संचयन'क सम्पादक लोकनि एकरा मूल कथा-जकाँ प्रकाशित केने छथि। एहि कथाक शैलीक समकालीन अछि। किन्तु, कथानक बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्धक अछि। साझी परिवारमे सतौतहुसँ कम वयसक सतमाय आ सतमायक भाइ लोकनिक बीच दिन-प्रतिदिनक परस्पर व्यवहारक चारूकात बुनल एहि कथाक आरम्भ एकटा रोचक संस्कृत सूक्ति, 'स्त्री रत्नं दुष्कुलादपि'सँ होइत अछि। कथाक विषय थिक-बहु-विवाह, पैघ, अशिक्षित, रोग-ग्रस्त परिवारक भीतरक समस्या, खींचा-तानी आ स्वार्थ, जाहिमे सतमाय, सतौत लोकनिक संग व्यवहारमे संदेहक परिधिमे अबितो, अंततः, परिवारक रक्षक प्रमाणित होइत छथि। फलतः, पुनः 'स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि' चरितार्थ होइत अछि।

स्मरणीय थिक, लेखक बहुत दिन धरि बंगालमे अध्ययन आ अध्यापन केने रहथि तथा बांग्ला गद्यक मैथिली अनुवाद सेहो करैत रहथि, से लेखक द्वारा हस्ताक्षरित एहि कथाक पाण्डुलिपिक छायाप्रति प्रमाणित करैत अछि। पाण्डुलिपिक अंत लेखकक हस्तलिपिमे लिखल छैक : ...सालक पौष मासक मासिक प्रवासी...मे प्रकाशित श्री ज्योतिर्मयी देवीक सतमार संतान शीर्षके एक गल्पक आंशिक परिवर्द्धित भावानुवाद (सं. 1345 साल अगहन पूसक 1937 दिसंबर 1938 जनवरीक संयुक्तांक मैथिली पत्रिका भारतीक बसंतांकमे प्रकाशित।

काशीनाथ झा
15.6.37

1937मे भारती नामक पत्रिकामे प्रकाशित ई कथा साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'मैथिली कथा शताब्दी संचयन', 2010,मे संकलित अछि। संकलनकर्ता थिकाह रामदेव झा आ इन्द्रकान्त झा। एहि पोथीमे लेखकक परिचयमे मात्र एतबे अछिः

काशीनाथ झा (बीसम शताब्दीक आरम्भसँ पांचम-छठम दशक धरि विद्यमान), धर्मपुर, लोहना रोड, दरभंगा (बिहार) भारती (1937)क नियमित लेखक।

'मैथिली कथा शताब्दी संचयन'मे पं. काशीनाथ झाक रचनाकालक विवरण त्रुटिपूर्ण अछि। कारण, पं. काशीनाथ झाक मृत्यु, करीब बयालीस वर्षक वयसक करीबमे, 1944 ई.मे भेल छलनि।

३. 'यथार्थ प्रेम' मौलिक-स्वकल्पित-गल्प

यथार्थ प्रेम नामक गल्प, जकर प्रतिलिपिमे गल्पक अंतमे स्व.काशीनाथ झा केर देवनागरीमे हस्ताक्षरक संग काल-1939 जून-अंकित अछि,कें लेखक कथाक अंतमे 'मौलिक-स्वकल्पित-गल्प' लिखने छथि।

वर्तमान शैलीक एहि लघुकथाक आरंभ सुशिक्षित संभ्रांत युवक आ एक दरिद्र ब्राह्मणक, एकटा सुन्दरी, सद्यः स्नाता कन्याक नाटकीय दर्शनसँ होइत अछि। ई देखिते प्रेम हयबाक (love-at-first-sight)क कथा थिक। कथाक अंत सेहो ओहने नाटकीयतासँ गंगाक तट पर होइत छैक, जखन बूढ़ पतिक दाह-संस्कारक पछाति वएह कन्या (बाल-विधवा) गंगामे कूदि आत्महत्याक प्रयास करैत छथि। संयोगसँ तखनहि ओतहि उपस्थित ई युवक हुनकर जान बचाकय हुनका अपना लैत छथिन।

ज्ञातव्य थिक, ओहि युगमे मिथिलामे बाल-विवाह, बूढ़-वर आ बाल-विधवा सामाजिक सत्य छल, जाहि पर अनेको कवि-लेखक कथा-कविता लिखने छथि। तथापि, बंगालक विपरीत मिथिलाक ब्राह्मण समाजमे तहिया विधवा-विवाहकें सामाजिक स्वीकृति नहि रहैक। तें, बाल-विधवाकें सभ्य-समाजमे अपनयबाक विधवा-विवाहक ई साहसिक कथा मैथिलीमे प्रायः पहिले थिक।

4. प्रेमक रंग निराला

प्रेमक रंग निराला एकटा दीर्घ कथा थिक। ईहो मौलिक कथा थिक। कारण, अनूदित कथा सबहक नीचा श्रोतक चर्चा छैक। आब ई कथा कतहु प्रकाशितो भेल अछि वा नहि से कहब कठिन। पाण्डुलिपि बहुतो ठाम गलल छैक आ बहुतो ठाम पांती सब लेभड़ायल छैक। तथापि, पूरा कथा पढ़ल जा सकैत अछि। ई कथा प्रेममे विफल एक युवक-आनंदक कथा थिक, जनिकर प्रेमिका, हिनक अपने समृद्ध बालसखा-अमरनाथक संग परिवार बसा लेने छथिन। प्रेममे असफलताक कारण आनंद अपनाकें निशाँमे डुबाकय समाप्त करबापर तुलल, पुरीमे एकांतवासमे छथि। अकस्मात, एक दिन आनंदक भेंट अमरनाथ, हुनक पत्नी (वरुणा) आ अमरनाथक युवती बहिन (नीरा)सँ होइत छनि। संयोगसँ, एक दिन आनंदक एहि असफल प्रेमक बात अचानक आ अनायास अमरनाथक बहिन, नीराक समक्ष प्रकट भ' जाइत छनि। अनायास जागल प्रेमक बलसँ, आनंदक घोर उदासीनताक पर्यन्त, आनंदक पुरान परिचित नीरा, हुनका अपनयबामे सफल होइत छथि आ प्रेमक रंग निराला चरितार्थ होइछ।

5. स्वामी नामक कथाक अंतमे '1334 साल कार्तिकक बसुमतिमे प्रकाशित रायबहादुर खगेन्द्रनाथ मित्र एम. ए. क 'प्रेमक गति' नामक गल्पक आधार पर अंकित अछि। आकारमे इहो कथा पैघ अछि।

एहि कथानायक-पैघ जमींदारक पुत्र दुर्गानाथक एक कात सुशिक्षित शहरी प्रेमिका मल्लिका छथिन आ दोसर दिस हिनक पत्नी, किशोरी छथिन। अपन इच्छाक विरुद्ध, पिताक दवाबमे भेल एहि विवाहसँ असंतुष्ट दुर्गानाथ विवाह तोड़बाले अमादा छलाह।

किन्तु, हुनक अपने अचानक दुर्घटनाक कारण परिस्थिति तेना बदलल जे दुनू नारि बीचक अन्तर अयना-जकाँ साफ भय गेल। एक दिस दुर्गानाथक प्रिय, सुशिक्षिता, आ दिलफेंक नारि, मल्लिका अविश्वनीय प्रमाणित भेलीह आ दोसर दिस, घायल अवस्थामे अस्पतालमे पड़ल दुर्गानाथक सेवाकय किशोरी अपन 'स्वामी'क विश्वास आ अधिकार दुनू पयबामे सफल भेलीह।

कथानक आ कथ्यक अनुसार ई फार्मूला कथा थिक। किन्तु, थिक तँ लेखकक अपन।

6. अटूट प्रेम नामक मौलिक कथा मिथिला मिहिरक 16 मइ 1942कें प्रकाशित भेल अछि। ई कथा एकटा जमीन्दार मदन मिश्रक कन्या मानसी आ हुनके बाल-सखा आनंदक बीच असफल प्रेमकथा थिक। आनंद नामक युवक मदन मिश्रक मित्रक संतान छलाह जे, माता-पिताक अकस्मात मृत्युक पछाति मदन मिश्रक ओतय मानसीक संग-संग पलल-बढ़ल रहथि। संगे संग पलैत-बढैत आनंद आ मानसीक बीच एतेक लगाव भ'गेल रहनि जे दुनू गोटे मनहि मन एक-दोसराकें जीवन संगी बना चुकल रहथि, किंतु अकस्मात एकदिन जखन मानसीक विवाह कोनो दोसर वरसँ स्थिर हेबाक सूचना आनंदकें भेलनि तँ ओ सोझे मदन मिश्रक समक्ष मानसीक संग अपन विवाहक प्रस्ताव राखि देलखिन। मदन मिश्र लेल ई अकल्पनीय छल फलतः एहि प्रस्ताव पर क्रुद्ध भ' मदन मिश्रक आनंदक अपमान क' देलखिन। एकर दारुण फल भेल; आनन्द आ मानसी विवाहक निर्धारित दिनक पछिले राति पानिमे डूबि आत्महत्या क' लेलनि।

कथा आकारमे छोट अछि, समस्या विवाहेक छैक। लेखकक समयमे मैथिलीमे बहुतो कथा विवाहक समस्या पर लिखल जाइत छल, किन्तु बालसखा लोकनिक बीच प्रेमक अछैतो मनोनुकूल विवाह नहि भेलासँ विद्रोहक उदाहरण ओहि समयक मैथिली कथामे कतेक सामान्य छल से अनुसंधानक विषय थिक।

उपरोक्त अनेक कथाक पढ़लासँ एतबा तँ प्रतीत होइछ जे स्व. पं. काशीनाथ झाक लगभग सब कथा पुरुष आ नारिक बीचक कथा थिक जाहिमे 'प्रेमक पंथ निराला'-जकाँ जँ कतहु नारि विनाशक कछेर पर ठाढ़ पुरुषक जीवन बचा लैत छथिन, तँ कतहु, 'यथार्थ प्रेम'-जकाँ, पुरुष नारिकें अपना कय समाजक हेतु नव उदाहरण बनैत छथि। किन्तु, एकटा नव गप्प अवश्य। हमरा जनैत, सभ्य-समाजमे बाल-विधवाकें अपनयबाक घटनाकें मैथिली कथामे अननिहार स्व. पं. काशीनाथ झा प्रायः पहिले कथाकार थिकाह। ताहि दृष्टियें काशीनाथ झाकें मैथिली साहित्यमे विधवा-विवाहक अग्रदूत कहियनि तँ अनुचित नहि हयत। लेखकक बंगालमे शिक्षा-दीक्षा आ बांग्ला साहित्यसँ हिनक परिचय एहि उदार दृष्टिक कारण हो, से संभव।

अंतमे, उपलब्ध सामग्री आधारपर पं. काशीनाथ झा का.ती. सिद्धहस्त पारम्परिक कवि, आरंभिक अनुवादक आ कथाकार प्रतीत होइत छथि, जनिकर भाषा क्रमशः परिमार्जित होइत समकालीन होइत जाइत छनि। हिनक सोच प्रत्यक्षतः तत्कालीन समाजक सोचसँ आगाँ बूझि पड़ैछ। ततबे नहि, हिनक समाज सुधारकक दृष्टि रहनि आ हिनका बालोपयोगी ग्रन्थक रचनाक चिन्ता सेहो छलनि। मैथिली साहित्यक दुर्भाग्य थिक जे ई अल्पायु तँ भेवे

केलाह, परिस्थितिवश हिनक अधिकतर कृति बोहा गेलनि। किन्तु, एतबा तँ कहिए सकैत छी, जे अपन अल्प जीवनमे भाषाक रूपमे मैथिलीमे जाहि कथूक अभाव हिनका बूझि पड़लनि तकर पूर्तिक हेतु ई यथासाध्य परिश्रम केलनि। एहन रचनाकारकें जँ प्रकृति जीवनक औसत लम्बाई देने रहितनि तँ निर्विवाद ई मैथिलीक अओरो श्रीवृद्धि करितथि। एकटा गप्प आओर, एखन धरि आचार्य रमानाथ झा द्वारा चर्चित हिनक उपन्यास आ नाटकक कतहु उपलब्ध नहि। तें, हिनक यत्र-तत्र छिड़ियायल कृति आ खोजक आवश्यकता अछि।

जेना पहिने कहल, साहित्य अकादेमीक 'शताब्दी संचयन'मे प्रकाशित हिनक परिचयसँ पं. काशीनाथ झाक 'भारती' पत्रिकाक नियमित लेखक हयबाक सूचना अवश्य भेटैत अछि। संभव अछि, 'भारती' आ ओहि समयक मैथिलीक आन हस्तलिखित व मुद्रित प्रकाशनक उपलब्ध प्रति सबहक जाँच-पड़तालसँ पं. काशीनाथ झाक आओर कृति भेटय। एहि संभावनापर काज संभव छैक। साहित्यक इतिहास अनेको आश्चर्यक भंडार अछि, ई कखन कोना चकित कय देत, के कहत। तें, आगूओ जँ हुनक आओर रचना उपलब्ध भेल तँ मैथिली साहित्यमे पं. काशीनाथ झाक योगदानक सम्यक आकलन भ' सकत, से अनुमान करब अनुचित नहि।

संदर्भ

1. झा रमानाथ (संपादक) मैथिली कविता संग्रह, 1941, दरभंगा।
2. झा पं. दुर्गाधर, दरभंगा राजक धौतपरीक्षा, उद्यान किरण 2019, अंक-7, पृ. 26-28

आभार

1. प्रोफेसर केदार नाथ झा जे श्री महेन्द्रनाथ झाक अप्रकाशित शोध-प्रबंधक अंश आ काशीनाथ झाक उपलब्ध कृति सबहक छायाप्रति आ पं. काशीनाथ झाक फोटो उपलब्ध करओलनि।
2. प्रोफेसर भीमनाथ झा आ डाक्टर अशोक कुमार मेहता जे आचार्य रमानाथ झा द्वारा संकलित काशीनाथ झाकेर तीन गोट कविता उपलब्ध करओलनि।
3. झा काञ्चीनाथ, महाकवि प्रो. तंत्रनाथ झा, मैथिली आ हम–उद्यान किरण 2019, अंक-7, पृ. 10-14
4. झा महेन्द्रनाथ, उजान परिसरक विशिष्ट मैथिली साहित्यकारक कृतिक समीक्षात्मक अध्ययन 1986 ल.ना.मि.वि. दरभंगामे पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध।

मो. 9443565640



यथार्थ प्रेम

पं. काशीनाथ झा, का.ती.

मालती एक दरिद्र ब्राह्मणक कन्या छलीह। गाममे जे बाबू...छलाह तनिके फूल तोड़ि, पानि भरि पिता जनार्दन झा दिन बितबैत छलाह। मालतीक जन्मक समय ओकर मायक मृत्यु भय गेल छलैक। बूढ़ारीक एकमात्र टूगर सन्तानकें पिता परम यत्नें पालन कएलनि। कालें मालती 12 वर्षक भय गेलि। मालतीक...कन्यादानक हेतु पात्रक खोज कय रहल छलाह...दरिद्रक कन्या विवाह करबाले कोनो योग्य व्यक्ति भेटब कठिन छल। पढ़ल लिखल वा धनी वरक मूल्य जनार्दन झाक साध्यातीत छल। अयोग्यक हाथें कन्यादान करबामे बापक मन नहि मानैत छल। अतः एखन धरि मालती कुमारिए छलि।

घोर दरिद्रताक कारण, गहनाक कोन कथा एकटा व वस्त्रो मालतीक देह पर नहि पड़ल छल। हबेली सबहक फाटल पुरान छाड़ीए ओकर शरीरक जाड़कालाक शीतक निवारक हैत छल। भरि पेट नीक भोजनो कदाचिते नोतहि पिहाने हैत छलैक। किंतु तथापि विधाता अपन सौन्दर्य सृष्टि कौशल देखैबाक हेतु मालतीअहिकें किएक चुनने छलाह एहो एक आश्चर्याह विषय छल। फाटल पुराणे वस्त्र खंडक भीतर किशोरी मालतीक अनुपम रूप...कोनो महराजक कुमारीक ईर्ष्याक विषय भए सकैत छल। मानू एक क्षुद्र शुष्क डाबरमे लीद सेमारसँ झांपल एक स्वर्ण कमल विकसित भेल छल।

फागुन मासक पछबा बसात शीतकें जगबैत, सुखायल पातकें खरखरबैत, लोकक देहकें कंपबैत हाड़...दि रहल छल। मालती भोरे-भोर पोखरिमे स्नान कय रहल छलि। अकस्मात् एक 20 वर्षक किशोर युवक मूर्ति कामदेव जकाँ ओही घातपर आबि पहुँचलाह। मालतीक ध्यान एम्हर नहि छलैक। किंतु मानसरोवरक स्वर्ण कमल जकाँ पोखरिक जलमे मालतीक कमनीय मुखारविंद देखि ओ युवक ठिठकि ठाढ़ भय रहलाह एवं एकटक ओ अनुपम सौन्दर्य शोभा देखय लगलाह...केओ एकरा धृष्टता कहि शकैत छथि, किंतु वस्तुतः ई परिस्थिति विवशताए छल जे युवकक दृष्टि...मन विह्वल ओ विवश कय ओही ठामसँ हंटय नहि देलक।

सूर्य्यकें प्रणाम कय घात दिशि फिरितहि मालतीक दृष्टि ओही युवक पर पड़ल। साक्षात् देवकुमार सम एक अपरिचित युवक कें एकाएक अपन सद्यः स्नान नग्न सौन्दर्य्य सुधा पान करैत देखि किशोरी लाज सौं सहमि ऊठलि। मालतीकें जलसँ बाहर हयबाक अवसर नहि भेलैक। ओ ठामहि पानिअहिमे ठाढ़ि भय...आँखि स्वतः झूकि गेल छलैक। संसारज्ञान विहीन सरल मुग्ध किशोरीक मनमे...पना वा आन कोनो भावक उदय असंभव छल। मालती संकुचिता भय गेलि संगहि ओही कुमारक अनुपम मुखश्री ओकर मानस पटल पर न छाया अंकित कय देलक एवं हृदयमे एक अभि रसक संचार

कय देलक, जकर यथार्थ स्वरूप ज्ञान...अबोध बालिकाकैं तात्काल किछु नहि भय शकलैक।

युवक बालिकाक संकोच देखि किछु अप्रतिभ भय बाजि उठलाह–'हम आन ठामक रहनिहार थिकहुँ। बुझल नहि छल जे एही घातपर भोरे भोर स्त्रीगण स्नान करैत छथि। तैं आबि गेलहुँ। एलाक बाद लगले हंटि नहि शकलहुँ। कारण अपनहुँ नहि बूझैत छी। अहाँक सम सरल मति बालिकाकैं कि बुझाएब हमर एतबे अनुरोध जे एही बातक चर्चा नहि हो और हमर जे दोष भेल हो तकरा माफ करब।'

अहा, केहन मधुर शब्द! मालतीक कान जुड़ा गेल। सब संकोच त्यागि ओ आँखि उठौलक। युवक विदा भय चुकल छलाह। कइएक डेग जाय ओ पाछाँ तकलनि। एहि बेर चारू आँखि एक भय गेल। बालिका पुनः माथ झुका लेलक ओ अपन वस्त्र सम्हारय लागलि। युवको आर किछु...नहि कय अपन रास्ता धएलन्हि।

विजयनाथ एम.ए. क्लाशक विद्यार्थी थिकाह। हिनक पिता शंभुनाथ मिश्र एक प्रतिष्ठित जमींदार छलाह एवं सपरिवार पटनाएमे रहैत छलाह। विजयनाथ माय-बापक एकमात्र सन्तान हयबाक कारण अत्यंत दुलारू छलाह। किंतु एहन स्थितिमे साधारणतः धनिक बालकक जे परिणाम हैत छन्हि, विजयनाथ तकर अपवादे सिद्ध भेलाह। थोड़े वयसमे कृतित्वक संग प्रवेशिका, एफ-ए. ओ बी.ए. परीक्षामे उत्तीर्ण भय ओ एम.ए. पढ़ि रहल रहथि। संगहि संस्कृत साहित्यक अध्ययन कय प्राच्य दर्शनहुक द्वार खटखटा रहल छथि।

एहन योग्य बरक हेतु कन्यागत सभक भीड़ लगबे उचित छल। एतेक दिन धरि शंभुनाथो बाबू बीससँ कम वयसमे वा बी.ए. पास हयबासँ पूर्व बालकक विवाह नहि करायब कहि कथा टारैत अबैत छलाह। आब से प्रतिबंध नहि रहल। आँगनमे विजयक माय पुतोहूक मुँह देखबालै व्यग्र भय गेल छलीह। संयोगवश एक कथाओ एहन उपस्थित भय गेल जाहिमे अपन सदृश जातिकुल ओ रूप गुणक संगहि पूर्ण अर्थ लाभओ भय रहल छल। शंभुनाथ बाबू एहन कथाकैं जाय देब अनुचित बूझि स्वीकार कए लेलन्हि। विवाह ओरियाओन होबय लागल।

एही समयमे विजयनाथ अपन मित्र मंडलीक संग शिव...अवकाशमे दूर एक गाममे शिकार करय गेल छलाह। वापस फिरला पर अपन विवाहक संवाद शूनलन्हि। सूनि किछु चिंतित भय उठलाह। बचपनहिसँ पितामाताक दुलार ओ किछु स्वतंत्र प्रकृतिक भय उठल छलाह। जखन जे इच्छा होन्हि से पूर्ण भय जाइत छलन्हि। किन्तु, संप्रति एहन एक समस्या उपस्थित भए गेल छल जाहिमे विजयनाथ अपन इच्छानुरूप चलबाक उपाय नहि देखलन्हि। पिताक अनुमति पाएबो असंभवे छल। अथच, पीटक व्यवस्था पर चलबो हुनिक हेतु कठिने छल। शोचि विचारि विजय सम्प्रति एही विवाहरूपी

आफतकैं टारि देबे विहित बूझलन्हि। ककरो द्वाराऐ बापकै कहौलन्हि–'पढ़ब समाप्त करबासँ पूर्व हम कथमपि विवाह नहि करब।'

पुत्रक उत्तर पाबि पिता क्षुब्ध भय उठलाह। मायक अनुरोध प्रबल भय उठय। किंतु विजयनाथक उत्तर नहि बदलल। अंतमे पिताक क्षोभ क्रोधमे और मायक अभिमान क्रंदनमे परिणत भेल। तथापि विजयनाथ निश्चल-अटल रहलाह। विवाह करब स्वीकार नहि कएलन्हि। बेशि जोर कएलैं गृहत्याग कए चल जयबाक धमकीओ देखौलन्हिं। दुलारू संतानक जिद्दसँ मायबाप हारि मानलन्हि।

अबोध विजयनाथ! अहाँ अपन विवाह एहुना दू चारि...लेब। किंतु ताहिसँ की? भविष्यत्मे स्वतंत्र भेला पर मातापिताक मन विरुद्धो कार्य्य कय शकबाक अभिलाषा? किंतु कुमारि कन्या-चेतनि कि अहँक हेतु दू-चारि वर्ष तकनहु कि रहति? सेहो बिना किछु कथा वार्ताएके? अहाँक मनक बात के बूझत वा ओत अहाँक सम स्वतंत्र जीव. ..जे अपन अंभिभावकक मत विरुद्धो चलत! समाज...त कि अहाँक बूझल नहि अछि। कन्या कतेक दिन तक कुमारि रहि शकत? कोन तरहैं अपन अभिभावकक मत खंडन करत? एहि समाजक कन्याकैं त एतबा बजबहुक अधिकार नहि छैक जे एखन वा एही बरसँ विवाह नहि करब! तखन ई पागलपनी कि हेतु? ककरा लै?

माघक अमावास्यामे अर्द्धोदयक योग लागल छल। लाखक संख्यामे अबालवृद्धवनिता अपन जीवन भरिक पापकलुष धोकय पुरुषाक उद्धारकामनासँ गंगातट पर उपस्थित भेल छल। केओ स्नान कय रहल अछि, केओ संध्यातर्पण। केओ ऊपर भय ठकठकाइत वस्त्र बदलि रहल अछि केओ जाड़ै सिकुड़ैत स्नानक उपक्रमे कए रहल अछि। एहि जन समागमसँ किछुए दूर पर एक चिता प्रज्वलित भए उठल। एक बृद्धक शवदाह भय रहल अछि। दाहक...लोकनि आगि पजरलापर किछु फराक भय गप्प करए लगलाह। बृद्धक मृत्यु-अतः शोकक कोनो कारण नहि। किंतु, दूर फराकमे दू तीन स्त्रीगण कानि-कानि विधि पूरा रहल छलीह। ओहिसँ आरो किछु दूर फराकमे एक तरुण युवती सद्यः विधवा, मूड़ी गाड़ने बैसलि छलि। ओकर मुँह तँ देखल नहि जाइत छलैक किंतु चेष्टासँ चिंता ओ विक्षिप्तताक भाव स्पष्ट परिलक्षित भए रहल छल।

अकस्मात् ओ युवती किछु बरबराए लागलि। सब बाट आनक शूनबा योग्य नहि हैत छलैक, किंतु भावावेशतः कतोक अंश लगक लोगकैं स्पष्ट शूनय योग्य उच्चारित भेल–'हाय देवता! अहाँ कतय छी! एक बेरि फेर दर्शन हैत! आइ हम मुक्त छी। परंतु आब तँ हम अहाँक दर्शनो करबाक योग्य नहि रहलहुँ! ओ त स्वप्ने छल। कतय देवता आ कतय भिखारिणी! दर्शन किए देल! ई मोह किए! आब एही जीवनसँ फले कि! गंगा मा, शरण दिअ।'

एकाएक ओ ऊठि गंगामे कूदि खसलि। शब्दसँ लोक चौंकि उठल, वस्तुस्थिति बूझलक। किंतु, प्रतीकार ककरो किछु नहि फुरलैक। 'अभागलिक दुखक अंत भेलैक।'

कहैत संगी परिजन लोकनि दीर्घ निःश्वास परित्याग कएलन्हि। स्नानार्थी लोकनि–जे दूरसँ ई दृश्य देखलन्हि विविध प्रकारक टीका टिप्पणी करय लगलाह।

किंतु ओही यात्री वर्गमे एक एहनो युवक छलाह जनिक दृष्टि आदिअहिसँ एही युवती दिशि आकृष्ट भए गड़ि गेल छल। युवतीक प्रत्येक चेष्टाक प्रति हुनक लक्ष्य छलन्हि। स्नाने करैत करैत क्रमशः ओ सहटि कए जलमे ओहि सामने आबि गेल छलाह, जाहि ठाम जलसँ किछुए ऊपरमे युवती बैसलि बरबरा रहलि छलि। ओहि अंट-संट वाक्यक किछु अंश ओ शूनिओ चुकल छलाह। युवतीकैं गंगा जलमे डूबैत देखि ओ ओही दिशि हेलि गेलाह। किछु दूर जाइत जाइत हुनका ओही जलमग्नाक बिखरल केशराशि देखि पड़लन्हि। झट ओतय पहुँचि अपन अपरिमिति जलें युवतीकैं पकड़ि पांजमे लए ओ तट दिशि अएबाक प्रयास करय लगलाह। स्रोतक कारण सोझे तीर दिशि आयब कठिन छल-ताहि पर दोसर व्यक्तिक बोझ। युवक श्रांत भए गेलाह। कथं कथमपि सोतक संग युद्ध करैत अंतमे ओ सफल भेलाह। युवतीकैं लेनहि ओ तट पर पहूँचि गेलाह। किंतु एतबा समयमे ओ लोकनि भासि कए बहुत दूर भाठामे आबि गेल छलाह। ओ स्थान मेलाक स्थानसँ बहुतो फराक छल।

सैकत पर आबि युवतीकैं नीचा राखि युवक ओकर श्वास ओ नाड़ी परीक्षा कैलन्हि। कोनो विपर्य्यय नहि भेल छल। युवती पानिमे खसितहि अचेत भए गेलि छलि तैं पानि बेशी नहि पीने छलि। जाड़क कारण ओकर देह ठिठुरि रहल छलैक। युवक एम्हर ओम्हर तकलन्हि। लगहिमे एक धुंआयित चिता छल। कैकटा बांसक टुकरो छल। युवती शीघ्रतासँ आगि पजारि युवतीकैं सेकय लगलाह। उत्तापसँ देह गरम भेलापर चेतना फिरि आयल। युवती आँखि खोलि देलक।

युवक युवतीक माथ अपन कोरमे लय परिचर्या कए रहल छलाह। आँखि खोलितहि युवतीक दृष्टि युवकक...मुँह पर पड़ल। आगिक उज्वल प्रकाशमे ओ मुँह देखितहि युवती चौंकि उठलि। मुँहस बाहर भय गेलैक–'अहा! देवता?' युवक व्यग्रतासँ पूछलथिन्हि–'मन केहन लगैत अछि?' युवती शिहरि उठलि–'ओएह स्वर तँ थिक! आह फेर स्वप्न राज्यहिमे चल अयलहुँ! परंतु ई स्वप्न तँ कल्पनाअहुसँ बाहर छल। अवश्य दिन रातिक चिंताक विषय स्वप्नमे देखल जाइत छैक। अहा, ई स्वप्न जँ सत्य हैत। तन्मयतासँ युवतीक आंतरिक भावना स्पष्ट वाक्यमे व्यक्त भए गेल। युवती बाजि उठलि–'स्वप्न जँ सत्ये होइतैक!'

युवक कहलथिन्हि–'अहाँ स्वप्न नहि देखैत छी। ई यथार्थ सत्य थिक। हमरा चिन्हैत छी?'

युवती नीक जकाँ देखि कहलखिन्हि–'सत्य? अहाँ तँ प्रथम दर्शनहिक दिनसँ सदिखन हमर आँखिअहिमे बैसल छी। चिन्हबाक तँ प्रश्ने कोन? परंतु ई की यथार्थ सत्य थिक? हमरा आब मन पड़ैछ जे हम गंगाजीमे डूबलि छलहुँ। कि हम मरि कय स्वर्ग

आयलि छी? अहाँ देवता तँ स्वर्गहिक रहनिहार थिकहुँ!'

युवक युवतीक कपार पर हाथ फेरैत कहलखिन्ह–'अहाँ मुइल नहि छी। मरौ अहाँक शत्रु। अहाँकें हम गंगासँ ऊपर केलहुं अछि। एखन गंगाक तट पर छी। ई स्वर्ग नहि थिकैक। वरं श्मशानमे छी।'

आशातीत स्पर्शक अनुभवसँ युवतीक आँखि बंद भए गेलैक। ओ बाजलि–'ई स्वर्ग नहि थिक तँ स्वर्ग ककरा कहैत छैक? दोसर कोनो स्वर्गक तँ हम कहियो कामनाओ नहि कएल। हमर स्वर्ग, हमर देवता हमरा भेटि गेल छथि। कृपा कए किछुओ काल हमरा ई स्वर्ग सुख भोगि लेबए दिय। हम बड़ दुखिनी, बड़ अभागलि छी; देवता! हमरा विश्वास नहि हैछ जे ई सत्य थिक।'

युवकक आँखि डबडबा ऐलन्हि। युवती कै उठा अपन अंकमे लय कहलथिन्हि–'हम तँ देवता नहि थिकहुँ। अहाँकें देखलाक बादहिसँ अहींक हेतु हमहु पागल भए गेल रही। परंतु हमर पिताक मतक विरुद्ध किछु करबाक स्वतंत्रता नहि छल। संयोगवश हुनक परोक्ष भेला पर अहाँक अनुसंधान कय शूनल जे अहाँ सासुर चल गेलहुँ। ताहि दिनसँ अहाँक सब परिचय बूझल रहलहु अहाँसँ भेट करबाक साहस नहि भेल। आइ संयोगवश अहाँकें देखल। सब बात बूझि गेलहुँ। गंगा तट पर अहाँक करुण विलाप शूनि आरओ व्यग्र भए गेलहुँ। तकर बादे अहाँ गंगामे कूदि खसलहुँ। यथासाध्य चेष्टासँ अहाँकें बचा शकल छी। ई हमर भाग्यक फल थिक। आब अहाँ चिन्ता जनु करी। हम अहाँकैं आब छोड़ि नहि शकैत छी। अहाँ हमर भए कए रहि शकब?'

युवती मुस्कुरा देलकै–'अहाँक तँ सब दिन छीहे, नव पर कि हएब?' एतबा कहितहि किछु म्लान भए पुनः कहलखिन–'परंतु हम तँ आब देवताक पूजा करबाक अधिकारिणी नहि रहि शकलहुँ। यद्यपि हम अहाँकें छोड़ि एको पलक हेतु हृदयमे अनका स्थान नहि देने छी। टाकाक अभावै पिता एक बूढ़ रोगीक हाथै बेचि देलन्हि। शरीरो हमर अद्यावधि पवित्रे रहल। परंतु तथापि हम तँ विधवा छी।' युवतीक आँखिसँ नोर बहय लगलैक।

कोमल हाथै ओकर नोर पोछैत युवक कहलथिन्ह–'तकर कोन चिंता? शास्त्रानुसार अहाँक फेरि विवाह भए शकैत अछि। अहाँ पवित्र छी। आई गंगाजी स्वयं अहाँकें हमरा हाथमे दए देलन्हि। वैह साक्षी। आब हमरासँ अहाँकें केओ नहि हटा शकैछ। तुच्छ लोकाचारक भय हमरा नहि अछि।'

युवतीक आँखिसँ पुनः अश्रुधारा बहि चलल। युवकक मुँह दिशि ताकि कहलक–'देवता यथार्थ देवताए हैत छथि, परंतु हमर हेतु अहाँ किए समाजक गंजन सहब? हम सबसँ हजारो लौंडी अहाँक पैर तर ओहड़ाइत रहति। हमर पिताओ नहि छथि। कतहु संबल नहि। हमरा मरए दिय। हम एहि क्षणिक सुखक स्मृति-संबलसँ अनंत काल तक जन्म जन्मांतरमे अहाँक प्रतीक्षा करैत रहब।'

'कदापि नहि। हाथक मूष बिअरिमे दय कड़े-कड़े करैत रहब, ई हमर बूते नहि हएत। अहाँ हमर थिकहुँ। समाज अंध अछि। हमरा तकर डर नहि। गंगाजीक दान हम छोड़ि नहि शकैत छी। ई हमर शिवदर्शन दिनक उत्पन्न ओ अर्द्धोदय स्नान्नैं परिणत सद्यः फल थिक। अहाँ स्वीकार करू। हम पुनः कहैत छी एहिमे धर्म्मतः कोनो बाधा नहि अछि।'

एतबा कहैत युवक विजयनाथ मालतीकैं अपन अंकमे लए लेलन्हि। मालती–'अहाँक तँ हम सब दिन छीहे।' कहैत हुनक छातीमे मुँह लुका लेलन्हि। दुनू गोटाक आँखिसँ हर्षाश्रु झरि रहल छल।

ओही समयमे गंगातटपर केओ साधु गाबि उठल–

जखन हटै अछि स्वार्थ, तखनहि प्रेम यथार्थ।

(1939 ई.मे रचित एहि कथाक वर्तनीकें यथावत रखल गेल अछि। पाण्डुलिपिक पन्ना कतहु-कतहु गलि गेल छैक। तथापि, एहि कथाक प्रत्येक शब्द लेखकक थिक। रचनाक बेरासी वर्ष पछाति एहि कथाक प्रकाशन मैथिलीमे लेखकक योगदानकें रेखांकित करबाक हेतु एवं हुनकर छिड़ियायल कृतिक अन्वेषणकें गति देबाक उद्देश्यसँ कयल जा रहत अछि, कथाक प्रतिलिपि प्रोफेसर केदारनाथ झाक सौजन्यसँ उपलब्ध भेल–कीर्तिनाथ झा)



कथा-समवेत

एहि अंक मे प्रस्तावित बहुत रास कथाकार छलाह जनिक रचना समय पर नहि प्राप्त भ' सकल। गंगानाथ गंगेशक कथा मैथिली कथा मे एक नव क्षितिजक उद्घाटन करैत छथि। लगधग पचास बर्खक बाद ओ कथा लिखलनि अछि जे औपन्यासिक गरिमा लेने अछि। विभूति आनन्द एम्हर लगधग पन्द्रह गोट कथा लिखलनि अछि, जे विरल रचनात्मकता थिक। हुनक कथा मैथिलीमे नव संभावनाक आहटि थिक। शैलेन्द्र आनन्दक बौका, शिवशंकर श्रीनिवासक जीवनधारा, अशोकक टोपी, गौरीनाथक केबाड़, हीरेन्द्र कुमार झाक मास्क, प्रमोद कुमार झाक खन्ना साहेब ओ आशुतोष कुमार झाक क्षतिपूर्ति—ई सभ कथा वर्तमान जीवनक औनाहटि, सोच, नव चिन्तन, विद्रूपतासँ भरल अछि आ अत्यन्त पठनीय अछि। केबाड़ मे अतीतक एक गौरवोज्ज्वल पक्षकें देखबाक चेष्टा अछि, जे आब अपन लोकक मूढता आ छल-छद्मसँ नष्ट भ' गेल अछि। आउ, हिनका लोकनिक कथा-रससँ जीवन-रस ग्रहण करी।

आध जनम हम नींद गमाओल

गंगानाथ गंगेश

चारि बजे भोरे मुर्गा बांग देब' लागल, निन्न टुटि गेल। ओना निन्न रातिमे कतेको बेर टुटैत अछि। लॉकडाउन लगैत अछि, मोन अलसिआयले रहैत अछि, फेर लगैत अछि फेर टुटैत अछि। छोट भाइ लगातार जमीन बेचने जाइत अछि आ गौआँकें मिट्ठ-मिट्ठ कोचिया क' कहैत अछि, हुनका गामसँ कोनो मतलब नहि छनि, पाहुने जकाँ पाबनि-तिहारमे अबैत छथि। गामक लोककें पिच्छड़ आ पेंचैल लोक बेस पसिन्न पड़ैत छै, जासूसी कहानीक आनंद भेटैत छै। ई मुर्गा कते चौकन्ना हैत, जे हमरा निन्नसँ जगा गेल। ई मुर्गाबला दोकान बंदीओमे भरिदिन पछुअतिसँ चालूए रखैत छल पुलिसकें मिलाक'। भरि राति केहन-केहन सपना अबैत रहल। ट्रेनसँ जा रहल छी बीच रस्तामे कतहु बेटा उतरि गेल, तकैत-तकैत कान' लगैत छी। निन्न टुटलापर बेटाकें सूतल पबैत छी। एहिना एकटा सपना आयल, पंद्रह बर्ख पहिने मृत पिताकें मुजफ्फरपुर बूढ़ी गंडक बान्हक कातमे गायकें चोकर खुअबैत आ गाय दुहैत लोकक बीच देखलियनि। हमर पिता दलानसँ मात्र भोजनेक बेरमे उतरैत छलाह, माल-जाल खुजि गेल तँ नोकर-चाकर वा रस्तासँ जाइत कोनो बटोही मालकें खुट्टामे बान्हि देलक। हुनका विषयमे लोकोक्ति अछि जे खड़ामसँ नीचा नहि उतरला। पिताक अस्थि-संचयक बाद फूला ल' क' पिताक भगिनमान भैयारी गोपीकक्का सिमरियाघाट गेल छला।

पितासँ पंद्रह-सोलह बर्ख पहिने पितामहीक फूला ल' क' पिताक पितिऔत भाइ सिमरिया कहिक' विदा भेला आ मुजफ्फुरपुरक बूढ़ी गंडकमे विसर्जित क' आयल छलाह, मुदा हम हुनक चालाकी पकड़ि लेने छलहुँ आ पिताकें सभ बात कहलियनि। पिता कहलनि—छार-भार ओकरे कपार। संगे पिता अपन पितिऔतकें धिक्कारबो कयलनि। हमर प्रतिवाद पर पिता कहने छलाह, जे बूढ़ी गंडक त' गंगेमे ने मिलैत छै। बेर-बेर लॉकडाउन आ चिड़ियाखाना प्रात: विहार पर प्रतिबंध। रिटायर कयलाक बाद संजय गांधी जैविक उद्यान मात्रमे जीवनक स्पंदन सुनाइ दैत अछि। आइ कोरोना बंदीक डेढ़ मास बाद चिड़ियाखाना खूजल अछि, मुदा लोक कम्मे अबैत अछि। एहिसँ नीक कोरोनाक बंदीए छल, जे मृत्युक भयसँ अंदरक सभ दर्द-विषाद झँपायल छल। लोककें ओहि आंतरिक पीड़ासँ कोन मतलब ? बड़ बेसी तँ 'गुड मार्निंग' आ कुशल-मंगल। नेपाली जीक गीतमे भरि इच्छा भिजैत छी-बदनाम रहे बटमार मगर घर तो रखवालों ने लूटा...मेरी दुल्हन सी रातों को नौ लाख सितारों ने लूटा...रह गए खुले भर रात नयन, दिल तो दिलदारों ने लूटा...। सपनासँ बेशी क्लिष्ट जागब अछि, जाहिमे क्रमश: सभ किछु गमयबाक अनुभूति होइछ, सेवानिवृत्तिक बाद तँ साल-दर-साल सभ जरिआयल जाइत अछि। फ्रायड सपनाक विश्लेषणमे दृष्टान्त दैत छथि, जे कोनो अतीतक अनुभव कोनो घटना आ स्थानसँ जुड़ि जाइछ अनुभूतिक तीव्रता वा अकस्मात् तीव्र ध्वनिक संग आ से निन्न टुटबाक कारण सेहो बनि जाइत अछि। इंजीनियरिंग कालेजमे जहिया पढ़ैत रही, एही बूढ़ी गंडक कातक कोनो विशाल रमना छल जकर एक भागमे सिमेट्री छल ब्रिटिश कालक। ओही रमनामे लगभग एक मास धरि इंजीनियरिंग सर्वेक प्रोजेक्ट चलल छल। एकर कते दिन बाद वर्तमान हाइवेक निर्माण-कार्य शुरू भेल छल, जे बैरिया बसस्टैंडकें जोड़ैत छल। हाइवेक निर्माण अंतिम बर्ख धरि अपूर्णे छल। चौबगली गाछी सभ छल, जत' कहियो काल हमसभ एकटा इनारक डोल-डोरीसँ पानि भरिक' मैदान दिस जाइत छलहुँ, कहियो गाछी सभमे घुमबोक ख्यालसँ जाइत छलहुँ, संगमे रहैत छलाह नरार (मधुबनी)क विनोद जी जे बोकारोमे बसि गेलाह। हँ तँ कहि रहल छलहुँ सर्वे प्रोजेक्ट द', हम सभ मौका देखि आकर्षक संगमरमरक समाधि सभ (जे असंख्य छल) लग सुस्ताइत छलहुँ, गुलमोहरक गाछसँ झरैत लाल-लाल फूल संगमरमरक समाधिपर चढ़बैत छलहुँ। ओहि पर अंकित एपिटाफ पढ़ैत छलहुँ जे मैम, माइ डियर वा माइ डार्लिंगसँ शुरू होइत छल आ चान-तारा, डिवाइन हेभेन, हर्टिएस्ट वा सोलेम धरि जाइत छल। अंग्रेज सभ अपन प्रियजनक मृत्युक निशानीकें कोना संरक्षित रखैत छल, सेलिब्रेट करैत छल। आ हमसभ जरैत लहासकें छोड़ि वैदिक मंत्र संग श्राद्ध आ विन्यासक संग भोज-भातमे रमि जाइत छलहुँ। भावनाक प्रदर्शन एम्हरो छल, ओम्हरो छल। मुजफ्फरपुर शहर ताहि दिन शहर छल, दरभंगा जकाँ देहाती शहर नहि। ओहि शहरक आत्मा छल मोतीझील आ कल्याणी। सरैयागंजमे नामी मारवाड़ी सभक कपड़ाक बड़का व्यवसायक शृंखला आ मोतीझीलसँ कल्याणीधरि एकसँ एक सिंधी-

पंजाबी होटल सभ, एकसँ एक फिल्म टाकीज सभ। इंजीनियरिंग कालेजसँ एक-दू किलोमीटर पहिनहिसँ शहरक धुकधुकी बंद भ' जाइत छल, ताहूसँ ओम्हर नट, बंजारा सभक खोली मोन घिना जाइत छल। अर्थात् मुजफ्फरपुरक शान छल बाहरसँ आयल मारवाड़ी, सिंधी आ पंजाबीक जमल कारोबार आ बसावट। क्रमश: चौरासीक बाद ओकर सभक पलायन जोर पकड़लक। ओना स्थानीय जातीय वर्चस्वक लड़ाइ पहिनहु छल। आ क्रमश: शहर देहात भ' गेल, एकर विविधता धराशायी भ' गेल। ओना बिल्डिंग आ पुल-सड़कक जाल देखि चकबिदोर लागि जाइत अछि, जेना देहातमे कनिके धनमे अगराय लागत। ओना शहरक शान चतुर्भुज स्थान सेहो छल अपन जमींदारी शानमे। आइयो अछि मुदा मृतवत्, अप्रासंगिक। ओम्हर खुदीराम बोसक स्मारक, डिस्ट्रिक्ट जजक निवास, कंपनीबाग, बस-स्टैंड, स्टेशन आ एम्हर जिलास्कूल, चैपमैन गर्ल्स स्कूल जे गौशाला रोडसँ ससरैत कन्हौली खादीभंडार धरि शहरक धड़कन अस्त भ' जाइत छल। आब तँ कोन-कोन वाचस्पतिनगर आ शास्त्रीनगर आदि सन-सन नाम चौबगली बोचहासँ मुसहरी धरि पसरल शहरक अपहरण आ अतिक्रमण क' रहल अछि। ओइ जमानामे मुजफ्फरेपुर एहन शहर छल जत' आठ आनामे पूरा शहर घुमि आउ रिक्सा सँ। किछु दिन पूर्व एक लगक गामक अकड़ैत कहने छलाह—जे जीरो माइल लग घर बनौलक अछि—एकाध सौ लोककें राति-विराति शरण द' सकैत छी। कहियो बससँ आबी तँ दर्शन दिअउ। दोसर दिन बसपर चढ़ा विदा क' देब। आब आठ आनाक रिक्साक सवारी बिसरि जाउ। आब तँ हजारो रुपया खर्चक' असंख्य कौटिल्य नगर, पंचशील नगर, वाचस्पति नगर आ शास्त्री नगरक जाल जे वृंदावन धामधरि पसरल नगरक अमरलत्तीक जाल आ ओहिमे गुंजायमान पहिलुक ग्रामीण रौंड़ी-बेटखौकीसँ पार नहि पाबि सकब। आ मोतीझील आ कल्याणी जे नगरक आत्मा छल फ्लाइओभर आ मॉलनुमा बिल्डिंग सभक पिंजड़ामे रेढ़ कटैत बुझायत। ओना बरसात कालमे एहि हृदय-प्रदेशमे बाढ़िक नारकीय दृश्य एकरा आब आर पहिनहि छुबैत छै। मोन कहैछ, विकास एहिना होइत अछि।

एहि शहरमे कहियो हमर सासुरो होइत छल सभसँ पुरान साहू पोखरि लग पुरानी गुदड़ीमे। जे कहियो हमर देहाती भुच्च प्रकृतिमे विविधताक रंग भरैत छल आ जे आब सासु-ससुरक मृत्युक बाद पूर्णत: अप्रासंगिक आ अर्थहीन भ'गेल छल। एकबेर मुजफ्फरपुरसँ गामक बस पर बैसल रही, ताहिमे एकटा नवदंपतिक चौल आ झगड़ा देखने छलहुँ। पति मधुबनी दिसक छल, आ बेर-बेर एहि नगरक कौचर्य करैत छल।

—'हे यौ देखैत छिअइ, ई बात-बातमे एहिना खाली मुजफ्फरपुरक शिकाइत करैत रहता, एतेटा बड़की शहर कोनो हमर नानाक लगायल अछि ?' महिला हमरा दिस इशारा करैत बाजलि। पति हँसलै कुनमुनायल सन।

हम बचपनेसँ किछु भिन्न स्वभावक छलहुँ, अनर्गल बातपर कंठ फाड़िक' चिचिआय लगैत छलहुँ। पिता आ हुनक विदूषक मंडलीक ठेंठ-मोट चालि हमरा अखड़ैत छल, माय

लग शिकाइत करैत छलहुँ। माय हँसिक' टारि दैत छल। एक बेर मायकें कहने छलिअइ जे स्कूलक संगी-साथी सभ हमरा 'धन्निक' कहि खौंझबैत अछि, हमर मैल-मसकल कपड़ा पर हँसैत अछि। सभ तँ मैले-कुचैल रहैत अछि, तैयो दुसइत अछि।

—'हमसभ गृहस्थ छी, नीक कुल-शीलक। कोनो हमसभ कपड़िया छी?' माय बुझौने छलि। पिताक मंडलीमे विश्वासी अधेड़ व्यक्ति सभ आ चाकरीमे सेहो किछु लोक। भाँग-चिन्नी आ पंचैती होइते रहैत छल। पिताक विश्वस्त हुनक कटु आलोचक सेहो। ओ सभ जतबे नीति-प्रज्ञ, ततबे हिंसक। पिता कखनो क' कहैत छलाह, 'जे लगुआ-भगुआक बातकें कान मुनहे पड़ैत छै। तहिना जन-वन आ नोकर-चाकर लेल आँखि मुनहे पड़ैत छै। अपन पेशाक चोर सभ होइत अछि चाहे दर्जी-मोची हो वा आन। अपन बनाक' राख' लेल कनि नीक-बेजाय बिसरहे पड़ैत छै। हम सिंहराशि छी, से भगवान निमाहने जाइत छथि।'

पिताक अपन अकड़ आ फूसि दंभ छल, से हमरा अनसोहाँत लगैत छल। छोट भाइ सभक कमी देखि हमरे उत्तरदायित्वक सूचीमे थमा दैत छलाह। हम एकटा नीक स्तरक अपेक्षा पिता सहित सभसँ रखैत छलहुँ। ओना हम बादमे परिवारक स्तर बढ़यबामे अंशत: सफलो भेल छलहुँ। कोनो भाइ द' कहैत छलियनि, जे ओ मटरगस्तीमे लागल अछि, तँ ओहो हमरे सुन' पड़ैत छल—'होत निवाह न आपनो, लीन्हैं फिरै समाज।'

पिता 1942 ई.मे मैट्रिक जिला स्कूल दरभंगासँ पास कयने छलाह, प्रमाण-पत्र पटना युनिवर्सिटीसँ भेटल छलनि। राज्यक नाम 'बिहार एंड उड़ीसा' अंकित छल। ओही समयक सुभाषचंद्र बोसक देल भाषण एवं हुनक भव्य रंग-रूपक वर्णन करैत भावुक भ' जाइत छलाह—'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा...भीख मांगने से आजादी नहीं मिलती है।'

ओहि समय छात्र सभक जुलूस बहराइत छल, जाहिमे हुनक संगी-साथी सेहो रहैत छल। जुलूस लहेरियासराय टावरसँ पहिने रोकि देल जाइत छल। पिताकें एकदिन रहल नहि गेलनि, जुलूसमे शामिल भ' गेलाह। दोसर दिन नानाक अनुज वकील सैहेब फटकार लगौने छलथिन—'सुनलहुँ बड़का क्रांतिकारी भ' गेल छी! अहाँ सन-सन मूर्ख एहिना पाछाँ-पाछाँ बौआइत रहि जायत। जँ स्वराज एतैक तँ ओहिमे एखन जे सभ घुमि-घुमि हाथ भजैए, बौआइते रहि जायत आ एहन-एहन पढ़ल डिग्रीधारीकें मंत्रीपद भेटतैक जेकरा एहिसँ छुतियो ने छै। अपन पढ़ाइ पर ध्यान दिऔ।'

एक बेर पिता गामक एक शिक्षित युवक द' टिप्पणी करैत बाजल छलाह—'जे गाम-घरक राजनीतिमे पड़ल, नाशे भेल।' पिता ई सभ हमरा सचेत कर' लेल करैत छलाह।

रातिभरि नकारात्मकताक सपना सभ देखिते रहलहुँ। कोरोना कालमे पोजिटिभिटी पर बड़ जोर अछि, किएक तँ मृत्युक दोसर खेपक खेल विनाशकारी रूप ल' लेने छल।

जेना लोक आक्सीजन आ भेंटिलेटर लेल कंठ फाड़ि आर्त्तनाद कयलक, बुझाइत छल जेना नालाक पानि नदीमे मिलि रहल आ हहाइत हो-वा जेना जीवनक प्रवाह मृत्यु दिस निरंतर निर्ममतापूर्वक बढ़ि रहल हो। जेना कोनो बड़का बान्ह टुटिक' पानिक रेला ठेलने जाइत हो। नकारात्मकता सकारात्मक लाग' लागल। अर्थात् पिता परोक्ष रूपें कह' चाहैत छलाह, जे जाहि दलदलसँ ओ बहरा गेल छलाह ताहिमे पुन: हम नहि फसी। ई दुनिया जते देखाइत अछि, तते सोझ नहि अछि। पितो हमर ओते सोझे नहि छलाह। हमर खुशी आनक संग बटैत छलाह आ घर-परिवारक दुख-दर्दक खिस्साक मोटरी हमरे सिर पर राखि दैत छलाह। आ हमहूँ ओतेक सोझ रहितहुँ तँ आइ हुनके 'सालगस्त' ज्ञानक असंग्रहणीय अनुपयुक्त भेल मोटरी लेने छिछिआइत रहितहुँ।

जैविक उद्यानमे अनायास हँसी उठल एहि 'सालगस्त' शब्द पर। कपड़िया सभ मोटाक मोटा कपड़ा ल' क' गामे-गाम घुमैत छल आ महिला सभकें देखिते मोटा रखबाक आ खोलबाक उपक्रम करैत छल। पहिल बेर महिला सभ दिससँ मनाही भेटैत छल, फेर कपड़ियाक खेल शुरू।

—'दाइ लेबइ नँइ लेबइ अहाँक खुशी...देखयमे थोड़े पइसा आर लगत'...इहे चीज दरभंगा मार्केटमे जाहो तब पता चलतौ...' क्रमश: मोटा पसारब आ महिलाक भीड़ बढ़ैत छल। एकबेर घरसँ दलान पर बहराय बला फट्टक लग कपड़िया मोटा पसारने छल। एकसँ एक रंग-बिरंगी साड़ी-कपड़ा। बीचमे क्यो दाइ-माइ बजैत छथि—'हौ ई सभ सालगस्त लगइ छह कते बेर ठकायल छी। तुरते मसक' लागत, पानिमे दैते चमकी गायब, मंगनीओमे महग छह ई सभ।'

—'दाइ! ई कह' जे पइसा नँइ छौ, नँइ लेबैक छलौ त' किए बोलाय लेलहो? अइसनो कहीं दाम होइ छै...कहाँ पाँच सौ, कहाँ पाँच...एखनियो सही दाम बोलहो...हमहू आर इंसान छियइ।'

—'हौ ल' जा अपन मोटरा-मोटरी...उठाब' जल्दी...तों के कह' बला जे हमरा पाइ अछि कि नञि।' ई कोनो महिलाक उत्तेजित स्वर छल। दलान परसँ पिताक कोनो दूत अबैत अछि आ कपड़िया सभकें दे-बे कर' लगैत अछि।

—'हौ सार कपड़िए...मे बाँस क' देबह...।'

—'तोरा दूरापर आयल छियौ जेतना गारी बोलि लाय।' ...हमरा आरकें बेगुसराय जिलामे कोइ बोलि लाय...'इस अभद्र भाषा पर खून की धारा बह जाता...लेकिन खून का घूँट पीकर...रहइएकें छै।' दोसर कपड़िया सेहो संग भ' जाइत अछि। एक कपड़िया बड़बड़ाइत रहैत अछि, दोसर बीचबचाव करैत अछि। कोनो महिला परिस्थितिकें सम्हारैत अछि। हम मुदा पित्ते आन्हर भेल पिता दिस तकने रही, थर-थर कँपैत पिताकें क्रूर, हिंसक की-की ने कहने रही। पिता मुसकैत चुपचाप हमर चिचिआयब सुनैत रहलाह।

—'धीया-पूता लग एहन उटपटांग भाषा नहि बजबाक चाही।' दूतकें अ'ढ़मे ल' जाक' कहलथिन।

एहि बीच कपड़िया कते बेर मोटा खोलबाक आ समेटबाक उपक्रम करैत रहल। लगभग तीन घंटाक बाद मोल-जोल होइत पाँच सौक सामान पाँच रुपयामे उधिया गेल आ ओकर मोटा हल्लुक भ' गेल।

—'तोंही जीत गेलहो दाइ...हमरा आउर त' मोटा उघैत-उघैत अकिलकें मोटा भाए गेलिऐ।'

—'हमरा ठकइ छह...एहन सालगस्त कपड़ा सभक त' पाँचो रुपया ने हेबाक चाही...मङनीमे महग छह।'

आइ पचास-पचपन बरखक बाद 'सालगस्त' शब्द मोन पड़ल आ हँसी लागि गेल। हमहूँ तँ सालगस्ते छी आ ओ जे हमर संगी-साथी चिड़ियाखानाक नियमित ग्राहक छथि, कोना केश-भौं रंगने छथि। नकारात्मकताक रेघा आ झुर्री सभपर क्रीम मलने छथि आ जुआन हेबाक प्रदर्शन करैत छथि...हमरा होइत अछि ई लोकनि कपड़िया छथि।

ईहो चिड़ियाखाना तँ किछु दिन खुजिक' फेर बंदे भ' जाइछ...कहिया कोरोनाक वेभ त' कहियो बर्डफ्लू। एकर अतिरिक्तो त' कारण भ' सकैछ। बेसीकाल तँ मोने अलसा जाइत अछि, कहियो निन्न उचटि जाइत अछि। एम्हर त' बेसी लोक आसन्न वेभक आशंकासँ नहि नियारि पबैत अछि जाइ कि नहि। हमरा त' बेसीकाल भूत, वर्तमान आ भविष्यक धरती दरकैत अनुभव होइत अछि...सभटा ज्ञान, सभ कयल-धयल निष्प्रयोजन बुझाइत अछि। पिता अन्हरोखे पराती वा ओहिसँ पूर्वे गीत-गोविंदक पाँती रेघाब' लगैत छलाह—'प्रलय पयोधि जले धृतवानसि वेदं...विहित वहित्र चरित्रमखेदं... केशवधृत मीन शरीर जय जगदीश हरे...तदन्तर कच्छप, वराह होइत नवम बुद्धक शरीर रूपमे अबैत स्वर भीजि जाइत छलनि। अंतिम कल्कि रूप धरि अबैत ठमकि जाइत छलाह, जेना चेतना वापस भ'गेल होइनि। सतर्क भ'जाइत छलाह।'...म्लेच्छ निवह निधने कलयसि करवालम्। धूमकेतुमिव किमपि करालम्।। ...केशवधृत कल्कि शरीर जय जगदीश हरे...।' अंतमे ध्यानमग्न भ' जाइत छलाह...श्री जयदेव कवेः इतिमुदितमुदारं...श्रृणु सुख दं शुभ दं भवसारम्...केशवधृत दशविधरूप जय जगदीश हरे...आ क्रमशः शांत भ'जाइत छलाह। अचानक पिता आ हुनक गाओल दशावतारक गीत सकारात्मक बना देलक। अमरत्वक बोध करा देलक। आ हम अपन मित्र सभक पपड़ी पड़ल मुखमंडलक भीतर परत-दर-परत जड़िआयल नकारात्मकता कें उघारैत संशय दिस बढ़ैत छी आ ओहिमे फेरसँ फुटैत कोंढ़ीक दर्शन करैत सामान्य भ' जाइत छी। मृत्युदिस बहैत प्रवाह अमरत्वक ध्वनिसँ गुंजायमान भ' जाइछ। बंदीमे टी. भी., अखबार देखि आर मोन घोर भ' जाइछ। ठीके छै किछु-किछुदिन पर जीवन एहिना थमि जाय, फेर एकर महत्त्व बूझ'मे औतेक—'ओ नभ की तारावलियां, क्षणभर को तूँ बुझ जा...' महादेवी वर्माक गीत मोन पड़ैत अछि।

चिड़ियाखानामे सभ उम्रक लोक अबैत अछि, मुदा बेशी पेंसनधारी रिटायर्ड, महिला सभ उम्रक (प्रायः प्रौढ़) आ किछु किशोर युवा अपन महिला मित्रक संग रगड़धुम्मस करैत। एकटा थम्हल जीवनमे हलचल अनबाक तैयारी...फेरसँ खेलबाक तैयारी...वजन घटाक' संतुलित शरीर बनयबाक तैयारी...मुदा—हँसी उठैत अछि। अधिकांश महिला वाकिंग सूटमे रहैत अछि...पुरुषसँ बेशी स्वतंत्र। एकटा महिला अपन पुरुषसँ दुगुना गतिसँ दौगैत अछि। पुरुषसँ एक महिला पुछैत अछि—अहाँक श्रीमती कहाँ? पुरुष कहैत अछि, हमरा कोनो ओलम्पिकमे भाग लेबाक अछि? आ हँसी उठैत अछि।

महिला-पुरुषक एक जोड़ी तीव्र गतिसँ अबैत अछि, पुरुषसँ बेसी महिला चरफर रंग-बिरंगी परिधानमे। पुरुषक जेबीक मोबाइलसँ गीत आबि रहल अछि—'चाँद न बदला सूरज न बदला बदल गया इंसान...कितना बदल गया...।' ई गीत बचपनेसँ सुनैत आयल छी, मुदा आइ ई गीत भिजा देलक। ठीके लोक कते बदलि गेल। लोके नहि बदलल, बहुत किछु बदलल। गाम-घर, रहन-सहन, पहिरन-ओढ़न, बात-विचार सभ बदलि गेल। हमर एकटा संगी जे चिड़ियाखाना एको दिन नागा भेला पर हमरासँ सवाल कर' लगैत अछि। ओकर बेटा दू-तीन बर्खधरि अपन स्टुडेंटक संग दिल्लीमे लिभ-इन रिलेशनमे छल। लिभ-इन वाली लड़की तीस-चालीस लाख लोन लियाक' छोड़ि देलकै। हमर संगीकें सेवानिवृत्तिक लाभ वला पाइसँ सधाब' पड़लैक। एहन बेटा आ एहन बैंको जे बेटाकें अपन बापक एकाउंटक छायाप्रति पर लोन द' देलकै। नीक लोककें लोन लेबामे तेरह डिबिया तेल जरैत अछि। बइमान पाइ पचाक' शानसँ रहैत अछि। बेसीसँ बेसी बैंक एन. पी. ए.मे राखि एजेंटक मार्फत लाबादुआ असुलैत अछि।

पिता एक बेर बाजल छलाह अपन प्रिय पितिऔत भाइ द' पंचैतीमे—'ओ मौगियाह अछि, पुरुषकें दलानपर रहबाक चाही, ओ आंगनमे घुसिआयल रहैत अछि।'

आ से हमर स्वभावमे आइधरि कनियें अंतरसँ विद्यमान अछि। गाममे रहलापर दलान पर बैसिते छी, सुतितो छी। शहरोमे बरांडा वा एपार्टमेंटमे ड्राइंग रूममे रहबाक हिस्सक अपन पिताक चेन्हाँसी अछि। हँसैत छी अपन आनुवांशिक नियति पर। वाह्यजगत जकाँ आभ्यंतर जगतमे सेहो पर्यावरणक संरक्षित क्षेत्र होइत अछि जाहिमे मनुक्ख अपन संपूर्ण इच्छा-आकांक्षाक संग स्वच्छंद विचरण करैत अछि। ई क्षेत्र कोनो व्यक्तिक संपोषण आ संरक्षण लेल सर्वप्रमुख अछि। ई क्षेत्र जाधरि सुरक्षित रहत, अतिक्रमणमुक्त रहत, परिवर्त्तनक नकारात्मक खेल निष्प्रभावी रहत। ई क्षेत्र मनुक्खक मूल कोमल स्वभावकें फूल-पत्ती जकाँ संवर्द्धन करैत अछि, ओकरामे रस भरैत छै। पितोक अपन नियति छलनि, हमरो अपन नियति अछि। एहि चिड़ियाखानामे सेहो जीव-जन्तु, गाछ-बिरिछ, फूल-पत्ती सभ अपन संरक्षित क्षेत्रमे क्रीड़ा-मग्न अछि। प्रातःविहारी सभ सेहो आनंदमग्न अछि। कोनो

झुंडमे ठहाका अछि तँ कतहु प्राणायाम आ गपबाजी बीच-बीचमे। कतहु सासु-पुतहुक चर्चा करैत जोर-जोरसँ चक्कर लगबैत महिलाक झुंड।

सत्ते लॉक-डाउनक बाद लोक कते बदलि गेल। मुँहमे जाबी लगौने। दाउनमे लागल बड़द सभ कोना जाबी मुँहसँ हटयबामे प्रयासक बादो असफल भ' जाइत छल। जाबी लागलोमे किछु-किछु चिबा लैत छल। चिड़ियाखानामे सेहो बदलाव भेल छल। मछली घर लग मगरमच्छक शेड बनि गेल छल।

मछलीघरक बेंचपर बैसल मित्रक प्रतीक्षा क' रहल छलहुँ। एकाध बर्ख पूर्व एहीठाँ रंग-बिरंगी बत्तख सभक किलकारी आ रोषपूर्ण प्रदर्शन देखने छलहुँ। फेरसँ देख' चाहैत छलहुँ अपन मित्रक संग जे आइ नहि आयल छलाह। ओइ दिन बत्तख सभक रंग-बिरंगी झुंड कते आक्रामक व्यवहार क' रहल छल। हमरा सभदिस ताकि जोर-जोरसँ चिचिआ रहल छल, लागि रहल छल जेना हमसभ ओकर सुरक्षित जगहक अतिक्रमण कयने होइऐक आकि उछन्नर कयने होइऐक। हम ओहि बेंचक आसनसँ उठिक' पड़ाय चाहैत छलहुँ। तावत् गेटकीपर ताला खोललक, एम्हर बत्तख सभक शोर मचायब किलकारीमे बदलि गेल। धीरे-धीरे शोर मद्धिम पड़ैत गेल शिकाइती दुलारमे। गेटकीपर हमरा बैसल रहबाक आग्रह कयने छल। आ कह' लागल बत्तखकें डँटैत आ हमरा दिस हँसि क' जेना गुरुजी छात्रकें चेतबैत—'ई सभ (बत्तख) बड़ बदमाशी सीखि गेल अछि, एकघंटासँ सोर पारैत रही किएक सूनत, क्यो टघरहे ने चाहैत छल, तें खिसियाक' ताला लगा देने छलहुँ।'

बत्तख सभक चिकरब मंद भ' गेल छलैक जेना टीचरक अयलापर छात्रक। गेटकीपरक पछोर धयने बत्तख सभक पतियानी 'पक्पक्' करैत जा रहल छल, जेना मायक झिड़की धीया-पूता सुनैत जा रहल हो।

आइ हम ओही दृश्यकें फेरसँ निहारैत आनंद लेब' चाहैत छलहुँ। ताही क्रममे ओ गेटकीपर देखाइ पड़ल। हम पुछलिऐक तँ कहलक जे ओहि बत्तख सभकें हटाक' अन्यत्र पठा देल गेलैक। ओ कहलक जे जाइत काल ओ सभ गाड़ी दिससँ भागिक' हमरासँ लट्टापट्टी कर' लगैत छल जेना धीयापूता नव जगह जायसँ पड़ाइत हो, घेंटाजोड़ी क' कान' चाहैत हो। ओ घटनाकें स्मरण करैत भावुक भ' गेल छल—'अहाँ तँ देखने छलिऐक जे ओ सभ कते हमरा मानैत छल, बड़ माया अबैत अछि।'

एहन-एहन कते चीज बदलि गेल। चिड़ियाखानाक आकर्षण ट्वाय ट्रेन बन्न भ' गेल छल। ई ट्रेन चिड़ियाखानाक सैर करबैत छल। एकटा चबूतरा पर जत' ट्रेनक इंजिनक मॉडल छल, हेलीकॉप्टर वा हवाइ जहाजक मॉडल स्थापित भ' गेल अछि।

आइ लकड़बग्घाक केज खाली अछि, ओकर बगल बला केजमे भालु सभ अछि। एक बेर राँचीक जंगलसँ सटल कोनो मुंडासभक बस्तीमे सरकारी काजसँ गेल छलहुँ, ओत' एक युवकक आँखि-नाक भालु चिबा गेल रहैक। बचपनक एकटा खिस्सा हमर

पितामही बरमहल चर्चा करतै छली जे हम बकरीक दूधसँ पोसायल छी आ भालुसँ फुकाओल गेल छी।

लकड़बग्घाकें जाइत-अबैत देखबाक इच्छा रहैत अछि। एकर चपल गतिसँ शानसँ मार्च करब नीक लगैत अछि, ओना बाघक श्रेणीमे एकरा अत्यंत निकृष्ट मानल जाइत अछि, जेना पक्षीमे गिद्ध, मुदा पर्यावरणक लेल ई अत्यंत उपयोगी होइछ, जीवनसँ मृत्युक बाद धरि। देख'मे कुरूप होइत अछि मुदा ठाठ बाघोसँ बेसी, बुझायत जेना गार्ड आफ आनर ल' रहल हो।

चिड़ियाखानासँ घुरबाक रस्तासँ समीपेमे तेंदुआक बाड़ा देखायल छल, तेंदुआ नहि देखायल छल। एकटा कैमराबलाकें फोटो खिचैत नजरि घुमौला पर बुझायल, जे बाड़ाक छज्जीपर एकटा तेंदुआ अछि निर्जीव सन मुद्रामे। ई नुकाछिप्पीमे तेज होइत अछि, गाछ-बिरिछक अढ़मे नुकाक' वार करत अछि खासक' कम उम्रक लोकपर। एक बेर अपन कालेजक दिनमे हमर गाममे सेहो ई कतहुसँ भुतियाक' आबि गेल रहय। लगभग एक मास धरि गाममे हरहोर मचौने रहल। एकटा चमरटोलीक बच्चाकें उठाकें भाग' लागल, चारू दिससँ हाहरोक बादो बच्चाकें नोंचि-नाचि पटकि क' भागि गेल छल। ओना बच्चा बाँचि गेल छल। बादमे पचीस-तीस बर्खक बाद एकटा गोर-नार सुगठित जुआनकें एकगोटे चिन्हौलक, जे एकरे ल' क' कारी-कारी बुनका आ बिजली सन आँखिबला पशु भागि गेल रहैक। प्रशासन आ पुलिसक अबरजात मासो भरि होइत रहल। आ बहुत दिन धरि हमर पिताक उम्रक गजाधर झाक खिस्सा प्रचलित रहल। मृत्युपर्यंत हँसमुख गजाधर झा अर्थात् ब्रह्मस्थानक वीर, जे सतत् कोनो सार्वजनिक काजमे, भोज-भातमे सक्रिय छलाह। गजाधर झा ब्रह्मस्थानक चौखरी पर चेला-चाटीकें रस ल' ल' सुनबैत रहलाह, जे अफसर हमरा डेरबैत पुछलक—'की देखा, झूठ नँइ बोलेगा।' हम कहलिअइ डरे—'हम किछु नँइ देखा हजूर, ओकर आँखि बिजली जकाँ चमकता था, लाठी देखाया त' भाग गिया।' एकाध मासधरि लाठी-भालाक संग मशाल-जुलूस रतुका पहरमे होइत रहल आ ओ तेंदुआ कहिया भागल, से क्यो ने जनलक। भोज-भात, काज-परोजनमे कखनो तसलासँ दालि-तीमन लार-चार करैत, कखनो बाल्टीमे उझिलैत, कखनो तौला-मटकूरसँ दही परसैत आब स्मरणेक वस्तु अछि। कष्टमे मरलाह, मुदा अंतिम समय धरि हँसिते देखलियनि। ओहन लोक सभ तँ विलुप्त भइए गेल, गाममे चिक्कनसँ दलाली कमायबलाक बाढ़ि आबि गेल।

चिड़ियाखानामे मोर आ राजहंसक सेहो अपन-अपन सुरक्षित जालीदार घेरा अछि। जखन मोर रंग-बिरंगी पाँखि छत्ता जकाँ पसारैत अछि, दर्शक जुटैत अछि। सुनैत छी मोर नचैत अछि तँ आँखिसँ नोर छुटैत छै। मनुक्खोक इच्छा-आकांक्षा जखन हिलोर लेब' लगैत अछि अतीतक दुनियामे, आँखि अकस्मात् बह' लगैत छैक।

अचानक गाछ सभक झोंझमे छोट-छोट पक्षी सभक कलरव सुनाइ दैत अछि। पहिने ट्री-टीक आवाज, तकर पाछाँ कू ऽ ऽ करैत कोइली। पता नहि ई छोट-छोट आजाद पंछी एहि जूक अभिलेखमे अछि वा नहि। एकाएक मोन पड़ैत अछि, गजाधर झा सन लोकक पुनर्जन्म एहने आजाद पंछी रूपमे भेल हैत। तखने एकटा नकारात्मकता घेरैत अछि जे जूक पछबारी-उतरबारी बाउंड्रीक समीप स्थित हवाइ अड्डाक लेल ई पक्षी सभ खतरा भ' सकैत छै। एहने संशय सभ गाम-समाजक मुसकान लेने चल गेलैक। जूक जते मॉर्निंग वाकर अछि, घरक कचकचसँ बहराक' किछु घंटा कल्पवास जकाँ बितबैत अछि। पटनामे रह'सँ पूर्व एकाध बेर टिकट कटाक' आयल छी एहि चिड़ियाघरमे, कनिकेमे थाकि गेल छलहुँ। ट्वाय ट्रेन यथेष्ट यात्री नहि होयबाक चलते नहि खूजल छल। आइ एक युगपर बाघ आ शेर देखबाक इच्छा भेल छल। बाघ आ शेरक प्रदर्शनमे बड़ गोपनीयता राखल गेल अछि, कते परकोटसँ घेरल विशाल संरक्षण, प्रजनन आ सुरक्षाक घेरा राजभवन आ राष्ट्रपति आवास जकाँ। केजक दर्शक साइडसँ किछु हटिक' बड़का ड्रेन बनाओल गेल अछि, तकर ओहिपार कखनोक' अपन-अपन संरक्षण-क्षेत्रमे ई विशालकाय पशु सभ दर्शन दैत अछि। बाघक उज्जर दकदक देहमे कारी-कारी धारी जेना ईश्वर अपन हाथसँ बनौने होथिन। तहिना शेरक अर्थात जंगलक राजाक प्लेन गोर आ सीटल-सुगठित शरीर। गजाधर झा देखितथि तँ कहितथि 'अनमन पहलवान बिहारभीम दुखरन झा सन' जे हमर गामक पड़ोसक डेढ़-दू कोसक छलाह। जे कतेको सेर दूध-घी पचा लैत छलाह रोजाना आ सेरो तेलसँ मालिश करबैत छलाह आ तहिना बात-विचार आ बोली मिट्ठ। अखाड़ामे तहिना पेंच आ जितबाक कौशल, मुदा कनिको गुमान नहि। हुनक बैसिते बेंच-कुर्सी आ चौकी मचमच, करकर कर' लगैत छल। चिड़ियाखानाक एक कर्मचारी कहैत अछि, जे ड्रेन द'क' पशुक नहाय-धोआय बला पानि झीलमे खसैत अछि, जाहिमे बोटिंगक सुविधा कखनो क' सामान्य परिस्थितिमे देल जाइछ। एक किलोमीटर झीलक दू वा तीन चक्कर प्रतिदिन लगाक' लोक संतोषसँ पसेना पोछैत घर घुरि जाइत अछि। पहिने मॉर्निंग वाकर सभकें मुफ्त प्रवेश देल जाइत छल, धीरे-धीरे कंप्युटरीकृत सालाना वा मासिक पास बन' लागल। वरीय नागरिककें अधे राशि लगैत अछि। ई चिड़ियाखाना सत्तरक दशकसँ बनब शुरू भेल छल राजभवनक भूखंड आ परता जमीनपर। चिड़ियाखानाक एकदिस राजभवन, दोसर दिस ब्रिटिशकालक गोल्फ क्लब अछि। एकदिस हवाइ अड्डा तँ दोसर दिस बेलीरोड। मोनमे प्रश्न उठैत अछि जे किएक ने सुधी-सज्जन लोककें एहन संरक्षित क्षेत्र भेटबाक चाही अध्ययन, चिंतन-मननक लेल ? उत्तर भेटैत अछि—'मुदा से तँ दुष्ट-लंपट सभ युग-युगसँ घेरने-दफानने अछि। आ विवेकी लोक हास्यास्पद, उपेक्षित आ तिरस्कृत बनल कोनो कोनटा आ पछुआर धयने अछि।'

एहिठाँ लोक घर-समाजक कचकचसँ कपट भरल कृतघ्नतासँ थाकल-हारल औनाक' अबैत अछि, घरक सुख-दुख बतिआइत अछि मुदा हित-अपेक्षितक कुटिलतासँ आहत भाग लोक मोने-मोन राखि लैत अछि। फूसि दंभ उजागर हेबाक डरसँ। एत' एक दिस लोक मुक्त साँस लैत अछि तँ दोसर दिस निज-परिजनक व्यवहार सुइ जकाँ अंदरे-अंदर भोंकैत अछि। एकाएक लाल साहेब मोन पड़लाह, संग-संग हमसभ नोकरी शुरू आ अंत कयलहुँ मुदा ओ आजीवन लाइम-लाइटमे रहलाह कहियो कोनो ने कोनो संस्थानक निदेशक वा अध्यक्ष, पुत्रसभ विदेशमे पितृभक्त बनल, पिता शतक पुराक' मरल छलथिन, किएक तँ हुनक सभटा टेंशन आ दायित्व ई सम्हारि लेने छलथिन। जहिना देख'मे गोर-नार लंबा-छरहरा तहिना चेहरा पर सौम्यता। कोरोनाक पहिल लहरिक बाद दोबारा जू नहि अयलाह। फोनसँ गुडमार्निंग हलो-हलो होइत रहल। समाचार-पत्रसँ हुनक मृत्युक जानकारी भेल छल।

फेर मोनमे प्रश्न आयल जे हमसभ अनकर मृत्यु सेलिब्रेट करैत छी अपन आसन्न मृत्युक डर भगयबाक लेल। मोन पड़ैत अछि डाकपीन बाबाक दाह-संस्कार, ओ हमर देयादीक बाबा, हमर पिता पोस्टमास्टर, ओ डाकपिउन। हमर पिता कहियोकाल बेसी डाँटि देथिन—'अहाँ जुलुम क' देलिअइ, पीने बुत्त रहैत छी।' ओ हमरा तहियाक' सुनबैत छलाह अपन पित्ती-भातिज संबंधक असह्य व्यथा। डाकपीन बाबा आहि जमानामे असगर ब्राह्मणमे ताड़ी पिबैत छलाह। तैयो हमर पिताकें अपन पित्ती पर अटूट विश्वास छलनि। कतेबेर कम्प्लेन भेल जे डाकपिउन मनिआर्डर आ बीमा भरल बड़का झोरा लेने रतनपुर वा भरौरा उपडाकघरसँ अबैत अछि आ रस्तामे घंटाक घंटा ताड़ी पिबैत छथि। पिता दायित्व लैत छलथिन जे किछु गड़बड़ी हैत तँ हम देनदार हैब। कतबो किछु भेल हुनक विश्वास कायम रहलनि। बाबाकें चिट्ठी-पत्री, मनिआर्डर आ बीमाक चलते मीयाँटोलसँ नीक आमदनी होइत छलनि, तें बेसी आवेश मीयाँटोलसँ। अपन आ आन टोलकें कनि टाल-मटोल करैत छलाह, किएक तँ ने प्रेम भेटैत छलनि ने पाइ। पीने रहैत छलाह तँ कते कमयला से बता दैत छलाह, संगे गरजैत छलाह जे हम ओइ जमानाक गामक पहिल मिडिल भर्नाकुलर छी। पिता कहैत छलथिन जे भुसकौल भर्नाक्युलर रखैत छल आ तेज इंग्लिश। कहियोक' पुछैत छलियनि, बाबा एते पाइमे हमर बाबूक कते हिस्सा भेलनि, तँ आँखि मटका क' कहैत छलाह—'मेहनत-मजूरी करें हम आ हिस्सा दें उनको ?' पिताजी हँसैत रहैत छलाह।

बुढ़ियागाछीमे संस्कार-स्थलपर मियाँइन सभक झुंड आबि गेल छल आ रंग-बिरंगक चर्चा होइत रहल।

—'केतना भला रहलइ डकमंसी...बेचाराकें जे दैत रहलै हँसी-खुशी ले लैत रहलइ।' एक बाजलि तँ दोसर टोकारा देलक—'सब मरिहइ उस्मान मियाँ न मरिहइ।'

अचानक जूमे बीरेंद्र बाबू मुसकैत भेटलाह, आइ असगर छथि। तीस-चालीस बर्ख

पूर्व एहिना मुसकैत समस्तीपुरमे भेटल छलाह। हम नव-नव नौकरीमे आयल आ ई सात-आठ साल नौकरी क' चुकल छलाह। हम उदास रहैत छलहुँ, ओ एहिना मुसकैत हाल-चाल लैत रहैत छलाह। हम कहने छलियनि—'हमरा ई नोकरी देखाबा लगैत अछि।' ओ कहने छलाह—'ई दुनिएँ देखाबा अछि।'

—'गाम-घरमे ठाठसँ छलहुँ, कोनो वस्तुक अभाव नहि छल। अतिथि-अभ्यागत् आ भोजन-साजनसँ घर सुगंधित रहैत छल।' हम बाजल छलहुँ।

—'किछु दिन आर नौकरी नहि भेटैत तँ बुझाइत जे गाम-घरक प्रेम केहन होइत छै।' ओ हँसल छलाह। हुनकामे नकारात्मकता कहियो ने देखलियनि, हमेशा तटस्थ मुसकैत। कोनो समूहमे रहथु, अनासक्त। कामता सिंह बला ग्रूप संग बेसी काल टहलैत देखैत छलियनि, दूरक संबंधी छथिन। ओहि ग्रूपक एक गोटे बी. के. सिंह दोसर लहरिक शिकार भ' गेलाह। कामता सिंह बेस बजक्कर, बीरेंद्र बाबू तहिना एकांतचित्त। कामता बाबू एक बेर हिनका परोक्षमे हिनक चिट्ठा उझील देने छलाह—'एते बड़का पद पर रहियोक' एकटा घर नहि बना सकलाह, किरायाक मकानमे रहैत छथि। बाल-बच्चा नहि बना सकलाह, ने ठीकसँ बियाह-दान क' सकलाह।'

—'कामता बाबूक अपन दृष्टि छनि, हमरो अपन दृष्टि अछि। हम किछु नहि क' सकलहुँ, ई हमर असमर्थता अछि। एकर स्थान पर किछु एहनो विशिष्ट काज अछि, जे ओहि समय बेसी आवश्यक आ महत्त्वपूर्ण छल आ से सभ काज भेल आ हम अपनासँ संतुष्ट छी।' ओ अचानक गंभीर भ' गेल छलाह। आगाँ कहने छलाह 'जे पेंशने अपन मोन सन बुझाइत अछि, बाँकी तँ निचट्‌टीए रहल।' ओ जीवनक सभ राग सहर्ष स्वीकार करैत छथि।

एकगोटे झटकैत धरफरायल चिड़ियाखानासँ घर घुरि रहल छल। जेबीमे मोबाइलसँ गीत आबि रहल छल—दुनिया दर्शन का है मेला...। हमर हँसीपर ओ कहने छलाह—'ई दुनिया मात्र देखहे लेल अछि, ओइसँ बेसी एकर उपयोगिता नहि अछि।'

—'ई गुलमोहरक विशाल वृक्ष दू दिन पूर्व लाल टुहटुह फूलसँ आच्छादित छल। किछुए क्षणमे फूलक ढेरी लागि जाइत छल। बेर-बेर स्वीपर झाड़ू दैत छल तैयो ढेरी लागि जाइत छल। आइ देखू चारू दिस हरियर कचोर अछि। पीयर पातक ढेरी लागल अछि, झाड़ू बला पीयर पात धकियबैत-ठेलैत असोथकित भ'गेल अछि।'

हम झीलक चक्कर लगबैत हवाइ अड्‌डाक सामने बला बाउंड्री लग ठमकि जाइत छी। एत' किछु ने बदलल अछि। अफ्रीकाक जंगलसँ आनल गेल जिराफ सभ कते शांत आ सौम्य प्रकृतिक अछि। एकटा जालीक बाहर स्थित गाछक पात चिबा रहल अछि शंक्वाकार गर्दनिसँ। एकर ताम्र शरीर पर रीढ़, पेट आ ग्रीवाधरि असंख्य चतुर्भुजीय डरीर जेना कोनो बच्चा पारि देने हो उज्जर चाकसँ। पैघ हृदयक शांत जीव, आदमीसँ तीनगुना

आकार, एकर हृदयस्थलसँ मूड़ीक दूरी एक आदमीक बराबर। एकर विपरीत हरिण आ बरसिंघा अशांत तनावग्रस्त।

गेटक समीपे अवस्थित बनमानुखक डेरा जे आब ऊँचका देबालसँ घेरि देल गेल अछि। एत' लोकक भीड़ लागले रहैत अछि। सड़क कातेमे एकटा पोस्टरमे बनमानुखसँ वर्तमान मनुक्खक समयानुक्रमसँ यात्राक चित्रण कयल गेल अछि। भने आदमी आइ चिक्कन-चुनमुन भ' गेल हो, बेर-बेर कैमरासँ बनमानुखक फोटो खिंचैत हो। हमरा देखाइत अछि जे बनमानुख संच-मंच बैसल अछि, कखनो क' बुलैत अछि निर्विकार। दर्शक उद्विग्न अछि, अपन हिंसक भावनाकें रोकबामे असमर्थ अछि। ओकर छेड़छाड़क प्रतिक्रिया बनमानुख नहि देखाबय, तें देबाल उठा देल गेल अछि।

झीलक एक छोरपर झुलुआ काठक पुल अछि, जाहिपर फोटो खिचैत महिला-पुरुष लोकक रस्ता रोकय वा नहि, एहि झुलुआ पुलसँ ठीक पहिने बनल चबूतरा (प्रेम चबूतरा रूपमे चर्चित) पर बिना रुकने, सवाल-जवाब बिना अहाँ आगाँ नहि बढ़ि सकैत छी। ई प्रेम-चबूतरा छनि तइस साल पहिने रिटायर्ड मुख्य अभियंता (पी. डब्ल्यु. डी.) उमाशंकर प्रसाद सिंहक। ओ हमरासँ पंद्रह बर्ख पहिने अवकाश प्राप्त कयने छथि, ताहि दृष्टिकोणसँ हमरा युवा चेहरा कहैत छथि। ओ पैघ स्टेटसँ संबंधित छथि। पाटलिपुत्र कालोनीमे दसकट्ठामे आवास-परिसर छनि। अपना समयक दबंग पदाधिकारी आ संघक नेता रहि चुकल छथि। कतेको बर्ख पूर्व हिनक पुत्रक हत्या भ' गेल रहनि, पत्नीक किछु दिन पूर्व मृत्यु भ' गेलनि, मुदा चिड़ियाखाना आयब नहि छोड़लनि। गोर-नार राजसी हँसमुख चेहरा, उम्रक कोनो असरि नहि, बिना हँसने-हँसौने नहि जाय देताह।

—'क्या युवा चेहरा एतना दिन कहाँ रहल' तोरे त' हम खोजैत रहली?' हमरासँ बतिआय चाहैत छथि, तावत् एकटा युवा दंपति हाथ जोड़ैत ससर' चाहैत अछि।

—'मेहमान जी, अइ लड़कीकें दौड़ाक' सीधा क' दू ने तँ' अपनेकें तंग क' देत।'

तावत् वाकिंग सूटमे तेजीसँ अबैत एकटा महिला पुछैत अछि—'अपनेके समधीनी कहाँ गेल?'

—'समधीनी बड़ा तेज हय, एतना बढ़ियां समधीजीकें छोड़के फिरार हो गेल।' ओ महिला आगाँ बढ़ैत अछि, तावत् पाछाँसँ एक आर महिला हुनका हाथ जोड़ैत अछि। ओ परिचय करबैत छथि।

—'हिनका युवती न बुझ्,ई सरकारी हाइस्कूलक प्राचार्या छथ। आ ई छाथ युवा अभियंता हमरा से पंद्रह साल बाद रिटायर।' ओ महिला हँसैत हाथ जोड़ि विदा होइत अछि।

आब एकटा बुजुर्ग डाक्टर साहेबक मंडली गुजरैत अछि, ओ टोकैत छथि—'डाक्टर साहेब, थोड़े विटामिन सभ दू इम्युनिटी बढ़ाबे बला, न त' कोरोना हमरा लेले चल जायत।'

—'अपनेके विटामिनकें कोन अभाव सब लाइन लगौने रहइअ', सौ साल पूरे भर अपने से कोरोनाकें बापो न भीड़ सकइअ'?'

—'कनी बढ़ियाँ विटामिन दू, नकली न खाइ छी।' सभ हँसैत अछि।

ओना कहियो काल असगर रहलापर कहैत छथि जे आब हिम्मत जवाब द' रहल छनि। चौरासी साल असली उम्र छनि। एकबेर हिनके संग भेटल छलाह हिनक सहपाठी ठाकुर जी, दरभंगाक बहेड़ीक मूल निवासी, ओहो एहिना हँसोड़, एकसँ एक खिस्सा। ठाकुर जीक आँखि बड़की टा छलनि, तकितथि तँ गुर्राइत, मुदा ग्रामीण टोनमे कोनो खिस्सा फुराइते रहैत छलनि। ओ आँखि गुराड़िक' पुछने छलाह—'यू जंटिलमैन, अहाँक चेहरा त' जानल-चीन्हल बुझाइत अछि?'

—'जी श्रीमान्! हम छपरामे सहायक अभियंता रही, अहाँ फ्लड मॉनिटरिंग टीममे आयल रही। हमर कार्यपालक अभियंता अहाँक सहपाठी छलाह बी. आइ. टी. सिंदरीक।'

—'यस्...यस्...मुदा एकटा गीत सुनने छी? हमसभ पढ़ैत रही तँ गाबी—मिली खाक में मोहब्बत जला दिल का आशियाना...से हम एहि दुआरे कहलहुँ जे आब कतहु प्रेम-भाव नहि अछि, मोन जोगर कोनो जगह नहि। दुनिया-जहान एक्के हाल...गाममे हमर सभक ड्योढ़ी अछि (छल बुझू)। एकसँ एक पदपर भाइ-बंधु। सभसँ छोट भाइ कारपोरेटक शिखर पर, बेटाक उपनयन बाबाधाममे कर' चाहैत छलाह। कहलियनि उपनयन गाममे करू, गामक भगवती रूसल छथि, ओहू बहन्ने मनाओन भ' जेतनि। कहलनि बाबाधाममे होटल रिजर्व क' लेने छी। फेर पुछलनि जे गाममे ओते दिन रहब से छुट्टी नहि अछि। हम कहलियनि मात्र दू-तीन दिनक छुट्टी लिअ' बाँकी हमसभ सम्हारि लेब। फेर पुछलनि गाम पर कते खर्च हेतइ, हम कहलियनि मात्र दूसँ तीन लाख। 'हमरा ओते पाइ नहि अछि'—हुनक उत्तर छल। सोचैत रही जे हमर भाइ करोड़ोक पैकेज पर छथि,मुदा लाखेमे जुआ पटकि देलनि? तें कहलहुँ...मिली खाक में मोहब्बत जला दिल का आशियाना...!! आब आगाँ सुनू...ये बहार कैसी आई जो खिजाँ भी साथ लाई...अर्थात् ई मौसमे ओहन अछि पतझर आन' बला। एहिमे हमर पुत्रवत् अनुजक दोष नहि जमानाक दोष!! एही गीतमे कतहु अबैत छै...मैं रहूँ कहाँ चमन में मेरा लुट गया ठिकाना...घरमे तँ बड़का-छोटका सभ पिटने जा रहल अछि महल-अटारी, मुदा सभतरि वैह कचकच चमन (फुलबाड़ी)क सुगंध कत' पाबी?' ओ उदास भ' गेल छलाह। आइसँ पैंतीस बर्ख पूर्व जखन हमर स्थल-निरीक्षणक बाद हम सभ सरकारी गाड़ीसँ छपरा आइ. बी. घुरि रहल छलहुँ तँ ओहूदिन ठाकुर जी एकटा ज्ञानप्रद खिस्सा सुनौने छलाह। ग्रामीण भाषामे खिस्सा शुरू छल, बीच-बीचमे हुंकारी भरैत आ टिप्पणी करैत हमर कार्यपालक अभियंता।

—'एक गाममे दूगो दोस्त रहय, एकटाक टीपनिमे रहइ जे ओ मृत्यु बाद यमराज

हैत। दोस कहलक, 'यार रौ, तु त' यमराज रहबें, हमर की दशा हैत, एकटा उपकार करिहें, मर'सँ पहिने सचेत क' दिहें, नहि किछु तँ चिठिए-समाद पठा दिहें, हम खुशी-खुशी तैयार भ' जेबउ। पहिने यमराज बला दोस विदा भेला, दोसर दोस निश्चिंत छला जे दोसे तँ यमराज छथि, आब कथीक डर? आ एकदिन दोसरो दोस टन बाजि गेला। ओ खिसिआयल गेला यमराज दोस लग—'दोस, एकटा तँ काज कहलहुँ अहाँकें, सेहो नहि भेल अहाँसँ!'

—'दोस, की कहू हम तँ बेर-बेर समाद पठौलहुँ रोगक माध्यमसँ, मुदा अहाँ सुनबे ने कयलहुँ, कहलिअइ ठीके छी, एहनमे हम की करितहुँ?' यमराज दोस बजलाह।

कोरोनाकालक शुरूहेमे ठाकुर जी दुनियासँ विदा भ' गेलाह, से सुनि चकित भ' गेलहुँ। यमराज बला खिस्सा हुनको पर घटित भ' गेलनि। संजोग एहन जे कोनो तीर्थयात्रासँ घुरले छलाह।

हवाइ अड्डाक एकदम सटल एहि चिड़ियाखानामे उड़ैत आ लैंड करैत जहाजकें बड़ लगसँ अनुभव करैत बेर-बेर चित्र 'उड़ि जहाजकें पंछी...' भ' जाइत अछि। पिताकें पाइ दैत छलियनि तँ कहैत छला मायकें द' दियनु। पिताक एहन बात मायपर हुनक विश्वासक कारण नहि होइत छल। क्रमशः अनुभव कयलहुँ जे हमर देल आर्थिक सहयोगसँ समस्याक समाधानक बदला पिताक झंझटि बढ़ि जाइत छलनि। हुनकासँ झपट' लेल छोट भाइ कोनो स्तर धरि जा सकैत छल, माय कानि-खीजिक' घरेमे सलटि लैत छल। एकर अनुभव हमरा पिताक मृत्युसँ पाँच बर्ख पहिने होब' लागल, जखन पिताक हाथ, गाछक पाइ आयल छलनि आ अनुज हुनक आसन्न मृत्युक वर्णन क' रहल छल—'जहन लहास खसतनि ओहो एहन भारी तँ पटना-दिल्ली बला क्यो ने काज देतनि। एहन व्यवस्था घरक ताहिपर दू-दू टा बूढ़ कें के सम्हारि सकत।'

हम हँसी रोकि रहल छलहुँ छोट भाइक गिद्धदृष्टि पर, पिता गुमसुम छलाह। होइत छल, ओकरा कहथिन—होत निबाह न आपनो लीन्हें फिरय समाज। मुदा पिता जेना लोक डाकूक आगाँ समर्पण क' दैत अछि, कागजमे रबड़सँ बान्हल टकाक गड्डी हाथमे देलनि जे ओकरा द' दिऐ। पिताक ई व्यवहार हमरा लेल अत्यंत अपमानजनक छल—एक तँ गलत आदमीक गलत जिदपर समर्पण करब दोसर एहि निकृष्ट काजक सहभागी हमरा बनायब। पिताक जिबैत तँ हुनका पर तामस झाड़ि दैत छलहुँ, माय तँ और आगाँ बढ़ि एक बेर गंगाकें धरतीपर आन' बला भागिरथ बेटा कहि देने छल। आ आब तँ उनटे वैह अनुज उपकारक गंगा बहा रहल अछि आ गाम-घरक लोक ओहि गंगामे पाप धो रहल अछि। होइत अछि, जखन पिते नहि हमरा चिन्हलनि तँ हुनका सभक मृत्युक पंद्रह बर्ख बादो धरिकें भरिजन्म हमर जयकारमे ढोल बजबैत रहओ। जेठ-श्रेष्ठ सभ निंघटले छथि जे सुख-दुख बतिअइतहुँ। ओना एकटा पीसा छथि, मुदा ओ त' अपने पुत्रसभक बीच मचल

महाभारतमे शर-शय्यापर छथि। मुदा चरणामृत छीटि देताह—'प्रेम हो तँ अहाँ दुनू भाइ सन'—कते साँच कते झूठ!

ओना पर्यावरण आ साहित्यिक दृष्टिसँ ई जू-भ्रमण आह्लादकारी अछि, मुदा एतहु अहाँ वा हम पराजिते हैब। अपन संततिकें न्यूजर्सीसँ चंद्रमा पर पहुँचा देत आ अहाँसँ अंतरंग बात ल' लेत एना जे सामनेमे सहानुभूति प्रदर्शन आ परोक्षमे रंग-बिरंगक खिस्सा।

विलियम शेक्सपीयर पर श्रद्धा जागि जाइत अछि अपन स्वदेशी कविसँ बहुत बेसी...'ऐज यू लाइक इट' नाटकक पात्र जकाँ गयबाक मोन होइत अछि—ब्लो दाउ विंदर विंड...दाउ आर्ट नॉट सो अनकाइंड ऐज मैंस इनग्रैटिच्यूड...दाइ टुथ इज नॉट सो कीन आलदो दाइ ब्रेथ बी रूड...हाइ हो सिंग अनटू द ग्रीन होली : मॉस्ट फ्रेंडशिप इज फेनिंग, मॉस्ट लभिंग मियर फॉली...फ्रीज फ्रीज दाउ विंटर स्काइ, दैट डस्ट नॉट बाइट सो हाइ ऐज बेनिफिट्स फॉरगॉट...दो दाउ द वाटर्स वार्प दाइ स्टिंग इज नॉट सो शार्प ऐज फ्रेंड रिमेम्बर्ड नॉट...हाइ हो...हाइ हो!! लाखो बरखक बनमानुखसँ सभ्य मनुष्य बनबाक सफरमे कते दुष्टताक पापक मोटरी भरि देलहुँ पर्यावरणमे। आत्मीय जनक देल गेल दर्दक टीस एते भयावह अछि जे बर्फक सर्द कनकन हवा सेहो ओकरा आगाँ भोथ अछि।

हमर पिता एकटा नव कल्पित दुनिया स्थापित कयलनि जे सरल व्यावहारिक युक्तिसँ पाँच-दस कोसमे यश-प्रतिष्ठामे विस्तार पौलक, जे देयादी झगड़ा, केस-मोकदमाक पेंचक संघर्षसँ परिपक्व भेल। भांग पीबि एकर विस्तारसँ चर्चा होइत छल, जे सुनैत घरक लोकक तँ कान पाकले छलैक, अतिथि-अभ्यागत सेहो अकच्छ भ' जाइत छला (बेसी काल कोनो ने कोनो अतिथि रहिते छलाह)। हुनक पितामह (हमर प्रपिताहम) अत्यंत गरीब छलाह पाँचो भाइ, मुदा पितामही सुधंग घरलगाउनि नैहरक कोसलियासँ लक्ष्मीजीकें सासुरक निर्धनतामे विराजमान कयलीह आ 1934 ई.मे हुनके कोसलियाक कोठामे दबिक' पिचा गेलीह। हुनक पिता (हमर पितामह) जे अल्पायु भेलाह, अपने तँ भोग-विलासमे रहलाह, बेटी सभकें छोटहा घरमे द' देलनि। ओना ई पिताक सोच छलनि, पितामहक सोच कुलशील आ जाति-पाँजि छलनि। पिताकें सेहो देयादी झगड़ामे जते जीतक दंभ छलनि, भैयारी झगड़ामे घुसरि गेल छलनि।

ओ बेसीकाल अपन पिताक (हमर पितामह) श्राद्धक वर्णन करैत छलाह जे हमर जन्मसँ सात बर्ख पहिने भेल छल। पंद्रह वा ओहूसँ बेसी बड़का-बड़का गामक मंडली भोज भेल छल। भरि मास लोक खाइते रहल, भोज होइते रहल। पंचकोसीक लोक चकित छल, मुदा हमर नाना एकरा पिताक नेनमति मानने छलाह। पिताक सोच छलनि (जकरा हमर पितामही बेसी काल लेसैत छलीह) जे हुनक विवाह छोटका घरमे भेल छलनि। ओना हमर नानाक गरीबीसँ शिक्षाधरिक सफर गरिमामय छल आ ओ अंतिम दरभंगा महाराजक गुरुक रूपमे सेवा देने छलाह। नानाक मृत्यु सेहो हमर जन्मसँ पूर्वे भेल छलनि,

जे रहस्यमय परिस्थितिमे भेल छल आ ताहूसँ रहस्यमय छल हुनक अनुज (अपना जमानाक प्रसिद्ध वकील) द्वारा हुनक संचित-अर्जित संपत्ति (जे सामूहिक छल)कें अपना नामे करायब। ओना हमर पिताकें नानासँ बेसी हुनक अनुज वकील साहेबसँ प्रेम छलनि। माय तँ नुकाक' एहि बातक चर्च करैत छल—बाबू स्वार्थक दुनिञा अछि। दाइ गरजिक' कहैत छलि—'तोरा मायक बियाह ओकीले सेहेब करौने रहथुन, वचन देने रहथिन जे देयादी झगड़ा हम सोझरा देब आ से मर' धरि वचन निमाहलथिन।' मातृकमे हमर नानाक दिव्यताक चर्चा गोपनीय ढंगसँ होइत छल, जे देबाल पर टांगल हुनक दरभंगा महराज आ डैनबीक संग बड़का-बड़का आदमकद फोटोसँ स्वत: स्पष्ट होइत छल। कहियो पिता नानाक महानताक व्यंग्य करैत कहने छलाह जे हुनका लेल भाइए-भातिज सभ सर्वोपरि छलनि हम किछु नहि। 'हमरे कोन गर्ज?' पिता आत्मसम्मानी छलाह।

चिड़ियाखानाक मछलीघरक बेंच पर संगी संग सुख-दुखमे मग्न छलहुँ कि पैरक अँउठामे किछु काटि लेलक। संगीक विचार छलनि जे ओहि जगहपर कोनो नोकीला वस्तुसँ खून बहा दल जाय, तावत् सरसराक' भगैत लुक्खी पर नजरि पड़ल। भ' सकैछ ओ अपन अतिक्रमित बेंचक बदला एना अँउठाकें दाँतत्तर ध' क' लेने हो। अचानक गंगेश्वर स्थान मोन पड़ि गेल।

हमर गामक अंतक बाद एकटा चौराहा अछि जत'सँ कनिए पच्छिम मुजफ्फरपुर जिला आ कनिए उत्तर सीतामढ़ी जिला आबि जाइत अछि। ओना तीन कोस पूब आ उत्तरकोनमे बढलापर मधुबनी जिला आबि जाइत अछि। अर्थात् चारि जिलाक सिमानपर अछि गंगेश्वर स्थान जे तत्कालीन लगक गामक जमींदारक बनाओल अछि, जाहिमे शिवलिंग बीस फीट गहींर अछि। वर्षाकालमे यदा-कदा जलमग्न भ' जाइत अछि। शिवलिंग पर बोझल गेल जलक निकासी मंदिरसँ सटल पोखरिमे होइत अछि। मंदिरक निर्माता उक्त जमींदारक दबंगइ आ राजनीतिक पहुँच स्वतंत्रताक दस-पंद्रह बर्ख बादोधरि बहुचर्चित छल। मंदिर-निर्माण संग हुनक उत्थान-पतनक खिस्सा जुड़ैत अछि जे अप्रासंगिक अछि। ई मंदिर जंगल-झाड़मे ओहि समयधरि छल, ओना निर्माणकाल तँ ई पूर्णत: वन रहल हैत। मंदिरसँ कनिके दूर ब्रिटिशकालक डिस्ट्रिक्ट बोर्डक अस्पताल अछि। हम बचपनसँ किशोरावस्था दिस बढ़ि रहल छलहुँ, रविदिन क' खासक' ओना आनो दिन पएरे टोल-परोसक महिला-पुरुष (बेसी काल महिला) संग गंगेश्वर स्थानमे पूजोपरांत अस्पताल जाइत छलहुँ। कोनो ने कोनो ज्वर-व्याधि घर-बाहर रहिते छल। कती-काल धरि दवाइ कुटाइत छल आ तहन पुड़ियामे भेटैत छल। एकटा बड़कीटा गाछ छल, जत' लुक्खी सभक झुंड गाछक डारिसँ अस्पताल धरि हरहोर मचौने रहैत छल। आ ई सभ अकस्मात् लुक्खीक अँउठामे दाँत गड़यलाक बाद चिड़ियाखानामे कोना मोन पड़ि गेल?

गंगेश्वर स्थानक वैद्यक भव्य आकर्षक संगमरमरक मूर्ति सन आकृति छलनि, धोती-

कुर्त्ता आ बंडीमे सीटल केश, आँखिमे गोल-गोल चश्मा आ भाल पर चंदन। ओ सरिसोपाहीक सोति छलाह। हमर पिताक नाम एते जगजियार छलनि जे कोनो आगंतुक वैद्य पूर्व परिचित रहैत छलाह। दोसर हमर नानाक सभसँ छोट भाइ सेहो वैद्य छलाह, मुदा आजीवन ओ अपन अस्पताल बड़का दलानेकें बनौने रहलाह। उक्त वैद्यजी दबाइक पुड़िया तैयार करबाक क्रममे हमर नानाक महानताक चर्चामे मग्न भ' जाइत छलाह आ हम सुनैत-सुनैत अकच्छ भ' जाइत छलहुँ। आ ओइदिन जानि-बुझिक' लुक्खीक पाछाँ दौगैत गाछ लग चलि गेल छलहुँ। हमरा संगे आयलि देयादीक बहीन आ पीसी हुनक खिस्सा सुनैत रहलीह। अचानक ओ वैद्यजी हमर खोज कयलनि—'अँय रौ कत' भागि गेल छलें?' एक बेर मोन भेल जे कहि दी जे हमरा अहाँक एक्के खिस्साक घोसब पसिन्न नहि अछि। मुदा फेर सम्हरलहुँ—लुक्खी सभकें खेहार' गेल छलहुँ...।

ओ अट्टहास कयने छलाह—'एते पैघ लोकक नाती भ' क' लुक्खीक चरबाही करैत छैं, एते बड़का घरक एहन मैल-चिक्कट कपड़ा? ठहर तोहर पिताजीकें कहैत छियनि!' आ हमहूँ कहने छलियनि—'हमरा गामपर जायब, तहन ने?' गाम घुरला पर मायकें कहन छलिअइ—'तोहर पिताक एहन प्रशंसक, हुनका किए ने बजबै छहुन भोजन पर? माय पितासँ ई बात करबाक इशारा कयलक। पिता सेहो एहि बातकें अनठा देने छलाह। मुदा तकर बादा हम वैद्यजीकें नोति देने छलियनि। ओ चौल कयने छलाह—'तोरा कहलासँ जेबउ, तोहर माय तँ हमर बेटी-भतीजी जकाँ अछि, तोहर पिता कहताह तँ सोचब?' फेर हँसिक' कहलनि—'ओहिना हँसी केलिअउ, हम कतहु आनठाँ भोजन नहि करैत छी अपने भोजन बनबैत छी।' आ हम उदास भ' गाम घुरि गेल छलहुँ। तकर एकाध मासक बाद दलानपर भांग-चिन्नी आ हँसी-मजाक भ' रहल छल। किनको बदली भेल छलनि, जे घमंडी सोति छलाह, एहन अनुमान लगौलहुँ। पिता कहने छलाह जे हम ई सभ बात नहि बुझबै। मुदा हम बुझि गेल छलहुँ जे वैद्यजीक बदली भ' गेल छलनि आ हुनका स्थानपर जे आयल छलाह ओ हमर पिताक अत्यंत घनिष्ठ भ' गेल छलाह। बेसी काल हमरे गाम-घरमे घुरिआयल रहैत छलाह आ साँझुका भोजनमे बिन बजौल जुमि जाइत छलाह। गामक लोक नाम राखि देने छलनि खरहा झा।

पिता पंचैतीमे आन-आन गाम सेहो जाइत छलाह, मुदा अपन भैयारीक विवादमे हारि मानि गेल छलाह। बेर-बेर भैयारीक शह पर कोनो तेसर गोटेसँ केस-मोकदमा कराओल गेल छल। घरमे शोर नहि होइत छल, मायकें कनैत देखैत छलिऐ। घरमे कचकचक वातावरण आ पिताक विजेताक दंभमे चूर रहब अखड़ैत छल। आ ओहूसँ बेसी अखड़' बला छल हुनक कंजूस भावुकता। हम हुनक विजेताक फोंक दंभकें सामान्य स्तर पर आन' चाहैत छलहुँ। हम हुनक विशालताक अनुरूप सोच देख' चाहैत छलहुँ, एते सीमित दृष्टि नहि। हम हुनक संकीर्णता पर आ पिता हमर वैराग्य भाव पर चिंतित रहैत छला। ओ

हमरा प्रेमचंदक कोनो कहानी पढ़' लेल देने छलाह, जाहिमे एक पाँती छल—'गृहदाह में जलने वाला व्यक्ति रणक्षेत्र में लड़नेवाले योद्धा से ज्यादा वीर होता है।' अर्थात् ओ हमरामे ओतबे विस्तार देख' चाहैत छलाह, जतेमे हम घरेमे ओझरायल रही। ओहि समयक भारी-भरकम परिवार। भाइ सभक केरियर आ एकाधिक बहीनक विवाह पर्यन्त अपन दायित्वसँ बेसी बढ़ि-चढ़िक' हिस्सा लेलहुँ। यथासाध्य गृहदाहमे आहुति देलहुँ रणक्षेत्रक आहत योद्धा जकाँ। जेना कोनो युद्धक बाद योद्धाक वीरताक खिस्सा सांसारिकतामे सिमटि जाइछ, हम त' अपन बेटीक बियाहेमे हुसि गेल छलहुँ। कमसँ कम पिताक प्रोत्साहनक अपेक्षा छल मुदा हुनक कठोरता सहज रूपमे आबि गेल छल।' अर्थात् अहाँ आब बुझू हम अपनासँ निश्चिंत भेलहुँ' एहने सन मनोभाव छल। अर्थात् पिताक जाहि सुरक्षा-कवचक बलपर हम एतेटा परिवारक स्तर उठयबाक बीड़ा उठौने रहलहुँ परिस्थितिक कनिके घर्षणमे भरभराक' खसि पड़ल छल। ओना भाइ-बहीन जे नकारात्मकतासँ आच्छादित भ' गेल छथि हमर संघर्षसँ अनजान होथि, किन्नहुँ संभव नहि भ' सकैछ।

हम पिताक महत्वाकांक्षाक पालन ड्रिलमास्टरक आदेश जकाँ करैत रहलहुँ। पिताक आदर्श हमर सोझ शिथिल धावककें कोच जकाँ 'और तेज...और तेज' कहैत जोश फुकैत रहल। संभव छल जे हमर परिजन हमर एहि आपाधापी भरल खेलकें नाटकक हास्य-व्यंग्यक पात्र जकाँ लेने होथि। भ' सकैछ एहिमे पिताक भूमिका सूत्रधारक रहल हो आ ई सभ सोचि हम काँप' लगैत छी। झीलक चक्कर लगबैत जते थाकनि नहि भेल छल ताहिसँ बेसी जोर-जोरसँ हाँफ' लगैत छी। पत्नीक व्यंग्य उत्तेजकक काज करैत अछि—'एते उमिर बीति गेल, अपन लोककें नहि चीन्हि सकलहुँ, बेर-बेर हम चेतबैत रहलहुँ...तँ लिअ' आब भोगू अंतिम चरण मे।'

ओना कते बेर अपन उपहास होइत देखने छी जाहिमे सभ परिजन सम्मिलित छला। हमरा अबैत देखि सभ गुम्हकी लाधि देने छल। सारांश छल—हम किछु नीक करैत छी वा कर' चाहैत छी, मुदा ताहिसँ बेसी हल्ला करैत छी वा माथ-कपार पिटैत छी।

पिता एकबेर चिट्ठी लिखने छला मृत्युसँ पाँच बर्ख पूर्व—हम तँ आब रखबार छी, अपन धन-बीत, जमीन-जाल सम्हारू। रखबारक गीत आ ओकर अलसायल तमसायल छवि रोमांचक लगैत छल बचपनमे। ओहूसँ रोमांचक लगैत छल रखबारक मचान, टार्च बड़कीटा आ छोटका चादरि जे ओछाओन आ गमछा दुनूक काज करैत छल। पिताक भगिनमानक भैयारी सभ उदाकिशुनगंज लग हरवाडांगा, दिघलबाँक वा आसपास कतहु रखबारी करैत छला कामथक। छोटका भाइ तँ बसिए गेलनि। जेठ भाइ बरमहल अबैत-जाइत रहैत छला, बड़ा जासूसी अंदाजमे खिस्सा सभ सुनबैत छलाह। ओ जन्मजात आशुकवि छलाह मुदा भाषाक ज्ञान नहि छलनि। ओ भिन्न-भिन्न आकारक डायरी रखने रहैत छला आ बेसी आग्रह कयला पर गाबिक' कविता

सुनबैत छला। भााषा हिंदी मैथिली मिश्रित रहैत छल, तिथि सेहो अंकित रहैत छल। एक गीतक अंश सुनू—'आ गया कामथ नदी का किनारा ऽ ऽ ... तारिख छब्बिस जुलाई बोखार किया चढ़ाइ बेशुमारा ऽ ऽ ... आ गया कामथ नदी का किनारा ऽ ऽ ...' आ रखबारक गीत पूरा बाधकें...डोला दैत अछि।

पिताजीकें जँ जीवित रहितथि तँ कहितियनि—हम तँ रखबारो ने रहलहुँ पिताजी, अपने सिरजल गुत्थीमे रेशमक कीड़ा जकाँ मुना गेल छी। ई धन-संपत्ति, जमीन-जाल, पोखरि-झाँखरि कोनो पौराणिक कथाक अभिशप्त सरोवर अछि। एकर घाट पर पहुँचिते यक्ष माथ चकराब' बला प्रश्न सभ करैत अछि। ओ यक्ष आन क्यो नहि, अपने परिजन आ गाम-घरक शुभेच्छु छथि। पिताक सकारात्मक पक्ष छल, जे अपन स्वतंत्र अस्तित्व बनयबा लेल प्रवृत्त कयलनि। मुदा नकारात्मकता ई छल जे रही कतहु घरेक मायाजालमे ओझरायल रही। पिता अपना लेल ठीक छलाह, अपन यश-प्रतिष्ठा कायम रखलनि, मुदा हमरा दायित्वबोधक धधरामे असहाय छोड़ि गेलाह। मृत्युसँ पूर्व पिता अचानक पूरा ठीक भ' गेल छलाह। स्नानक इच्छा भेल रहनि, नोकर पानि राखि गेल रहनि। नहाक' पूजा कयने छलाह। पितिआइन हमरा द' किछु टिप्पणी कयने छलीह, पिता ओकरा कटैत बाजल छलाह—हुनकासँ बढ़िया के हैत? एते विश्वास छलनि सेहो दुनिञासँ विदा काल। अंतसँ पूर्व जे पूजा कयने छलाह, से हाथ जोड़ने सारापर देल गेलनि। मुखाग्नि देलाक बादो हाथ जोड़ने जरैत देखलियनि। जयदेवक गीत-गोविंदक पाँती सभ आ विद्यापतिक 'हम परिणाम निराशा' नित्यप्रति गबिते टा छलाह।

वयसक जाहि पड़ाव पर आबि गेल छी, ककरो परत-दर-परत आर-पार देखब मोसकिल भ' जाइत अछि। पपड़ी जेना चेहराकें चौबगली घेरबाक ताकमे हो वा जेना समुद्री जीवाश्म चट्टान बनबाक प्रक्रियामे हो। एहिना चारि बर्ख पूर्व परत-दर-परक ढकल एक आकृति एही चिड़ियाखानामे हमर पैर दिस झुकबाक उपक्रम क' रहल छल।

—'भैया, हम चंद्रशेखर घर भरौरा महेशपट्टी, छपरामे अहाँक डेरापर अबैत-जाइत रही। ओहि समय हम रोडपर रही, आइ हम राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त छी।' ओ उत्साहित आ प्रसन्नचित्त छल, मुदा हमहीं अन्यमनस्क जे कहीं डेराधरि ने पछोर लागि जाय। ओना छपरामे अबैत-जाइत पत्नीयो देखने छथिन तें चीन्हि जयतथिन।

—'भैया, आइ तँ हम एकठाँ ठहरल छी, पता आ फोन नं. दितहुँ तँ कहियो अहाँ आ भाभीजीसँ भेंट कर' अबितहुँ।' ओ आगाँ कहैत अछि, जत' ठहरल अछि, ओ पूर्व मंत्री आ सांसद रहि चुकल अछि। ओहो ओकरा संग छपरामे हमर डेरापर गेल अछि। ओकर आकृति मोन नहि पड़ैत अछि, मुदा वास्तविकता अछि ओ मंत्री-सांसद आ एखनो नामी नेता अछि प्रदेशक।

—'भैया, अहाँ त' छोट्टेमे देखने छलहुँ तहिया चंद्रशेखर रही, मुदा आब दास मधुकर

वा डी. मधुकर, फेसबुक-गूगल कतहु देखि सकैत छी।' ओ चिड़ियाखानाक बाहरधरि अपन खिस्सा सुनबैत गेल छल।

—'आगाँक की कार्यक्रम अछि?' पुछला पर ओ कहने छल जे अपराह्नमे बिहारक डी. जी. पी.क आवास पर जायत, जे ओकर संस्थासँ संगीतक डिग्री लेने छथि। पुलिस महकमा ओकरा गुरुक रूपमे जनैत अछि। ओ हमरो डी. जी. पी.सँ भेंट कराब' चाहैत छल। हम अपन असमर्थता देखौने छलहुँ। हम रिटायर आ ओ प्रदेशक डी. जी. पी., बेइज्जते ने हैब। पहिनहुँ नोकरीमे एम्हर-ओम्हर नहि कयने छलहुँ।

—'अहाँ आइडियल छी भइया। फेर बेस...।' गोर लगने छल आ हम आहत। हम छपरामे नव-नव पदस्थापित भेल रही, तावत् दू-तीन साल नोकरीक भेल रहय। शहरक संभ्रांत डाक्टरक मकानमे रही। पहिल बेर परिवार गामसँ अलगो ल'क' आयल रही। डेरा स्टेशनक बगलमे छल। तें बनकट्टाक परशुराम झासँ पहिने परिचय भेल, ओ जी. आर. पी. थाना प्रभारी छला। ओतहि एकरोसँ भेंट भेल छल। गामक बगलक छल, तें आपकता भ' गेल छल। बातचीतमे बचपना, मुदा संपर्क बढ़ाब'मे निपुण। ओ बेर-बेर अपन पितासँ भेंट करबाक लेल आग्रह करैत छल जे रेलव पार्सलक बड़ा बाबू छलाह। दूरेसँ पिता दिस आंगुर देखाक' ई हटि जाइत छल। हँसी लगैत छल जे पितासँ भेंट कर' लेल कहैत अछि आ अपने पितासँ डरे पड़ाइत अछि। अंतत: एकर पिता स्टेशन पर एक बेर स्वत: परिचय कर' आबि गेलाह। वैह स्वयं चिन्हलनि—हमर बचबा अहाँक ओत' जाइत-अबैत अछि, चर्चा करैत रहैए। अपनेक पिताजीक हम सभ इज्जति करैत छियनि। ई जेठ लड़का अछि, छोटका बड़ तेज अछि, एकरे ल' क' परेशान रहैत छी। कनि ध्यान देबइ। परशुराम झा दरोगा त' एकबर डँटनहुँ रहथिन-धुर बूड़ि! कायथ भ' क' मैट्रिकोमे फेल करै छें। काल्हि अहाँ द' कहलक त' हम पुछलिअइ—'तों हुनकासँ की बतिआइत हेबहुन, तों कोन जोग छें? ओ बुड़िबके ने बुझैत हेथुन?' ओ कहने छल जे बड़ सज्जन छथिन, बड़ मानैत छथि।

ओ गाम-घरक आसपासक कतेको गोटेसँ परिचय करौलक। सदर हॉस्पीटलक अधीक्षक जे अस्थुआ गामक छलाह हुनकोसँ परिचय करौलक आ हुनक बेटा जे डाक्टर छल ओकरोसँ। बादमे ई कोनो ढंगसँ मैट्रिकक सर्टिफिकेट उपरा क' आर्ट कालेजमे नाम लिखौने छल। दस-बाहर बर्ख पूर्व एकबेर बनारस स्टेशनपर यात्री सभक चित्र बनब' बला टीमक लीडर रूपमे भेटल छल, गोर लगने छल। एकर पिताक देहांतक बाद एकर छोट भाइकें अनुकंपा पर बनारसेमे नोकरी भ' गेल छल। ओकर विवाह भ' गेल छलैक। ई जेठ भ'कुमारे छल, से सभ बात कनिए कालमे कहने छल। छोटके भाइक संग रेलवेक क्वार्टरमे रहैत छल। हम स्टेशनक सामने मानसरोवर होटलमे ठहरल छलहुँ। ओतहु आबि गोर लगने छल। अर्थात् चिड़ियाखानामे चारि बर्ख पूर्व भेटल ओ दास वा डी. मधुकर आब पहिलुक छपरामे भेटल युवा नहि रहि गेल छल, राष्ट्रपति सम्मानित अधेड़ भ' गेल छल,

जे अपन पिता पार्सल बाबूसँ परिचय कराब'मे डेराइत छल आ बेर-बेर अपन पिताक चर्च करिते टा छल बड़ा बाबूक रूपमे। हम एकबेर डँटने रहिऐक—'बेर-बर बाबूजीक चर्च करैत छी, अहाँक बदला ओ नहि ने किछु क' देताह, बाबा भरोसे कते दिन?'

अतीतक क्यो भेटलापर अतीतक कते कड़ी जुड़' लगैत छै। छपरामे ठीकेदारक संग-संग आनो-आन लोकसँ परिचय छल। दोसर ई बटुक डी. मधुकर। तेसर डेराक शैक्षिक वातावरण, राजेंद्र कालेज छपराक बगलमे छल, अधिकांश किरायादार प्राध्यापक। रोमांचक आ सर्वोपरि जे आकर्षण छल हमर पत्नी मैट्रिकसँ आइ. ए. धरि एहीठाँ पढ़ने छलीह, ससुर जिला स्कूलक शिक्षक छलाह, छात्रावासक अधीक्षक संग-संग छलाह। हुनक आवासीय परिसर विलुप्त भ' गेल छल, ओहि स्थानपर अनेको कार्यालय आ आवास बनि गेल छल। ससुरक आवासमे ब्रिटिश कालक मोटका देबाल सभ छल पुलक पाया जकाँ, जे सिकुड़ि क' बल्ली सन-सन भ'गेल छल। पहिल बेर नव-नव बियाहक बाद मुजफ्फरपुरसँ छपरा जयबाक लेल गोहाटी-लखनउ एक्सप्रेस पकड़ने रही, पत्नी छपरेमे छलीह। छपरामे पदस्थापनक अवधिमे ई पहिल जी. एल. एक्सप्रेसक यात्रा चिरयुवा बनौने रहल, ओना ससुरक सरकारी आवासक दुर्गति दुर्भाग्यपूर्ण लागल छल। मुदा विकासक नाम पर एहिना दुर्गति होइत छै। दोसर विकास जे छोटी लाइनसँ बड़ी लाइन भ' गेल छल आ जाहि ट्रेनसँ पहिल-पहिल एत' आयल रही, ओ ट्रेन बन्न भ' गेल छल गोहाटी-लखनऊ एक्सप्रेस। ओना चंद्रशेखर अर्थात् दास मधुकर द' सोचैत एकटा नकारात्मक भाव आयल जे एकटा मैट्रिक फेल लड़का राष्ट्रपति सम्मानित कोना भ' सकैछ। ओना ओ राष्ट्रपतिए ने भ' जाय, हमरा लेल की अंतर पड़ैछ? छपरामे ओ सदर अस्पतालक अधीक्षकसँ परिचय करबैत कहने छल—ई शंकर डाक्टरक छोट भाई। शंकर डॉक्टर साइकिल पर बैग लटकौने बड़ी-बड़ी काल दरबज्जापर बैसैत छलाह। ओ नामी-नामी आइ. ए. एस.सँ परिचय हेबाक बात कहने छल आ संगे बनारस बला संस्थाक शाखा गाम भरौड़ामे सेहो खालि रहल छल। ओना गामसँ एकर पुष्टि नहि भेल। संगे ककरोसँ ई सर्टिफिकेटक नाम पर पाइ ठगने छल। मोन भेल जे किएक ने ओकर बात पर विश्वास क' ली जे बनारसमे ओकर संगीत कला महाविद्यालय आ गामो पर होइक? ओकरा जे स्पेस भेटलैक, सीढ़ी-दर-सीढ़ी आगाँ बढ़ल। जरनियाह गौआँ सभकें पुलिस महानिदेशकक रुतबा देखा देलकैक, स्वयंकें स्थापित कयलक, हमर की बिगाड़लक? हमरा ओकरासँ एते स्नेह छल, ईर्ष्या किएक हैत? ने ओकरासँ किछु अपेक्षा छल? तखन ओकरासँ पिंड छोड़यबाक एते हड़बड़ी किएक? हमर आ ओकर रस्ता अलग छल, आइयो अछि। ओकरा राष्ट्रपति सम्मान भेटल छै, से के देखलक अछि? मुदा ओ तँ अखबारक कटिंग भरि झोड़ा रखने छल, हम नहि देख' चाहलहुँ, ओ बेर-बेर विश्वसनीयताक प्रमाण देब' चाहलक। जँ ओ सम्मानित छल तँ सबूत देखाब' लेल एते बेहाल किएक छल? जोड़-तोड़क एहि दुनियामे

किछु जोगाड़ क' लेने छल तँ हमरा किए डाह हेबाक चाही? नम्रता आ आदरभावमे कोनो कमी नहि कयने छल। एकाध गोटे कलाक सर्टिफिकेटक नाम पर पाइ लेने छलैक, काज नहि भेलैक आनो किछु परिस्थिति भ' सकैत छल?

ओ बेर-बेर कहने छल—भैया, अहाँ जहिया हमरा देखने रही हम फटीचर रही, आइ सेलिब्रिटी छी। हम हँसि देने रहिऐक अर्थात् चालि, प्रकृति, बेमाय ई तीनू संगे जाय। हमरा ओत' जहिया अबैत छल, पिताक पार्सल बड़ाबाबूक पदक जिक्र करिते टा छल। एकबेर फटकारने रहिऐक—'पप्पाक भरोसे कते दिन?'

लगैछ जेना ओकर स्वर्गीय पिता कहि रहल होथि—'देखलिऐक अहाँ कहने रहिऐक जे पप्पाक आंगुर पकड़िक' कते दिन? मुदा आब तँ हमर आंगुर छोड़िक' कते आगाँ बढ़ि चुकल अछि। अहाँकें हम एते अनुनय कयने रही जे ओकरा पर ध्यान देबैक, कनि नीक जकाँ बुझयबैक। आइ ओ अहाँक बिनु बुझौने अपन विशिष्ट स्थान गाम-घरसँ देशभरिमे बना लेने अछि।' ओना हमर स्वर्गीय पिता सेहो हमर बचावमे अबैत छथि आ ओकरा झाड़ैत छथिन—'होत निबाह न आपनो लीन्हें फिरै समाज!'

ओ विदा होइत काल शीघ्रे हमर आवासपर अयबाक इच्छा प्रकट कयने छल, मुदा आग्रहक बादो हम फोन नं. आ पता नहि देने छलिऐक। एकाध मासक बाद ओकर फोन आयल छल—'भैया, हम चंद्रशेखर अर्थात् डी. मधुकर बाजि रहल छी। गाम आयल छलहुँ, बजारमे एकटा संभ्रांत लोक भेटल छलाह, हुनकेसँ ई नंबर भेटल। ओ अहाँ द' कहलनि जे भाइ छथि। पटना आयब तँ अहाँक डेरा पर चाह पीब, ठहरब आन ठाँ।' पता लगौने छलहुँ किनकासँ ओ हमर नंबर लेलक। जेहन लोकक खाका ओ बतौने छल, हुनकेसँ साक्षात् बात भेल। ओ देयादीक पितिऔत भाइ, मधुकर द' कहलनि 'बड़ नीक लोक'। अनुमान लगौलहुँ जे हमर पितिऔत भाइ नित्य-प्रति थाना, प्रखंड, अंचलक भ्रमण करैत छथि। खासक' थानाक खुफिया छथि। ओतहि मधुकर जीसँ प्रेमालाप भेल हेतनि।

एकर कते दिनुका बाद ओ फेर फोन कयने छल—'भइया, मुजफ्फरपुरमे अहींक एकटा संगी ओत' गेल छलहुँ।' हम ओकरासँ खुफिया प्रश्न सभ कर' लगलहुँ—'के संगी, कोना गेल छलहुँ, की नाम? कोन काजसँ गेल छलहुँ?'

—'हुनकासँ पूर्वेसँ परिचित छलहुँ, मुदा आजुक परिचय आशातीत रहल। बहुत बात अहाँ द' बताब' लगलाह। हमरा तँ बुझलो ने छल जे अहाँ साहित्यकारो छी। हुनक बालक डी. एस. पी. साहेब कहलनि जे ओ हमर निकट संबंधी छथि।' ओ आह्लादित भ' रहल छल आ हमरा बुझा रहल छल जेना कोनो ठनका माथक बगल द' निकलि गेल हो आ हम डरे काँपि रहल होइ।

कोरोना शुरू हेबासँ ठीक पहिने हमर डेरा पर धमकि गेल छल, हमर कतेको लाथ

आ बहानाक बादो। एकसँ एक कलाकार, साहित्यकार आ राजनीतिज्ञसँ अपन परिचयक बात सुनाब' लागल छल। राष्ट्रपति सम्मानसँ संबंधित समाचारपत्रक कटिंग सभ उझिल' लागल छल। ओ चाह पीबि चुकल छल, भोजनक आग्रह केलिऐक, कहलक, 'एक संबंधी ओत' भोजन क' क' चलल छी।' पुछलक—'बौआ, की करैत छथि? हम तेहन प्रमाणपत्र दिआ देबनि जे तुरत्ते नोकरी-चाकरी भ' जेतनि?'

—'किछु नहि करैत छथि, अपना भरि श्रम कयलनि सफलता नहि भेटलनि। जे छथि ठीक छथि, ओहिमे आब कोनो बदली संभव नहि।' हम ओकर इशारा बूझि सावधान भ' गेल छलहुँ।

—'भैया, अहाँ त' सेंटीमेंटल भ' गेलिअइ। एकटा बड़का पदाधिकारी छथि ओहो एहिना निराश छलाह। हुनका बालककें किछु टिप्स देलिअइ, आब ओ दनदना रहल अछि। हमर जे कला संस्था बनारसमे अछि, ताहिसँ प्रतिवर्ष विशिष्ट लोककें सम्मानित करैत छिऐक। हमर सर्टिफिकेट पर हजारो लोक विभिन्न विभागमे बॉस बनल अछि। डी. जी. पी. साहेब सेहो सर्टिफिकेट ल' गेल छथि। हमर देयाद-बाद जमीन हड़पने छल, जत' संस्था अछि। डी. जी. पी. पांडे साहेबकें कह' नहि चाहैत रही, मुदा गौआँ-देयाद मान' लेल तैयार नहि छल, हमरा नटुआ कहैत छल, तें पुलिसिया ताकत देखाब' पड़ल।' ओ भानुमतीक बड़का बैग समेटैत अछि, मुदा फेर बैसैत अछि।

—'अपन जे किछु प्रकाशित होइ से दिअ'। हम सभ साहित्यकारकें सेहो पुरस्कार दैत छियइ।' ओकर वाक्य पूरा होयबासँ पूर्वे हम अपन किताब साँठि देलिअइ आ कहने छलिअइ—हमरा कोनो पुरस्कार नहि चाही, कोनो आन उपयुक्त व्यक्तिकें देब तँ सदुपयोग हैत। बादमे समाचार पत्रसँ ज्ञात भेल जे कोना महिला लेखककें पुरस्कृत कयने छल, विज्ञापन देखि निसास छोड़ने छलहुँ। मुदा एकाएक लाकडाउनमे फोन पर ओकर आवाज सुनि माथ ठनकि गेल छल—'भैया, अहाँक मित्र (डी. एस. पी. साहेबक पिता) इंजीनियर साहेब नहि रहला। अपने मुजफ्फरपुर अबस्स आबी, हमहूँ एखन पटनेमे छी, भ' सकैए डी. जी. पी. साहेब सेहो पहुँचथि।'

आ हम ओकरा संग कोरोना कालमे घरक लोकक मनाहीक बादो मुजफ्फरपुर जा रहल छलहुँ। एहन समयमे जखन लोक अपन सहोदरक मृत्यु पर नहि जा पाबि रहल छल। अखाड़ाघाट श्मशान घाट लग ओ हमरा रोकिक' रखने छल। एहिना लोक बन्हक पड़ैत अछि। डी. एस. पी. क' गाड़ी संग लहास अबैत अछि। मुखाग्नि देब' बला स्वयं डी. एस. पी.कें चारूकात सिपाही घेरने। दू-तीन सिपाही पठाओल जाइत अछि 'डोमरानी'सँ स्वीकृति लेल। भीड़मे खुसुर-पुसुर होइत अछि।

—'सर, ऊ रनियाँ न मानैत हय। ओकरा पचास हजार कम से कम चाही। ओइ से कम न। हुजूरकें आर्डर हो तँ ओकरा कनहा पर उठौले लेले आबी। स्साली... क्वीन

विक्टोरिया बनल हय।' सिपाही इंस्पेक्टर कें सुनबैत अछि।

—देखो फालतू बात नहीं...ये तुम्हारा थाना नहीं है...ये ट्रैफिक थाना है मुक्ति मार्ग का...समझदारी से डील करो...साहेब के पिताजी वाली बात है।

कनीकालमे ओ डोमरानी प्रकट होइत अछि। चेहरासँ वाणी पर्यंत सभकिछु मोहक आ मर्यादित अछि—'हमर सौभाग्य जे अपने सभक दर्शन भेल, जेना मोन हो दाह-संस्कार क' लिअ'। ओ हाथ जोड़ि लैत अछि, अपने सभ हमर विवशता जनिते छी...एहन कोरोनाक प्रकोपमे हमर सभक की हाल हय अपने सभ जनते छी?'

पंद्रह हजार पर फरिआइत छै। ओ रानी थाड़मे जरैत चेरा अनैत अछि। दू-टा सिपाहीमे भिड़ंत होब' लगैत अछि, दुनू पीने बुत्त अछि।

—'तू की जनबे शमशान के हाल, केतनाकें जमराजकें पास भेज देली...।' एकटा गरजैत अछि।

—'तू जमराजे क' ईहाँ भेजले...ई देह तँ साक्षात् स्वर्ग भेज दीहिस...।' दोसर पलटवार करैत अछि। मुखाग्निक कार्यक्रम डी. एस. पी. साहेब द्वारा संपन्न होइत अछि। धधरा उठैत अछि। हड्डी आ मांसक लोथड़ा सभक जरबाक पटाक-पटाक आवाज होइत अछि। कनीकाल बाद चाँड़ी ल' क' दुनू सिपाही खोर-खार कर' लगैत अछि। जरल मूड़ीकें दुनू बेराबेरी पिटैत अछि। एक गोटे मस्तिष्कक लोथड़ा सभकें देखबैत पीट' लगैत अछि।

—'ई हय बिषखोपड़ा, सभ जरि जायत ई जल्दी न जरत।' ओ कोनो कपड़ामे ओकरा लपेटि क' लट्टू जकाँ नचाब' लगैत अछि। फेर जोर-जोरसँ पीट' लगैत अछि। किछु-किछु बड़बड़ाइत रहैत अछि। घरबैया दिससँ शांतिपूर्वक सभकिछु करबाक प्रार्थना होइत अछि।

—'जा हो इंजीनियर साहेब, अहाँ ढेरे ठिकेदारकें मुर्गा बनौले होयब, आइ तोरे हम मुर्गा बनबै छियौ।' एकटा गरजैत अछि। मधुकर डी. एस. पी. साहेब दिससँ कहैत अछि—बेसी उल्टा-पुल्टा बात नहि।

—'जा हो चित्रकार महोदय, तोरो एहने चित्र बनयबौ।' ई कहैत आ खूब जोरसँ लोथड़ाकें जुमाक' बूढ़ी गंडकक बीच धारमे फेकि दैत अछि। साहेब प्रसन्नचित्त छथि, इंस्पक्टर सेहो काज सलटबाक खुशीमे निसास छोड़ैत अछि। दुनू पीने बुत्त सिपाही साहेबकें सैलुट मारैत अछि। इंस्पेक्टर मना करैत अछि—अभी नहीं।

मो. 9006007015



साओनमे बुनझीसी

विभूति आनंद

हमर खबासिनी रहै। बड़ मुँहफट। आ तहिना गप करबाक बय। आ ताहि पर दू पाँती गप कयलक नहि, कि कोनो-ने-कोनो अपशब्द बहरा जाइ। हमर अवस्था तँ छोटे रहय, मुदा तैयो लागय जे एना बाजब ठीक नहि छै। से मायकें एकदिन टोकनो रहिऐ। मुदा माय तकरा सहज ढंगे लेने रहय—'की करबीही गे, ई ओकर लबज छै!'

फेर ककरोसँ पूछ-पाछ, कि ओकरो टोक-टाक नहि कयलिऐ। से मूल गपपर अबैत छी। संझा मायकें अपन घरवलाक मादे बतियायब नीक लगै। लुतुक रहै। काजो करै, तखनो बतिआइ। बेसी काल मैंयाकें संबोधित करैत...तखन सुनैत-सुनैत एतबा तँ हमहूँ बुझ' लागल रहिऐ जे आ अपन दुलहासँ बड़ प्रेम करैत अछि। बस, अपशब्द नीक नहि लागय। मुदा तखन एतबो नहि फुराय जे अपढ़ छै, किछु पढ़ने रहितै तँ एना नहि बजितै। से हमहीं कोन बड़का विदुषी रही। सात-आठक अवस्था रहल हैत। स्कूल धरि जाइत रही...किताबो सभ पढ़ि लेल करिऐ...गणित सेहो, मुदा शुरुआती...

से एकदिन मोन पड़ैए, खबासिनी जखन जाय लगलै तँ मैंया कहलकै—'यै संझा माय, घर जाक' अपन घरवलाकें पठा देबनि। पुपरी पेठिया पठयबाक छैक...'

—'ठीक हइ। पर, हे...'

—'की हे।' दाइकें भेलै जे ओ फेर कोनो खिस्सा ल'क' बैसि जायत।

—'कहली जे ओकर कोन ठीक...'

—'तँ ओ घरपर नहि छथि?'

—'छित्ते हइ! पर कोइ ठीक न न हइ बोंगमरौना के! जोनिपिट्टा कोइ करम के न हइ! केन्हो इकल गेल होतै...'

—'ठीक छै, अहाँ जाउ आ जल्दीसँ पठा दियनु।'

—'ठीक हइ, देखै छिऐ। होतै त' भेज दै छियनि...'

से मोन पड़ैत अछि किछु विलंबसँ मुदा आयल रहै रिझना, आ अबिते चिकरल रहै—'केन्ने छिऐ गिरहसनी। हइए एलिऐ। देखू जे बुरमारी के भाइ, ऊ हमरा अखनी आ के बोललै, से दौगले अइली! ओह, गिरहसनी की सोचैत हेथिन जे...'

मैंया बहराइते—'अयँ रे रिझना इए होइ! जरूरी रहै, तँ ने समाद देलियौ...'

—'आब जे कहियो। हम की कहू ऊ बु...'

मैंयाकें की, हमरो फेर अधलाह लागल। से रिझनाकें आगू किछु बाजयसँ पहिनहि मैंया रोकि देने रहै—'हे ई टका ले, आ चल जो सोझे पेठिया। आधा मोन कनकजीर लेने आ...'

—'जे हुकुम...' आ बिनु किछु आर बजने ओ विदा भ' गेल रहै। बेसी देरी भ' गेल रहै भरिसक, तें किछु आगू नहि बाजि सकल...

तखने जेना हमरा क्यो टोकलक। मुदा जाह, कहाँ क्यो। अरे हँ, से देखियौ। ई तँ साओन मासक प्रभाव रहय। झट्टक मारने रहै...

से लिख' चाहैत रही जे ई सभ टा हमर नैहरक नेनपन रहय। हँ, नैहरे कही। बियाहसँ पहिने ने गाम। हाले तँ दुरागम भ'क' आयल छी। लॉकडाउनक चलते आयल छिए। नहि तँ ब'र बाबू मानि गेल रहथि, सोझे वर्ष द्विरागमन। ई समाचार पाबि दीपा फोने पर कानय लागलि रहय। खैर...

एहि मामलामे हम बड़ भागमंति। नहि तँ आब बेदीये तरसँ बिदा। ओहो की, बिधगति। आब तँ 'बड़ रे जतन सँ...', सेहो हेरा सन गेल। ओना कहियो तँ जे ई विवाह कोनो विवाह भेलै। बरनी, छुतका छोड़ायब। बियाहसँ पहिने सभटा संपन्न भ' गेल रहैत छै...से देखू, लिख' लगलहुँ किछु, आ लिखा गेल किछु। असलमे मूल विषय ई रहय जे हम बीए फाइनलमे रहिऐ, कि लगनक जोर पड़ि गेलै। ओना सत्य कही जे हमरो अधलाह नहि लागल रहय। बस कनी-मनी नखरा।...से जरूरियो छलै। कालेजमे रहिऐ। नब-नब हवा-बसातसँ अवंच नहिये ने रहिऐ। आ ताहिपरसँ साहित्यक छात्रा। आइ-ने-काल्हि होनहें रहै। मनुखे ने छिऐ। ताहिपर मौगी जाति। नयनक बेदन बान समान। तखन एहि पीड़ासँ बरु निदाने नीक...

ब'र बाबू नहि छथि। लॉकडाउन रहितो हुनकर नोकरीये तेहन, जाइये पड़ैत छनि। कहियो पचास प्रतिशत, कहियो पचीस प्रतिशत उपस्थिति। तखन पालन करब तँ नोकरी-पेशा लेल अपरिहार्ये...सएह सभ सोचैत, खिड़की दने अबैत झट्टकक आनंद लैत बैसलि रही। ननदि नहि छथि। तीन देयादनीयें टा। आ बुढ़ा-बुढ़ी। बस। अपने रहने थोड़-बहुत रमन-चमन रहैत छै। नहि तँ किछु नहि। एखन सासुरसँ ओतेक सहजता नहि भेल रहय। तखन तँ नैहरक बोखारमे बौआइत रहू...से, सासुकें एकदिन जेठकी पुतोहुकें कहैत सुननहुँ रहियनि अछेपे—'एखन न'ब छथिन, रह' दियनु नहि टोकै जैयनु। धीरे-धीरे रितिया जयथिन। जीब' दियनु जेना जिऐ छथि तेना। अपने-आप ऊबि जेती। हम कहै छी, जल्दीये। हमरा सब सन नहि ने छथि मुरुख चपाट, जे तीन बर्खे दुरागमन भेलाक बादो साल भरि तक नैहरे ले नोराइत रहलिऐ...'

से नीके अछि, एकांत जीबैत छी। सासु ठीके स्वभावक, बड़ नीक। बुझैत छथिन स्त्रीक दर्द। ताहूमे ई जुम्मा-जुम्मा सात रोज, होयबे कयलय कतेक दिन...

भाषा-साहित्यक छात्रा रहने अनेरे किछुसँ किछु सोच' लगै छिऐ। ई नहिरेसँ हिस्सक लागल अछि। प्राचीन कालक साहित्य आ लोकसाहित्यक विषय-वस्तु अधिक काल अतीतक समय सोच' लेल बाध्य कर' लगैत अछि...

आ ताहिपर हमर जे जीवन, तकर तँ तेसरे लीला। हमरा लेल ई तीन मास, बर्खाक

मास, दुखहरण-मास होइत अछि। ओना आब तँ बर्खा ऋतु ओ बर्खा ऋतु रहलै नहि, जखन कोनो युवती अपन पैघ सन आंगनमे बड़े निचैनसँ नहायल करय, आ गुनगुनाइत रहय। अपन हुनका सुमिरैत...ई भर बादर, माह बादर...

हम हेराय लगलहुँ। बर्खा ऋतुमे आब कविगण सेहो नुका-चोरा नायिका सभक भीजैत शरीरक चित्र उकेरब छोड़ि देने छथिन। हँ, आब की विद्यापतिक युग रहलनि, जे 'ससन परस खसु अंबर देखल धनि देह...' आकि जेना—'चिकुर गिरय जलधारा...' आदि-आदि सन मनजरुआ सभ कविता लिखितथि...

सभ किछु उलट-पलट भ' गेलै। अहू साल जेठेमे आषाढ़ भ' गेलै। अपन कालिदासक 'आषाढस्य प्रथमे दिवसे...' बेकार चल गेलनि।

आब आमक गाछीकें बर्खाक प्रतीक्षा नहि रहैत छै। मार्केट तते ने फास्ट भ' गेलैक अछि जे ओ ऋतुक प्रतीक्षा की करत। असमय जुआन भ' बजार आबि जाइत अछि बिकाय लेल...बड़साइत पाबनि होइ,कि आर्द्राक पातरि, सभक मुख्य आकर्षण आमे, जे पहिने विरले, आब तँ बजारोमे सह-सह, हमरा बड़साइतमे तँ तहिना भेलै, पहिनहिसँ अमाइन-अमाइन घर भेल...।

अह, तहियाक ऋतुक बाते किछु अलग रहै। लोक-भावना संग जीबै सभक भावना...परंपरा रहै थेहगर...ठीके, बर्खा ऋतु आब ओ ऋतु नहि रहलै, जखन बरदक जोड़ा उत्सुक रहैत रहै खेत जाय लेल, अपनाकें ह'रमे जोताय लेल। धानक बीया सेहो तैयारे भेल रहै खेतमे ग'ब देबाक लेल।...

से सभ किछु उन्टा-पुन्टा भ' गेलै। जमिक' बरसबो कहाँ करैत छथि मेघ। से तँ मौसम विभाग सेहो फेल होइत रहैत अछि।

मैयाँ कहै, अनुमानक गलत हएब, नीक गप नहि होइत छै। किएक से नहि पुछि सकलिऐ कहियो। हँ सुनल अछि, पढ़लो अछि जे पहिने सेहो मौसम विज्ञानी भेल करै। जे कहै, तिथि-दंड-पलधरि च'-चू क'मीलि गेल करै। आइ सेहो गामघरमे एहन लोकक कमी नहि छै, जे समयसाल देखिक' डाकक वचन भखैत रहैत छै। गामक परिवेश रहलै हमर, से एखनो ख्याल करबै तँ किछु बुदबुदाइये जयतै...

से लिख' लगलहुँ, बर्खाक मौसम आब कोनो कर्मक नहि। नैहरमे संझा माय भनभनाइत हेतै—'केकरो घर निचू नै रहै छै एइ मौसिम मे। रहब, खायब, सूतब तक सपना क' देने हइ ई...।'

मुदा अरे। रे मन रुक। सुन' दे तँ। सएह तँ, एकेबेर एना नहि भेलैक अछि। भावना एखनो कतौ-ने-कतौ जीबैत छै। आ हम खिड़कीक एक टा पल्ला पर अपन माथा टिकाक' सुनय लगलिए। बगलेक अंगना दिससँ क्यो गुनगुना रहल छलै—'बदरा उमड़ि-घुमड़ि घन गरजे, बुंदिया बरसन लागे ना...'

से, लिखैत-लिखैत ई मोन सेहो ने, एकदम्मसँ अतीती भ' जाइत अछि। हमर बड़की भौजी जहिया नव-नौतारि रहथिन, ओहो चाउरक आँकड़ बिछैत-बिछैत गुनगुनाथिन—'साओनमे बुनझीसी, पिया संग खेलब पचीसी ना...'

ठीके, आब ओ जगत सपना भ' गेलै। ओहुना, आब अपनो कत' रहल कोनो सपना-तपना। ई नैहर-सासुर करैत किछुओ स्थिर नहि रहत भरिसक...

कि अनेरो एही क्रममे ब'र बाबूपर अनुराग चूबि आयल। ई कंप्युटर-मोन संग जीनिहार लोक भला एना भ' क' किएक सोचत। किछु-किछु हेरा जयबाक कचोट एहि मोनक लग किएक रहतै।...

तैं ओ कनी अधिक फास्ट। हम वएह मैंया मोनक पोसायल। ताहिपरसँ बाबा से पंडित। पिताजी सेहो ओकरे शिक्षक। तैं हमरा संग ताही सभक बेसी छाप। गामघरक विधि-व्यवहार, गीतनाद आदिक प्रति अधिक आग्रह...

तखन तँ मौगी छिए। कतहु खपि जयबाक जन्मी गुण। धीरे-धीरे सभ टा अनुकूल भ' जयतै। अथवा मोन अपनहि रमि जयतै। ओहुना एहि घर अयले कते मास भेलय। तहिना ब'र बाबूसँ संगतिये कतेक। ओहुना पुरुषक साहचर्यक ई हमर पहिले बोध। आन संगी सभ सन स्वभाव नहि रहल। अपनेमे समटल रहैत रहलहुँ। आइ कालेजक अंतिम वर्ष गुजारि रहल छी। ल' द' क' एकटा संगी दीपा। मुदा अछि धरि बुजम फ्रेंड। मोन पड़िते मोन औनाय लगैत अछि...

तखन, ब'रबाबू तँ ब'रे बाबू। हमर कपार। खैर। विवाहे राति लागि गेल रहय जे काफी 'केयरिंग' छथिन। हम बड़ डरलि रही। विवाहक मादे की-की सभ ने सुनल करिऐ। मुदा दीपा टा हाथ फेरैत रहल। से सुनल सभ टा उन्टे लागल...

हमरासँ तीन वर्ष जेठ छथि। से कैक दिन धरि कनी-मनी हँसी-मसखरी। स्कूल-कालेजक गप-सप। खिसक्कर बड़का, से रंग-रंगक खिस्सा-पिहानी। से सिनेमाक, सीरीयलक सेहो। देश-देशक सेहो। ओना हम सभ टा बुझिऐ। तैयो नब-नब लागय। हुनका मुँहे सुनब तँ आर नब लागय। झूठ नहि लिखब, चारि दिन धरि माँक बेटी रहिऐ। मोनमे शंका होअय कहीं बेटीये तँ ने रहि जयबै। गप-सपमे आइ धरि कनी-मनी स्पर्श-सुख भेटल। एही ठाम फेर दीपा मोन पड़ि आयल...

फेर हमरा जेना किछु-किछु होबय लागल। मुदा तैयो जी-मोन सैंतने रहलहुँ। लाजे तँ हमर सभक गहना। मुदा पुरुख बड़ निर्लज्ज। धरि हमर ब'र बाबू ताहि सभसँ हटल। बस, ओरल-ठोरल...आ छू-छा, सएह। से फेर एहुठाम दीपा मोन पड़ि आबय। मुदा कहलहुँ न, लाज तँ गहना। तैं माँक बेटीसँ पतिक पत्नी बन'मे सेहो समय लागल। से ओहि राति ने तँ कानल होअय, न हँसल। मुदा खैर, सेहो बड़ बेस। से बेसी काल इएह सभ नहि। बेसीकाल बस पकड़ा-पकड़ी...सेहो तेना क' पकड़थि कि हम हकमि जाइ। ओना ब'र बाबू कहथि—नीरू, जीवन बड़ी टा छै। मखा-मखाक' थमि-थमिक' जीवन भोगबाक छै।...

से ठीके लागल, एतेक हड़बड़ी किएक। जँ कहीं एहनेमे।... नहि नहि...बेजाय नहि

कहैत छथिन, एखन अधिक नहि। बस इंज्वाय। नहि तँ तकर बाद, जंजाले जंजाल...

फेर तँ एही मोने बीच-बीचमे आगि जरैत रहल...पझाइत रहल...जरैत रहल...संग जीवन सपनाइत-अगियाइत रहल...मुदा ब'र बाबूक लेल धन सन। ऑफिसक काज घर आनि, कंप्यूटर संग बाझल रहथि। थाकि जाथि तँ बड़ बेस, ओरल-ठोरल, फेर पकड़ा-पकड़ी...से तेना क' जे आने राति जकाँ थाकि जाइ...फेर ई सभ होइत-हबाइत एक आर काज करथि। हम थाकि गेल रहैत रही। ओ हमरा पटा देथि। फेर हमर पीठक नीचाँ जेना चाटी चलबथि। मुदा हमरा लेल किछु नहि। तखन जेना तमसा क' ऊपरसँ पटि जाथि, आ पकड़ि सूति रहथि। फेर कनीकाल कछमछ। फेर भेर। से हमरा भंगेपर नहि चढ़य। कहीं ई मतिछिप्पू तँ नहि छथिन। हे माँ!...

कि फेर एना भेलै कि एक राति हुनकर गोदीमे बैसलि-झुमैत हमरासँ संझा मायक खिस्सा कहा गेल। से हुनका खूब हँसी लगलनि बोंगमरोना शब्द पर। नीक शब्द सिखलहुँ...। मुदा हमरा तँ देह जरि गेल। कि तखने मोनमे उतरि आयल, मउगमेहरा।

मुदा नः, ई सभ लिखल-कहल नहि जायक चाही। ईहो की विषय भेलै। ओकरा आंगनक बरहमासा नाटकमे एक ठाम मालिक पुछैत छे—'रे कहाँ गेल छलें?'

ओ बच्चा सहज भावसँ उत्तर दैत छै—'ह'ग'!' मालिक कहैत छै—'भक् सार!' से कहाँदन दर्शकमे बैसल पंडित तरहक एक व्यक्ति धोतीक खूटसँ नाक झँपैत बहरा गेल रहथिन—'शिव शिव...शिव शिव...'

हमर मैंया बड़ी टा पंडिताइन। से खबास-खबासिनीक बोली नहि सोहाइ। कहथिन ओ सभ 'ग्राम्य' शब्द बड़ बजैत अछि। शास्त्रमे एहन शब्द बाजब वर्जित छैक। सएह एखन...

बाहरसँ क्यो बजलथिन। लरी टुटि गेल। बहरयलहुँ। बर्खा थमि गेल रहै। ओम्हर चाइ-चुइक जोगाड़ होइत देखल। हमरा की फुरायल, झटकारैत भानस घर दिस बढ़ि गेलिऐ—'छोड़ि देथुन, छोड़ि ने देथुन, हम बनबै छियनि। एसगरे बैसलि मोन सेहो नै लगै छै। गामो पर तँ बेसी काल...'

हम बिसरलिऐक नहि, सासु अपन तीनू पुतोहु दिस तकैत बिहुँसलथिन, आ आँखिक संकेते कहलथिन—'देखलिऐ। एकरे कहै छै अनुभव। आबक लोक जे पोथा-पोथीमे जे पढ़ि लिअ ई सभ। हमरा लोकनि तँ भोगैत सभटा सिखलिऐ।' तीनू देयादिनीक मोनमे जे किछु द्वैध रहल होनि, अलोपित भ' गेलनि। उठल प'ल खसि पड़ल रहनि...

मुदा ओ साँझ एक न'ब समाचार ल' क' आयल। ब'र बाबू अयलाह। पीठक नीचाँ चपत लगबैत अपन अंकमे समा लेलनि। फेर कहलनि—'आइ अहाँ लेल, अहाँक पढ़ाइ लेल, नीक समाचार अछि।...'

—'की, कालेज खुजतै। अनलॉक हटतै की?' हम हुनका छुटिते पुछैत कूदि उठलि रही।

मुदा ब'र बाबू उदासल सन—'तँ हमरा एसगर छोड़ि देबै।'

से झूठ किएक लिखब, हमरो उत्साहपर पानि पड़ि गेल। एतबय दिनमे ई घर,ई जीवन संग राग बैसि गेल रहय। दुर, गोली मारी ओहि पढ़ाइ-लिखाइकें। छौंड़ीसँ मौगी भेलहुँ, आब सभटा खतम। बस, हम आ हमर ब'र बाबू...

कि फेर तखनहि मोन सहज भ' उठल—'नै यो, अहाँकें असगर छोड़ब। सात जन्म तक तंग करैत रहब।...'

—'मुदा...'

—'मुदा-तुदा किछु नै। अहाँ दुख नै करू। हम एतय ने बान्हलि छी, ओतय तँ हम पंछी उन्मुक्त गगन के। फेर मोबाइल छै, मोबाइलमे वीडियो कॉलिंग छै...'

—'अरे सुनू ने!'

—'किए सुनू? ओ अहाँक सासुर अछि। दिने भरि ने ऑफिस। फेर राति तँ अपन छै। मोटरसाइकिलक हैंडल गाम नहि, सासुर दिस घुमा देबै।'

—'मुदा एना तँ सभदिन नै ने!'

मोन आयल जे पुछियनि, तँ एखने कोन इनार-पोखरि खुनै छी? मुदा किएक से पुछितियनि। हम तँ पंडित घरक छी। धीरे-धीरे सभ टा पटरीपर आबि जयतै, कहलियनि—'ह्वाइ नॉट! सासुक अतमा जमाय लेल विकल रहैत छनि। पिताजी ओना गुम्मा, मुदा अंदर स' खुलल मोनक। परंपरित पंडित सन नै!'

आ एहिना गपियाइत-अगराइत समापन खूबे नीक जकाँ भेल। चित-पट खेलाइत रहलहुँ। आ निन्न टुटल तँ रौदकें पलंगपर आयल देखल। लाजे गड़ि गेलहुँ। कहुनाक' आँखि बचबैत, झखाइतो भानस घर ढुकि गेलहुँ। ब'र बाबू ओहिना चितंग। मनोरथ पूर भेल होनि जेना। से पूर्वेमे सएह स्थिर कएल गेल रहै। पिताक पक्ष रहनि—'लड़की पढ़ै छै, पूरा क' लेअय। आब छैके कतेक समय। ओना आब अपनेक वस्तु, जेना राखी...'

ससुरक सेहो सहमतिये रहनि—'पढ़ाइ जरूरी छै। जत' धरि मोन होनि, पढ़थि। आगू जँ नोकरीक इच्छा होनि, ताहूमे कोनो उजूर नहि। आब से ताहि दिनुक समय रहलै!...' ई हमर ससुरक रूलिंग रहनि। तैं हम निश्चिंत रही...

तखने अयलै, लॉकडाउन। फेर कमतै, तँ तखन अनलॉक औतै। कालेज सभ बंदे छै। तखन किएक ने द्विरागमन बला अंतिमो बिध पूर क' लेल जाय।

हम खुश रही। नीक घ'र-ब'र भेटल अछि। मुदा अपन पिताजीक एक आखर कचकि गेल—'अहाँक वस्तु, जेना राखी!'

फेर अपने समाधानो क' लेलहुँ—कहा गेल होयतनि। मैंया कहैक ई 'लबज' छिऐ। आ फेर तँ आब हुनकर रहलियनि कतय।

भोर नीक जकाँ भेलै। ब'र बाबू सेहो उठि गेल रहथि। दलानपर मरदाना चाय-गोष्ठीमे ई बात अयलै। मुदा चोट्ट निदान सेहो भ' गेलै। ससुर कहलथिन—'नः, नैहर

जयबाक लेल कोन दिन, कोन राति। हँ, कनेक पंचांगसँ भदवा-दिक्शूल देखि लेल जाय। से हम एखनहि जाइ छी आ जोगी पंडितसँ दिन लेनहि अबै छी...'

ई निर्णय अंदर-हवेली सेहो अयलै। ओहो सासुक एकमतसँ पास। हम सभ टा गप कान पथने कोठरीसँ सुनैत रही। सुनिते भेल जेना हम बच्चा जकाँ नाचय लागी। फेर खुशीसँ चिचिआय चाहलहुँ। किंतु चोट्टे भान भ' भेल, आब हम समर्थ छी—अपन ससुरक सलज्ज पुत्रवधू...

आइ अठाइस जून छै, दू जुलाइ क' शुक्र छै। ठीक छै, दिग्शूल नहि छै। भदवा सेहो नहि छै। छओ तक अनलॉक छै, सात क' खुजतै। मंगल रहतै। ठीक छै, मंगला मुखी सदा सुखी। तँ दू जुलाइ तय रहलै।

पिताजी एकक साँझमे आबि गेल रहथिन। हुनकर भोजनमे सचार लगलनि। बड़ लेट भ' गेलै ई सभ मिथिलाम होइत। फेर भोरे आठ बजे—'हम तँ पंछी बनि उड़ि जायब...'

धरि बीतल राति स्मरणीय रहल। चित-पट होइत रहलहुँ। ब'र बाबूक खुशी हमरो खुशी। जेना क' राखथि। ब'हुये ने छियनि। निजीये तँ भेलियनि। नैहरक उछाहमे हम अपन स्त्रीकें जेना खून क' देलहुँ। स्त्री आइ धरि समझौते तँ करैत आयल। ब'र बाबू ठीक छथि। केयरिंग छथि। ओ हमर स्वभावकें बुझलनि। हम हुनकर स्वभावकें बुझलियनि। गाड़ीक पहिया जेना, जहिना चलै, धरि चलबाक चाही। ओना जे होइत छै, नीके होइत छै। हदमदीसँ वमने नीक...

फेर तँ तखनुक सभ डर, टीस हेरा गेल। ब'र बाबू राति जेना किछु खा लेने रहथिन...

अगिला मंगलसँ क्लास चलतै। रामपिरीत औटोवलाकें समाद जा चुकल रहै। दिपियासँ भेंट करक अधिक बेचैनी रहय। फोनिया देनहि रहिऐ। कॉलेजक पश्चिमवला गार्डेन हमरा सभक प्रिय स्थान रहय। खाली समयमे दुनू ओतहि इंज्वॉय करी...

कालेज अयलहुँ। उपस्थिति कम्मे रहै। मुदा जे रहय कम नहि रहय। सभ पढ़निहार छात्र-छात्रा। स्टाफरूम फुल। दू-तीन माससँ श्मशान बनल सन ई विद्या मंदिर, ठीके आइ मंदिर सन लागि रहल रहै...बेर भेलै, सभ अपन-अपन क्लास जाइत-अबैत रहलहुँ। हमरा दू टा क्लास रहय। एकटा ऑनर्स, दोसर जीके-जीएस। दोसरमे बेसीकाल नहियें जइऐ। होइतो कम्मे रहै। तें व्यवहारमे एक्के टा क्लास रहय। दीपाक सेहो तेहने सन। ओना ओ सायकलॉजीमे रहय। हम ओना कनी पहिने निकललहुँ। बहुत मास भ' गेल रहय भेंट भेला। मुदा लिअ, ई छौंड़ी तँ हमरो गुरु निकललि। बेसी विकल छलि जेना। देखिते माँतर उछलि पड़लि, आ अपना पाँजमे समेटि लेलक। फेर लेने-लेने सोझे अड़हुलक नीचा वला बेंचपर आनि बैसा लेलक। फेर तुरंत हमर केशमे आँगुर फेरैत भावुक भ' उठलि—'तोरासँ भेंट नै भेने ई जीवन नीरस भ' गेल रहय...'

—'किए गे?'

—'ओह, से जँ बुझि पबितौं!...'

—'बाप रे!'

कि फेर पाँजमे सटने खूब जोरसँ कड़कड़ा क' जेना अपनामे समा लेलक। हम बेचैन भ' उठलहुँ। मुदा...

—'की भेलौ?'

—'ओह, नै किछु...'

—'सुन ने गे...'

—'देखू तँ, ई तँ...'

—'हँ, से तँ छै। मुदा ई मोन छौ न...' दीपा पहिल बेर अलसायल स्वरमे बाजलि रहय।

—'की छौ ऐ मोन के?' ओकरासँ अपनाकें छोड़बैत सन पुछलिऐ।

—'लोल! सब बात शब्देसँ नै ने कहल जाइ छै। आयँ गे, ई बियाह होइते तोरा!...'

—'की...?'

—'हमरे सप्पत, सत-सत बजिहें। की एहन हहास आब तोरा अंदर!...'

हम कचकिक' रहि गेलहुँ। ब'र बाबू मोन पड़ि गेलाह!...

फेर तँ फ्रेश होइते, आँखिपर आबि गेल केशक लटकें झटकि पाछू फेकलहुँ। दीपाकें तखने बजा गेलै—'उफ्, ये अदा!'

आब हमरा बाजब जरूरी भ' गेल। आ बजबासँ पूर्व दीपाकें भरि आँखि देखि लेब' चाहलिऐ। कि देखिते ओ जोरसँ कचकि उठलि—'इस्स!'

—'की भेलौ?'

—'किछु नै।'

—'बुझिऐ तँ!'

—'मार दिया!...'

—'चुप्प!' हम ओकर ठोरपर आँगुर राखि अगरयलहुँ—'हत्यारिन बुझि क' पुलिस जेलमे ध' देतौ!'

—'आब आर कोन जेल?'

—'से की?'

—'एक-दोसरक जेलमे तँ छीहे।'

आ मोनसँ अनफ्रेंड भ' चुकल सन हम दुनू पुनः फ्रेंड होइत फ्रैंक होइत चलल गेलहुँ—'हँ गे, ठीके सभक अपन रुचि, अपन एकांत होइत छै। भगवती सहयात्री सेहो तेहने गढ़ि देलनि...'

कि तखने जेना कतौ टिकटिकिया सन किछु बजबाक बोध भेल—ठिक ठिक, ठिक ठिक...

मो. 7903228695



बौका

शैलेन्द्र आनंद

मामी बियेलै पाठीक स्वर सुना पड़ि रहल छल। ई स्वर अखियासल अछि। हमर गामक बौका थिक ई। बौकाक ई वाक्य ओकर परिचय थिकैक। गामक बच्चा सभ पाछू पाछू बहुत दूर धरि अरियाइत जाइत छैक आ बौका अपन एहि शकुनतकिया कए बेर- बेर दोहराबैत, बरमहल हमर घर पर हाजिर भ' जाइए। अबितहि कहत मालिक! मामी बियेलै पाठी। बेर बेर एकहि वाक्य सुनैत मोन अकछा जाइए। मुदा बौकाकें कोनो फर्क नहि पड़ैत छैक। ओ आसन जमा ओसारा पर बैसि जाइत अछि आ जावत धरि ओकर रिस्पॉन्स नहि लेल जाइत छैक, बरबड़ाइत रहैए ओहिना जेना कोइली प्राती हो प्राती हो दोहराबैत तेहराबैत रहैत अछि। बौका, बकलेल ढहलेल जकाँ बजैत रहैत अछि जरुर। मुदा ओकरो लग एकटा दृष्टि छैक, लोककें आकर्षित करबाक लेल। ओ अपन एहि शकुनतकियासँ सभहक मखौलक पात्र बनल रहैए। सभ लोकमे सामंती संस्कार सुषुप्तावस्थामे विद्यमान रहैत छैक जे एहि प्रकारक विकृत वाचिक प्रदर्शनसँ आनंद उठयबाक अवसर दैत छैक। ककरो दयनीयतासँ आहत नहि भ' आनंद लेबाक प्रवृति अति प्राचीन अछि। राज दरभंगा 'बुड़िराज' रखैत छलाह। ओ पेटक लेल बत्तू बनि, ओकर आवाज निकालि सम्पूर्ण दरबारकें हँसबैत छल। जाहिसँ ओकर गुजर बसर होइत छलैक। बौका लोकक एहि मानसिकतासँ जेना परिचित रहय। ओ निताइ कामतिक एक मात्र पुत्र थिक। बौकाक माय रहैक संजतिया। गामक सुआसिन। परम सज्जन। बौकाक जन्म द' आनन फाननमे टिटनेससँ चल गेल। बौकाकें ओकर मामी पोसलकै। निताइ कामति घर जमाय भ' रह' लगलाह। पछाति एकटा गैरमजरुवा खत्ताकें भरि टटघर ठाढ़ कएलनि आ ओहीमे रह' लगलाह। हुनको माय बौके जकाँ जन्म द' भगवानक घर चल गेल छलखिन। बाप दोसर विवाह क' लेलकनि। हिनक सतमाय बहुत सतबनि हिनका। बारहे बरखमे संजतियासँ वियाह भेल रहनि। ओ अधिकांश समय सासुरेमे बितेलनि। मेहनतिया रहथि। जोनमे खटथि। क्यो पाहुन कहनि, क्यो फालतू। ओ दुनू सम्बोधनकें एकरंग स्वीकार करथि। आपरपर परदेश ध' लेने छथि। गामक खेतिहर जखन खेती पथारी छोड़ि देलक काज कम भेटय लगलनि। हारि थाकि पुरनियाँ पकड़ि लेलनि। फगुवामे छुट्टी लेथि। गाम अबैतकाल बौका लेल बिनुफानकें एकटा पेंट आ एकटा गंजी लेने अबैत छलखिन। जकरा पहिरी बौका दौड़ल हमरा ओहिठाम दाखिल भ' जैते। ओहि दिनका प्रसन्नताक ठेकान नहि ओकर—'बाउ देलकैए। कहलकै जे पहिन नीक लगतौ।' नहि जानि अपन अस्फुट भाषामे ओ आओरो कतेक संवाद बकि जाएत आ हम ओकर भाषाक उत्तर वाह, खूब नीक कहि बुड़िराज सदृश ओकरा तोष दैत लागल

रहैत छी। अंतमे हमहीं हारि थाकि भीतर कोठलीमे जा बैसि रहैत छी। मुदा बौका टस्ससँ मस्स नहि हएत। ओ बैसल रहत। जँ एतेककालमे हमर पत्नीकें देखि लेलकनि, तँ ओकर उत्साहक अंत नहि। ओ बाजत—'कनियाँ हमर बाउ एलैए। हमरा लेल गंजी पेंट अनलकै। कहलकै पहिन, नीक लगतौ।' पत्नी झुरझमान भ' बजतीह अच्छा, बैसू। मुदा एक कप चाहमे कोताही नहि करथिन। बौकाकें ई बात बूझल छैक। हमर पत्नी जहिया दुरगमनियाँ कनियाँ बनलि सबारीमे अबैत रहथि बौका रस्तेसँ सबारीक संग भ' गेल आ बाट बटोहीकें समाद कहै - कनियाँ छीयै। छोटका मालिक कनियाँ अनलकै ए।' आ हवेली धरि सबारीकें पहुँचा, ओसारा पर आबि बैस गेल। सासुरसँ आएल खाजा लड्डू देलियै तँ खाजाकें आधा तोड़ि गमछामे बन्हलक आ बाजल मामीके देबै। मामीकें कहबै कनियाँ देलकौ, खो। ओ आइ धरि जखन कि दू तीन बच्चाक माय भ' गेल छथि, बौका कनियाँ कहब नहि छोड़लकनि।

बौका ओसारा पर जमल अछि। सड़कसँ जाएत नेना भुटका टोकारा दैत छैक 'मामी बियेलै पाठी।' बौका ओकरा सबकें आइ कोनो उतारा नहि देलकैक आ माथमे गमछा बान्हि वीरासनमे बैसि गेल। ओ जहिया जहिया वीरासनमे बैसत, बुझि लिअ बौका आइ ककरो पर तमसाएल अछि। एकतरहें ई ओकर पितासन छियै। तावत पत्नी चाह लेने अयलीह। बौका मुँह दिस ताकि बाजल मामी चाह नै देलकै। हमरासँ झग्गड़ केलकै। दीपवाली दाबा काटि देलकै। कहलकै अपन कपारपर बकरी बान्ह। बौकाक बाजबमे आइ जोश नहि करुणा छलै। जकर अनुभव पत्नीकें भेलनि। ओ भीतरसँ एक कप चाह आनि बौकाक आगूमे राखि देलखिन। बौका चाह पीब' लागल। एहि बेरुका फगुवा रमनगर हेबाक चाही। टोल लोकसँ भरि गेल अछि। जहिया कहियो एहेन अवसर अबैत छैक, ढोल, झालि, मजीरा आ डम्फा उदास गामकें उत्साहसँ भरि दैत छैक। निताइक पितियौत सार बिदेसर बम्बइमे नौकरी करैए, एहि बेर ओहो गाम आएल अछि। मिलनसार स्वभावक मजकिया लोक। निताइकें देखितहि बाजल अच्छा चमरकट्टा आबि गेल। भ' गेल फगुवाक नाश। निताइ कहथिन जखन दानीबाबू आबि गेल छथिन तँ हमर सभक कोन प्रयोजन। की यौ, सुभग भाइ? सुभगलाल भाइक पक्ष लैत बजलाह थेथर अछि इहो पेटमधवा। दोसराक खाइत जे मोन लगैत छैक? अपन एक दोकड़ा ने खर्च करत आ दोसरा कए सिक्की दैत रहत सार। निताइ सारक चौल पर मुस्किया उठलाह। बिदेसर पाहुनक कुशल क्षेम लैत कहलखिन पाहुन, एतेक दिनसँ कमाइ छी, मुदा छोटो छीन एकटा घर बान्हब से नहि। नहि पक्का, एकटा सिकमीएँ घर ठोकि दियौ। लोको तँ बुझत जे नौकरी करैत छी? निताइ कामती सकपका गेलाह। लजाइत बजलाह नौकरी करैले करैत छी। कनियों बचय तँ जरुरे एको कोठलीक घर ठाढ क' देबै। मुदा से होइते कहाँ छै। अहीं कहू जे कत' स' पार लगतै। हमरा तँ 'इनरो आवास' नै देत। बिदेसर बजलाह छोड़ू पुरैनियाँक मोह। एहि बेर हमरा संगे बम्बइ चलू। से जुगुत

धरा देब, जे दू बरखमे एकटा पक्का घर ठोकि देबै। निताइ उत्साहित भ' बजलाह सत्ते...। बिदेसर मजाकक स्वरमे बजलाह 'सार हम तोरा झूठहा बुझाइत छियह? ओत' खाली अपन वेश भूषा बदलैके छै। ब्राह्मणक जन्मल छियह से बुझाइ। खेनाइ रहन सहन सभ फ्री। ऊपरसँ दू हजार दरमाहा। लूरि बुद्धि रहतह तँ हजार पांच सौ ऊपरवाइली सेहो कमा लेबह। निताइ चपचपा गेलाह। पुरैनियाँमे सूखा पैंतीस सौ भेटैत छलनि। कसामसीमे रहि लैत बजलाह आ काज कोन छियै, से तँ कहबे ने केलहुँ, खाली तखनसँ रेड़ने जाइ छी। बिदेसर बुझि गेलाह जे लोहा गरमाएल अछि, खाली चोट देबाक काज छै। बजलाह 'हमर सेठक दोस कए एकटा महाराजक काज छै। अहाँकें जनौउ पहिरा देब। चानन टीका लगा महराजा बना देब। भानस भातक लूरि अछिए। फिट भ' जाएब। ओ की जानय गेलै जे अहाँ ब्राह्मणक जन्मल छी कि नहि? भोरे नहा सोना चानन टीका क' लेब आ धूप आरती क' देबै। एहिमे लगबे की करत? निताइ सुद्धा लोक रहथि। तें किछु चिन्तामे पड़ि गेलाह। ई ककरो, धोखा देब भेल। मुदा बिदेसर हुतकारैत बजलाह सार सुधवा मुँह कुकूर चाटै। एहिमे की छै? ई युग नटकियाक छियै। कुदय फानय तोरय तान से राखय दुनिया के मान। बुढिया सेठानी मात्र ब्राह्मणक छुइल खाइत छै, तें ने कहैत छी? एहिमे डराइक कोन काज? धीरे-धीरे हिस्सक पड़ि जाएत। कोनो सतलरेन पूजा करब' पड़त? निताइ मोन मजबूत कएलनि आ जाएब गछि लेलखिन। बिदेसर मजाक करैत बजलाह सार! उपलेन ओहिना होइ छै? दू लीटर स्प्राइट के दाम निकालह। सभ पीतह तँ आसिरवाद देतह। निताइ बजलाह देलियह। जोशमे होरी हो केर जयघोष भेल आ निताइ स्प्राइट अनबाक लेल दुर्गाथान विदा भेलाह। बौका अपन बापवाला घर के बाउक घर कहैत छैक आ मामा वाला घरकें अपन घर। बौकाक मामी एक हेंज बकरी पोसने छैक। जकर चरबाहि बौकेकें कर' पड़ैत छैक। बकरी चरोनाइ, कटहरक पात, वनचह आदिक जोगार धरोनाइ बकरी घरमे ढुका बंद केनाइ सभ भार बौका पर। असगर बौका दू दर्जनसँ ऊपर बकरी। सभकें समहारब कतेक दुस्साहस छै से बकरी चरौना मात्र बुझैत अछि। दोसर लोक ओकर दुख बुझतै बकरी ककरो अनाजवला खेत दिस टघरि गेल कि गिरहत बकरी चरौना छौड़ेकें पिटपिटा देलक। एमहर खेतवालासँ मारि खएलक, किछु काल रिरीयाएल कि बकरी दोसर खेत दिस टघरल। कनैत दौड़ल ओ लिह ऽऽ कहि ओकरो भगौलक। एहि धुपचटमे छोटकी पाठीकें कुकूर चाभि देलकै। ओ ई सूचना मात्र हमरा देल करैए। जँ मामीसँ कहतै तँ मामी खेनाइ नहि देतै। ओ एहि घटना एना भ' सुनाएत जेना कोनो आसक्ति ओकरा पर नहि रहै। जखन कि ओ एक एक बकरी पर बहुत ध्यान रखैए। ओहि दिन बौका आक्रोशित बुझाएल। ओकर दू टा पाठी कए, तीनटा कुकूर घेरि कए कंठ चाभि देलकै। ओ जाबे दौड़ि कए ओकर रक्षा करय, कुकूर अंतिम क्रिया क' देने रहैक। एतबहि नहि ओहि दिन बौकाक संग कुकूर भिड़ंत करबाक जेना नियार क' कए आएल रहै एक दिस

रेबारै तँ दोसर दिस भीड़ि जाइ। हारि थाकि, नगों चंगों भ' गेल बौका, बकरी हाँकि घर चल आएल आ जखन हमर घर लग आयल तँ कहलक 'दू टा पाठी कुत्ता खा गेल। कुत्ता कए कोचिला खुआ मारि देबै।' आ बकरी हंकैत चल गेल।

निताइ, खोखाइ झा बनल सेठक प्रिय महराज रहथि। भोरे उठि नित्यक्रियासँ निवृत भ' स्नान - पाती करथि, धूप आरती द' अपन भानस भातक ओरिआयोनमे लागि जाथि। हुनक सहायतामे एकटा नेपालिन आएब जाएनि। सेठानी जकरा कांछी कहल करै। कांछी सेठक दरबान बहादुर थापाक पत्नी थिकैक। कांछी अर्थ छौड़ी होइत छैक, जकरा बुझितो ओ चुप भ' काजमे लागल रहैए। करत बेचारी? दिन धराबय तीन नाम रौ, हौ, यौ। ओकर पति बहादुर थापा शुद्ध पहाड़ी। दू नम्बरक पहाड़ पर घर रहैक। एकटा बेटा। गोर नार मुदा बौक। ओ सभ जहिया बम्बई आएल, बेटा टेलहक भ' गेल रहैक। एकटा होटलमे नौकरी करैत रहैक। अपने सेठ जीक दरवानी करय आ पत्नी बुढिया सेठानीक टहल टिकोरा। मस्त जिनगी रहै लेकिन, लोक कतहु अपनाकें सुरक्षित अनुभव करय, से दुरूह छैक। स्वार्थक विभीषिका सभतरि व्याप्त छैक। स्वार्थान्धता मनुखकें दानव बना देने छैक। दया कोसो दूर भेल जा रहल छैक, अन्हारक गह्वरमे विलीन होइत जाइत मानवता ठोहि पाड़ि कानि रहल छैक, एहना स्थितिमे कोनो परिवार खुशीक अनुभव कोना क' सकैए? बहादुर थापाक जिनगीक खुशी अहिना एक दिन छिना गेलैक। ओकर बेटाक अपहरण भ' गेलैक एक राति। लोक काचर कुचर बजैत छलैक जे एकटा गिरोह सक्रिय छैक जे अवसर पाबि उठा लैत छैक आ आँखि, किडनी निकालि कोनो नदी नालामे लाशकें फेकि दैत छैक। बहादुरक सेठ ओकर खोजमे कोनो कोताही नहि केलकैक। बहुत टाका व्यय भेलैक। पुलिस अखबार आ प्राइवेट एजेंसी सभकें खबरि देल गेलैक। ताकिकें अनलापर इनामक घोषणा भेलैक। मुदा आइ धरि कोनो अता पता नहि चलि सकलै। बहादुर अपनाकें नहि रोकि सकल, कत्तौ बौरा गेल। कांछी दुनू बापुतक सकुशल घर घुमबाक बाट जोहि रहल अछि। ओकर कुहरब निशि भाग रातिमे सुना पड़ैत छैक। महाराज एक राति एहि करुण हृदय बिदारक आवाज सुनि चेहा क' बैस गेल छलाह। सर्वेन्ट क्वार्टर दू भागमे बाँटल अछि। मध्यमे ठाढ छैक देबाल। एहि पार महराज आ ओहि पार कांछी। मुदा मानवताक मध्य देबालक कोन अस्तित्व? अपन बौका बेटा मोन पड़ि अबैत छनि महराजकें। आशंकासँ भरि उठैत छथि। पुनः अपनहि चेतना उत्तर दैत छनि-गाम निरापद अछि। गाम कतबो बदलि जाय गाम, गाम थिक ओ शहर किन्नहु ने भ' सकैए, कि तखनहि मोन पड़ि जाइत छनि जे सरिसब पाहीमे एक ट्रक विदेशी शराब आलूक बोराक तरमे नुकाएल पकड़ल गेल छल। कहियो विद्याक लेल जानल जयवाला गाम। मुदा एहिमे गामक कोन दोष? महाराज स्वयंसँ प्रश्न कएलनि। शराब कोनो ओहि गामक छलैक? सड़क पर पकड़ल गेल छलैक। मुदा जेतै तँ कोनो गामे, मोन स्वयं उत्तर देलकनि। नीन उचटि गेलनि। दिन

बितैत चल गेल। महाराजकें गाम गेना दू बरख भ' गेलनि। क'ल नहि पाबथि। रहि रहि क' बौका मोन पड़ि अबनि। सेठकें कतेक गोहरौलनि, मिनती कएलनि तखन फगुवामे छुट्टी भेटलनि। टाका सेहो जर भ' गेल रहनि। बाजारसँ बौका लेल खूब नीक पेंट सर्ट किनलनि। गंजी आ चप्पल सेहो किनि लेलनि। बिस्कुटक बड़का बड़का डिब्बा ओकरा लेल ल' गाड़ी पकड़लनि। टीशन उतरि रिक्शासँ अबैत रहथि तँ गाम लग बाधमे बौकाकें बकरी चरबैत देखलनि। टहटहौआ रौदमे, फुफरी पड़ल देह आ घाम पसेनासँ तर बतर भेल। बकरी खन एम्हर ढंगरय खन ओम्हर। बकरीकें रोमैत, बौकाकें नंगो चंगों होइत पहिल दिन देखने छलाह निताइ महाराज। हृदय खहरि गेलनि। रिक्शा कदमतर रोकि, रिक्शासँ उतरलाह। सड़कक किन्हेरमे आबि बौकाकें हाक देलनि। बौकाक ध्यान बकरी पर केन्द्रित रहै, कोनहु कान बात नहि देलक। निताइ हारि थाकि स्वंय खेतमे उतरलाह। बौका अखियाइस कय बाप दिस देखलक। मुस्कियबाक प्रयास कयलक आ विचित्र ढंगे बपहारि तोड़' लागल। निताइ परबोधैत कहलखिन हम आबि गेल छियौ तोरा लेल कपड़ा जुत्ता, बिस्कुट सभ किछु लेने एलियौए। आइसँ तों बकरी नहि चरेबें। बौका जोशमे आबि गेल आ बाजल 'एक टा पाठी कुत्ता खा गेलै। कुत्ताकें मारलियै तँ हमरो काटि लेलक। मामी खाइ ले नै देलक। भरि दिन उपासले छी।' निताइके बौकाक समाद करेजकें बेधि देलकनि। ओ बजलाह छोड़ि दही बकरीकें अहिना। तों हमरा संगे चल। रिक्शा लग आबि, बैग खोललनि आ एक डिब्बा बिस्कुट निकालि बौकाक हाथमे दैत बजलाह ले खो। भूख लागल हेतौ। तों घर पर चल। बकरीकें छोड़ि दही। बकरीवाली अपन बकरी हाँकि कए ल' जाएत। बौका पहिल दिन रिक्शा पर बैसल छल। उत्साहमे बाजल मामीकें बिस्कुट नै देबै। कनियाँकें देबै कनियाँ चाह दैए, खेनाइ दैए। निताइ बजलाह तों खो। कनियाँकें दोसर रखने छियै से दिहै। बौका, बहुत हराने बिस्कुटक डिब्बा खोललक। बाप सहयोग देलकै तखन डिब्बा खुजलै। बिस्कुट निकालि, पहिने सुंघलक। मोन उछलि पड़लै। चारि पांच टा बिस्कुट खयलाक बाद पुनः बाजल आब मामी लेल राखि दै छियै। निताइ बौकाक मुँह दिस तकलनि। बौका पूर्ण संतुष्ट छल।

मो. 8521202514





जीवन धारा

शिवशंकर श्रीनिवास

ई शनिक रातुक गप छियै। बाबू जखन फोन पर कहलथिन त' हुनक गप मानि अर्चना खेलक, मुदा खेबासँ स' पहिने कोठली स'बहरा तामसे मुँह लाल कयने अपन छोट भाइ निकुंज के डँटलकै–'निकुंज, तों एहि ठामक गप बाबू के किए कह' लगै छहुन? एत' तों कम्पीटीशनक तैयारी कर' अयलेहें कि लुत्ती लगब' आ कहि अपने परसि खा क' पड़ि रहलि मुदा निंद किए हेतै?

मोन पड़लै माँ कहने छलै–अर्चन बेटा, अहाँ प्रेम बियाह क' रहल छी। दुनू गोटय दू जातिक छी, मुदा हम सभ स्वीकृति द'देलहुँ। ओना अहूँके बड़ाइ कर' पड़त जे हमरा सभक स्वीकृति लेलहुँ।'

'कोना ने लैतहुँ। हम वियाह नै करितहुँ से हमरा सभ मंजूर छल, मुदा माय-बापकें छोड़िक' नै।' कहि हँस' लागलि रहय अर्चना।

'सैह एहि प्रेम के अक्षुण्ण राखब। दुनू गोटय नोकरी करै छी, अपन-अपन पैर पर ठाढ छी मुदा अहाँ अपन पति मोनक ध्यान राखब।' माँ कहि गेल रहथिन।

मुदा ई चुप नै रहथि, कहने रहनि–'ई दुनू गोटयक लेल छैने।'

'नै प्रेम अपन पक्ष देखै छै, दोसरक पक्ष नै।' माँ क' गंभीर शब्द सुनि चुपे रहब नीक बुझने रहय ई मुदा एतेक अवश्य कहने रहय–'माँ तों निश्चिंत रह, तोरा कहियो हमरा लेल मुँह मलिन नै हेतौ।'

मुदा से भेलै कहाँ?

बहुत रास बात मनमे आब' लगलै...।

इम्हर निकुंज बहिनक गप सुनि आ ओकर मुँह-ठाम देखि अकबका गेल रहय। मनमे भेलै जे ई की कहलकनि बाबू कें?

असलमे ओ लगातार अपन बहिन अर्चना आ बहनोइ आलोक बीच झगड़ा स' बौक बनल अशांत रहए। आ झगड़ा की? त' बिनु बातक।

एकर बहिन अर्चना बैंकमे नौकरी करैए। स्टेट बैंकमे पी.ओ.सँ बहाली भेल रहै। आब त' प्रोन्नति सेहो भ' गेल छै आ बहनोइ आलोक केंद्रीय सचिवालयक अभियंत्रण विभागमे अभियंता छथिन। एकरा एकटा भागिन छै माने अर्चना-आलोककें एकटा बेटा छै। ओकर नाम छियै आर्यन ओ चौथा वर्गमे पढ़ैए।

घरमे एकटा दाइ अबै छै, जे जलखै स'ल'क' भोजन तक बनबै छै। घरक सभ काज वैह करै छै।

मुदा अर्चना आ आलोकमे झगड़ा किए होइ छै, से निकुंज नै बुझि पबैए।

माय-बापकें झगड़ैत देखि आर्यन सुटकल रहैए।

आर्यनकें स्कूल जेबाक लेल बापे तैयार करै छै। दाइ जलखै करा टिफिन द' दै छै। आर्यनक स्कूल नौ बजेसँ तीन बजे तक चलै छै। आठ बजे भोरमे डेरा स' बहराइए। निकुंज बसमे चढ़ा चल अबैए। तीन बजे ओ स्कूलसँ' डेरा अबैए। पहिने खेलाइ लेल बाहर जाइ छल। एखन सेहो नै जाइए।

अर्चना आ आलोक अपन-अपन गाड़ीसँ थोड़े रहि-रहि क' अपन-अपन कार्यालय जाइए।

फुट्टे-फुट्टे खाइए। निकुंज आ आर्यन संगे खाइए।

अर्चना आ आलोक सुतैए एक कोठरीमे मुदा दुनू-दुनूसँ दूर रहैए।

एक दिन निकुंजकें दाइ कहलक—'निकुंज बौआ, एकटा बात बुझलहुँ, अर्चना मैडम एखनो साहेबसँ प्रेम करै छथि मुदा साहेब तते शांत छथि जे हुनकर बात नै बुझै छी।'

'से कोना?' निकुंज पुछलक।

'आइ अर्चना मैम खा क' नै गेलीह। ओ बड़ी काल तक दू ठाम परसि क' बैसल छलीह, मुदा साहेब ओम्हर गेबे ने कयलाह। ओ त' अपन रीडिंग-रूममे खेनाइ ल' खा के चल गेलाह। अर्चना उठि भुखले चल गेलीह। ई हम जनै छी जे ओ कतौ ने खेतीह। ओ बात कहैए जे ओ साहेबसँ रूसि क' गेलीहे। रूसए लोक तखने जखन प्रेम रहै छै। ओ आबथि त' अहाँ मनेबनि। हुनका मोनमे प्रेम बाँचल छनि।'

सैह निकुंज बहिनिकें मनेबाक चेष्टा कयने छल-मुदा जखन ओ एकरे पर बिगड़' लगलै तखन ओ बाबूकें कहलकनि।

आ से निकुंज ई सोचि बाबूकें कहने रहनि जे ओकरा बाबूक गप मोन पड़लै। एकर बाबू कहैत रहथिन जे तमसायल लोक जँ खा लीअय त' बूझू ओकर आधा तामस समाप्त। भूखल पेट आर तामस बढ़बै छै। आ बहिन भूखल अछि, ताहिसँ द्रवित सेहो भ' गेल रहय निकुंज, मुदा अर्चना जाहि हिसाबे डँटलकै से मोन कोना दन भ' गेलै मुदा जखन देखलक जे अर्चना खा रहलैए त' मन कने शांत भेलै।

खाक' अर्चना पड़ल छलि। पड़ले-पड़ल ओ सोचैत रहलि जे आलोकसँ एना एकरा झगड़ा किए होइ छै? ई सभ दिन आलोक सँ बत-कुट्टनि करय मुदा आलोक हँसैत रहै। ओकर हँसी पर ई आर बिगड़ि जाय मुदा आलोक तँ आगि लग पानि रहय। एकरो तामस हँसीमे बिला जाइ। ई सिंगरहार बनि लोटा जाय।

ओना आलोक जखन टूर पर जाइ त' अर्चना तोड़ल पात भ' जाय। जखन घुमि क' अबै आलाक एकरा अपन अंकमे ल' पुछै—'दूए दिनमे अहाँ देहक डगडगी कत' नुका रहल?'

अर्चना हँसैत गप के नकारै मुदा हृदय वेदन भलै आन नहि बुझौ मुदा आलोक बुझै छलै। ई सभ बात मनमे आबि रहल छै अर्चना के।

आलोक आ अर्चना संगहि सरस्वती स्कूल लहेरियासरायमे पढ़ै छल। प्रथमहि भेंटमे जे हेम-क्षेम भेलै ओ बढ़ैत गेलै।

प्लस टू कयलाक बाद आलोक इंजीनियरिंगक तैयारी कर' कोटा चल गेल आ अर्चना पटना साइंस कॉलेजमे नाम लिखौलक।

किंतु दुनूक बीच फोन स' गप-शप आ बीच-बीचमे भेंट-घाँट होइत रहलै।

किछु दिनक बाद अर्चना बी. एस-सी. कयलक आ बैंकक तैयारीमे लागि गेल। आलोक बी. एस-सी. इंजीनियरिंग कयलक।

पहिने अर्चना के एस.बी.आइ.मे पी.ओ.मे भेलै। चेन्नइमे ज्वाइन कयलक। किछु दिनकबाद आलोककें सेहो दिल्ली सचिवालयमे अभियंत्रण विभागमे नोकरी भेलै।

आब अर्चना अपन बदली करा दिल्ली आबि गेल। डेरा त' दूनूक दू ठाम रहै, मुदा संपर्क बनल छलै।

किछु दिनक बाद जखन अर्चना के विवाह करबाक हेतु माय-बाप कह' लगथिन त' ओ अपन इच्छा कहलक। ओम्हर आलोक सेहो अपन माय-बापकें कहलक। एहि लेल दूनूक परिवारमे थोड़े हवा-बसात बहलै किंतु अंततः विवाह भ' गेलै से बड्ड धूम-धामसँ भेलै।

बहुत सुंदरसँ प्रेमक लत्ती लतरि रहल छलै। एकटा बेटो भेलै वैह जे आर्यन छै। किंतु धीरे-धीरे दूनू पति-पत्नीक बीच अहं टकराय लगलै।

से एना जे आलोकक मित्र ओहिठाम जँ कोनो उत्सव होइ त' अर्चना जिद्द बान्हि लै आ नहि जाय। किछु दिन अर्चनाक मित्रक ओहिठाम आलोक जाइत रहल किंतु बादमे ओहो नहि जाय। दूनूक बीच हम बड़ा त' हम बड़ाक भाव दबल-दबल गरमा रहल छलै।

किछु दिन माने दू साल पहिने आलोककें विभागमे प्रोन्नति भेटलै। बड़ आनंद भेलै आलोककें। डेरा घुरै काल ओ एकटा खूब सुंदर नूआ आ एकटा सूट अर्चना लेल लेलक। आर्यन लेल सेहो एकटा पसिन्नके पैंट-सर्ट लेलक। किछु खाय वला समान लेलक आ हलसैत डेरा घुरल जे आइ अर्चनाकें 'सरप्राइज' देत, मुदा सभटा मनक बात मने रहलै। प्रोन्नतिक बात सुनि अर्चनाक मनमे जेना भीजल बालुमे केओ मुरही फुटैक बात सोचने रहय तहिना बुझेलै आलोककें। अर्चना अपन गिफ्ट तक खोलि क' नहि देखलक कारण ओकरा अपन रुकल प्रोन्नति मनकें बेचैन क' देलकै ओ बहुत हल्लुक ढंगे बधाइ देलकै जेना ईर्ष्या करैत पड़ोसिया दोसर पड़ोसियाकें दैए। तहिना सन प्रतिक्रिया। आलोककें थोड़े काल लेल असहज क' देने रहै, से अर्चनो गमलक तखन ओ गिफ्टकें निकालि देखलक आ 'नीक अइ' कहि राखि देलक।

ओकर बाद कतेक दिन तक आलोक मन्हुआयल रहल। इम्हर एक साल पहिने अर्चनाक प्रोन्नति भेलै त' आलोकक सेहो ओहिना सरायल सन प्रतिक्रिया भेलै से

अर्चनाकें अधलाह लगलै मुदा चुप्प रहलि।

अर्चनाकें मन पड़लै एकर बाबू (पिता)के शिक्षकसँ हाइस्कूलमे प्रधानाध्यापक पद पर प्रोन्नति भेल रहनि।

एकर बाबू एकर माँ लेल कोनो गिफ्ट नहि अनने रहथिन किंतु माँ राम साहुक दोकानसँ पाँच किलो लड्डू मँगा भरि टोल बटने रहय।

बाबू लेल राशि-राशिकें भोजनक व्यंजन बनौने रहय। बूझू भेलनि बाबूक प्रोन्नति आ माँ नेहाल भ' गेलि रहय।

तहिना एकर बाबू अपने कष्ट उठा लेथि किंतु माँ के कहियो कोनो कष्ट नहि होब' देलनि।

आइ पड़लि-पड़लि अर्चना सोचैए एकर माय-बापक जीवन स्त्री-पुरुषक फूट-फूट जीवन नहि दू धारक संगम जकाँ एक भ' गेल रहै।

मुदा ई आलोककें सतत पुरुष बुझैत रहलि आ प्रायः आलोक सेहो एकरा एकटा स्त्री बुझैत रहल। दूनू जीवन धारा एक नहि भ' सकलै प्रायः।

एकरा मोन सदा रहलैए जे पुरुष स्त्रीकें अपनासँ निम्न बुझैए आ आलोक? ओ जे बुझैत रहल होअय मुदा ओहो एकरासँ दूरी पर अवश्य रहलै।

पति-पत्नी तखन पुरुष-स्त्रीक अहंकार? सोचैत अर्चनाक मोन कोनादन कर' लगलै। आ किछु-किछु सोचैत रहलि।

रविक भोर, सातक करीब समय भ' गेल रहै। आलोक अर्चनाक माथ पर हाथ द' सोहरा रहल छल। अर्चनाक आँखि खुजलै। टप-टप ओकरा मुँहे पर आलोकक नोर टपकि पड़लै।

अर्चना उठि आलोककें पकड़ि कान' लागलि—'एना नै, अहाँक गलती नै हमर गलती अइ।' आलोकक स्वर सेहो भरभरा उठल रहै।

'नै आलोक, हमरा लोकनि पति-पत्नी नै भ' सकलहुँ एखन तक, मात्र स्त्री-पुरुष जकाँ रहि रहल छी। अहाँ कहू आलोक, हमरा लोकनि पति-पत्नी कहिया हैब।' अर्चना ओहिना आलोककें पकड़ने ओकर छातीमे मुँह गोड़ने पुछि रहल छलै।

'आइसँ' अर्चन, आइसँ' आ कहैत ओकर नोर पोछैत एकटा चुम्बन ल' लेलकै आलोक। तखनो दूनू कानि रहल छल।

मो. 9470883301



टोपी

अशोक

दिवसकांत जखन पटनाक डाकबंगला चौराहा पर 'राजधानी ट्रेवल्स'सँ निकलला त' साँझ के सात बाजि रहल छल। काल्हि ओ पुणे जेबाक लेल रेलवे टिकट लेल एहि एजेंसीमे आयल रहथि। एहि एजेंसीमे पहिनो ओ टिकट कटबैत रहला अछि तैं एकर मैनेजर परिचित रहनि। हुनका भरोस छलनि जे एहिठाम टिकट के जोगाड़ जरूर भ' जायत। काल्हि कहने रहनि जे आइ साँझमे आबि क' आरक्षण संग टिकट ल' जायब। तैं ओ आफिससँ निकलि सोझे एहीठाम अयला। टिकट मुदा नहि भेटि सकलनि। मैनेजर कहलथिन जे, 'कर्मचारी सभ घुरिक' चल आयल अछि। भरि दिन लागल रहय। अहाँक टिकट नहि भ' सकलै। काल्हि एही बेरमे आउ, देखै छी कहुना जोगाड़ करै छी।' दिवसकांत कने निराश भेला। मैनेजर के कहलथिन जे, 'टिकट बहुत जरूरी अछि नहि त' नोकरी पर आफत आबि जायत। अहींक भरोस अछि।' मैनेजर मुसकिया क' भरोस देने रहथिन।

असलमे काल्हिए हुनका आफिसमे आदेशक चिट्ठी भेटल रहनि जे पंद्रह सितंबरसँ पुणेमे ट्रेनिंग लेल योगदान देबाक छनि। पंद्रह दिनक ट्रेनिंग रहनि। केवल दस दिन बाँकी रहि गेल रहैक। एतेक जल्दी कोना स्लीपर क्लासकें टिकट भेटत आ कोना पुणे समय पर पहुँचि सकब से चिंता दिवसकांत कें बेचैन क' देलकनि। पहिने त' हुनका क्रोध भेलनि जे एहनो कतहु होइ। पटनासँ पुणे ट्रेनिंगमे जेबाक लेल कतहु दस दिन पहिने आदेश भेटैक? बिना रिजर्वेशन के लोक कोना तीस घंटाक यात्रा क' सकत? आ रिजर्वेशन ट्रेनमे दस दिन पहिने कोना संभव छैक? ओहि समय आन लाइन टिकट के व्यवस्था शुरू नहि भेल रहैक। स्टेशन जाउ आ लाइनमे लागि क' टिकट कटाउ। ओ प्रयास केलनि जे कहुना नहि जाय पड़य। आदेश के कापी ल' कए साहेब लग पहुँचला। साहेब हुनका दिस प्रश्नवाचक मुद्रामे तकलथिन त' ओ अनुनय के संग बजला, 'सर, हमरा ट्रेनिंगमे पुणे जेबाक लेल आइये आदेश भेटल अछि। दसे दिन समय बचल छैक। रिजर्वेशनो नहि भेटलैक। कोना जेबै?' साहेब कने आर गंभीर भ' गेला। बजला, 'आदेश भेटल अछि त' जाइये पड़त की ने? कोशिश करबै त' टिकट भेटि जायत। नहि हुअय त' कोनो ट्रेवल एजेंट के पकड़ू। आदेश आब बदलि नहि सकैत अछि।' कहि क' साहेब फेरसँ अपन आँखि टेबुल पर राखल फाइल पर ल' गेला। दिवसकांत कनेकाल ठाढ़ रहला आ फेर चैंबरसँ बाहर निकलि गेल रहथि।

डाकबंगला चौराहासँ दिवसकांत पैरे चिड़ैयाटाँड़ अपन डेरा दिस विदा भेला। स्टेशनसँ पूल टपि ओहि पार अयला। डेरा पर पहुँचला त' पत्नी केवाड़ खोलितहि पुछलथिन, 'की भेल? टिकट भ' गेल?'

'नहि, कहलक अछि जे काल्हि कहुना जोगाड़ करत। देखियौ की होइ छै।' ओ जवाब देलनि।
'जँ काल्हियो नहि भेल त' कोना जेबै?' दिवसकांत किछु नहि बजला। आबिक' बिछान पर बैसि रहला। अनिताकें कहलथिन, 'चाह बनाउ। माथ दुखाइये।' अनिता चल गेली मुदा दिवसकांतक मोनमे अनिताक प्रश्न चकभाउर दैत रहलनि। हुनका किछु फुरा नहि रहल छलनि। जायब ठीके कठिन छलनि। पटना-पुणे एक्सप्रेसमे जेनरल बौगीमे एतेक दूर तीस घंटाक सफर मुश्किल रहनि। ओ माथ के जोरसँ झमारलनि। कपड़ा बदलि मुँह-हाथ धोलनि। अंगपोछासँ चेहरा के नीक जकाँ पोछि क' तकिया पर कने ओंगठि क' पड़ि रहला। सोचलनि जे हेतै से देखल जेतै। अनेरे आइयेसँ किए मोन घोर करू। तावत हुनकर नौ बरखक बेटी मिनी देसर कोठलीसँ लगमे चल अयलनि। ओ हुनकर दाढ़ी पकड़ि अपना दिस घुमा देलक। पुछलक, 'पापा अहाँ पूना जेबैक? कत्ते दूर छै पूना? बहुत दूर छै?'
ओ ओकरा दुलार करैत कहलथिन—'हँ, पूना जेबैक। ओकरा पुणे कहैत छै।' एत'सँ बहुत दूर छै। बहुत दूर।' मिनी चुप भ' गेल। फेर किछु सोचैत बाजल, 'एत्ते दूर जाइमे अहाँकें डर नहि हैत?' हँस' लगला दिवसकांत। कहलथिन, 'डर किए हैत। देखै नहि छियै हम कत्ते पैघ छी। अहूँ पैघ भ' जायब त' दूर जाइमे डर नहि लागत।' अनिता तावत चाह ल' कए अयली आ एक छोटकी टेबुल पर राखि कुर्सी पर बैसि रहली। दिवसकांत चाह पीब' लगला। अनिता कहलथिन, 'पुणेमे पंद्रह दिनका ट्रेनिंग अछि। ई महीना त' खतमे भ' जायत। अक्टूबर के पहिल सप्ताह धरि अहाँ वापस आबि सकब। किछु पाइ हमरो द' के जायब। जरूरतक समान त' लिअ' पड़तैक ने।' दिवसकांत चाह पीबैत उत्तर देलथिन, 'से त' ठीके। एखन घुरतीक टिकट सेहो नहि कटेलहुँ अछि। ओहीठाम जाक' फेर कोशिश करबै। कहुना घूरि क' त' अयबे करब। काल्हि आफिसमे टूर एडभांस सेहो भेटत। पाइ त' अहाँकें द' के जेबे करब।' अनिता आश्वस्त भेली। कहलथिन, 'ठीक छै। आब अहाँ दूनू बाप-बेटी गप-सप करू। सुजीत स्कूलक टास्क बनबैमे लागल अछि। हम भानस-भात ताबत क' लैत छी।' दिवसकांत चाह पीबि क' मिनी संग खेलाय लागल रहथि। सुजीत कनेकालक बाद आयल त' ओहो बाप लग बैसि रहल। आब तीनू गप-सपमे लागि गेल रहथि। दिवसकांत धिया-पूतामे रमि क' पुणे जेबाक चिंता जेना बिसरि गेल छला।
दोसर दिन जखन दिवसकांत आफिस के बाद एजेंसीमे पहुँचला त' मैनेजर कहलथिन जे, 'टिकट त' नहि भ' सकल। बहुत कोशिश केलक सभ मुदा नहिए भ' सकलै। हमरा बहुत अफसोस अछि दिवसकांत बाबू।' ओ मैनेजरक मुँह बकर-बकर ताक' लगला। किछु फुराइए ने रहल छलनि जे की बाजी एहि सूचना पर। तैयो कहलथिन, 'की कहू! अहाँ त' कोशिश अपना भरि करबे केलहुँ। तखन आब जायब

कोना से नहि फुरा रहलए। बहुत झंझटमे पड़ि गेलहुँ।' मैनेजर कहलथिन, 'एकटा उपाय त' छैक मुदा से अहाँकें स्वीकार हो तखन।' दिवसकांत लगले कहलथिन, 'की उपाय छैक?'मैनेजर कहलनि, 'एकटा टिकट अछि हमरा लग। पटनासँ पुणे के। अहींक उम्र के। कने आगू-पाछू। बेयालीस वर्ष। टिकट मुदा हफीजुल हसन के नामसँ छै। ओ आब नहि जेता। हमरा टिकट कैंसिल करा देबाक लेल कहि गेला अछि। टिकट एखन धरि हम कैंसिल नहि करेलहुँ अछि। अहाँ चाही त' ओहि टिकट पर जा सकैत छी।' दिवसकांत कें एक क्षण लेल जे प्रसन्नता भेल रहनि से फेर तिरोहित हुअ' लगलनि। ओह, एक त' अनकर नाम के टिकट, तै परसँ मुसलमान के नाम बला। हिंदू नाम के रहितै त' पकड़ेबाक कोनो डर नहि छल। मुदा थोड़े दिन पहिने एकटा अशौचमे केस कटल अछि। टीक से अछि। कटल केसमे ई टीक! एकदम जगजियार लगै छै। केना अपना के छुपा सकब? मुसलमान सन कोना लागब? ई सभटा बात सोचिते रहथि कि हुनका अकस्मात एकटा उपाय सूझि गेलनि। जँ एकटा टोपी ल' ली। तखन कटल केश आ टीक झपा जायत। आ से सोचि ओ निश्चय क' लेलनि। कहलथिन, 'ठीक छै। द' दिअ' टिकट। कहुना जेबाक त' अछिए। एकटा टोपी ल' लैत छी। टीक आ माथ झपा जायत त' मुसलमाने सन लागब की।' मैनेजर हँस' लगला आ हँसिक' टिकट द' देलथिन। ओ टिकट ल' के स्टेशनदिस विदा भेला। ओत' जाक' दोकानमे विभिन्न टोपी सभ देखलनि। अंततः एकटा फर बला उज्जर मोलायम पैघ सन के टोपी पहीरि क' देखलनि। पूरा माथ आ टीक झपा गेल रहनि। दोकानक आइनामे अपन चेहरा देखि आश्वस्त भेला। टोपी कीनि लेलनि। टोपी पहीरनहि विदा भ' गेला। अपन मोहल्लामे चलैत हुनका होइत छलनि जे कियो परिचित टोकि ने देथि। 'वाह, बहुत सुंदर टोपी किनलहुँ अछि। एहि पर चूड़ीदार पैजामा आ शेरवानी सेहो पहिरब त' आर नीक लागब।' सुकुर रहलनि जे कियो परिचित जँ भेटबो केलथिन त' मुसकुरा क' नमस्कार क' आगू बढ़ि गेलथिन। डेरा पहुँचला त' अनिता देखिते हँस' लगली, 'ई टोपी किए किनलियै यौ सुजीत के पप्पा? एहन टोपी पहिरबाक कोन बेगरता भ' गेल?' कहि क' ओ ओहिना हँसैत-मुसकुराइत देखैत रहली। दिवसकांत के भेलनि जे असली बात कहबनि त' से गड़बड़ भ' जायत तैं कहलथिन, 'अरे जाड़ बढ़ि रहल छै की ने। तैं परसँ केश सेहो नहि अछि, तैं ल' लेलिए। पहिरलासँ गरमी बनल रहत। हाफ स्वेटर सेहो द' देब।' तखन अनिता आश्वस्त हुअ' चाहली, 'टिकट भ' गेल ने?' ओ 'हँ, भेटि गेल' कहि टोपी खोलि छोटकी टेबुल पर राखि देलनि। कपड़ा बदल' लगला। अनिता चाह बनब' चल गेली। कपड़ा बदलि क' दिवसकांत मुँह-हाथ धो क' बिछान पर बैसि गेला। अनिता चाह संग नमकीन बिस्कुट सेहो अनने रहथिन। ओ बिस्कुट संग चाह पीअ' लगला। अनिता पुछलथिन, 'टूर एडभांस भेटल ने?'
'हँ, भेटि गेल।' ओ जबाब देलनि।

'कहिया के ट्रेन छै? कत्ते बजे?' अनिता फेर पुछलनि।

'12 सितंबर के छै। रातिमे एगारह बजे। रातिमे खा-पीबि क' स्टेशन चल जायब। बीस-पच्चीस दिन अहाँ सभकें असगरे रह' पड़त। अक्टूबरक पहिल सप्ताह धरि त' हम चलिये आयब।' ओ बजला।

'सुजीत के स्कूलमे फीस सेहो दिअ' पड़तै। मिनी के त' दोसर सप्ताहमे लेतैक।' अनिता सूचना देलथिन।

'हँ, अपना लेल जरूरी पाइ राखिक' फीस, घर-खर्चा सभ लेल टाका अहाँकें द' देब। किछु हेबो करत ने अहाँ लग। ओहिठाम त' होस्टलमे मुफ्त आवास आ भोजन-भात, जलखै-चाह के व्यवस्था रहबे करतैक।' दिवसकांत पत्नीकें आश्वस्त केलनि। थोड़े काल गप-सप क' अनिता किचेनमे चल गेली। दिवसकांत आँखि मूनि क' बिछान पर पड़ि रहला। सोच' लगला जे टिकट के ब्योंत त' कहुना भ' गेल। आब बचिक' सकुशल पुणे पहुँचि जाइ। बहुत सावधानीसँ जाय पड़त। कनेकाल बाद मिनी आ सुजित दूनू लगमे अयलनि। ओकरा सभ संग गपमे लगला त' यात्राक चिंता बिसरा गेलनि।

यात्रा दिन दिवसकांत खा-पीबि क' स्टेशन लेल विदा भेला। एकटा बैगमे कपड़ा-लत्ता ओ आन वस्तु-जात ल' लेलनि। अनिता ठकुआ ओ निमकी बना क' देलथिन ओकरो रखलनि। पैजामा-कुर्त्ता पहीरलनि। टोपी पहीरि तैयार भ' गेला। सुजीत आ मिनीकें ओरियाक' रहबाक निर्देश देलथिन। स्टेशन पर आबिक' ट्रेनक प्रतीक्षा कर' लगला। ट्रेन 10.30 बजे आबिक' लागि गेल। हुनकर बर्थ एस-6 कम्पार्टमेंटमे रहनि। कम्पार्टमेंट ताकि क' ओहिमे चढ़ि गेला। उपरका बर्थ रहनि। हुनका खुशी भेलनि। जाइते बर्थ पर चद्दरि बिछा उपर चढ़ि गेला। बैग के सिरमा लग रखलनि। माथ पर देखलनि। टोपी के ठीक केलनि। माथक पाछू दिस छूबि क' देखलथिन। टीक टोपीसँ बाहर नहि निकलल छल। ओ आवश्स्त भेला। टिकट के फेर उपरका जेबीसँ निकालि क' पढ़लनि। ध्यानसँ ओहिमे लिखल हरेक विवरण के फेरसँ पढ़लनि। हफीजुल हसन नाम के मोन पाड़लनि। टी. टी. के अयबाक प्रतीक्षा कर' लगला।

कनेकालक बाद समय पर ट्रेन विदा भेल। दिवसकांत कने बुदबुदा क' जय गणेश-जय गणेश कहि अज्ञात के आँखि मूनि गोड़ लगलनि। हाथ के उपर उठा क'नहि जोड़लनि। ओ एहि बात लेल साकांक्ष रहथि जे आब हम हफीजुल हसन छी। कलेजा कहुखन के धड़कि उठनि। तैयो मोन के ठीक क' ओ उपरका बर्थ पर बैसल रहला। एक बेर कंपार्टमेंट के पैसेजमे दूनू दिस नजरि देलनि। टी. टी. क कतहु पता नहि रहय। लोक सभ अपन-अपन बिछान क' पड़ि रहल छल। एतबेमे कोनो बच्चा जोरसँ कानि उठल। माय ओकरा चुप कराब' लगलै। दिवसकांत थोड़ेक काल बैसिक' टी. टी.क प्रतीक्षा करब जरूरी बुझलनि। पड़ि रहला पर टोपी एम्हर-ओम्हर ससरि जा सकैत

छलनि। समय ससरैत गेल। देखलनि टी. टी. आबि रहल अछि। एक दिससँ आबि दोसर दिस चल गेल। ओ उपरेसँ टी. टी. के भजिया रहल छला। देखलनि टी. टी. दोसर दिससँ टिकट के जाँच शुरू क' देलक अछि। क्रमशः हिनका दिस बढ़ि रहल अछि। फेर बीचमे एक सीट पर बैसि गेल। बैसि क' टिकट के देख' लागल आ चार्टसँ मिलाब' लागल। फेर उठि क' आगू बढ़ल। कनेकालक बाद दिवसकांतक समक्ष ठाढ़ छल। हिनका दिस मुड़ी उठाक' देखलक आ बाजल, 'टिकट।' ओ जेबीसँ टिकट निकालि के देलथिन। चेहराक भाव के एकदम शांत बना क' रखबाक कोशिश केलनि। टी. टी. टिकट के पढ़ि रहल छल। फेर हिनका दिस तकलक। जेना चेहरा के अकानि रहल हो। पुछलक, "नाम?' दिवसकांत एक क्षण लेल चुप रहला तखन कहलथिन, 'हफीजुल हसन'। नाम सुनि क' टी. टी. फेर एक बेर आर हिनका दिस ताक' लागल। दिवसकांतकें भेलनि जे आब पकड़ेलहुँ। कहीं ई बूझि त' ने गेल। हुनकर कलेजा धक-धक कर' लगलनि। टी. टी. मुदा आब चार्ट देख' लागल रहय। बर्थ आ नाम ताकि क' ओहिमे सही के निशान लगेलक। टिकट हिनका वापस क' देलकनि। आब ओ नीचाक बर्थ वला सभक टिकट के जाँच कर' लागल। दिवसकांत जेबीमे टिकट के राखि क' अपन आँखि मूनि लेलनि। भगवती के स्मरण केलनि। धन्यवाद देलथिन। टी. टी. जखन आगू बढ़ि गेल तखन ओ जेना उग्रास के अनुभव कर' लगला। आब टोपी पहीरनहि बर्थ पर पड़ि रहबाक कोशिश कर' लगला। क्रमशः ओ बैग के सिरमा बना पड़ि रहला। टोपी पहीरने हुनका सुतबामे कनेकाल दिक्कत केलकनि। ओ सोच' लगला जे एखन तीस घंटा बीतेबाक अछि। कहुना शुभ-शुभ क' बीत जाय। फेर पत्नी अनिता मोन पड़लथिन। विदा हेबा कालक हुनक आँखिमे हुलुक-बुलुक करैत नोर मोन पड़लनि। सुजीत आ मिनीक चेहरा मोन पड़लनि। ओ आँखि बंद केने अपन परिवारक एक-एक चेहरा के बहुत आवेससँ मोन पाड़लनि। हृदयमे स्नेह के जेना संचार हुअ' लगलनि। आशंका, चिंता, डरकें पाछू छोड़ैत आब हुनकर आँखि अलसाय लागल छलनि। ओ गौंसँ करौट फेरलनि। माथ पर हाथ ध' मोलायम टोपी के छूलनि आ क्रमशः सूति रहला। जखन निन्न टूटलनि त' भोर भ' गेल रहैक। आँखि खोलिक' चारुकात ताकि अखियास केलनि। लगलनि जेना माथ पर टोपी नहि अछि। ओ चौंकि क' सिरमाक बगलमे तकलनि। टोपीक कतहु पता नहि। की भेल टोपी! ओ बेचैन भ' गेला। उठि क' बैसि गेला। फेर उपरसँ ट्रेनमे नीचा तकलनि। टोपी नीचा खसल रहय। उपरसँ नीचा उतरला आ टोपी उठा क' पहीरि लेलनि। किछु लोक सभ उठि गेल रहय। बेसी लोक एखन सुतले छल। ओ बाथरूममे घुसि गेला। निवृत्त भ' कनेकालक बाद बाथरूमसँ बाहर निकलला। चारूभर तकलनि। फेर अपन बर्थ पर चढ़ि गेला। टोपी ओहिना माथ पर रहय।

जखन देखलनि जे बर्थ के नीचामे सभ लोक उठि गेल अछि त' उपरसँ नीचा

अयला। बिचला बर्थ बला लोक सभ अपन बर्थ के उठा देने रहय। ओ एक कात बैसि गेला। हुनका आब एक पूरा दिन आ राति कटबाक रहनि। चाह बेच' आयल त' चाह पीलनि। ट्रेन भागल जा रहल छल। कतेको स्टेशन आयल। ओ बेसीकाल अपन बर्थ पर रहला। खाइत-पीयैत, पत्रिका पढ़ैत। कखनो क' नीचा उतरि आबथि।

एहि संपूर्ण अवधिमे दू-तीन बेर टी. टी. एम्हरसँ ओम्हर गेल। एक बेर पैसेजमे भेंट भ' गेलनि त' ओ हिनका देखि मुसकुरायल। फेर आगाँ बढ़ि गेल। जखन क' टी. टी. के देखथिन, दिवसकांतक कोंढ कने धड़कि उठनि। कहुना दिनसँ राति भेल। रातिमे फेर ओ टोपी पहीरनहि सुतला। अगिला भोर ट्रेन के पुणे पहुँचबाक रहै। दिवसकांत के आब मोनमे हुलास भर' लागल रहनि। आब कोनो बात नहि। भोरमे त' पहुँचिए जायब। सूति क' उठला त' फड़ीच्छ भ' गेल रहै। ओ कनेकाल पड़ले रहला। फेर उठि क' बैसि गेला। टोपी के ठीक केलनि। बर्थ परसँ नीचा उतरला। ट्रेन आब पुणे पहुँच' बला छल। ओ बर्थ पर बिछौल चद्दरि समेटि बैगमे रखलनि। ट्रेन प्लेटफार्म पर आबि ठाढ़ भ' गेल। लोक सभ उतरबाक लेल समान सभ ल' कए ठाढ़ भ' गेल। कुली सभ बौगीमे ढुकि गेल। लोक सभ उतर' लागल। जकरा पैघ समान सभ रहै से कुली के देलक। ओ लोक सभ के उतर' देलनि। जखन कमे लोक बचल त' बैग के कन्हा पर लादि ओ उतरबाक लेल गेट दिस अयला।

देखलनि प्लेटफार्म पर बौगीक सामने कने दूर हटि क' टी. टी. ठाढ़ छल। हुनकर करेज टी. टी. के देखि क' फेर धड़कि उठलनि। ओ टी. टी. दिस तकलनि त' ओ हिनके दिस तकैत मुसकुरा रहल छल। हिनका इशारासँ अपना दिस बजौलकनि। दिवसकांत उतरैत काल ई सोचिते उतरला जे आब किए बजा रहल छनि। ओ किछु सोचि नहि पाबि सकला। उतरि क' टी. टी. लग जा क' ठाढ़ भ' गेला। टी. टी. गँहिकी नजरिसँ हुनका दिस तकैत बाजल, 'हसन साहब, ई टोपी हमरा द' दीं।' टी. टी. क आँखि दिवसकांत पर स्थिर भ' गेल रहय। हुनका किछु नहि फुरलनि। ईहो नहि कहि सकला जे टोपी अहाँकें किए द' दिय'। चुपचाप टोपी उतारलनि आ टी. टी. क' हाथमे द' देलनि। टी. टी. बाजल, 'अब जाइ।' दिवसकांत किछु क्षण थकमकायल ठाढ़ रहला। जेना मुरूत बनि गेल होथि। फेर देहमे संचार भेलनि त' नहू-नहू डेग उठा गेट दिस विदा भ' गेला।

मो. 8986269001



केबाड़

गौरीनाथ

स्टेशनसँ रिक्शा ल'क' जखन सुदेश सराय रोडक चौक वाली गली लेल निकलल तँ आकाशमे कारी-कारी बदल उमड़ि-घुमड़ि आयल छल। ओना तँ बड़ी कालसँ ओकरा ठोर पर सोना बाइक गाओल ठुमरीक बोल संग ओकर कोठा मादे मारते रास जिज्ञासा छलै, मुदा मनक बंद केबाड़क भीतर कतहु आकाशमे उमड़ि आयल बादरिए जकाँ अनेक तरहक अनिश्चितता उड़ियाइत चलि अबै छलै। ओहि आशंकाकें रोकब ओकरा लेल ओहिना मुश्किल छलै, जेना रिक्शावलाक लाख जतनक बादो जर्जर सड़क पर बनि आयल खदहा-खुदही के चलते हिचकोला खाइसँ बचब असंभव छलै। ओही हिचकोलाक बीच पुछैत-आछैत ओ सोना बाइक देहरि धरि पहुँचल छल कि अनघोल कयने बरखाक पैघ-पैघ बुन्न खस' लगलै। तैयो, बरखा-बुन्नीसँ भिजबाक चिंतासँ बेखबर, कोठाक देहरि पर पैर रखैसँ पहिने सुदेश भूमि पर माथा टेकलक फेर हाथ जोड़ने भीतर प्रवेश कयलक।

जाबत सुदेश कोठाक भीतर पहुँचल बरखाक बुन्न खूब तेज भ' गेल छलै। तेहन तोड़गर जे अचानक शुरू भेल बरखाक संगीतक बीच शून्य महलसँ जेना मेघ मल्हारक बंदिश गुंजित होअय लगलै–'मेहा बरसन लागे, लागे अब तो...'

भरि रस्ता सुदेश सोना बाइक जीवनसँ जुड़ल बात-कथा आ हुनक गायकी मादे सोचैत आयल छल। ग्रेजुएशनक बाद संगीत-शिक्षा लेल जखन सुदेश गुरुजीक ड्योढ़ीमे प्रवेश कयने छल, तखनेसँ सोना बाइ आ हुनक गायकीक खास अंदाज मादे मारते सुन' लागल छल। उस्ताद सभक कोनो जुटान सोनाक चर्चा बिना खत्म नइँ होइ छल। जेना ओहि बेर जौनपुरसँ गुरुजीक ड्योढ़ी आयल खान साहेब बाजल छलाह, 'सोनाक बेसी तारीफ कयल जाय कि ओकर गायकीक से तय करब मोश्किल। विलियम बैल्ले ब्रेट कहाँदन सोनाक गायन पर बात करैत कहलक जे खटका-मुरकी पर तँ अनेककें महारत छै, सोम्यताक प्रतिमूर्ति सोनाक आवाजसँ हुस्न टपकैत छनि।'

'से तँ अनेक बाबू कहैत छथि आ फुसिओ नइँ! सुनै छी, ओहि समय हुनका कारणें कतेको अंग्रेज आईसीएस अफसर अपन बहाली गया करब' लेल लंदन धरि जोगाड़ लगबै छल।' गुरु जी बजलाह, 'मुदा ओकर बाप असर्फीक बेपारमे तेना डुबल छल जे असली सोनाक कोनो कद्र करब जानबे नइँ कयलक।'

'सोना मुदा निरंतर अपन गीत-संगीतक साधनामे डूबल रहलीह।'

'हँ, से के नइँ कहत।'

बीस साल पहिनेक सुनल ई बात सब सुदेशकें ओहिना मन छलै। अनेक बेर सुदेश सोना बाइक साक्षात दर्शन लेल गया-यात्राक मादे सोचलक, मुदा आइ-काल्हि करैत

जीवनक नाना जंजालमे ओ ओझरायल रहल आ समय फूहड़ फिल्मी धून जकाँ कोना बीतैत गेलै, पता नइँ चललै। आब जखन अपना किताब लेल सोनाकें देखने-सुनने एक-एक गायक-वादक आ संगीत-मर्मज्ञ ओत' जाइ-अबैमे सुदेशक जूता खिया रहल छलै, तँ ओकरा अपन गल्तीक भान भ' रहल छलै। एक-एक जानकारीकें कैक ठामसँ जाँच-परख करैत सुदेश जतेक भीतर धरि सोनाक जीवनमे उतरि रहल छल, ओ स्त्री ओकरा लेल ओतेक विशाल आ रहस्यमय भेल जा रहलि छलि। सोनाक जीवनक ई रहस्य ओकरा लेल रोमांचक खजाना जकाँ भ' गेल छल जाहिमे डुबकी लगबैत सब बेर ओकरा कोनो ने कोनो अनमोल रत्न भेटि रहल छलै। एहन-एहन रत्न सन मारते जानकारीसँ ओकर डायरीक पन्ना भरि गेल छलै, मुदा सुदेशकें जेना संतोषे नइँ।

सालो-सालक नियार-भास के बाद जखन सुदेश सदेह अपना सपनाक कोठामे ठाढ़ छल, तखन ओकरा कल्पनामे सोनाक सौंदर्यक कोनो जादू चलि रहल छलै कि संगीतक कोनो नशा छलै पता नइँ! मुसलाधार बरसैत पानिक बीच माँझ घरमे ठाढ़ बड़ी काल धरि ओ आँखि मुनने मेघ मल्हार सुनैत रहल।

एत' पहुँच' धरि सुदेशकें लागि रहल छलै जे कोठा पर कहीं ताला ने लागल होइ आकि कोनो पहरेदार-दरबान ने गेट पर ठाढ़ होइ! आकि जे सेठ धरमचंद सोना बाइक कोठा किनने हैत तकर कोनो नव कारबार ने शुरू भ' गेल होअय! ओ चिंतामे छल जे कोठाक भीतर जाइ आ देखै के अनुमति भेटत कि नइँ!... मुदा ओहि समय इतिहास दिस झुकल ओ कोठा एकदम सुनसान जेना ओकरे सँ एकांत-वार्ता करै लेल खाली छलै। दिनका इजोतमे ओत' बाजारमे चक्कर लगबैत कोनो बिगड़ल-आवारा कि एहने-ओहने केओ अबैत हैत, रातिक अन्हारमे कोनो नशेड़ी-घनचक्कर कि साहसी जोड़ाक आनंददायक ठीहा सेहो रहल होअय! स्थायी निवास तँ फल्गु तट धरि पहुँचैवला पितरक आत्मा आ चमगादड़े सभक बुझा रहल छलै। एहने सन अनुमानक बीच मेघ मल्हार सुनैत सुदेश इत्मीनानसँ एहि कोठरीसँ ओहि कोठरी घूमैत रहल। अंतमे ओ पैघ सन बैठकखानामे पहुँचल आ ओहि जगहक अनुमान कर' लागल जत' बैसिक' सोना बाइ गबैत हेतीह। ओकरा आँखिमे चमक आबि गेलै आ चेहरा पर प्रसन्नताक लहरि!.. रसे-रस सुदेश समस्त वादक आ श्रोता सभक जगह ठिकिअबैत सोना बाइक महफिलमे प्रवेश क' गेल! अचानक ओकरा आँखिक सोझाँ सोना बाइक सजल महफिल साकार भ' उठलै। ओकर पियासल आँखि सोना बाइक दीदार क' रहल छलै आ अद्भुत शृंगारक गमक संग कानमे मिश्री जकाँ घुलि रहल छलै गारामे सोना बाइक ठुमरीक बोल—'झमाझम पानी भरे री कौन अलबेले की नार...'

अचानकसँ कोठाक देबाल सभमे जेना प्राण आबि गेलै! बहुत दिनका बाद ओहि देबाल सभक आँखि संगीतक कोनो शुद्ध रसिकक दर्शनसँ जुड़ा रहल छलै। सोनाक सबसँ नीक शिष्या आकि सहेली रहलि ई देबाल सभ तखने खुशीसँ गाबय लागल छलि। रसे-रस उठान लैत देबाल सभक सरगम गुँजि उठल। ओहि अलौकिक संगीतमे बड़ी

काल धरि हेरायल सुदेशक परिचय जल्दिए ओहि देबाल सभ संग तेहन गाढ़ भ' गेलै जेना दुनूक बीच जनम-जनम केर कोनो संबंध हो!... कि अनचोक्के सीढ़ी-लगक देबाल लग किछु चमकल। सुदेशक नजरिक सोझाँ एकदम नवे-नव बनल एहि कोठाक भीतर सोना बाइक पहिल-पहिल प्रस्तुति वला महफिल जगजियार भ' गेलै।

...सोनी बाबू, खान बहादुर मौलबी शमसुद्दीन हैदर, मौरिज गैरियर हैलेट, सेठ धरमचंद, दादू बाबू सन गणमान्य सामने बैसल छथि आ सोना बाइ डूबिक' गाबि रहल अछि, 'रस के भरे तोर नैन...' गीत-संगीत समाप्त होइते सीढ़ी दिससँ आवाज अयलै, 'ओहि राति महफिल समाप्त होइते हल्का भोजन क' सोना बाइ सुत' लेल अपना कोठरीमे चलि गेल छलि, मुदा...' कि तखने सुदेशक आँखिक सोझा दू टा दृश्य एक संग उभरल!... एक दिस नील रंगक धुंधला प्रकाश बीच पलंग पर लेटलि सोना करोट बदलि रहल छलि, दोसर दिस तेज रोशनीमे सोनाक पिता आ छोट भाइ संपत मारते जेवरातकें उनटि-पुनटि देखि आ तौलि रहल छल। सुदेश अकस्मात चिचिया उठल, 'नइँ! नइँ! नइँ!...' आ बताह जकाँ देबाल पर सिर पटक' लागल।

बाहर बुन्नछेक जेना भ' गेल छलै, बस झींसी-सन किछु खसि रहल छलै आ देबाल सभक सरगम सेहो आब अवरोह पर आबि गेल छलै। किछु क्षण आरो बीतल हैत कि देबाल सभ अपना बगलेमे खिड़की लागि ठाढ़ सुदेशक माथ हसोथेति ओकरा संग खुलिक' जेना बाजय लेल उत्सुक भेल कि सुदेश कहलक, 'अहाँ सब बड़ भाग्यशाली छी जे सोना बाइकें एते लगसँ देखने-सुनने छी।'

ओ देबाल सभ पचासो सालसँ बेसीसँ सोना बाइकें देखने-सुनने छलि, मुदा एकरा सभकें तहूसँ पहिनेक पच्चीस सालक एक-एक दिनक बात-कथा मालूम छलै। लगातार कठिन रियाज आ महफिल सभमे गबैत रहलाक बाद सोना लग समयक टोटा तँ रहैत छलै, मुदा जखन कखनो फुर्सतिक क्षण कि एकांत पाबि ओ अपना मादे सोचै छलि तँ केबाड़ बन्न क' एही देबालसँ लागिक' बड़ी काल धरि हिचकैत रहैत छलि!...कि तखने सुदेश पुबरिया देबाल दिस देखलक, हिचकैत सोना बाइक आँचर ससरि क' खसि पड़ल अछि। फूटिक' जवान सोनाक अनावृत छाती बहुत तेजीसँ ऊपर-नीचा भ' रहल अछि। तेज चलैत साँसक आवाज संपूर्ण ब्रह्माण्ड मे पसरि गेल अछि। कि तखने साड़ीक आँचरकें डोरि जकाँ बँटैत सोना अपने हाथें अपना गर्दनिमे फन्ना लगब' लागलि!...कि ओकरा माथ पर देबाल ठोकर मारलकै आ 'धप' के आवाज संग गुँजि उठलै—नी नी नी सा नी सा नी सा नी सा ध प ध प ध प...आ बड़ी काल धरि पसरल स्तब्धताक शोर बीच भैरवीक 'काहे लाए गवनवाँ'मे ठाह केर बोल तेना फुटि पड़लै जे देबाल सभक दिलमे हूक पैसि गेलै।

'मारते नोकर-चाकर, बाँदी रहलाक बादो एहि कोठाक भीतर सोनाक मनक बात सुन' लेल ईंट-सीमेंटक बनल हमही सब टा छलहुँ। ओकर नोरक सब टा नमी हमही सभ सोखने छी!...' लगमे ठाढ़ सुदेशकें उदास देखि पछबरिया देबाल नहुए बाजल।

००

...सोनाक पढ़ाइ अ आ इ ई के अक्षर-ज्ञानसँ नइँ, सा रे ग म के स्वर-ज्ञानसँ शुरू भेल छलै। ओकरा हाथमे पहिने स्लेट-पेन्सिल नइँ आयल छलै, हारमोनियमे पर पहिल बेर ओ अपन कोमल हाथ रखने छलि। ओकरा आँखिक सोझाँ कोनो अक्षरक आकार अभरैसँ पहिने ओकर कान सरगमक सातो स्वरकें चिन्ह' लागल छलै। छोट सन गामक छौंड़ी सोनाक दादा पंडित विद्यानाथ रायक ख्याति ठुमरी आ दादरा गायनक क्षेत्रमे बहुत दूर-दूर धरि पसरल रहै। राय साहेब अपना जीवनमे धन भने कम अर्जित कयने छलाह, मुदा हुनक प्रतिष्ठा तँ तेहन छलनि जे राजक बड़का-बड़का अमला धरि लिहाज करै छल। गाम-घर की, परोपट्टामे हुनक नाम-यश आ बड़का धाक छल!...

पंडित विद्यानाथ जी अपन बेटो-बेटीकें सिखबै के बड़ प्रयत्न कयने छलाह, मुदा एक उमेरक बाद संगीतक कठोर अनुशासन ओकरा सब मे सँ ककरो रास नइँ आयल छलै। छोट बालकक बड़की बेटी सोना एक मात्र एहन निकललि जकरा किलकारिएसँ बाबाकें भरोस बढ़लनि आ ओ ओकरा लोरी धरि रागमे सुनब' लगलाह। जाहि समय लोक नेनाकें माँ-बाबू कहब सिखबै यए, पंडित विद्यानाथ म प ध सिखा रहल छलाह। तकरे परिणाम छल जे पाँच-छह सालक उमेरमे ओ संस्कृतक कठिन श्लोक, मंगलाचरण आ स्तोत्रक गायन सुर आ रागमे कर' लागलि छलि। भोर होइते सोनाक अड़ोस-पड़ोस धरि गारामे भैरवीक ठुमरीक स्वर-लहरी पसरि जाइ छल। नौ सालक उमेरमे अपना गामक दुर्गा मंदिर परिसरमे दशहरा मेलाक अवसर पर सोना पैघ भीड़क सामने पहिल बेर स्टेज पर प्रस्तुति देने छलि। पहिने खमाजमे 'आए नहीं छाए कहीं श्याम रे पपीहरा...' फेर भैरवीमे 'रस के भरे तोर नैन'सँ ओ लोकक हृदयमे पैसि गेल छलि।

टोल-पड़ोसक बच्चा सब संग खेलै-धुपै लेल सोनाकें सेहंते लागल रहि गेलै। बाबाक देख-रेख आ कठोर अनुशासनमे नेनपनक कोनो टा स्वाद ओ तेना नइँ बुझि सकलि। भोज-भातमे जायब-खायब तँ दूर, घरोमे ओकर खाइ-पीबै पर पूर्णतः बाबाक नियंत्रण छलै। जतेक गरम-गरम हलुआ ओ खयने ने हैत, ताहिसँ बेसीसँ कपड़ामे बान्हि ओकर गलाक सेकाइ भेल हैत। बुढ़ बाबा स्वयंसँ बेसी सोनाक ध्यान रखै छलाह।

बारह सालक छलि सोना जखन दरभंगा महाराजक संगीत समारोहसँ घुरैत काल गयाक पंडित नृपति मिश्र जी पंडित विद्यानाथ रायक ओत' विशेष क' सोनेकें सुनबाक लेल आयल छलाह। ओहि साँझ किछु छोट चीजक बाद जखन सोना 'ठाढ़े रहियो घनश्याम गगरिया धर आऊँ' पैंतालीस मिनट धरि मिश्र जीकें सुनौलकनि तँ ओ अभिभूत भ' गेलाह। फेर ओ विद्यानाथ जीक समक्ष सोनाकें गया पठेबाक प्रस्ताव रखैत कहलनि, 'ई बालिका तँ ठाह केर काबिल यए, गारा धरि एकर प्रतिभाकें सीमित राखब उचित नइँ हैत पंडित जी। ई अहाँक नाम रोशन करत।'

विद्यानाथ जी स्वयं किछु दिनसँ एहने सन सोचि रहल छलाह। पंडित नृपति मिश्र जीक वाणी सुनि हुनका भीतरक इच्छा बलवती भ' गेलनि। जेना-तेना बेटा-पुतहुकें

समझबैत ओ जल्दिए मिश्र जीक संरक्षणमे संगीत-साधनाक लेल सोनाकें गया पठा देलनि। सोना खुलि क' कानियो नइँ सकलि आ कूही होइत घरसँ निकलि एक टा नव संसारमे पहुँचि गेलि।

ई ओ जमाना छलै जखन बनारस धरिक कलाकार किछु दिन गया रहिक' अपन कला-साधनाकें सफल कर' चाहै छल। गयाक प्रसिद्धि ठाह केर ठुमरी आ दादरा लेल सम्पूर्ण दुनियामे छलै। खासक' मिश्र जीक घरानाक बड़ प्रतिष्ठा छलै। ताधरि दरभंगासँ निकललि बड़ी मोती बाइ गयासँ दीक्षित भ'क' बनारसमे अपन कोठा खोलि चुकलि छलि।

गयामे तीन साल बीतैत-बीतैत सोनाक प्रसिद्धि प्रांतक सीमाक पार धरि पहुँचि गेल छल। दूर-दूरक सामंत आ राजाक दरबारसँ हुनका ओत'क महफिलमे गबै लेल सोनाकें बुलावा आब' लागल छल। सोना पर इनाम आ बख्शिसक रूपमे सोना-चानीक बरसा होअय लागल छल। बड़का-बड़का अंग्रेज अफसर कि राजा-नबाब धरि ओकर आवाज पर पागल छल। आइ ओरछा नरेशक दरबारसँ बुलावा आबि रहल यए, तँ काल्हि रीवा नरेशक दरबारसँ। एम्हर दरभंगा नरेशक बुलावा, तँ ओम्हर काशी नरेशक बुलावा। ग्वालियर, अवध, जौनपुर, पंचगछिया, बनैली सब ठामसँ आमंत्रण पर आमंत्रण आबिते रहैत छल।

जखन सोना बाइस सालक छलि तखने ओकर बाबा पंडित विद्यानाथ राय एहि दुनियासँ चलि गेलाह। सोना अपन गाम अंतिम बेर हुनके काजमे गेल छलि। बाबा-बाबा करैत ओ हबोढकार बड़ी काल तक कनैत रहलि। पहिल आ अंतिम बेर ओ ककरो नाम ल'क' ओहि तरहें कानल छलि। ओही बेर ओकरा ईहो बुझबामे अयलै जे बाहरक दुनियामे ओ जते मशहूर भेलि, गामक लोकक नजरिमे ततबे बदनाम!...

पहिने सोना लग हुनकर पिता रहैत छला, मुदा बाबाक मुइलाक बाद बेसी काल ओकरासँ तीन साल छोट भाइ संपत संग रह' लागल छल। रसे-रस संपते अपन दीदीक पीए-ट्रेजरार सब किछु भ' गेल छल। ओकरे देखरेखमे चौक वाली गलीमे सोनाक दोतल्ला कोठा सन उन्नैस सय पच्चीसमे बनिक' तैयार भेल छलै। हारमोनियम, तबला, सारंगी सहित सब तरहक बाजा-गाजा आ वादक-कारिंदा सभक ओकर अपन टीम-प्रॉपर्टी बनि गेल छलै, मुदा ओ स्वयं ककर प्रॉपर्टी छलि से बुझबामे नइँ अबै छलनि।

००

अपना कोठामे आबि गेलाक बादक पच्चीस साल धरि बिना थकने सोना गबैत रहली, मात्र गबैत रहलीह। एहि बीच ओकरा जीवनमे केहनो दुख-सुख, बिहाड़ि-बसात आयल-गेल—ओकरा रियाज पर कोनो आँच नइँ अयलै। प्रातः ब्रह्ममुहूर्तमे जागिक' ओ रोज तीन-चारि घंटा रियाज करै छलीह। खान-पानमे परहेज आ अतिरिक्त सावधानी रखै छलीह। बाजारक आकि ककरो देल पान सन चीज धरि ओ नइँ खाइ छलीह। प्रशंसकक मान रखै लेल सौजन्यवश राखि जरूर लै छलीह, मुदा खाइ नइँ छलीह। कोन ठेकान ओकर आवाजक कोन बैरी पानमे जर्दा संग सिनूर आकि एहने सन किछु

मिलाक’ खोआ दिअय!

अचानकसँ सुदेश बगलक देबालसँ प्रश्न कयलक, ‘अपन आवाज लेल एतेक चिंतित आ सजग रहयवाली सोनाकें अपन देहक कनेको चिंता कखनो नइँ भेलनि की?’

उत्तर दिसका देबालसँ बहुत मारक हँसी आयल फेर ओ कहलक, ‘अहाँ सब सन इज्जतदार लोककें अपन पाग-पगड़ीक चिंता बेसी होइत छै। बड़ स्वार्थी यए अहाँ सभक समाज!... बाप-भाइ सोनाकें मात्र सोना बुझलक, ओकर दाम बुझलक, ई कहियो नइँ बुझलक जे ईहो हाड़-माउसक बनलि छै, ओकरो भीतर गर्म खून बहै छै।’

आ तखने पछबरिया देबाल दिससँ अबैत सोना बाइ पर सुदेशक नजरि पड़लै। नींदमे चलैत सन सोनाक आँचर ओकरा पाछूक जमीन पर लेटाइत छलै आ शून्यमे तकैत सोनाक आवाज सम्पूर्ण महलमे गुँजि उठल, ‘कतेको सालसँ हम अपन आँचरकें सम्हारैमे परेशान छी, मुदा ई बेर-बेर उधियाइत-उड़ियाइत खसैत रहल यए। हम कोना सम्हारब एकरा? कोना?’ क्षण भरिक चुप्पीक बाद फेर सोनाक आवाज उभरल, ‘की हमर दुनू छोटकी बहिन कुमारिए हैत? हैलेट साहेब तँ कहै छला जे अहाँ ठाम अहाँक उमेरक लेडी तीन बच्चाक माय बनि जाइ छै! हे भगवान! जेना हमरा यूनुसक देह-गंध मतबै यए आ ओकर आँखिक ताव मोम क’ दै यए, की तहिना ओहू दुनू छौंड़ीकें...?’ सोना बढ़ैत-बढ़ैत इजोत-अन्हारक ओहि संधि-स्थल पर पहुँचि गेलि जत’ ओकर लेटाइत आँचर तँ इजोतमे छल, मुदा ओकर आधासँ बेसी देह अन्हार मे। सहसा ओकर आवाज फेर उभरल, ‘हमरासँ तीन साल छोट संपत तीन बच्चाक बाप बुझाइ यए, ओ दुनू छौंड़ी पता नइँ कय बच्चाक माय हैत? हैलेट साहेब हमरा मेम बना क’ लंदन ल’ जा चाहै छथि!... यूनुस किछु बजै नइँ यए, मुदा ओकर आँखि?’ आ आँचर सहित जहिना सोनाक आकृति अन्हारमे विलीन भेल कि ओकर आवाज फेर गुँजि उठल, ‘सुनै छी जे हमरे कोठाक कमाइसँ गाममे बड़का दोतल्ला बनल यए, मुदा बाबू कहियो ने बजलाह!. .. ओहि दोतल्लामे गिरथानि बनलि हमर माय नाति-पोताकें खेलबैत हैत! की सत्ते ओकरा लेल हम मरि गेल छी?’

‘हे भगवान! अंततः सही-सही सब बातक पता हुनका कहियो लगलनि कि ने?’ सुदेशक आवाज देबालसँ टकरा क’ शून्य महलमे भटक’ लागल छल।

‘किछु-किछु अनुमान तँ ओकरा पहिनेसँ छलै। हँ, पहिल बेर जहिया ओ पंद्रह-सोलह सालक भतीजाकें आशीर्वाद देने छलि, ओकरा ओतबे उमेरक अपन संतानक ध्यान आयल छलै। खासक’ तखन ओकरा हृदय पर आरो जोरसँ चोट लगलै जखन संपत बाजल, ‘दीदी, ई तोरे बेटा छियौ!’ ओहि राति ओ ठीकसँ सुति नइँ सकलि छलि। भोरका तीन बजेक बदला दुइए बजे राति जागिक’ रियाज करै लेल बैसि गेल छलि।’ दछिनबरिया देबाल नहुए बाजल, ‘रसे-रस ओकरा सब बातक पता चलि गेल छलै। एक बेर अपन हारमोनियम मास्टर यूनुस खानकें कोनो बहाने गाम पठा ओ रहल-सहल सब जानकारी पाबि गेल छलि। ओकरे पाइ पर दुनू छोटकी बहिन बड़का घरक पुतहु बनल छलि।’

‘तकर बादो हुनका भीतर अपन बाप-भाइ लेल कोनो तामस नइँ भेलै?’ बड़ अफसोस संग सुदेश सामनेक देबालसँ पुछलक।

‘ओ बहुत कोमल हृदयक दयालु स्त्री छलि। अधिकांश मशहूर गायिका लोकनि महँग कपड़ा आ जेबर-जात केर शौकीन होइ यए, मुदा ओ एकदम सादगी पसंद स्त्री छलि। बस अपन गलाक रख-रखावसँ जुड़ल खान-पान ल’क’ कोनो ढिलाइ पसिन नइँ छलै। अपन कनेक चिंता ओकरा भेबो कयल तँ बापक मुइलाक बाद।’ पुबरिया देबाल दिससँ आवाज आयल।

‘तकरा बाद की ओ भाइ-भतीजाकें भगेलक?’ सुदेश पुछलक।

‘भगेलक तँ नइँ, मुदा आय-व्ययक सब टा हिसाब-किताब यूनुसक हाथमे आबि गेल आ पाइ-पाइ सोनासँ पूछि क’ खर्च होअय लागल। बँटवाराक बाद यूनुसक भाय-पित्ती सभक परिवारसँ सब केओ पाकिस्तान चलि गेल छल। एसगरुआ यूनुस नइँ गेल तँ मात्र सोनाक कारणें, जे सोना ओहि समय जखन-तखन गबैत रहै छलि—कैसे कटे मोरी बारी उमरिया सैयाँ गए परदेस...’ पछबरिया देबाल दिससँ आवाज आयल, ‘आ आगुक जिनगी मादे सोचैत पचास सालक उमेरमे सोना यूनुस खान संग ब्याह क’ लेलक। ओ ओकर गायकी आ शोहरतक शिखर-काल छल। मुदा बादमे ओ तेहन मनमौजी भ’ गेल छलि जे रसे-रस बाहरक प्रोगाम सभमे जायब लगभग छोड़ि देलक। जत’क व्यवहार पसिन नइँ तत’क बड़का-बड़का सामंत-राजाक आमंत्रण ठुकरबैत ओकरा कोनो डर-भय नइँ होइ छलै। पचपन पार करैत ओ अपनाकें समेटब शुरू क’ देलक आ एक तरहें अपना लेल गैब शुरू क’ देलक। जल्दिए ओ अपना ढंगे चल’वाली एक टा खास गायिका रूपमे प्रसिद्ध भ’ गेलि।’

‘फेर हुनक सब टा ग्रामोफोन रेकार्ड, स्मृति-चिन्ह सभ हुनक भाइ-भतीजा कोना नष्ट क’ देलक?’ सुदेश पुछलक।

‘सोना पचहत्तरिक छलीह जखन यूनुस खान गुजरल। यूनुसक तँ एत’ केओ वारिसो नइँ छलै। सोना एकाकी आ उदास रह’ लागल छलि। यूनुसक गेलाक दुइए साल बाद एक साँझ ओकरा छातीमे दरद शुरू भेल आ क्षणेमे क्षणाक भ’ गेलै। ओहि अंतिम दू सालमे ओ बेसी काल रातिकें राग देशमे गबै छलि, ‘मोरा सैयाँ बुलाबे आधी रात को नदिया बैरी भई... नाव पुरानी नदिया गहरी खेबट सुने नाहि बतिया...’, तँ दिनकें भैरवीमे गुनगुनाबै छलि—‘जाओ बलम नाहिं बोलो, हमसे जुनि बोलो...’ आ जखन बड़ बेसी उदासी घेरि लैत छलै तखनो संयत भ’क’ गबै छलि, ‘गरब न कीजिए धन को मन को और जोबन को, यह सौंपत है दिन चार’...आ हुनका जाइते सब किछु भकोभंग भ’ गेल।...’ क्षणभरि रुकिक’ पछबरिया देबाल दिससँ आवाज आयल, ‘‘जाहि साँझ सोना बाइक प्राण छुटल ओही राति झटपट दाह-संस्कारक ओरिआओन भेल। बैठकखाना मे, जत’ ओकर महफिल जमै छलै, माटि भेल सोनाक देहकें उत्तरमुख लेटा देल गेल छलै आ उद्दंड भतीजा बताह-घताह जकाँ भेल मारते सामान ताकि-ताकि तोड़ि-फोड़ि आ जरा रहल छलै। बेटाकें समझबैत संपत बाजल, ‘रे अभगला! आवाज किऐ नष्ट करै छें?

कािल्ह ई लाखो-करोड़ देतौ!'

'...ईह बुढ़बा! बढ़िया फिल्मी गाना सुनबे ने करत लोक ई आ आ आ सुनै अछि?' सोनाक भतीजा जोरसँ चिचिआइत बाजल, 'मामा गामसँ सासुर धरिमे जखन लोक कहैए, एकर दीदी कोठावाली छिए तँ मन करैए फँसरी लगा ली आ अहाँ कहै छी एहि रंडीक आवाज बचाक' राखी!' आ तीन-चारि टा मास्टर पीस वला रिकार्ड एक लगातार जोर-जोरसँ तोड़लक आ ओकरा आगि देखा देलक।

क्षणभरि रुकिक' संपत फेर बाजल, ''बौआ, कलाकार सँ बेसी पैघ जीवन ओकर कलाक होइत छै।''

मुदा ओकरा बेटा पर ओहि बात सभक कोनो टा असरि नइँ भेल।

'सोनाक देहे संग सब टा ग्रामोफोन रेकार्ड, मारते फोटोग्राफ आ एहन सब टा चीज ओही राति जरा देल गेलै जाहि संग ओकर पहिचान जुड़ल छलै। आगिला भोर होइसँ पहिने कोठामे ताला लगाक' ओ सब तेना भागल जे प्रेस वला धरिकें एक दिन बाद पता चललै। कोठाक सौदा तँ बाहरे-बाहर सेठ धरमचंदक बेटा संग भ' गेल छलै आ रजिस्ट्री करै लेल आयल दुष्ट भाइ-भातीज एम्हर हुलकियो दै लेल नइँ आयल। जाहि सोनाक पाइ पर भाइ-भातीज पटना-दिल्ली धरि प्रॉपर्टी बनौलक, शरीफ आ इज्जतदार कहबै लेल देहे संग ओकर आवाजकें सदाक लेल मेटा सब टा नाता टोड़ि लेलक। ई जे मनुक्ख नामक प्राणी होइत यए, ई सब हमरा सब सन ईंट-पाथरक देबालोसँ बेसी कठोर आ निर्दयी होइ यए!'

सुदेशकें शरीफ कहब'वला एहन लोकक नामसँ घिन जेना लाग' लगलै। ओकर नजरि खिड़कीक पार गली दिस गेलै जत' बरखा थमलाक बाद फेरसँ चहल-पहल बढ़ि गेल छलै। कोठाक बाहर निकलैत सुदेशकें अपना भीतरक केबाड़ फुजैत सन बुझेलै। ओ फेर सोना बाइक देहरि पर माथा टेकलक। ठाढ़ भ' पहिल डेग उठेनहि छल कि पाछुक देबाल सभसँ भैरवीमे ठाह केर ठुमरी गुँजि उठलै—'किबड़िया खोलो राजा रस की बूँद पड़ै...'

मो. 9871856053

मास्क



हीरेंद्र कुमार झा

कािल्ह साँझे खबरि पसरि गेल रहै जे आइसँ बजार थोड़ेक क' खुजतै आ तहिना रिक्सा आ ऑटोरिक्सा सेहो चलतै। से सुकन आइ कने भोरे उठिक' धारक कात चलि गेल छल। दतमनि कुदुर करैत पंचायत भवनक हातामे कलपर नहाक' गमछा पहिरने अँगना आएल। बात घरवालीकें सेहो बूझल रहै। ओकरो मोनमे उत्साह रहै। नेबोपात द'क' ललका चाह बनाक' आगाँ क' दैत पुछलकै—'अखनिए निकलतै?'

'नहि, सात बजैतकले निकलबै, एखनी की कोनो गंगासागर एसप्रेस अबै है जे लोभे जेबै।'

'जा, तँ बलू रेलगाड़ीए नहि अतै तँ फेन चालू की भेलै?'

चाहक गिलास रखैत सुकन बुझेलकै—'धुर ई नहि बुझतै। अरे एखनी खाली एगो बम्बैसे आ एगो डिल्लीसे आब' जायके हुकुम देलकैए हन। बसो गोटपगरे चलतै। से ताहीसँ रिक्सा आ बैटरीबला रिक्सा आ टेम्पूपर आधा सवारी चलावे के पलमीसन है।'

सुकनक घरवाली कनेक उदास भ' गेल रहै। से होउक कियाक नहि। आइ तीनमाससँ एकटा पाइक कमाइ नहि भ' सकल छै। सुकन सबदिन रिक्से चलबैत रहल। कहियो रेजा मजूरी कि खेत खरिहानमे काज कएने नहि अछि। ओहुना शहरक कातमे बसल एहि टोलक ज'नकें रिक्सा टेम्पो चलाएब, ठेला घिचब, नारिकेर आ रामदानाक लाइ सन बस्तु बेच' के रोजगार रहै। सबसँ बेशी राजमिस्त्रीक संग खटबाक काज खूब भेटैत छै। तैं सब मजूरक स्थिति चिक्कन नहि तँ तेहन खराबो नहि रहैत रहै। धरि ई कोरोना आ लौक-डाउन तँ सबहक बुधिए हेरा देलकै। सब घरपर बैसल अछि। साँझक' सामुदायिक भवन वा महादेव मंदिरपर सब जुटल तँ, बस सबहक अपन-अपन दुखनामा आ कोरोनाक किछु सत किछु फूसि खिस्सा सुनलक आ सुनौलक।

चाह पिलाक बाद सुकनकें ध्यान गेलै जे धिया-पुताकें नहि देखैत छिऐ से पुछि बैसलै—'ई किसना आ तुलसी कहाँ जाइ गेलै?'

'आओर कहाँ, एम्हरे ओम्हर कहुँ तितली पकड़ैत होतै।' चाहक गिलास उठबैत अपने अपने भनभनाएल—'ई जरलाहा इसकूलोकें बंद कएने है। सबहक बच्चा सब बनबहेड़ भ' गेल है।सब छौंड़ा छौंड़ी दिनभरि बौआएल आ लड़ाइ झगड़ केलक। अरे नहि भरिदिन तँ आधो बेरिया घेरक' रखितैए से नहि। कहाँ गेलै मास्टर आर से नहि कहि।'

'देखहू, आब बेरा बेरी सब खुगतै तँ इसकूलो खुगतै। आ से कोनो सरकारिए नहिने बन्न है, सब पिराइभिटोक ओहे हाल है। कौलेज उनभरसिटी सब बन्न है।'

जावत सुकन रिक्साकें पोछ पाछ केलक, सब चक्काकें मोबिलक कुप्पीसँ पुरना मोबिल देलकै ताबत खिच्चड़ि तैयार भ' गेलै। तखने किसना आ तुलसी अँगनामे एलै। सुकन कने तमसाइत पुछलकै—'रे दूनू भोरे-भोर कहाँ छिछिआइले गेल छले?'

किसना चुप रहल मुदा अबोध तुलसी तोतराइत उत्साहसँ बाजलि—'तितला बिथै ले।'

'कथी?' सुकन अकचकाएल।

अबोध बेटी तुलसी, बापक तामससँ अपरिचित छै ओ अपना काजके उत्कीर्णा बूझि खुशीसँ बाजलि, 'हम आ भैया तोलापल बेते लादी गाथीमे तितला बिथलिऐ हन।'

एखनधरि किसना टिकुलाक झोरा नुकौने रहए, मुदा मायकें सबटा बूझ'मे आबि गेलै ओ लपकिक' ओकर हाथसँ पौलीथीन छिनैत बड़बराए लगलै, 'कहैत रहियै ने, ई टोलाके खरुहान सब संगे बेरबाद हो जेतै। कह तँ रे तोरा ई के सिखेलकौ ग'? आइ

दिनसँ ओम्हर गेल तँ दूनू भाइ-बहिनके हाथ-पएर तोड़ि देबौ। ई अबंड हेबासँ नीक लुल्हे नाँगर रहबें।'

दूनूकें भेल रहै जे माय लग टिकुला ल'क' जैएब, बेचिक'पाइ आनबाक बात कहबै तँ माय बाबू प्रसन्न होयत। एत तँ उन्टे मारि खेबाक हालति आबि गेल, से अपर्तिभ सन भेल दूनू एक कातमे ठाढ़ भ' गेल।

मुदा सुकन कि ओकर कनिया करबो की करितैए। स्कूल साफे बंद छै। ओकरेटा बच्चाक नहि, की छोटका की बड़का, भरि गामक नेनाक हाल ओएह छै।

सुकन कनियाकें धखाइत पुछलकै, 'बलु निकलबै तँ मुदा हवा भराबेओ लिए कुछ नहि है। एकरालग पाँचो गो होइत'...'

कनिया आखिर गृहलक्ष्मी होइत छै। एखन घरबला तीन मासपर कमाइ लेल निकलैत रहै। ओकरा सामने एकटा बड़का आश भरल डेग रहै। एहन बेरमे ओ पतिकें निराश कोना करितै। घरसँ एकटा दसटकही सिक्का आनि दैत कहलकै, 'कहियोके राखल रहै, मुदा साँझमे ई हमरा घुरा देतै।'

खिच्चड़ि खाक' पैंट आ टी सर्ट पहिर सुकन बहरायल तँ दूनू बच्चाकें सेहो उत्साह आबि गेलै। ओहो सब बापकें अरियात' बाहर आएल। बेटी तुलसीके माथपर दुलार करैत सुकन कहलकै, 'जाय छियौ कमायले, घरेमे रहिहे। एन्नी ओन्नी नहि बौएबिहे। बेराम भ' जेबे तँ की होतौ ?'

तुलसी खुशीसँ चहकि उठल, 'हमला ले पिनतिल लेने अबिह'।'

सुकन पुछलक, 'ओही दिन तँ लानि देने रहियौ।'

किसना टिपलकै, 'एँह भरि दिन कटरसँ छिल छिलक' फेकैत रहैत छै।'

चंचल तुलसी हारि मानय बाली कहाँ, 'एकदम तँ भुतभुतिया पिनतिल है तँ ती तलियौ, लदले तुति दाइ है।'

सुकनकें मोन प्रसन्न भ'उठलै। ओ गछि लेलकै, 'हँ हँ एगो नहि, खूम निम्मन बला दूगो आनि देबौ। बस कहीं बौएहें नहि।'

बहिनक फरमाइस पूर होइत देखि किसनकें सेहो साहस बढ़लै, 'बाबू हमरो ईंगलिस लिखनाके कौपी खतम भ' गेल है।'

'बेस, तोरो कौपी आबि जेतौ' आ पैडिल मारैत सुकन शहर दिस बढ़ि गेल छल।

पासवान टोलासँ शहरमे प्रवेश करबा लेल महराजी पुल टप' पड़ैत छै। से एहि प्रवेश द्वार पर किछु महत्वपूर्ण सुविधाक व्यवस्था स्वत: भ' गेल छै। कैएकटा छोट छिन दोकान खुजि गेल छै। साइकिल रिक्साक भँगठी मरम्मतक दोकान। सुकन ओहि दोकान लग रिक्सासँ उतरि कातमे ठाढ़ भेल आ दोकानदारकें अह्लादसँ पुछलकै, 'की गोपी भाइ, तोहुँ खोलि देलहक ? पंप कोम्हर रखने छह ?'

गोपी मिस्त्री साइकिलक पंचर सटैत छल। ओ इसारा करैत उतारा देलकै, 'की करबै

सुकन, पेट तँ हमरो हैए। हे ओइ बोरा तरमे छै, ल' लैह।' सुकन पंप ल' अपनेसँ हवा भरि लेलक। पाकेटसँ दस टकही सिक्का बहारक' बढ़ेलकै, 'भाइ काटि लैह, खुदरा नहि अछि।'

गोपी मुड़ी उठबैत बजलै, 'हमरो लग एगो दसटकिए है, जाय दहक बोहनि भेल है,काल्हि द' दिह'।'

सुकन तमाकूक डिब्बा बहारक' लगबैत पुछलकै, 'तमाकू हेतै ने ?'

गोपी स्वीकारोक्ति देलकै, 'लगाबह।'

सुकन गप्पकें बढ़ेलक, 'की भाइ, बजारके की हाल है ? गँहकी आर मिलै है कि नहि ? हम तँ आइ पहिले दिन निकललिय हैन। आब बिसकरमाके जेहन किरपा।'

गोपी बहुत उत्साहित नहि छल, 'कहाँ कोनो लोक अभरैय। हम तँ आइ आठ दिनसँ भोर साँझ खोलै छीकी। दिनमे सैयो टकापर आफदे रहैए। अरे स्कूल कौलेज बंद है, से ने रिक्सा ने साइकिल। ने हाट ने बजार ने रेल ने बस। तखन के आओत हवा भरब' कि पंचर सटब'। की कैरती घरोमे बैसले रही से कहली चल दोकानेमे बैसब।' गोपीकें तमाकू दैत सुकन आगाँ बढ़ि गेल।

पुल पार क' सुकन रिक्सा स्टैंड पहुँचल। स्टैंडपर पहिनेसँ दूटा रिक्सा रहै आ एकटा बैटरीबला रिक्सा सेहो लागल रहै। बैटरीबला रिक्सा देखि सुकने नहि सब रिक्सा बलाक मोन झूर भ' जाइत छै। मुदा करौक की ? ओहो सब तँ अपन धंधाक लेल छै। तखनहि सामनेक गलीसँ एकटा सवारी एलै।

'लाइट हाउस जेब'?' सुकन तँ ताहीके उम्मीदमे छलै।

'आउ बैठू' सीटपरसँ उतरि रिक्साके हुड खोलैत बाजल।

सवारी लगमे ठाढ़ भ' फेर पुछलकै, 'कते पाइ ?'

आन समय रहितै तँ अस्सीसँ कम नहि कहितै। मुदा ई अवसर ओ छोड़' नहि चाहैत छल। से कमेक' कहलकै, 'सत्तर गो द' देबै।'

सवारियो कम बुधियार नहि छल, मोल जोलक लेल बाजल, 'नहि नहि साठिसँ बेशी नहि देब'।'

आ एतबा कहि ओ बामा दिस ठाढ़ आन रिक्सा, खास क' बैटरी-रिक्सा दिस ताक' लगलै। सुकनकें भेलै कहीं बैटरी-रिक्साबला सवारी उचंगि नहि लिए से झट द' तैयार भ' गेल, 'आउ, चलू साठिए सही।'

सुकनक मोन प्रसन्न रहै। तीन मासपर कमाइ लेल निकलल छल तँ महादेव सुनबो केलखिन आ लगले एकटा सवारी भेटिओ गेलै। रिक्सापर बैसल सवारी बाटमे हाट बजार आ कोरोनाक मादे किछु किछु गप्प करैत रहलै मुदा सुकनक ध्यान सड़क, बजार आ लोक पर रहै। हँ, आइ तीन माससँ एकतरहें सबटा बंद रहबाक कारणे संपूर्ण शहरक संस्कारे बदलि गेल रहै। मइ मासक प्रात रहितो सड़क एक तरहें सुनसाने रहै। जहाँ हरेक

चौराहापर चाहक दोकानमे लोक भरल रहैत रहै। स्कूलक बस, रिक्सा, साइकिल आ पैदल छात्रक झुंड रहैत रहै से एकदम खाली खाली रहै। कतहु कतहु एक-दूटा लोक मुँहपर झपना लगौने उत्साहहीन चलल जाइत रहै। खाली सड़कपर सुकन जल्दिए पहुँचि गेल। लाइट हाउस लग पहुँचि रिक्सा स्थिर करैत सवारीसँ पुछलकै, 'कहाँ उतरबै?'

सवारी बजलै, 'बस कने आगाँ, हे ओहि पोल लग।' सुकन ओतहि रोकलक।

आइ कैएक मासपर हाथपर पाइ आएल रहै से सुकनके संपूर्ण शरीर प्रसन्नतासँ पुलकित भ' उठल रहै। एहि आधा घंटाक परिश्रममे बहल पसीनाके साठि टका दाबि देलकै। ओ पाइकें ओरियाक' पैंटक चोर पाकेटमे रखलक।

लोक एखनो सड़कपर कमे रहै। सुकन रिक्सा बढ़ाक' दारू भठ्ठी चौक तक गेल। ओतहु सुनसान देखि सोझे कमर्शियल चौक तक बढ़ि गेल। आन दिन रहितैए तँ एत' दर्जनो रिक्सा ठाढ़ भेटितै, मुदा आइ कियो नहि रहै। सामने गुदड़ी बजारमे किछु दोकान खुजल रहै। से कने आस बढ़लै। ओ गुदड़ीक मुँहेपर रिक्सा लगा ठाढ़ भ' गेल।

आधा घंटाक बाद एकटा सवारी लग आबि पुछलकै, 'रेलवे कालोनी जेब'?'

'कोन कात?' सुकन उत्साहक संग पुछलकै।

'बस, गुमती लगक मोड़ेपर। कतेक पाइ लेब'?'

'अरे जे दैत छिऐ, पचास टका सैह द' देबै। की सब छै?' कहि सुकन रिक्सा गुदड़ीक भीतर दिस घुमाब' लागल। सवारी सामने राखल सामान दिस देखबैत कहलकै, 'ओएह चाउर, आँटा मर-मसल्ला छै। चालिस गो देब'।'

सवारी छोड़बाक तँ कोनो सवाले नहि रहै से तैयो कने भरिएलकै, 'एह ई ठेलाक माल रिक्सापर जेतै आ कहै छिऐ जे बलू कुछ नहि हय।'

सवारियो कम तेज नहि छल, 'हौजी, सबटा मिलाक' पचास-पचपन किलो हेतै। हम मोटरसाइकिलेपर रहब। दू गोटे बैसैत छै तँ डेढ़ क्विन्टलसँ कम होइत छै?'

ताबत सुकन उतरिक' सामान लोड कर' लागल छल।

गुमतीलग पहुँचि समान उतारि भाड़ा ल' विदा भेल तँ मोनकें एकटा बल भेट गेल रहै। आब ओकरा पाकेटमे पूरा एक सय दस टका छै। फेर होश एलै जे दसटा तँ कनियाक देलहा छै। तथापि सय टका कम नहि भेलै ने? ओ सोच' लागल, आइ घुमतीकाल दू किलो आँटा आ आधा किलो परोर कीनत। तीन माससँ कोटामे भेटल खैराती उस्सठ अरबा चाउरक भात आ बाड़ीक साग, घेरा आ नहि तँ अल्लू साना खाइत खाइत मोन अकछा गेल छै। मोन तँ माछलेल सेहो कछमछाइत छै, मुदा नहि, एखन सोचबो संभव नहि। फेर किसनाक कौपी आ तुलसीक पेंसिल मोन पड़ि गेलै। ओह, नहि भ' सकतै। साठि टाकाक आँटा, बीस टकाक परोर। फेर आत्म विश्वास जगलै एह एखन तँ दसो नहि बजलैए, विश्वकर्मा चाहथिन तँ सब भ' जेतै।

एही गुन-धुनमे मोनकें ओझरौने आपस लहेरियासराय टावर दिस बढ़ल जाइत छल

कि स्टेट बैंकक गलीसँ तेजीसँ अबैत एकटा मोटर साइकिल सवार सुकनक रिक्सासँ टकरा गेलै। सवार चौदह पंद्रह वर्षक बालक रहै। ओकरा मोड़पर मोटरसाइकिल सम्हारमे नहि रहलै, से सोझे रिक्सासँ टकराक' अपनो खसल आ सुकन सेहो रिक्सा सहित पलटि गेल। चारूभरसँ लोक दौगलै। दूनूकें उठौलक। छौंड़ाकें ठेहुनमे चोट रहै। मोटरसाइकिलक लाइट फूटि गेल रहै। सुकनकें कोनो चोट तँ नहि लगलै, मुदा अगिला चक्काक रिम टेढ़ भ' गेल रहै। लोकसब मोटरसाइकिल बलाकें उठाक' ल' जाए लगलै तँ सुकन आगाँ बढ़िक' रोकैत कहलकै, 'आ हमर रिम के ठीक कराइ के देतै?'

लोकसब बुझब' लगलै, 'अरे बच्चा छै, गलती भ' गेलै। ओकरा ओहिनो ठेहुन टूटि गेलैए। जाय दहक।'

सुकन प्रतिरोध केलकै, 'एह एखन हमर दोष रहितैए तँ हर्जाना लेने बिना क्यो छोड़ितैए?' मुदा ओकर संग देनिहार क्यो नहि रहै। ओ जनैत छल जे एहिना होइत छै, पाइबलाक प्रति अपराध हो तँ लोक कमजोरहाकें कंठ मोकि हर्जाना असूलत मुदा कमजोरक बेरमे लोक समाजिकता देखाब' लागत।

सुकन अपना भरि लात आ ईंटासँ पहियाकें सोझ केलक ताकि कहुनाक' गुड़कैत मिस्त्रीक दोकान तक पहुँचय। लहेरियासराय टावरसँ कने पहिने एकटा मिस्त्री रहै। ओकरा देखैत देरी कहलकै, 'कातमे लगाबह। एखनी टाइम लगतो। एहि साइकिलक पैडिल कसिक' हम नस्ता करब'। चक्का खोलिक' टाल बनाबेके होतै। जा ताले तोंहू चाह पीने आबह।' कहि मिस्त्री अपन काजमे लागि गेल।

सुकन की करितै, लग पासमे कोनो दोसर मिस्त्री रहबो नहि करै। ताहिपरसँ एहि लौकडाउनमे तँ जैह जत' भेटि गेल सैह बड़का बात। से ओहो रिक्सा कातमे लगा ओही दोकानक टुटलाहा बेंचपर बैसि रहल। मिस्त्रीक कहला पर ओकरो चाह पिबाक मोन भेल रहै, मुदा संगमे मात्र सय टका रहै। कहि नहि मरम्मतिमे कतेक लगतै। से मोनके मारिक' रहि गेल।

एखन कोर्ट कचहरी नहि चलै छै। एत' एखनो लाकडाउन छैके। तैं ई चौक एकदम श्रीहीन भेल छै। दूचारिटा दोकान खुजल छै आ थोड़के लोकक आवाजाही भ' रहल छै। टावरक कातमे दूटा रिक्सा आ दूटा बैटरीबला रिक्सा सवारीक आसमे ठाढ़ छै।

कनेक काल पहिने सुकनक बनाओल सब योजना आब मोनसँ उतरि गेल रहै।

मिस्त्री आबिक' चक्काकें जाँचलकै आ बहुत गंभीर स्वरमे बजलै, 'बँचि गेलह, रिम टुटल नहि है, मुदा पूरा टाल मार' पड़तै। पचास टाका टालके आ जतेक स्पोक लगतै तकर अढ़ाइ टके फी स्पोक।'

सुकन की करितय? ओकरा कोनो विकल्प तँ रहै नहि।

'आब जे लेब' से लैह, देखिह' जे स्पोक बँचि जाए से बचाएक'। भोरसँ पचासे टाकाक बोहनिए भेल अछि।'

मिस्त्री सेहो कम नहि छल। ठाँहि पठाँहि कहि देलकै, 'हौ बाबू हमरे कोन भोरसँ झहरैत अछि। देखिते छह एकटा साइकिल पड़ल छै बस।'

सुकन आब हारि गेल छल, 'हौह, बनाब'।'

पहिया ठीक होइमे एक घंटा लागि गेलै। भाग्य नीक रहै, चारिएटा स्पोक टुटल रहै। आग्रह विनती क' पचास टकामे सुकन जान छोड़ौलक।

बारह बाज' बला रहै। सड़क आ बजार ओहिना उदास रहै। आन समय रहितैए तँ एखन भोरका स्कूल, कोर्ट कचहरी आ आन आन कार्यालयमे छुट्टी हेबाक समयक कारणे खूब चहल-पहल रहितै, मुदा कियो कतहु नहि। हँ स्टेट बैंक खुजल छलै। ओतहु लोक नहिए जेकाँ रहै। एक मोन भेलै जे ओतहि चलि जाए, मुदा ओही ठाम रिक्सा टूटल रहै से मोन खौंझा गेल रहै। इहो सोचलक जे एहि ठाम फेर जँ कबिलपुर-डरहारक सवारी भेटत तँ ओम्हरसँ खलिए आब' पड़त। से ताहिसँ नीक जे शहरे दिस बढ़ी।

खलिए रिक्सा ल'क' टावरसँ आगाँ कमर्शियल चौक तक चल गेल। ओतहु दू तीनटा बैंक छै कोनो सवारी भेटबे करतै। सैह भेलै थोड़ेक कालक बाद एकटा सवारी आबिक' बेंता चल' लेल कहलकै। सुकन सोझे बिदा भ' गेल। बेंता चौकपर सवारी उतरि बीसटा टका थमहा देलकै।

सवारी उतारि सुकन सोच' लागल जे बड़ रौद छै, से आब कने सुस्ताइए ली। मोन पड़लै सामनेक हनुमान मंदिर। ओकर पुजेगरीक मातृक सुकनक टोले लगमे छै। से जखन तखन ओ पुजेगरीसँ भेट करैत रहैत अछि। पुजेरियो मातृकक लोक बूझि यथोचित प्रेम आदर करैत छथिन। जखन कखनहुँ गेल तँ चढ़ौआ प्रसादमेसँ भरि आँजुर लड्डू खुआबैत छथिन। सकुन रिक्सा गलीमे लगा मंदिरक मुँहपर गेल तँ पुजेगरी बाहरेमे ठाढ़ रहथिन। सुकनकें देखि बहुत अह्लादसँ स्वागत केलखिन, 'आउ आउ सुकन भाइ। हमर मामा मामीक की हाल छनि। अहाँ तँ एकदमसँ निपत्ता भ' गेल रही।'

सुकन आगाँ बढ़ि हनुमानजीकें कल जोड़लाक बाद बाजल, 'सब एकदम ठीक छथि। काल्हिए साँझखन तँ कलम जाइत काल भेटल रहथि। मंदिर बंद क' रहल छी की?'

पुजेगरी उदास स्वरे बजला, 'हम की बंद करबै आ की खोलबै। स्वयं बजरंगबली सबटा बंद करबौने छथि। आइ तेसर मास छिऐ। देखिते छिऐ, प्रशासन कोना मंदिरक चारू भाग बाँस बल्लासँ घेरा देलकैए। ककरो आबाजाही पर एकदम रोक छै। आ एबो के करत आ कत'सँ आओत? ने डीएमसीएच चलै छै ने कोनो डाक्टरक क्लिनिक। सब डरें बंद क' पड़ाएल अछि। आ लोको औतै से कोना? ने रेलगाड़ी, ने बस आ ने टेम्पो।'

सुकनकें सेहो ध्यान एलै, 'हँ, हँ से ठीके कहै छी, मोन पड़ल ओ श्यामा मायक मंदिरोंके मुंहे पर ढाठ लगा देने छै। ठीके एबाक साधने नहि तँ की रोगी आ की डागदर?'

पुजारी पंचपातसँ चरणामृत आ मिसरीक चारिटा दाना बढ़बैत कहखिन, 'हे आइ

इएह लिय, इहो तँ बूझू जे धनि डाक्टर नायक साहेब, ओएह सब डाक्टर आ दबाइ दोकानदारकें आग्रह केलखिन तँ सब मिलक' सय पचास नकदे द' जाइत अछि तँ खेप रहल छी। मधुरोक दोकान बंद छै, ओत' एक गोटे दू किलो मिसरी द' गेल छल। नित्य मंदिरकें झारि बहारि बजरंगबजीकें तुलसी पात आ यैह मिसरीदानाक भोग लगा दैत छियनि।' एतबा कहैत कहैत पुजेगरीक स्वर भहरि आ आँखि नोरा गेल रहनि।

सुकन अपन दुख बिसरि गेल छल। ओ पुजेगरीकें भरोस दियाब' लागल रहैए, 'अच्छा, सबटा बजरंगबलीएक खेला छनि। ओएह फेर सबटा ठीको करथिन। जाउ अहाँ खेने आउ। हम ताबत एतहि सुस्ताइत छी।'

पुजेगरीक गेलाक बाद सुकन गमछासँ मुह पोछि मंदिरक असोरापर बैसि रहल। पसीनासँ भीजल देहमे पुरबा हबा नीक लगाए लगलै। बड़ी कालसँ भूख आ प्यास सेहो लागि गेल रहै। चौकक चारूभर किछु खेबाक बस्तु बिकाइतो नहि रहै। एकटा सत्तूबलाक ठेला रहै मुदा सुकनकें कहियो सत्तू पीब नहि सोहाइत छै। से उठिक' कल पर जा भरि छाक पानि पी मंदिरक असोरा पर पड़ि रहल। पुरबा हबाक सिहकीमे लगले आँखि लागि गेलै।

आँखि लगलापर सुकन सपनाए लागल। ओकरा हाथमे बैटरीबला रिक्सा छै। एकदम नव चमकैत रिक्सा। ओ दरभंगा स्टेसनपर अछि। तुरंत रिक्सा भरि जाइत छै। ओ तुरंत डीएमसीएच पहुँचि जाइत अछि। फेर ओत'सँ लहेरियासराय टावर। ओत'सँ दरभंगा टावर, फेर कादिराबाद तँ तुरंते बेला मोड़। एकदम दनादन जहाँ तहाँ पहुँचैत अछि। सवारी सब बैसैत छै, उतरैत छै। पाइक ढेर लागल जा रहल छै। नोट पाकेटमे आ खुदरा सिक्का हैंडिलमे टाँगल झोरामे भरने जा रहल अछि। कखनो बेटी लेल पेंसिलक पूरा डिब्बा लैत अछि, तँ फेर लगले कौपी किनैत अछि। कखनो कनियाकें आँटाक बोरा द' रहल छै, तँ कखनो बड़कीटा रौहु माछ कीन रहल अछि। ओ सब ठाम हवामे उड़ि रहल अछि। एकदम आनंदमे मग्न अछि।

तखने कियो जोरसँ हाक देलकै, 'हौ रिक्साबला, कत' छह हौ?'

हाक सुनि सुकनक निंद टुटि गेलै। ओ हड़बड़ाक' उठि गेल। आँखि खोलि तकलक तँ एकटा सवारी रिक्सा लग ठाढ़ रहै। हड़बड़ाइत उठिक' अपन मुँह पोछि रिक्सा लग पहुँचि पुछलकै, 'कहू, हमरे रिक्सा है। कहाँ जेबै?'

सवारी आरामसँ रिक्सापर चढ़ि कहलकै, 'इएह, कने अललपट्टी जेबाक अछि रिपोर्ट आनय लेल।'

आन समय रहितय तँ सुकन नहि गछितै। बेतासँ अललपट्टी की भाड़ा देत? हे पंद्रह की बीस? मुदा एखन इहो भेटब मोश्किल, से बिदा भ' गेल।

सत्ते सवारी बीसटा टका द' चल गेलै।

अललपट्टीमे जत' सुकन ठाढ़ भेल छल ओतहि एकटा दोकानमे सिंघारा छनाइत

रहै। ओकरा भूख जोर क' देने रहै। मोने मोन सोचलक नब्बे टका तँ एखनो अछिए। आ एखन तीने बजलैए। सांझ धरि पचीस पचास भ' जेबे करतै, से जलखै क' लेबाक चाही। रिक्सा ठाढ़क' दोकानक बेंचपर बैसि आग्रह केलकै, 'भाइ दू गो सिंघाड़ा आ चाह दिह'।'

दोकानदार रोआबसँ बजलै, 'भाव बढ़ि गेल छै। चाह आ सिंघाड़ाक बीस टका लगत'।'

सुकन बुझैत छलै एखन कोनो दोकान खोलबाक आज्ञा नहि छै, तेहनामे ई खोलने अछि तँ जे मोन हेतै असुलबे करत। से कोनो प्रतिवादक बदला सोझे बाजल, 'बेस।'

चाह पिलाक बाद सुकन कने काल बैसल रहल। कोनो सवारीक आश नहि देखि सोचलक जे आगाँ दोनारि चौक तक जाइत छी। ओत' कोनो सवारी भेट जेतै तँ कमाओ लेत आ घरोपर चल जाएत।

दोनार चौकपर दू चारि बेर हाको लगेलक, 'स्टेसन, कठलबाड़ी, बेलामोड़, कैदराबाद, बसस्टैंड।'

मुदा के अबितै? कतहु कियो जाउक तखन ने? से फेर खलिए रिक्सा ल' स्टेसन दिस बढ़ि गेल। स्टेसनपर पहिनेसँ कैएकटा बैटरीबला रिक्सा आ टेम्पो ठाढ़ रहै। सुकनो कातमे लगा सवारीक बाट जोह' लागल छल। थोड़ेक कालक बाद स्टेसनक आगाँमे चमकैत एलेक्ट्रोनिक घड़ीपर नजरि गेलै। पौने पांच बाजि गेल रहै। सुकनकें मोन पड़लै पेंसिल, कौपी आ आँटा किनबाक छै। एखन दोकान सब पाँचे बजे बंद करबाक आज्ञा छै। सोचलक ओह आब जँ आशमे रहब तँ कमेलहो बेकार भ' जाएत। दोकाने बंद भ' जेतै। से आस्ते आस्ते घर दिस बढ़िए जाइत छी। आब मोनमे बड़ उत्साह नहि रहै, मात्र सत्तरिटा टका कमाइ बचल रहै। पेंसिल आ कौपीक बाद एक किलो आँटा आ पाभरि परोर भ' जेबाक चाही। एही गुनधुनमे आस्ते आस्ते पैडिल मारने बढ़ल जा रहल छल कि आयकर चौराहापर पुलिसक गाड़ी आ दर्जनो सिपाही हवलदार अबै जायबलाकें रोक टोक करैत रहै। सुकनकें सेहो रोकलकै। सुकन सिपाहीक इशारा पर बामा कातमे रिक्सा ठाढ़ केलक। उतरिक' प्रश्नसूचक दृष्टिएँ तकलक तँ एकटा हवलदार डँटैत पुछलकै, 'का हो मास्क कहाँ हब'?'

सुकनकें आब होश ऐलै। ओ हड़बड़ाइत अपन गमछासँ मुँह आ नाक झाँप' लागल। ताहिपर हवलदार डपटलकै, 'आहो नाटक छोड़'। निकाल' पचासगो।'

सुकन कलप' लागल, 'गलती हो गेलै हुजुर। गमच्छा बन्हिते हिऐ। मास्क कहाँसे लेबै, पचीस तीसगोसँ कममे नहि होइत है।'

सिपाही बात लपकि लेलकै, 'है, एतेक बहस करेके टैम नही हय। निकालो पचास टका।'

सुकन फेर गोहरेलकै, 'हजुर कहाँसँ लाउ पचासगो टका? आइ माफ क' दियौ, कालिहसँ कोनो जोगाड़ क' मास लगेबै। आइ जाय दू साँझ पड़ल जाइ है।'

हवलदार कड़कलै, 'रे अभागा, लौकता नही है जो गाड़ीमे साहेब बैठल हैं। चुपे चाप फाइन भरो आ निकलो नहि तो पूरा पानसौ का चलान कटेगा।' आ घुमिक' सिपाहीकें हुकुम देलकै, 'ऐ कमती एकराके साईडमे खड़ा कर'। सबके साथे थानापर ले जाईके होखी।'

सुकन दस बरखसँ रिक्सा चलबैत छल। ओ जनैत छल जे जँ कतौ चोर डाकू घेर लिए तँ गोहरेला पर छोड़ि सकैय परंतु ई सिपाहीक जाति जँ एकबेर ध' लेलक तँ छुटब मोश्किल। से हारिक' जेबीसँ पचास टका बहारक' सिपाहीक हाथ पर राखि देलकै जेना कहियो तारामती अपन आधा आँचर फाड़ि हरिश्चंद्रक हाथमे देने हेथिन।

सिपाही गुम्हरलै, 'एह! तखनसँ बात बनाके टाइम खराब करता था। लो मास्क लगाओ। पैसा कोनो मँगनी नहि लिया है। मास्क का दाम है पचास टका।'

सुकन यंत्रवत मास्क ल' मुँहमे लगा लेलक। किछु काल किंकर्तव्यविमूढ़ भेल सबकें देखैत रहल। ओकरा ओ मास्क नहि गराक फाँसी सन लागि रहल रहै। मास्कसँ ओकर मुहें नहि भरि दिनक श्रम आ सपना पर झपना पड़ि गेल रहै। फेर अपने आप पैडिलपर पैएर चल' लागल रहै। ओ स्वयं नहि बूझि रहल छल जे कोम्हर जा रहल छल। ओकर मोन कानि रहल रहै मुदा आँखिमे नोर नहि ऐलै। आब ओकरा लग मात्र बीसटा टका बचल रहै। ओ बढ़ैत बढ़ैत महराजी पुल टपि गेल।

अन्हार होइत होइत सुकन कहुनाक' गुड़कबैत रिक्सा लेने दलानपर पहुँचल। अपना भरि डेग सम्हारय मुदा कनिया बूझि गेल रहै जे पीबिक' आयल अछि। सुकन आँगनमे जाक' पटियापर ओंघरा गेल।

कनेक काल बाद कनिया जाक' ओकर पैंट आ टिशर्टक पाकेट सबमे बेरा बेरी हाथ द' तकलकै तँ कतहु किछु नहि रहै। अंतमे पैंटक चोरपाकेटसँ भोरमे जायकाल देलहा वएह दसटकही सिक्का, जकरा एतुका लोक डालर कहैत छै, बहार भेलै। ओ ओहि सिक्काकें एकबेर उनटि पुनटिक' देखि मुड़ी उठेलक तँ आँगनक केबाड़ी लग बाबूसँ पेंसिल आ काँपीक आशमे ठाढ़ उदास भेल दूनू नेनापर नजरि पड़लै। ओ उठिक' दूनू कें अपन पाँजमे ल' माथपर हाथ फेरैत भहरल स्वरमे भरोस देलकै, 'कोनो बात नहि बौआ। बाबू काल्हि फेन जेतै। काल्हि लेने एतौ।'

तीनू फोंफ कटैत सुकनकें देखि रहल छल। सुकन बेसुध भेल पड़ल छल। ओकरा मुँहपर एखनो मास्क लागले रहै।

मो. 8169003125, 8108284637



खन्ना साहेब

प्रमोद कुमार झा

बहुत दिनसँ खन्ना साहेब कहि रहल छलाह जे हुनकर घर आबी आ बैसि क' गप्प-शप्प करी। ओइ दिन फिरायालाल चौकसँ बुले-बुले बढ़ैत रही किताबक दोकान दिस कि बीच सड़क पर अपन बड़का गाड़ी रोकय लगला खन्ना साहेब। हम कहलियनि कनी कात दिस कय के रोकू हम अबै छी। मंदिरक कातमे पहुँचले रही कि खन्ना साहेब खीचक' गाड़ीमे बैसौलनि। बड़का गाड़ी आ भीतरमे चंदन केर सुगंधि। टिशू पेपर बढ़बैत कहलनि, 'पहिने पसेना पोछि लीय। खन्ना साहेब कें मैथिली, भोजपुरी, बंगला, उड़िया, अंग्रेजी, कन्नड़ सब बाज' अबैत छनि। व्यापार करैत हुनका सब ठाम जयबाक काज पड़ैत रहलनि। कहलनि जे हुनकर भतीजी एक टा मैथिलेसँ विवाह कएने छनि आ भातिज जमाय झंझारपुरमे डाक्टर छथीन। भतीजी सेहो डाक्टर छनि। कए बेर जाक' रहल छथि ओहिठाम आ मुसकिया क' कहलनि जे...'हमरा समधिनसँ बड्ड गप्प होइए मैथिलीमे। हुनकेसँ गप्प कर' लेल तँ हम मैथिली नीकसँ सिखि लेलहुँ...' कहलनि—'हमर समधिन बूझू वहीदा रहमान...!' आ फेर हो हो क' हँसय लगलाह।

खन्ना साहेबक गप्प खतमो नहि भेल छल कि गाड़ी गेट पर पहुँच गेलनि। ड्राइवर हॉर्न देलकै तँ पूरा सात फीटक लंबा-चौड़ा बंदूकधारी चौकीदार गेट खोललक। गेटो मने कमसँ कम नौ फीटक ऊँच मने लगै जेना जेलक गेट हो। भीतर पैसते देरी भीतरक दृश्य तँ मोनकें मोहि लेने छल। सुंदर फुलवारी। मखमल सन हरियर घास और नहि जानि कतेक तरहक देसी आ विदेसी फूल। गाड़ी पोर्टिकोमे रूकलै तँ ड्राइवर फुर्तीसँ उतरि गेट खोललक आ खन्ना साहब झुकि क' मुस्कियाइत बजला—'आउ श्रीमान, एहि गरीबखानामे अहाँक स्वागत अछि...।' गरीबखाना—बाहरक बरामदा पर उज्जर दपदप संगमरमर बिछाओल छलैक। मने बीस फीट चौड़ा आ तीस फीट लंबा। दरबज्जा खोलि भीतर ल'गेला। बड़का सुंदर ड्राइंग रूम। छोट बच्चा सब तँ फुटबौल खेलि लेत ओतबामे। एक कात आसमानी देबाल ओहि पर अ'ढ़मे नुकाएल चंद्रमाक' आकृति। कनि आगाँ जा एक टा सीढ़ी बढ़िक' डाइनिंग हॉलक ओतबए विस्तारित व्यवस्था जाहिमे एक संगे बीस गोटे भोजन क' सकैत छथि। ओना पहिने खन्ना साहेब द' बता दी। खन्ना साहिब देशभरिसँ भारतीय कला आ डिजाइनक वस्तु जोगाक' देस आ विदेसमे व्यापार करैत छथि। सालमे तीन महीना विदेसमे घूमैत-फिरैत रहैत छथि। लगभग पैंसठ बरख बएसक छथि आ बिना पगड़ी वाला सरदार छथि। उन्नैस सय चौरासीक रांची दंगामे अपन पगड़ी आ केस राखब छोड़ि देने रहथि। माय मारल गेल छलनि। अपन भतीजीकें बेटी जेकाँ पोसने छलाह। खन्ना साहब के मुँह बड्ड हँसमुख, गौरवर्ण, दांत

चुरूट पीबैत-पीबैत गंदा क' लेने छलाह। वस्त्र विन्यास आ जूता, परफ्यूमसँ ई बुझा जाएत जे संपन्नतामे कनियो कमी नहि।

ता खानसामा चाहक समान डुगरबैत राखि गेल छलैक। खन्ना साहेब घर के देखभाल कर' वाली युवतीकें कहलथिन जे मैडमकें कहि दहुन झा साहेब आएल छथिन बाहर अओतीह। आ हे बेबीकें सेहो नेने अबिहें।

थोड़ेक काल के बाद एक महिला आबिक' बैसलीह। हाथ जोड़ि मुस्किया क' बजलीह—नमस्कार। खन्ना साहेब हुनका कहलथिन—'झा साहेब यैह छथि। आइ हम पकड़िक' उठा अनलियनि।'

आ हमरा दिस मुँह घुमा बजलाह—'ई छथि हमर वाइफ मधुमिता...मधुमिता बैनर्जी...ओना आन ठाम हिनका मिसेस खन्ना कहैत छियनि।' कहैत खन्ना साहेब खाँटी पंजाबी जेकाँ हँसि रहल छलाह।

ता ओ मौगी प्रेममे बच्चा क' ल' कें आबि गेल छल। खन्ना साहेब हुलसि क' कोरामे उठा नेने रहथिन आ बच्चा सेहो आनंदसँ बाल सुलभ हँसी पसारि रहल छल। खन्ना साहेब बाजि उठलाह—'ई थीक हमर सोना बेटी।' हमरा कनि विचित्र जेकाँ बुझाएल। पूछि बैसलियनि—'पोती थीक की?'

'अरे नै झा साहेब, हमर एक मात्र संतान—हमरा सोना बेटी यैह थीक।' बड्ड आश्चर्य भेल छल आ कनि उत्सुकता बढ़ि गेल छल।

खन्ना साहेब बुझि गेलाह। मधुमिता जीके बंगला मे कहलथिन—'जे ब्राह्मण महाराज के बिना भोजन करौने नहि जाए देबनि। आइ माछ बनवाउ।'...खन्ना साहेब दोसर खेप चाह पिबैत बाजि रहल छलाह।

प्रश्न उठि रहल हैत एत अहाँक मोनमे से स्वाभाविक...बिनु पुछनहि हम सुनबैत छी।...हम आ मधुमिता एही ठाम संत जेवियर्स कॉलेजमे पढ़ैत रही। मधुमिता हमरासँ दू साल नीचा छलीह। दोस्ती भेल...फेर हमरा लोकनि विवाह करबाक निर्णय लेलहुँ। हम बी. ए. क' एम. ए. क' रहल छलहुँ। पप्पाक कपड़ाक दोकानमे सेहो बैस' लागल रही साँझकें। हमरा लोकनि सोचने रही जे मधुमिताक बी. ए. के बाद विवाह करब। घरोमे नहि बतौने छलियैक ता।

दस दिनसँ मधुमिताक कोनो पता नहि। पता केलियैक तँ हिनकर सखी सब कहलक जे बैंक मैनेजर ओकर पिताक ट्रांसफर कतहु तमिलनाडु भ' गेल छलैक। आ सब गोटे रांची छोड़ि चल गेल छलाह। कोनो संपर्क नहि...कोनो पता नहि।...हम तँ सन्न रहि गेल रही। अपन अलग व्यापार प्रारंभ कयलहुँ। आन केकरोसँ विवाहक विचारो मोनमे नहि आएल। घर-परिवारक लोक सब पाँच-दस बरखधरि दबाव दैत रहलाह फेर छोड़ि देलनि। हम पूरा देश घूमि-घूमि व्यापार करी...उमेद...कतहु कहिओ तँ मधुमिता अभरतीह।...

...आ तीस बरख गुजरि गेल...दू हजार दसमे कलकत्ताक मॉलमे घूमैत रही...देखलियैक

मधुमिताकें...नहि रहल गेल। कनी मोटा गेल छलय बाकी तँ ओहिना छलै...। कनी काल देखैत रहल। हम पुछलियैक हाल चाल तँ कहलक तीन टा बेटी छैक। दू टाक विवाह भ' गेल छैक आ छोटकी पढ़ैत अछि। ओ हमरा पुछलक—'अहाँक कए टा बच्चा?' हम कहलियैक—'बियाह तखन ने बच्चा?' ओ कनि आश्चर्यचकित होइत बाजल— 'किएक नै केलहुँ विवाह?' हम कहिलियैक—'अहींक संग करबाक छल ने।' 'ओह...अहाँकें अखनहुँ मजाक करबाक हिस्सख नहिं गेल अछि। हम कहलियैक— 'मधु...हम मजाक नहि क' रहल छी। हम तँ पछिला तीस सालसँ अहाँक प्रतीक्षामे छी। की अहाँकें एको बेर हम मोन नहि पड़लहुँ?' 'सत्ते?' मधुमिता बाजल छलीह मुस्कियाइत—'त आब करब हमरासँ बियाह? 'हाँ, एक बेर हाँ तँ कहू!' हम बाजल छलहुँ।

'त बेस हाँ कहैत छी।' मधुमिता बाजल छलीह।

आ हमरा संग रांची आबि गेलीह ओही ठाम मॉलसँ। पछिला पाँच सालसँ एतय छथि श्रीमती मधुमिता बनर्जी खन्ना बनि।

खन्ना साहेब—देखि रहल छलाह मधुमिता जी दिस मने अपन जीवनक सबसँ पैघ तपस्याक बादक उपलब्धिकें निहारि रहल छलाह एकटक्क।

[ई-मेल-pramodjhaptn@gmail.com]
मो. 7903915998



क्षतिपूर्ति

आशुतोष झा

एखुनका परिस्थितिमे लछमिनियाकें रहबाक ठ'र भेटि गेल छलैक। मुदा ओ ठ'रे टा छलैक...पूर्णतः अस्थाई। जखन पतिये ओकर नहि रहलैक तँ ओ खेत की आ ओ झोपड़ा की। ड'र ई छलैक जे जाहि दिन मंटुआ'क नबकी बहुकें लछमिनिया द' पता चलतै ओ दुनू माय-धीकें ओहि झोपड़ा आ खेतसँ निकाला करा देतै। खेतसँ उत्पन्न वस्तुसँ प्राप्त पाइ पहिनो मंटुएकें ओ द' दैत छलैक आ आबो ओकरे देत मुदा एहि गप्पक अनुभूति जे मंटू पर अब ओकर कोनो वास्तविक अधिकार नहि छलैक, ओ मंटूक रहम मात्र पर जीबि रहल छल, ओकर मोनमे निराशा आ असुरक्षाक सम्मिलित भाव जगा देने छल। ओहि प्लॉटमे ओकर रुचि पूर्णतः समाप्त भ' गेल छलैक। नेनहिसँ गर्वोन्नत आ कठकोकांड़ि लछमिनिया अपन वर्तमान स्थितिसँ हतप्रभ छलि। खाहे अपन परिवारक समस्या हो, भाइ-बहिनक बीचक कोनो झमेला हो अथवा ओकर कोनो सखी-बहिनपाक कोनो परेसानी, सभक निदान ओकरा लग रहैत छलैक।

मुदा प्रेममे एहन धोखा खाक' जेना ओकर बुद्धिये हेरा गेल छलैक। आइ जखन जिनगीक सभस' पैघ संकट ओकर समक्ष मुंह बओने ठाढ़ छलैक ओकर दिमाग काज

करब जेना बंद क' देने छलैक। ओ एकदम शांत भ' गेल छल। जेना बौक हुअए। अधिक काल ओ 'हुर्र-हुर्र, टिट्-टिट्' करैत, दुनू बच्चाके कांख त'र के नेने गाय आ बकरी सभके चरबैत रहैत छल। ओकर माय फेरसँ आन-आन कत' बोनि कर' लागल छल। जखन मंटुआ ओकरा कहलकै जे ओ अपन खेतमे काज करए, आनक खेतमे नहि तँ ओ जवाब दलकै, 'हौ मंटू बाबू तोहर यैह गप्पमे तँ लछमिनिया आबि गेल। आ वैह कोन हमहूँ तँ आबिये गेल छलहुँ। आब नै! हम बोनिहारि छी बोनिये कर' दए हमरा। लछमिनियाक गप्प लछमिनिया जानए।...तों सभ ठहरल' मातबर लोक, जतेक जन-बोनिहारि चाहिय' तुरते भेटि जेत'।'

गाम आ कि टोल सभ ठाम, सभ कियो लछमिनियाके विचित्र दृष्टिस' देखै। कियो-कियो किछु-किछु टिप्पणी सेहो क' दै मुदा ओ चुप्प रहि जाइत छल। ओकरा मात्र मौकाक प्रतीक्षा छलैक। जँ कियो ओकरासँ पुछै तँ ओ जवाब दै 'जखन सभ किछु बुझले छह तँ अनठा के पुछै की छह?' आ' चुप्पी लगा जाइत छल। प्रकृतिक विपरीत ओकर शांत आ गंभीर प्रतिक्रिया सभ ककरो अस्वाभाविक लगै।

मंटुआसँ बियाह स' पहिने आ' बादमे सेहो छौड़ा सभक पैघ फिरिस्त छलैक जे ओकर प्रेम पाब' लए व्यग्र रहैत छलैक। छौड़ा सभ कियेक कतेको अधबयसू आ बुढ़बा सभ सेहो ओकर एक टा कृपादृष्टि प्राप्त करबा लए उत्सुक रहैत छल। मुदा धिया-पुता,पोता-पोती, स्त्री आ गाम-समाजके मोनमे रखैत ओकरा सभकें साकांक्ष रह' पड़ै। खाहे ओ कोनो निर्धन खबास रहल हुअए अथवा प्रतिष्ठित परिवारक वारिस, लछमिनिया सभक संग निर्भीक भ' क' आ तेज दृष्टिक संग व्यवहार करैत छल। मंटुआसँ बियाह क'कें तँ ओ आर गौरवाहि भ' गेल छल।

एहन पृष्ठभूमिमे ओकर बदलल व्यवहारसँ कियो हतप्रभ छलैक तँ कियो आशान्वित। मुदा दुसाध टोलीक मोहनाक बेटा भुण्डिसबा अपन संगी सभसँ कहै, 'रौ तों सभ लछमिनिया के नै जनै छही। ओ संच-मंच बैस' वाली नै छौ। देखिहें! जँ ओ मंटुआ आ मास्टरबाके पानि नै पिया देलकौए तँ हमर नामसँ तों सभ कुकुर पोसि लिहें।'

साल भरिक भीतर एकटा तेहन घटना भेलै जे भुंडिसबाक आशंकाकें सोलहो आना सत्य साबित क' देलकै। जाड़क राति रहैक। अचानक लछमिनिया कत' हल्ला भेलै। चारू दिससँ टोलक लोक सभ दौड़ल तँ देखलकै जे लछमिनिया जोर-जोरसँ कनैत एक टा पुरुषसँ अपनाके छोड़यबाक प्रयास क' रहल छल। ओकर साड़ी फाटल छलैक, ब्लौजक बटन टूटल छलैक। ओ अर्द्धनग्नावस्थामे छटपटा रहल छल। पूर्णतः नग्न ओ पुरुष ओकरा पर पसरल छल। लछमिनिया ओकरासँ अपनाकें छोड़एबाक जतबे प्रयास करए ओ कामान्ध पुरुष ओकरा पर ततबे जोरसँ झपट्टा मारि रहल छल। ओकरासँ कने दूर पर ठाढ़ि लछमिनियाक माय घोघ तानिके बचाब' हौ हमर बेटी के' 'बचाब' हौ हमर बेटी के' चिकरि रहल छल। संभवतः ओहि पुरुषके नग्न रहलाक कारण ओ घोघ तनने छल।

हल्ला-गुल्ला सुनि जखन ओहि व्यक्तिके बुझ'मे एलै जे ओत' भीड़ जमा भ' गेल छैक तँ ओ हड़बड़ा क' कोनमे ठाढ़ भ' गेल। ओ मंटुआ छलैक। ताड़ी पी क' टुन्न, निसांमे ओकरा नीक जकाँ ठाढ़ हुअ'मे असुविधा भ' रहल छलैक। जखन ओकरा आभास भेलै जे ओ नांगट अछि तँ ओ घुमिकें नीचांमे बैसि गेल। अत्यधिक जाड़ रहलाक कारण ओ ठिठुरि रहल छल। ओकरा हटिते लछमिनिया जल्दीसँ अपनाकें एक टा ओढ़नासँ झांपि लेलक मुदा साड़ी आ ब्लौजके ओहिना रह' देलकै। कियो पुछलकै, 'की भेलौ? कियैक चिकरै छैं?'

'कियै चिकरै छैं? देखै नै छहक जे हम कियै कानि-बाजि रहल छी? आरो किछु बाजबाक जरुरत छै?' ई कहि ओ आर जोरसँ चिकर' लागल।

'गै ई सभ काज केवाड़ खोलिकें कएल जाइत छैक? ई केहन नौटंकी भ' रहल छैक?' दोसर बाजल।

'तोरा ई नौटंकी बुझाइत छह? तोहर सभक सामने ई हमर इज्जति लुटने अछि एहिमे किछु झूठ छै?' लछमिनिया चिकरिकें जवाब देलकै।

'एकरासँ दू टा धिया-पुता छौ तोरा? फेर ई कोन हल्ला-हंगामा छैक?' टोलक एक टा मौगी पुछलकै।

'बच्चा सभ आब केवल हमर थिक। जहिया ई दोसर बियाह केलक हमर सभक बीच संबंध खत्म भ' गेलै।'

'मुदा ओहि बियाहक बादो तँ ई तोरा लग रातिमे सुतैत छलौ!'

'हँ सुतै छलए। हमर संग जखन-ने-तखन जबर्दस्ती करैत छलए...हमर मरजी के खिलाफ। ओ हमर बरदास्तसँ बाहर छलए। तंग आबिकें आइ हम तोहर सभक सामने एकरा रंगल हाथ पकड़बौने छियह।' ओ बाजल।

ओकर गप्प ओत' उपस्थित सभ लोकक लेल पूर्णतः अप्रत्याशित छलैक। पहिने तँ ओ सभ परिस्थितिकें हल्लुक ढंगस' लेलकै। मुदा ओकर बात सुनिकें ओ सभ ओकरा प्रति सहानुभूतिसँ भरि गेल।

'आब हम एकरा पर बलत्कारक मोकदमा करबै। एकरा जेल दियेबै।'

'ई तोहर पति छौ। तों साबित कोना करबही जे मंटुआ तोरा संग जबर्दस्ती केलकौए?' भुंडिसबा पुछलकै।

'रौ ई हमरा संग जबर्दस्ती केलक से तँ तों सभ कियो देखलही! आ पुरैनिया के एगो मौगी ओकील हमरा बतओने छल जे कोनो औरतके पति सेहो जँ ओकरा संग जबर्दस्ती करै तँ ओ बलत्कार छियै। मुदा ओ साबित केनाइ झंझटिया काज छै। मुदा पति छोड़िकें आन कियो जँ कोनो मौगी संग जबर्दस्ती केलकै से साबित भेलासँ जेलसँ बचनाइ मोस्किल छै। आ आब मंटू हमर पति नै रहलै तैं हमर बलत्कार करबाक सजाय ओकरा मिलइयेक चाही,' लछमिनिया जवाब देलक।

'तोरा ई ठेकान छौ ने जे ई जमीन जाहि पर तोहर झोपड़ा ठाढ़ छौ से मंटू परुकें तोहर मायसँ पोल्हाकें अपना नामे लिखा लेने छौ। आ ओ खेत जे तों जोतै छैं से वैह देने छौ। आब दुनू ठामसँ ई तोरा बाहर करतौ से तोरा बिसरबाक नहि चाही। फेर कत' जेबें दुनू माय-धी?'

'कतौ कियै जेबै हम सभ? आब ने देखबै छियै एकरा आ एकर बापकें हम अपन असली रूप...सुधीर भैया लगाब' ने थाना के फोन जे लछमिनियाक इज्जति लुटैत एकटा राक्छस पकड़ाएल अछि।'

कनि दूर पर पंचायत भवनक बगलेमे सुधीरक टेलीफोन बूथ रहैक। थाना आ ब्लॉक ऑफिसक टेलीफोन नंबर सभ तँ गामक बूथ सभमे लिखल रहिते छैक। थाना के फोन गेलै। आ दस मिनटक भीतर हवलदार एकटा सिपाहीके मोटरसाइकिल पर बैसओने भीड़ लग आबिक' ठाढ़ भ' गेल। गाड़ीक स्वर सुनिते लछमिनिया आ ओकर माय जोर-जोरसँ हकर' लागल। ताबत धरि धमदाहा दक्षिणके मुखिया चुल्हाई मुनी सेहो मोटरसाइकिलस' ओत' पहुँचि गेल छल। ढोकबा टोलक रहनिहार आ जातिक मार्कंडेय मुनी चुल्हाई पहिले बेर मुखिया भेल छल। सैह टा नहि एतेक ऊंच ओहदा पाब' बला अपन जातिक ओ पहिल व्यक्ति छल। तैं अपन जातिक एक मुश्त वोट तँ ओकरा भेटले रहैक। गरीब गुरुआक अपन हिसाबसँ पाई आ समांगसँ मदति करब ओकर स्वभाव छलैक। तैं आन जातिक ओहि वर्गक सहयोग सेहो ओकरा खूब प्राप्त छलैक। ओकर जीतलासँ दलित वर्गक लोक सभकें जेना स्वर भेट गेल हो! दस वर्ष पहिने चुल्हाई आ मंटुआ मीलिकें अन्न-पानि कीनबा आ बेचबाक व्यवसाय शुरू केलक। दुनूकें कमाइयो नीक भेल छलैक। मुदा साल भरिक भीतर दुनूक बीच मनमुटाव भ' गेल छलैक। कारण ई भेलैक जे मंटुआ चुल्हाईक आठ हजार टाका मारि लेलक। ओहि दिनसँ चुल्हाई मंटुआसँ कमारि रखने छल। ई गप्प सौंसे गाम के छलैक। तैं जखन चूल्हाईक बुलेट लछमिनियाक झोपड़ाक सामने रूकलै तँ ओकर मोनमे मुस्की छुटि गेल छलैक।

हवलदार आ मुखिया लगभग एक्कहि संग लछमिनियाक झोपड़ामे प्रवेश केलक। ओकरा सभकें देखिते लछमिनिया सुबकी लैत ठाढ़ भ' गेल। हवलदार पूछ' लगलै, 'क्या बात है? किसका बलात्कार हुआ है? बलात्कारी कौन है?' ताहिपर लछमिनियाक माय चिकरि-चिकरि क' कह' लगलै, 'हजूर के बलत्कारी छै आ केकर इज्जति लुटैलैए से अहाँक आंखिक सामने अछि।'

तकर बाद लछमिनिया कह' लागल जे कोना कोठलीमे ओ अपन बेटाक संग सूतल छल। आ ओकर माय नातिनक संग बगलक कोठलीमे। बीच रातिमे कियो ओकर कोठलीक जिज्जिर खटखटओलकै। ओ कैक बेर पुछलक जे के थिक? मुदा कोनो जवाब नै भेटलै। ई क्रिया जखन बड़ी काल धरि चलैत रहलै तँ थाकिक' हम केवाड़ खोलि देलियैक। केवाड़ खोलबाक देरी छलैक कि ताड़ीक निसामे टुन्न ई मनसा हाथस' हमर मुँह दबा

देलक। ओहि हालतिमे पहिने ई जल्दी-जल्दी अपन कपड़ा खोललक फेर हमर नुआ फाड़' लागल। साड़ीमे तँ थोड़े चिरक्का लगलै मुदा फेर तुरत्ते खुजियो गेलै। जोर-जबर्दस्तीमे हमर बेलौजक सभ टा बट्टन टूटि गेल आ तकरा बाद ई हमर इज्जति लूटि लेलक...हम छटपटाइत रहि गेलहुँ मुदा ई किन्न्हुँ नहि मानलक। एकरा ईहो लाज नै लगलै जे हमर पाँच वर्षक बेटा कनैत-चिकरैत सभ किछु देखैत छल। हमर माय हल्ला सुनि दौड़िए के आयल मुदा एकरा नांगट देखि ओकरो घोघ तान' पड़लैक।

'तुम्हारा हसबैंड कहाँ है?' हवलदार पुछलकै।

'हसबैंड...हमर हसबैंड मरि गेल हजूर,' मुँह उदास करैत लछमिनिया बाजल।

'झूठ बजैए लछमिनिया, यै तँ एकर ब'र छियै'। कियो भीड़मे स' बाजल।

'तों सभ कने चुप्प रहबहक। हवलदारजी लछमिनिया स' ने सवाल करै छथिन, तैं ओकरा बाज' दहक। तोरा स' पुछथुन तँ तों बजिहक!' चुल्हाई टोकलकै।

ताहि पर लछमिनिया कह' लागल, 'मालिक, ई हमर पति छलैए जरूर! हमर दुनू बच्चा-बुच्ची सत्ते एकरे स' भेल छलैए। मुदा पछिला साल टका ल'कें जखन ई फेर स' बियाह क' लेलक तँ हमरासँ एकर रिस्ता पूरे-पूरी टूटि गेलै।...मुदा बियाहक किछुए दिनक बादस' ई फेर हमर पाछाँ पड़ि गेल। ताहूमे पछिला चारि मासस' तँ ई हमर जिनाइ मोस्किल क' देलक। एकरास' बचबाक हम हरदम कोसिस करैत रहलौं मगर दू-चारि दिन पर आबिकें हमरासँ ई अपन इच्छाक पुरती कइये लैत छल। तैं आइ रातिमे भेल जे एकरा सबक सिखाबी। तैं हम हल्ला केलियै आ टोलक लोक सभ आबिकें एकरा रंगल हाथ पकड़ि लैलकै। आब अहीं कहू जे एकरा हम कोना माफ करियै।'

'हवलदार साहेब इसको दूसरा सादी से मास भर का एक ठो बेटी भी है,' चुल्हाई जोड़लक। ओकर गप्प सुनि मंटुआ अपन मातल आँखिसँ ओकरा घुरलकै।

लछमिनिया कहैत गेल, 'मालिक ई तेहन धोखेबाज अछि जे ई घर, ई जमीन हमर मायकें ठकि के ई अप्पन नामे करा लेने अछि। आ आब रोज-रोज हमरा पर अन्याय करैत अछि। रोकला पर कहैत अछि जे हमरा घरसँ बाहर क' देत।

ई सुनि जमादार भौचक्क रहि गेल। ओत' जमा भीड़मे स' जे कियो एतेक काल असमंजसक स्थितिमे छल, अचानक लछमिनियाक पक्षमे बाज' लागल। सभ कियो तुरंते स्वर उठब' लागल जे अपराधी के तुरंत गिरफ्तार क'कें ओकरा पर कार्रवाई कयल जाए।

'क्या नाम है इसका?' हवलदार मुखिया स' पुछलकै।

'मालिक लक्छमी छै,' लछमिनिया जवाब देलक।

'और बलत्कारी का?'

'मंटू सरन,' चुल्हाई कहलकै।

'सिपाही, अभियुक्त को हथकड़ी लगाओ!' हवलदार आदेश देलक।

लछमिनियाक झोपड़ा स' सिपाही मंटुआकें हथकड़ी पहिरओने पएरे थाना दिस

विदा भेल। संग-संग बीस-पच्चीस लोकक झुंड, जाहिमे लछमिनिया आ ओकर माय सेहो छलैक। जमादार मोटरसाइकिलसँ थाना दिस आगाँ बढ़ि गेल छल। नांगट आ उघाड़ मंटुआके ठंडा स' बचाब' लए एकटा फाटल ओढ़ना ओकर देह पर लपेटि देल गेल छलैक।

थानामे रिपोर्ट लिखाओल गेलैक। गवाही देब' लए तँ पूरा टोल अपन मुखियाक संग उपस्थित छल। तत्पश्चात मंटुआकें हाजतमे बंद क' देल गेलैक। ई सभ होइत-होइत भिनसर भ' गेल छलैक। जाड़क राति रहलाक कारण दुसधटोलीक छोड़ि आन कोनो टोलके किछु खबरि नहि छलैक।

धीरो सोनारक छोटका बेटा पिंटू किछुए दिन पहिने पटनाक एकटा अखबारक संवाददाता भ' गेल छल। कियो जाक' ओकरा रातिक घटना द' कहि देलकै। सुनिते देरी ओ अपन कैमरा नेने थाना पहुँचि गेल। पिंटूके देखिते सिपाही मंटुआसँ ओढ़ना छीनिकें ओकरा संग ठाढ़ भ' क' फोटो खिंचओलक आ विस्तारपूर्वक पिंटूकें सभ टा गप्प सुनओलक।

दुसधटोलीक टेंगरा मास्टर कत' दूध दैत छलैक। ओ भोरहियेमे ओकरा लग जाकें मंटूक हाजतमे बंद हुअक जानकारी देलकै। खबरि सुनिते मास्टरके छटपटी ध' लेलकै। ओ विनइयाके मोटरसाइकिल स्टार्ट कर' लए कहलकै आ हहाएल-फुफुआएल थाना पहुँचल। संगमे ओ ओकर पहिरबा लए कुरता-पैजामा, स्वेटर आ ओढ़ना नेने गेल छल। मास्टरके देखिकें मंटुआ ठोहि पाड़िके कान' लागल।

ओ कह' लागल, 'पप्पा, हम नै सोचने छलियै जे लछमिनिया हमरा संग एहन धोखेबाजी करत।'

'हम तँ तोरा कहैत छलियौ ने जे ओकरासँ दूर रह। जुआएल मौगी लग दौड़ि-दौड़ि जेबाक ई फल छियौ।' मुदा फेर ओकरा सांत्वना देलकै जे ओ दरोगासँ कहि ओकरा जरूर छोड़ा लेत।

मास्टरबाकें दरोगासँ नीक चीन्हे-परिचय छलैक। सैह टा नै जहियासँ ओ मिनी बस किनने छल ओ ओकरा प्रति मास हजार-पंद्रह सय टाका पहुँचा अबैत छल। ऊपरसँ जाहि फलक मौसम रहैत छलैक से ओ चंगेरामे क'कें ओकरा पठबैत छलैक। पछिला तीन सालसँ ई दरोगा ओत' पदस्थापित छल। मास्टरबा ओकर खास आदमीक रूपमे जानल जाइत छल तैं ओकरा विश्वास छलैक जे दरोगा मंटुआकें छोड़ि देतैक।

जखन मास्टर दरोगासँ ओकर घर पर जाक' मंटुआ के छोड़िए देबाक गोहार लगौलक तँ दरोगा ओकरा मदति कर'मे अपन असमर्थता व्यक्त केलकै। ओ कहलकै जे ई बलात्कारक केस छैक। ऊपरस' ई सभ किछु दर्जन भरिस' बेसी लोकक बीच घटित भेल छैक। ई टोलक मुखिया सेहो ओहि घटनाक गवाही देने छैक। आ सभसँ परेसानीक गप्प जे मुखिया आ हवालातमे बंद ओकर बेटाक बीचक वैमनस्य जगजाहिर छैक।

'त' साहेब हम की करियै?'

'आपके बेटे को एक ही व्यक्ति जेल से बचा सकता है...लक्छमी। अगर वह केस वापस ले ले तब ही वह बच सकता है।'

'मगर ओ मोकदमा वापस कोना लेतै। ओ ततेक खिसियाएल अछि जे...'

'उससे कम्प्रोमाइज कर लो। किसी तरह उसे मना लो। पैसा दे कर। जमीन दे कर। किसी भी तरह। वह जरूर मानेगी। लक्छमी का मेडिकल रिपोर्ट आने ही वाला है। वह जरूर ही तुम्हारे बेटे के खिलाफ जाएगा। जाओ उसे जल्दी से मनाओ।'

मास्टर लछमिनियाक झोपड़ा पर दौड़ल गेल। कैक दिन धरि लछमिनिया ओकरा भेंट नहि देलकै। आ जखन ओ मास्टरसँ भेंट कर' लए बाहर निकलल तँ बुढ़बा विनम्रतापूर्वक ओकरासँ कह' लागल, 'गै, ई की केलें? मंटू तँ तोहर बरे छौ ने!'

'बर केहन बर? तोंही ने कहैत छलहक जे हमर औकाइत की छै। आब देखबै छिय' जे हमर की औकाइत अछि! नानास' जे हम तोरा दुनूके भेंट नै करा देलिय' तँ हमर नाम नै।'

'गए ठीक छै, ओ तोहर बर नहि रहलौं। मुदा बियाहक बादो तँ ओ तोरा लग अबिते छलौ। फेर एना कियैक?'

'मतलब ओ दारु पीबिक' अपन नबकी बहुकें छोड़िकें जे हमरा लग अबैत छल से बूझल छह तोरा! रै बुढबा! तों बड्ड अय्यास बनैछें? तों कहैत छलें ने जे पैघ लोक कैक टा मौगी रखैत अछि। तँ ई बता दे जे तोरासँ मातबर जतेक लोक छौ ओकरा सभ लग अपन बेटी-पुतोहुकें पठेबही तों? बड्ड बुधियार बनै छैं।'

मास्टरक हालति दयनीय छलैक। ओ लछमिनियाकें कतबो परतारबाक यत्न केलक मुदा छौंड़ी टस-सँ-मस नहि भेल। अंततोगत्वा मास्टरबा आ लछमिनियाक मध्य समझौता भ' गेलैक। लछमिनिया मोकदमा वापस ल' लेलक। मुदा अपन बासडीह आ ओ खेत जे ओ जोतैत छल से अपन नाम करओलाक बाद। ऊपरस' दस हजार टाका सेहो लेलक ओ। ओहि टाकासँ अपन डीह पर एक टा कोठली ओ बनबा लेने अछि। ऊपरमे टिन दिया देने छैक।

ओकर दुनू बच्चा गांधी कन्भेन्टमे पढ़ैत छैक। तीन घंटा भिनसर आ तीन घंटा साँझ ओ अपन दोकान पर बैसैत अछि। शेष समयमे माय-धी गाय-माल देखैत अछि, अपन खेतमे काज करैत अछि।

मायकें कोनो आन ठाम काज करबासँ लछमिनिया पूर्णतः रोकि देने छैक।

मो. 9334470005



अयना

अयनामे अपन अतीत आ अतीतक राग-भासकें देखब ककरा प्रिय नहि लगतैक। स्तम्भक अन्तर्गत एहि अंकमे गंगानाथ गंगेश मोन पाड़ि रहल छथि कवि, पंडित आ स्वनामधन्य शिक्षक चन्द्रनाथ मिश्र अमरजीकें, अशोक कथाकार राजमोहन झाकें आ पत्रकार विजयदेव झा अपन पिता आ मैथिलीक यशस्वी कथाकार ओ संपादक रामदेव झाकें। ई तीनू स्मरण अपन स्वाद आ रसमे पाठकें भीतर धरि भिजबैत चलैत अछि।

सरस्वती स्कूल, पूजा आ अमरजी (पंडितजी)

गंगानाथ गंगेश

रजनीश कतहु ककरो समाधि पर अंकित शिलालेखक उल्लेख कयने छथि–'ई आदमी जे एत' सूतल अछि, पैघ-पैघ कार्य करबाक स्वप्न देखलक आ यथार्थमे छोट-मोट भेटल काज अनर्गल बूझि छोड़ि देलक, कहियो किछु ने क' सकल स्वप्न आ यथार्थक बीच।' एहि शिलालेखकें ओ अधिकांश जन पर लागू मानैत छथि। यैह छोट-मोट घटना परिदृश्यमे कोना सभ आनि दैत छै आ अर्थ भरि दैत छै। कखनो बुझाइत अछि यैह छोट-मोट अधम घटना जीवनकें सार्थक आ घड़ी जकाँ गतिशील बनबैत अछि। आ आँखिक सामने ओहिना स्पष्ट अबैत अछि झकझक धोती पर मलमलक चुन्नीदार कुर्ता आ 'तेरछाक' लपेटल डोपटा सेहो मलमलक, तीनटा चाननक रेखमे पचल वा झकझकाइत ठाढ़ टीका, आँखिक चश्मा आ पान खयने ठोरक गंभीर मुसकी। 'प्रणाम पंडीजी'क उत्तर 'नीके नें' दैत। हमर घनिष्ठ सहपाठी अनिल मिश्र (अवकाश प्राप्त प्राध्यापक, दिल्ली वि. वि., पूर्व अध्यक्ष मैथिली-भोजपुरी अकादमी) कहियो कहने छल, 'पंडित जीक चेहरा चश्मा हटयला पर केहन डेराओन लगैत अछि।'

एकबेर कक्षामे पंडित जी पढ़ा रहल छलाह, बिढ़नी मुँहक आगाँ नाचि रहल छलनि, छात्र सभ चेहा उठल–'पंडितजी बिढ़नी', मुदा पंडितजी एतबे बजला, 'हम किछु बिगाड़ करबैक, तखन ने काटत।' कोनो कक्षाक उक्ति : सही-गलत के फैसला मोन क' दैत अछि, अहाँ विश्रामक क्षणमे पूछिक' देखू, सभ कहत। कहियो यात्री जीक 'हम छी क्षुब्ध' पढ़ा रहल रहल छलाह, कोनो तेजगर छात्र पूछि देने छल–केना लगैत छै पढ़'मे ई कविता? पंडित जी बजलाह–'अनोन-बिसनोन सन ने?छंदसँ तँ स्वच्छंद भइए गेला, टीकी-जनउ सभ छोड़ि देलनि, चानन-टीका छोड़लनि, धोती छोड़ि पैजामा पहिर' लगलाह, मैथिल दाढ़ी-मोंछ बनबैत अछि ई तकरो स्वच्छंद छोड़ि देलनि। मुदा, प्रेमचंदक बाद उपन्यासमे हिनके स्थान भेटलनि, दिनकरक बाद बिहारक कोनो हिंदी कवि यैह छथि।'

एकबेर हमर बेंचक आगाँ 'बोतला' बैसल छल, ओ कतेको सालसँ एक्के कक्षामे पढ़ैत छल, ओकर शरीर विशालकाय छल। अमर जी अबिते हँस' लगलाह– 'बोतलाक पाछाँ गंगानाथ लगैत अछि ताड़क पाछाँ अकौनक गाछ।' अबैत कालक घटना बतौलनि जे एकटा भारी-भरकम मोट-सोंट आदमी रिक्शाबलाकें रोकलक, रिक्शाबला पुछलक– 'एक चाहिए कि दो रिक्शा?' एकबेर एक सिक्ख छात्र सरदार पीतांबर सिंहकें हल्ला करैत देखि पंडित जी बजाक' माफी मांग' लेल कहलनि, ओ माफी मांगब अपन परंपराक विरुद्ध कहलक। तखन पंडित जी हँसिक' पुछलनि– 'क्या हुआ है बोलो?' 'उस लड़के ने हमको पंडित जी बोल दिया है', ओ हँसैत बाजल। पंडित जी खिसिया गेल छलाह– 'पंडित का अर्थ जानते हो, जीवन सुधर जायेगा।'

गाममे हम पाँचम कक्षा धरि पढ़ने छलहुँ आ ताधरि दू कक्षा तड़पाओल गेल छल। दू कक्षा और तड़पलासँ हमर वयस आ कक्षा बराबरी पर आबि जाइत आ किछु एहने सन विचार हमर पिताक छलनि संभवतः। मुदा संग-संग हुनका दरभंगाक सरस्वती स्कूल (एम. एल. एकेडमी)मे हमरा पढ़यबाक सेहो योजना छलनि। शनि-रविक' कक्का दरभंगासँ अबैत छलाह आ हमरा अंग्रेजी आ गणित पढ़बैत छलाह। पिताक हमरा जल्दी-जल्दी पढ़ि लेबाक हड़बड़ी बेसी हुनक स्वभावगत् आ किछु-किछु पारिवारिक परिदृश्यक चलते सेहो छल। जमींदारी जा चुकल छल, सीलिंग-चकबंदी आदि विभिन्न योजना सभक पूर्वाभ्यास भ' रहल छल संभवतः। आ प्रायः एहने सन वातावरणमे पिताकें भेल हेतनि जे कते कबुला-मनतासँ भेल ज्येष्ठ पुत्रक (हमर) पढ़ाइ गामक सामान्य निर्धन धीया-पूता संग करब समय व्यर्थ करब अछि। घर भरल-पुरल छल अन्न-पानि, दूध-घी आ जन-बनसँ। आजुक आइ. आइ. टी. जकाँ पिताक लेल दरभंगाक सरस्वती स्कूल छल। ओ जखन दरभंगाक जिला स्कूलक अंतिम कक्षासँ बहरा रहल छलाह, ताधरि सरस्वती स्कूल जिला स्कूलकें पछुआ चुकल छल। झिंगर कुमरक (प्राचार्य) अबिते स्कूल जगमगाय लागल छल। पिता जीक नित जमैत भांगक चौखड़ीमे प्रमुख चर्चा हमर सरस्वती स्कूलमे नामांकनेक होइत छल आ तदनुरूप ओ हमरा साकांक्ष करैत रहैत छलाह। एहिना एकटा छोट-छीन घटना चारि वर्ष पूर्व घटल छल, जकर स्मृति आब तँ नहिएँ अछि, ओहू समयमे झलफल छल। हमर अक्षरारंभक क्रममे जीबछ खबास विद्यापतिक डीह बिस्फीसँ एक पथिया माटि अनने छलाह, जाहिसँ हमरा भट्ठा धराओल गेल छल। हमर टीपनिमे गीत-काव्य विनोद-प्रियताक उल्लेख छल, प्रायः सैह सोचिक' बिस्फीसँ माँटि मंगाओल गेल छल संभवतः ओहि दिन खीर-पूरी आ मिष्टान्नक प्रबंध छल घरमे आ गुरुजी सहित सभ क्यो प्रफुल्लित छल।

अंग्रेजी शब्द 'अलमा मेटर'क अर्थ शब्दकोषमे तकैत हमरा मोनमे सरस्वती स्कूलक चित्र बनैत अछि, आन कोनो स्कूलक नहि। एम. एल. एकेडमी नाम मात्र कागजी छल, जेना सेक्रेटिएटक सचिवालय वा बेली रोडक नेहरू रोड। अमरजी हँसैत एक घटनाक उल्लेख कयने छलाह– 'एक गोटे रिक्शावलाकें सचिवालय चलबाक अनुरोध कयलक तँ ओ बाजल– हमरा सेक्रेरिएट रिक्शाले जाय के है, ओन्ने हम न जायब।' सरस्वती स्कूलक स्मरण अबिते झलफल होइत अछि बेताक नव-नव बनल डेरा, कक्का, पाठकजीक घर जत' गाम-घर जकाँ खाइत-पिबैत छलहुँ आ 1960 ई.क आरंभ। हमर पिता झटकारिक' चलि रहल छलाह आ हम बेर-बेर पछुआ जाइत छलहुँ। नव स्कूल आ नव परिवेशक घबड़ाहटि छल। ओ बेर-बेर हमरा आगाँ बढ़बाक निर्देश दैत छलाह आ हम पछुआ जाइत छलहुँ। ताबत् बलभद्रपुर दिससँ अबैत ओकील बाबा (नानाक अनुज आ दरभंगाक प्रसिद्ध दीवानी वकील पं. रामबुझावन झा) सेहो संग लागि गेलाह। हमरा संग पिताजी सेहो हुनक चरणस्पर्श कयलनि। ओकील बबा प्राचार्य झिंगुर कुमरक सहपाठी रहि चुकल छलाह। जहिना हम पिताक पाछाँ-पाछाँ घुरिआयल चलैत छलहुँ, तहिना पिता सेहो ओकील बबा पाछाँ सकुचायल चलि रहल छलाह। ओकील बाबा कड़कि क' पितासँ हमरा संबंधमे पूछि रहल छलाह, जेना कचहरीमे मुद्द-मुद्दालहसँ बहस करैत रहल होयताह। ओ अचानक गर्म भ' गेल गेलाह पिता पर– 'आप बर्बाद कर दीजिएगा, इतने छोटे बच्चे को आप फुनगीए पर आठवाँ में नाम लिखाना चाहते हैं, धन्य हैं आप?' स्कूलेक गेट पर प्राचार्य झिंगुर कुमर ओकील बबाक स्वागत कयने छलाह। ओ अनमन ओकीले बबा जकाँ धोती पर कारी प्रिंस कोट पहिरने छलाह। अंतर छल ओकील बाबाक चानन आ झिंगुर कुमरक चश्मा। हमर लिखित टेस्ट लेल गेल छल। अंग्रेजी-गणितमे पास भेल छलहुँ, मुदा हिंदीमे पासमार्क्ससँ कम छल। पिताक लाख अनुरोधक बादो प्राचार्य कुमर निर्णायक स्वरमे बजलाह– 'इस लड़के को शुरुआती (छट्ठम) कक्षा से ही पढ़ने दीजिए, यहाँ का स्तर ऊँचा है, भोदू हो जाएगा।' आ एहि प्रकारें हमर सरस्वती स्कूल(एम. एल. एकेडमी)मे नामांकन भेल। अभिभावकमे ओकील बाबाक नाम देल गेल छलनि। ई बात मैट्रिकक कागज-पत्र स्कूलसँ प्राप्त करबाक क्रममे पता चलल छल। एही ओकील बाबाक ज्येष्ठ पुत्र छलाह डा. ललितेश्वर झा जे हमर मायक बतारी वा एकाध मास जेठ छलाह। ई 1950 ई.क आस-पास कवीश्वर चंदा झा पर सर्वप्रथम प्रामाणिक शोध क' पीएच. डी. प्राप्त कएने छलाह। हिनक पी-एचडी.क सोहरा दूर-दूरधरि भेल छल, से नानाक सबसँ छोट भाइ बैदबाबा बरोबरि सभकें सुनबैत छलाह। हिनक सघन रिसर्चक क्रममे ओकील बाबा अपन मोकीलक माध्यमसँ अन्हराठाढ़ीसँ चंदा झाक पांडुलिपि मंगौने छलाह। ई पोथी पुस्तकाकार कवीश्वर चंदा झा 1965 ई.क आस-पास प्रकाशित भेल छल। एकर प्रकाशन एवं संपादनमे अमरजी आ सुमन जी छलाह प्रमुख भूमिका मे। दुनू गोटेक भूमिका छल। लेखक बेर-बेर उल्लेख कयने छलाह जे एकर भूमिका डा. अमरनाथ झा लिखने छलाह, से डा. झा अग्रिम सूचना देने छलथिन। मुदा, ओही समय हुनक मृत्यु भ' जयबाक कारण कतहु हेरा गेल छल। लेखक डा. ललितेश्वर झा बेर-बेर डा. झाक वंशजकें ओ भूमिका ताकि क' प्रेषित करबाक अनुरोध कयने छलाह। अमरजीक भूमिकामे

हास्य-विनोद छल एहि आशयक–'चंदा झाक मूल नाम 'चंद्रनाथ' हमरो नाम अछि, जाहि स्वनामधन्य डा. अमरनाथ झाक नाम मूल भूमिका लेल प्रस्तावित छल, ओहू नामक आदि 'अमर' हमर नामक अंतमे लागल अछि।' डा. ललितेश्वर झाक मौलिकता आ विशिष्टताक सुमन जी भूरि-भूरि प्रशांसा कएने छलाह। संगे ललितेश्वर झाक पारिवारिक परिचय सेहो देने छलाह, से पढ़ि हम हर्षातिरेकसँ भरि गेल रही। ओना हमर पिता एहि शोधक अंतर्कथा सभ कते बेर सुनौने छलाह। हमर मातृकमे हुनक प्रशंसा तँ दूर, सामान्योसँ निम्न श्रेणीमे हुनक गणना होइत छल। ओ चंदा झा बला पोथी स्वरचित 'लक्ष्मीनाथ गोसाँइ' संदर्भित पोथी संग देने छलाह। ओ आर. के. कालेज मधुबनी आ जनता कालेज, झंझारपुर (प्राचार्य)सँ अवकाश-प्राप्तिक बाद बेसीकाल तुलसीदासक 'रामचरित मानस' आ 'विनय पत्रिका'क अध्ययन-मननमे रमल रहैत छलाह। संभवतः सात-आठ बर्ख पूर्व निधन भेलनि।

एहि सरस्वती स्कूलक प्रति अपस्याँत पिताक संग कोना दरभंगा आयल रही सेहो एक अस्पष्ट झलफल सन चित्र बनैत अछि। ओना पाँच बर्खक वयसमे सेहो दरभंगा कक्काक साइकिल पर गेल रही सर्वप्रथम। गामक विपरीत ओत' राजभोग आ चमचम सन ललितगर मधुर सभ खयने रही। गामसँ कमतौल स्टेशन चारि कोस छल, आगाँ-आगाँ पिता, पाछाँ जीबछ खबास मोटरीक संग, जे बीच-बीचमे मोटरीक दोसर कात कनहा पर हमरो बैसा लैत छलाह। हमर छाती कखनो धुकधुकाइत कखनो सन्न भ' जाइत छल। दरभंगा देखबाक जोश आ उल्लास कखनो जगैत छल, तँ से ओत' स्थाई रहबाक बिर्रोसँ उड़िया जाइत छल। कमतौल स्टेशनपर मुकुटबला कल देखि पानि पीब' लेल दौगल रही। पानि तँ मोन जोगर नहिएँ बहरायल, दू-तीन बेर धड़ाधड़ पिछड़ि क' गुड़कि गेलहुँ। पिताक हाँ-हाँक बीच जीबछ खबास उठा लेने छलाह। ट्रेनक खुजिते एकटा आर अप्रतिम घटना भेल छल, गाम-घर, गाछ-बिरिछ, जंगल-झाड़सभ पाछाँ मुँहे भागल जा रहल छल। से आइ धरि आगाँ बढ़बाक क्रममे पाछू मुँहे छुटिते रहल अछि।

दरभंगामे बेंता चौक पर डेरा बनि चुकल छल, जत' पिताक अनुज रहैत छलाह, जे दरभंगा जिला कोषागार (ट्रेजरी)मे क्लर्क छलाह। हुनकासँ बड़ा बाबू की ट्रेजरी अफसर सेहो डेराइत छल। हमरा डेरा पर गेलाक चारि-पाँच बर्खक बाद ओ ट्रेजरीसँ रिजाइन क' ओकालति ज्वाइन कएने छलाह आ गामक मुखिया भेल छलाह। प्रतिद्वंद्वीकें अपनो मत खसयबाक हिम्मत नहि भेलैक। कक्काक नोकरी छोड़ब आ गामक मुखिया बनब पिताकें अखरल छलनि आ बाजाभुक्की दुनू भाइक बन्न भ' गेल छलनि। मुदा तावत् हमरो दरभंगाक पढ़ाइ लगिचा गेल छल। मुदा पाछुए दिस बढ़ी।

ताधरि बेंता चौक गामक हाट-बजार छल। बाभनक टोल पाठक लोकनिक देयादी बीच-बीचमे सटल-घुसिआयल साहुजी सभ आ दोसर कात गामी (सूरी) सभक विशाल परिसर, पोखरि-झाँखरि आ खेलक मैदान। गामे जकाँ भोज-भात खयबाक लेल

हराही-गंगासागर जाइत छलहुँ। सौंसे दरभंगामे ताधरि रेलवे लाइनक पूब शहर निपत्ता छल। गाम आ जंगल-झाड़। लक्ष्मीसागर एरियाक दूर-दूर धरि परिकल्पनो ने छल। दरभंगा टीशन लग कटहरबाड़ीमे रेलवे-पोस्ट आफिसक कर्मचारी सभ रहैत छलाह जाहिमे हमर पिताक मातृक (बिरसायर)क लोक सेहो। गोविंदपुर-डढ़ार वा खराजपुरक चर्चे की कबिलपुर सेहो गामक हाट-बजार जकाँ छल। बेंता चौकसँ दरभंगा टीशन धरि एकदम फाँका आ सुन्न-सन्नाटा। मेडिकल कालेजक मैदान आ जरैत बिजली आ बिजलीक खंभा सभ। अललपट्टी आ दोनारिमे कनि-मनि छिटपुट गमैया हाट-बजारक कोलाहल। बेंताक पाठक परिवारसँ साबिकक संबंध छल, बाबाक पिसिऔत बहीनक सासुर छल, जत' रहिक' पिता आ पित्ती जिला स्कूल आ सी. एम. कालेजमे पढ़ने छलाह। उत्तर-पूब किछु बर्ख पूर्व नवनिर्मित दरभंगा मेडिकल कालेज परिसर दू-तीन सौ फीट पर आ ओतबे दूर पच्छिममे अस्पताल परिसर शहरक गुरुताक भान तँ करबैत छल, मुदा तहिना मरीज आ परिजनक आर्त्तनाद वातावरणकें डेराओन सेहो बनबैत छल। मिथिलांचलक एक विद्वान नेता पं. हरिनाथ मिश्र एहि अस्पतालकें विश्वस्तरीय बनयबाक संकल्प पूरा क' चुकल छला, मुदा सभ किछु होइतो दलालीक भेंट चढ़ि गेल। हमर डेरासँ स्कूल वाकिंग दूरी पर छल, मुदा गामक स्कूल आ एतुक्का रंग-ढंगमे अकास-पतालक अंतर। गाममे औंघाइत वा टांगमे तेल लगाक' छड़ी भँजैत गुरुजी छलाह, जिनक व्यवहार चिड़इ-चुनमुनीकें हड़कबैत बाध-बोनक रखबार जकाँ होइत छल। एत' दस बजे हाजिरी आ नियमित सातो घंटी कक्षा शिक्षकक संवादसँ गुंजायमान होइत छल। बीच-बीचमे यदा-कदा प्राचार्य अकस्मात् कोनो कक्षामे धमकि जाइत छलाह आ शिक्षक-छात्रक बीच बनैत अस्पष्टताक निवारण करैत छलाह। छात्रसभ हिंदीपरस्त वा हिंदी बाज'मे मजायल छल। छात्र सभ सुसज्जित आ सुसंस्कृत छल, गामक छात्र जकाँ अपचेष्ट वा अभद्र नहि। गुरुजी आ मास्टर साहेबकें 'सर' कहैत छल। हम कते दिन धरि हिंदी बाज'मे लटपटाइत रहलहुँ 'सर'कें 'स'र' कहैत रहलहुँ। दू-चारिटा जे मैथिलीमे बजितो छल, से पछिलुका बेंच पर कनफुसकी मारैत छल आ यदा-कदा डाँट वा दंडक भागी होइत छल। ओ सभ गोविंदपुर-डढ़ार, देकुली, सिनुआर वा तारालाहीसँ अबैत छल। झिंगुर कुमर ताराहालीएक निवासी छलाह, मुदा स्कूले लग भव्य आवास छलनि। कनफुसकी बला बैकबेंचर छात्र संग मेल-जोल अपमानजनक बुझायल छल। कक्का शुरूहेमे चेता देने छलाह जे स्कूलमे शुद्ध हिंदी बाजी आ ताहि क्रममे घरोमे हिंदीमे बात करी।

समय ट्रेनक पहिया जकाँ भाग' लागल छल, गाम-घरक सिनेह, गीत-नाद, कन्नारोहटि, खान-पीन, भोज-भात आ अतिथि-सत्कार सभ पाछाँ मुँहें छूटल जा रहल छल। एहने शुरुआती स्मृतिमे अमर जीक आकृति नाच' लगैत अछि। दिवानाथ मिश्रक क्लास समाप्त भेल छल, ओ सूट-बूटमे फिल्मी हीरो जकाँ कक्षा संचालित कयने छलाह। कक्षासँ बहराइत, अगिला संस्कृतक क्लास लेल अबैत अमरजीकें प्रणाम कएने छलाह। ओ सरिसब-पाहीक

छलाह आ किछुए दिनक बाद प्रशासनिक सेवामे चयनित भ' विद्यालयसँ बहरा गेल छलाह। दिवानाथकें मित्ररूपमे चर्चा साहित्यकार राजकमल कतेको ठाम कयने छथि। अमर जी सहज मुसकान संग कक्षमे प्रवेश कयने छलाह त्रिपुंड चानन मध्य टीका आ धोती-कुर्ता (ऊनी) पर शाल लपेटने। स्नेहसँ हमर परिचय पुछने छलाह। हम 'सर'सँ शुरूहे कयने रही कि ओ चिकरि उठलाह—'सर नहि पंडितजी! घरमे जेना बजैत छें तहिना बाज। अँय रौ तों गौरीक भागिन छें? गौरी काल्हि भेटल छल, ओहो हमर विद्यार्थी छल।'

ओ संस्कृत पढ़बैत रहलाह आ हास्य-विनोदक पुट संग-संग सेहो। जेना नाम-गुणक अंतर पर कोनो प्रसंग छल, जाहि पर ओ हँसैत बजलाह—'प्रिंसिपल साहेबक नाम (झिंगुर) की सोचिक' माय-बाप रखने हेतनि, कोना क्यो माय-बाप ई नाम राखि सकैत अछि? मुदा, गुण देख सर्वोच्च, सर्वोत्कृष्ट।' एहिना कोनो संस्कृतक क्लासमे स्वयं साक्षात् प्राचार्य महोदय पढ़ाब' लागल छलाह, कोनो श्लोकक अर्थ छल—'जँ पारिवारिक-कौलिक प्रतिष्ठाकें बढ़ा नहि सकी, तँ कमसँ कम बनाक' राखी।' एकटा छात्र मुसकी मारने छल आ प्राचार्य महोदय हँसैत ओकरा दिस बजलाह—'जिसके लिए ये कहा गया है, बात उसकी समझ में आ गई।' आ ओ छात्र छल हमरे महल्लाक प्रो. आर.पी. गामी, (अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष, सी. एम. कालेज)क बालक।

जाड़क समय छल तें फील्डेमे क्लास भ' रहल छल। बगलमे एकटा आर क्लास भ' रहल छल। भुवनेश्वरी बाबू अंग्रेजी पढ़ा रहल छलाह। अमर जी हँसिक' बाजल छलाह—'बुझाइत अछि जेना क्यो (भुवनेश्वरी) माइक पर बाजि रहल हो।' यैह भुवनेश्वरी बाबू अमर जीक प्रेरणासँ प्रसिद्ध 'मैथिली बाल रामायण' बादमे लिखने छलाह, भुवनेश्वरी प्र. सिन्हा 'भुवन' नामसँ। माइक पहिले-पहिल ओही स्कूलमे देखने रही। बेसी काल कक्षाक आरंभ वा अंतमे कोनो अनिवार्य मुख्य-मुख्य घोषणा प्राचार्य आफिसक बरामदाक ऊँच टेबुल पर सुसज्जित माइकसँ करैत छलाह, अधिकतर अमरजी सहायकमे ठाढ़ रहैत छलाह। कक्षा आरंभ होइते गेट बन्न भ' जाइत छल आ दफ्तरी क्लासे-क्लासे रजिस्टर घुमबैत छल।

हमर नामांकनक किछुए दिनक बाद प्रथम आ अंतिम भारतीय गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी आयल छलाह लहेरियासरायक पोलो मैदान मे। हुनक आकृति दूरसँ गाँधीजीक फोटो सन देखाइत छल। ओना ओ गाँधीजीक समधिए छलाह। दरभंगा महाराज सर कामेश्वर सिंह मुख्य अतिथि छलाह, पैंट-कोट पर चानन-टीका लगौने भव्य सुसंस्कृत परिधान मे। सहसा माइकसँ घोषणा भेल छल आ मंच पर अमर जी प्रकट भेल छलाह। संभवतः मंद-मंद हारमोनियमक संग सेहो क्यो छल। अमरजी देशक लोकक दुर्दशाक गीत गाबि रहल छलाह। 'युगचक्र'क रचना सभ ताधरि प्रसिद्ध भ' चुकल छल। एहू गीतमे व्यंग्यक धार छल—'देखहक हौ गांधी बाबा तोरो स्वराज मे/लोक सभ करै छै

काँहि-काँहि हौ। बाजि रहल अछि ढन-ढन कोठी/लोक बनल अछि फाँड़ल पोठी/ छोटका-मझोलबा के बातो की कहियह/बड़को खसइ छइ धाँइ-धाँइ हौ।' राजगोपालाचारी आ दरभंगा महाराज दुनू गोटे ध्यान-मग्न आ कखनो मुसकैत अमर जीकें सुनि रहल छलाह। दोसर दिन कक्षामे गौरसँ हमर ताकब पर बिहुँसल छलाह—'हँ रौ, हमहीं रही काल्हि।' आ एक गेंट गीतक पन्ना छात्र सभमे प्रश्न-पत्र जकाँ बाँटि देलनि, नीचाँ दाम लिखल छल—एक आना। हम जलपान ले भेटल दू आना मेसँ एक आना हुनका हाथ पर राखि देने छलहुँ आ कते छात्र काल्हि अनबाक बात कहने छल। ई सभ खिस्सा साँझमे कक्काकें सुनौने छलियनि उल्लासपूर्वक, मुदा ओ छात्रक प्रति शिक्षकक एहन व्यवहारक निंदा कयने छलाह। हम अमर जीक पक्षमे बजैत रहलहुँ—'ओ नहि मंगलनि, हम अपने मोने देलियनि।' कक्का हँस' लागल छलाह।

अमर जीक असली रूपक निखार ओहि बेरक सरस्वती-पूजा दिन भेटल। स्कूलक नाम आ पूजाक आराध्या देवीक नाम तँ एक छलै। पूजाक विधि-विधान स्वयं अमर जी संचालित क' रहल छलाह। पूजा पर ओना तँ हमरासँ एक कक्षा वरीय छात्र बैसल छल, मुदा प्राचार्य झिंगुर एते उत्साहित छलाह, जेना ओ यजमान होथि आ अमर जी पंडित। देबाल सभ रंग-बिरंगी फूलसँ सुसज्जित अष्टदल कमलपर विराजमान वीणा-वादिनीक तेजोमय आकृतिसँ अलंकृत छल। ऊपर विद्यादेवीक स्तुतिमे श्लोक सभ जेना—'या देवी सर्वभूतेषु विद्यारूपेन संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः' वा 'ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषय गोचरे ज्ञानश्च यन्मनुष्याणाम् तत्तेषां मृगपक्षिणाम्' लिखावट अमरेजीक छल, सुघड़, सुस्पष्ट आ कलाकृति युक्त। अमर जीक जेहने गोल-गोल मोहक लिखावट, तेहने अलंकारी, शृंगारी, सुसंस्कृत परिधान। उज्जर दकदक धोती पर मलमलक चुन्नीदार लोहा देल कुर्ता, ताहि पर जनउ जकाँ मलमलक कलफ देल तहिआयल चादर लपेटने, कपार पर चाननक तीन रेखाक बीच टीका आ ठोप। एही अलंकारी ठोपकें देखि हरिमोहन बाबू कन्यादान फिल्म-निर्माणक दौरान चुटकी लेने छलथिन—'अमर जी देखू, सिनेमा करिते-करिते ठोपक जगह टोप ने लागि जाय।'

सरस्वती-पूजाक साँझमे कोनो नाटकक आयोजन छल, जाहिमे अमर जी मात्र निर्देशके नहि छलाह, अपन संगीतमय स्वरक अतिरिक्त बीच-बीचमे इफेक्टो द' रहल छलाह। हुनक एहि क्लासिक छविकें देखैत हमर बचपनक आँखि चोन्हिया गेल छल। ओना दू-तीन बर्खक बाद चंदा-वसूलीमे हिसाबक गड़बड़ीक कारण पूजा बन्न भ' गेल छल। स्कूलक वातावरण उल्लासमय छल, मुदा डेराक भोजनक अनियमित बदलैत व्यवस्था आ एकसँ एक अपरिचितक आशंकित व्यवहार आ कक्काक व्यस्त महंथरूप हमरा उदास आ एकाकी बना रहल छल। ओहि साल (1960 ई.) एहि स्कूलक छात्र अनुपम दास गुप्ता मैट्रिकमे पूरा बिहारमे फर्स्ट कयने छलाह। हिनक माय बगलक एल. आर. गर्ल्स हाइस्कूलक प्राचार्या छलीह। माय-बेटा संगे हँसैत आयल छलीह, प्राचार्य झिंगुर

कुमरकें गोर लगने छलीह। रजिस्टर लेने दफ्तरी आ अनेको शिक्षकक संग प्राचार्य अपन कक्षसँ बहरायल छलाह। अनुपम दासगुप्ता बेरा-बेरी सभकें गोर लगने छलाह। पहिने अमरजी एहि खास अवसरक महत्त्व बतौने छलाह। दासगुप्ताक मायक संग बंगलामे अमरजी किछु हास्य-विनोद कयने छलाह। तकर बाद झिंगुर कुमर शानसँ अनुपम दासगुप्ताक हाथ पकड़ने माइक पर झुकल छलाह–'इस लड़के ने तमाम बिहार में पहला स्थान लाकर हमसब का सिर ऊँचा कर दिया है। इसकी माताजी जो बगल के स्कूल की प्राचार्या हैं, उन्हें बधाई क्या दूँ प्रणाम करता हूँ कि किस अनोखे ढंग से इस होनहार पुत्र का लालन-पालन किया है।' मिसेज दासगुप्ता झिंगुर कुमरक पैर पर झुकि गेल छलीह।

झिंगुर कुमरकें राजेंद्र बाबूक हाथें राष्ट्रपति-पुरस्कार संभवतः भेटि चुकल छल, जकर फोटो कार्यालय-कक्षमे टांगल छल। डेरा पर क्यो खबरि अनने छल जे हमर जेठ बहीनक (बारह पुरिक' तेरहम बर्ख मे) बियाह ठीक भेल छल। ओही बहीन संगे गामक स्कूल धरि जाइत छलहुँ, ओकर स्कूल कनि आगाँ भूमिहार लोकनिक गाछीमे झोपड़ीनुमा घरमे छल, जत' हँसैत-बतिआइत देवीजी पढ़ाइ कम आहे-माहे बेसी करैत छली। आब ओहि स्कूलक सेहो अपन मकान आ पूर्ण सरकारी व्यवस्था छै। हमर बहीन स्कालरशिप परीक्षामे जिलामे सेकेंड आयल छलि, तैयो पढ़ाइ तीन बर्ख पहिने छोड़ा देल गेल छलैक बियाहक नाम पर। पिताजी एहि तीन बर्ख धरि सर-संबंधी संग विभिन्न स्थानक भ्रमण आ रमन-चमन करैत रहलाह। जते तिलक गनलनि, तकर ड्यौढ़ा घूम'-फिर'मे खर्च क' चुकल छलाह। वर छलाह अंग्रेजीमे एम. ए. कलकत्ताक हाइस्कूलमे मास्टर (पिताजी पितामहीकें प्रोफेसर रूपमे बुझबैत छलथिन)। गाम पर भोज-भात, गीत-नाद, भार-दोर, रंग-रभस आ ताहिपर वर-परिवारक हमर परिवार दिससँ भेल त्रुटिक फेहरिस्त दबल स्वरमे गुंजित-अनुगुंजित होइते रहैत छल आ हम घुरि-फिरि बेंता डेरा पर अपरिचितक भीड़मे एकाकी-उदास घरक बीध-बाधक बीच नव-नव आयल बहिनोइक मोहक लीला सभकें मोनमे समेटने बेर-बेर पिंजड़ाक पंछी भ' जाइत छलहुँ। क्रमशः छमाही परीक्षा भ' गेल। गणितमे मात्र तीस नंबर आयल, अंग्रेजीमे अस्सीसँ ऊपर आयल छल, बूढ़ शिक्षक भुवनेश्वरी बाबू उत्साह बढ़ौने छलाह। कक्का गणितक नंबर पर नाराजगी प्रकट कयने छलाह। ओना अनुपम दासगुप्ताक छोट भाइ अमर दासगुप्ता (हमरे कक्षाक)कें सेहो गणितमे तीसे नंबर छलैक, से कक्काकें सुनौने छलियनि आ ओ हमर बहानेबाजी पर कुटिल मुसकान देने छलाह। ओना शिक्षक अमर दासगुप्ताकें सेहो झिड़की देने छलाह–भाइ पूरे राज्य में फर्स्ट करता है और छोटा भाइ गणित में तीस नंबर लाता है।

हमर पिता ओहि जमानामे एते उत्साहित रहैत छलाह, जेना बाघ मारि लेने होथि। एम. ए. पास जमायक बेस खुशी, बहीनक पढ़ाइ छोड़ओल गेल, तकर कोनो अपसोच नहि। एक दिन एहने उदास दिनमे मामा-मामी संग नानी आयल छली–'रे बच्चा, हमरा

तोरे चिंता होइए। माय-बाप तोरा जिबितेमे टुग्गर बनाक' पित्ती लग पठा देलकउ। खाय-पीबाक कोनो ढंग नँइ देखैत छिअउ। घर पर सदावर्त्त बटाइ छौ आ अइठाँ दू आना पाइ पर काज चलइ छौ।' नानीक बातमे कनिको संवेदना आ सहानुभूति नहि छल, उनटे कक्काक प्रति कुत्सित आ विभेदकारी भावना छल। एहिसँ दू बात सिखने छलहुँ जे मोनक व्यथा ककरो ने बताबी चाहे कतबो अपन हो। दोसर किछु पाब' लेल किछु गमाबहे पड़ैत छै। डेराक वातावरण एहन छल जे दिन-राति रिक्शा-ठेलाबलासँ ल'क' डाक्टर-कंपाउंडरक पंचैती होइते रहैत छल। कक्का जिलाक ट्रेजरी आफिसमे कार्यरत छलाह। डाक्टर लोकनिक आन-जान होइत रहैत छल, मेडिकल इंटर्न सभ सेहो अबैत-जाइत रहैत छल। क्यो वेतनक समस्या तँ क्यो क्लीनिकक समस्या ल'क'। एकसँ एक नेता आ आपराधिक चरित्रक लोकक भीड़ रहैत छल, सभक व्यवहार चारण वा दास बला आ सभक बीच कक्का सौम्य बनल रहैत छलाह। पिता कक्काक विषयमे डॉन (दादा टाइप) जकाँ छात्रे-जीवनसँ रहबाक बात कहने छलाह। गामसँ ल'क' दूर-दराजक परिचित अमंधक संबंध जोड़ि क' अबैत छलाह आ कचहरी-समाहरणालयक काज कक्काक मदतिसँ करबा लैत छलाह। आ तकर बाद उपकारक बदला हमरा कक्काक प्रति वैमनस्य-भाव द' जाइत छलाह। बेसी लोक डाक्टरीक काजसँ अबैत छलाह, सुविधापूर्वक कक्काक नाम पर काज करबा लैत छलाह। डेरामे नित नव-नव अतिथि, नव-नव योजना, नव-नव व्यवस्था। नीक-अधलाह रहितो कक्काक अभिभावक-रूप आइयो अविस्मरणीय अछि। हिसाबमे तीस नंबर अनने छलहुँ छमाही मे, तते डँटलनि, जे बरमाहीमे नब्बे नंबर आयल छल आ ओ अचानक हँसिक' कहलनि–'अहीं लेल ने कहने छलहुँ।'

डेरामे एकसँ एक अनजान महिला-पुरुष कोनो ने कोनो बहन्ने अबैत छल विभिन्न हाव-भावक संग, मुदा ओ गंभीर भ' जाइत छला हमरा दिस अभिभावक रूपमे तकैत आ आगंतुकसँ निरपेक्ष। बादमे अनके मुँहे किछु-किछु सुनैत छलहुँ। ओ जहिना नास्तिक छलाह, तहिना संवेदनशील। पिता आ पित्तीमे पूब-पच्छिमक अंतर छल, मुदा प्रेम तहिना, मुदा हमर युवावस्था होइते रावण-विभीषण बला मतांतर भ' गेल। हुनक कठोरताक आभास तँ प्रतिपल होइते छल, सत्यक लेल लड़ैत सेहो देखने छलहुँ। पूर्वेमे कहि चुकल छी जे बेंताबाली पीसी ओत' रहिक' पिता-पित्ती स्कूल-कालेज दरभंगामे कएने छलाह। ई पीसी बाबाक पिसिओत बहीन छली पाठक-परिवारक। हमरो समयमे बहुत दिन धरि जीवित रहली। हुनका ओत' जाइत छलहुँ तँ दुलार करैत कहैत छली–'तों सभ साबिक (पुरना) संबंध बिसरल जाइत छह।' अबैत-जाइत किछु नव बात पता चलल छल जे देयाद-बाद हुनका डाइनक रूपमे चर्चा करैत छनि, से तहियासँ जहिया बेटा सनकिक' भागि गेल छलथिन। असगर पोता-पोतीक संभाषण करैत छली। अपन जाउत तँ हिनका भगाबहे चाहैत छल हिस्सा हड़प' लेल। जाउतक नाम छल हरिश्चंद्र पाठक, जिनक जेठ साढ़ू दिआदिएक छलथिन। हमर समक्षे पीसी कक्काकें देखि कान' लगलीह–'बउआ,

हरिश्चंद्रा कहइए तों घरसँ भाग ने तँ खंडी-खंडी काटि देबउ...सभ किछु तँ लइए लेलक. ..!' हुनका हिचुकैत देखि कक्का बाजल छलाह–'अहाँ जाउ, भगवान न्याय करता।' आ से स्कूलसँ घुरती काल आँखिसँ देखलहुँ जे बेंता चौक पर टाल लागल भीड़मे कक्का हरिश्चंद्र पाठक (पीसीक जाउत)कें धुनि रहल छलाह आ हुनक पत्नी छाती पिटैत कक्काकें गारि पढ़ैत छली। आ कक्काकें पीसी संग न्याय करैत देखि हम भाव-विभोर भ' गेल छलहुँ।

हमर एहि एकाकीपनमे एकटा मित्रक आगमन सेहो भेल, ओ हमर समवयस्के लगैत छलाह, मुदा हमरे स्कूलमे ओ दू कक्षा आगाँ पढ़ैत छलाह। हमर कक्काकें ओहो कक्के कहैत छलाह आ पाठक परिवारक छलाह विनोद पाठक। हुनक पिता भारतीय स्टेट बैंकक कर्मचारी छलथिन, जे बहुत बादमे शाखा-प्रबंधकसँ रिटायर कयलनि। प्रचलित छल जे ओ मैट्रिको ने कयने छलाह। तत्कालीन एजेंट (शाखा प्रबंधक) जे पंजाबी छल आ हिनक किरायादार छल हिनका कैस कुलीमे बहाल क' लेने छल। पुत्र विनोद पाठक धुराझार अंग्रेजी बजैत छलाह आ हमरा संग सरल-सहज व्यवहार छलनि, हमरा संग हँसैत-बतिआइत छलाह। मुदा एकटा नकारात्मकता छल जे चलैत-फिरैत अरारि मोल ल' लैत छलाह। ओना बादमे हुनक चर्चा स्कूलक 'हीरो' (बदमाश) रूपमे सुनलहुँ। हमर आकर्षणक केंद्र छल साओनमे होइत रहमगंज नाका लग जीबछ साहक मंदिरमे झूलन कार्यक्रम। ओत' एकसँ एक गायक (रामचतुर मल्लिक सहित) अपन कार्यक्रम दैत छलाह। पहिल दिन अपन एक विश्वासू शिष्यक संग कक्का ओत' उत्साहसँ पठौने छलाह। दोसर दिन चुप्पे कक्काकें बिनु कहने विनोद पाठक संग विदा भ' गेल रही। ओत' अमर जी सेहो अभ्यागत् रूपमे आयल छलाह। रातिमे नौ बजेक करीब घुरैत काल विनोद पाठक एक टा गुंडासँ भीड़ि गेल छलाह। डेराक बरंडा पर कक्का चुपचाप बैसल छलाह। हमरा देखिते बरसि पड़लाह–'यहाँ रहना है तो आज के बाद ई धंधा छोड़ दीजिए, नहीं तो गाँव में जाकर खेती कीजिए। गुंडा-बदमाश का संग छोड़िए।' आ तकर बाद हम विनोद पाठकसँ आँखि नहि मिला सकलहुँ। ओना विनोद पाठकसँ सहानुभूति छल जे एते मेधावी रहितो परीक्षाफल अतिसामान्य छलनि। ओ बादमे वैरागी भ' गेलाह आ गाँजा धुक' लगलाह। अपनाकें बन्न कोठरीमे कैद क' लेलनि, ओना हुनका सुपर नेचुरल आध्यात्मिक ज्ञान भ' गेल छलनि आ सबेरे-सकाल दुनियासँ विदा भ' गेल छलाह। ओना एक बेर भेंट भेला पर कहने छलाह–'लोक पुछैत अछि जे पिता मूर्ख रहितो पाइ-प्रतिष्ठा सभ प्राप्त कयलनि, हम एते पढ़ि-लिखि क' की कयलहुँ? हम हुनका सभकें कहैत छियनि–की किछु करब जरूरी अछि? ओना जे हम अर्जित कयलहुँ (आध्यात्मिक) ओ पिता कतेको जन्ममे नहि क' सकताह।'

आ झूलन रातिक घटना आ कक्काक डाँट पहिल ट्रेन-यात्रा जकाँ छल। पढ़ाइ ट्रेनक पहिया जकाँ गति पकड़ने छल आ विनोद पाठक संग मेडिकल कालेज मैदानमे

झूला झूलब, नव-नव खेल-कूद पाछू मुँहे भाग' लागल छल। आ ओही दिनमे कोनो फाटल-चीटल उड़िआइत पत्रिकाक पन्नाकें समेटने छलहुँ, जकर एक पन्ना पर कोनो अनाम कविक कविता आइयो मोन अछि–गे दइया, छुक-छुक चलै छै टरेन/ धुक-धुक करे छै मोरा करेजबा, हुलसै छै अँखिया से नोर...।

गुरुवर अमर जी पर लिख' की बैसलहुँ, बुझाइत अछि जेना चार्ल्स डिकेन्सक 'डैविड कॉपरफील्ड' लिखि रहल होइ। डेरापर अबैत रंग-बिरंगक स्वजन-परिजन, निकटसँ ल' दूर-दराजक अमंधी-समंधी ककरो कोर्ट-कचहरीक काज तँ ककरो हॉस्पीटलक, काज सधि गेल तँ चुगली-चपाटी शुरू, से आनेक नहि हमरो सभक। डैविड कॉपरफील्डे जकाँ बेर-बेर भंगठैत परिस्थिति। ओहिना भोला-भाला, अनाड़ी बनल, डेरापर अबैत एकसँ एक 'मिकॉबर' सदृश पात्र सभक रंग-बिरंगी सपना आ शिक्षा सुनैत। तहिना 'मिकॉबरे' जकाँ क्यो-क्यो किछु मांगियो लैत छलाह। एकटा शिक्षा भेटल जे लोक जाले टा बुनैत अछि, अपनामे मगन रहबाक चाही।

सत्ता सेहो जाल बुनैत अछि विभिन्न प्रगतिवादी योजनाक। कोनो व्यवस्था-परिवर्तन जखन होइत अछि तँ ओकर टारगेट होइत अछि मध्यम वर्गीय जे पुरना व्यवस्थासँ ताल-मेल बैसौने रहैत अछि। निम्न-मध्यम वर्गक सपनाकें जगाओल जाइत छै। आ से ब्रिटिश राजसँ मुक्ति भेटलाक बादो भेल छल। एहि बातकें अमर जी बड़ मौलिकता आ प्रखरताक संग 1950ई. क आस-पास अपन कवितामे उठबैत छथि, जखन कि नव-नव उल्लासमय वातावरण छल, नेहरू जी सन संवेदनशील प्रधानमंत्री दूरदर्शी लक्ष्यक संग आगाँ बढ़ि रहल छलाह। हुनक 'युगचक्र' ताहि समयमे गाम-गाममे प्रचलित भ' गेल छल–'उठल नियंत्रण भारतवर्षक/सुनलक बात जखन ई हर्षक/बनिआ आ टुटपुजिया नेता सभ कोठी अजबारि रहल अछि/जगकें युग परतारि रहल अछि...पकड़ि बेंगकें आइ फतिंगा/सहजहिं लाभ कराबय गंगा/बनबिलारिकें रंगमंच पर मुसरी धरि ललकारि रहल अछि/जगकें युग परतारि रहल अछि...बहुतो गप्प करय नित मारक/बहुत विचारै बात सम्हारक/बैसल बिसुनबिलारि बहुत जन/जग भरि आगि पसारि रहल अछि/जगकें युग परतारि रहल अछि...बहुतो जन व्यापारी बनला/बहुतो खद्दरधारी बनला/पत्रकार बनि बहुतो कवियो/लेखककें टिटकारि रहल अछि...।' एहिना निम्नलिखित कविता अछि–

'हमर कथा क्यो कान दैत अछि/जे खोपड़ी छरबा न सकइ छल/से सब आइ मकान दैत अछि...जे मकैक नेढ़ा तकैत छल/से सभ ऊँच मचान दैत अछि...' अंतिम पंक्ति अछि–'घरक निकलुआ राजनीति सागरमे डुबकान दैत अछि।' ई ओना अमर जीक शुरुआती राजनीतिक ललककें सेहो दरसबैत अछि। एहिसँ पूर्व मैथिलीक कोनो कवि ठेहुनियाँ आ घुसकुनियाँ दैत अपसंस्कृतिकें एते स्पष्ट स्वरमे अभिव्यंजित नहि क' सकल छलाह। ई कविता सभ हुनका प्रशस्त बनौलकनि। लोकप्रियता आ साहित्य दुनू स्तर पर। एही स्कूलक शिक्षक बाला बाबू कक्षामे सुनौने छलाह जे युगचक्रक पाँती पर राहुल

सांकृत्यायन सेहो कोनो सभामे झूमि उठल छलाह।
कथामे हिनक 'कंतू भाइक 'क' सीरीज सेहो विलक्षण अछि। एहिमे कंतू भाइ द्वारा संविधान प्रदत्त नागरिक अधिकार आ कर्त्तव्यक व्यावहारिक पक्ष पर प्रश्न उठाओल गेल अछि। 'कंतू भाइक कंटर'मे बिमरियाह कंतू भाइ बेटाक दरभंगा डेरापर विश्राम करैत सूत' चाहैत छथि। मुदा बगलक किरायादारक बेटी भरिदिन 'फोनोगिलास' (ग्रामोफोन) जोर-जोरसँ बजबैत अछि आ से बेसीकाल एक्केटा गीत–'सावनमे व्याहन आया...।' कंतू भाइक निन्न बेर-बेर टुटैत छनि। ओ सोच' लगैत छथि जे साओन-भादवमे हिंदूक की मुसलमानोक बियाह नै होइत अछि। कंतू भाइक बालक एक बेर ओहि बगलक किरायेदारकें अनुरोध करैत छथि ग्रामोफोन धीरे-धीरे बजयबाक लेल। मुदा बेटी संग घरबैया सेहो फैसला सुना दैत छनि–अपन किरायाक घरमे जेना मोन हैत सुनब। छौंड़ी ओहिना भरि-भरि दिन फुल भॉल्युम पर 'फोनोगिलास' बजबैत अछि।
अंततः कंतू भाइ कोना एहि समस्याक समाधान निकालैत छथि, से द्रष्टव्य अछि। दुपहरिया रातिमे टीनक कंटर पीट' लगैत छथि। बगलक किरायादार सज्जन महोदय उठिक' अबैत छथि–'ये क्या तरीका है? किसी की नींद-चैन को छीनना नागरिक अधिकार का हनन नहीं है?'
कंतू भाइ उत्तर दैत छथिन–'तखन भरि-भरि दिन जोर-जोर से फोनोगिलास बजाना क्या है?' आ तकर बाद ग्रामोफोनक आवाज मंद भ' जाइत अछि।
अमर जी मोन पड़िते ओ स्कूल आ असंख्य छात्र मोन पड़ि जाइत अछि। जेना हमरासँ एक कक्षा आगाँ क्लासमे सेकेंड करैत अमरनाथ मिश्र जे हमर जेठ बहिनोइक ममिऔत भाइ छलाह। ओ बेर-बेर अमर जीक गुणगान आ हमरा 'मैथिली' विषय लेबाक लेल मनबैत छलाह। दू साल धरि हम अनठियबैत रहलहुँ। कक्का कहैत छलाह जे मैथिली पढ़लासँ हिंदी कमजोर भ' जायत। मैथिली तँ लोक घरमे बजिते अछि। स्कूलक संगी-साथीक भाषा हिंदी छल। एकबेर अमर जी कोनो क्लासमे आयल छलाह। ओ मैथिलीमे किछु पुछलनि आ हम हिंदीमे उत्तर देने छलियनि। ओ तमतमा क' व्यंग्यमे बाज' लागल छलाह। तुरत्ते हमरा गल्तीक आभास भेल छल, मुदा चुकि गेल छलहुँ।
एक बेर बेंता चौक पर अमर जी साइकिलसँ स्कूल दिस जा रहल छलाह आ हमहूँ कक्काक साइकिल पर आगाँ बैसिक' स्कूल जयबाक लेल उद्यत छलहुँ। अमर जीक संग बाला बाबू (शिक्षक, राधानंदन झाक छोट भाइ) सेहो छलाह, जे कक्काक कालेजक संगी छलाह। पानक आदेश कक्का दिससँ भेल। कक्काक गप्प-सप्प हुनका लोकनिसँ भ' रहल छल। हम अमर जीकें गोर लगने छलियनि। ओ मूँड़ी डोलबैत पूछि देलनि–तों मैथिली किएक ने पढ़' चाहैत छें? कक्का हमर समर्थनमे बाजल छलाह–'हमहीं कहने छलियनि हिंदी रखबाक लेल, जँ अपनेक विचार तँ आब मैथिलीए रखताह।' आ नवम कक्षासँ हम राष्ट्रभाषा पेपर-2 क बदला मैथिली राखि लेलहुँ आ संगे मिथिला मिहिर

सेहो पढ़' लगलहुँ। ओहि समय प्रो. धीरेंद्रक 'भोरूकवा' मिथिला मिहिरमे धूम मचौने छल। आ ओ साल सगुनियाँ छल, जकर अंतिम परिणाम हमर परीक्षा-फल छल। प्राचार्य झिंगुर कुमर स्वयं माइक पर कक्षाक प्रथमसँ ल'क' छट्ठम स्थान धरिक छात्रक नामक घोषणा करैत छलाह। दू सौसँ बेसी छात्रक कक्षामे हमरा पाँचम स्थान भेटल छल।
ओही साल अमरजीक 'ऋतुप्रिया' कविता-संग्रह आयल छल, तकर किछु दिन बाद 'मैथिली आंदोलन : एक सर्वेक्षण।' अमर जी छात्र सभकें किनबाक लेल अनुरोध कएने छलाह। कक्काक मनाहीक बादो हम 'ऋतुप्रिया' किनने छलहुँ। संभवतः सुमन जीक भूमिकामे उल्लेख छल जे एहि कविता-संग्रहमे कालिदासक बाद पहिल बेर एते सुंदर प्रकृति-चित्रण अछि ऋतुचक्रक। बेसी मोन नहि अछि मुदा ई बात अमर जी द्वारा बेर-बेर प्रचारित भेल छल। ऋतु-वर्णन सहीमे विलक्षण छल अपन मौलिक ठेठ लालित्यपूर्ण भाषा मे। मुदा आइ सोचैत छी तँ कालिदाससँ तुलना करब कते हास्यास्पद छल। मुदा आचार्य रमानाथ झा द्वारा हिनक तुलना हरिमोहन झा आ कविवर सीताराम झासँ करब ई अनर्गल मानैत छलाह। आ तहिना मधुप जी आ सुमनजीक चर्च होइतहि जेना गुरुभक्तिक भावमे प्रवाहित भ' जाइत छलाह। ईशनाथ झा आ तंत्रनाथ झाक रचना पढ़बैत हिनक हाव-भाव अनिच्छित व्यक्ति संग प्रेमालाप सन भ' जाइत छलनि।
ओही साल चीनक आक्रमणसँ भारतक आत्मा विदीर्ण भ' चुकल छल...नेफा- लद्दाख सभ छिना चुकल छल। प्राचार्य कुमरक माइक पर आकस्मिक घोषणा अवरुद्ध कंठसँ भेल छल–'हम सभ एक धोखेबाज भाइक पृष्ठभागसँ कयल चाकूक वारक शिकार भेल छी।' पूरा दानापुर आ रामगढ़ छावनी साफ भ' चुकल छल, नेहरू जी बिमार भ' गेल छलाह। वी. के. कृष्ण मेनन (प्रतिरक्षा मंत्री) खलनायकक रूपमे प्रचारित भ' चुकल छलाह। दरभंगा (डी. एम. सी. एच.)मे ईलाज कराब' आयल किछु आहत सेनाकें अपने आँखिसँ देखने छलहुँ। ओकर सभक विभिन्न अंगकें अप्रत्याशित रूपें क्षतिग्रस्त देखि आँखि मुना गेल छल। एक गोटेक दुनू पोनक आ पेटक विभिन्न भागक गुद्दा ब्लास्टमे उड़ि गेल छल, क्षतिग्रस्त अंग-प्रत्यंग उघाड़िक' देखौने छल।
प्राचार्य अमरजीकें उद्बोधन-गीत लेल व्यास-मंच सौंपि देने छलाह। अमरजी सर्वप्रथम जयशंकर प्रसादक गीत अपन स्वर-रचनामे गौने छलाह–हिमाद्रि तुंग-शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती/स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती...। तदनंतर नेपाली आ दिनकरक गीत–भारत के जवानों, भारत से तुम्हें प्यार तो बंदूक उठा लो...जो शिव का पुजारी है शिवालय है उसी का/जो हिंद में जनमा है हिमालय है उसी का/नेफा है उसी का अरे लद्दाख उसी का/हिंद में जनमा है तो लद्दाख छुड़ा...एक-एक पाँती अमर जीक बाद छात्रसभ दोहरौने छल। आ ई कार्यक्रम कक्षाक समाप्ति पर प्रतिदिन होब' लागल छल।
एहि बीच हमरामे परिवर्त्तन होब' लागल छल, पढ़ाइमे मोन लाग' लागल छल। एकाध गोटे मोन पड़ैत अछि, उत्साहित कयने छलाह। एकबेर डेरापर हमर एक ममिऔत

भाइ जे बी. आइ. टी., सिंदरीक छात्र छलाह, आयल छलाह। ओ हमरा कहने छलाह–विद्यार्थी, अहाँ मेधावी छी, मुदा लगन नहि अछि। ओ गणित आ भौतिक शास्त्र एक्के दिनमे एहि पारसँ ओहि पार करा देने छलाह। एहिना एकटा सहपाठी अनिल मिश्रा छल, जे नित्य हमरा बगलमे एक्के बेंच पर बैसैत छल। ओ नामी-गामी परिवारक छल–सी. एम. कालेजक संस्थापक गंगाधर मिश्रक पौत्र आ बिहार प्रदेश कांग्रेसक पूर्व अध्यक्ष प्रजापति मिश्रक दौहित्र। ओ ताधरि पढ़ाइक प्रति लापरवाह छल, कतहु किताब-कॉपी छोड़ि दैत छल, नोकर लेब' अबैत छलैक। ओहो क्लासमे हास्य-व्यंग्यक चुटकी लैत रहैत छल अमरे जी जकाँ। अमर जी ओकरा बेस मानैत छलथिन। एक बेर अमरजी ओकरा सौराठ सभामे भेंट भेल छलथिन आ ओ हुनका सौराठ स्थित अपन घर पर ल' गेल छलनि। अमर जी स्नानक बाद तीन घंटा ओकर दलान पर पूजा कयने छलाह आ तकर बाद भोजन-साजन। अनिल प्रसन्नतापूर्वक सुनौने छल। हम अनिलक संग स्कूलसँ ल'क' एम. आइ. टी. मुजफ्फरपुरक प्रथम वर्षधरि संगे-संग रहलहुँ। बादमे ओ इंजीनियरिंग छोड़ि दिल्ली पढ़' चलि गेल, ओतहि प्राध्यापक भेल आ अंततः मैथिली भोजपुरी अकादमी, दिल्लीक अध्यक्ष भेल। अमर जी अनिल मिश्रासँ जुड़ल रहलाह गुरु-शिष्य रूपमे आ तहिना दिल्लीक संपर्क-सूत्र मे। मुदा हमर ओकरासँ पढ़ाइक बाद मात्र एकबेर ओकर दरभंगे डेरा पर भेंट (बलभद्रपुर) भेल। हँ तँ कहि रहल छलहुँ, अनिल मिश्रा हमरा बगलमे बैसैत छल आ शिक्षक सभक नव-नव नामकरण आ नकल करैत छल, जेना कोनो शिक्षककें बेल सन मूँडी, ककरो नकसुरका आदि-आदि। ई सभ हमरा लेल कखनो आह्लादकारी तँ कखनो पढ़ाइ बाधित करैत छल। ओ छोटेमे कोनो कार्यक्रममे पोलो मैदानमे केरिकेचरसँ प्राइज जितने छल। केरिकेचर छल–'जवान हो या बुढ़िया, कुछ भी हो औरत जहर की है पुड़िया' बला गीतक। क्लासोमे एकाध केरिकेचर कयने छल। अमरजी ओकरासँ हँसि-हँसि बतिआइत छलाह। ओही दिनमे एक मूसलाधार वर्षाक रातिमे एकटा कविता स्वानुभूतिसँ लिखने रही, से अमरजीकें देखौने छलहुँ। –'तों नीक लीखि सकैत छें, मुदा तों हमर छंद आ अनुप्रास चोरौलें? कोनो दोसर कविता लिख।' अमर जी प्रेमसँ कहने छलाह। तकर बाद 'दुखदारुणसँ' कविता लिखलहुँ जकरा अमर जी अपना स्तरसँ डाकमे पठा देने छलथिन जे पहिले बेर 'नेना-भुटकाक चौपाड़ि'मे छपल छल आ बहुतो परिचित पढ़ने छल।

ओही साल चीन-युद्धक उपरांत खलनायक रूपें विख्यात प्रतिरक्षा मंत्री (निष्कासित) वी. के. कृष्ण मेनन राजकुमार जीवेश्वर सिंह द्वारा भेल मैनेजरक हत्याक केसक वकीलक रूपमे आयल छलाह, एम. एल. एकेडमीमे हुनक भाषणक कार्यक्रम भेल छल। लोक सभ ओ अंग्रेजी भाषण कनिको ने बुझि पाबि रहल छल, दोसर ओ मंचस्थ लोके दिस उनटि-उनटि बेर-बेर संबोधित करैत छला। अंग्रेजी शिक्षक जगदीश प्रसाद कर्ण (विद्वान साहित्यकार) मेननकें टोकने छलाह–'Facing towards audience, please' (श्रोता दिस घुमि क' कृपया

बाजल जाय)। मेनन पूर्ववत् उनटा मुँहें बाजल छलाह–'Here is also audience' (अहूठाँ श्रोता अछि)। दोसर दिन अनिल मिश्रा ओहि भाषणक टेक्स्ट हू-ब-हू नकल कयने छल।

संभवतः स्कूलमे एकाध कवि-सम्मेलन भ' चुकल छल, जाहिमे रवींद्रनाथ ठाकुर, शिवाकांत पाठक, रमानाथ मिश्र 'मिहिर' आ प्रवासी साहित्यालंकार आदि रहथि। स्वरक मधुरता पाठक जीमे छलनि, मुदा प्रेम-गीत फिल्मी टाइप। रवींद्र नाथ ठाकुर अपन मौलिक अंदाजमे बहुप्रशंसित छलाह आ तहिना प्रवासी साहित्यालंकारक 'गारि जे पढ़ौक, काटि तरहरामे गारि दे' चीन-युद्धक संदर्भ लैत सनसनीखेज भ' गेल छल। ओही गोष्ठीमे मैथिली साहित्य परिषद वा किछु आर नामसँ परिषद-गठन भेल छल। पहिले बेर हम माइकसँ विद्यापति संदर्भित कोनो कविता पढ़ने छलहुँ। अमर जी बालकविक रूपमे हमर परिचय देने छलाह जे आर्यावर्तोमे छपल छल। पहिल बेर प्रख्यात हिंदी शिक्षक आ साहित्यकारकें मैथिली बजैत सुनलहुँ। पहिल बेर प्राचार्य झिंगुर कुमर मैथिलीमे बाजल छलाह–'विद्यापति शौर्यक कवि छलाह। हर्षक बात अछि जे मैथिली साहित्य परिषदक गठन भेल अछि। मुदा, संगे दुख अछि जे जाहि स्कूलमे अमर जी सन शिक्षक होथि, जााहि स्कूलक छात्र प्रो. रामदेव झा आ प्रभास कुमार चौधरी होथि, तत' एते देरीसँ ई सभ भेल अछि।'

एकटा आर प्रसंग अछि, जे अमर जीक जीवनक सुखद आ दुखद दुनूक बीचमे संघर्ष करैत अमरजीक अछि। 'कन्यादान' सिनेमाक शूटिंग भ' रहल छल, जाहिमे संयोगवश अमर जीकें लालककाक पार्ट भेटि गेलनि। जखन कते मास बीति गेल, अमरजी नहि घुरला, प्राचार्यकें भेलनि जे आब ओ नहि घुरताह। सिनेमाक कलाकार भ' स्कूलमे की करताह? ओ आन एक गोटेकें मैथिलीक शिक्षक नियुक्त क' लेलनि। पता चलितें अमर जी बम्बईसँ भागल अयलाह आ छात्र-शिक्षक सभक बीच लॉबिंग कर' लगलाह। छात्र सभकें उकसौने छलाह जे प्राचार्यकें एक स्वरमे कहुन–हम अमरे जीसँ पढ़ब। छात्र सभक बीच ओ अपन जीवन-मरणक प्रश्न उठबैत रहलाह। हम कौतुकसँ एक दिस हारल राजनीतिज्ञक भूमिकामे अमरजीकें दयनीय अवस्थामे देखि रहल छलहुँ, तँ दोसर दिस नवनियुक्त मैथिली शिक्षकक डवाँडोल अवस्थाकें देखि दया आबि रहल छल। अंततः अमरे जी अपन राजनीतिक सक्रियतासँ सफल भेलाह आ नोकरी बचा लेलनि। नव शिक्षक मूड़ी झुकौने बहरा गेल छलाह। आइयो ओ बीतल घटना ओहिना नचैत अछि।

अमर जीक बड़का शिष्य-मंडली छल, हम छँटि गेल छलहुँ। कारण भेल जे 1970 ई.मे प्रकाशित हमर आ उपेंद्रक कविता-संग्रह 'असमाहि हमर हाथ'। हम दुनू गोटे अमरे जीक छात्र छलहुँ, मुदा संग्रहक भूमिका जीवकांत लिखने छलाह। पहिल बेर कविता पर चर्चा कम आ गोलैसी-दुष्प्रचारक टाल लागि गेल छल। एसगर जीवकांत सभसँ टक्कर ल' रहल छलाह। एहि बीच पटना जयबाक क्रममे पहलेजा आ महेंद्रूघाटक बीच स्टीमरे पर अमर जी भेटि गेल छलाह। गोर लगने छलियनि। ओ आशीर्वादक बदला खिसिया

क' बाजल छलाह–हमरे गारि पढ़' लेल किताब छपौलें? जखन कि दूर-दूर धरि एहि प्रकारक वा मिलैत-जुलैत कोनो प्रसंग नहि छल। एहन अवस्थामे सफाइ देब उपयुक्त नहि बुझायल छल। तकर बाद हम लिखबे छोड़ि देलहुँ। एक बेर क्यो रस्ते चलैत भेटल छल, जे कहने छल जे हम हुनका बिसरि गेलियनि आ ओ एहिसँ व्यथित छथि। दरभंगा यदा-कदा अबैत-जाइत रहलहुँ, मुदा साहस नहि भेल भेंट करबाक। दोसर कविता-संग्रह छपला पर एक संबंधीक हाथें पठौलियनि, मुदा ओ बेर-बेर हुनकासँ पुछैत रहलाह–'गंगानाथ कत'?'

अमरजीक साहित्य-साधना चिरायु धरि बनल रहलनि। साहित्य-साधनामे निरंतरता बनल रहलनि। ओना 1950 ई.सँ 1963 ई. धरि जते स्पष्टता आ निष्पक्षता छल, से कोनो साहित्यकारक स्वर्णिम कालक जे आभा होइछ, तदनुरूप छल। ओहिमे शिथिलता आयल वा नहि, से कहब आसान नहि अछि। शुरूहेसँ हुनक रचना-धारामे तीनटा अंतर्धारा रहल। सर्वप्रथम शास्त्रोक्त सांस्कृतिक धरोहरक प्रति अत्यधिक लगाव, दोसर साहित्यिक पत्रकारितामे अति उत्साह आ तेसर राजनीतिक समस्याक प्रति अनौपचारिकता। नैतिक ऊँचाइ (कमसँ कम साहित्यिक स्तर पर) बनौने रहलाह, अपसंस्कृतिक बखिया उघारैत रहलाह। नवलेखनक विरोध करितो ओकर स्वाद लैत रहलाह। नैतिक ऊँचाइ बला गुण हुनका साहित्य-अकादेमीक फेलोशिप धरि तँ पहुँचौलकनि, मुदा एकपक्षीय सेहो बनौलकनि। ओ स्वघोषित नैतिक चाटुकार सभसँ घेरा गेलाह, जे स्तुति-गान तँ कयलकनि, मुदा साहित्यिक शिखरधरि नहि पहुँच' देलकनि, जकर ओ वास्तविक अधिकारी छलाह।

आरंभे जकाँ अन्तो रजनीशेक सोचसँ करब–'नैतिकता औषधि जकाँ अछि, जकर अनावश्यक सभ पर उपयोग करब खतरनाक वा घातक भ' सकैत अछि। सहज व्यक्ति लेल नीति-अनीति सभ छुटि जाइत अछि आ छुटि जाइत अछि पक्ष।'

गुरुवर अमर जीक संपूर्ण अवदानकें नमन करैत कह' चाहब जे अपन स्तरीयता आजीवन ओ बनौने रहलाह।

मो.नं. 9006007015



सज्जन जनसँ नेह कठिन थिक

अशोक

अपन अड़सठि वर्षक जीवनक बेसी भाग करीब छत्तीस वर्ष हमर पटनामे बीतल अछि। वर्ष 2013 ई.क जनवरीमे सरकारी सेवासँ रिटायर भेलाक बादो पटनेमे रहैत छी। गाममे रहबाक अभिलाषा एखन धरि पूर्ण नहि भ' सकल अछि। नोकरीक आरंभ अररियासँ केलहुँ। फेर बक्सर चल गेलहुँ। बक्सरसँ 1983 ई.मे पटना आबि गेल रही। तहियासँ आइ धरि मात्र दू वर्ष 1989–91 ई.मे कटिहारमे छलहुँ। पटनामे रहैत एहि छत्तीस वर्षमे बहुतो हिंदी, उर्दू आ मैथिलीक साहित्यकार सभसँ परिचय भेल। भेंट-घाँट होइत छल। गप-सप हुअय। मैथिलीक साहित्यकार जे पटनामे रहथि, हुनकासँ बेसी भेंट हुअय। जे पटनासँ बाहर रहैत छथि हुनकोसँ कोनो विशेष अवसर पर भेंट होइत छल। गप्प होइत छल। मैथिलीक बहुतो अग्रज साहित्यकारसँ लगाओ आ जुड़ाओ रहय। आत्मीयता भेल। समकालीन साहित्यकार आ नवतुरिया सभसँ त' सहजहिं। सभक स्नेह–सद्भाव भेटैत रहल। बहुतो स्मृति सभ अछि। एम्हर दू वर्षसँ कोरोनाक कारणे त' ठीके सभटा स्मृतिए बनि गेल अछि। त' ओहि स्मृतिक झोंझसँ जिनका हम विशेष रूपें मोन पाड़ि रहल छी, से छथि राज मोहन झा। हमरो आ सभहक भाइ साहेब।

राज मोहन झासँ पहिल भेंट जेना हमरा मोन पड़ैत अछि, बक्सरमे भेल। हम ओहि समय ओत' सहायक निबंधक, स.स. रूपमे सहकारिता विभागमे पदस्थापित रही। वर्ष 1980क समय रहैक। संसदीय चुनाव भ' रहल छलैक। हम अनुमंडलमे निर्वाचन कार्यमे प्रतिनियुक्त रही। कार्मिक शाखामे। चुनावक दिन रहैक। अनुमंडल कार्यालयमे भिनसरसँ राति धरि बहुत व्यस्तता रहैत छल। मतदानक दिन नजदीक आबि गेल रहैक। तहिया कंप्यूटर नहि आयल छल। सभटा काज, लिखा-पढ़ी हस्तलेखनमे आ तकरबाद टाइपिस्ट सभक माध्यमसँ टाइप क' कए होइक। एक दिन हम डी.सी.एल.आर. शिवपूजन सिंहक चेम्बरमे, जे कार्मिक शाखाक प्रभारी रहथि, बैसल काजमे डूबल रही। तखने एक पैंट, कोट, मफलर लपेटने व्यक्ति आबि क' कहलनि—'मैं राम मोहन झा। पटना से आया हूँ। पेट्रोलिंग मजिस्ट्रेट रिजर्व के रूप में। मुझे ज्वाइनिंग देना है।'

हम ठाढ़ भ' क' हुनक स्वागत केलहुँ आ कहलियनि, 'हम अशोक कुमार झा, एहिठाम असिस्टेंट रजिस्टार छी। बैसियो ने।' हमरा प्रसन्नता भेल जे पटनासँ आयल मैथिली भाषी अधिकारीसँ भेंट भेल। ओ बैसि गेला। फेर ज्वाइनिंग लेटर लिख' लगला। हम हुनका गौरसँ देखि रहल छलहुँ। हमरा हुनकर चेहरा जेना देखल लगैत छल। अकस्मात मोन

पड़ल जे लगैए ई मैथिलीक कथाकार राज मोहन झा त' ने छथि। ओ पत्र लीखि क' हमरा देलनि। हम कागज हाथमे ल' कए हुनका पुछलियनि, 'अहाँ कथाकार राजमोहन झा छियैक?' ओ हँस' लगला। कहलनि, 'कोना चिन्हलहुँ हमरा? अहाँ मैथिली कथा पढ़ैत छी कि? ठीके हम राजमोहन झा छी।' हमरा बहुत खुशी भेल। आइ एक पैघ कथाकारसँ भेंट भेल। बजलहुँ, 'हँ, अहाँकि कथा सभ हम पढ़ने छी। 'एकटा तेसर' कथा हमरा नीक लागल रहय। पूरा कथा मोन अछि हमरा।' हुनकर चेहरा पर खुशीक भाव अयलनि। मुसकुराइत कहलनि, 'वाह, तखन त' बढ़िया रहल। एक अपन पाठकसँ हमरा भेंट भेल।' हम संकोचे हुनका नहि कहि सकलहुँ जे हमहुँ कथा-कविता लिखैत छी। मिथिला मिहिरमे किछु प्रकाशितो भेल अछि। तखन हम फेर हुनका पुछलहुँ, 'अहाँ अपन नाम राम मोहन झा कहने रही।' ओ हँस' लगला। कहलनि, 'लेखनक नाम मुदा राजमोहन झा अछि।' तकरबाद हम सभ गप-सप करैत रहलहुँ कनी काल। चाह-पान भेलैक। हुनका सभ लेल आवास के व्यवस्था रहनि। ओहीमे ठहरल रहथि। फेर ओ चल गेला। हुनका कतहु ड्यूटीमे नहि जाय पड़लनि। रिजर्वेमे रहला। तीन-चारि दिन ओहि अवधिमे ओ बक्सरमे रहला। भेंट-घाँट त' होइत रहल मुदा व्यस्तताक कारणे बेसी गप-सप नहि भेल। से जखन 1983 ई.मे पटना अयलहुँ त' फेर भेंट भेल। 1983 ई. क' मध्यमे ओ स्थानांतरित भ' क' दरभंगा चल गेला। फेर ओत'सँ राँची ओ बोकारो। 1991 ई.मे फेर ओ पटना अयला। पटनेसँ, 1994 ई.मे रिटायर भेला उपनिदशक (नियोजन) के पदसँ। सेवानिवृत्तिक बाद ओ पटने रह' लगला। पटनेमे देहावसान भेलनि।

से करीब पच्चीस वर्ष धरि पटनामे हुनकासँ कहियो-कहियो भेंट-घाँट होइत रहल। 1992 ई.मे गांधी नगर, बोरिंग रोडमे डेरा लेलनि। ओत'सँ 1998मे सावित्री कुटीर, घग्घाघाट रोडमे चल गेला। ओत' अंतधरि रहला। ओ प्राय: असगर रहैत छला। कहियो के परिवार संग रहथि। परिवार दिल्लीमे रहैत रहनि। बादमे जखन ओ अशक्क हुअ' लगला त' जेठ बेटी रूपा लगातार संग रहैत छलथिन। हुनकर खूब देखभाल केलथिन।

एक बेर हम आ मोहन भारद्वाज जे शिवपुरीमे नजदीकेमे रहैत छलहुँ, हुनका शिवपुरीमे आबि जेबाक लेल कहलियनि। ओ अनेको कारणसँ आबि नहि सकला। हुनकर डेरा पर हम बेसी नहि जा पाबी। बहुत तरहक व्यस्ततामे से संभव नहि भ' पाबय। मुदा जखन विशेष प्रयोजन हुअय त' जरूर जाइ। भाइ साहेबसँ विभिन्न कार्यक्रम, आयोजन सभमे भेंट हुअय। सगर राति दीप जरयमे, चेतना समितिक कार्यक्रम सभमे, विद्यापति भवनमे बिना कोनो कार्यक्रमो के। लगक पान-चाहक दोकान पर अड्डा जमै। बहुतो स्थानीय साहित्यकार सभ आबथि। हुनका संग ट्रेन, बस, गाड़ीसँ कतेको बेर यात्रा केलहुँ। विद्यापति पर्व त' अद्‌भुत मिलन स्थन बनय। तहिया पर्व हार्डिंग पार्कमे होइ। फेर मिलर स्कूलक

मैदानमे, फेर बुद्ध मार्गमे आ विद्यापति भवनमे। कार्यक्रमक स्थलक बाद चाह-पान आदिक जे दोकान लागल रहैक, ओतहु जुटान होइ। पोथीक स्टाल सभ पर सेहो भेंट हुअय। पहिने त' पटनाक बाहरोक साहित्यकार सभ पर्वक अवसर पर खूब पैघ संख्यामे आबथि। क्रमश: लोक कम आब' लगला। तहिया हमरो सभक गणना नवतुरियामे हुअय जखन जीवकांत, प्रभास कुमार चौधरी, भीमनाथ झा, उदयचंद्र झा 'विनोद', रमानंद झा 'रमण', मोहन भारद्वाज, गंगेश गुंजन, सुकांत सोम, महाप्रकाश, सुभाष चंद्र यादव आदि एकदम सक्रिय आ उठान पर रहथि। हुनका सभ संग समय बितयबामे बहुत नीक लागय। भाइ साहेब त' एहि सभमे रहबे करथि। हुनका सभक संग खूब साहित्यिक चर्चा होइ। नव-नव जानकारी भेटय, लाभ हुअय। एक प्रकारक आत्मीयता अनुभव करी सभक संग।

जखन आरंभ दोसर बेर 1994 ई.मे छपब प्रारंभ भेल त' 1995मे किसुन-अंक लेल भाइ साहेब हमरा रामकृष्ण झा 'किसुन'क कविता पर लिखबा लेल कहलनि। हम ओहिसँ पूर्व मात्र दू टा लेख लिखने रही जे मिथिला मिहिरमे छपल छल। 1976-77 ई. मे। असलमे बी. पी. एस. सी.मे हम मैथिली साहित्य रखने रही। ओही क्रममे वस्तुत: हम मैथिली साहित्य सिलेबस के अनुसार पढ़लहुँ। ओहिसँ पूर्व कथा-कविता सभ पत्रिकामे पढ़ी। हमरो कथा-कविता सभ किछु-किछु छप' लागल रहय। भाइ साहेबक कथा सभ नीके लागय। त' 1995 ई.मे जखन ओ हमरा किसुन जीक कविता पर समीक्षा लिखबाक लेल कहलनि त' हम पराभवमे पड़लहुँ। समीक्षा लिखब बहुत मुश्किल लागल। भाइ साहेब के कहलियनि, 'हमरासँ समीक्षा लिखब संभव नहि होयत। हमरा छोड़ि दिअ'।' मुदा ओ माननिहार कत'? जे मोनमे ठानि लेलनि से करबे करता। पुछलनि, 'किएक नहि लिखल हैत? कोशिश करबै त' जरूर होयत। अहाँ लीखि सकैत छी।' हम किताब नहि रहबाक लाथ केलहुँ। ओ कहलनि जे किताब उपलब्ध करबै छी हम। भाइ साहेब दोसरे दिन किसुनजीक मैथिली अकादमीसँ प्रकाशित कविता-संग्रह पठा देलनि। तैं परसँ हुनक जबर्दस्त तगादा। अंतत: समीक्षा लिखलहुँ। आरंभमे प्रकाशित भेल। ओ हमर पहिल आलोचनात्मक निबंध रहय। तकरबाद लिख' लगलहुँ। एहि तरहक कथेतर लेखन लेल भाइ साहेबक बाद आलोचक मोहन भारद्वाज सेहो खूब प्रोत्साहित केलनि। सहयोगो केलनि। भाइ साहेब कथा सभक लेल इंटरभ्यू सभमे हमर उल्लेख करथि। लेखोमे नवम दशक के कथाकार सभ पर बहुत भरोस करथि। हुनक कहब रहनि जे, 'आरंभिक कथाकारक कथा कथा कम, उपदेश बेसी भ' जायल करनि तेना एम्हरुका कथा कथासँ बेसी नारा होयबा दिस प्रवृत्त अछि। उपदेश आ नाराक बीच जे वैचारिक आ कलात्मकतामे समुचित संतुलन रखैत मैथिली कथा अछि, सैह मैथिलीक मूल आ वास्तविक धारा अछि। एहि प्रति नवम दशक के जे कथाकार साकांक्ष छथि, मथिली कथा अपन भविष्य लेल तिनके पर भरोस

क' सकेत अछि।' हम भाइ साहेब, मोहन भारद्वाज आ रमानंद झा 'रमण' आदिक प्रोत्साहन, आलोचना सभसँ उत्साहित भ' खूब कथा लिखलहुँ। जखन 2016 ई.मे भाइ साहेबक देहावसान भेलनि त' दाह संस्कारक समय विनोद कुमार झा, मैथिली लेखक संघक सचिव हमरा कहलनि जे, जतेक भाइ साहेब अहाँकें प्रोत्साहित केलनि ततेक अहाँ अपन परवर्ती पीढ़ीक कथाकार के प्रोत्साहित नहि क' सकलियैक।' हम तत्काल गंभीर भ' सोच' लागल रही। लागल ओ कदाचित ठीक कहि रहल छथि। एकर उत्तर हमरा आसान नहि लागल। तथापि कहलियनि, 'एहन बात अंशतः ठीक कहि रहल छी अहाँ। ओना एकर ठीक उत्तर त' हमर बादेक कथाकार द' सकैत छथि। जेहेन साहचर्य हमरा भाइ साहेब वा मोहन भारद्वाजसँ रहल तेहेन साहचर्य हमरा अपन बादक कथाकारसँ नहि भ' सकल। तैयो बेसी दोष त' हमरे।' विनोदजीक ओ बात आइ धरि हमरा बहुधा मोन पड़ैत रहैत अछि। कवि-कथाकार अजित आजाद सेहो हमरा बादमे कहलनि। एकटा टी.भी. इंटरभ्यूमे ओ हमरासँ एही तरहक प्रश्न सेहो पुछने रहथि। वस्तुतः राजमोहन झा, प्रभास कुमार चौधरी, जीवकांत आदिक बाद जेना सुभाष, महाप्रकाश, सुकांत, प्रो. मनमोहन झा सभ अयला ओ तकर बाद मैथिली कथाकार लोकनिक एक पैघ समूह सक्रिय भेल तेना ओकर बाद कथाकार सभ नहि आबि सकला। ई तथ्य, चिंतन-मनन करबाक योग्य अछि। एहि पर फैलसँ विचार करबाक प्रयोजन छैक।

राजमोहन झा कें व्यक्तिरूपमे बहुत नहि जानि सकलहुँ तकर बहुतो कारण अछि। पहिल त' हमर अपन स्वभाव। दोसर ओ अपन व्यक्तिगत सुख-दुख ककरोसँ शेयर नहि कर' चाहथि। तेसर जखनसँ हमरा हुनकासँ बेसी सान्निध्य भेल तखन ओ साहित्य छोड़ि आन कोनो विषय पर गप नहि कर' चाहथि। हुनकासँ भेंट होइतो छल त' कोनो विशेष साहित्यिक चर्चा लेल हुनक डेरा पर अथवा अस्वस्थ भेला पर अस्पतालमे, डेरा पर। तथापि जखन ओ देहावसानसँ पूर्व दुखित पड़ला आ अस्पताल आदिमे भर्ती भेला त' किछु नहि बुझिलियैक। कियो खबरि नहि केलक, कोनो सूचना नहि भेटल। इहो नहि बूझल छल जे ओ दिल्लीसँ पटना आबि गेल छथि। जखन हुनक देहावसान भेलनि त' हुनक जेठ बेटी रूपा हमरा फोन केलनि। तखन हम सभ ओत' गेलहुँ। फेर श्राद्धोमे गेलहुँ। 2004ई. तक त' ओ आरंभ के संपादनमे पूर्णतया लागल रहथि। आरंभ निकालबाक लेल ओ व्यक्तिगत रूपसँ बहुत धनक व्यय केलनि। मेहनति केलनि। लेखक सभ कें रचना लेल, पाठक सभसँ बिक्री मूल्य लेल लगादा करबामे लागल रहथि। हमरा सभ जनैत छी जे मैथिलीक बेसी पत्रिका कोनो साहित्यकारक व्यक्तिगते श्रम ओ धनसँ निकलैत रहल अछि। अपन श्रम आ धनसँ संपादक जखन धरि संभव भ' सकलनि, पत्रिका प्रकाशित केलनि। जखन कि पत्रिका निकालब एक टीम वर्क थिक। ई सभ बात आरंभमे ओ लगातार

संपादकीय सभमे लिखैत रहला। रचना उपलब्धताक संकट, मैथिली लेखकक एहि संदर्भमे प्रवृत्ति आ व्यवहार पर, पाठक लोकनिक कीनि क' पोथी-पत्रिका नहि लेबाक हिस्सक पर बहुत दुखी ओ निराश भ' क' लिखथि। तैयो भाइ साहेब दोसर खेपमे 1994सँ 2004 धरि अनियमित रूपें सही, पत्रिका निकालैत रहला। अंततः ओ सभ तरहें अशक्त होइत गेला। समीक्षा अंक-2 के रचना सभ बहुतो जुटाइयो क' प्रकाशित नहि करा सकला। शरीरें अस्वस्थ रह' लगला। लगैए निराशा हुनका घेरि लेने रहनि। बाजब-भुकब सेहो क्रमशः कम होइत गेलनि। वर्ष 2014 ई.मे जखन पटनामे मैथिली लिटरेचर फेस्टीवल आयोजित भेल त' हुनका आमंत्रित करबा लेल गेलहुँ। उद्घाटन सत्रमे ओ मंच पर बैसला व्हील चेयर पर। हम फेस्टीवल लेल किरायाक गाड़ी रखने रही, ओहिसँ हुनका अनलियनि। ओ रूपाक संग अयला। बहुत प्रसन्न रहथि। उद्घाटन सभक बाद जखन आ चेयरे पर बैसल मंचक नीचा अयला त' लोक सभ हुनका घेरि लेलकनि। हुनका संग फोटो आ सेल्फी लेबाक होड़ मचल रहय। से देखिक' हमर आँखिमे नोर आबि गेल। कोनो लेखकक प्रति एहन सम्मान-स्नेहसँ हम अभिभूत भ' गेल रही। एहने दिन देखबाक हमर सेहन्ता रहय। फेस्टीवलमे शेष दिन हम अपने नहि जा सकल रही हुनका अनबाक लेल। कवि रघुनाथ मुखिया कें पठौने रहियनि। भाइ साहेब तीन दिन अयला आ बहुतो लोकसँ हुनका भेंट भेलनि। बहुधा कार्यक्रमक बाद लोक सभ हुनका घेरने रहथि। ओ सेहो खूब आनंद लेलनि।

राजमोहन झाक जे सोच-विचार रहनि, मैथिली साहित्यक विकास लेल जे हुनक मापदंड वा मानदंड रहनि, ओहिसँ फराक भ' ओ कहियो-कोनो समझौता नहि केलनि। ओ बेसी बजैत नहि रहथि। जखन मुदा बजैत रहथि त' से समधानल होइत छल। जाहि बात पर ओ अड़ि गेला ताहिसँ विमुख करब बहुत कठिन होइत छल। पटनामे दू टा मैथिलीक विशिष्ट संस्था अछि। चेतना समिति आ मैथिली अकादमी। एहि दूनूक प्रति ओ जागरूक रहथि, सक्रिय रहथि। दूनूक आलोचक रहथि। कोनो अनट-बिनट भेला पर ओ बेसीकाल बरदास्त नहि करैत छला। संस्थाक विभिन्न मुद्दा पर हुनक असहमति रहनि आ तकरा मुखर रूपमे व्यक्तो करथि। लिखबो करथि। एहि सभ कारणे संस्थासँ जुड़ल बहुतो लोक हुनकासँ असंतुष्ट रहथि। तथापि हुनका प्रति लोकमे अद्भुत सम्मानो रहय। कतेक बेर एहि दुनू संस्थामे कोनो उत्तरदायित्व भेटलाक बाद प्रबंधनसँ असहमतिक कारणे ओहि काजसँ अपना कें मुक्त सेहो क' लैत छला। कहुना मोन मारि क' कोनो काज करब हुनक प्रवृतिमे नहि रहनि। हुनक बात आ तर्क सहसा काटल नहि जा सकैत छल। यैह बात मोहन भारद्वाजोमे रहनि मुदा दूनूक स्वभावमे अंतर छल। दूनूकें सहजे स्वीकार करब सहज नहि होइत छलनि। दूनूक तर्क शक्ति अचूक छलनि। संस्था सभमे बहुत प्रकारक

विवशता होइत छैक। बहुत तरहक लोक कें ल' कय चल' पड़ैत छैक। विभिन्न मत ओ दृष्टिक लोक रहैत अछि। मोहन भारद्वाजक कहब रहनि जे हमरा सभ कें घुसि क' संस्था सभमे काज करबाक चाही। जतबा संभव भ' सकय सकारात्मक परिवर्तन आनी। ओ कतहु-कतहु समझौता कइयो के संस्थामे बनल रहब जरूरी बुझैत छला। भाइ साहेब मुदा से नहि मानैत रहथि। ओ अपन सोच-विचारक अनुसार सभकें सहमत क' काज करबाक लेल अंतिम दम तक प्रयत्नशील रहैत छला, नहि त' संस्थागत काज छोड़ि दैत छला। त्याग-पत्र द' देथि। मोहन भारद्वाज त्याग-पत्रमे विश्वास नहि करथि। राज माहन झा विभिन्न संस्थागत काज जेना प्रकाशन आ कार्यक्रमक ओ योजना सभक प्रति अपन असहमति ओ विरोध निबंध सभ लीखि क' प्रकट करथि। जे बादमे हुनक पोथी गल्तीनामा, टिप्पणीत्यादि, भनहि विद्यापति, प्रसंगत:मे प्रकाशित भेल अछि। हुनक एहि पोथी सभकें पढ़लाक बाद लगैत छैक जे एहन साफ-साफ बात कह' बला, एहन वस्तुपरक आलोचना कर'बला आ स्पष्ट ओ निधोख बाज'बला साहित्यकार मैथिलीमे बहुत कम भेल छथि। एहि क्रममे एक हुनक लेख अछि, 'साहित्यमे माफिया तत्वक प्रवेश'। ई लेखक अगस्त 2000 ई.मे 'आइ-काल्हि' पत्रिकामे छपल रहय। ओहिमे मोहन भारद्वाज द्वारा संपादित पोथी 'मैथिली गद्य-पद्य संग्रह' जे मैथिली अकादमीसँ 2000 ई.मे छपल अछि, तकरे संबंधमे विस्तृत विवेचन कयल गेल अछि। ओही प्रसंगमे माफिया तत्वक प्रवेश के बात कयल गेल अछि। एहि लेखमे मुखियाजी आ मोहन भारद्वाज पर जबर्दस्त प्रहार अछि। वस्तुत: हुनक मूल आक्रोश मोहन भारद्वाज पर छनि जे हुनका सनक लोक एहन काज किएक केलनि। बहुत गोटे कें ई लेख ओहि समय पसिन्न नहि पड़लनि। हमरो नहि पड़ल। भाइ साहेब पर क्रोध भेल। मोहन भारद्वाजक मायक श्राद्ध, ओ लेख छपलाक बाद लगले भेल रहनि। बहुतो साहित्यकार सभ ओहिमे जुटल रहथि। ओहिमे ओहि लेखक स्वाभाविक छैक जे चर्चा भेलैक। हम क्रोधमे रहबे करी। उत्तेजनामे भाइ साहेब पर खूब बरसलहुँ। भाइ साहेब जखन भेंट भेला त' ओ किछु नहि कहलनि। हमहुँ ओहि लेख के संबंधमे हुनकासँ कोनो गप नहि केलहुँ। मुदा भाइ साहेब कें हमर आचरणसँ कष्ट भेलनि। ओ 15-9-2000 ई. के भीम भाइ (कवि ओ समालोचक भीमनाथ झा) कें संबोधित पत्रमे हमर आचरण पर क्षोभ आ दुख व्यक्त केलनि। हुनक तामस उचित छलनि। ओ पत्रो जखन दमन कुमार झा द्वारा संपादित 'लीखि पठाओल आखर' (साहित्यकारक पत्र भीमनाथ झाक नाम)मे संग्रहीत भ' प्रकाशित भेल त' हमहूँ पढ़लहुँ। ओ पत्र पोथीक मुखपृष्ठ पर सेहो भाइ साहेबक अक्षरमे प्रकाशित अछि। से बात हमरा भीम भाइ पोथी प्रकाशनक बाद कहबो केलनि। आइ जखन ओहि लेख कें फेरसँ पढैत छी त' हमरा होइत अछि जे भाइ साहेबक मूल विंदु अनर्गल नहि अछि। लेखक शीर्षको उचित छनि। मोहन भारद्वाजक

संबंधमे जे लिखलनि से एहि कारणे जे संपादक रूपमे हुनक आचरण हुनका खराब लगलनि। माफिया तत्वक योजना नहि बूझि, ओकर सहयोगी भ' गेला। से भाइ साहेबक दृष्टिसँ जँ देखल जाय त' मैथिली साहित्यमे खास क' सांस्थानिक काज ओ प्रकाशनमे एहि तरहक तत्वक प्रवेश के सबूत आब आर स्पष्ट भ' जायत। वर्तमानमे त' स्थिति आर खराबे भेल अछि। वस्तुत: राज मोहन झा मैथिली साहित्यक विभिन्न इतिहास, कार्यकलाप, विद्यापति पर्व, पुरस्कार आदिक निर्णय, कवि सम्मेलन, मैथिली आंदोलन, रचनाक संकट आदि पर बहुत तथ्यात्मक ढंगसँ अपन विचार लेख सभमे प्रकट केने छथि। ओ मैथिली संसारमे चलि रहल गलत ओ अवांछित गतिविधिक लेल जँ एक दिस समाजक उदासीनता, लोकक स्वभाव, धारणा आदि कें उत्तरदायी मानैत छथि त' दोसर दिस लेखक सभक लापरवाही, आलस्य आ लिखबाक काज कें गंभीरतासँ नहि लेबाक हिस्सक कें सेहो प्रश्नांकित करैत छथि। ओ कहैत छथि जे सही मुद्दा ल'क' विरोध सही बात होयत, गलत मुद्दा पर विरोध गलत बात होयत। अंतत: हुनक कहब छनि जे हम सभ अपनामे विरोधक माद्दा उत्पन्न करी। स्थितिमे परिवर्तन लेल संघर्ष करी। जे ओ स्वयं करबो केलनि।

हमरा ई लगैत रहल अछि जे राजमोहन झा कें जानब आसान नहि अछि। वस्तुत: कोनो रचनाकारकें विशेषत: वा कोनो व्यक्ति कें जानब आसान नहि अछि। रचनाकारक व्यक्तित्वमे बहुतो विशिष्टता होइत छैक, बहुतो विरोधाभास होइत छैक। ओ विशिष्टता कि विरोधाभास कैक परतमे नुकायल रहैत छैक। ओहि परत सभकें खोलब कठिन होइत छैक। तैं कोनो रचनाकारक रचना आ ओकर जीवन कें एक संग देखिए क' ओहि रचनाकार कें जानल जा सकैत अछि। मैथिलीमे जें कि साहित्य-संसारमे साहित्यकार लोकनि कें व्यक्तिगत रूपसँ बहुतो पाठक जनैत छथि तैं हुनक धारणा ओहि साहित्यकारक रचनाक संदर्भमे बहुधा हावी रहैत अछि। तैं हुनक रचनाकें, हुनक व्यक्तिसँ जोड़ि क' देखब बहुत आसान होइत अछि। आन भाषा-साहित्यमे रचनाकारक रचना पढ़ि क' पाठक हुनका संबंधमे जनबाक लेल उत्सुक होइत छथि। हम सभ झटसन ककरो पर, हुनक विचार वा रचना पर मशीनी रूपमे निर्णयात्मक टिप्पणी क' बैसैत छी। ई प्रवृत्ति बहुत घातक अछि। एकरे फलस्वरूप ककरो आसमान पर त' ककरो छनेमे जमीन पर पटकि देबाक चलन बढ़ल अछि। जजमेंटल हेबाक स्वभाव एम्हर आर बढ़ल अछि। ई सभ एहि कारणे होइत अछि जे एहन व्यक्ति वस्तुत: अपनोसँ अपरिचित रहैत छथि। अपनासँ दूर भेल छथि। कोनो वाह्य धारणा, भ्रम हुनका पर हावी भ' गेल अछि। ई बात ककरो संग भ' सकैत अछि। हमरो संग भ' सकैत अछि। तैं एहि मादे सतत साकांक्ष रहब जरूरी होइत छै। भाइ साहेबक कथा सभ हम पढ़ैत छलहुँ। हुनकासँ भेंट-घांट होइत रहैत छल। मुदा जखन 1997 ई.मे संधान पत्रिका लेल हुनकासँ इंटरभ्यू लेबाक मादे सोचलहुँ त' फेरसँ हुनक

सभ प्रकाशित कथा पढ़लहुँ। तखन हुनकासँ हुनक कथाक संदर्भमे वा जीवन ओ व्यक्तित्व संबंधमे प्रश्न सभ लीखि कें देलियनि। ओ तकर लिखित उत्तर देलनि। से संधानमे छपल। ओहिमे पहिल प्रश्न जे हम केने रहियनि से हुनक व्यक्तित्वक रहस्यमयताक संबंधमे रहय। पुछने रहियनि, 'भाइ साहेब किएक एतेक रहस्यमय लगैत छी अहाँ ?' एकर उत्तरमे विस्तारसँ अपन बात रखने रहथि। कहने रहथि, जे केदार सेहो अपन एक पत्रमे एकटा रहस्यमयताक अनुभूतिक बात लिखने रहथि जकरा ओ बूझि नहि पाबथि। एहि रहस्यमय व्यक्तित्व पर सोचैत-विचारैत जे ओ कहने रहथि से बहुत महत्वपूर्ण अछि। ओ कहने रहथि जे, 'अपन व्यकितगत दुख आ पीड़ा कें ककरो आगाँ व्यक्त करबाक कोनो प्रयोजन वा सार्थकता हम नहि बुझैत अयलहुँ अछि। अपन दुख आ पीड़ा कें अहाँकें अपने सहबाक अछि। एहि लेल ककरो दोषो देनाइ व्यर्थ थिक। अहाँकें जे भेटल अछि, से तकरे योग्य अहाँ छीहे प्रायः।' ई हुनक जीवनानुभूति छल से हुनक रचना सभमे सेहो बहुतो ठाम परिलक्षित होयत। फेर बहुत दिनक बाद हुनक देहावसानक उपरांत जखन साहित्य अकादेमी हमरा राजमोहन झा पर मोनोग्राफ लिखबाक लेल कहलक त' फेरसँ हुनक कथा, आलोचनात्मक निकष, आरंभक संपादकीय सभ, इंटरभ्यू सभकें पढ़लहुँ। तखन जे पता चलल ओ ई छल जे नेनपनमे हुनक जे 'रिजर्व टाइप' के स्वभाव बनल जकरा 'इंट्रोवर्ट' कहल जाइत अछि, से नेनपनक ई स्वभाव गोपालजीसँ होइत नवयुवक राममोहन झा आ कि लेखक राजमोहन धरि ओहिना बनल रहल। व्यक्ति राममोहन कें जत' ई स्वभाव अपन व्यक्तिगत सुख, दुख कें दोसरा संग साझा करबासँ रोकैत रहल ओतहि लेखक राजमोहन के कोनो वस्तु कें देखबाक एहन आँखि प्रदान केलक जे वस्तु कें भीतर धरि पैसि क' सभ किछु देखि लिअय। ओकर रेशा-रेशा अनावृत भ' जाय। त' से हुनक कथा सभमे मनाविश्लेषण एक शैली रूपमे आयल। एहिसँ पूर्वक कथामे एहन मनोविश्लेषण नहि रहय। मोनमे घटैत घटना कें कोना यथार्थ रूपमे प्रकट कयल जाय से युक्ति हुनक कथा सभ कें पूर्ववर्त्ती आ बहुतो समकालीन कथाकारसँ हुनका फराक करैत अछि। तथापि हमरा राजमोहन झाक कथा सभक ई गुण, ताहूमे समकालीन मनुक्खक स्वभाव, पीड़ा, सुख, कायरता, द्वंद्व कें उघार करबाक हुनर बुझबामे नहि आबय। मोन पड़ैत अछि जे बहुत दिन पहिने विद्यापति भवनमे कोनो बैसारमे शरदिंदु चौधरी हमरा कहलनि जे, 'जेहन हरिमोहन झाक कथा सभ अछि तेहेने राजमोहन झाक कथा नहि। हरिमोहन झाक कथा सभ कें नीक लगैत छै मुदा राजमोहन झाक कथा संबंधमे से बात नहि कहल जा सकैत अछि।' हुनक एहि टिप्पणी पर कोनो ठोस उत्तर देबाक स्थितिमे तहिया हम नहि आायल रही। तैं हुनका पीढ़ीक अंतर, मैथिली कथाक विकास आ पाठकक अपन पसिन्न के गप कहि काज चला ललहुँ। मुदा बादमे जखन कवि ओ आलोचक भीमनाथ झाक कथाकार

राजमोहन झा पर लिखल लेख पढ़लहुँ त' एकर वास्तविक कारण स्पष्टतया बूझ'मे आबि गेल। भीम भाइ लिखने रहथि जे, 'हरिमोहन बाबू अपन कथाक पात्र ओ परिस्थिति कें उपरक खाढ़ीसँ चुनलनि, जेकर घेंट हुनको खाढ़ीमे आबि गेल छलनि। राजमोहन झा अपन जेनरेशनसँ शुरू क' आगाँ बढ़लाह। तें दूनूक कथा-देश फराक-फराक भ' गेलनि। सीमो एक नहि रहलनि। यैह राजमोहन झाक कथाकारक भारी सफलता थिक।' आइ हमरा लगैत अछि जे ई अंतर नहि केवल पूर्ववर्त्ती पीढ़ीक संग भ' सकैत अछि अपितु वर्तमान आ समकालीनो कथाकारमे दृष्टि-भेदक कारण भ' सकैत अछि।'

राजमोहन झाक व्यक्तित्वमे दोसर जे महत्वपूर्ण बात हमरा लगैत रहल से छल हुनक कोनो प्रश्नक उत्तर झपसन नहि देब। ओ कखनो कोनो बात आवेगमे नहि बाजथि। कोनो प्रश्न, मंतव्य आ गप पर कने काल ठमकि क' बाजथि। आ से जे बाजथि त' अहाँ लाजबाब भ' जा सकैत छी। हमरा हुनकर ई स्वभाव कतेको अवसरमे देखबामे आबय। एहि प्रसंगमे हम अपन गप नहि कहि कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासक भाइ साहेब के संबंधमे एक संस्मरण जे ओ हमरा कतेको बेर सुनेने छथि, तकर उल्लेख करैत छी। एक बेर हम, शिवशंकर आ भाइ साहेब मोहन भारद्वाजक डेरा पर आर ब्लाकमे रही। ओत'सँ विद्यापति भवन जेबाक निर्णय भेलैक। ओत' ओहि दिन उषाकिरण खान के उपन्यास 'हसीना मंजिल' के लोकार्पण रहैक। भाइ साहेब आ शिवशंकर एक रिक्शा पर आ हम ओ मोहन भारद्वाज दोसर रिक्शा पर विदा भेलहुँ। रस्तामे शिवशंकर, भाइ साहेब कें कहलथिन, 'भाइ साहेब, हम ओत' जा क' की करब ? ओत' त' बड़का-बड़का लोक सभ रहतैक।' एहि प्रश्न पर भाइ साहेब अपन स्वभावक अनुकूल कनेक कालक लेल चुप भ' गेला। फेर कहलथिन, 'यौ, शिवशंकर जी, ओत' केहेन लोक सभ रहतैक ? हमरे-अहाँ सन ने रहतैक।' हम सभ भाइ साहेबक एहि जवाब पर आइयो पुलकित होइत रहैत छी। कतेक सोचल-विचारल समानताक भाव वला सहज गप भाइ साहेब हुनका कहने रहथिन। एहने सनक मुदा कने विचित्र सन प्रश्न हुनकासँ हम ओहि इंटरभ्यूमे केने रहियनि, 'भाइ साहेब, एकटा बात पुछै छी। अपनामे कतबा 'मैथिल व्यक्तित्व' अहाँ सुरक्षित-संरक्षित मानैत छी ?।' हुनकर जबाब रहय, 'बेसी नहि। हमरा जेना लगैत अछि। ठेठ मैथिलत्वक प्रायः हमरामे अभाव अछि। आब से जेना होय। व्यक्तित्व बहुत रास वाह्य आ आंतरिक, घटक सभक प्रभावसँ बनैत छैक। तखन परिवेश आ संस्कारक कारणे मैथिलत्वसँ बहुतो दूरो नहि गेल जा सकैत अछि। ओना हम संतुष्ट छी।' त' एहन छला भाइ साहेब। एकदम साफ-साफ बात' कर' बला। कोनो लाइ-लपटाइ नहि। मुदा एही संग ईहो मोन पड़ैत अछि जे हुनका संबंधमे बहुतो स्त्री-पुरुष साहित्यकारक धारणा बहुत उत्थर सन रहनि। अपन धारणाक कारणे ओ सभ हुनक व्यक्तित्वक अवमूल्यन कयल करथि। एक दिशाहे गप करथि। हुनकर

साहित्यिक सक्रियता वा पारिवारिक जीवनक संबंधमे मात्र हुनकेटा दोषी मानथि। अपन जे सोच-विचार रहनि से हुनका पर थोपि देथि। तैं कहलहुँ, कोनो व्यक्ति कें ताहुमे रचनाकार कें सहजहि बहुत आसानीसँ नहि बुझल-समझल जा सकैत अछि। वस्तुतः हम सभ अपना कें ठीकसँ नहि जनैत रहैत छी। तखन दोसर कें कोना ठीक-ठीक जानि सकब।

साहित्यकार लेल ई आवश्यक अछि जे ओ अंतर्मुखी हो। ई बात मैथिलीक ख्यातनामा कथाकार मनमोहन झा सेहो हमरा बहुत दिन पूर्व कहने रहथि। मुदा हमर स्वभाव जेना हमरा लगैत अछि जे वर्हिमुखी अछि। संगहि भावनासँ, आवेगमे बेसी संचालित होइत छी। तैं जीवनमे त' सहजहि, लेखनोमे एकर प्रभाव-दुष्प्रभाव देखबामे अबैत अछि। संगहि हमरा सभक ई स्वभाव अछि जे बहुत बजैत छी। ई बात हमर नोकरी जीवनमे एक अधिकारी अतीशचंद्रा सेहो कहने रहथि। ओ मधुबनीक डी. एम. रहलाक बाद लगले हमर विभागक विभागाध्यक्ष भेल रहथि। हम हुनकासँ गप-सपमे कने खुजि गेल रही। एक दिन ओ कहलनि, 'आप लोग बहुत बोलते हैं। किसी बात पर प्रतिक्रिया देना जैसे जरूरी रहता है।' त' से सामान्यतया मैथिल स्वभाव रहल अछि मुदा भाइ साहेब एहन नहि छला। ओ मैथिली साहित्य संसारमे एक फराक व्यक्तित्वक स्वामी रहथि। ओ गप्पी नहि रहथि। हम सभ बहुधा गप्पी होइत छी। आलोचक रमानाथ झा त' उपेंद्रनाथ झा 'व्यास'क कथा-संग्रहक भूमिकामे कथा कें सेहो गप कहलनि। व्यासजीकें गपकार कहलनि। गपक परिभाषा देलनि। भाइ साहेब ने जीवनमे आ ने अपन कथा सभमे कतहु गप्पी देखाइत छथि। जखनि कि हमरा सहित बहुतो कथाकारक ई गप्पी स्वभाव कथा सभमे आयल अछि। ओकर असरि देखाइ दैत छैक। भाइ साहेब कें अग्रज कथाकारमे ललित प्रिय रहथिन। हुनको कथामे ई गप तत्व नहि भेटत। कथामे एहि कारणे ओ कतौ बहकैत नहि छथि, कतौ डारि-पात नहि छोड़ैत छथि। हुनका गद्य कें भाइ साहेब यात्री परंपराक गद्य कहलनि अछि। एकदम सोझ-साझ। साफ-साफ। कतहु बेसी तिलिया-फुलिया नहि। एहन गद्य मैथिल परंपरामे जे घुमा-फिराक' कहबाक परिपाटी रहल अछि, तकर निषेध करैत अछि। वस्तुतः राजमोहन झा आधुनिकता कें एक सकारात्मक वस्तु के रूपमे देखैत रहथि। आधुनिकताकें एकटा मूल्य मानैत रहथि। जखन कि मिथिलामे आधुनिकताकें पश्चिमी प्रभाव माने अंग्रेजिया चालि बूझि ओकर खिधांश करबाक परिपाटी रहल अछि। हुनकर 'बुधियारी' कथाक संदर्भमे अनैतिकता आ अपराधीपन हमरा मोनमे जेना आधुनिकताक एक प्रमुख तत्व के रूपमे आयल रहय। हम इंटरभ्यूमे भाइ साहेबसँ पुछलियनि, 'आधुनिक माने अनैतिक त' ने अछि ?' ओ कहने रहथि, 'नइँ अशोक जी, से नइँ अछि। आधुनिक माने अनैतिक नइँ। अपराध आ अनैतिकता—ई तँ एकटा युगधर्म जकाँ कहि सकैत छिऐ अहाँ। ई कोनो सकारात्मक वस्तु नहि छिऐ। आधुनिकता एकटा सकारात्मक वस्तु छिऐ

ई एकटा मूल्य छिऐ। अपराध आ अनैतिकताकें अधिकसँ अधिक अहाँ लक्षण मानि सकैत छी—युगक लक्षण। आधुनिकताक लक्षण नहि। एहि सभ वाह्य आ तात्कालिक प्रभावसँ आधुनिकताक अवधारणा कोनो तरहें प्रभावित नहि होइत अछि, हमरा जनैत। आधुनिकता एकटा सकारात्मक आ धनात्मक मूल्य अछि, जकरा ई सभ विकृति बदरंग नहि क' सकैत छै। आधुनिकता एकटा स्वच्छ वस्तु थिक, जाहिमे एहि अपराध, हिंसा आ अनैतिकताक दाग नहि लगबाक चाही। से जँ होइ, तँ आधुनिक भेनाइ तँ एकटा गारि भ' जयतैक। कतहु अहूँ हमरा आधुनिक मानलहुँ अछि। से एहि अर्थमे त' नहि ?' जँ हमरा सभ मोन पाड़ी त' मोन पड़त जे अपना सभक ओहिठाम आधुनिकता कें एकटा गारि जकाँ प्रयोग कयल जाइत रहल अछि। आधुनिकता कें परंपराक शत्रु बूझल गेल। मुद्दै आ मुद्दालह जकाँ चर्च भेल। परंपरा बनाम आधुनिकता। जखन कि ई एक दोसराक शत्रु नहि थिक। काञ्चीनाथ झा 'किरण' लिखलनि अछि जे, 'जे ज्ञान, आचार, व्यवहार, माय-बाप, पितामह, मातामह आदिक शृंखलाक द्वारा भेटैत अछि सैह परंपरासँ प्राप्त कहबैत अछि।' तहिना भाषाक क्षेत्रमे आधुनिकताक अर्थ ओ कहलनि अछि जे, 'अंग्रेज जाति जकाँ अपन मातृभाषा कें पवित्र मानब अपन समस्त भाव विचारक माध्यम बनायब आ अपन भूमिक स्वाधीनता लेल जीवन अर्पित करबाक भावनाकें प्रज्वलित राखब।'

त' भाइ साहेब जे आधुनिकता कें एक सकारात्मक मूल्य मानैत छला से जखन अपन मातृभाषामे लिख' लगला त' संपूर्णतया मैथिली साहित्य लेल समर्पित भ' गेला। ओ मैथिलीसँ पहिने हिंदीमे छप' लागल रहथि। 1957मे पहिल कथा मैथिलीमे छपलनि जखनि कि 1954मे हिंदी पत्रिका 'नई धारा'मे हुनक हिंदी कथा छपि गेल रहनि। हुनकर हिंदी कथा सभ 1974 ई. धरि हिंदीमे प्रतिष्ठित पत्रिका सभमे छपैत रहल। हिंदीक 'नयी कहानियाँ' दौरमे ओ परिचित ओ प्रसिद्ध भ' गेल रहथि। तकरबाद ओ हिंदीमे लिखब छोड़ि देलनि। हिदीमे लिखब छोड़ि देबाक प्रसंग ओ अंतिकाक संपादक अनलकांत कें एक इंटरभ्यूमे कहलनि, 'असलमे मुख्य बात ई छल जे हम सोचलहुँ जे अपन मातृभाषेमे किएक ने लिखी। देखियौ, हिंदीमे जते गोटे लिखि रहल छथि ओहिमे अधिकांश अहाँकें वैह भेटताह जिनकर मातृभाषामे साहित्य विकसित नहि छनि। अपन मातृभाषामे साहित्य विकसित अछि, तैं ओहीमे किए ने लिखी, ओकरे और विकसित किए ने करी।' ओकर बाद ओ दिन-राति मैथिली-भाषा-साहित्यक चिंतामे ओकरे बेगरता लेल सोच' विचार' लगला। अपन क्षमता भरि साहित्य ओ विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधि पर ओकर विकासक दृष्टिसँ लेखन केलनि। रचनाकार लेल जरूरत पड़ला पर आलोचनाक क्षेत्रमे हस्तक्षेप करब ओ जरूरी बुझैत छला। एहि क्रममे ओ केवल लेखनेटा नहि केलनि। प्रतिरोधक क्रियात्मक, आंदोलनात्मक रूपमे सेहो योगदान केलनि। सड़क पर उतरि प्रतिरोधस्वरूप मैथिलीक

एक आलोचनात्मक इतिहास के पोथी कें सामूहिक रूपसँ जरेबो केलनि। साहित्य अकादेमीक पुरस्कारक विरोधमे अभियान चलौलनि। बहुतो लेखक सभसँ हस्ताक्षर करा अकादेमीक आफिस कें पठौलनि। हुनक एहि तरहक लेखन आ कि क्रियाकलाप पर बहुतो लोक हुनका पर कुपित भेला। हुनक व्यक्तिगत आलोचना आ खिधांश केलनि। बहुतो दोषारोपण केलनि मुदा ओ कहियो विचलित नहि भेला। ओ अपना दिससँ ककरो संग संबंध नहि तोड़लनि। हम देखने छी जे जीवकांत, प्रभास कुमार चौधरी, गंगेश गुंजन, कुलानंद मिश्र, मोहन भारद्वाज, उपेंद्र दोषी सभसँ हुनक केहेन घनिष्ठता छल। पत्र-पत्रिकामे सभ एक-दोसराक लेखन आ सोच-विचार पर तिक्ख टिप्पणी करैत छला। खूब विवाद होइत छल मुदा व्यक्तिगत संबंध कखनो खराब नहि भेल। मोहन भारद्वाजक संग हुनक बहुतो असहमति रहनि। मोहन भारद्वाज कें सेहो रहैत छलनि। एक-दोसराक लेखन पर आलोचना लिखथि। तैयो मोहन भारद्वाजक डेरा पर भाइ साहेबसँ बहुतो दिन भेंट हुअय। हम मोहन भारद्वाजक संग भाइ साहेबक डेरा पर कतेको बेर गेल छी। भेंटो-घाँटमे खाली मधुर-मधुर बात नहि हुअय, कोनो-कोनो मुद्दा पर घनघोर बहस हुअय। से कखनो-कखनो कटुओ भ' जाय मुदा फेर संबंध ओहिना मधुर। पटनामे हमर ई सौभाग्य रहल जे अपन अग्रज पीढ़ीक लेखक सभक एहन बात-विचार ओ आपसी व्यवहारक हम साक्षी रहल छी। ई सभ मानवीय संबंधक उच्च मापदंडक अनुकूल अछि। साहित्य हुनका सभके अपन व्यक्तित्वकें निखारबामे मदति केने छल। ओ सभ अपन कमी-बेसी बुझैत छला। ओ सभ साहित्यकें सामाजिक कार्य बुझैत छला। निरंतर ओहि कार्यमे लागल रहलाक कारणे व्यक्ति पर सेहो असरि भेल छल। एक बेर मोहन भारद्वाज हमरा कहने रहथि जे, 'निबंध लेखन व्यक्तित्व गठन लेल आवश्यक होइत अछि।' वस्तुत साहित्य जँ साहित्यकार कें नहि बदललक त' पाठक कें कत्ते बदलत। ओ सभ माँ मैथिलीक सेवा नहि करैत रहथि। जेना एम्हर देखि रहल छी जे बहुतो लेखक माँ मैथिलीक सेवा कर' लगला अछि, कर' लगली अछि, से ओ सभ नहि केलनि। ओ सभ मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक आ भाषिक विकासकें ध्यानमे राखि क' साहित्यक माध्यम कें अपनौने रहथि। से बात मोहन भारद्वाज अपन एक इंटरभ्यूमे कहनहुँ छथि।

राज मोहन झाक साहित्यमे कोनो धार्मिक दृष्टिकोण नहि भेटत। हुनकर कथा सभमे त' अहाँकें इहो नहि लागत जे एकर लेखक जन्मना ब्राह्मण छथि। तैं कवि-कथाकार महाप्रकाश हुनका 'कुजात रचनाकार' कहलनि। आइ हमरा सभ जखन लेखकक साहित्यकें छोड़ि ओ कोन जाति-उपजातिक छथि से बुझबा लेल उत्सुक भ' जाइत छी आ लेखको सभ अपन जाति विशेषकें घोषित करैत चलैत छथि तखन भाइ साहेब सन 'कुजात रचनाकार' मैथिलीमे कोना जन्म लेत? जेना भाइ साहेब असहमति, विरोध लेल 'मुद्दा' आ 'माद्दा'

के महत्वपूर्ण मानैत छथि त' से क्रमश: वस्तुपरक आ तथ्यपरक हेबाक साहसिकता के मांग करैत अछि। एही सभ कारणे हम लिखने रही जे राज मोहन झा एहन मनुक्ख रहथि जिनकासँ प्रेम के सिवा किच्छु नहि क' सकैत छी। ऐहन प्रेम जे कठिन अवश्य अछि मुदा असंभव नहि। हुनकर फटकार आ दुलार अहाँकें व्यवस्थित करत, अव्यवस्थित नहि।'

असलमे करीब दस वर्ष पहिने हमरा महाकवि विद्यापतिक प्रसिद्ध गीतक एक पाँती बहुत परेशान केलक। ओ पाँती छल, 'सज्जन जनसँ नेह कठिन थिक'। हमरा ओहि पाँतीक अर्थे बुझ'मे नहि आबय। सज्जनसँ नेह कोना कठिन छैक? ई किए लिखलथिन विद्यापति? बहुत व्याकुल भेलहुँ। विद्यापति गीतक प्रकाशित आ विभिन्न विद्वान द्वारा संपादित बहुतो विद्यापति गीतक संग्रहमे ओहि पाँती कें तकलहुँ। सभ पोथी कें देखलापर उलझन आर बढ़ि गेल। बहुतो संपादक ओहि पाँती कें ओहिना रखने रहथि। किछु ओहि पाँतीए कें हटा देने रहथि।

एक संपादक त' आहि पाँती कें बदलि देने रहथि। 'कठिन थिक' के 'उचित थिक' क' देखलथिन। तखन आलोचक रमानाथ झा द्वारा लिखल 'सज्जन' के 'सतजन' वा 'सत्य जन' माने देखलहुँ। बहुतो लोक कें जेना मोहन भारद्वाज, भीमनाथ झा, सुकांत सोम, शिवशंकर श्रीनिवास, तारानंद वियोगी सभसँ एकर चर्च केलहुँ। अंतत: हम जे बुझलहुँ से ई जे सज्जन ओ थिक जकरा अहाँ अपन मोनक अनुकूल सदिखन नहि पाबि सकैत छी। ओकरा अहाँ 'कँखिया' नहि सकैत छी। ओ अहाँक सभ बात के समर्थक नहि भ' सकैत अछि। ओकरा अहाँ सहज पटिया लेब से संभव नहि अछि। कखनो आ कोनो मुद्दा पर असहमत सेहो अहाँसँ भ' सकैत अछि। एहन लोकसँ प्रेम करब वा नेह जोड़ब कठिन होइत रहलैक अछि। ओहि लेल दोसरहु कें विवेक जाग्रत राख' पड़तैक। विचार-मंथन करैत रह' पड़तैक। अपन मिथ्या अहंकार कें छोड़' पड़तैक। जेना कहल गेल छैक जे प्रेम लेल मनुक्खताक खोराक चाही, त' से सैह। एहि क्रममे हमरा फणीश्वर नाथ रेणु के कथा 'मारे गये गुलफाम' वा 'तीसरी कसम' सेहो मोन पड़ल। ओकर नायक हीरामन मोन पड़ल। लागल हीरामन सज्जन लोक छल। रेणु विद्यापतिक ओहि पाँती के अर्थ हीरामनक माध्यमसँ बुझबामे सहायता करैत छथि। त' राज मोहन झा एहने सज्जन लोक रहथि। सत्यान्वेषी रहथि। सत्य के मार्ग पर चलबाक अपना भरि कोशिश केलनि। भले ही ओहि लल पराभव भोग' पड़लनि। से, एहन लोकसँ नेह करब त' कठिन हेबे करतैक।

मो. 8986269001



हम छी ने : बाबूजी

विजय देव झा

जीवनमे दोसर बेर बाबूजी (डॉ. रामदेव झा) पर किछु लीखि रहल छी। कतयसँ प्रारम्भ करी, हुनक जीवनक कोन पक्ष पर लिखी? हमरा सदृश बौन व्यक्तिक कलममे एतेक सामर्थ्य कहाँ जे हुनक विराट व्यक्तित्व, विशाल हृदय आ अथाह ज्ञानक विषयमे लीखि पाओत। अपन जीवनक ज्ञात अज्ञात पक्षक विषय मे आधिकारिक रूपमे बाबूजी अपनहि कहि सकैत छलाह। आत्मकथा लिखब से बाबूजी विचार कयने छलाह, किछु सूत्रबद्ध सेहो कयने छलाह मुदा ता धरि विधाता विविध उपलब्धिसँ युक्त हुनक जीवनक उपसंहार लिखब प्रारम्भ क' देने रहथिन। बाबूजी आब पिता सँ पितर भ' गेल छथि, आब ओ एहि लोकमे नहि छथि तैं हुनक नाम धराय संस्मरण आ अन्यान्यक नाम पर कपोल कल्पना, कृत्रिम खिस्सा-पिहानी लिखी से मर्यादा आ धर्मक अनुकूल नहि।

पहिल बेर साल 2006मे लिखने रही, जखन 'साहित्य अकादेमी' दरभंगामे बाबूजी पर केन्द्रित साहित्यकारसँ भेंट (मीट दी ऑथर) आयोजित कयने छल। स्मरण भ' रहल अछि जे स्वर्गीय डॉ. सुरेश्वरझा निर्देशित कयने छलाह जे मीट दी ऑथर हेतु बाबूजीक संक्षिप्त जीवनवृत्त अंग्रेजीमे लिखी। समस्या छल जे बाबूजीक एतेक पैघ साहित्यिक संसार, उपलब्धि आ प्रसिद्धिकें संक्षेपमे कोना लिखल जाय। एक मासक कठिन प्रयत्नक बाद किछु लिखब संभव भेल जे साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित भेल छल। इहो एकटा रोचक प्रकरण अछि। जेना दू आखर पढ़लाक बाद कॉलेजिया छात्रकें विद्वान आ सर्वज्ञ हेबाक भ्रम भ' जाइत छैक सैह भ्रम अंग्रेजीक छात्र भेने हमरा सेहो छल। क्लिष्ट अंग्रेजीमे पचासो बेर लीखि क' बाबूजीकें देखबियनि आ हरेक बेर अशुद्धि निकालि संशोधन करबाक हेतु कहैत छलाह। कखनो काल तामसो चढ़ैत छल जे बाबूजी कतेक अशुद्धि तकैत छथिन आ भेटियो जाइत छनि। अंततः माँ हस्तक्षेप करैत कहलथिन 'बाबूजीक कलम ओतहि रुकैत छनि जतय अशुद्धि रहैत छैक। आब बकसि दियौ, एक पृष्ठ लिखबाक हेतु एक महीनासँ बेहाल अछि आ अहाँके अशुद्धि निकालबासँ मोन नहि भरैत अछि। तैं अहाँक लग लोक रिसर्च करबासँ डराइत अछि। अहाँ समुद्र उपछबाबय लगैत छियै।' बाबूजी हँसय लगलाह। हमरो उसास भेल आ संगहि 'हम अंग्रेजी जनैत छी' से अहमन्यता समाप्त भेल।

अस्तु बादमे हमर लिखल 'मीट दी ऑथर'क ओहि साइटेशनक अवलोकन करैत अंग्रेजीक मूर्धन्य विद्वान प्रोफेसर रमाकान्तमिश्र बाबा (पंडित चंद्रनाथ मिश्र 'अमर')क डेरा पर संध्या प्रहरक गोष्ठीमे टिप्पणी कयलथिन 'ई के लिखलक अछि! टकसाली अंग्रेजी छैक।' अपन प्रशंसा सुनि नीक लागल, मुदा वास्तविकता तँ यैह रहैक जे किछु लीखि सकलहुँ वा भाषा, साहित्य आ इतिहासक किछु बोध भेल ओ बाबूजीक आशीर्वादक कारणे। बाबूजी टिनहीकें टकसाली बना दैत छलथिन। हम अंग्रेजी जनैत छी, से

मान्यता बाबूजीसँ हमरा 2014 ई. क नवम्बरमे भेटल जखन आशीर्वाद स्वरूप अपन सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'मैथिली शब्द सञ्चय' अपन हस्ताक्षर, शुभाशंसा आ सन्देश सहित हमरा देने रहथि। देखि अपार हर्ष भेल जे बाबूजी अपन अपात्र संतानकें 'अंगरेजी भाषाभिज्ञ' कहि सम्बोधित कयलथिन। एहि सँ पैघ सम्पति आ आशीर्वाद हमरा सन अपात्र व्यक्ति हेतु आर की भ' सकैत अछि।

ओहि समय हम पिता नहि, अपितु मैथिलीक मूर्धन्य आ शीर्षस्थ विद्वान साहित्यकार पर लिखबाक उपक्रम कयने छलहुँ। डेढ़ दशकक बाद पुनः हमरा आदेश भेटल अछि जे बाबूजी पर किछु लिखी। साल 2006 मे हमर ओ लिखल एकटा साहित्यकारक प्रशस्ति छल, शब्द, शैली आ भाव दुहु प्रफुल्लित। आइ बाबूजी पर की लिखी, कोना लिखी, से अबूह बुझा रहल अछि। कण्ठ आ कलम दुहु अवरुद्ध अछि, शब्द मौला चुकल अछि। ताहि समय प्रफुल्लित भ' लिखने रही आ आइ शोकसंतप्त भ' लिखबाक प्रयत्न क' रहल छी। दुरूह आ अबूह एहि कारणें सेहो जे आब के हमर वर्तनी आ शैली पर कलम चलाओत। के कहत जे की लिखी आ कोना लिखी।

2020 आ 2021 हमर जीवनक सर्वाधिक दुर्भाग्यपूर्ण काल रहल। 2020 ई. क 23 दिसम्बरक दिन हमर माँ डॉ योगमाया झा अनन्तयात्रा हेतु प्रस्थान क' गेलीह। माँक निधनक दू दिन पूर्वहि हम गामसँ राँची घुरल रही। 2008 मे रोगग्रस्त भेलाक उपरान्त बाबूजीक वाक् किंचित अवरुद्ध भ' गेलन्हि। वस्तुतः बाबूजीकें एतेक साल माँ जिया कें रखने रहथिन। माँक निधनसँ बाबूजीक हृदय पर की आघात भेल हेतनि, ओहि वेदनाक क्षणकें जीवनपर्यन्त बिसरब असम्भव थिक। जखन दिसम्बर 24क दुपहरिमे माँ आँगनसँ सदाक लेल 'काँचहि बाँसक बनल खटोला' पर विदा भेलीह तँ गंगा यमुनाक धार जेना बहैत नोरक बीच बाबूजी माँकें सम्बोधित के एकेटा शब्द बजलाह 'ओ दूर के मुसाफिर हमको भी साथ ले ले रे, हम रह गए अकेले।'

एहि मर्मान्तक पीड़ाकें सहैत सभकें सम्हारैत माँक श्राद्धकर्मक व्यवस्था सुनिश्चित क' हुनक एकादशाहक दिन बाबूजी स्वयं गम्भीर रूपसँ दुखित पड़ि गेलाह। हॉस्पिटलमे भर्ती कराओल गेलाह। स्वास्थ्यमे सुधार भेलनि, घर आपस अयलाह। हम सभ सपरिवार हुनका स्वस्थ करबाक हेतु जी-जानसँ सेवामे लागल रही। मुदा बाबूजी तँ घर घुरल रहथि जयबाक लेल। 18 मार्च 2021 कें बाबूजी सेहो सभकें कनैत छोड़ि चल गेलाह। मन पड़ैत अछि जे 17 मार्चक संध्याकाल पण्डित भवनाथझा पटनासँ फोन कयने छलाह। बाबूजीसँ मैथिली वर्तनीक विषयक किछु शंकाक समाधान चाहैत छलाह। हम हुनक मैसेज सेहो बाबूजीकें पढ़ि सुनेलियनि। रुग्ण आ कमजोर रहलाहक बादो बाबूजी हुनक जिज्ञासाक उत्तर देने रहथिन। भवनाथझाकें किछु आरो पुछबाक अभिलाषा रहनि तें मन्द स्वरमे बाबूजी बजने रहथिन 'भवनाथझाकें कहबनि जे ओ स्वयं पण्डित व्यक्ति छथि, साकांक्ष आ गम्भीर लोक छथि, हुनक हाथ के पकड़त। आब आगू जे गोटे छथि से मैथिलीकें आगू बढ़ाबथि। बहुत किछु नियारने रही जे लिखब।'

ई सुनि हम अवाक आ भयाक्रान्त भ' उठलहुँ। एक मास पूर्वहि अपन भूमिका सभक प्रकाशनक चर्चा कयने रहथिन। माँक निधनक पश्चात बाबूजी ज्येष्ठ नातिन

उपमा शिल्पीकें निर्देशित कयलथिन जे घरक सभ बच्चा सँ कहि माँ पर संस्मरण लिखाय ओकर प्रकाशनक व्यवस्था करी। बाबूजीक स्वास्थ्य कतबो खराब रहनि मुदा जखने साहित्यक चर्चा प्रारम्भ हुए ओ लगले उठि बैसथि। आ साहित्य चर्चामे ततबे निमग्न भ' जाइत छलाह जे औधषि पथ्य परहेज सभ साहित्य चर्चाक मध्य बिसरि जाइत छलाह। माँ कखनो काल कहैत छलीह अहाँक बाबूजीक प्राण तँ पुस्तक आ साहित्यमे बसल छन्हि। ई जीवनमे यैह अर्जित कयलनि।' हजारो अलभ्य पुस्तक, प्राचीन पाण्डुलिपि, ऐतिहासिक दस्तावेज, पुरान अखबार आ कतेक रास महत्वपूर्ण सामग्री, बाबूजी की सभ नहि संगृहीत कयने रहथि। जतबे आलमारी, बाकस आ सन्दूकमे सैंतल राखल ओहि सँ कतेक गुणा हुनक स्मृतिमे सुरक्षित। माँ कहैत छलीह जे 'बाबूजी ततबे समृद्ध पुस्तकालय बनौने छथि जे अहाँ सभकें रिसर्चक दोसर ठाम नहि जाय पड़त।' माँ तँ स्वयं लोकगाथा आ लोकगीतक स्टोर हाउस छलीह। बाबूजी आ माँक हस्तलिखित दर्जनो अप्रकाशित पांडुलिपि हुनका सिरहाना मे राखल हुनक अंतिम यात्राक साक्षी रहल।

आब ककरा सँ पुछबै? माँक पाछाँ-पाछाँ बाबूजी चल गेलाह आ दुनू गोटेक शोकमे बाबा (मातामह) पण्डित चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' सेहो साल 2021क 1 अप्रैल के साँझ मे दिवंगत भ' गेलाह। गामक प्रति हमर मोह मुख्यतः हिनके सभक कारण रहल छल। परंपरा, विद्वता आ शिष्टताक पुरोधा चलि गेलाह। शून्यमे कखनो सोचैत छी तँ आभास होइत अछि जे तीनू गोटे नियारि लेने छलाह जे आब विदा हेबाक समय आबि गेल। 2020 ई. क 15 नवम्बरक दिन जखन एक सालक राँची प्रवासक बाद माँ-बाबूजी दरभंगा वापस अयलाह तँ अगिले दिन दुनू गोटे बाबाक दर्शन करबाक हेतु मिश्रटोला गेल रहथिन। बाबा सेहो साल भरिसँ दुनू गोटेसँ भेंट करबाक हेतु बेकल रहथिन। ओ हुनका सभक अन्तिम भेंट छल। बाबा प्रतिदिन संध्याकाल पाँच बजे माँ आ बाबूजी कें फोन करैत रहथिन।

2006मे हम आजीविकाक क्रममे दरभंगा छोड़ि देल। मुदा हम गामसँ बेसी दूर नहि राँचीमे आजीविका हेतु रहि गेलहुँ। जखन पलखति भेटल गाम घूमि अबैत छलहुँ। जाड़क महिनामे माँ बाबूजी राँची प्रवास पर अबैत छलाह आ हम साल भरि हुनक आगमनक प्रतीक्षा करैत रहैत छलहुँ।

किछु साल पूर्व बाबूजीक एकटा प्रसंगक बादे मैथिलीक बहुमूल्य साहित्य, पत्र पत्रिका सभकें डिजिटल रूपमे सुरक्षित करबाक अभियान प्रारम्भ कयलहुँ। बाबूजीक लिखल एकगोट महत्वपूर्ण शोधग्रन्थ 'मैथिली शैव साहित्य' (1979 ई.मे मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित) बाबूजीक जानकारी आ आज्ञाक बिना राँची आनि लेने रहियै आ ओमहर गाम पर बाबूजी ओहि पुस्तककें ताकि रहल छलाह। राँचीमे जखन ओ पुस्तक हमर रैकमे देखलथिन तँ चौंकि उठलाह—'ई पुस्तक अहाँ ल' अनलियै!' हमहुँ अकचका गेलहुँ जे हम गामसँ बाबूजीक संग्रहसँ कतेको पुस्तक उठा क' आनल मुदा एहन प्रतिक्रिया कखनो बाबूजी नहि देने छलाह तखन एहि पुस्तक पर किएक? हमहुँ कने असहज भ' गेल रही तैं बाबूजी चुप भ' गेलाह। फेर कहलनि—'पुस्तक तँ पढ़बाक

लेल होइत छैक, सभटा अहीं सभक अछि आ अहाँ एतेक नीक जकाँ पुस्तक सुरक्षित रखैत छी, सेहो प्रशंसनीय। मुदा एहि पुस्तकक एकहि कॉपी आब हमरा लग अछि तैं हम एना पूछल।' हम सोचय लगलहुँ जे बाबूजी लेखक छथि मुदा ओहि पुस्तक के दोसर प्रति हुनका लग नहि छनि। मनहि मन नेयार कयलहुँ जे एहि पुस्तकक अतिरिक्त प्रति मँगाय बाबूजीकें देबनि।

ओहि राति बाबूजी कहलनि जे अहाँ 'मैथिली शैव साहित्य' सम्पूर्ण पुस्तकक फोटो उतारि ओकर प्रिंट उपलब्ध करबा दी तँ इहो पुस्तक सुरक्षित रहि जेतै। जेना हमरा बुझायल जे बाबूजी हमरासँ किछु विशेष कारणे आग्रह क' रहल छथि। एहि आग्रहक पाछाँक मर्म बादमे बुझलियैक। 'मैथिली शैव साहित्य' छपलाक किछु समयक बादे अलभ्य भ' गेलैक, किछुए पुस्तक विक्रय केन्द्र तक पहुँचि पाओल। बहुसंख्य पुस्तक बोरामे कसि अकादमीक ऑफिसक कोनो पवित्र स्थान पर राखि देल गेल हेतै जे कालक्रममे सड़ि गेलैक। ओहि पुस्तकक आवरण पृष्ठ पर भगवान शिवक चित्र सुशोभित छनि, जनिक जटासँ गंगा निकसि रहल छथिन। की ओहि कारणे पुस्तक भीजि गेलैक! एहि विषय पर एतबहि। मुदा हम तँ संकल्पित भ' बाबूजीक इच्छाक अनुरूप ओहि पुस्तकक डिजिटल संस्करण आ प्रिंट रूपमे उपलब्ध कराय एहि डिजिटल आन्दोलनक प्रारम्भ कयलहुँ। संभवतः किछु गोटे कें ई नीक नहि लागल हेतनि। मुदा यथासंभव सैकड़ो पुस्तक, पत्र-पत्रिका स्कैन कयल। दुर्भाग्यवश, वायरस अटैकक कारण अधिकांश नष्ट भ' गेल। बाद मे करप्ट भेल किछु फाइल कें बचा सकलहुँ।

बाबूजी इनसाइक्लोपीडिया आ बिबलियोग्राफर छलाह। सदिखन पढ़िते देखलियनि। रांची प्रवासक क्रम मे बाबूजी बहुत रास पुस्तक अनैत छलाह। दिन भरि लिखथि। हुनकासँ भेंट करबाक हेतु लोकक सतत आबरजात रहैत छल। माँकें कखनो काल अनिद्राक समस्या भ' जाइत छलन्हि। तें बेरूपहरमे माँ यदि सुतबाक उपक्रम करैत छलीह तँ बाबूजीकें देखियनि ओ खिड़कीसँ अबैत मद्धिम प्रकाशमे लीखि रहल छथि, पढ़ि रहल छथि। 'बाबूजी अन्हारमे किएक पढ़ैत छी हम टेबुल लैंप लगा दैत छी', तँ कहथि 'माँ जागि जेतीह सुतय दियौन।' आ माँ सेहो जगबाक कोनो प्रसंग वा बहाना ताकि रहल होथि, कहि उठथि, 'हम की सुतल छलहुँ! आँखि मुनने रही अहाँ सभक गप सुनैत रही।' माँ जागि जाथि तकर बाद एखन धरि तक की लिखल पढ़ल तकर चर्चा प्रारम्भ होइक।

माँ बाबूजीक राँची प्रवासक सर्वाधिक दीर्घकाल, कुल एक साल, 2019 ई. - 2020 ई.मे रहलनि। हम ब्रिटेनक इंडिया ऑफिस लायब्रेरीसँ कतिपय दस्तावेज, पत्राचार, गजटपत्र इत्यादि मँगौने रही जाहिमे मिथिलाक इतिहास-भूगोल, पांडित्य परम्परा, मैथिली साहित्यसँ सम्बंधित अति महत्वपूर्ण सूचना सभ देखबामे अबैत अछि। ई सभ दस्तावेज एहि कारणे एकत्र कयने छलहुँ जे संयोग भेटत तँ हमहुँ किछु लिखब, संगहि बाबूजी कें अवलोकनार्थ देबनि, एकर मूल्य आ महत्व वैह बुझि सकैत छथिन।

राँची अबिते देरी बाबूजीक समक्ष ओ सभ दस्तावेज राखि देलियनि। एकटा दोसरो स्वार्थ छल जे बाबूजी एहि कागजपत्रमे ओझरा जाथि आ दरभंगा वापसीक टिकट हेतु

तगादा नहि करथि। ता धरि कोरोना महामारी आबि गेलैक आ जीवन ठमकि गेलैक। एक सवा मासक अवधि मे बाबूजी सम्पूर्ण दस्तावेजकें क्रमशः पढ़ि गेलथिन। ओहि सैकड़ो दस्तावेजमेसँ मैथिली आ संस्कृत साहित्यक संग मिथिलाक इतिहासक विषयमे कतेको नवीन तथ्यकें डायरीमे नोट करैत देखियनि। मैथिली साहित्यक इतिहासमे कतेको त्रुटिपूर्ण धारणा चलि आबि रहल अछि आ कतेको व्यक्तिक अवदानक चर्चा नहि भ' सकलैक अछि। एहिना एक दिन ओहि दस्तावेजकें पढ़ैत बाबूजी चौंकैत बाजि उठलाह 'जाहि विन्दु पर हमरा पछिला कतेको दशकसँ शंका छल, तकर प्रमाण आइ भेटि गेल, कतेको ठाम ने तकने रहियै। आब नवीन रूपसँ एहि पर लिखल जा सकैत छैक।'

ओ सूचना छल जीवन झाक जीवन आ साहित्यसँ सम्बंधित। साहित्य अकादेमी द्वारा सद्यः प्रकाशित जीवन झा पर केन्द्रित मनोग्राफक प्रूफ बाबूजी रांचीमे देखने छलाह। सवा सय साल सँ बेसी पुरान भ' चुकल ओहि दस्तावेजक फूटनोटमे महीन अक्षर मे छपल सूचना जकर इंक भखरि गेल छैक से बाबूजीक नजरि सँ बचि नहि सकल। ओहि दस्तावेजक ढेरी मे सँ बाबूजी जीवन झा आ अन्यान्य पर कतेको नवीन सूचना एकत्रित केने छलथिन। ओहि दस्तावेज मे कतहु महीन अक्षरमे अंकित रहैक जे जीवन शर्मा द्वारा रचित नाटक 'सुन्दर संयोग'क प्रथम प्रकाशन 1892 ई. मे भेल। ई एखन धरिक स्थापित मान्यताक, विपरीत अछि जे 'सुंदर संयोग'क प्रथम प्रकाशन 1904 ई. मे भेल छल। पुनः जीवन झाक दानाध्यक्ष पदक सम्बन्धमे कतेको नवीन सूचना ओहि दस्तावेज मे सँ ताकि बाबूजी मोनोग्राफमे समायोजित कयलथिन।

अनायासे बजा गेल, 'लिखबै तँ हमरो एकनॉलेज करबै!' पुत्रक एहि जिज्ञासाक उत्तर पिता नहि, अपितु मैथिलीक स्वनामधन्य विद्वान देने रहथिन, 'स्रोत कें उद्धृत करब शोधक विश्वसनीयताक हेतु आवश्यक थिकैक, जाहि व्यक्तिसँ सूचना भेटल हो आ सूचना संकलनमे सहयोग भेटल हो, ओहि व्यक्तिकें एकनॉलेज करब कर्तव्य थिक।'

बाबूजी द्वारा एहि मोनोग्राफ मे हमर नाम उद्धृत करब हमरा लेल सबसँ पैघ धन, सबसँ पैघ पारितोषिक। जीवन झाक सम्बन्धमे किछु आरो सूचना एकत्र करबाक हेतु बाबूजी एक विद्वान पंजीकार सँ संपर्क कयने रहथिन। किछु दस्तावेज सेहो उधेसल गेल रहैक मुदा...एहि अकादमिक प्रसंगक साक्षी माँ आ बाबूजी आब एहि लोकमे नहि छथि। चर्चाक क्रममे बाबूजी सँ रिसर्च मेथोडोलॉजी पर अपन अनुभव, अध्ययन आ महत्वपूर्ण बुझबाक स्वर्णिम अवसर भेटल। बेसी काल डायरीमे लीखि नोट लीखि लैत रही।

'अहुँ किछु शोधपरक लीखू जे पठनीय हो। एहन किछु लिखी जकर स्थायी महत्व हो। एतेक विषय आ सामग्री सभ पसरल अछि जाहि पर लीखि सकैत छी,' बाबूजी हमरो सतत लिखबाक हेतु प्रेरित करैत रहैत छलाह। लिखबाक हेतु बहुत रास विषय सेहो देने छलाह। राँची प्रवासक क्रममे एहिना एकदिन माँ रोष करैत बाजि उठलीह 'बाबूजीक आशीर्वाद आ मार्गदर्शन मे सैकड़ो लोक विद्वान आ साहित्यकार बनि गेलाह। मुदा बाबूजीक मार्गदर्शनमे किछु लिखब से अहाँकें ने पलखति अछि आ ने अवगति।' ई सुनि ग्लानि भेल आ ज्ञान सेहो खूजल। बाबूजीक दिशानिर्देशनमे हमहुँ किछु लिखब प्रारम्भ कयल। विषय तेहन छल जाहिमे 1890 ई. से 2000 ई. पर्यन्त धरि मैथिली

साहित्य, साहित्यकार, पत्रकारिता, मैथिलीक आन्दोलन आ समकालीन मिथिलाक इतिहास समाहित छल। प्रतिदिन पढ़ैत छलहुँ फेर बाबूजी डिक्टेशन देथि। एना बुझाइत छल एहन किछु नहि छैक जे बाबूजीक नजरि आ अध्ययनसँ बचि गेल हो। मैथिली पत्रकारिताक अध्याय लिखब प्रारम्भ कयल तँ बाबूजी कहलनि जे 'अहाँ स्वयं पत्रकार छी तें एहि विषय पर अपने लिखू। ओहि अध्यायक संग अन्यान्य अध्याय सेहो लिखल मुदा नहि बूझि सकलियै जे बाबूजी अपन प्रस्थानक संकेत दैत कहि रहल छथि जे 'हम कलम धरा देलहुँ, आब लिखू'। हमर शोध आधा छोड़ि बाबूजी चल गेलाह। बाबूजीक लिखाओल ओहि वृहद् ग्रन्थक प्रकाशनक संयोग हमरा नहि भेटि सकल अछि।

बाबूजी सन व्यक्तित्व आ विद्वता प्राप्त करब सहज नहि। ई कठिन तपस्या, असीम धैर्यक धारण आ धर्म-मर्यादाक पालन कयने बिनु संभव नहि। ओहि विषय पर लिखब हमर अधिकार क्षेत्रसँ बाहर अछि। एतबे कहि सकैत छी जे परिवार, समाज बा साहित्यमे यदि कियो व्यक्ति हुनका सँ असंतुष्ट भेल होथि तँ एहन असंतुष्ट एवं उपालंभ प्रवृतिक व्यक्ति कें भगवानो संतुष्ट नहि क' सकैत छथिन ओना तँ ईश्वरो आक्षेप सँ बाँचल नहि छथि।

बाबूजी लेल हुनक सभ संतान बराबर छल मुदा छह भाय बहिनमे छोट हेबाक कारणे माँ-बाबूजीक स्नेह आ दुलार हमरा किछु बेसी भेटल। संतान हेतु चिन्ता स्वाभाविके, मुदा हमरा लेल कनेक बेसिये चिन्ता रहैत छलन्हि।

कोरोना कालमे अखबारक नोकरी छूटि गेल, व्यग्र आ चिंतित रही। बाबूजी हमरहि संग राँचीमे छलाह। हमरा चिन्तित देखि बाबूजी कहलनि 'हम छी ने। हमरा अछैत अहाँ चिन्ता जुनि करू। जा धरि नव ठाम व्यवस्था नहि हो हम अहाँक पालन पोषण करब, अहाँ हमर सन्तान छी।' ई सुनिते देरी हमर सभ चिन्ता विलीन भ' गेल। जीवनक कतेको प्रतिकूल परिस्थितिमे बाबूजीक 'हम छी ने' कहब हमरा लड़बाक साहस देने छल। बाबूजी प्रतिकूल परिस्थिति आ समस्याक समक्ष पहाड़ जकाँ ठाढ़ भ' जाइत छलाह।

साल भरिक राँची प्रवासक पश्चात माँ बाबूजी गाम घुरलाह। हुनका सभकें छोड़ि राँची घुरबाक हमरो इच्छा नहि छल। मुदा आजीविका हेतु घर छोड़ब बाध्यता छल। माँ एकाएक रुग्ण भ' गेल रहथि। 20 दिसम्बर 2020 क दिन हम गाम छोड़ल। बाबूजी बाहर अरियातय हेतु अयलाह। आँखि नोरायल रहनि, मुट्ठीमे मोड़ने दस हजार टाका हमर जेबीमे राखि विस्वल भ' कहि उठलाह 'हम छी ने, अहाँक पिता एखन जीवित छथि'। एकाएक बाबूजीक कतेको लिखल आ हुनकासँ सुनल कथाक प्लॉट हमर आँखिक समक्ष नाचि उठल। जेना बुझायल हमहुँ एहने एकटा कथाक पात्र बनि गेल छी। अगिला बहत्तरि घण्टामे भयंकर प्रलय एलैक। माँ विदा भ' गेलीह। जीवनक भीषण आघातसँ बाबूजी आ हम सभ लड़ि रहल छलहुँ। निरीह, लाचार, दग्ध आ आत्मबलसँ हीन भ' चुकल हम सभ बाबूजी दिस कातर नेत्रसँ देखल करी जे ओ कहताह 'हम छी ने।'

एखनो जखन मोन व्यग्र होइत अछि, वितृष्णाक भाव घेरैत अछि तँ अनायास आभास होइत अछि जे बाबूजी कहि रहल छथि 'हम छी ने'।

मो. 7717760438



विविधा

एहि बेर विविधाक अंतर्गत लेखक शोभाकांत बाबा यात्री नागार्जुनक लंका-यात्रा, भिक्षु बनबाक प्रक्रिया-कथा, कोनो अमूल्य आ विशिष्ट पयबाक लेल बाबाक संघर्ष कथाकें बिटिया क' पकड़ने छथि आ हुनक जीवनक उतार-चढ़ावकें अद्‌भुत ढंगें बखानैत छथि। एहि बखानमे तीव्र संघर्ष, जीवनक कंटकाकीर्ण मार्ग देखाइत अछि आ एहि सभसँ अपन मेधा, अपन विलक्षणतासँ उबरैत बाबाक गर्वोन्नत चेहरा सेहो देखाइत अछि। आइ ई सब पढ़ैत चकित होइत छी, जे हमरा सबहक बाबा कोन धरानियें एक विरल रचनाकर्मीक धर्मकें निबाहि एक विशाल आ बहुआयामी व्यक्तित्वक रूपमे सोझाँ ठाढ छथि। शोभाकांत जखन अपन अध्ययन, अनुभव आ संवेदनाकें शब्दमे साकार करैत छथि, तँ हुनक महत्वपूर्ण लेखकक छवि उभरि क' सोझाँ अबैत अछि।

पुरजन-परिजनकें छोड़ि-छाड़ि

शोभाकांत

एकटा कहबी छै—'जे रोगीकें भावे, से वैदा फरमावे'। भिक्खु नागार्जुन संग एहिना भेलनि। राहुल सांकृत्यायनक नेतृत्वमे बिहारसँ किछु गोटेक एकटा दल तिब्बत जा बौद्ध साहित्यकें खोज-बीनमे जाय बला छल। भिक्खु नागार्जुन सेहो ओहिमे लेल गेल छलाह। हुनका मई 1938 ई.क पहिल सप्ताहक मध्य धरि राहुलजी लग कलिपोंङ (भारत) पहुँचबाक लेल कहल गेल छलनि। एहि बातक सूचना विद्यालंकार परिवेण (लंका)मे द' देल गेल छल। एहि ल' क' ओतए ओ चर्चामे छलाह।

वैद्यनाथ मिश्र नामक 'दंबदिउ ब्राह्मण पंडितुमा' (जंबुद्वीपीय ब्राह्मण पंडित)कें बौद्ध बनला बेशी दिन नहि भेल छल। मुश्किलसँ सोलह मासे तँ भेल छलनि काषाय वस्त्र धारण कैना आ विदा हेबाक नोत पड़ि गेलनि। भिक्खु बनलासँ किछु मास पूर्व ओ उज्जर लुंगी आ हाफ कमीज वला दक्षिण भारतीय वेश-भूषामे छलाह ओहिठाम। परिवेणक सब छात्र प्राध्यापक प्रायः भिक्खुए छलाह। आंगुर पर गनय जोगर छल जिनकर वस्त्र काषाय नहि छल। मुदा सब छलाह बौद्धे।

भिक्खु नागार्जुन ई कहाँ सोचने छलाह जे एतेक जल्दीये एतहुसँ जाय पड़त। 'यात्री' नाम तँ अपन अर्थ सार्थक करबे करत ने! लगभग दू वर्ष धरि चलला पर एत' आबि क' एक ठहराव भेटल छलनि। दरभंगाक तरौनी गाम जे भारतक उत्तरमे नेपालक सीमासँ पैंतीस-चालीस मील दक्षिणमे अछि आ ओत'सँ हजारो कोस दूर समुद्र पार क' लंका आबि गेल छलाह। 1934 ई.क दशमीक यात्रा दिन गाम छोड़ने रहथि आ सितंबर 1936 ई.मे एहिठाम आएल रहथि। देशक पैघ भू-भाग लंघने रहथि समुद्रमे प्रवेश करबासँ पहिने। संस्कृत, प्राकृत, हिंदी, मैथिली आ संगमे अंग्रेजी आ बंगलाक कामचलाऊ ज्ञान ल' क' वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' बनल रहथि।

रूढ़िवादी ब्राह्मणीय संस्कारक ढब-रंग कें मलिन करबामे बेशी समय नहि लगलनि। मिथिलाक विभिन्न गाममे रहबाक कारण किछु रंग धोखरल आ फेर काशीक गली-कुच्चीक चक्कर-समयक संग रंग धोखड़ैत गेलनि। जे किछु शेष बचल छल से कलकत्ता, सहारनपुर, पटियाला, लाहौर, अबोहर आदिमे धुरा फँकैत झरैत गेल। विभिन्न जगह, अलग-अलग महौल आ सब तरहक स्थिति-परिस्थितिमे गुजर-बसर करैत करबाक बाध्यता नव-नव तरहक शक्ति दैत रहल। विद्यालंकारपरिवेणमे जखन व्यवस्थित भेलाह तँ मोन पड़लनि अपने लिखल पांती—'मानव होकर मानव के ही चरणों में मैं रोया/दिन बागों में बिता रात को पक्की पटरी पर मैं सोया/कभी घुमक्कर यार-दोस्त से मिलकर, कभी अकेले/एक-एक दाने की खातिर सौ-सौ पापड़ बेले...' लंकामे कोना चिंता-फिकिर नहि, तँ लगलनि पढ़ाइ-लिखाइक लेल निर्धनता वा गरीबी कोनो पैघ समस्या नहि। ओ तार बेर-बेर मोन पड़नि जे काशी प्रसाद जायसवाल विद्यालंकार परिवेणक मैनेजिंग कमिटीक चेयरमैन सर जयतिलके के नाम पठौने रहथिन—'प्लीज एडमिट संस्कृत पंडित फ्राम मिथिला नेम वैद्यनाथ मिश्र...' एहि तारकें आबएसँ पहिने कतेक तरहक पापड़ बेलए पड़लनि हुनका...।

संस्कृतक ज्ञान एतहु काज एलनि। शास्त्रीक बादे एकटा मामा कहने रहथिन—'चलू कलकत्ता। ओत' किछु कमाइ हेबे करत तँ बापोकें पठा सकैत छी आ अपने आरामसँ रहब...' कलकत्ता चल गेलाह मामक परिवार संगे। ओतुका गवर्नमेंट संस्कृत कालेज में 'काव्यतीर्थ' करबा लेल नामांकन करा लेलनि। मामा कहबो केलखिन जे 'व्याकरण तीर्थ' ठीक रहित' किए तँ व्याकरण शास्त्रकें 'पंडित पछाड़' विद्या कहल जाइत छैक। एहि बातकें वैद्यनाथ एक काने सुनि दोसर कानसँ निकालि देलखिन। कालेजमे छात्रवृतिक हेतु छात्र सबमेसँ चयन हेबाक हेतु परीक्षा छलैक। कालेज प्रिंसिपल ल'क' पैरवी परिचय आवश्यक बुझबा गेलनि। ओहि कालेजक प्रिंसिपल बाघा प्रिंसिपल नामे नामी छलाह। सोचि विचारलाक बाद एक आवेदन लिखलनि संस्कृतमे उपजाति छंदमे। प्रिंसिपलक पुरबिया (भोजपुरिया) दरबानक हाथमे चारि आना दैत अनुरोध केलखिन जे अर्जी प्रिंसिपल साहेबक हाथेमे देबाक लेल। मुदा एकटा गड़बड़ी भ' गेलनि जे जल्दीबाजीमे प्रिंसिपलक आफिसक बरामदामे लिखल आवेदन स्वयं पढ़लनि आ प्रसन्न भेलाह मुदा अपन नाम नीचामे लिखनाइये छूटि गेलनि किएक तँ दरबान सामने हड़बड़बैत रहनि।

आवेदन पढ़ितहि प्रिंसिपल साहेब चमत्कृत होइत परीक्षा कक्षमे पहुँचि गेलाह। एक हाथमे आवेदन पत्र आ दोसर हाथे एक-एक छात्रक कापी उल्टा-पुल्टा क' देखए लगलाह। वैद्यनाथक कापी उनटाबैत चिकरि उठलाह—'एइ धोरा गेलो...' आ छात्रवृत्ति भेटि गेलनि। आ संगे-संग बेल्जियमक एक साहेब आ ओकर मेमकें संस्कृत पढ़बइक भार सेहो हप्ता-दस दिनक भीतरे। पाँच रुपया प्रति मास गाम पठैबाक निर्णय क' लेलनि। पत्नी अपराजिता तरौनीमे रहथिन जखन ओ कलकत्तामे रहथि। का चिंता मम जीवनेक प्रतीक पिता गोकुल मिश्रक लेल तरौनी रहनाइ आ नइ रहनाइ एक छल। वैद्यनाथक ससुर संपन्न गृहस्थ छलथिन। ताहि कारणे ओ जमायकें अपराजिताक चिंतासँ मुक्त जकाँ केने रहथिन। तइयो अपन जिम्मेवारी तँ वैद्यनाथ नीक जकाँ बुझि रहल छलाह। कोने तरहें गाड़ी पटरी पर चलि रहल छल। वेल्जियम साहेब आ ओकर मेमकें अंग्रेजीक सहारे संस्कृत पढ़बय पड़ैत छलनि तें अंग्रेजीकें ठीक ठाक करबाक कोशिश क' रहल छलाह। छात्र संतुष्ट जकाँ बुझबामे अबनि।

'काव्यतीर्थ' वला परीक्षा भ' रहल छलनि, ताहि बीच 'अमृत बाजार पत्रिका'मे एकटा विज्ञापन पर नजरि गेलनि। विज्ञापनक अनुसार सहारनपुरक एकटा इंटर कालेजक प्रिंसिपलकें प्राकृत आ संस्कृत जननिहार एकटा लोकक जरूरत छलैक। बढ़िया दरमाहाक संग आवासीय सुविधा देबाक बात सेहो कहल गेल छल।

प्रथमाक बादेसँ एक गामसँ दोसर गाम आ अनेक जगहक चक्कर लगबैत-लगबैत काशीमे वैद्यनाथ मिश्र कवि भेलाह तँ नाममे लागल (विद्यार्थी) अर्थात् वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यार्थी'। मुदा किछु दिनक बाद सोचलनि, जिनगी भरि 'विद्यार्थी' लोक कहत तँ विद्यार्थीक जगह लागल 'वैदेह'। ओहि आस-पासमे रवींद्रनाथ ठाकुरक 'जनगण मन, अधिनायक जय हे'क पांती 'अभ्युदय बंधुर पंथा, युग-युग धावित यात्री/तुमि चिर सारथि, तब रथ चक्रे मुखरित पथ दिन-रात्रि...' तँ यात्री शब्द मोन-मिजाज पर तेना ने चढ़ल जे भ'गेलाह वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'...सहारनपुर वला विज्ञापन देखबाक काल ई सब बात मोन पड़ए लगलनि आब आवेदन पत्र पठा देलखिन। आ, ओतएसँ जल्दिये मार्गव्यय लेल मनिआर्डर आबि गेलइ। ओम्हर बेल्जियम वला दुनू प्राणी वैद्यनाथकें अपना संगे अपन देश ल' जेबाक योजना बनबैत छल। आ, मामा-मामी सेहो गोरकी मेमकें ल'क' बड़ किछु कहै-सुनै छलखिन। परिणामस्वरूप वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' गया-मुगलसराय-इलाहाबाद-लखनऊ होइत सहारनपुरक लेल विदा भ' गेलाह...।

वैद्यनाथ झोरा-झपटाकें सहारनपुर स्टेशनक करीबक एकटा धर्मशालामे रखलनि। यात्राक थकान आ कि झमारनकें छोड़ि-छाड़ि जा पहुँचलाह विज्ञापनमे देल गेल पता पर। ओतए एकटा बढ़ियाँ सन छोट-छीन मकान छल। बाहर पैघसन बरामदा। पहुँचलाह तँ

बरामदा पर बहरेलखिन एकटा प्रौढ़ बंगाली महिला, सब बात सुनि लगलीह जोरसँ बाजए—'अहूँ हमर पतिक पागलपनमे आबि क' फँसि गेलहुँ।' फेर डाँटक स्वरमे बजलीह—'सब पाइ-कौड़ी किताब आ पढ़ाइक शौकमे फूकि रहल अछि। नहि रह' देब, भागि जाउ, भागू...' आ ने जानि कतेक फज्झति केलकनि। सुनि क' स्तब्ध भ' गेलाह। धर्मशाला वापस भ' गेलाह। साँझ धरि इतस्त:मे पड़ल रहलाह। सोचलनि जे जँ सहारनपुर आबि गेलहुँ तँ किएक नहि प्रसिद्ध साहित्यकार कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकरसँ भेंट क' ली! ओ बड़ आत्मीय भ'क' गप-शप केलखिन ओ आ फेर ओहि बंगाली लग नहि जेबाक राय देलखिन। कहलखिन—'जखन कलकत्तासँ एतेक दूर आबि गेल छी तँ पाँच-दस दिन इम्हरो घूमि-फिरि लिअ। कने इम्हरको हवा लगाउ...वापस जेबाक कोन हड़बड़ी?' ई विचार वैद्यनाथक यात्रीक मोनकें बड़ नीक लगलनि।

अपरिचित स्थानमे मित्रता आ परिचय करबामे वैद्यनाथकें बड़ नीक लगैत छलनि। राय-विचारक क्रममे मोन बनलनि जे आब कलकत्ता की जायब। लगबो करनि जे कलकत्ता जायब उचित नहि। हुनकर नियति यैह रहनि जे जाहि जगहकें छोड़थि फेर ओहि जगह जाक' ओहिना पुरने ढब जकाँ नहि रहैत छथि। सहारनपुरमे कतेको समवयस्क सबसँ परिचय भेलनि। साहित्य आ समकालीन परिस्थिति पर बातचीतक क्रममे ओतुका भूतेश्वर आश्रमक संचालक जगन्नाथ शास्त्रीक चर्चा भेलै। उड़ीसाक मूल निवासी शास्त्री जी नीक विद्वान छलाह। पारंपरिक विद्या आ साहित्यक संग दर्शनशास्त्रक गंभीर अध्येता रहथि ओ। मैथिल पंडित सबकें खूब मानथिन। भेंट केलखिन। वैद्यनाथक संस्कृत ज्ञानसँ ओ प्रभावित भेलाह आ अपन आश्रममे हुनका रहबाक व्यवस्था केलखिन। काज भेटलनि किछु छात्रकें संस्कृत पढ़ैबाक जे 'शास्त्री' स्तरक परीक्षामे बैसि सकय। कोनो गप्पक क्रममे पटियाला स्टेटक द्वारपंडित महामहोपाध्याय मुकुंद झा बक्शीक चर्चा सेहो भेल। वैद्यनाथक सासुर हरिपुरबक्शी टोल (जिला मधुबनी)क प्रख्यात पंडित मुकुंद झा बक्शी अपन गौँआ कृष्णकांत झा उर्फ कंटीर बाबूक एहि जमायकें बड़ बेशी मानैत रहथिन। सासुरमे हुनकासँ भेंट भेलाक पहिने काशीमे हुनका संबंधमे बड़-किछु सुनने रहथि। जखन विवाह भेल छल तँ ककरोसँ ज्ञात भेलनि पंडितजीकें कंटीर बाबूकें नीक आ सुयोग्य जमाय भेटि गेल छनि। तँ बक्शीजीक मोनमे भेलनि जे एहि जमायकें कने पूछि-पाछिक' जाँची। अहुना महामहोपाध्याय जहिया आ जखन गाम आबथि तँ गामक नव-नव जमायसँ अवश्ये भेंट करथि। जे कोनो जमाय सासुरमे मौजूद रहथि पंडितजीक आशीर्वाद लइते रहथि आ आशीर्वादी स्वरूप दूटकही सेहो...भने ओ कोनो जातिक किए ने हो।'

बक्शीजीक चर्चा भेल तँ मोन पड़लनि, जखन पहिल बेर वैद्यनाथ हुनकर चरण स्पर्श

करए गेल रहथि...एक दिन भोरमे पितिऔत सार वैद्यनाथकें महामहोपाध्यायक दलान पर ल' गेलनि। पंडितजी पूजा पर बैसल रहथि। पूजाक बीचहिमे आशीर्वाद लेल हाथ उठौलखिन तँ जमाय पैर छूलकनि। गौरसँ देखैत बाजल रहथिन—'बाउ, अहाँ तँ अपने लोक थिकहुँ.../सुच्चा स्वजन/एकदम भीतरिया...' आ फेर पढ़ाइ ल'क' किछु गप्प केलखिन। वैद्यनाथ बेशी सुनिते रहला। बजलाह कमे। फेर पंडित बजलाह—'अहाँकें चाही/निरंतर एकांत/अविछिन्न एकांत/गंभीर साधनाक निमित्त/चरम संबल होइत छइ—...' फेर किछु क्षण रुकि पंडितजी बजलाह—'बाजू बाउ/कहू ने किछु/ओ नहि मानब हम...हम पूछबे टा करब...' आ वैद्यनाथ दिश नजरि गड़ा क' बजलाह—'अमरकोश तँ पढ़नहि हेबइ ?/हम जे अहाँसँ पूछब/तकर जवाब अमरकोशेमे छइक/अष्टाक्षरी समाधान/हँ, सरिपहुँ आठे अक्षर/अनुष्टुप केर एक चरण मात्र/हँ, बेश!/ कहु तँ बाउ/अन्न ओ फलमे की भेद ?/ओहो फड़इए, इहो फड़इए/तखन धाने फल किए नहि/आम-जामुन अन्न किए नहि/बाजू बाउ किछु बाजू/बाजू बाउ बाजू.../गुम्मी किऐ लाधि लेल ?...' आब तँ एहि तरहक प्रश्न पर नव जमाय वैद्यनाथकें माथ घूमए लगलनि। अन्न आ फलक एहन व्यावर्तक भेद आ परिभाषा आ कि अर्थ कियो एखन धरि नहि बुझौने रहथिन ओकरा। गरमीक भोरेमे पसीना-पसीना भ' गेलाह। प्रश्न पूछलाक बाद महामहोपाध्याय गोमुखीसँ हाथ बहार क' एकटके जमाय दिश देखैत रहलाह। वैद्यनाथक चुप्पी आ माथक सिकुड़ैत बनैत रेखकें देखि पंडितप्रवर बुझि गेलाह जे 'सुयोग्य जमाय'क हालत की भ' रहल छनि। किछु क्षणक बाद बुझब' लगलथिन—उत्पादित फलक पकलाक बादो गाछ-पौध रहि जाइत छै, परंतु अन्न पकलाक बाद ओकर गाछ-पौध सेहो पाकि जाइ छै। मतलब जे धान पाकत तँ गाछ पुआर बनत आ गहुम पाकत तँ गाछ भूस्सा, औषधि फल पाकत... वैद्यनाथकें तखनहि एकाएक मोन पड़लनि—ठीक बात! मुदा हमर नानाक दलान पर इनार छनि आ ओकर कतबइमे चारि टा राहरिक गाछ अछि, तीन वर्षसँ फड़ैत अछि, ओ तँ धान नहि, द्विदल अछि, फल नहि दलहन अछि...' पंडितजी जमाय दिश देखैत हाथ गोमुखीक भीतर ल' गेलाह आ आंगुर तेजीसँ घुमबै लगलाह। हुनकर कपारक रेखा बनैत-बिगड़ैत आ मेटाइत रहल किछु काल धरि, आ फेर बजलाह—'अहाँक दृष्टि बड़ी दूर धरि जाइत अछि। चीज वस्तुकें नीक जकाँ देखैत छी। प्रकृति विडंबनासँ भरल अछि। मुदा राहरिक पहिल खेपक फली पैघ आ दाना वेश पुष्ट रहल हेतैक आ बादक वर्षमे छोट-छोट...' वैद्यनाथ ओहि राहरिक गाछ आ ओकर दानाकें देखने रहथि। ओकर फली साल-दर-साल छोट भेल जाइत रहै। पैर छूबि आ दूटकहीक आशीर्वादी ल'क' वापस भेल रहथि। संगमे जे सार गेल रहथिन ओ प्रसन्न रहथि जे कियो तँ पंडितजीकें चुप करा सकल। बादमे वैद्यनाथक ससुरकें महामहोपाध्याय कहलखिन—'अपन तर्कसँ

जमाय हमरा चुप करा देलनि...बड़ यशस्वी हेताह...' जखन पंडित जगन्नाथ शास्त्री मुकुंद झा बक्शीक चर्चा केलखिन तँ पटियाला जाक' भेंट करबाक मोन भेलनि।

पटियाला गेलाह आ चारि-छह दिन धरि मैथिल पारिवारिक माहौलमे रमल रहलाह। नगरक कैक बेर परिक्रमा केलनि। एक दिन महामहोपाध्याय कहलखिन—जखन इम्हरे रहबाक अछि तँ सहारनपुर किएक रहब ? आ वैद्यनाथकें लाहौर ल'जाक' आर्यसमाजी विद्यालयमे संस्कृत पढ़ैबाक काजमे लगा देलखिन आ हरिकृष्ण प्रेमी, माधवजी, उदयशंकर भट्ट आदि अनेक साहित्यकार आ साहित्यसेवी सबसँ परिचय करबा देलखिन। लाहौर रहए लगलाह। 'विश्वबंधु'मे 'राम के प्रति' कविता तँ कलकत्तामे रहैत काल छपि चुकल रहनि...मोन पड़लनि जे लंका अबैसँ पहिने किछु रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे पठौने रहथिन। किछु छपल आ किछु नहि जानि कतए कोन दशामे पड़ल हैत। कटिंग्स सब जे जानि कतए गुम भेल आ कि हेरा गेल...।

मोन पड़ए लगलनि जे मिथिलाक परिवेशसँ बहुत दूर शुद्ध खड़ी बोलीक संग पंजाबी-उर्दू आ हिंदीमिश्रित लोकक बीच मोन-मिजाज रम' लगलनि। अपराजिताक चिट्ठी आबै तँ मोन तरौनी दिश उड़ए लागनि। कखनो-कखनो सोचथि जे ओकरो संगे रखबाक लेल ल' अनियनि। मुदा ओ कुलदेवता भगवती छिन्नमस्ता कें छोड़बाक लेल तैयार नहि। संबंधी सबमे सँ केवल अपन मसिऔत भाइ दीनबंधु चौधरीसँ पत्राचार रहनि जे मुंगेरमे रहैत रहथिन। हिंदीक विस्तृत क्षेत्रसँ पहिले सघन परिचयमे मैथिलीक ऊपर खड़ी बोली हिंदीक रंग चढ़ए लगलनि। ओहि कालमे ओम्हरका इलाकामे आर्यसमाजी विद्वान सभहक दब-दबा रहैक। लाहौर 'विश्वबंधु' कार्यालयमे एक दिन अबोहरक 'साहित्यसदन'क कर्ता-धर्ता स्वामी केशवानंदसँ परिचय भेलनि। पहिले परिचयमे स्वामीजी अत्यंत भद्र आ सज्जनक प्रतीक लगलथिन। परिचय होइते वैद्यनाथ दिश तकैत कहलथिन—घर-बार छोड़कर फकीर हो जानेवालों की कमी न तुलसीदास के जमाने में थी और न आज के जमाने में है...। चौंकि उठलाह वैद्यनाथ, ई वाक्य तँ हुनके निबंधक पहिल पाँती छल, जे साहित्यसदन अबोहरक पत्रिका 'दीपक' (जनवरी 1934 ई.)मे छपल छल। फेर तँ लाहौरमे स्वामीजीसँ जखन-तखन भेंट होइत छलिन। तत्कालीन राजनीति आ समाज पर बड़ी-बड़ी काल धरि दुनू गोटे गप्प कैल करथि। कहियो काल 'दीपक'क चर्चा सेहो होइत छल...

स्वामीजी ओहि क्षेत्रमे हिंदी प्रचार-प्रसारक बड़ काज करैत छलाह। हिंदी साहित्य सम्मेलन आ दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभाक लेल पर्याप्त समय लगबथि ओ। नव-नव किताब 'साहित्यसदन'क लेल किनथि आ लोक सभकें किताब खरीदबाक आ पढबाक लेल कहल करथिन। हिंदी प्रचार हेतु गामे-गाम, शहरे-शहर भ्रमण कैल करथि।

एकाध बेर वैद्यनाथ सेहो संग गेल रहथिन। एक दिन अबोहर जाक' वैद्यनाथ 'साहित्यसदन'क पुस्तकालय देखि आएल छलाह। पुस्तकक संग्रह आ स्वामी केशवानंदक काज करबाक ढंग बड़ प्रभावित केने छलनि। गप्प-सप्पक बीचमे कैक बेर स्वामीजी बाजल करथिन जे 'दीपक'क संपादनक दायित्व कियो ढंगगर उठा लितए तँ नीक रहितैक। आ, ओ एक दिन वैद्यनाथ कें 'साहित्यसदन' अबोहर ल' अनलखिन। 'दीपक' क' जिम्मेवारी दैत स्वामी कहलखिन—बड़ छोट स्तर पर एकरा शुरू केने छी, बूझू तँ शुद्ध क' व्यक्तिगत रूपें। सामर्थ्य आ साधन सीमित रहलासँ ओतेक नहि क' पबैत छी, जतबा हेबाक चाही...।

ताधरि मैथिलीमे चारि-छौ टा कविता छपल रहनि आ हिंदीमे दू-चारि टा रचना। शास्त्री आ काव्यतीर्थक योग्यता ल'क' 'दीपक'क संपादक बनलाह वैद्यनाथ मिश्र। 'दीपक' मे संपादक आचार्य वैद्यनाथ मिश्र देखिक' गुदगुदी लगलनि। स्वामी कहलखिन—अहाँ कोनो आचार्य सँ कम तँ छी नहि। स्वामीजीक पितृवत दुलार आ मित्रवत नेह छोहसँ अभिभूत रहथि वैद्यनाथ। दायित्वबोध नीक जकाँ बूझ' लागल रहथि। साहित्यसदन एक तरहसँ आश्रम छल। वैद्यनाथकें एकटा कोठरी भेटलनि। भोजन-भात छलैक ढंगगर। समय-समय पर किछु रुपया-पैसा सेहो स्वामीजी द' देथिन। तरौनी किछु ने किछु पठबए लगलाह। 'दीपक'क लेल कतेक तरहक सामग्री लिखए पड़ैत छलनि आ संपादन संशोधन फराके। 'दीपक'क संपादकक हैसियतसँ गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुरकें बंगला भाषामे पत्र लिखलखिन तँ गुरुदेव स्नेहपूर्वक पत्रोत्तर देने रहथिन आ ओ दीपकमे ब्लाक बनाक' छपल छल। मूल पत्र साहित्यसदन अबोहरमे रहि गेलनि...

...अबोहरमे मोन लागय लगलनि। स्वामीजी गंभीर लोकक अलावे जनसामान्यमे खूब हिलल-मिलल छलाह। वैद्यनाथकें दुनिया भरिक गप्प सुनबथिन। एहि कारण वैद्यनाथकें जीवनक सामाजिक सरोकार आ सामाजिक दायित्व दिस सोचबाक-विचारबाक नव दिशा देखबामे आबए लगलनि। 'दीपक'मे समीक्षार्थ किताब सभ अबैत छल, मुदा एकर अलावे स्वामीजी नव-नव पुस्तक आनैत रहथिन। पढ़बाक पर्याप्त सुविधा छलैक ओतए। साहित्यक आर कइएक प्रकार नव-नव कार्य दिश वैद्यनाथकें आगू बढ़बय चाहैत छलाह स्वामीजी...

...ओहि कालमे राहुल सांकृत्यायन भारतीय बौद्धिकताक प्रतीक बनि रहल छलाह। वैद्यनाथ हुनका काशी आ कलकत्तामे देखने भरि रहथिन। अबोहरमे पहिले-पहिल राहुलक दू-तीन टा किताब पढ़बाक मौका भेटलनि। स्वामीजीक संग राहुलक संदर्भमे विस्तारसँ गप्प होइनि। 'मज्झिम निकाय' पढ़लनि तँ अबोहरमे ताकि-हेरिक' बौद्ध धर्म-दर्शनक किछु किताब पढ़ि गेलाह। तकरे आधार बनाक' एकटा निबंध लिखलनि—'बुद्ध युग की आर्थिक अवस्था'। फेर मोनमे बेर-बेर प्रश्न आ विचार उठए लगलनि जे किएक ने बौद्धदर्शनक मूल ग्रंथ पढ़ल जाय। मुदा अबोहरमे ई संभव नहि छलैक। मोन पड़ल रहनि सारनाथक बौद्ध मठ कोनो ने कोनो उपाय अवश्य कहि सकैत अछि। काशी रहैत काल एक-दू बेर सारनाथ गेल अवश्य रहथि। पत्र लिखलखिन तँ कहल गेलनि जे बौद्ध धर्म दर्शन आ बौद्ध साहित्यक नीक जकाँ ज्ञान अर्जन करबाक लेल लंकाक 'विद्यालंकार परिवेण'सँ नीक कोनो जगह नहि अछि। विशेष जानकारीक बाद ज्ञात भेलनि जे ओतए प्रवेश मे कने दिक्कत तँ छै मुदा कष्टसाध्य नहि। एकरा बादे दिमागमे घूमए लगलनि जे 'प्रथमा' परीक्षाक बादेसँ एक तरहक अनिश्चितता आ मानसिक उहापोहक बीच हुनका ठौर-ठिकाना भेटइत गेलनि। शायद भविष्यक अनिश्चितता भीतरे-भीतर मोनकें संबल दैत रहैत छै...मोने मोन अगिला पड़ावक लेल सेहो सोचबाक शक्ति भेटइत रहैत छै...आगू आब' वला कठिनाइ आ जीबाक लेल छोट-मोट जरूरतो मोनमे नचैत रहैत छै...नेनामे वैद्यनाथ अपन गाममे पिताकें शतरंज खेलाइत देखैत छलाह। हुनकर पिता शतरंजक नीक खेलाड़ी मानल जाइत छथिन। मुदा ओहो तँ अगुलका दू-तीन टा चालि सोचैत रहथिन, तखन जिनगी भरिक लेल एक बेर कोना सोचि सकइए किओ...

भिक्खु सोचय लगलाह, अबोहरक 'साहित्यसदन' आ दीपककें संपादनक मौका अनायासे भेटल छलनि। मुदा जे सही बात कमे समयमे 'दीपक'क संपादनसँ दायित्व बोधक थोड़ेक प्रशिक्षण भेटि गेलनि। ओतुका पुस्तकालय ठीके छलैक आ थोड़-बहुत निश्चिंततामे बुझैलनि जे अभाव भूखे टा नहि संस्कारो कें मारैत छै। गरीबी कतहु ने कतहु ज्ञानोक अर्जनक लेल बाधक होइत छैक। स्वामीजीक संग अबोहर आ आस-पासक परिवेशकें नीक जकाँ देखने रहथिन ध्यानसँ। ओतए छोट-छोट बात पर खूब सोचैत छलाह। अपन काल आ समाजक प्रति किछु ने किछु दायित्व छनि—एकरा बुझबाक अवसर पहिल बेर अबोहरमे भेलनि। मुदा बौद्धदर्शनसँ पूरा परिचय हेबाक लालसा, जे विद्यालंकार परिवेणमे पूरा भ' सकैत छलनि, तें स्वामी केशवानंदक स्नेहिल छाया सँ दूर हेबाक लेल मजबूर करैत छलनि। एक दिश स्वामीजीक जीवनानुभव आ हुनकर जीवन जीबाक प्रति दृष्टिकोणसँ किछु सीखबाक इच्छा तँ दोसर दिस हुनकासँ विपरीत जीवन-जीबाक ललक। स्वामी तँ वैद्यनाथकें पंजाब आ सिंधक भीतर हिंदी प्रचार-प्रसारमे लगबए चाहैत छलखिन। मुदा वैद्यनाथक भीतर कसमसाहटि आ छटपटाहटि छल बौद्ध धर्म-दर्शन आ बुद्धकालीन परिवेशकें बुझबाक-जानबाक। अपन उम्रोचित बुद्धि आ विवेकसँ वैद्यनाथ स्वामीजीकें बुझेबाक प्रयास कर' लगलाह ताकि हुनके मोने लंका जा सकथि।

स्वामीजी स्वयं विद्वान छलाह आ विद्वान सभसँ नीक परिचयपात आ संपर्क छलनि।

ओ वैद्यनाथकें अपना ढंगसँ बुझैबाक भरिसक प्रयास करै लगलाह। बौद्ध धर्म-परंपरा आ सनातन धर्म परंपरा पर अपन अपन ढंगसँ एक-दोसर कें बुझेबाक चेष्टामे लागल रहथि। स्वामीजी देश-सेवाक गप्प उठौलनि तँ वैद्यनाथ कहलथिन जे हुनको अध्ययन तँ देश सेवा लेल हेतनि। कहलखिन जे आजादीक लेल चलि रहल आंदोलनक नेतृत्वमे जे सब छथि, ताहिमे देशसँ बाहर रहि शिक्षा पूरा करैवला लोक सब नहि जानि कत' छैक...स्वामीजीकें नीक जकाँ बुझबामे आबि गेलनि जे युवा वैद्यनाथ मानत नहि, तँ किएक ने खुशी-खुशी विदा क' देल जाय। फेर ओ हुनकर यात्राक कपड़ा-जूता आ पाइ-कौड़ीक व्यवस्थामे लागि गेलाह। सब व्यवस्था क' विदा करैत काल बाजल रहथिन—'दू सौ रुपया लागत पहुँचबामे, पचास टा टाका आर आ ओतए साल भरि रहब आ वापस हैब, ताहि लेल छौ-सात सौ चाहबे करी...वापस आबि 'दीपक' अहीं कें सम्हारबाक अछि!'

वैद्यनाथकें विदा हेबा काल स्वामी बड़ विचलित जकाँ भ' गेल रहथिन। जखन वैद्यनाथ हुनकर चरण स्पर्श लेल झुकलाह तँ स्वामीजी एकाएक पाछू हटि गेल रहथिन। आँखिमे नोर आबि गेल रहनि। वैद्यनाथ आश्वस्त केलखिन जे जल्दीये वापस आबि हुनके लग आओत। एहि पर स्वामीजी मुस्कुरा देलखिन। ओहि मुस्कीकें ओ जीवन भरि नहि बिसरि पौताह। वैद्यनाथ बुझि रहल छलाह जे ओहि मुस्कीमे संदेहक पुट मिझरैल छैक।

अबोहरसँ वैद्यनाथ सोझे सारनाथ गेलाह। 'विद्यालंकार परिवेण'क संबंधमे विस्तारसँ जानकारी ओतहिसँ भेटबाक छलनि। ओतहि ज्ञात भेलनि जे राहुल सांकृत्यायन, भदंत आनंद कौसल्यायन, जगदीश कश्यप आदि ओतहिसँ बौद्ध दर्शनक अध्ययन कैने छथि आ संगहि संग ओहिठाम बौद्धधर्मक दीक्षा सेहो लेने छथि। जँ वैद्यनाथ चाहितथि तँ सारनाथसँ सेहो पालि भाषा आ बौद्ध धर्म-दर्शनक अध्ययन क' सकैत छलाह। कहल गेलइन जे विद्यालंकार परिवेणक बात किछु आर छै। इहो ज्ञात भेलनि जे ओतए सोझे प्रवेश भेटि सकैत अछि, मुदा कहियो-कहियो कोनो भारतीय विद्वानक अनुशंसा माँगल जाइत छैक। खर्च-बर्चक जानकारी ओतएसँ भेटलनि।

सारनाथक बाद ओ किछु पुरान दोस्त सबसँ भेंट करबाक लेल काशी चल गेलाइ। मामा गाम गेल रहथिन, से जानकारी अबोहरमे भ'गेल रहनि तँ स्टेशनसँ सोझे पुरान परिचित अपन ओहि धर्मशाला जेबाक विचार रहनि, दू-तीन दिन रहबाक हेतु। मुदा धर्मशाला जेबा काल बाटहिमे अपन ग्रामीण संगी सुरेंद्र जकरासँ 'यार' लागल छल भेंट भ' गेलनि तँ ओकरे कमरामे जाक' रुकि गेलाह। दू-तीन दिन धरि दुनू यार बनारसक चक्कर लगबैत रहला। बहुत पुरनका दोस्त-हितसँ भेट भेलनि। सुरेंद्र तरौनी आ आस-पासक गामक ने जानि कतेक खिस्सा-कहानी सुनेलखिन, जे वैद्यनाथक गामसँ बहरेबाक

बादक छल। सुरेंद्र चाहैत छल जे ठक्कन पहिने गाम चलय, फेर जतए जाय चाहै जाय। ठक्कनकें सेहो गाम बड़ मोन पड़नि। अपराजिता तँ वैद्यनाथक गामसँ बहरेलाक किछु मासक बादे नइहर चल गेल रहथिन। एहि तरहें तरौनीसँ संपर्क टूटले जकाँ छलनि। अबोहरसँ बहरेबा काल अपराजिताकें पैघ सन चिट्ठी लिखने रहथिन...नइहरेमे रहबाक सलाह सेहो देने रहथिन आ लिखने रहथिन जे गाम-घर दिस वापसीमे देरी हैत।

काशीयेमे अपन लक्ष्यसँ संकल्पित होइत मैथिलीमे एकटा कविता लिखलनि—'तिरहुत अति नयनाभिराम/मम मातृभूमि अंतिम प्रणाम/पुरजन-परिजन सब छोड़ि-छाड़ि/पहिलुक परिचय कैं तोड़ि-ताड़ि/अहिबातक पातिल फोड़ि-फाड़ि/हम जाय रहल छी आन ठाम/मा मिथिले अंतिम प्रणाम...' पहिलुक परिचयकें छोड़ि-छाड़ि आ पुरजन-परिजन सब छोड़ि-छाड़ि लिखइत छब्बीस वर्षीय वैद्यनाथ पूर्ववर्ती पीढ़ी सँ मोह भंग करबाक प्रयास केलइन—'कर्मक फल भोगथु बूढ़ बाप/हमटा संतति से हुनक पाप/ई जानि हैनि जनु मनस्ताप/अनको बिसरक थिक हमर नाम...' कविता सतरह पाँतीमे छल। 'मिथिला मोद'क आफिसमे द' एलखिन... 'मोद'क माघ (1937 ई.) अंकमे छपल। 'मोद'क संपादक रचनाकार 'यात्री'कें तारांकित क' लिखने रहथिन—'पंडित वैद्यनाथ मिश्र 'वैदेह', संपादक 'दीपक', तरौनी वासी।' संभवतः 'मोद' क' संपादककें जानकारी नहि भेल रहनि जे वैद्यनाथ मिश्र वैदह यात्रीक बाद बौद्ध भिक्खु नागार्जुन भ' गेल छथि। स्वामी केशवानंदजी अबोहरसँ हुनकर नाम आयल डाक सब लंका पठा दैत रहथिन। मोदक अंक सेहो आबि गेल छलैक। लंकासँ अपन संबंधी मे सँ मात्र मसिऔत दीनबंधुसँ पत्राचार छलनि। मुंगेरसँ बहरैयवला पत्रिका 'प्रभाकर'क हेतु हुनके हाथे रचना पठबैत छलखिन...

यार सुरेंद्रकें बिना कोनो विस्तृत जानकारी देने वैद्यनाथ काशीसँ बहरैला। समानक नाम पर एकटा पैघ झोरा छलनि, जाहिमे मामूली दरी-चादरि, दू-तीन जोड़ा कपड़ा, दू-तीन टा किताब, दू टा कापी आ एकटा डायरी आ कन्हा पर एकटा थैला, जाहिमे रास्ताक लेल समान—एतबेक संग बनारससँ चललाह मद्रास आ फेर लंकाक लेल। मद्रास चारि-पाँच दिन रुकि क' कोलंबो यात्राक विस्तृत जानकारी लेबाक छलनि। दक्षिण भारत दिश पहिल बेर जा रहल छलाह ओ। दू दिनसँ फाजिलक थकान बला यात्रा छलैक। मद्रास पहुँचबासँ चारि-छौ घंटा पूर्व गाड़ी कोनो स्टेशन पर रुकल तँ हुनका लग दू टा युवक सेहो आबिक' बैसि गेल। ओ दुनू हुनका संग खड़ी बोलीमे खूब नीक जकाँ गप्प करए लागल। ओ दुनू कोनो आन डिब्बासँ एहि डिब्बामे आएल छल। गप्प-सप्पसँ वैद्यनाथकें लगलनि ओ दुनू मद्राससँ नीक जकाँ परिचित अछि। गाड़ी मद्रास रतुका दू बजे पहुँचल। वैद्यनाथ ओहि दुनू युवकक संग मुसाफिरखानामे एक दिश खाली जगह ताकि बैसि

गेलाह...ओहि दुनूक संबंधमे सोचइत-सोचइत अंगपोछा ओछाक' झोरा भरे पड़ि रहलाह आ नींद आबि गेलनि। दू-अढाई घंटाक बाद नींद खुजलनि। देखैत छथि ओ दुनू सेहो हुनके दिश बैसल-बैसल देखि रहल अछि। वैद्यनाथ झोरासँ एकटा किताब बहार क'क' उलटाबय-पुलटाबए लगलाह आ फेर सरिआक' झोरामे राखि देलखिन। ओहि दुनूकें अपन समान देखैत रहबाक लेल कहि शौचघर दिश चलि गेलाह। आठ-दस मिनटक बाद वापस भेलाह तँ देखैत छथि जे ओ दुनू फुरतीसँ अपन समान संभारैत राम-राम भाइ कहि प्लेटफार्मकें सामने खुजइत गाड़ीमे चढ़बाक लेल भीड़मे हेरा जकाँ गेल। वैद्यनाथ पल्था मारि निश्चिंत भावें स्टेशनक भीड़कें देखैत रहलाह...।

नहि जानि की फुरैलनि तखन जे झोराक सब समान निकालिक' फेरसँ ठीक करए लगलाह। एक खास किताबकें नहि देखि क' धक्सँ रहि गेला। भरि यात्रा ओहि किताबकें सम्हारने आएल छलाह। उत्तेजित भ'क' जल्दी-जल्दी सब समान निकालैत छथि झोरासँ आ राखैत...ई क्रम तीन-चारि बेर भेल। मोन पड़लनि ओ दुनू हुनका ओहि किताबकें उलटाबैत-पुलटाबैत कैक बेर देखने छल। आब ओ तँ ट्रेन चढ़ि दूर जा चुकल छल—आ वैद्यनाथक दिमागमे सात टा नमरी नोट नाचए लागल छलनि...जीवनमे पहिल बेर अपन देस-कोससँ हजारो कोसक दूर पर विकट परिस्थितिमे फसल छलाह ओ। भीतरे भीतर कानए लगलाह। चारूकात आँखि दौड़ैलनि। एकटा प्रौढ़ हुनके बगलमे आबि बैसि गेल छल। चेहरा मोहरासँ अपने दिशक लगलनि अर्थात् बिहार वा युक्त प्रांतक। तंबाकू चुनबैत वैद्यनाथक गति-विधिकें एकटके देखि रहल छल। वैद्यनाथ ने जानि किएक ओकरा अपन दुखड़ा कहि देलखिन। सब बात सुनि ओ बाजल—लोक सब टाका-पाइ पाकिट आ कि डांड़मे रखैत अछि। ई किताबमे रखबाक कतए सीखने रही ?

किताब गायब होइते एहन सन बात हुनको दिमागमे उठल छलनि। मोन पड़लनि—गाममे एकनाथ कक्का विद्वान हेबाक संग भगवतीक उपासक सेहो रहथिन। अड़हुली लाल धोती पहिरैत छलाह। तेहने मिरजई आ चद्दरि। दुर्गा सप्तशती कंठस्थे छलनि। श्रीमद्देवी भागवतक कैकटा अंश धाराप्रवाह सुनबैत रहथिन। अपन कागज वला नोट 'भागवत'क पन्ना सबहक बीच-बीचमे राखथि। कैंचा-कौड़ी डाँड़मे। एक दिन काकीकें जरूरत पड़लनि पाइक आ कक्का नहि देलथिन। कक्का जखन स्नान करै पोखरि गेलाह तँ काकी लाल कपड़ामे लपेटल देवी भागवतसँ दू टा टूटकही नोट बहार क' लेलखिन। कक्काकें पता लगलनि तँ खूब चिकरलाह—भोकरला। काकी कान छूबैत बजलीह—राम-राम! भागवतकें कियो बिना स्नान-पूजा-पाठ केने छूअत कहू तँ... मुदा कक्काकें पूरा विश्वास छलनि जे घरक देवीक अलावे आर किओ नहि लेने हैत! बादोमे काका रुपया ओहिना राखथि मुदा लाल कपड़ा लपेटल भागवत नित्यकर्मक सिवाय काँख तर

दबौने रहथि। वैद्यनाथ कक्काक अनुसरण क'क' अपन गर्दनि अपनहि काटि लेने रहथि ओहि दिन। रच्छ छल जे हाफ कमीजक ऊपरका जेबमे चालीस-पैंतालीस रुपया छलनि...।

वैद्यनाथ दू-अढाई घंटा मुसाफिर खानाक देवालमे पीठ सटाक' बैसल रहलाह। मोनमे होनि जे अबोहर वापस भ'जाइ...फेर दिमागमे अबनि जे स्वामीजी की सोचताह...कोन मुँहे सब बात कहि पओथिन। ई मोनमे होनि जे चुपेचाप सासुर अथवा तरौनी चल जाइथ आ ओम्हरे कोनो काजक जुगति बैसाबथि...भीतरे-भीतर बुकौड़ लागइन, मुदा मुसाफिरखानामे कानि तँ सकै छथि नहि। भीड़ लगतैक आ सब बात कह' पड़तनि। लोकसभ हुनकर बात पर कते विश्वास करत—से के कहत। अवसादसँ भरल मोन, नोर भरल आँखि—देवालक सहारा भेटलनि तँ मदहोशी जकाँ अर्ध-निद्रा...लगलनि जे कानमे किओ फुसफुसाक' कहि रहल होइनि—जखन चलि पड़लहुँ तँ पाछु नहि घुरी...यैह ने हैत जे लंका पहुँचबामे कने देरी हेतइ...कलकत्तासँ जहिया सहारनपुर गेल रही तँ ओतहु पटकनिया देल गेल छल...अपन साहसे तँ सहारा छल ने! सब किछु समय पर छोड़ि दिअउ...अपराजिताकें नहि किछु लिखिऔक एहि संबंधमे, ओ आइ-काल्हि एहिना 'बेचारी' जकाँ भ'गेल अछि...मद्रासेमे रास्ता ताकू...खर्र खर्रक ध्वनिसँ तंद्रा टूटलनि। झाडू लगबैवला इशारासँ उठए लेल कहि रहल छलनि। उठि-पुठि क' ठाढ़ भेला आ समान घुसकौलनि। सामने काफी वला देखबामे अएलनि। सोचलनि जे थाकल मोन-मिजाजकें शायद काफी किछु राहत देतइन। काफीक घोंटक संग तंद्रावला बात सेहो मोन पड़लनि, तँ लगलनि यैह बात ठीक रहत। तय केलनि जे एतहिसँ रास्ता ताकी। कोनो धर्मशाला जाक' दिन भरि विश्राम करबाक मोन बनौलनि। ओम्हर धर्मशालाकें छत्रम कहल जाइ छैक। भाषाक समस्या सेहो छलनि। अचानक 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' मोन पड़लनि। अबोहरमे स्वामीजी कहने रहथिन जे मद्रासमे प्रचार सभाक लोक मदति करत। ने जानि गाड़ीसँ उतरबा काल रातिमे ई बात किएक नहि फुरेलनि। पता नहि दिमागक कोन कोनामे ई बात घुसि गेल छलनि। स्टेशनक बुक स्टाल पर बड़ प्रयाससँ सभाक कार्यालयक पता लगलनि। कने परेशानी तँ भेलनि मुदा ओतए धरि पहुँचि गेलाह। वैद्यनाथकें आश्चर्य लगलनि जे सभाक किछु वरिष्ठ लोक 'दीपक'क संपादकक प्रतीक्षा चारि-पाँच दिनसँ क' रहल छलखिन। संभवतः स्वामीजी वैद्यनाथक संबंधमे लिखने रहथिन...

भिक्खु नागार्जुनकें नीक जकाँ मोन पड़ि रहल छनि जे तीन-चारि धरि मद्रास नगरकें घूमि-घूमिक' देखैत रहलाह। प्रचार सभाक किओ ने किओ संग रहैत छलनि। एक दिन बनारससँ मद्रास पहुँचबाक आ पैसा हेरा जेबाक पूरा वृतांत सुना देलखिन। प्रचार सभाक लोक जे ई बात सब सुनलक से सब दंग रहि गेल जे एतेक सब भ' गेलाक बादो वैद्यनाथ

सहज कोना रहि रहल छथि। विचार विमर्शक बाद सोचल गेल जे साल-छौ मास मद्रासमे रहि किछु कैल जाय आ तखन लंका गेल जाय। ओ स्वयं सेहो एहिना-सन सोचैत छलाह। किओ कहलकनि जे रामेश्वरम्सँ लंका जेबाक नीक सुविधा छैक। मोनमे सोचलनि जे रामेश्वरम् सेहो देखल जाय। प्रचार सभा दिशसँ रामेश्वरम् जेबाक व्यवस्था क' देल गेलनि। मद्रासमे कहि क' निकललाह जे रामेश्वरम्सँ शीघ्र मद्रास वापस आबि जायब। रामेश्वरम्मे एकटा छत्रम्मे रुकलाह। पैघ धर्मशाला छलैक। अंगनइ, चारु भर चारि-चारि कमरा वला मकान। पैघ-पैघ ओसारा। आंगनक एक कोनमे इनार। अइ ओसारा-ओइ असोरा बीच कइएक टा पातर-पातर डोरी टांगल छलैक कपड़ा पसारबाक लेल। चारु ओसाराक दीवाल सभ पर देवी-देवता सभहक फोटो टांगल छलैक। बेशी फोटो तँ भगवान रामक समुद्र पूजन वला छलैक। नहा-धोक' धर्मशालासँ बहरैला, लगेमे भोजन-जलपानक एकटा नीक छोट-छीन होटल छलैक। भात-सांवर-मट्ठाक संग तरकारी। मट्ठाकें सरसोंसँ छौंकल रहैक। मैथिल-जीहकें ओ स्वाद नीक लागल छलैक। भरि दिन नगर परिक्रमा करैत रहलाह। मंदिर सबकें ओम्हर दिव्य-भूमि कहल जाइ छै। समुद्रक कातसँ मोनेमोन ओहि पार लंकाकें कल्पना करैत रहलाह। ओतए किछु मठ आ मंदिर एहनो छल जे देखलासँ उत्तर भारतीय लगैत छल...।

दोसर दिन भोरमे फेर बहरैला। पहिनावा छलनि धोती आ धारीदार हाफ कमीज। दू-तीन घंटा घूमलाक बाद एक पैघ हाताक भीतर गेलाह। पर्याप्त ऐल-फैल वला एकटा पुरना मकान। कोनो मठ सन लगैत संगहि धर्मशाला जकाँ सेहो। देखलनि ओकर बाहरक पैघ बरामदा पर एक नीक देह-दशा आ गेहुंआ गोराइ वला एकटा पैंतीस-छत्तीस वर्षीय प्रौढ़ पाथरवला पसेरी ल'क' धान तौलबामे लागल अछि। ओकरा सामने दू टा जन-बरिजना सन सेहो बैसल छलैक बोरा सम्हारने। तौलए वला तौल मोन राखए लेल 'रामे जी राम एक्के, रामेजी राम दूए'क शैलीक गिनती क'रहल छल। वैद्यनाथ सोचलनि जे ई या तँ बिहारक हैत अथवा पूर्वी युक्त प्रांतक। किए तँ अन्न तौलए काल एहि तरह गिनती ओम्हरे होइत छैक। किछु सोचि-विचारि क' 'राम राम गुरु भाइ...' कहैत वैद्यनाथ बरंडा दिश बढ़ि गेलाह आ देबालसँ सटाक' राखल चौकी पर जा बैसलाह। चौकीपर करिया कंबल आ ताहि पर उज्जर जाजिम ओछाओल छल। देबाल दिश पैघ सन मसनद पड़ल छल। मसनदसँ कने हटि सामने 'रामचरित मानस'क ऊपर तुलसीक माला पड़ल छल। राम-सीता समेत अनेक देवी-देवताक पैघ-पैघ फोटो देबाल पर एक पाँतीसँ टांगल छलैक। वैद्यनाथ चारूकात आँखि घूमा क' एहि जगहकें बूझबाक प्रयास क' रहल छलाह। मकानक भीतरसँ गप्प-सप्पक आवाज आबि रहल छल। दू बोरा धान तौललाक बादो किछु धान बचल छल। तौलए वला उठल आ उतरबरिया अंदाजमे हाथसँ

हाथ झाड़लक आ कन्हा परसँ गमछा ल'क' देह-हाथ झाड़ैत-पोछैत बोरा बांधि रहल एकटासँ बाजल—'इ ले जा' आउर बोराकें भीतरे रख द'...सत्तू होइहें भीतरे तँ कह दिह', बारह पसेरी गेल बारन, बाकी ई रखे के कहलन, आ देख' कुइंआ से एक डोर पानी निकास के दुवरा पर राख'... फेर वैद्यनाथ दिस तकैत बाजल—'देख' तँ ने जे आइल बाड़न...आ फेर जोरसँ ककरो आवाज देलकइ--रे भरता, शरबत उड़बत तँ बनाकें ले आ...' आ चौकी पर आबि बैसि गेल। कने क्षण भरि वैद्यनाथकें गौरसँ देखलक आ पूछलकनि—'केनेसँ आगमन होले वा भाई।'

वैद्यनाथ सेहो ओकरा दिस नीक जकाँ देखैत बजलाह—'एखन तँ छत्रम्मे ठहरल छी, मुदा जिम्हरका अहाँ छी, हमहूँ ओम्हरेसँ आएल छी।' एतबेमे एक लोटा शरबत आबि गेल, चमचमाइत फूलही गिलास सेहो। गटागट दू गिलास शरबत पीबि गेलाह वैद्यनाथ। ओहि अवधी भाषीकें मैथिल पंडितसँ परिचय पाबि बड़ प्रसन्नता भेल छलैक। ओ अपन नाम गणेश स्वामी कहलक।

गणेश स्वामी गृहस्थ साधु, फौजक नौकरी छोड़ि रामायणी साधु भेल छल। पत्नी नहि रहैक, दू टा बेटा गोरखपुर दिश घर-गृहस्थी सम्हारैत रहनि। कहिओ-कहिओ ओ स्वयं अपन गाम-घर दिश चल जाइत छल। बेटा आ पितिऔत भाइ-भातीज सबकें मठक महंथसँ कान फूकवा देने छल। एकटा पितिऔत भाइ संगे रहैत छलैक। ई मठ जनकपुर आ अयोध्याक एक पैघ मंदिरक नियंत्रणमे छलै। बड़ा महंथ स्वामी रामशरण दास एहि तरहें जनकपुरसँ बहराइत छलाह जे विभिन्न तीर्थ घूमैत-घामैत रामनवमीक दिन रामेश्वरम् पहुँचि जाइत छलाह। हुनका संगे एकटा सधुआइन रहैत छलनि। महंथ ओकरा सब तरहक सुविधा देने रहथिन। गपक क्रममे गणेश स्वामी कहने रहनि जे कोनो समय गणेश स्वामीकें ओ सधुआइन सम्मोहित करबाक अपना भरि प्रयास सेहो केने छल। गणेश स्वामीक पितिऔत भाइ बड़ा महंथक सोझे ओकरा बड़ डाँट-फटकार लगौने छलैक। दूरक संबंध हेबाक कारणे बड़ा महंथ गणेश स्वामीकें रामेश्वरमक संग लंकाक एक मठकें देखरेख करबाक जिम्मेवारी देने छलैक। मठकें बढ़िया आमदनी आ संपति छलैक। पहिले दिनसँ गणेश स्वामी बड़ अपनापनसँ आवभगत करए लगलनि वैद्यनाथ के। संगे छत्रम गेलनि हुनक झोरा-छपटा आनए लेल। गणेश स्वामीकें देखि छत्रम्क मैनेजर चौंकल छल। वैद्यनाथ ओकर रुतबा आकि दब-दबा ओतहि देखलनि।

ओहि मठमे रहैत—दू-तीन दिन भेलनि तँ गणेश स्वामी कहलकनि—भाइ हमरा दोहा, चौपाई आ गीत बनेनाई सीखा दिअ ने! आ एक दिन ओ दोहा जकाँ बनौलक—विवाद का क्या है काम/त्रिकाल जय जय श्रीराम... वैद्यनाथ ओकर दोहाके ठीक-ठाक क'क' गुरु जकाँ भ' गेलखिन। गणेश एक दिन कहलकनि जे एतहि रहि जाउ गुरुभाइ।

सप्ताहमे एक-दू दिन कने मने प्रवचन द' देबैक हमरो पढ़ा देल करब। तीन मास-चारि मास पर जखन कहिओ इच्छा हैत तँ मिथिला जाक' अपन सियासँ भेंट क' ऐब। सबटा व्यवस्था-बात हम करब...असली जीवनक आनंद तँ सधुक्कड़ियेमे छइ। चाहला पर दास-दासिन सेहो भेटत...देह जांतए-पिचै वला आ चाहब तँ देह जांतए-पिचय वाली सेहो... हमर मठक-महंथिनी अहाँकें देखत तँ बद्री-केदार धरि घुमा क' ल' आनत अपना संगे, हँ गुरुभाइ...वैद्यनाथकें ई सब बात सुनि हँसी आबि गेल रहनि। गणेश स्वामी उमेरमे बेशी भेलो पर अनुजवत सेवा-टहलमे लागल रहैत छल। सामने बैसिक' 'रामचरित मानस'क दोहा आ चौपाइ सबकें मात्रा गनैत रहैत छल आ दोहा बनेबाक कोशिश करैत रहैत छल।

मठक भीतरका मंदिरमे राम-जानकीक एकटा सुंदर प्रतिमा छलैक। ओहिमे लक्ष्मण, भरत आ शत्रुघ्न सेहो एक दिश ठाढ छलखिन तँ दोसर दिश गदा आ पहाड़ उठौने हनुमान। एहि प्रतिमा सबमे चानन आ सिंदूरक लेप ने जानि कहियासँ पड़ल छलैक। तें पैर सबहक आकार बेढंगा भ' गेल छलैक। मूर्तिक सामने पैघ सन दीप हरदम जरैत रहैत छल। ओकरे बगलमे दू टा कमंडलमे गंगा आ सरजूक जल...धूपक पवित्र सुगंधिसँ पूरा मठक भीतरका भाग सुगंधिसँ भरि जाइत छल साँझ आ भोरमे। चारि-छौ टा भगत-भगतिन रहबे करैत छलैक। घंटा-दू-घंटा बैसिक' डांड़ सोझ क'क' एनहार-गेनहारक संख्या सेहो बेश छल। श्रद्धा-भक्ति, आचार-विचार, धर्म-कर्म आदिक गप-सपसँ वैद्यनाथकें कखनो हँसी तँ कखनो खौंझ उठनि...गणेश कहने छलनि जे रामनवमी, जानकी नवमी आ विवाह पंचमीक मेला आ भोज-भंडारा आदिसँ पर्याप्त दान-दक्षिणा जमा भ' जाइत छैक।

ठेठ ग्रामीण मूड-मिजाज वला गणेश स्वामी वैद्यनाथसँ अपन मोनक सब बात कहि दैत छल। ओकर मोन छलैक जे वैद्यनाथ ओतहि रहि जाथु, मठक खूंटासँ बन्हाक'...अढाइ-तीन मास ओतए रहलाक बाद एक दिन ओ गणेश स्वामीसँ कहलखिन—भाइ, एतहिसँ भगवान राम लंका जेबाक लेल समुद्रसँ रास्ता मंगने रहथिन आ रास्ता बनि जाय ताहि लेल अभिमंत्रित वाणकें साधने रहथि तँ समुद्र देव घबरा क' सामने एलाह तँ राम कहलखिन—अभिमंत्रित वाण आब वापस नहि हैत! हम सेहो आब लौटिक' वापस जायब नहि, लंका तँ जेबे करब, चाहे जेना हो...' आ संयोग सेहो जे लंका जेबाक मौका जल्दिये भेटि गेलनि। दक्षिण भारतक एक दल लंका जेबाक लेल एलाह। गणेश स्वामीकें सेहो ओकरा सभक संग जेबाक छलैक। वैद्यनाथ एहि तरह मौका तँ तकितहि रहथि। धनुषकोडिसँ स्टीमर द्वारा समुद्र पार क' लंका जेबाक छलैक, लगभग चारि घंटामे। जीवनमे पहिल बेर साधु सभहक संग यात्रा करबाक छलनि...

साँझुका अन्हार भेला पर स्टीमर पर चढ़ल छलाह। कंबल ओछाक' सब बैसल रहै। वैद्यनाथ देखलनि जे स्टीमरक कर्मचारी आ कर्मचारीसँ पैघ अधिकारी सब साधु-संन्यासी लोकनिकें ओहि तरहें पूछताछ आ जांच पड़ताल नहि करैत छैक जेना सामान्य यात्री सबसँ। यात्रा दलक 'मेट'सँ ओकर सबक कानाफूसी सेहो खूब होइत रहैत छैक। मेटलोकनि स्टीमरक कर्मचारीकें खूब नीक जकाँ आवभगत करैत रहैत छथिन। एहि यात्रामे इहो देखलनि जे एक संप्रदाय अथवा मठक साधु-संन्यासी जखन एकठाम संगे-संग बैसैत छथि तँ अभाव-अभियोग आ व्यक्तिगत कुंठा नीक जकाँ बाहर करैत छथि...स्टीमर खुजैत काल भोंपा बाजल तँ लगलनि सत्ते देश छूटल जा रहल अछि आ मोन पड़लनि अपन एकटा पाँती—सब कुछ भूल गया हूँ, ममता? हाँ, हाँ वह भी छोड़ी!

रतुका अन्हारमे उतरल रहथि स्टीमरसँ। घोड़ा-गाड़ीमे सवार भ'क' जंगले-जंगले रास्ता होइत कल्याणपुरीक मठमे पहुँचल रहथि। हवा बड़ तेज छलैक। रास्तामे कतहु-कतहु नढियाक आवाज सुनाइ पड़ल रहनि। कखनहु-कखनहु कुकुरक भुकबाक आवाज आबै तँ लगनि जे शायद कोनो गाम-घर हेतइ—ऐहना सन लगनि। कोम्हर-कोम्हर, कतए-कतए होइत पहुँचल छलाह से कोनो अंदाज नहि लागल छलनि वैद्यनाथकें। कल्याणपुरीक आश्रम पहुँचलाक बाद, देखलनि कने कालक बाद एकटा पैघ ओसारा पर वैद्यनाथक लेल एकटा चौकी लगाओल गेल। फेर घुर जकाँ धुनी जराओल गेलै। तइयो मच्छर तते ने छल, लगलनि जेना उठा क' ल' जेतनि।

...नव धरा-धाम, अनजान जगह आ नव-नव लोक सभक बीच सुतल कहाँ होइनि। ने जानि कत'-कत' केहन-कहेन लोकसँ सामना करए पड़तनि—एहि तरह अनेक बात सोचइत-सोचइत बड़ देरी सँ नींद भेलनि आ भोर हेबासँ बड़ पहिने नींद टूटि गेलनि। उठि बैसलाह। साधु-संन्यासीक बीच रहैत रहैत एतबा तँ बूझि गेल रहथि जे वैरागी आ साधु सब रतुका उत्तरार्धमे कमे सुतैत अछि। औछान पर बैसल-बैसल ओइ दिन ओहो अपन कौलिक मंत्र जपने रहथि। दुरागमनक बाद अपन एकनाथ कक्कासँ मंत्र लेने रहथि। हुनक वंशमे अपने कुलक लोकसँ कुल देवता 'छिन्नमस्ता' उन्नीस अक्षर वला मंत्र लेबाक परंपरा छै। वैद्यनाथ यदा-कदा गायत्री आ अपन कौलिक मंत्रक जाप आंगुरक पोरपर क' लैत छलाह। अबोहरक बाद 'छिन्नमस्ताक'क रूप बेर-बेर मोन पड़नि...एक हाथमे अपनेसँ काटल अपन माथ आ ओहि काटल मुंडकें केशक सहारे पकड़ने, कटल गर्दनिसँ निकलैत शोणितक धार मुँहमे जाइत...अपन खून आन किएक पीबए! गामसँ अंतिम बेर बहराइत काल अपराजिता कहन रहथिन—कुल देवीकें प्रणाम क' पीड़ी परसँ अड़हुलक फूल उठा क' संगे राखि लिअ। ई सर्वसिद्धि कवच थिक एहि वंशक लेल! भोरे-भोर कल्याणपुरीक मठमे जखन मंत्र जपए लगलाह तँ अचानक अपराजिताक छवि

आँखिक सोझाँ नाचए लगलनि। बेर-बेर ह्रीं ह्रीं श्रृंग क्लीं सँ छिन्नमस्ता पर मोनकें एकाग्र करए चाहैत रहथि, मुदा अपराजिताक छवि अड़हुली रंगक साड़ी पहिरने, अलतासँ रंगल ओकर पैर सोझाँमे जमीन पर बुझबामे अबैत छलनि।

...लंकाक ओहि जंगली इलाकामे भोरे भोर, पहिले पहिल देखलखिन बाबा कल्याणपुरीकें। भव्य आकृति, दाढ़ी नहि, पैघ-पैघ केश...लुंगी आ उज्जर बनियानकें ऊपर उज्जर चादरि। गर्दनिमे तुलसीक माला...सूर्योदय भ' रहल छलैक आ बाबा कल्याणपुरी चहलकदमीक संग परिसरक सफाइ क' रहल छलाह। गणेश स्वामी हुनका सँ परिचय करौलक तँ ऐना लगलनि जे ओ वैद्यनाथकें ने जानि कतेक दिनसँ ने जानैत होथिन। ओ अवध क्षेत्रक छलाह। हुनका दसेक वर्षक उम्रमे साधुक भेद-भूषा मे ल' आनल गेल छल। बनारस आ हरिद्वारमे कर्मकांडक शिक्षा भेटल रहनि तकर बादेसँ लंकामे एहि मठक कर्ता-धर्ता बनलाह। ई मठ-मंदिर लंकाक तमिल हिंदू सभक आराध्यस्थल छलैक। गणेश स्वामी आ बाबा कल्याणपुरी एक दोसराकें बड़ मानैत छलखिन। लगइ जे संबंधी होथि।

...वैद्यनाथ कल्याणपुरीक व्यक्तित्वसँ प्रभावित भ' हुनका संग हिंदू धर्म आ वैदिक ज्ञान चर्चामे मोन लगबथि। वैद्यनाथसँ प्रभावित भ' हुनका ओतहि रहि जेबाक लेल कहए लगलथिन। वैद्यनाथ देखैत रहथि जे साधु-संन्यासी सभक माला पर आंगुर चलैबाक, घुमयबाक आ मुस्कुरयबाक ढंग, आँखि आ आंगुर सबकें घुमाएब-नचाएब आ नै जाने कतेक आदतिक कारण भक्त सब ओकर लग आबैत छैक आ पछोर ध' लैत छैक। पल्था मारिक' विभिन्न आसन करैत काल आँखिसँ बात करब बड़ महत्व रखैत अछि सधुक्कड़ीमे। वैद्यनाथक लंका धरि एबाक कारण बुझि कल्याणपुरी कहलखिन—रामजी चाहता तँ कोनो ने कोनो दिन किछु ने किछु हेबे करत...होइहें वही जो राम रचि राखा...फेर एक दिन भोजन काल बाजल रहथिन—हमरा अहाँ सँ बचबाक चाही, किएक तँ अहाँक लेल हमरा मोह भ' रहल अछि। वैद्यनाथ हुनका दिश देखैत बाजल रहथि—मोहक कारणे तँ मनुष्यसँ मनुष्यकें जुड़ाव छै ने।

...अपन देशक माटि-पानिमे वैद्यनाथ शरीरसँ स्वस्थ रहैत छलाह। मुदा समुद्रक कातक जलवायु हुनका शुरूएमे परेशान केनाइ शुरू केलक। समुद्रक कात वला जंगली इलाकामे छलाह। मच्छरक ऐतेक बेशी प्रकोप ओ कहाँ कतहु आ कहियो देखने रहथिन। रतुका समयमे मसहरी सँ काज चलैक। परंतु दिनोमे बड़का-बड़का डांस सूंग गड़बैत रहैत छल। भोर आ सांझकें बैसबाक जगह पर पैघ तगाड़ी मे धूनी आ कि घूर क' देल जाइत छलैक। तइयो देह पर जखन-तखन अपन चाट चलबए पड़ैत छल। दस दिनुका बाद वैद्यनाथकें पेटक शिकायत शुरू भ' गेलनि। कमजोरी बढ़ल जाइन आ मथदुखी

लगातार रहए लगलनि। बाबा कल्याणपुरी कहलखिन आबोहवा आ स्थान परिवर्तनक कारणे ऐना भ' रहल छैक...फेर वैद्यनाथ मलेरिया बुखारसँ ग्रसित भ' गेलाह। खूब कुनेन खुआओल गेल...पानि फेंटिक' दूध...साबूदाना आ वार्लीक आहार...बोखारकें कम हेबामे समय लेलकनि। शरीर कारी-झामर हुए लगलनि। देह तँ हड्डीक ठठर जकाँ भ' गेलनि। मच्छर सबकें कटलापर पैरमे नोचैत-नोचैत एकटा पैघ घाव सेहो भ' गेलनि। पड़ल-पड़ल मसहरीक भीतर निराशाक बसातमे डोल' लगलाह। अनिंद्रा क' अवस्थामे अपन गाम-घर, परिवार, पिता-पत्नी, मामा-मामी, नाना-नानी आ टोलक पितिऔत आ पितयाइन सभक छवि नाचए लागनि। सोचथि जे सबटा गुणा-भाग कहीं बेकार ने भ' जाए। सपनाक संग सब इच्छा-मनोरथ पीअर भेल पात जकाँ खसए लगलनि। ओहि समय एकटा कविता लिखने रहथि, तकर दू पाँती पड़ल-पड़ल गुनगुना लेथि—'जो हो न सके पूर्ण काम/मैं उनको करता प्रणाम...' योग आ हल्लुक व्यायाम आ शुद्ध जड़ी-बूटी वला दवाइ संग उपचार शुरू भेल। बाबा कल्याणपुरी आध्यात्मिक ढंगसँ हुनकर मोनकें थीर आ मजबूत करबामे लागि गेलथिन। सूखा मेवा आ बिना तेल मसल्लाक तरकारी..मोन जहाँ तहाँ नहि बौआइन ताहि लेल एकटा चाननक माला वैद्यनाथकें देलथिन आ कहलखिन—अपन कौलिक मंत्र जपल करू...देखब कतेक शांति भेटत! असली बढ़िया चाननक माला छल। अद्भुत सुगंध, वैद्यनाथ बेशीकाल ओकरा सुंघल करथि। गणेश स्वामी कहने रहनि—जम्बूद्वीपीय ब्राह्मण पंडित बौद्ध बनय से माँ जानकी नहि चाहैत छथिन! लगभग सवा मास लागि गेलनि वैद्यनाथकें स्वस्थ हेबामे।

...कामचलाऊ स्वस्थ भेलाह तँ फेर विद्यालंकार परिवेणक संबंधमे सोचय लगलाह—सनातनी मठमे आ जंगलक बीच कहियो नीक नहि रहि पायब, कियैक तँ भीतर नव-नव तरंग उठैत अछि...यैह कहने रहथिन बाबा कल्याणपुरीसँ। मठमे जे किओ कनियो सजग लोक छल जे मिथिलासँ लंका धरिक यात्राक बाद बिना विद्यालंकार परिवेण गेने वैद्यनाथ नहि मानता। बाबा कल्याणपुरी सेहो सोचलनि जे किएक हिनकर इच्छा मारल जाय। ओ स्वयं वैद्यनाथकें परिवेण धरि पठैबाक व्यवस्थामे लागि गेलाह। लगक कस्बा तक सवारीक इंतजाम कैल गेल जतएसँ ट्रेन द्वारा कोलंबो धरि जेबाक छलनि। सवारी गाड़ी पर जखन बैसलाह तँ एकटा बोरी राखल गेलइ, ओहिमे सिक्का छलैक। ओहि मठमे सिक्का खूब चढ़ैत छलैक। पाइ, पैसा, दू पैसा, इक्कन्नी, दूअन्नी, चौवन्नी आदि। ओकरा सबकें अलग-अलग छाँटिक' बोरी सबमे राखल जाइत छल। सिक्काक अनुसार वजन क'क' कस्बाक खास-खास बनिया ओकरा नोटमे बदलैत छल। जाहि सवारी गाड़ी पर वैद्यनाथकें बैसाओल गेल छल, तकर मालिककें नीक जकाँ बुझा देल गेलै जे सिक्काकें नोटमे बदलि वैद्यनाथकें देबाक बाद वैद्यनाथकें कोलंबो बला ट्रेन मे बैसा देतनि आ

कोलंबोक खादी भंडारक पता संग मे द' देल गेलनि। वैद्यनाथकें नीक जकाँ मोन छनि जे सवारी गाड़ी पर बैसलाक बाद बाबा कल्याणपुरी ओकर एक हाथ पकड़ने रहथिन। शांत आ गंभीर स्वरमे कहने रहथिन—कोनो दिक्कत आ परेशानी हैत तँ सोझे वापस भ' जायब...जाहि बनियाकें बोरी देल जेतइ, ओतहि आबि जायब, ओ सबटा व्यवस्था क' देत...अहाँ तँ गुरुभाइ कहने छी ने हमरा...

...झोरा आ ओछाइनक छोट सन मोटाक संग वैद्यनाथ कोलंबो स्टेशनसँ बहरैला। पता लगलनि जे खादी भंडार लगेमे छैक। एतबा तँ बूझल छलनि जे कोलंबोक लगेमे छै केलानियाक विद्यालंकार परिवेण। खादी भंडारक व्यवस्थापक सत्यनारायण शर्मा विद्यालंकार बड़ आवेशक संग स्वागत केलथिन। पानि पीबि कने सुस्ता क' जखन वैद्यनाथ एबाक कारण कहलकनि तँ सत्यनारायण जीकें नीक नहि लगलनि। ओकरा अपन देश वापस भ' जेबाक सलाह देबए लगलखिन। हुनका बौद्ध सबसँ चिढ़ छलनि। कहलखिन—'एतहि भंडारमे दू-एक मास रुकि जाउ आ विद्यालंकार परिवेणक गतिविधि आ पढ़ाइ आदिक जानकारी ल' लिअ तखने ओतए जाउ...एतए सँ पाँच-छह माइलक दूरी तँ छै...' वैद्यनाथकें शर्माजी बड़ चतुर आ तेज लोक लगलखिन। बातचीतक क्रममे शर्माजीकें एतबा जानकारी भ' गेलनि जे वैद्यनाथक संगमे सात सौ पचीस रुपया छनि। जे बाबा कल्याणपुरीक देल सिक्काक बदला करबाक व्यापारी वैद्यनाथक नाम पता अपन खातामे लिखि आ हुनकर दसखतक संग अंगूठा लेलाक बाद देने छलनि। रातिमे शर्माजीक संग रुकलाह तँ वैद्यनाथकें कहल गेलनि जे खादीक धंधामे बड़ मुनाफा छै आ ओ शर्माजीक पार्टनर बनि जाय। चुपचाप सुनैत रहलाह वैद्यनाथ आ दोसर दिन भोरे-भोर तैयार भ' अपन झोरा उठैलनि तँ शर्माजी परिवेण धरिक सवारी क' देलखिन...

1857 ई.मे विद्यालंकार परिवेणक स्थापना भेल रहैक। एहिठाम बौद्ध भिक्खु आ गृहस्थ-दूनूकें संस्कृत, पालि आ सिंहलीक माध्यमसँ बौद्धधर्म दर्शनक शिक्षा देबाक व्यवस्था छल। नारियलक पर्याप्त गाछसँ भरल आ पर्याप्त हरियरीक बीच परिवेण एकटा सुंदर टापू जकाँ लगलनि वैद्यनाथकें। एहि तरहक प्राकृतिक वातावरण दुनिया भरिक बौद्ध आ बौद्ध दर्शनक जिज्ञासुकें अपना दिश आकृष्ट करै लागल छल, ओहि कालखंडमे। स्टेशनसँ खूब बढ़िया रस्ता अबैत छलैक। एहन सहज रस्ताक अंदाज वैद्यनाथकें नहि छलनि।

उत्तर भारतीय वेश-भूषामे वैद्यनाथ विद्यालंकार परिवेण पहुँचलाह। सम्मानित नव प्रवेशार्थी हेबाक कारण हुनका ओहिठाम पहुँचा देल गेल, जतए हुनका सब सनकें ठहरबाक व्यवस्था छल। पहिले दिन ई तँ अंदाज भ'गेलनि जे बौद्धक एहि आधुनिक अध्ययन केंद्रमे प्रवेश पौनाइ ओतेक आसान नहि, जतबा हुनकासँ कहल गेल छल

सारनाथमे। परिवेणमे पहिल प्रश्न पूछल गेलनि जे एतहि किएक अध्ययन करै चाहैत छथि? फेर नीक जकाँ बुझा देल गेलनि जे अध्येताकें पूर्णतः संतुष्ट भेलाक बादे प्रवेश भेटत। एमहर कइएक वर्षसँ भारतीय पुलिस परिवेण आबि चुकल छल, ककरो ने ककरो तलाशमे। गर्म-मिजाजी स्वतंत्रता प्रेमी परिवेणमे प्रवेश नहि पाबथि—ताहि लेल बड़ पूछताछ होइ। भारतक छोट-पैघ राजनीतिक घटनाक बाद परिवेणक गतिविधि पर नजरि राखल जाइत छल। प्रवेशक लेल एकटा ओहेन विद्वानक अनुशंसा अनिवार्य छल, जकरा विद्यालंकार परिवेणक गवर्निंग बडीक मेम्बर सब नीक जकाँ जनैत होइथि। बिहार आ संयुक्त प्रांत दिशसँ राहुल सांकृत्यायन आ काशी प्रसाद जायसवालक अनुशंसा मानल जाइत छल। वैद्यनाथकें एहि दूनूमे सँ ककरो सँ व्यक्तिगत परिचय नहि छलनि। राहुल सन घुमक्कड़ यायावरक अता-पता हुनकर निकट लोको ठीकसँ नहि कहि सकैत छलाह। पता लगौलनि तँ पता लगलनि जे मास्कोमे छथि। जायसवाल जी पटनामे स्थायी रूपें रहैत छलाह। जायसवालजीक नाम संस्कृतमे एकटा पैघ चिट्ठी लिखलनि, जाहिमे अपन शिक्षा, रुचि आ तीन-चारि वर्षक गतिविधि संग अपन गामक विद्वत परंपराक संदर्भ देलखिन। हँ, पत्र पठैबासँ पूर्व गवर्निंग बडीक चेयरमैन सर जयतिलके कें देखा अएलाह। वैह तँ एहि दूनुक संदर्भमे जानकारी देने रहथिन। सर जयतिलके सँ भेट केनाइ सहज नहि छल। किएक तँ ओ लंका सरकारक प्रधान सेहो छलाह, मुदा परिवेणक छात्र ताहिमे नव-नव छात्रसँ आसानी सँ भेंट भ'जाइत छल। जायसवाल जीक पत्रोत्तर जाधरि नहि आबैत छल ताधरि परिवेणमे रहबाक व्यवस्था भ'गेलनि। सर जयतिलकेकें देश-विदेशक विद्वान सब सँ प्रायः नीक परिचय छलनि। रुचि संपन्न लोक, भेंट भेला पर सोझे काजक बात पर गप्प करथि। वैद्यनाथ संस्कृत रचना सब पर आँखि गड़ौने कहने रहथिन—जँ प्रवेश भेटल तँ सब ठीक रहत। एहिठाम भिक्खु सबकें संस्कृत पढ़ब' पड़त आ बौद्धधर्म-दर्शनक अध्ययन हेतु अहाँकें पालि आ सिंहली पढ़ए पड़त...काशी प्रसाद जायसवालक तार समय पर आबि गेलै सर जयतिलकेक नाम। वैद्यनाथकें अलगसँ एकटा चिट्ठी सेहो एलनि। नामांकन भ' गेलनि। रहबाक जगह आ भोजनादिक व्यवस्था स्थायी रूपें भ' गेलनि। एक दिन एकटा वयस्क भिक्खु कहलकनि—'एकदम ठीक उमेर पर एलहुँ...जम्बूद्वीपीय पंडित छी, परंतु पत्नीकें छोड़ि आएल छी, से किछु बुझबामे नहि आबि रहल अछि...' वैद्यनाथ दिश देखैत गंभीरतासँ बाजल रहै—'भारतीय ब्राह्मण जहिया कहिओ गाम-घर छोड़लक तँ कोनो लक्ष्य आ नीक उद्देश्य सामने रहैत छै। धर्म धरि छूटि जाइत छैक! वैद्यनाथ एतेक कहाँ सोचने छलाह। हुनका मोनमे धर्मक बात कहाँ कहिओ उठल रहनि...हुनकर विवेक संग संकल्प शक्ति नीक जकाँ जागए लागल छनि लंका आबिक...'

परिवेणक जीवन आ रहबाक ढंग नीक लागए लगलनि। छात्र बनलाक बादे सँ पालि आ सिंहलीक प्रारंभिक पाठ के पढ़ाइ शुरू भ' गेलनि एकटा संस्कृत जानकारक माध्यमसँ। ओ सेहो विद्यालंकारमे संस्कृत अध्ययन वला छात्र सबकें संस्कृतक प्रारंभिक पाठ पढ़बै लगलाह। मुदा एकटा बात हुनका बुझबामे शुरूक दिनमे नहि अएलनि जे जाहि भिक्खु सब कें ओ संस्कृत पढ़बथिन ओ सब उच्च आसन पर बैसल करथिन आ वैद्यनाथक आसन ओहि छात्र सबसँ नीचा रहैत छलनि। एकटा हमउम्र भिक्खु हुनका बुझा देलकनि जे भिक्खु किओ हो ओ तँ गृहस्थसँ श्रेष्ठ मानल जाइत छै ने! ओकर आसन ऊच्च तँ रहबे करतै। वैद्यनाथ तँ भिक्खु नहि रहथि। हुनकर पढ़ेबाक ढंगसँ परिवेणक भिक्खु सब प्रसन्न रहथिन। संस्कृत पढ़िनहार भिक्खु सबकें इच्छा होइ जे वैद्यनाथक आसन आन गुरु जकाँ रहबाक चाही। परंतु ई बात एहि ठामक प्रतिकूल छल। भोजनक समय सेहो ओ पंगतसँ बाहर बैसथि।

परिवेण ऐना बेशी दिन नहि भेल छलनि, एक दिन परिवेणक प्रमुख महा-स्थाविर नायकपाद धम्मानंदक बजाहटि भेलनि। पहिल बेर हुनकर सामने ओ गेलाह। महास्थाविर मचियानुमा छोट सन कुर्सी पर बैसल रहथिन। मुंडित केश आ काषाय वस्त्रमे हुनकर व्यक्तित्व आकर्षक लागि रहल छल। आँखि स्नेहमिश्रित लगलनि वैद्यनाथकें। प्रौढ़ताक बावजूद नाक-नक्श पर तरुणाइक कोमलता छलनि। संस्कृतमे गप्प भेलनि। एकटा सूत्र वाक्य बाजल रहथिन—प्रज्ञाया ज्ञायते सर्वम्... फेर कहलखिन—योग्यता आ समताकें चिन्हनाइ हमर सबके उद्देश्य अछि...नव ढंगसँ पगडंडी बनब' पड़त। आ एहि बातक दोसर वा तेसर दिनक बात अछि, भोजनक बाद छात्रावास अबै काल एकटा भंते कहलकनि—सूखैल बीफ आइ बड़ बढ़िया बनल छलइ... ई सुनैत वैद्यनाथक मत्स्य-मांस भक्षी दिमाग आ मोन घूमए लागल। मोन औकियाए लगलैनि। लगलनि जे कोंढ़-करेज उलटि जैतनि...

अपन कोठरीमे जेबाक बजाय नालीक कातमे बैसए पड़लनि। नियमानुसार रतुका भोजन वर्जित छल परिवेणमे। संध्याकाल हल्लुक सन फलाहार भेटैत छलैक। ओइ दिन ओहो नहि लेलनि। रातिमे बड़ी काल धरि नींद नहि भेलनि। ब्राह्मणीय संस्कार भीतरे-भीतर भफाक' उधियाए लागल रहनि। लगलनि जे ओ आब देवता-पितरकें चुडु भरि पानियो देबाक अधिकार हुनका नहि रहलनि। गाम-घरमे कहाँ ककरो बुझल छै जे वैद्यनाथ कत' आ कहाँ रहिक' की-की क' रहल अछि। कौलिक संस्कार आ कर्मकांड करै वला ब्राह्मणीय आवाज भीतरे-भीतर कह' लागलनि—'अभक्ष भक्ष कैने छै तों...' आँखिक सोझाँ पिताक रौद्र रूप प्रकट हुअ लागल रहनि। आ भोरूक वा राति भीतरसँ आवाज एलनि—केलानिया आबिक' कोनो पैघ गलती तँ नहि भेल अछि ? फेर कोलंबोक

खादी भंडार वला शर्मा मोन पड़लखिन—बौद्ध कोनो संप्रदाय थिक, सब किछु खाइ-पीबैए ओ सब... स्वर भीतरे-भीतर सुनबामे एलनि।

मिथिला के ब्राह्मण सबमेसँ अधिकांश अपन-अपन कुलेदवता जे प्रायः दस महाविद्यामे सँ कोनो होइत छै, तकरा उपनैन, मुड़न अथवा कबूला-पाती के अवसर पर छागरक बलि प्रदान करैत अछि। भगवतीक प्रसाद सरूप छागरक मांस रुचिपूर्वक खाइत अछि। माछ तँ प्रायः चारि-पाँच दिन पर खाइते अछि मैथिल। माछ खेना जँ सात आठ दिन भ' जाइत छैक तँ मोनमे छटपटी उठए लगैत छैक। ई हाल वैद्यनाथक सेहो छनि। पड़बाक मासु सेहो मैथिल खाइत अछि जड़कालमे। ने जानि आर कतेक पक्षीक लेल लेर चुबैत रहैत छै लोक सब के। काश्यप-गोत्रीय ब्राह्मण कें छोड़ि आन मैथिल काउछ सेहो तकैत रहैत छथि...रतुका अंतिम पहरक अंतमे आँखि लगलनि तँ सपना देखलनि जे एकटा हट्ठा-कट्ठा सांड हुनका अपन सींग पर उठा क' आसमानमे उड़ल जा रहल अछि...डरै नींद टूटि गेलनि तँ पसीनासँ तर-बतर देखलनि अपनाकें...

लंकाक बौद्ध विहारमे अबैत-अबैत भौतिक आ दैविक शक्तिक प्रति आकर्षण खत्म जकाँ भ' गेल रहनि। ओ बुझ' लागल छलाह जे मनुष्य चाहत तँ अपन भाग्यकें बदलि सकैत अछि। फेर सोचलनि जे हेबाक छल से भ'गेल। अपन गामक ओ शायद पहिल व्यक्ति छथि जे अभक्ष्य ग्रहण कैने हैत! संभवतः आगू भविष्य आरो किछु अनर्थकारी भ' सकैत अछि। फेर एकटा संकल्प लेलनि, सपना आबै तँ आबै किएक तँ सपना पूरा हैत अथवा टूटत। सपनाकें टूटब मोनकें तोड़ैत छैक। ओना ओ कतेक सपना देखने रहथि आ ओहि सपना सबकें पालने रहथि...जीवन जीबा योग्य बनेबा आ दोसरोकें जीब' देबाक लेल ओ सब किछु ग्रहण क' सकैत छथि जे सहज ढंगसँ उपलब्ध हैत बिना अनका कष्ट देने। उपनैन संस्कार जकाँ इहो हुनका लेल एकटा नव संस्कार हो संभवतः। तत्क्षण मिथिला आ मिथिला पुत्री अपराजिता मानस पटल पर आबि गेलनि...'स्मरणो जकर करै अछि क्षन भरि/सभ शोक क' अपनोद... भूमि आ भूमिपुत्रीक मजबूरी बुझैत हैत अवस्से। सपनामे कतेको दिन धरि वृषभक सींग पर झूलैत रहलाह...आसमानमे घूमैमे मोन लागए लगलनि। नींद अएबाक प्रतीक्षा सांझे सँ कैल करथि। संगे स्वाद लेबए लगलाह अभक्षक। आठ-दस दिनुका बाद आसमानी टहलान वला सपना एनाइ बंद भ' गेलनि आ गड़बड़ होइत स्वास्थ्यकें देखि अभक्षक भक्षसँ अपनाकें दूर क' लेलनि।

विद्यालंकार परिवेणमे जे भिक्खु अध्ययन करैत छल तकरा सबकें एक ने एकटा संरक्षक अभिभावक भेटैत छलैक। ओ संरक्षक भिक्खुकें सब तरहक सुविधा असुविधाक ख्याल रखैत छलैक। वैद्यनाथक कतेको समवयस्क आ प्रौढ़ भिक्खु सब सलाह दैत

छलनि जे बौद्धधर्मक दीक्षा ल'लिअ। एक बेर गवर्निंग बाडीक मिटिंगक बाद अध्येता आ अध्यापक सबकें संबोधनक बाद वैद्यनाथ कें कहल गेलनि जे जँ गंभीर अध्येता बनए चाहैत छी तँ परिवेणक कोनो प्रतिष्ठित भिक्खुसँ दीक्षा ल' लिअ। ओहि बीच राहुल जी कोनो काजे विद्यालंकार परिवेण अएलाह। पहिल-पहिल हुनकासँ वैद्यनाथक परिचय भेलनि। एक मैथिली भाषी आ दोसर भोजपुरिया। दूनू ज्ञानक भूखक कारण अपन अपन घर सँ दूर होइत गेलाह—से वैद्यनाथकें बुझबा मे आबि गेलनि। वैद्यनाथ देखलनि जे राहुल जी कें परिवेणमे बड़ बेशी आदर-सम्मान भेटैत छनि। हुनकर अध्ययनशीलता आ विचार मे खोजी आ तार्किकतासँ किओ हुनकासँ प्रभावित भेने बिना कहाँ रहैत छल। ओहिबेरक पहिल-पहिल संग-सुखमे वैद्यनाथ हुनका पैघ भाइ मानि लेलकनि। राहुल जी वैद्यनाथक परिचय परिवेणक किछु ऐहन लोक सबसँ करा देलखिन जे नव दुनिया आ तकरा लेल नव समाजक विकास हेतु प्रतिबद्ध रहल छलाह।

अढ़ाई-तीन मास बौद्धधर्म और बौद्ध दर्शन-साहित्यक अध्ययनक बाद बौद्ध धर्ममे दीक्षित हेबाक मोन बनौलनि वैद्यनाथ। अपन घर-गामसँ हजारो मील दूर भ' समुद्र नांघलनि, अभक्षभोजी बनलाह। पत्नी ल'क' मोन परेशान नहि..., से हँ प्रतिदिन कोनो-ने-कोनो कारणे ओ मोन पड़ैत रहैत छनि...कोनो दायित्व बोध निजी नहि लागि सार्वजनिक लगनि। आ 1937 ई. मार्चमे ओ नायकपाद धम्मानंदसँ बौद्धधर्मक दीक्षा ल' लेलनि। धम्मानंद कें आर कैकटा भारतीय शिष्य छलखिन। राहुल सेहो हुनकासँ दीक्षा नेने रहथिन। दीक्षाक बाद धम्मानंद कहने रहथिन—गुणवान शिष्य तँ गुरुक जीवनक सार्थकता होइ छैक... तरौनीक कुलीन मैथिल ब्राह्मण मुंडित माथ आ काषाय वस्त्रक संग बौद्ध-भिक्खु भ' गेलाह। पहिने अपन लोक-वेद छुटलनि फेर अपन भूमि आ आब अपन धर्म आ संप्रदाय सेहो छुटलनि। नामो छोड़ए पड़लनि। नव बौद्ध आ नव नाम...दीक्षाक बाद भिक्खुक नाम राखल जाइत छैक। नामकरणक समय विचारल जाइत छैक की उद्देश्य अछि। वैद्यनाथक मोनमे बौद्धदर्शनक पुनर्व्याख्याक बात उठलनि, फेर 'माध्यमिक'क व्याख्याक संबंध सोचने रहथि। माध्यमिक रचयिता शून्यवादक प्रवर्तक नागार्जुनक नाम सामने आएल। प्राचीनकालमे कतेको नागार्जुन भेल छथि। शब्दकोश देखलनि तँ नागार्जुन नामक वृक्ष सेहो पऔलनि। दुधिया घासकें एक प्रकारक नागार्जुनी घास कहल जाइत छैक। घास, वृक्ष आ मनुष्यमे एके संगे नागार्जुन पसिन पड़लनि आ भ' गेलाह भिक्खु नागार्जुन आ छुटलनि वैद्यनाथ मिश्र...दीक्षाक समय सर जयतिलकेक मित्र बैरिस्टर निशंक सेहो आएल रहथिन आ ओ भिक्खु नागार्जुनक संरक्षक बनबाक दायित्व लेलखिन। निशंकसँ दूबेर पहिने परिवेणमे भेंट भेल रहनि। संस्कृत साहित्यक ज्ञाता आ काव्यप्रेमी व्यक्ति छलाह निशंक। ओ भिक्खु नागार्जुनक संस्कृत रचना रुचि ल'क' सुनथि आ अपन

घोड़ागाड़ी पर कहिओ काल घुमा-फिरा अबथिन। भिक्खु नागार्जुन सिंहली सेहो सीखि लेलनि। जखन हुनकर संस्कृत रचना 'कृषक दशक' क सिंहली रूपांतर आ अनुवाद छपल तँ परिवेणक लोक बड़ स्नेहसँ देखए लगलनि।

लंकामे पहिल बेर गंभीरतासँ सम-सामयिक आ सामाजिक-राजनैतिक दर्शन के अध्ययन शुरू केलनि। परिवेणक पुस्तकालय आ बैरिस्टर निशंकक व्यवस्थित अध्ययन-कक्षक कारणे नाना प्रकारक किताब सभ कें उनटैबाक-पुनटैबाकक संग पढ़बाक अवसर भेंटि गेलनि। राहुल जी तँ सोवियत रूसक संबंधमे बहुत बात कहि गेल छलखिन। उत्सुकता जागल रहनि तें रूस आ समाजवाद आ बढ़ैत साम्यवाद सँ संबंधित सेहो कतेको किछु पढ़ि गेलाह। एहि क्रममे मार्क्स आ लेलिन कें बुझलनि। भगवान बुद्धक मध्यमार्ग आ विश्व के नक्शा पर तेजीसँ पसरैत समाजवादी जीवन-दर्शन-दूनू कें बड़ मनोयोगसँ बुझबाक प्रयास करए लगलाह। एतबा तँ बुझिए गेल रहथिन जे दिन सँ दिन बिगड़ैत सामाजिक वातावरणमे धर्म नीक जकाँ अपन भूमिका निबाहएमे लागल अछि। सिंहलक लंका समसमाजक नेता सबसँ संपर्क बनबए लगलाह। एकर असर ई भेलनि जे हुनकर अपन पारिवारिक परिवेशक रूढ़िक रंग नीक जकाँ छुटए लगलनि। मिथिलाक पांडित्य परंपराक अनुसार वैद्यनाथ मिश्र ओहि वेदांत वंशसँ कतहु ने कतहु जुड़ैत छलाह जे पूर्व मीमांसा आ उत्तर मीमांसाकें सम्यक रूपें जानैत छल...एहि दूनू मीमांसा सब कें जाननिहार कें 'मिश्र' कहल गेल हैत संभवत:। विचारपूर्वक तत्वनिर्णय आ वैदिक मंत्र सबहक अर्थ विषम शंका के समाधान केनाइ तँ मीमांसा होइत छैक ने! कोनो जमानामे हुनके वंशक कोनो 'नैयायिक'कें कोनो राजा शालिग्रामक लेल सोनाक छोट-छीन सिंहासन बनवा देने छलनि। आ तिनकर प्रपौत्र जीवन-यापन लेल सोनार लग जाक' ओकरा बेचि आएल छल।

अपन गाम-समाजक कर्मकांडी जीवन आ यात्रा, ताहि बीच स्वामी केशवानंदक आर्यसमाजी परंपरा आ तात्कालिक ज्ञानक बाद बौद्धदर्शन नव ऊर्जा देबए लगलनि। आब वैद्यनाथ कोनो बातकें व्यावहारिक आ तार्किक ढंगसँ सोचल करथि। अपन गाम आ काशीमे लोक सब कें भोरसँ दुपहरिया तक पूजा करैत देखैत छलखिन। एखनो धरि ओ नहि बुझि सकलाह अछि जे शालिग्राम अथवा नर्मदेश्वर आ कि महादेव आ फेर भगवती पीड़ी लग घंटा-क-घंटा किएक बैसल जाइत छैक। पूराक पूरा दुर्गासप्तशती वा श्रीमददेवीभागवत आ श्रीमद्भागवत सब दिन जाहि तेजी अथवा हड़बड़ी जकाँ पाठ कैल जाइत अछि ओकरा साफ-साफ बुझनाइ, कोनो व्यक्तिक वशक बात नहि, देवी-देवता भने बुझैत होनि! एहने लोकक बीच हुनकर अक्षर ज्ञान मात्र रखनिहार पिता सीखने रहथिन—का चिंता मम जीवने यदि हरि विश्वंभर गीयते... वैद्यनाथकें जीवन नदीक धार

जकाँ प्रवहमान आ गतिशील लागए लगलनि। नव-नव कात-कछेर भेटैत रहलनि, कतहु मलिन तँ कतहु विमल...गनौली, पचगछिया, काशी आ कलकत्ता अध्ययन हेतु गेलाह आ तकर बाद यात्रा आ यात्रा...लंकामे पंद्रह-सत्तरह मासक समय पढ़बाक संग-संग समयक प्रवाहकें बुझबामे गेलनि।

कलकत्ताक हिंदी आ दक्षिण भारतक अंग्रेजी अखबार परिवेणमे अबैत छलैक। बड़ मनोयोगपूर्वक भिक्खु नागार्जुन अखबार पढ़ल करथि। भारतीय भिक्खु सबके संग भारतक घटना आ राजनीति पर खूब गप्प करथि। बिहार आ युक्त प्रांत आ अबोहरक चिट्ठी-पतरीमे सेहो किछु सूचना भेटल करनि। ओहि बीच कलकत्ताक हिंदी दैनिकमे स्वामी सहजानंद सरस्वतीक 'लट्ठ हमारी जिंदाबाद' शीर्षकसँ एकटा लेख हुनका बड़ उत्तेजक लगलनि। आर्यसमाजी होइतो स्वामीजी वैचारिक रूप सँ समाजवादी छलाह आ बिहारकें अपन कर्मभूमि बनाक' किसान आ खेत मजदूरक समस्या पर अपना कें केंद्रित केने छलाह। स्वामीजीक आलेख पढ़लाक बाद भिक्खु नागार्जुन भारत आ विशेष क' बिहार आ युक्त प्रांतक जमीन आ किसान-मजदूर समस्या पर सोचए लगलाह...किसान आ जन-मजदूरक संग छात्र-नौजवान सेहो अपन-अपन वर्गीय हितक लेल स्वतंत्रता आंदोलनसँ अपना अपना कें जोड़ए लागल छल। भिक्खु नागार्जुनकें नहि रहल गेलनि, विस्तारसँ जानकारीक जिज्ञासा बटलनि तँ स्वामीजीकें पत्र लिखलखिन। पत्राचार शुरू भेल। किछु जानकारी भेटलनि। थोड़ेक पत्राचारक बाद स्वामी सहजनानंद हुनका राय देलखिन जे ओ बिहार आबथु, अपन धरतीकें देखथु...फेर लिखलखिन—अतीतक बीहरिमे घुसिक' अहाँ बैसल छी, वर्तमान संघर्षक मैदानमे आउ तँ कने... आ, ठीक ओहि समय राहुलजी भिक्खु नागार्जुनकें बौद्ध साहित्यक' खोज अनुसंधान लेल तिब्बत जेबाक हेतु देश आबि जेबाक आमंत्रण पठौलखिन...

देह पर बौद्ध परिधान आ मन-मिजाजमे समाजवादी-साम्यवादी दर्शनक बीज अंकुरित हुअ लागल रहनि। यात्रीक यात्रा फेर शुरू हेतनि..हिमालय होइत तिब्बतक यात्रा सम्मोहित क' रहल छलनि तँ देशमे चलि रहल संघर्ष अपना दिश सेहो आकर्षित क' रहल छलनि। भिक्खु नागार्जुन राहुल आ स्वामी सहजानंद सरस्वती कें मोने-मोन प्रणाम केलनि—'राह बताने वाले जो हों/उन्हें प्रणाम किए जा...'

मो. 9304884025



दृष्टि

एहि स्तम्भक अन्तर्गत हितनाथ झा पंचानन मिश्रक सम्पूर्ण लेखन पर गंभीरतापूर्वक विचार कयलनि अछि। कमे समयमे पंचानन मिश्र मैथिलीकें अपन बहुविध लेखन आ संपादनसँ समृद्ध कयलनि। तहिना प्रवीण भारद्वाज मैथिलीक आलोचक मोहन भारद्वाजक लेखन-यात्रा पर अपन गंभीर विचार व्यक्त कयलनि अछि।

पंचानन मिश्रक दृष्टि : मूललेखन तथा सम्पादन

हितनाथ झा

पंचानन मिश्रक जन्म दरभंगा नगरक लालबाग मोहल्लाक विख्यात मिश्र परिवारमे 01 अप्रैल 1952 ईस्वीमे भेल छलनि। हिनक परिवार अपन विद्वत्ता, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं मैथिल संस्कृतिक संरक्षणमे कट्टरताक कारणसँ मिथिलामे पूर्वहिसँ सम्मान्य बनल रहल अछि। हिनक पिता पं. गंगाधर मिश्र संस्कृतक प्रतिष्ठित विद्वान एवं मैथिलीक सुप्रसिद्ध कवि-साहित्यकार छलथिन। साहित्यक प्रति हिनक झुकाव अप्रत्याशित नहि छल, अपितु साहित्यक संस्कार हिनकामे कूटि-कूटि क' भरल छलनि।

जीवनयापन हेतु पूर्वमे बिहार सरकार आ पश्चात झारखंड सरकारक श्रम विभागक अधिकारी बनि झारखंडक अनेक जगह स्थानांतरण होइतो झुमरीतिलैयामे अपन स्थायी आवास रखलनि। झुमरीतिलैया(कोडरमा) क्षेत्र भारतक खनिज-संपदा जाहिमे कोयला, अबरख आदिक कल कारखाना तँ अछिये, जंगल, पहाड़ आ प्राकृतिक मनोरम छटा एहिठाम पर्याप्त मात्रामे अछि, स्वाभाविके रोजगार सृजन एहि क्षेत्रमे अत्यधिक मात्रामे होयब आ तैं, भारतक प्रायः सभ क्षेत्रक लोक स्थायी वा अस्थायी रूपसँ अवस्थित अछि।

हिनक कार्य क्षेत्र श्रम अधीक्षकक रूपमे छलनि। श्रमिक, बालश्रमिककें मालिकक शोषणसँ बचयबाक हेतु, उचित पारिश्रमिक दिअयबाक हेतु, सरकारक प्रतिनिधि रूपमे छलनि, तैं ई ओहि समाजसँ जुड़ल रहलाह, आ कतेक उचित -अनुचित देखैत रहल होयताह। साहित्यिक प्रतिभा आ तत्कालीन वातावरण (मनोरम दृश्य आ श्रमिक शोषण)कें देखैत यदि क्यो आन रहैत तँ अपन कलम कथा-कविता-उपन्यास आदि दिस बढ़बैत किन्तु से नहि कय हिनक लेखनी गंभीर विषय, शोधपरक कार्यपर जे चललनि से आजीवन निरंतरताक संग चलिते रहलनि आ सेवानिवृत्तिक बाद तँ द्रुतगतियें वेग पकड़लकनि। जे ओ मैथिल समाजकें देलनि, से मैथिली साहित्यकें समृद्ध करबामे बहुत बेसी सहायक सिद्ध भेल अछि।

हिनक साहित्यिक अवदानक विचार करबासँ पूर्व, हजारीबाग स्थित त्रिवेणीकांत ठाकुर साहित्य पुरस्कार(2018) प्रदान करैत प्रशस्ति वाचनक एक अंश एतय हम प्रस्तुत कय रहल छी, कारण आगू एही विषयपर विश्लेषण करबाक प्रयास करब–'मैथिलीक प्रति अनवरत चिन्तन, लेखन, सम्पादन, संगठन एवं जागरण-ई पाँचो क्षेत्र मैथिलीक पाँच टा मुँह थिक जाहिसँ पाँचो प्रकारक वाणी गुंजित होइत रहैत अछि। से जतय एके व्यक्तिक मुँहसँ एहि पाँचो स्वरक मिश्रण बहराइत हो, तनिक जँ किछु आनो नाम रहितनि, तैयो मैथिल समाजमे पंचानन मिश्रेक नामसँ जानल जैतथि।'

उपर्युक्त कथनसँ ई बात स्पष्ट अछि जे हिनक समग्र मूल्यांकनमे उपर्युक्त पाँचो विधापर कार्य होबक चाही। एहि संक्षिप्त आलेखमे हम कोशिश करब जे किछुओ अंशमे ई सभ आबि सकय।

साहित्यमे ई गद्य विधाकें अपनौलनि। हिनक चिंतन मैथिलीक ओहि विधापर रहनि, जाहि विधामे या तँ काज नहि भेल अछि अथवा कम भेल अछि। हिनक सोच इहो रहनि जे मैथिलीक लेल जे पूर्वमे काज कयलनि आ वर्तमानमे हुनका बिसरल अबडेरल जा रहल अछि, हुनक कीर्तिकें समाजक सोझाँ प्रस्तुत करी। ई मिथिलासँ संबंधित पुरातात्विक, इतिहासपरक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक, सामयिक एवं भाषायी आंदोलन-विषयक निबंध, रिपोर्ताज, संस्मरण, परिचर्चा, समीक्षापरक पुष्कल रचनाक सृजन कयलनि।

मैथिल समाज, अभिप्राय, ओ लोकनि, ब्रजमोहन ठाकुर, जयकान्त मिश्र, लोक विमर्श, महाकुम्भ, स्मृति कुञ्ज आदि हिनक मूल कृति प्रकाशित छनि आ किछु पोथी प्रकाशनाधीन छनि जेना साहित्य अकादेमीसँ प्रभास कुमार चौधरी (विनिबंध), पंडित गंगाधर मिश्रक सारस्वत साधना आदि।

कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली-प्रवेशक मुख्य सूत्रधार पं. ब्रजमोहन ठाकुरक कृतित्वकें विस्तारपूर्वक मैथिल समाजक सोझाँ राखि ई हुनक अवदानक महत्वकें निरूपित कयने छथि। पं. ब्रजमोहन ठाकुर प्रचारसँ सभ दिन दूर रहलाह। एहि प्रसंग हुनक ई उक्ति स्वतः स्पष्ट अछि–'म.म. डॉ. उमेश मिश्रक सुयोग्य बालक डॉ. जयकान्त मिश्र हमरा पत्र देने छलाह जे कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीक समावेश कोना भेल से लिखल जाय, जाहिसँ हम अपन प्रस्तावित पुस्तकमे ओकर सन्निवेश करी। परन्तु कर्तव्य बुद्धिसँ कयल गेल अपन ई कार्यक प्रोपगंडा (प्रचार) करब इष्ट नहि छल, तैं हम हुनका पत्रोत्तर नहि देलियैन्ह।'

किन्तु पंचानन मिश्र हिनकहि टा नहि, एहन अनेक महानुभावक मैथिलीक लेल कैल गेल कार्यक विस्तारसँ 'ओ लोकनि'मे वर्णन कयलनि, जेना विभूति भूषण मुखोपाध्याय, रामचतुर मल्लिक, ईश्वरचंद गुप्त, भारतरत्न विस्मिल्ला खां, पं. विनोदानंद झा, पद्मश्री

उपेन्द्र महारथी, पद्मश्री गंगा देवी, पद्मश्री विंध्यवासिनी देवी, सत्येन्द्रनाथ चौधरी आदि अनुसंधानपरक लेख तँ छनिहें, 'स्मृति-कुंज'मे एक दर्जन साहित्यकार/कलाकारक विषयमे जीवन्त स्मरण छनि जेना डॉ. सुभद्र झा, डॉ. अणिमा सिंह, प्रो. कृष्णकांत मिश्र, प्रो. मायानंद मिश्र, जीवकान्त, डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, साकेतानन्द, विवेकानंद ठाकुर, पद्मश्री महासुंदरी देवी आदि।

'मैथिल समाज'मे जेना नामेसँ स्पष्ट अछि, अधिकांश लेख मिथिलाक सामाजिक अवलोकन अछि। मिथिलामे अदौसँ विविधतापूर्ण जाति, उपजाति, समुदाय, सम्प्रदाय, संस्कृति, परंपरा, रीति-रिवाज, धार्मिक मान्यता, विवाहक विद्रूपता, नारी शिक्षा आदि विषयक उन्नैस लेख सम्मिलित अछि। जनजातीय समुदाय, बाल शोषण, भ्रूण-हत्या, दलित जागरणसँ लय, मैथिल महिला : चहुँ दिस भेल इजोरे आदि आलेख तत्कालीन समाजक अयना जकाँ दृश्य सामने देखा पड़ैत अछि।

'लोक-विमर्श' हिनक महत्वपूर्ण कृतिमेसँ एक अछि। लोक साहित्य कोनो भाषाक लेल समृद्धिक परिचायक होइत अछि। मैथिलीमे सेहो लोक साहित्य भरल -पुरल अछि। मिथिलामे जाति-प्रथा आ जातिक अनुसार ओहि जातिक लोककें कार्य करब प्रमुख छल। कोनो गामक संपूर्णता लेल ओहि गाममे बारह वर्णक लोक रहब आवश्यक होइत छल, तखने ओ गाम विकसित कहबैत छल। सभ एक दोसरपर निर्भर रहैत छल। सभ एक-दोसरक काज अबैत छल। स्वाभाविक रूपसँ लोकसाहित्यमे जातिक गुणक वर्णन सेहो आयल अछि। लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्य, लोकोक्ति, लोककला, लोकसंस्कृति आदि अनेक एहन वस्तु अछि, जकरा समेटब आजुक वा आगुक पीढ़ीक लेल महत्वपूर्ण अछि। यदि से नहि हैत तँ मैथिली-संस्कृत साहित्ये जकाँ बहुत वस्तु विलुप्त भय जायत। अनेक विद्वान एहि दिस अग्रसर भेलाह ओहिमे पंचानन मिश्रक महत्वपूर्ण विमर्श अयलनि अछि 'लोक-विमर्श' मे। एहि पोथीमे एक्कैस आलेख संग्रहित अछि। मिथिलामे लोक-विमर्शक परंपरा, लोक साहित्यमे गवर्नेंस, लोक साहित्यक विदेशी अध्येता, लोक साहित्य आ मुसलमान, मैथिली लगनी, संस्कार गीत, सलहेस गाथा, दीनाभद्री लोकगाथामे वीररस, लोकनृत्य, विद्यापतिक लोकोक्तिमे लोकजीवनक विविधता, मैथिली लोकोक्तिमे जातीय चर्च आदिक महत्वपूर्ण विमर्श अछि, सूचनाप्रद तँ अछिये।

हम एहि पोथीक मात्र दू विषयक समृद्धताक परिचय कराबय चाहैत छी जे हमरालोकनिक संस्कृतिमे लोकसाहित्य कतेक समृद्ध छल।

विवाह संस्कारसँ सम्बन्धित प्रमुख विध(सभ विधक अवसरपर गीत गाओल जाइत अछि) 'आम महु बियाहक गीत, परिछनि गीत, कुमारिक गीत, देहरि छेकबा कालक गीत, वेदी घुमयबा कालक गीत, लाबा भुजबा कालक गीत, ओठंगर कालक गीत,

धोबिन सोहागक गीत, नैना-योगिनीक गीत, लावा छिटय कालक गीत, सिंदूरदान कालक गीत, विवाह कालक गीत, सियूँथि नोतबा कालक गीत, कन्यादान कालक गीत, सम्मरि, चुमाओनक गीत, सिरहर भरबाक गीत, कोबर गीत, दनहीक गीत, सौजन्यक गीत, मुट्ठी खोलबाक गीत, जुट्टी खोलबाक गीत, महुअक गीत, हड़ीर पानक गीत, वरकें खयबाक कालक गीत, बरियाती खयबाक कालक गीत, पटिया झाड़बाक गीत, फूल बेलपात लोढ़बाक गीत, गौरी पूजाक गीत, चतुर्थी कालक गीत, उबटन लगयबाक गीत, औंठा पकड़बाक कालक गीत, घोघटक गीत, जेमनारक गीत, पुछारीक गीत, पुरोहितक गीत, बेलपत्र दैत कालक गीत, मौर पहिराबैक गीत, साँखर सांठबा कालक गीत, घसकट्टीक गीत, बरकें बउंसवाक गीत, मटकोरक गीत, हरदि लगयबाक कालक गीत, मातृका पूजा कालक गीत, पक्की सगाइक गीत, तिलकक गीत, सगुनक गीत, दसौंथक गीत, डोमकचक गीत, जोग गीत, खानपान गीत, पएर धोअयबा कालक गीत, मेन मुट्ठा गीत, मरजाद भोजक गीत, खोंइछ भरायक गीत, चोड़ा कछाय गीत, वेदी उखरबाक कालक गीत, काजा गीत, कजेटा गीत, पानी प्याला गीत, पनचढी गीत, दिनधराय गीत, सात फोराइ गीत, पानक गीत, आगि पजरबाक गीत, पनही पूजाक गीत, पनही नुकयबाक गीत, छोड़बन्ही गीत, भुइँया पुजाइ गीत, लाठी मारा गीत, हँसुली पहिरबा कालक गीत, काड़ा पहिरबा कालक गीत, लहठी गीत, थारी गीत, दूल्हाकें वरमाल पहिरयबा कालक गीत, कंठमाला पहिरयबा कालक गीत, नकमुन्नी पहिरयबा कालक गीत, बिजौठ पहिरयबा कालक गीत, खड़खरिया चढ़बाक गीत, महफा वा सवारीसँ वरकें उतारबाक गीत, कागा गीत, तोता दहिगन गीत, नीलकंठक गीत, भगजोगनी गीत, धान छूबैक गीत, बँसबट्टी गीत, पुरहर पातिल स्थापनक गीत, भतखौक गीत, मड़वा गीत, कठबैहे गीत, लकड़ी छाड़ गीत, घीढारी गीत, घड़ी गीत, घरदेखिया गीत, लड्डू पान गीत, कुटनी गीत, भाइ-बहिन गीत, नारि चुमाबैक गीत, पुरोहितकें गारि गीत, भेड़ा गीत, टेमी पड़वाक गीत, कौड़ी खेलयबाक गीत, माँछ रन्हबाक गीत, छड़ी मारबाक गीत, बिसहराक गीत, आँखि मुनबाक गीत, हरदि पिसबाक गीत, कनियाँक मुँह देखबाक गीत आदि।'

लोकनृत्यक अनेक प्रकार अछि, किछु प्रमुख लोकनृत्यक प्रकार हिनक पोथीमे अछि, जे आब बहुत विलुप्त भेल जे रहल अछि, देखल जा सकैछ–

तांत्रिक ओ पौराणिक नृत्य

नारदीय, मसान भैख, झिझिया, नैना-योगिन, दुलाराम, षट्चक्रनृत्य, मूलाधारचक्र नृत्य, धरतीचक्र नृत्य, स्वाभिमान चक्रनृत्य, मणिपुरचक्रनृत्य, आज्ञाचक्रनृत्य, सहस्रचक्रनृत्य, उच्चाटन नृत्य, प्रार्थनानृत्य, मालिननृत्य, महानृत्य, संजीवनी नृत्य, वशीकरण नृत्य,

पंचायक नृत्य, अग्निनृत्य, अत्रिनृत्य, असिखण्डा नृत्य, स्वाधिष्ठानचक्र रणचण्डी नृत्य, पूजा नृत्य, ब्रजयोगिनी नृत्य, योगिनी अघोरी नृत्य आदि।

लोकदेवी-देवता आ गाथागीत आधारित नृत्य

लोरिक, सलहेस, कोहबर, विरोग, गहबर, चौपहरा, विषहरा(साँप) नृत्य, कमला नृत्य, दयाल नृत्य, कमला-कोइला नृत्य, डामर नृत्य, महादेवी गौरी नृत्य, नैका-बनिजारा नृत्य, विजयमल्ल नाच, सामा-चकेबा, दसौत, करमा नृत्य, संथालनृत्य, जादुर -नाच, शशिया, लुखेसरी, बघेसरी आदि।

समगरदा नाचक अंतर्गत

डोमकछ, जट-जटिन, झूमर, बरखा नाच, धनरोपनी नाच, धनकट्टी नाच, बंसचढी नाच, छकुरीबाजी नाच, बलवाही नाच, पुतोहिया नाच, नचनी, घरवानी नाच, रमखेलिया नाच, भौजिया नाच, लोघामुत्ता नाच, हुडुक नाच, नटुआ नाच, कौड़ी फेकब नाच, पइसा छिटबा नाच, मनचुबही, कटहीघोड़ी, धोबिया, नट-नट्टिन, बटौली, हाँचचकेब, बम्फी नाच, विपदा नाच, खंजन चिड़ैया, घसकट्टी, अमरा नाच, घघरी फहरायब नाच, जंगल नाच, मैनावती नृत्य, ढढ़िया नाच, करम नाच, झुमरी नाच, पूरबी नाच, विद्यापति नाच, विदापत नाच, मृदंग नाच, रास नाच, किसना नाच, पखावज नाच, पुराली नाच, बतहा-बतही।

अठारह अध्यायमे विभक्त, 'महाकुम्भ' (यात्रा-वृतान्त), मैथिलीक इतिहासमे, अन्छुअल वस्तु सभ समाजक समक्ष अनुसंधानपरक तथ्य सभक संग, विलुप्त होइत वस्तु, अपन धरोहर सहेजि स्वर्णिम इतिहास सुरक्षित आ जीवन्त वृतान्त अछि।

महाकुम्भ 'प्रयागमे आयोजित 2013 इस्वीक देखल, सुनल, गुनल, मैथिलीक पहिल यात्रा वृतान्त थिक। महाकुम्भक वर्तमान परिदृश्य आ अतीत, इतिहास, परम्परा, देशी-विदेशी अध्येताक अनुभव समाहित अछि। नागा संन्यासी, संन्यासी, संन्यासिनी, शाही -स्नान, मेहतरानी, भू-समाधि, पाकिस्तानक चारि गाम, दुर्घटना, आत्महत्या, गाँजाक धन्धा, कुम्भ-अध्ययन, मीडिया सेंटर, प्रयाग महाकुम्भमे मेला आदि सभ वस्तु पर विस्तृत वृतान्त अछि एहि पुस्तकमे।

डॉक्टर अमरनाथ झाक कर्मभूमि ओ अमिताभ बच्चनक जन्मभूमिक अनछुअल प्रसंग सभ सेहो पठनीय अछि–कुम्भ त्रिवेणीसँ सरोकार तथा परिशिष्टमे 'प्रयाग महाकुम्भक आत्मकथा' सभ भेटत एक्के ठाम, मैथिलीमे पहिल बेर।

हिनक किछु मूल पुस्तक जे प्रकाशनाधीन अछि आ जे पांडुलिपि अछि, प्रकाशित भेने आओर व्यापकताक संग हिनक विश्लेषण हैत से, निर्विवाद।

हिनक संपादन कला पत्रिका हो व स्मारिका, मूल पुस्तक हो वा संकलन-संपादन, अनुवादक संग संपादन हो आदिक हिनक दृष्टि साफ अछि, कतौ कोनो खटकै वला नहि। सफल संपादक एक कुशल समीक्षक होइत अछि आ कुशल समीक्षक एक सफल संपादक। लेखनक स्तर, पाठकक रुचि, अनुसन्धानसँ लय समसामयिक साहित्यपर नजरि राखब आ एक स्पष्ट दृष्टि राखि जँ संपादन कैल जाय, तँ ओ जे हो, पुस्तक हो -पत्रिका हो, पाठकक बीच लोकप्रिय हेबे टा करतैक, से हिनका एहि कलामे यथेष्ट यश भेटलनि।

हजारीबागसँ मैथिली मासिक बागमती दामोदर टाइम्सक किछुए अंक (10 मासिक आ 09 त्रैमासिक) 1993मे निकलि सकलैक, मुदा जे निकललैक से एखनहुँ धरि साहित्यानुरागीक मनमे बसल छैक। तत्कालीन समयक वरिष्ठ साहित्यकारसँ लय नवोदित साहित्यकारक सहयोग लेलनि। पत्रिकाक गुणवत्तामे कतौ समझौता नहि कयलनि। एहि हेतु हिनका अनेक लेख छद्मनाम(प्रतीक, अभिनव, आयुजानन्द, संगीता वर्मा)सँ लिखय पड़लनि। कोडरमासँ तमोहाक संपादन सेहो कयने छथि।

पुस्तकक रूपमे हिनक संपादनमे म.म.उमेश मिश्र अभिभाषण समग्र, डॉ. उमेश मिश्र रचना संचयन, मैथिली लगनी, कोसी गीत (संग-प्रस्तुतकर्ता), मैथिली नदी गीत संचयन, नमामि गंगे, दलित मैथिली कथा संचयन, मिथिला संस्कार गीत, डॉ. अमरनाथ झाक डायरी (अनुवाद, संकलन, संपादन), डॉ. जयकान्त मिश्रक साक्षात्कार, सहित हिंदी-अंग्रेजीमे सेहो मैथिली साहित्य का दिग्दर्शन, बिहार गाता है (प्रस्तुतकर्ता), जयकान्त मिश्र सलेक्टेड राइटिंग ऑन मैथिली लिटरेचर, म.म.उमेश मिश्रः सलेक्टेड राइटिंग ऑन मिथिला, विश्वविभूति डॉ. अमरनाथ झा आदि प्रकाशित छनि आ किछु प्रकाशनाधीन सेहो। अनेक संपादित पुस्तकक पांडुलिपि तैयार छनि, ओहिमे एक झारखंडमे मैथिलीक अनुगूंज सेहो छनि।

उमेश मिश्र रचना संचयन

'उमेश मिश्र रचना संचयन' साहित्य अकादेमीक प्रकाशन थिक। महामहोपाध्याय उमेश मिश्र (1895 -1967) दर्शन शास्त्र, संस्कृत, मैथिली, अंग्रेजीमे समान रूपें लिखैत छलाह। मैथिलीमे लिखल हिनक अनेक निबन्ध, मिथिला मोद, मिथिला मिहिर (मिथिलांक सहित), वैदेही, स्वदेश, गद्य कुसुमांजलि, बटुक आदिमे छपैत छल।

हिनकर पोथी मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता, उपाख्यान माला, विद्यापति ठाकुर आदिक अतिरिक्त History of Indian Philosophy सेहो अछि।

हिनकर रचना विशाल भण्डारसँ ताकब आ छाँटब एक दुरूह काज छल। एहि लेल साहित्य अकादेमीसँ पंचानन मिश्रकें ई भार देल गेलनि। मिश्र जानल-मानल लेखक, सम्पादक आ संकलनकर्ता छथि। 344 पृष्ठक एहि पुस्तकमे हिनकर महत्वपूर्ण पुस्तक 'मैथिल संस्कृति

ओ सभ्यता'क समावेश भेल अछि। ई डॉ. मिश्रक महत्वपूर्ण कृति छनि। मैथिली-साहित्य-परिषद द्वितीय अधिवेशन घोघरडीहामे 1933 इस्वीमे सभापतिक रूपमे हिनक 33 पृष्ठक अभिभाषण पढलाक बादे सभापतिक महत्व आ दायित्वक बोध हैत।

एहि पुस्तकमे निबन्ध जे संग्रहित अछि से विविध विषयक अछि। शुरू अछि महामहोपाध्याय श्रीशंकर मिश्रसँ। हिनकर विद्वताक विषयमे सविस्तार आ सम्पूर्णतामे वर्णित अछि, बहुतो नव जानकारी अछि। लिपिपर कैक टा लेख अछि। विद्या, शास्त्रार्थ-परिपाटी, देशक उन्नतिक संग मैथिलीक उन्नति कोना हो, संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना (जकर ओ संस्थापक कुलपति सेहो छलाह)सँ लय अक्षर शब्दक अर्थ ओ प्रयोग आदि महत्वपूर्ण अनेको निबन्ध अछि, जे आजुक दृष्टिकोणसँ सेहो अत्यन्त महत्वक अछि। अमरनाथ झाक बाल्यस्मृति पढबा योग्य अछि खास कय बच्चालोकनिकें जे ओ समयक सदुपयोग कोना केलनि जे एक दिन विश्वक अंग्रेजीक विद्वानमे अग्रिम पंक्तिक छलाह। सम्पूर्णतामे ई संचयन धरोहर तँ अछिये, आजुक सन्दर्भमे सेहो अनुकरणीय अछि।

नमामि गंगे

गंगापर लिखल काव्य गीत लोकगीत जे प्राचीन कालहिंसँ एक कंठसँ दोसर कंठधरि बढ़ैत चल आबि रहल अछि, जे क्रमानुगत लुप्त होयबाक कगारपर ठाढ़ अछि, ओकर संकलन नहि होयब, दुर्भाग्यक बात छल। बहुत तँ विलुप्त भय गंगाजीमे प्रवाहित भय गेल हैत, किछु सम्पादककें अप्राप्त हेतनि मुदा तैयो संपादकक अथक परिश्रम, अनुसंधान प्रवृत्ति आ माँ भागीरथीक कृपासँ विद्यापतिसँ लय, जगतज्योतिर्मल, पूरणमल्ल, देव सिंह, महेश ठाकुर, सुमति उमापति, चन्दा झा समेत अनेक रचनाकारक आ पचहत्तरि लोकगीतक समावेश एहि पोथीक महत्व अक्षुण्ण रखैत अछि।

कुल सन्तानवे कविक एक सौ चालीस गीत कविताक अतिरिक्त पचहत्तरि लोक गीत अछि जे करीब सात-आठ सौ वर्षक रचनाशीलताक सुदीर्घ परम्पराक द्योतक थिक। कवि कोकिल विद्यापतिक तँ अछिये, वर्तमानक कामिनी, गौहर, रूपम झा, तरुण कुमार मिश्र तकक समावेश अछि। तँ कविता/गीतमे विविधता हैब स्वाभाविके। मुदा जे अछि, से महत्वक अछि, पाठकक लेल ज्ञानवर्द्धक अछि।

परिशिष्ट(क)मे बाबू लक्ष्मीपति सिंहक मिथिला मिहिरमे 17 ओ 24 फरवरी 1934मे प्रकाशित 'गंगाजी केर उत्पत्ति : पौराणिक प्रसंग' संकलित कय जन साधारणक लेल गंगाजीक उत्पत्तिक कथाक वर्णन तर्कपूर्ण मान्यताक संग अछि।

परिशिष्ट(ख)मे गंगा-स्तुति श्रीमद्गीता, लिंगपुराण, शिवपुराण, नृसिंह पुराण, पद्मपुराण, ब्रह्मपुराण, अमरकोश आदि तँ अछिये धन्वंतरि, चरक, रहीम, तुलसीदास, रसखान, सूरदास, इकबाल आदिक उद्धृत अछि।

डायरी लेखन मैथिलीमे प्रायः एहि विधाक पहिल पुस्तक थिक। 'डॉ. अमरनाथ झाक डायरी' क अनुवाद एवं संकलन-संपादन ई मनोयोगपूर्वक कयने छथि। डॉ. झाक विद्वताक विषयमे सम्पूर्ण मिथिले नहि, देश-विदेशमे शिक्षा जगतक लोक परिचित अछि। डॉ. झाक विषयमे अंग्रेजी आ हिन्दीक अनेक पुस्तकमे लेख आयल अछि। किन्तु ई पोथी एहिसँ भिन्न अछि।

हमरा जनैत भिन्न एहि हेतुएँ सेहो अछि जे डॉ. झाक डायरीक पन्ना मुख्यतः 1910सँ लय 1931 धरिक अछि, 1934क एक दिनक, 1939क एक दिनक, आ 1947क उपकुलपतिक सेवनिवृत्तिक बाद विदाइक किछु वर्णन आ 05 कविता, अर्थात जखन ई शिक्षा जगतक शिखरपर रहथि, तखनुक डायरी एहिमे नहि अछि, मने डॉ. झा ओहि बीचमे या तँ डायरी नहि लिखलनि वा उपलब्ध नहि भय सकलनि अथवा जानि कय छोड़ि देलनि। मुदा एक बात तँ हिनक डायरीसँ साफ-साफ दिखाइ दैत अछि जे अमरनाथ झा विश्वस्तरपर कोना अपन प्रतिभाक बलें धाक जमौलनि। नेनहिसँ पढ़ाइक अतिरिक्त अनेक तरहक खेल, सांस्कृतिक विरासतक रक्षा, शास्त्रीय गायनक ज्ञान, नाटकक मंचन, मुशायराक आयोजन, स्वतंत्रताक आन्दोलनीक संग अपन सहभागिता, न्यायविदसँ लय वाइसराय तक हिनक महत्व आदि बहुत संक्षेपमे किन्तु बहुत उपयोगी पुस्तक पाठकक समक्ष पंचाननजी महत्वपूर्ण काज कयलनि।

ई पोथी विद्वान, साहित्यानुरागी, अनुसन्धानकर्ता, तँ पढबे करथि, सभसँ बेसी पढ़ब जनिकर जरूरी छनि ओ छथि हाई स्कूल/कॉलेज/यूनिवर्सिटीक छात्र। ओ देखथि, अमरनाथ झा लोक ओहिना नहि होइत अछि। सय-हजार सालमे क्यो-क्यो अबैत अछि।

एकर अतिरिक्त ई आर अनेक संपादनक गुरुतर भारकें अपन विशिष्टताक संग जाहिमे साहित्य अकादेमीक अधीन दलित कथा संग्रह प्रकाशनाधीन (आब प्रकाशित) अछि, जयकान्त मिश्रक साक्षात्कार प्रकाशित भय चुकल छनि।

मिथिला-मैथिली-विषयक रचना हिन्दी आ अंग्रेजीमे सेहो किछु प्रकाशित छनि। मैथिलीक एकान्तसेवीक संग मैथिलीक सेनानियो रहथि। चाहे जाहि क्षेत्रसँ हो, मैथिलीक विरुद्ध कोनो तरहक स्वर उभरलापर हिनक कान ठाढ़ भय जाइत छलनि तथा ओकरा ठोका जवाब देबा लेल ई उद्यत भय जाइत छलाह।

सलाहकार समितिक सदस्य (मैथिली) साहित्य अकादेमीमे 2008सँ 2012 धरि रहथि।

सुधांशु शेखर चौधरी पत्रकारिता सम्मान पटनासँ एवं हजारीबागसँ त्रिवेणीकान्त ठाकुर साहित्य (मैथिली) पुरस्कारसँ ई विभूषित कैल गेल छला।

हिनक निधन 26.08.2020 क 05 बजे भोर दरभंगा मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल, लहेरियासरायमे इलाजक क्रममे भय गेलनि।

9430743070



मोहन भारद्वाजक लेखन यात्रा

प्रवीण भारद्वाज

हमरा जनैत मैथिली आलोचनाक आदिपुरुष आ संस्थापक रमानाथ झा केर बाद सबसँ विश्वसनीय नाम थिक मोहन भारद्वाज—ई हुनक लेखकीय नाम थिक। हुनक मूल नाम थिकनि—आनंद मोहन झा। आनंद मोहन झाक गाम नवानी छनि आ पिता मदन मोहन झा संस्कृतक तीन विषयमे आचार्य एवं प्रकांड विद्वान छलथिन। गाम सहित घरमे संस्कृतक पठन-पाठन आ साहित्यिक सोच-विचारक चलनि छलनि। माँ कामेश्वरी देवी निपुण गृहिणी आ मैथिली गीत-नाद, आचार-विचार-संस्कार अथवा कुल मिलाकय कही तँ मैथिलत्वक रक्षा कैनिहारि छलथिन। हुनक पित्ती बृजमोहन झा सेहो संस्कृतक विद्वान छलथिन आ संस्कृत एवं मैथिलीमे लेखन करैत रहथिन। अपन पित्तीसँ आनंद मोहन झा वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्राप्त केलनि। आनंद मोहन झा जखन मैथिली साहित्यक अवगाहन करय लगलाह आ पढ़य लिखय लगलाह तखन अपन मित्र कुलानंद मिश्रसँ प्रेरणा प्राप्त करैत अपन लेखकीय नाम रखलनि, आ तखन आनंद मोहन झा बनि गेलाह मोहन भारद्वाज।

एकटा लेखकक रूपमे मोहन भारद्वाजसँ हमर प्रथम भेंट होइत अछि, घग्घा घाट, महेंदू, पटनामे वर्ष 1983 जहिया हमर पिता विश्वस्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) आ स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकारक एकटा प्रशिक्षण कार्यक्रममे भाग लै लेल नई दिल्ली जाइत काल हमरा ओतय राखि कय चल गेल छला। बड़का बाबा यानि मदन मोहन झा संभवत: हाले-फिलहालमे राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, पटनासँ सेवानिवृत्त भेल छलाह। दादी माँक नेतृत्वमे घर भरल-पुरल छल आ हमर खेलौड़िया स्वभावकें पुष्ट करबाक जोगरक भाइ बहीन सबसँ घर संपृक्त छल। ओहि किशोरावस्थामे लेखक मोहन भारद्वाजसँ एतबा परिचय भेल जे ओ किछु-किछु अपना कक्षमे दिनमे सेहो आ रातिमे जागिकय पढ़ैत-लिखैत रहैत छलाह। ओहि यात्रामे एकटा आरो मैथिलीक केर मूर्धन्य विद्वान आ हम बच्चा लोकनिक पीसाजी कुलानंद मिश्रजीसँ सेहो परिचय भेल। ओहो अपन कक्षमे पोथी सबसँ घिरल बहुत किछु पढ़ैत-लिखैत रहैत छलाह आ हमरा लोकनिसँ पढ़ाइ-लिखाइ केर गप्प-सब करैत छलाह। हमर ओ पटना यात्रा एकटा किशोर मनमे उठैत जिज्ञासा केर भावकें किछु शांत करबा आ किछु जगबै बला छल।

ओ मोहन भारद्वाज, जे मैथिली भाषाक लेखक-कवि-आलोचक छलाह, हमर बाबू (सब बच्चा हुनका यैह नामसँ बजाबनि, तें हमहूँ बाबू कहियैन) छलाह, तिनकासँ हमर विशेष परिचिति भेल जखन हम नवम कक्षामे रही। तहिया हम सब मधुबनीमे रहैत रही आ अर्थशास्त्र सनहक जमानाक अनुसार बेशी नीक विषयकें छोड़ि आधुनिक भारतीय भाषा केर रूपमे आ एकटा वैकल्पिक विषयक रूपमे मातृभाषा मैथिली भाषा आ साहित्य ल' लेने रही। अपना हिसाबें किछु-किछु कहुना-कहुना पढ़ैत रही। ता विराटनगर नेपालसँ ऑडिट कय बाबू घुरलाह, तँ एकटा मैथिली भाषा-साहित्यक छात्रक रूपमे हमरासँ भेंट

भेलनि। ओ हमरासँ पुछलनि की—की पढ़ैत छी, तकर उतारामे हम मैथिलीक नाम लेलहुँ। ताहिपर ओ कहलनि—मैथिली कोना पढ़ैत छी। गल्प-गुच्छ, आर किछु पुस्तक रहय। हम अपन बनाओल नोट सब देखय देलियनि। तकरा बाद हमरा मैथिली भाषा आ साहित्य कोना कय पढ़ल जाए, तकरा बारेमे ओ विस्तारसँ बतौलनि। एकरा आधार बनाकय हम मैथिली-संस्कृत आ हिंदी भाषा-साहित्यक पठन-अध्ययन नीक जकाँ करय लगलहुँ।

ताहि समय मोहन भारद्वाज आ गोविंद झा, कथाकार अशोक सन वरिष्ठ साहित्यकार लोकनि पटनासँ भाखा नामक पत्रिका निकालैत छलाह। हम भाखा कीनिकय पढ़ैत रही। भाखा बन्न भ' गेल जखन, हालचालक प्रकाशन शुरू भेल। मैट्रिक (तहिया दसवींकें मैट्रिक कहल जाय) पास करिते देरी हमरा पटना जेबाक सुयोग हाथ लागि गेल। ठिकाना बनल वैह घग्घा घाट, महेंद्रू मे बाबू (मोहन भारद्वाज)क डेरा। ओतय कुलानंद मिश्र लगेपासमे रहबे करथि। हुनका ओहिठाम एकटा आरो महासुयोग हाथ लागल। देखलहुँ तँ साक्षात् बाबा नागार्जुन ओतय विराजमान छथि। सोवियतलैंड नेहरू पुरस्कार प्राप्त क' पटना घुरल रहथि बाबा। हुनकर विशेष आदेश छल जे पुरस्कारक पाइकें एक मासक भीतर खतम क' देबाक अछि। ई सुनिकय हमरा आश्चर्यकारी विस्मय लागल रहय।

ओहि समयमे बाबाक पटनामे उपस्थिति हमरा सन छात्र आ जिज्ञासुक लेल बहुत फलकारी छल। दिनमे हुनकर साहित्य आ खिस्सा-पिहानी सुननाइ हमर जीवनक उपलब्धि थिक। बाबाक संग बहुते रास गप्प सब भेल। साहित्यमे अभिरूचि जानि, ओ हमरा एकटा नोटबुक कीनिकय आनै लेल कहलनि। ओहिपर अपन ऑटोग्राफ देलनि। ऑटोग्राफ हमरा आँखिमे आइ धरि अंकित अछि। ऑटोग्राफ मैथिली आ हिंदी दूनू भाषामे देने रहथि। मैथिलीमे शोणित बोकरय जँ ज्वैल जोंक, तँ सफल तोहर बर्छीक नोक; अगर कीर्ति का फल चखना है, कलाकार ने फिर-फिर सोचा, आलोचक को खुश रखना है।

ओहि बीच मोहन भारद्वाज आर कुलानंद मिश्र जमिक' साहित्य रचना क' रहल छलाह। पीसाजी किछु-किछु हमरा पढ़िक' गाबिक' लीखिक' सुनाबथि-सिखाबथि-देखाबथि। संगहि मोहन भारद्वाज किछु पोथी सबहक संपादन आ संकलनक काज क' रहल छलाह। एहि प्रकारें, हम मोहन भारद्वाजक रचनाकर्मकें सद्यः देखि पाबि रहल छलहुँ, जहिया ओ रचनाकार, रचयिता के बाद आलोचना के पथ पर अग्रसर छलाह। तँ हम कहैत रही जे मोहन भारद्वाज पहिने मैथिली भाषा केर कवि-लेखक आ कहानीकार भेलाह, आलोचक बादमे छलाह। हुनकर समतुरिया आ मैथिली के वरिष्ठ कवि आ आलोचक कुलानंद मिश्र देखू मोहन भारद्वाजक संबंधमे हुनक पहिल आलोचनाक पोथी 'अनवरत' केर प्रस्तावनामे की कहि रहल छथि 'मोहन भारद्वाज हमर बाल-सखा आ मधुर संबंधी तँ छथिए, ओ हमर मैथिली-लेखनक उत्प्रेरको (जे ओ हमरा संग आनो कतिपय रचनाकारक छथि) छथि। हिनके आग्रह पर आ हिनके संगे हम 'सन्निपात'क प्रकाशन-संपादन आइसँ 25 बर्ख पूर्व प्रारंभ कयने रही आ 'सन्निपाते'क संग मैथिलीमे लेखनक क, ख, ग सिखबामे लागि गेल रही। मोहन भारद्वाज हमर मैथिली लेखनारंभक किछु पूर्वेसँ कथा-कविता-लेखनमे हाथ भंजैत रहथि, जे प्रकृति-विपरीत बूझि बादमे लगले ओ त्यागि देलनि एकांत रूपसँ आलोचना-कर्ममे लागि गेलाह। लगभग चौबीस-

पच्चीस बर्खक अपन लखन-कालमे ई साहित्यक भिन्न-भिन्न विधा पर सुरुचि-संपन्नता आ आकलन-वैदग्ध्य संग लगातार लिखैत रहलाह अछि। हिनक यत्र-तत्र प्रकाशित समीक्षा, आलोचनात्मक निबंध आ भूमिकासभक कोनो संकलन उपलब्ध नहि रहबाक कारण हिनक विचारक-व्यक्तित्वक कोनो फरीछ चित्र लोक लग उपलब्ध नहि रहलैक अछि (आ ई कटु यथार्थ आनो किछु समालोचकक प्रसंग एहिना सत्य थीक), मुदा हम सभ एतबा बुझैत छी जे बोल-चालक ठेठ आ नितांत अनलंकृत भाषा में वक्रोक्तिसँ बचैत सोझां-सोझी अपन बात कहनिहार ई व्यक्ति बात अत्यंत सटीक आ मार्मिक कहैत छथि, बात जे रचनाकारक अभिप्रेत संग रचनोक सिद्धि दिस संकेत करैत अछि।'

आलोचक मोहन भारद्वाजक लेखन पक्षकें वैज्ञानिक दृष्टिकोण कोना मजगूत बनबैत छलनि, तकर बानगी हुनके लेखनीसँ उपर्युक्त वक्तव्यक निम्नलिखित अंशमे देखू 'साहित्य आ समाजक पारस्परिक संबंधकें बिकछाकय बुझबाक लेल ओकरा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमे देखब अनिवार्य अछि। प्रत्येक युगक अपन परिस्थिति होइत छैक, किंतु कोनो युगक परिस्थिति पूर्ववर्ती युगक परिस्थितिसँ सर्वथा असंबद्ध नहि रहैत अछि। ओहिमे एकटा निरंतरता होइत छैक। पूर्वपर संबंध रहैत छैक। कोनो काल-विशेषक साहित्य एकरे उपजा छैक। किंतु देखबाक बात एतबे टा नहि अछि। हम सभ जनैत छी जो सामाजिक स्थिति जेकाँ साहित्योक दू टा धारा रहल अछि लोकाश्रयी आ सत्ताश्रयी। बौद्धधर्मक प्रचार हेतु सिद्धलोकनि मिथिलाक जनसामान्यक लेल जाहि गीतक रचना कयलनि से लोकाश्रयी धाराक वस्तु छल। ओ जनताक चर्यागीत छल। डाकक वचन सेहो मिथिलाक ग्रामीण कृषि समाजक चर्यागीत थिक। डाकक साहित्य-चिंतनमे समाजक चिंता केंद्रीय स्थान पर अछि। एकरा बाद अबैत छथि, ज्योतिरीश्वर आ विद्यापति। 'मैथिली धूर्तसमागम'मे ज्योतिरीश्वर तत्कालीन समाजक जाहि विद्रूपकें रेखांकित कयलनि अछि से हुनक लोक चेतनाक ज्वलंत प्रमाण थिक। विद्यापति लोकभाषाकें साहित्यिक उत्कर्ष प्रदान कयलनि। ततबे नहि, विषय-वस्तुक स्तर पर सेहो ओ साहित्यक लोकधारामे गतिशीलता अनलनि।'

एहि पोथीकें सहजहि अपन पिता पं. मदन मोहन झाकें समर्पित करैत लिखलथि 'बाबूकें जे बुझबाक अवगति आ बाजबाक सामर्थ्य देलनि।' एहि पोथीमे हुनका द्वारा लिखित कुल पंद्रह गोट आलोचना-निबंध संकलित कैल गेल अछि। रामकथाक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आ चंद्र-रामायण नामक लेखसँ एहि पोथीक रचना आरंभ होइत अछि। रामकथाक बहन्ने कविवर चंदा झाकें स्मरण केलनि अछि आ हुनकर अवदान पर विस्तारपूर्वक गप्प केलनि अछि।

वर्ष 1996 ई.मे आएल साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित भारतीय साहित्यिक निर्माता सिरीज के अंतर्गत रामकृष्ण झा 'किसुन' केर मोनोग्राफ। हमरा जनैत ई एकटा लेखक केर व्यक्तित्व एवं कृतित्वक चर्चा के रूपमे मोहन भारद्वाजक पहिल पोथी छल। मैथिली-हिंदी-उर्दू के साहित्यकार-संस्कृतिकर्मी आ सामाजिक कार्यवाहक रामकृष्ण झा 'किसुन' जीक साहित्यिक-सांस्कृतिक अवदान पर साहित्य अकादेमी पोथी निकालि कय अपन परम कर्तव्य निमहेलक। ओहि पोथीमे मोहन भारद्वाज जे लिखने छथि से समग्रतामे ओहि महान साहित्यकारक अतिविशिष्ट योगदान पर दृष्टिनिक्षेप करैत

अछि। एहि पोथीक पृष्ठक संख्या भनहि कम हो, मुदा अपन उद्देश्यक पूर्तिमे ई पोथी पूर्णत: सफल रहल अछि। किसुनजीक संपूर्ण व्यक्तित्वक छाप एहि पोथी पर अछि। एकरा अवगाहन क' लेलासँ किसुनजीक व्यक्तित्व आ कृतित्व अहाँक आँखिक सोझाँमे आबि जाएत, एतबा हमर विश्वास अछि।

1996 ई.मे आएल साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पोथी 'मैथिली गद्यक विकास'। एकर संपादक छलाह मोहन भारद्वाज। ई पोथी साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित संगोष्ठीक प्रतिफल थिक।

वर्ष 1999 ई.मे आएल साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'विद्यापति गीत संचयन'। एकर संपादन केलनि वरिष्ठ लेखक रामदेव झा आ संग-संपादन केलनि मोहन भारद्वाज। विद्यापति गीतक संकलन पहिनहुँ भेल अछि। बांग्ला साहित्यसँ ल' क' हिंदी साहित्य आ मैथिली साहित्य समादरणीय वरेण्य कवि महाकवि विद्यापतिक गीतक संचय केनाइ हमरा लोकनिक परम कर्तव्य थिक, एहि कर्तव्यक पूर्ति केलनि संपादक मोहन भारद्वाज, एहि पुण्य काजमे ओ मैथिलीक समादृत लेखक रामदेव झाक सहयोगी भेलाह। ई एकटा संग्रहणीय काज थिक।

हिनक आलोचनापरक पोथी 'एकल पाठ' के प्रकाशन होइत अछि वर्ष 1999 मे। एकर लेखक परिचयक फ्लैप पर छपल जानकारीक अनुसारें मोहन भारद्वाजक जन्म नवानीमे 09 फरवरी, 1943मे होइत अछि। एम. ए. राजनीति विज्ञानसँ केलाक बाद लेखा-परीक्षक भेलाह। दू टा पोथीक मूल लेखक अनवरत (1995) आ रामकृष्ण झा किसुन (1996), संपादन-स्मृति संध्या (1980), कविता राजकमलक (1981), तर्जनी (1989) मैथिली साहित्यक इतिहास लेखन (1989), काव्यबंध (1989), मैथिली गद्यक विकास (1996), विद्यापतिक शिवगीत (1997), संग-संपादन कथा-संग्रह (1977), कृति राजकमलक (1980), मैथिलीक प्रसिद्ध कथा, भाग एक एवं दू (1984), समकालीन मैथिली कविता (1988), शिखरिणी (1992), विद्यापति गीत-संचय (1999) अनुवाद—टॉल्सटॉयय ओ भारत (एलेक्जेंडर सिफमन, 1998), संग-अनुवाद ग्रियर्सनकृत भारतक भाषा-सर्वेक्षण (खंड-5], भाग-2], 1978), बिहारक ग्राम जीवन (ग्रियर्सन कृत बिहार पीजेंट लाइफ, 1982)।

मोहन भारद्वाजक माताजीक 'संस्कार गीत' नामक पोथी सेहो वर्ष 1999मे छपिकय बहार भेल। एहिमे मिथिलाक विविध संस्कार पर आधारित कुल 450 गोट गीत संकलित कैल गेल अछि। ई एकटा बहुत प्रशस्त काज छल, एकरा मिथिलाक लोक आ समाज बहुत सराहना केलक। एकर संकलन तँ नीक अछिए एकर भूमिका सेहो मोहन भारद्वाज बहुत विस्तृत आ सामयिक लिखलनि।

पहिनेसँ सक्रिय मोहन भारद्वाज वर्ष 2000के बाद लेखनमे बड्ड सक्रिय भ' गेल रहथि। हुनका अपन जीवन के एकटा दिशा देबाक रहनि। 2007 ई.मे हुनकर पोथी आएल 'बलचनमा—पृष्ठभूमि आ प्रस्थान'। एहि पोथीक रचना प्रक्रियाक समय हमहूँ पटनेमे रहैत रही। एक दिनक गप्प थिक ओ कहलनि—'बुझल छौ तोरा, जे बलचनमा मैथिलीक उपन्यास थिक।' हम कहलियनि—'मुदा हम तँ मैथिलीमे एकरा कहियो नै पढ़लहुँ, एकरा हम हिंदी के उपन्यास बुझैत रही। बलचनमा मैथिलीक उपन्यास थिक से हमरा बुझलो नै अछि।'

हमरा रोकैत ओ कहलनि—'हे देखह ई पोथी।' एकटा पुराने पोथी निकालि कय हमर हाथमे देलनि आ कहलनि—'बलचनमा पहिने मैथिलीमे लिखल गेल छल, बादमे बाबा एकरा हिंदीमे अनुवाद केलनि। एकर हिंदी संस्करण बेसी प्रसिद्ध भेल, तें मैथिली संस्करणक चर्चे नहि भेल।' हम ओ पोथी हाथमे लैत बाजलहुँ—'ई हमरा नै बूझल छल।' ताहि पर ओ विस्तारसँ गप्प गेलनि आ उत्साहसँ बलचनमा पृष्ठभूमि आ प्रस्थान पोथीक अपन पांडुलिपि देखौलनि।

2008मे मैथिली अकादमी, पटनासँ पोथी आएल 'कथा गोष्ठी'। एहि पोथीमे कथा एवं काव्यक प्रसंगें बहुत विस्तारसँ हुनक अलग-अलग लिखल सोलह गोट निबंध देल गेल अछि। 2012 ई.मे आएल 'डाक-दृष्टि।' ई बहुत महत्वपूर्ण पोथी थिक, ने केवल मैथिली भाषा-भाषी लोकक लेल परंतु, भारत भरिक लोकक लेल। पूर्वी भारत आ ग्रामीण आ कृषक समाजक लेल डाकक वचनक महत्व आइ धरि अछि आ आगुओ रहत। समाजशास्त्रीय आ लोकशास्त्रीय दृष्टिकोणसँ लिखल गेल ई पोथी बड्ड महत्वपूर्ण अछि।

2015 ई.मे हुनकर प्रकाशित पोथी अबैत अछि 'काव्यपाठ'। एहि पोथीमे वर्णरत्नाकर आ हुनक रचयिता ज्योतिरीश्वरसँ ल' क' विद्यापति आ चंदा झा आ अंतमे लोकगीत आ नारी विषय पर लेख संकलित अछि।

2016 ई.मे आएल 'मैथिली आलोचना वृत्ति आ प्रवृत्ति।' हमरा जनैत ई हुनक अंतिम प्रकाशित पोथी थिक। एहि पोथीमे मैथिली आलोचना केर वृत्ति आ प्रवृत्ति दिस संकेत केलनि अछि मोहन भारद्वाज।

2009-10 के आसपास मोहन भारद्वाज एकटा महती कार्ययोजनाकें अंतिम रूप द' रहल छलाह। काज कनेक नम्हरगर छल। पाँच भागमे मैथिली-अंग्रेजी के लेखक आ समालोचक रमानाथ झा रचनावलीमे हुनक समग्र रचनाकें एकठाम आनबाक प्रयास केलथि आ ई प्रयास सफल रहल। हम पटनेमे रही आ जेना कहि चुकल छी काज पैघ छल अतएव प्रूफक बड़की टा ढेरी छल ओकरामे, से मैथिली आ अंग्रेजीक एकटा पैघ हिस्सा प्रूफक प्रसादक रूपमे हमरो भेटल। एहि रचनावली केर प्रकाशन मोहन भारद्वाजजीक सपना साकार होइसँ कनेको कम नै रहय। हमरा जनैत ओ दू-तीन बरिससँ ऊपर धरि एहि रचनावली पर काज करैत रहलाह तखन जाक' ई पोथी आकार ग्रहण केलक। ई पोथी जे लोकनि पढ़लनि ओ एकर भूरिश: प्रशंसा केलनि आ मोहन भारद्वाजक मेहनतिक लोहा मानलनि।

मोहन भारद्वाजक समीक्षक-आलोचक रचना-धर्मिताकें जानबाक लेल आ मैथिली भाषा-साहित्यकें आद्योपांत अवगाहन करबामे उपर्युक्त पोथी—अनवरत, एकलपाठ, कथागोष्ठी, बचनमा-पृष्ठभूमि आ प्रस्थान, डाकदृष्टि, काव्यपाठ, मैथिली आलोचना—वृत्ति आ प्रवृत्ति हमरा लोकनिक मार्गदर्शक बनत, ई हमर दृढ़मान्यता थिक। एतावता, हमर मैथिलीक अग्रिम पंक्ति के लेखक-आलोचक मोहन भारद्वाज आ हमर घरक सबसँ ज्येष्ठ पित्ती आ अभिभावक हमरा सबहक बाबूकें हमर सादर श्रद्धांजलि।

मो. 9454920003



मंथन

एहि स्तम्भक अन्तर्गत एहिबेर प्रकाशित भ' रहल अछि मिथिलाक एक ऐतिहासिक आ पुरातात्त्विक गाम सरिसबक उत्पत्ति कथा। ई एक ऐतिहासिक आलेख थिक, शोध थिक। संस्कृत आ मैथिलीक विद्वान उदयनाथझा अशोक सरिसब गामक ऐतिहासिक क्रमकें अत्यन्त गंभीरतासँ व्याख्या कयलनि अछि।

सरिसब गाम : एक परिचय

उदयनाथ झा अशोक

'कलौ स्थानानि पूज्यन्ते' ई पौराणिक वचन वस्तुतः हमरा सभक इतिहास आ गौरवकें स्मरण करएबा लेल पर्याप्त अछि। हिंदीक अभिभावक-कवि भारतेंदुबाबू ठीके कहैत छथि–

जिसे न निज भाषा तथा निज देशका अभिमान है।
वह नर नहीं नर-पशु निरा और मृतक समान है।

एकरे ध्यानमे राखि हम एतय एक मिथिला-प्रसिद्ध गाम 'सरिसब'क उत्पत्ति प्रसङ्गमे, ओकर प्रारंभिक इतिहासक संबंधमे किछु जनतब साझा करय चाहैत छी।

विष्णुपुराण (चतुर्थ अंश, अध्याय-13) ओ खिल-हरिवंश (अ. 40)मे स्यमन्तक-मणिक उपाख्यान खूब विस्तारसँ वर्णित भेल अछि। एकर अनुसारें श्रीकृष्णक श्वसुर ओ सत्यभामाक पिता सत्राजितक वध कए शतधन्वा जखन स्यमन्तकमणि ल'कें भागि गेल तँ श्रीकृष्ण अपन जेठ भाइ दाऊजी अर्थात् बलरामक संग ओकर पाछू कए खिहारलनि। परिणामतः मिथिलाक सीमाक नजदीक अबिते ओ मारल गेल। मुदा ओकरा लगसँ स्यमन्तकमणि नहि पाबि कृष्णकें दुःख भेलनि आ ओ पश्चाताप करैत बलरामकें संबोधित कए बजलाह जे'–'वृथैवास्माभिः शतधनु र्घातिनो न प्राप्तमखिलजगत्सारभूतं तन्महारत्नं स्यमन्ताख्यमिति।' बलरामजी ई सुनितहिं अग्निश्च वायुश्च भए गेलाह। हुनका भेलनि जे कृष्ण वंचना कए रहल छथि, हमरासँ मणिकें नुका रहल छथि। एही बातपर दुनू भाइक बीच कहा-सुनी होमय लागल आ अंततः बलराम अपन मित्र विदेहराजक भेंट करबाक बहाने मिथिला आबि गेलाह ओ श्रीकृष्ण एकसरे वापस गेलाह। एम्हर बलराम जनकक आव-भगतमे एतेक-ने रमि गेलाह जे तीन मास बीति गेल। एही ठाम कौरव-ज्येष्ठ दुर्योधन हुनकासँ गदा सिखबाक लेल सेहो अबैत रहथि।

एही अवधिमे बलराम एक दिन घुमैत-घामैत पहुँचि गेलाह, ओहि स्थानपर जतए सर्षपक वन छल। ओकर शोभा आ वैभवसँ ओ एतेक ने प्रभावित भेलाह जे श्रीकृष्णक संग भेल वाद-विवादपर सेहो दुःखी भए गेलाह। ओ निश्चय कएलनि जे एतए अपन ईष्ट देवी-देवताक स्थापना कइयेकें आपस जएताह, जाहिसँ कृष्णक व्यवहार हिनका प्रति अनर्गल नहि होइनि। तें ई सिद्धेश्वर ओ सिद्धेश्वरीक स्थापना कएलनि। हरिवंशक अनुसार एहिसँ किछु भिन्न कथा भेटैत अछि, यथा बलरामक अखाड़ा सर्षपक्षेत्रहिमे छल, जतए दुर्योधन गदा सिखबाक लेल आबथि। निश्चित रूपें ई घटना महाभारतयुद्धसँ पहिलुका थिक। हरिवंशपुराण एहिसँ सहमत अछि जे बलराम जेबासँ पूर्व एतए सिद्धेश्वर ओ सिद्धेश्वरीक स्थापना कएने रहथि। मुदा वराहपुराण (अध्याय-160, श्लोक-44-45)क अनुसार बलरामजीक उपास्या सिद्धेश्वरी रहथिन ओ हुनक स्थापना कएने रहथि, ओतए सिद्धेश्वरक प्रसंग नहि अबैछ, जेना कि लिखल अछि–

संकेतकं कृतं तत्र मन्त्रनिश्चयकारकम्।
तदा संकेतकैः सा च सिद्धादेवी प्रतिष्ठिता।।

कितु विष्णुपुराणक उक्त बातकें खिल-हरिवंश ओ बृहद्विष्णुपुराण (मिथिलामात्म्य)क समर्थन तँ छैके। स्कन्दपुराणक नागरखंड (अध्याय-42, श्लोक-6-7, स्मर्तव्य थिक जे नागरखंडक मिथिलाखंडमे एकसय अध्याय छैक)मे सर्षपक चर्चा करैत कहल गेल अछि जे 'सिद्धार्थक्षेत्र' कपिलाश्रम (कपिलमुनिक आश्रम)सँ दू योजन (आठ मील) पूब अवस्थित अछि। ई वैह कपिलाश्रम थिक, जकरा आइ 'कपिलेश्वरस्थान' कहैत छियैक आ एहि दुनूक दूरी सेहो ओतबेक बनैछ। यद्यपि ई वर्णन ब्रह्मावर्त्तक अंतर्गत गोकुल-परिसरक प्रसंगमे आएल अछि,मुदा कपिलमुनिक एक आश्रम, जे मिथिलामे छल, तकर उल्लेख सेहो भेल अछि।

कविशेखर पंडित बदरीनाथ झा एही विष्णुपुराण ओ हरिवंशपुराणक कथाकें प्रामाणिक मानैत छथि, आ तें ओ लिखितो छथि–

सुकृतिमय सुंदर सरिसब ग्राम।।
मिथिलामहिमण्डलमण्डन ई सारस्वत आराम।
सिद्धेश्वरी सहित सिद्धेश्वरथापल जत बलराम।।

(मै. सा. परिषदक स्मारिका, 1968)

जखन कि स्कंदपुराणहिंक कौमारिकाखंडमे जे वर्णन भेटैछ, तदनुसार सिद्धेश्वर ओ सिद्धेश्वरीक स्थापना स्वामी कार्तिकेयक द्वारा भेल मानल जा सकैछ, ने कि बलरामक द्वारा। बलरामजी तँ ओकर मात्र पुनर्प्रतिष्ठे कएने रहथि, उजरल-उपटल स्थानकें सुव्यवस्थित कएने रहथि। 1959मे कलकत्तासँ मनसुखराय मोर संपादित स्कंदपुराण (कौमारिका खंड, अध्याय-36)मे जे पञ्चलिङ्गोपाख्यान वर्णित अछि, ओतहि सिद्धेश्वर

ओ सिद्धेश्वरीक स्थापनाक प्रसंग भेटैत अछि। 'सरिसब-वैभव'हुँमे कहल गेल अछि–

धराधाम के स्वर्ग-टिका सा, सरिसब नाम ग्राम अभिराम।
कमला की चञ्चल लहरों मे, देखा करता मुख अविराम।।...
जब पावन मिथिला को देखे, सुरपुरमे श्रीउमाकुमार।
देख भव्यता इसकी तत्क्षण, आने का वह किया विचार।।
आकर उसने इष्ट पिता की, पूजा-अर्चा किया यहाँ।
पूजन-वेला पाकर शिवजी, प्रकट हुए तत्काल वहाँ।।...
सिद्धेश्वरकी हुई थापना, सारे देव पधारे थे।
गर कोई आ सका नहीं तो, एक प्रलम्ब ही आड़े थे।।
बिना शक्ति की महिमा शिव की, रहती कहाँ है, जग विख्यात।
माता सिद्धेश्वरी विराजी, सिद्धों की संख्या थी सात।।...

एहि सातो सिद्धमे प्रसिद्ध अछि–सिद्धेश्वर, सिद्धेश्वरी, सिद्धविनायक, सिद्धमहेश, सिद्धकूप, सिद्धवट आ सिद्धसर। भगवतीक स्थापना ओ एक वटवृक्षक नीचाँमे कएने रहथि, जे वट प्रयागराजसँ आएल छल, ओएह सिद्धवट कहओलक। ई सातो सिद्ध पन्द्रहम शतकमे अयाचीक समयधरि विद्यमान छल, से परवर्ती इतिहासो कहैत अछि। स्वयं अयाची मिश्र सेहो भगवतीक स्तुतिमे लिखैत छथि–

दुष्टप्राणहरी गिरीन्द्रतनया नागेन्द्रहाराञ्चिता,
भक्तिप्रह्वसुपर्वनायकशिरोरत्नाञ्चिता ङ्घ्रिद्वया।
भक्तानुग्रहहेतवे वटतटे स्थानं विधाय स्थिता,
भूयाद्भव्यकरी पराभवहरी सिद्धेश्वरी मादृशाम्।।

मध्ययुगीन हिंदी कवि कृष्णपति सेहो भगवती सिद्धेश्वरीक वर्णनमे लिखैत छथि–

शत भानु भासमान सदृश प्रभाव है जा की, भृकुटी भयावनी त्रिनेत्र की कराली है।
करवाल आदिक अनेक अस्त्र-शस्त्र लसैं, जाके करजाल जो अतुल बलशाली है।।
जोइ रण ठानि होय सामुहे न सकै देखि, ऐसी उग्र मूर्ति जो अमेय शक्तिशाली है।
सोई दिव्य मूर्ति भाति सिद्धिदा भवानी की, जयति सदाई और प्रणत प्रतिपाली है।।

एतबे नहि, जखनि कार्तिकेयक कार्य पूर्ण भए गेलनि, दैत्यराज प्रलम्बासुर मारल गेल, तखन षडानन एहि सातो सिद्धक रक्षाक हेतु चारूकात अतिरिक्त चौंसठि गोट सिद्ध-महेशक स्थापना कएलनि, जे चौंसठि-सिद्ध-महेशसँ प्रसिद्ध भेल। प्रसंग व्यापक अछि, तें एतहि एकरा विराम दैत छी।

प्राचीन 'सर्षप' बादमे 'सिद्धार्थ' सेहो कहबय लागल छल, तें कतहु-कतहु एक-दोसराक चर्चा भेटैत अछि। ई 'सर्षप' थिक सस्यविशेष (अर्थात् तेलहन-विशेष), जकरा हमसभ 'गोट' वा 'सरसो'क नामसँ सेहो जनैत छी। ओना संस्कृतमे ई 'सरिषपः, सरिषा,

सिद्धार्थ, कटुस्नेह' आदि कतोक नामसँ प्रचलितो अछि। बहुतो गोटे पीअर-गोट (सरसो)कें 'सर्षप' बुझैत छथि; मुदा राजवल्लभ, राजनिघंटु, शब्दचंद्रिका, भावप्रकाश आदि पोथीक आधारपर ई गोट एवं रैंची दुनू प्रजातिक लेल प्रयोग कएल गेल अछि, चाहे ओकर रंग पीअर हो वा कारी अथवा लाल। जेना कि कहल गेल अछि–

सर्षपस्तु रसे पाके कटुहृद्यः सभक्तिकः' ... 'कटुकं सार्षपं शाकं...'[1] –(1-भावप्रकाश)
'एष स आत्मान्तर्हृदयेऽणीयान् व्रीहेर्वा यवाहा सर्षपाहा श्यामाकाहा इति'[2] –(2-छान्दोग्योपनिषद्-3/14/3)
आसुरी राजिका राजी रक्तिका रक्तसर्षपः[3] –राजवल्लभ
राजसर्षपकस्तिक्तः कटूष्णो वातशूलनुत्[4] (करिया गोट) –राजनिघंटु
सर्षपस्त्वनघो गौरः सिद्धार्थो भूतनाशकः' 'सिद्धप्रयोजनः सिद्धः साधनः सितसर्षपः[5] –(5-राजनिघंटु)
गौरस्तु सर्षपः प्राज्ञैः सिद्धार्थ इति कथ्यते[6] –(6-शब्दचंद्रिका)
क्षवः क्षुताभिजनकः कृमिकः कृष्णसर्षपः[7] –(7-भावप्रकाश) आदि।

कहियो ई स्थान अमरावती-राज्यक गढ सेहो मानल जाइत छल, तें पुरातात्त्विक दृष्टयें सेहो एकर अपन खास महत्त्व छैक। एकर उल्लेख संक्षेपमे पं. रमानाथ झा सेहो अपन एक लेखमे करैत छथि (लक्ष्मीवतीनगर स्मारिका, मैथिली साहित्य सम्मेलन, 1968)। एहि अमरावतीक नामसँ केवल राज्ये नहि छल, अपितु नगर ओ नदी सेहो छल। अमरावती नगर उत्तरमे वर्त्तमान भगवतीपुरसँ लए दक्षिणमे बहेड़ाक समीप स्थित वाजितपुर धरि विस्तृत छल। नगरक पूबमे प्रवहमान लक्ष्मणानदीसँ पूब जे राजकीय उद्यान वा पुष्पवाटिका छल, सैह एखनि 'उजान'सँ प्रसिद्ध अछि। (History of Mithila-Upendra Thakur. pp. 196-200)। एतए इहो ध्यातव्य थिक जे ई अमरावतीराज्य 700 ई.क आसपास समाप्तो भए गेल।

तत्कालीन अमरावतीक मध्यभागमे स्थित रहल 'सरिसब' नामक ऐतिहासिक गाम वर्तमान मधुबनी जिलाक मधुबनी अनुमण्डल ओ पंडौल प्रखंडमे पड़ैत अछि, पहिने एतए पंडौल थानाक एक गोट ओ. पी. सेहो होइत छल, जे आब उठि गेल अछि। ई गाम दरभंगा-झंझारपुर रेल-लाईनपर स्थित मनीगाछी स्टेशनसँ दू मील उत्तर-पूबमे स्थित अछि, मुदा ग्रामीण वा परिसरीय जनकें मनीगाछीसँ अधिक सुविधा सकरी स्टेशनसँ एबामे होइत छनि, जतएसँ एहि गामक दूरी नव किलोमीटर अछि। ओना नेशनल हाईवे-57 सेहो एकरा सकरी-झंझारपुरक बीच जोड़ैत अछि। एहि गामक पूबमे कमला नदी एवं लोहना-खड़रख नामक गाम, पश्चिममे भट्टपुरा ओ गङ्गौली, उत्तरमे रामनगर-सनकोर्थु आ दक्षिणमे सखवार अबैत अछि। पं. रमानाथ झाक मतमे पहिने तँ ई गाम एक छल, जकर छोट-छोट छओटा टोल रहैक, मुदा आब ई टोलसभ सरिसबक

संगहिं सातटा स्वतंत्र अस्तित्वक गाम भए गेल अछि। यथा–सरिसब, पाहीटोल, बिट्ठो, हाटी, नवटोल, कल्याणपुर आ इसहपुर। सुनल अछि जे पहिने एहिमे 'सरिसब'कें छोड़ि शेष छबोटा गामक नाममे 'टोल' शब्द जुड़ल रहैक, जे आब मात्र पाहीटोल आ नवटोलमे रहि गेल अछि, प्रत्युत पाहियोसँ 'टोल' नदारद भेल जा रहल अछि।

प्रचलित किंवदंतीक अनुसार एक समय एकर पश्चिमी छोड़पर सुरसरिता गङ्गाजी प्रवाहित होइत रहथि, जकर पुबरिया तटपर सिद्धेश्वरनाथ महादेव छलाह तथा गामक बीचमे भगवती सिद्धेश्वरी। संगहि नदीक पश्चिममे जे गाम वा बस्ती छल, तकरा समाज 'गङ्गाकुली' कहैत छल आ वैह पछाति 'गङ्गौली' भए गेल। परंतु एहिमे किवदंतीक अतिरिक्त कोनो आन प्रमाण नहि भेटैछ, हँ किंवदंतियो बिना मूलक नहि होइछ से सत्य–'नह्यमूला प्रसिद्धिः'। परंतु हमर एक अनुमान आधारित मत एतए किछु भिन्न अछि जे, जाहि नदीकें अहाँ बेसी महत्त्व दैत छियैक तकरा आन पैघ नदीसँ तुलना कए ओकरे स्थानापन्न मानि लैत छी, जेना गोदावरी नदीकें 'दक्षिणी गंगा' कहल जाइत अछि। तहिना एहि परिसरसँ जे प्राचीन नदी (आब नहि अछि) अमरावतीक नामसँ प्रवाहित छल, आ जकर इतिहास भेटितो अछि, तकरे तत्कालीन समाज 'गङ्गा' कहए लागल होएत। एहना स्थितिमे गङ्गौलीकें गङ्गातटीय ग्राम मानब अनुचितो नहि। तें-ने अलग-अलग क्षेत्रमे गङ्गौली नामक अनेको गाम भेटैत अछि। एही कारणें मध्ययुगीन एक कवि सिद्धेश्वरीक वंदनामे कहने होएताह–

त्वामाश्रिताः कतिन देवि जनाः प्रपूर्णाः, सम्पूर्णमङ्गलकलाभिरपार शोभे।
गङ्गानुकूलवटमूलनिवासि दिव्ये, सिद्धेश्वरीजननि हे भव मेऽनुकूला।।

एहिना एक किंवदंती इहो अछि जे छट्ठम-सातम शतकमे भेल चौरासी सिद्धलोकनिक मध्य किछु मिथिलहुँमे भेलाह, तकर तँ प्रमाण अछि, मुदा ताहिमध्य जे सरिसबमे रहथि, तनिकहि द्वारा स्थापित ई सिद्धेश्वर वा सिद्धेश्वरी थिकीह, तकर किछु प्रमाण उपलब्ध नहि। प्रत्युत फक्करी, घुमन्त संत सिद्ध-संप्रदायावलंबी लोकनि मंदिर आदिक निर्माण करओलनि, से कल्पनातीत बुझना जाइछ।

ई 'सरिसब' गाम कहिया धरि 'सर्षप'कहओलक ओ 'सरिसब' कहियासँ भेल, ताहि प्रसंग एतबाक अवश्य कहब जे द्वापरयुगक मध्यमे महाभारतयुद्धसँ पूर्व जे 'सर्षप' छल, से तँ मात्र तेलहन-विशेषे छल, ओहि नामक गाम तँ पछाति भेल, मुदा से कहिया, कहब कठिन। हँ, बलरामकें मिथिला छोड़लाक सौ-दूसौ वर्ष बाद तँ निश्चये भए गेल होएत, अथवा ओही समयमे स्वयं विदेहराजक द्वारा वा हुनक प्रतिनिधिक द्वारा एकर नामकरण भेल होएतैक। किंतु 14म-15म शताब्दी धरि ई ग्रामरूपमे सर्षप अवश्य कहबैत छल, से निश्चित। कारण–ईसाक पंद्रहम सदीमे बंगालक नदियामे एक बड़ पैघ नैयायिक भेलाह वासुदेव सार्वभौम, हिनकहिं संग सर्वप्रथम नव्यन्यायशास्त्र मिथिलासँ बंगाल धरि पहुँचल। नव्यन्यायक नाम ओ ख्याति सुनिकें ई पक्षधरमिश्रसँ पढबाक लेल

मिथिला अएलाह। ओहि समयमे जिनका किनकहुँ कोनो पोथी पढबाक होइनि से ककरो हस्तलेख लए पढथि वा स्वयं ककरो पोथीसँ उतारि पढल करथि अथवा गुरुजी जैह पोथी देखि पढाबथि, सैह भेल हुनक गुरुवाणी वा पोथी। पहिने तँ ओ पक्षधर मिश्रहिक चौपाड़िपर किछु दिन पढलनि, तकर बाद जखन हुनका ज्ञात भेलनि जे वृद्ध वाचस्पति मिश्रक लिखल तात्पर्यटीका (उद्योतकरक न्यायवार्तिकपर लिखल)क प्रतिलिपि शंकर मिश्रक चौपाड़िमे सर्षपगाममे छनि, तँ ओ ओतए आबि ओकर प्रतिलिपि कएलनि। अध्ययन समाप्तकए जखन ओ जाए लगलाह तँ प्रतिलिपियो संग करय चाहल, मुदा तत्कालीन पंडित लोकनिक नियमानुसार ओ मिथिलासँ प्रतिलिपि कएकें पोथी अपना संग नहि लए जा सकैत रहथि, तें ओकरा एतहि छोड़ए पड़लनि, जे बादमे कोनो लागिएँ नेपाल राज पुस्तकालय चल गेल आ ओतहि एखनहुँ धरि सुरक्षित अछि। एहि प्रतिलिपिक पुष्पिकामे वासुदेव सार्वभौम स्पष्ट लिखैत छथि जे 'एकर प्रतिलिपि हम 'सर्षपगाममे शंकर मिश्रक चोपाड़िपर कएलहुँ' –'सर्षपग्रामे शंकरमिश्रस्य चतुष्पाठ्याम्'। एहि मातृकामे समय सेहो निर्दिष्ट-अछि–शाके 1410 अर्थात् 1488 ई.। कहबाक तात्पर्य जे एहि समय धरि, अर्थात् शंकर मिश्र, वाचस्पति मिश्र (द्वितीय), पक्षधर मिश्र तथा वासुदेव सार्वभौमक समय धरि सरिसबक नाम 'सर्षपे' छल, सरिसब नहि भेल छल। हिनका लोकनिक पश्चात् जखन मिथिलापर राजा नरपतिठाकुरक शासन (1700 ई.क आस-पास) भेल, आ हुनका संतान नहि होइत रहनि, तखन एक साधु आबि महारानीकें कहने रहथिन जे 'एक सालधरि अहाँ हरिवंशपुराणक प्रतिलिपि कराए पंडितवर्गमे बाँटू, समय पुरलापर अवश्य पुत्र होएत।' तहिना ओ करैत रहलीह, मुदा एक दिन खजानामे ओकर प्रतिलिपि समाप्त भए गेल। आब समस्या छल काल्हि भोरे पोथी कतएसँ आओत? राजपंडितक परामर्शपर दूत दौड़ल, सरिसब, शंकर मिश्रक चौपाड़िपर। यद्यपि शंकरमिश्रक परोक्ष (1460-70मे मृत्यु) ओहि समयधरि भए गेल छल, मुदा हुनक डीहपर हुनक वंशज आ शिष्यलोकनि चौपाड़ि चलबितहि रहथि। एतए राता-राती हरिवंशक प्रतिलिपि पूर्ण कए देल गेल, जकरा ओ दूत, वायुवेगें रानीसाहिबाधरि भौड़ागढी पहुँचओलक, जाहिसँ रानीक दान-कार्य बाधित नहि भेल। ई प्रतिलिपि कतोक छात्र मिलिकें कएने रहथि, जनिका सभक नाम ओहि मातृकामे अंकित छनि। एकर प्रतिलिपिमे समयक उल्लेख करैत लिखल गेल अछि'अग्रहणशुक्ला प्रतिपदा सोम, ल. सं. 501'(1610 ई.) एकर पुष्पिकामे जे चारिगोट श्लोक देल गेल अछि, ताहिमध्य तेसर श्लोकमे कहल गेल अछि जे ई प्रतिलिपि 'सर्षप' (सरसब) गाममे कैल गेल–

अहो सर्षपसाम्राज्यमेतज्जानीत सज्जनाः।
यामयुग्मेन' यत्राभूदेतत्पत्रशतद्वयम्।।

(1-यामार्द्धेनैव पाठांतर),(खंडवला कुलक इतिहास-यदुनन्दन झा)

मुदा पं. रमानाथ झा एकरा सत्य नहि मानि कहैत छथि जे जाहि प्रतिलिपिक चर्चा

एहिमे भेल अछि, से थिक गीतापर लिखल भवदेवकृत गूढार्थदीपिका। एकरे प्रतिलिपि भेल छल शंकर मिश्रक चौपाड़िपर नव गोट विद्यार्थीक द्वारा। नवोगोटेक नामक संग हुनका लोकनिक हस्तलेखमे ई मातृका दड़िभंगाक संस्कृत विश्वविद्यालयमे सुरक्षित अछि। एहि गीता-गूढार्थदीपिकाक पुष्पिकामे जे समयक निर्देश भेटैत अछि, से राजा नरपति ठाकुरक समयसँ मेल नहि खाइछ, तदनुसार ओ समय राजा शुभंकर ठाकुरक सिद्ध होइत। यथा–

शशिगगनशराख्ये सम्मते लक्ष्मणीये, प्रतिपदि सितपक्षे मासि मार्गे शशाङ्के।
सरिसबमधि केश्चित्सार्धमध्येतृवर्गैः द्रुतमिह भवदेवः पुस्तकं संलिलेख।।

(आनन्द मन्दाकिनी)

एकर 57 वर्ष बाद शंकरमिश्रक एक संतान, अर्थात् हुनक पुत्र गोविंदक वृद्धप्रपौत्र धर्मपति मिश्र याज्ञवलक्य स्मृतिक प्रतिलिपि कएने रहथि, जाहिमे ओ 'सरिसबग्रामेऽलिखत्' लिखेत छथि। तात्पर्य जे ओहि समयमे (1610 ई.मे) ई 'सरिसब' भए गेल छल। संभव थिक जे ओहि समय ई गाम दुनू नामे जानल जाइत रहल हो, अन्यथा 'अहो सर्षपसाम्राज्यमेतज्जानीत सज्जनाः आ 'सरिसबमधि कैश्चित्सार्धमध्येतृवर्गैः' पाँती कोना लिखल गेल रहैत, सेहो एक्कहि पोथीमे। एकर किछु दिनक पश्चात् शंकर मिश्रक अव्यवहित सोदर आ छोट भाइ महादेव मिश्रक पौत्र भानुदत्त मिश्रक पौत्रीपुत्र कवींद्र गङ्गानन्दक समय (18म शताब्दी)मे ई सरिसबहिसँ परिचित छल। कारण स्वयं गङ्गानन्द अपन 'भृंगदूत' नामक काव्यमे लिखैत छथि–

मीमांसायाः श्रवणसरसा शेमुषी तावकी चेत् चित्ते चेत्ते किमपि कविता कर्णने कौतुकं वा।
तत्र भ्राम्यन् बुधजनचतुः पाठिकासु प्रयत्नाच्छोभाशालि प्रियसरिसबग्रामरत्नं परीयाः।।

एतय इहो ध्यातव्य थिक जे गंगानन्दहुँक समयमे सरिसबमे कोनो एक-दू गोट व्यक्तिगत विद्यालय (चतुष्पाठी किंवा चौपाड़ि) नहि छल, जँ से तँ बहुवचनमे प्रयोग नहि भेल रहैत। जेना कि गङ्गानन्द कहैत छथि–'तत्र भ्राम्यन् बुधजनचतुः पाठिकासु प्रयत्नात्' जकर पाठांतर 'बुधजनचतुः पाठिकाभिस्तदात्वं' भेटैत अछि। अस्तु।

'सरिसब'क इएह थिक स्थापना-कथा, जे बाल्यावस्थहिसँ सुनल आ गुनल रहल अछि। एतय हम सरिसबक मूल निवासी वा अधिवासीक चर्चा विषयान्तर जानि छोड़ि देल अछि।

मो. 8895122312





कविता समवेत

विगत चारि दशकसँ मैथिली एवं हिन्दीमे रचनाशील कवि, कथाकार, आलोचक, अनुवाद चिन्तक; सम्प्रति भारतीय भाषा केन्द्र, जे.एन.यू. नई दिल्लीमे प्रोफेसर पद पर कार्यरत देवशंकर नवीन (1962) क दुनू भाषामे चौदह लिखित, चौबीस सम्पादित आ आठ टा अनूदित कृति प्रकाशित एवं प्रशंसित अछि। एतए प्रस्तुत अछि हुनकर किछु टटका कविता। दोसर कवि छथि हितनाथ झा, जे अनेक विधामे लिखैत कविता सेहो लिखैत छथि। हिनक चर्चित कृति 'कोइलख' एक नव स्थापना कयलक अछि। हिनक समीक्षापरक दू गोट पोथी शीघ्रहि आबि रहल अछि। तेसर कवि विनय भूषण कलकत्तामे रहि कविता आ आन्दोलनसँ जुड़ल छथि। हिनक उज्जर परबाक खोजमे कविता संग्रह प्रकाशित छनि। एकरा अतिरिक्त युवा कवि सारंग कुमारक छओटा टटका गजल।

बानरक कोनो घर नइँ होइछ

देवशंकर नवीन

टाट-देबालसँ घेराएल जगहकें
मनुष्य घ'र कहब शुरुह केलनि
जखन कि घ'र लेल घेराव
अनिवार्य नइँ होइत अछि
बानर अपन घ'रमे कहिओ
घेराव नइँ केलक
इनसानक घ'र जकाँ ओकरा घ'रमे
घेराव नइँ होइ छै
पूरा वायुमण्डले ओकर घ'र होइ छै
घेरावबला घ'र बनएबाक सलाहकें
ओ अधलाह मानैत अछि।

अपन संचय-वृत्तिकें सोहरएबा लेल
मनुक्खकें घ'र बनएबाक प्रेरणा
कृषि सभ्यताक विकास-कालहिमे भेटल हेतै
काल्हि लेल, काल्हिक काल्हि लेल
फेर आगूक काल्हि लेल
संचय करैत जेबाक इएह वृत्ति
इनसानक घ'रकें एतेक संकुचित क' देलकै
जे संचये ओकरा जीवनक उद्देश्य बनि गेलै
आ घ'र भ' गेलै ओकर कवच।

घ'रमे रहबा लेल, घ'रकें देखबा लेल,
घ'रमे बिलमि जेबा लेल आएल
स'र-कुटुम, प'र-पड़ोसियाक अनुराग
इनसानकें कनेक एक रती प्रेम सिखौलकै
कारण प्रेम, घृणा, ईर्ष्या सन'क वृत्ति
मनुष्य संग नइँ अनैत अछि
एतहि सिखैत अछि।

संग अनैत अछि केवल जिजीविषा,
जीबाक इच्छा
जी गेला पर जगै छै भूख
पेटक भूख, जाँघक भूख, ऐश्वर्यक भूख

अइ भूखकें गुदगुदबैत लोक
कखन इनसानसँ हेमान भ' गेल—
ओकरा पता नइँ चललै
घ'र बसबैत, भूख मेटबैत
मनुष्यसँ नरभक्षी भ' जेबाक
त'र-तरीका आ समय
ओकरा बूझिमे नइँ अएलै।
कारण, वृत्तिकें सोहरबैत
ओकरा भीतरहुमे कोनो क्षुद्र घ'र,
घ'र क' गेलै

पेट-जाँघक भूखमे व्याकुल तँ
बानरो होइत अछि
मुदा बानरक घ'र नइँ होइ छै
अर्थात् घेरावबला घ'र नइँ होइ छै
दिग्दिगन्त ओकर घ'र होइ छै
ओ तनतः मनतः घेरावसँ
निरपेक्ष होइत अछि।

बानरो'क साम्राज्यमे होइत हेतै
वर्चस्व आ ऐश्वर्य पर बहस
ओकरहु वाचिक परम्परामे होइत हेतै
समाज-संचालनक कोनो नीति-शास्त्र
मुदा ओकरा घ'र नइँ होइ छै
कहल जाइछ जे मनुक्ख जाति
बानरेक विकसित वंशज थिक

बानरहुकें स'र-कुटमैती होइ छै
नेह-प्रेम ओकरहु होइ छै
ओकरहु होइ छै सखा-सन्तानसँ ममता
सिखबिते रहैत अछि बानर
अपन अबोध सखा-सन्तानकें
डारि-डारि कूदि जएबाक कला

अपना बूतें अहार जुटएबाक
पारम्परिक कौशल
आफद-बिपदसँ लड़बाक शक्ति
संकटसँ बचि निकलबाक चतुराइ
कारण ओकरा घ'र नइँ होइ छै।

अपन सन्तानकें ओ
नइँ सिखबैत अछि कहियो संचय-वृत्ति
घेरावबला घ'र बनएबाकक क्षुद्रता
उदार वायुमण्डलमे ओ घेरावक
विभाजक-रेखा
किन्हुँ पसिन नइँ करैत अछि।

बर'दकें अपन घ'र नइँ होइ छै

घ'र की सरिपहुँ ओएह होइत अछि...
जतए मनुक्ख घुरि अबैत अछि बेर-बेर?
फेर तँ लोक बेर-बेर अबैत अछि
दफ्तर, कारखाना, हाट-बाजार
खेत-खरिहान, चुनाव-बूथ, मन्त्रालय
(मन्त्रालय अब देवालयसँ अधिक फलःप्रद होइत अछि)
मुदा एतए तँ किनकहु घ'र नइँ होइ छनि!

बथानसँ फुजिकए बर'द सेहो
बेर-बेर जाइत अछि खेत
बेर-बेर घुरि अबैत अछि बथान पर
मुदा ओकर अपन कोनो
घ'र नइँ होइत अछि,
खेतो नइँ होइत अछि,
तकर ओकरा कोनो
मनोमालिन्य नइँ होइ छै
मनोमालिन्य होइ छै असन्तोषसँ

बर'दकें असन्तोष नइँ होइ छै
तें स'बो टा बर'द आशुतोष होइत अछि
स्वामिएक घ'रकें
अपन घ'र बूझैत अछि
शान्त-चित्त पाउज करैत रहैत अछि।

पाउज करैत, चारा पचबैत,
थकान मेटबैत बर'द
इनसान जकाँ बेचैन नइँ रहैत अछि
अपनहि घ'रमे बैसिकए—
पड़ोसिया आ पड़ोसियाक
स'र-कुटुम'क सुखसँ..

आशुतोष बर'दक जिमामे
अपन काल्हि लेल
कोनो योजना नइँ होइत अछि
अपन योजनाविहीनताक ओकरा
कोनो दुख नइँ होइ छै
परपीड़नक इनसानी योजनासँ
बेसी नीक ओ
निठल्ला बैसब बुझैत अछि
घ'रक शुभग आभा पर्यन्तमे
उद्विग्न मनुष्य पर
विषादग्रस्त बर'द निर्णय दैत अछि...
ई इनसान कहिओ नइँ सुधरतै!

खूनीकें घ'रक समझ नइँ होइ छै

दंगाई नइँ जनैत अछि घ'र क अभिप्राय
जनितए, तँ नइँ जरबितए/उजाड़ितए
बस्तीक बस्ती
कोनहुँ सुच्चा मनुष्य तँ
देखिओ धरि नइँ सकत
कोनहुँ घ'रक जरब/उजड़ब

कारण घ'र असगरे नइँ उजड़ैत अछि
ओकरा संगें उजड़ैत अछि—
मनुक्ख, मनुक्खक सपना, सपनाक परिवेश
घ'रमे रहिकए सपना देखैबला मनुक्ख
असलमे कहिओ घ'रसँ बाहर
होइते नइँ अछि
ओकर शरीरे टा जाइ छै बाहर
शरीर संगें बाहर जाइओ कए
ओ तथ्यतः घ'रहिमे रहैत अछि
तें इनसान बेर-बेर घुरैत अछि
अपन घ'र
मुदा दंगाई नइँ जनैत अछि घ'रक
अभिप्राय
कारण ओ घ'रमे नइँ, अपन भीतर के
घ'रमे रहैत अछि
जतए सपना आ अनुराग नइँ
लहलहाइत रहै छै द्रोह-दंगाक फसल...।

आगि आ मनुक्ख

आगि आ बसातकें
अपन-आन'क समझ नइँ होइ छै
ओ अपन स्वभावसँ काज करै छै
आगि स'ब किछुकें जरा दै छै
जीव, जन्तु, फूल, कचरा,
बिष्ठा...स'ब किछुकें
बसात स'ब किछु सोखि लै छै
सुगन्ध, दुर्गन्ध, मानवता, दानवता...
स'ब किछुकें
आगि आ बसात वातावरणमे
सदैवसँ उपस्थित छलै
लोककें देखाइत नइँ छलै
मनुष्यक कोनो वानरी वृत्तिसँ
आगि प्रकट भ' गेलै

मनुष्य बुझलक जे आगि ओकरहि बुतें
उत्पन्न भेल

आगि आ दुर्गन्धके बसात धुधुआ देलक
त' मनुष्य बुझलक जे बसात ओएह
उत्पन्न केलक
शोधक अकादेमिक परिभाषा इएह थिक
विस्मृत तथ्यकें उजागर करब
शोध कहबैत अछि
मुदा मनुष्य नइँ जनैत अछि
जे विनाशक वृत्तिक आविष्कार
शोध नइँ कहबैछ
विनाश कोनहुँ स्थितिमे
शोध नइँ होइत अछि

आगि आ बसात जखन धरि बाहर छल
लोक एक सीमा धरि एकरा पर
नियन्त्रण क' लै छल
जहियासँ ई प्रविष्ट भेल मनुक्खक
उपद्रवी माथमे
जरौने जा रहल अछि मानवताक नींव
जरैत जा रहल अछि बस्तीक बस्ती,
मूल्य, सरोकार
आगि सबसँ पहिने
मनुक्खक माथमे सुनगैत अछि
फेर धधकैत अछि
ओकर आसुरी वृत्तिक उत्ताप
ओहि उत्तापकें गुदगुदबै लेल
ओ बाहरमे सुनगबैत अछि आगि

जरैत लोक, बस्ती, खेत देखिकए
तृप्त होइ छै ओकर आसुरी वृत्ति
ओ अट्टहास करैत अछि
अट्टहास करैत भ्रंशमति होइत अछि...

ऊपर आगिक आविष्कर्ता पूर्वज
वेदनासँ कराहि उठै छथि
चिचिआकए रोकै छथि अपन सन्ततिकें—
हे हमर वंशज!
ई काज जुनि करह!
आगि हम रक्षा लेल जरौने रही
संहार लेल नइँ
वंशज नइँ सुनैत अछि
ओकरा नइँ सुनबाक छै
क्षमता पाबिकए कोनो सृजन
सृजेताक बात कहाँ सुनैत अछि?

घट-घटमे कोना रहबै?

हे मर्यादा पुरुषोत्तम! हे दुष्ट-दलन!
हे दीन-दयालु! हे सबजनहितकारी!
अपनेक जीवन-चर्या तँ जन-जन लेल
प्रेरणा अछि
अपने सन सर्वशक्तिमान'क सोझाँ
हम समस्त शक्तिकें झूस बुझै छलहुँ

त्रेता युग'क दुष्टता मेटाकए अहीं त'
संरक्षित केलहुँ जन-जनकें
मायावी'क नाश, दुष्टक संहार केलहुँ
(ओना मायावी तँ आइओ बहुत अछि
चतुर्दिक!)
गरुड़क महत्ता बढ़बै लेल
नागफाँसमे स्वयं बन्हा गेलहुँ

हे बालिसंहारक! हे दससिरनाशी!
सुग्रीवकें किष्किन्धाक राजपद देनिहार!
विभीषणकें लंकेश बनौनिहार!
सकल चराचर'क सृजेता!
हमरा लेल घ'र आ

घ'र लेल हमरा रचनिहार!

सबकें सब किछु देनिहार!
हे सकल सृष्टि केर कण-कणव्यापी!
अहाँक गृह-निर्माता अहूँसँ बेसी
शक्तिवान छथि की?
ओइ गृहमे रहिकए अहाँ घट-घटमे
कोना रहबै?

भर्तृहरिक अज्ञान

आबह भर्तृहरि! हम तोरा नीति सिखबै
छिअह—
तोरा तँ बुझले नइँ छलह जे—
राष्ट्रक नायक-उन्नायकक जीवन-दर्शन
आत्मसँ बाहर नइँ हेबाक चाही
तों अहू तथ्यसँ अनभिज्ञ छलह जे
अमर हेबा लेल
भर्तृहरि हएब जरूरी नइँ, कंस हएब
जरूरी छल
कारण कंस बेर-बेर अबैत अछि धरती पर
तें बेर-बेर अवतरित हेताह कृष्ण!
तों तँ गेलह, से गेले रहि गेलह!
अएबे नइँ केलह घुरिकए दोबारा!
केहन राजा छलह तों!
ने कथनी बदललह, ने कथनीक भाषा
ने भाषाक परिभाषामे कोनो खोट अनलह
ने हत्या केलह, ने दंगा करबौलह,
ने फरेब रचलह,

सफल राजा तँ ओएह थिक जे एना करए
आ कहए जे गुमराह केनिहारकें
बख्शल नइँ जाएत
आबह भर्तृहरि एक बेर फेर!
कनेक सीख लएह किछु, जे तहिया नइँ
सीख सकलह!

निमन्त्रित भेड़िया

अकाल-दुष्काल, महामारीमे मरल लोक
की सत्ते महामारीसँ मरै छथि?
मृतकक वंशजकें तँ सएह कहल जाइ छै!
मुदा एहेन कहिआ हएत अइ देशमे—
जे विज्ञापनी उद्घोषक, बणिक, पत्रकार
नेता, अफ्सर, सत्ताक लठैत लोकनिसँ
ई वंशज लोकनि पूछताह—
—तों कोना जीबैत रहि गेलहक?

अपनहि रचल देवतासँ डराकए
सवाल नइँ केनिहार जनसमूहक मृत्यु—
सरिपहुँ एहने हेबाक चाही

चुट्टी-पिपरी, मूस-बिलाड़ि, कुकूर-बानर,
साँप-छुछुन्नरक उपद्रवसँ बचबा लेल
भेड़ियाकें घर बजौनिहारक दलानमे
भोरे-भोर कोनो परिजनक
अधचिबाओल लहास देखाए—
त' 'किं आश्चर्यम्!'

मो. 9868110994



अइ जंगलमे

हितनाथ झा

जंगल मनमे
जीवन वनमे
चहकल चिड़िया
कुहकल कोइली
सिहरन तनमे।

कलकल धारा
भलभल सारा
बाघ-सिंह
जोरे चिग्धारा
गूँजय नभमे।

झरना झर-झर
बहइछ निर्झर
लय संगीतक
सस्वर गीतक
विलसय घनमे।

प्रकृति निहारय
प्रेमक आलय
मन देवालय
पूजा विधिवत
अरपन छनमे।

कतौ न कटुता
खाली रस टा
धन-बल दूरे
जीवन पूरे
अइ जंगलमे।।

मानवता

मानवता नामक बुच्ची हेरा गेल अछि
हमर परिवारसँ
हमर समाजसँ
हमर गामसँ
हमर जिलासँ
हमर राज्यसँ
हमर देशसँ
एतबे नहि—एतबे नहि
सौंसे संसारसँ...।
आँखि ताकि रहल अछि अइ ठाँ,
ओइ ठाँ सब ठाँ

मित्रक नकारात्मक उत्तर
हृदय पिघलि रहल अछि
राम जकाँ
(जखन ओ सीताक खोजमे
बौआइत छलाह रने-बने)।
रावण हिनका हरि क'
अशोक वाटिकामे तँ ने राखि देने अछि!
मुदा
ओह!-ओह!!
मानवता पिघलल कहाँ?
ओ तँ अछि
बहुत दूर-बहुत दूर
एहि असार संसारसँ...

नहि...नहि...
अछि ओ एही जहानमे
एही देशमे
एही राज्यमे
एही जिलामे
एही गाममे
एही समाजमे
एही परिवारमे...

हे सीते सन पवित्र मानवता!
आउ
कतय नुका रहलहुँ अछि?
(जनकक परतीमे
कि रावणकेर वाटिकामे।

देरी किए कय रहलहुँ अछि?
जल्दी आउ
अधिकार जमा लेने अछि सौंसे संसार
आइ—दानवता।

कोनो परिस्थितिमे
बहराउ आब पर्दासँ
आउ आब सोझाँ
तम मिझाउ
ज्योति लाउ
जगतकें जगमगाउ
—मानवता!

कोरोना आ बड़साइत

आम एहि बेर फड़ल नहि,
(जेनो तीसो वर्षसँ फड़ैत छल...)
मुदा गाछे छैक
खसलै बिहाड़िमे,
वर्षामे,
अनदिनो गोट-पगरा।
ई बात जखन कनियाँकें फोनसँ कहलियनि,
तँ भेल नहिएं कहने रहितियनि तँ बढियाँ।

फरमाइसपर फरमाइस...

गुरम्बा बना लिय'

नहि,
कठिन छैक

तँ कुच्चा अचारे
नहि,
कोनो झंझट नहि छैक
एना 'क' दियौक
ओना क' दियौक,
छतपर तँ रौद अबिते हैत
ओतै सुखा दियौ...

नहि
इहो नहि,
बुझै छिऐक महत्व हमर!
तखन फाड़ा तँ नहिएं बनाओल हैत
कटुआ अँचार सेहो नहि...
मुदा
बरवादो तँ नहि हुअए दियौ...

ककरो दइए दियौ...

कहाँ कतौ जाइ छी।
ई ल' क' जैब,
तँ कहत एही बहाने
असगर छथि ने!
मन नहि मानलकनि।

हँ! ठीके कहलहुँ
कतौ नहि जाउ
कोरोना जे ने करय!

मुदा हे! फेकबै नहि
ओहि कोनमे छै कोनियाँ
आ सिलौट-लोढ़ीक पाछू हाँसू
धार जँ नहियों हेतैक तँ कने पिजा लेब
बैसल-बैसल करबो की करब!

चारि फाँक क' काटि
कोइली हटा
छत पर सुखाय ले' छोड़ि देबै
रातिमे शीत-पानिसँ हटा देबै
आमिल तैयार भ' जैत।

की करितहुँ!
कतेक ना-नुकुर करितहुँ
आदेशक अनुपालनमे लागि गेलहुँ
जहिना-तहिना
हाँसूमे धार पिजौलहुँ...
कोरोनाक मारि जे ने करय।

किछु दिनक आफियत लेल
कहने रहियनि जाउ
हम असगरो काज चला लेब
(मनमे सोचल चैनसँ तँ रहब)
मुदा, सत्ते
ई कोरोना तेहेन ने चैन क' देलक
(ने सूतय बनय-ने जागल बनय)
जे चैनमे बेचैन भेल
निचौनियत छीनि लेलक...

कि काल्हि
ओतैसँ
वीडियो कॉल द्वारा
बीअनि डोला
पैर पर पानि खसा
शीतलता प्रदान केलनि
अपन महत्वक भान करौलनि
आ फेर हम
ऊर्जस्वित होइत
अनेको बाधाकें धंगैत
फेर संकल्पित भ' जाइत छी।
ई तँ तात्कालिक अछि
अपन संयम आ संकल्पसँ
केहेन-केहेन स्थायी बाधाकें
कनैत-हँसैत पार केने छी
तकर ई तँ
पासंगो मात्र नहि...।

प्रयोजन अछि

ओ बुचिया
जँ कने
हँसिये देलकै
अपन समाजपर
तँ एहिमे
दोष ककर?
ओकर कि
अपन
विकृति समाजक।

ओकर हँसी
कुटिल नहि
निश्छल छलैक।
दू आत्माक
मिलनमे
काटरक कारणे
होइत पापक
विरुद्ध एक
झलक छलैक
जे अदौसँ
बच्चा आ बुचियामे
विभेद होइत
आबि रहल छै।
सम्बन्धकें
व्यवसाय बनयबाक
विरुद्ध
मूक चिनगी छलैक ओ...।

आइ प्रयोजन अछि
एक नहि
अनेक बुचियाक...
मुदा
ओहि बुचियाक नहि
जे अपन प्रतिभा
कुंठित करैत
जीवनभरि
परीक्षा दैत रहलि,
नोर बहबैत
जाँत आ चक्कीमे
पिसाइत रहलि,
उक्खरि भ'
मूसरक चोटसँ धँगाइत रहलि,
काँच जारनि जकाँ
चुल्हामे
धुआँइत रहलि...।

प्रयोजन अछि आइ
ओहि बुचियाक
जे
धूआँकें धधरामे
बदलि सकय,
अपन आँखिसँ
समाजकें देखि सकय,
अपन पाँखिसँ
समाजमे उड़ि सकय,
समाजकें
बदलबामे
मुख्य भूमिका बनि सकय...।

तिले-तिले बहब...

तिले-तिले बहब...
तिले-तिले बहब...
माँ, बाबी, काकी कहैत छलीह,
...अपन अँगनासँ आन अँगना धरिक,
(बुझितो कहाँ छलिऐक अपन-आनमे भेद)
आ हम सभकें कहैत छलियनि
हँ...हँ...हँ...
बहब...बहब...बहब...

भेटैत छल चाउर-गूड़-तिल, तिलवा आ संगमे
माथ ठोकिक' आशीर्वाद...
आ गोड़ लागि लैत छलियनि,
भोरे-भोर नहयलाक बाद।

कहाँ होइत छल जाड़
पोखरिमे नहयलाक बाद।
(मासो भरि करैत छलहुँ
प्रातःस्नान पोखरिमे)।

आइयो तिला संक्रांति छैक,
पोखरिमे तँ नहि,
बाथरूममे,
मुदा नहयलहुँ।

तिल-चाउर खयलहुँ,
तिलबो खयलहुँ, तिलकुट सेहो..
माँक परोक्षो आशीर्वाद तँ अछिये,
बाबी, काकीक सेहो
सबहक...

मुदा ओह!
एतय ने अपन आँगन अछि, ने
आनक।
किन्तु आभासी दुनिया
एतेक विशाल भ' गेल अछि,
जे आँगनसँ टपि, पूरा संसार
पसरि गेल अछि
शुभकामनाक पथार लागि गेल

अछि,
एक-दू दिन पहिनहिसँ।

मुदा ओ छोट -छीन आँगन,
(एहि आँगनसँ ओहि आँगन)
विशाल दुनियोंसँ कइएक गुना
विशाल लागि रहल अछि।

विकासक कथा

कते विकास भेलैए
अपना पटना शहरक!

डाक बंगला पथक!!

एही दुधिया रंगीन
एल ई डी बल्बक नयनाभिराम इजोत
होइत
जतय सूइक नोंको चमकि उठत
समतल सुसज्जित सड़कपर
एम्बुलेंसमे बिना ऑक्सीजनक
अबैत-जाइत गंभीर रोगी
जतय अस्पतालमे
जीवन-रक्षकक अत्यावश्यक
उपकरण नहि रहलापर
सरकारी अस्पतालसँ

निजी अस्पताल दौड़ैत
कोनो एक अस्पतालक सीढ़िएपर
अपन अन्तिम साँस छोड़ैत
अनाथ होइत अबोध नेनाकें
सरकारी-तन्त्रक
विकासक कथो नहि
कहि सकल।

9430743070



कोरोना-अवकाश

बिनय भूषण

ई एक्कैस दिनक घरबन्दी
ओकरा लेल घरबन्दी
नञि छियैक
ई एक्कैस दिनक घरबन्दी
ओकरा लेल अवकाश छियैक-अवकाश
जखन ओ सुनैत अछि जे
एक्कैस दिन अपने घर मे
रहबाक आबि गेल अछि आदेश
जखन ओ सुनैत अछि जे
एक्कैस दिनक लेल ओकर मालिक
द' देतैक ओकरा छुट्टी
जखन ओ सुनैत अछि जे
एक्कैस दिनक लेल
ओकरा करबाक अछि आराम
तखन ओकर हृदयक आकाशमे
उमरि अबैत अछि प्रसन्नताक बादरि
ओकर मोनक जमीन पर
सोहनगर पाँखि पसारि
नाचय लगैत अछि मनमोहक मयूर।
ओकर काया सदिखन
लगौन' रहैत छल अवकाशक आस
ओकरा कहाँ कहियो भेटैत छलैक छुट्टी
ओ कहाँ कहियो सुति पबैत छल भरि निन्न
ओ तँ ओंघाइते उठैत छल भोरमे
ओंघाइते चलि जाइत छल काजपर
ओंघाइते करैत छल काज
काजमे भ' जाइत छल मग्न
लगैत छलैक जेना
दस-दस हाथीक बल छलैक ओकरा
बिसरि जाइत छल भूख-पियास।
बड्ड जतनसँ ओ
लाल टूहटूह भारी आ गरम लौहक सिल्ली
ओकर देह नहायल रहैत छलैक
घामक टघारसँ
ओकर नाकसँ टकराइत रहैत छलैक
सदिखन लोहाइन गंध
एहि गंध मध्य ओ
लैत छल गंहीर साँस
हपसि जाइत छल ओ
इयेह हपसी आ साँस ओकरा लेल
छलैक अनुलोम-विलोम
इएह हपसी आ साँस ओकरा लेल
छलैक ऊर्जाक अजस्र-स्रोत
साँझकें मालिक
दैत छलैक किछु कैंचा
इयैह कैंचा ओकरा लेल
छलैक अकुत धन-सम्पत्ति
साँझकें एहि कैंचाकें
बदलि लै छल रोटीमे
मिझा लैत छल पेटक आगि
थकानक नशामे मदमस्त
सुति रहैत छल निसभेर।
आइ भोरे-भोर
जागि गेल अछि अपन बिछाओन पर
ओकर आँखिक आगू
देखा रहल छैक प्रसन्नताक महासमुद्र
ओ सोचैत अछि
आइये साँझ ट्रेन पकड़ि चलि जायत गाम
ओ सोचैत अछि
एतेक नमहर छुट्टी
ओकरा कहाँ भेटैत छलैक कहियो
ओकर हृदयमे घुमरय लगैत छैक
सोनहैला सपनाक बादरि।
ओ सोचय लगैत अछि
एहि छुट्टीमे बहुत बेशी दिन ओ
रहत अपन पत्नी आ बाल-बच्चाक संग
ओ सोचय लगैत अछि
एहि छुट्टीमे अपन माँ-पिताक
करत सेवा-सुश्रुसा खूब फैलसँ
ओ सोचय लगैत अछि
घरक बनल अमृत सन भोजनसँ
तृप्त होयत हमर मोन
अपन बाड़ीक रामतोरइ आ झिंगुनी
ओ सोचय लगैत अछि
तुलसीचौड़ाक बगलमे रोपल मिरचाइक गाछसँ
तोड़ि आनत हरियर कुच-कुच मिरचाइ
ओ सोचय लगैत अछि
टाट पर लतरल खीड़ाक लत्तीसँ
खयबाक लेल तोड़ि आनत खिज्जा खीड़ा
ओ सोचय लगैत अछि
काटि आनत हँसुआसँ
चार पर लतरल लत्तीमे लागल
कदीमा आ सजमनि
ओ सोचय लगैत अछि
ओहि ठाम रहतैक
घरे के चाउर, घरे के दालि
कतेक मजा लगतैक गाममे।
एहि घरबन्दीकें
ओ बूझैत छैक अवकाश
गाम जयबाक अवकाश
अपन माटिक दर्शनक अवकाश
भगवानसँ भेंट करबाक अवकाश
हँ! हँ! भगवानक दर्शनक अवकाश
सत्ते ओकर माँ-पिता ओकरा लेल
भगवान छियैक-भगवान
प्रेमक इजहार करबाक अवकाश
पत्नीक मुंह देखबाक अवकाश
अपन बाल-बच्चाक गाल चुमबाक अवकाश
गाममे शान्तिसँ रहबाक अवकाश
मित्रगणक बीच गप लड़ेबाक अवकाश
चौक-चौबटियापर सुख-दुख बतियेबाक अवकाश
अपन गाछीमे बैसि आम ओगरबाक अवकाश
मशीनी जीवनसँ मुक्तिक अवकाश

प्रेम आ आपकताकें महसूस करबाक अवकाश
प्रकृतिक साक्षात्कारक अवकाश
बाल-बच्चाकें वात्सल्यक दर्शन करेबाक अवकाश
बूढ़-बुजुर्गसँ स्नेह पयबाक अवकाश
ओ अत्यंत उत्साहित भ'
गाममे अवकाश बितेबाक
बनब' लगैत अछि योजना।
ओ सोच' लगैत अछि
एहि अवकाशमे ओकर कोदारि
चीरतैक पिरथीक वक्ष
अपन पिरथीक माटिसँ बहराइत जीवन-गंधसँ
ओकर मोनमे होयतैक आह्लादक संचार
माय धरतीक आशीर्वचनसँ
अलोपित भ' जेतैक ओकर आत्माक पियास
ओ निहारत अपन खेतकें अन्नमन्न ओहिना
जेना कोनो मंदिर व मंदिर-परिसरकें
निहारैत अछि तीर्थयात्री।
खेतमे ओलरल खेसारी आ मौसरीक लत्ती देखि
ओकर आँखिमे आबि जेतैक हरियरी
ओकर आँखिक आगू चमकैत रहतैक
सोनाक छड़ीक चमकैत पीयर रंग
ओकर शीर्ष पर नन्हकी सोनक झूनझूना सन
झूलैत चमकैत गहुमक शीश
ओ निहारत मोनभरि मक्कैक गाछ
तरुआरि सन पातकें देखैत ओकर देहमे
हजार-हजार हाथीक ताकत
ओकर पाँजरमे खोंसल हरियर बालि
एहि बालिक भीतर नुकायल जीवन-रस
बालिक शीर्षपर हिलैत उज्जर आ बादामी रंगक मोछु
मोछुसँ बहराइत जीवन-गंध।
ओ सोच' लगैत अछि
भोरे-भोर जायत अपन गाछी
गाछीमे गमकैत रहतैक मज्जरक सुगंध
महुआक गाछसँ
तुवैत रहतैक गमगमौवा उज्जर फूल
ओकर कानसँ टकरेतैक कोयलीक कूक
सत्ते ओ प्रसन्न अछि अवकाशक संवादसँ
अवकाश-एक्कैस दिनक अवकाश
मोटरी-चोटरी बान्हि
ओ कर' लगैत अछि साँझक प्रतीक्षा
असंख्य सपनाक पोटरीकें
अपन हृदयमे नुकौने
टीसन दिस बढ़ा लैत अछि अपन डेग।

मृत्युगीतक डेराओन राग

कोरोनाक ठोरपर
थिरकि रहल अछि मृत्युगीत
एकर गीतक स्वरसँ
बहरा' रहल अछि विध्वंस-राग
एहि रागमे सन्हियायल अछि
संदेह, भय आ अदंक
मनुक्खक आर्तनादकें
बना' रहल अछि
आओर बेशी त्रासद ई गीत
असंख्य व्यंग्य-भावक रसमे
बोरल अछि एहि गीतक स्वर
एहि गीतक कोलाहलसँ
डेरायल अछि मृत्यु
कानसँ टकराइत अछि
मृत्युक अरण्य-रोदन
जोर-जोरसँ
घिनाओन हँसीक संग
अट्टाहस क' रहल अछि कोरोना।

मृत आत्माक लेखा-जोखा करैत
अकच्छ भ' गेल छथि चित्रगुप्त महाराज
फेंकि देने छथि खाता-पत्तर
थाकि गेल अछि यमराजक महींस
उठान हारि रहल अछि महींस
पैदल दौड़ैत-दौड़ैत
थाकि गेल छथि यमराज
प्राण राखबाक लेल
यमराजक झोड़ामे
नञि अछि मिसियो भरि जग्गह
यमराज अकानि रहल छथि
कोरोनाक संगीतक ध्वनि
यमराजक हृदयमे
उमड़ि गेल अछि दयाक महासमुद्र
भोकारि पाड़िकें
कानि रहल छथि यमराज
यमराजक आँखिसँ
बहि रहल अछि दहो-बहो नोर।

निःसहाय भ' गेल अछि लोक
समस्त असरा पर लोककें
नञि अछि मिसियो भरि विश्वास
अस्पतालोमे कहाँ
बाँचि पाबैत अछि लोकक प्राण
एहि कोरोना-कालक गालमे
समा गेल अछि
असंख्य आत्मीय लोकक प्राण
मित्र आ परिजन-पुरजनक आँखिमे
कहाँ बाँचल अछि
मिसियो भरि नोर
कानैत-कानैत लोकक
सुखा गेल अछि कण्ठ
बौक बनल लोकक
हृदयक जमीन पर
पसरि गेल अछि
मृत्युक मरुस्थलक दृश्य।
आत्मनिर्भरताक महामंत्र
कहाँ आबि रहल अछि काज
भगवानक पूजा-पाठ
समस्त कीर्तन-भजन
यज्ञ परयोजन तंत्र मंत्र
लागि रहल अछि व्यर्थ
कोरोनाक तांडवक आगाँ
भगवानो भ' गेल छथि हतप्रभ
अपन सन्तानकें
काल-कवलित होइत देखि
भगवानोक आँखिसँ
बहि रहल अछि दहो-बहो नोर
नीमन दिनक संभावनाक आशमे
कोरोनाक कीड़ाक भयकें ललकारैत
अपन बाधित श्वासक संग
दौड़ैत-दौड़ैत सकाले
पहुँचि गेल छल मतदान-केन्द्र
अत्यंत उत्साहक संग
टिपने छल बटन लोक
गणपति पर आश लगौने
असीम आशाक संग
निश्चिन्त भ' सुख-चैनसँ
घरमे सुतबाक सपना
सजौने छल लोक।

आइ प्राणवायुक लेल
अहुँछिया काटैत-काटैत लोक
त्यागि रहल अछि अपन प्राण
असगरे घरमे बैसल-बैसल
थस्स ल' रहल अछि काया
निस्तेज भेल जा रहल अछि माथ
संदेहक सियाह अन्हारमे
औना रहल अछि लोक
अपन हृदयमे अदंककें जोगने
डर आ मृत्युक डेराओन कारी बादरिकें
निहारि रहल अछि लोक

अपन परिजन-पुरजन, दोस-महीम
दर-दियाद, सर-समाज आ
कर-कुटुमसँ दूर
दूर-बहुत दूर रहबाक विवशताक संग
उठैत-बैसैत, भूखसँ कुहरैत
एकान्तमे सुनैत रहैत अछि
वीभत्स आ डेराओन संगीतक स्वर।

कोरोना खौंझा' रहल अछि लोककें
लोक कोरोनासँ लड़बाक लेल
गाब' चाहैत अछि
एकटा विजयोल्लासक गीत
लोक कोरोनाक विनाशक लेल
गढ़' चाहैत अछि एकटा अस्त्र
लोक लोककें भरोस देबाक लेल
लिख' चाहैत अछि
एकटा आशावादी महागाथा
कोरोना कोनो मायावी जकाँ
बदलि रहल अछि अपन रुप
कोरोना रचि रहल अछि
असंख्य भयाओन विध्वंस-राग
कोरोनाक संगीतक स्वर
भेल जा रहल अछि डेराओन
डेराओन आओर बेशी डेराओन।

ठमकि गेल अछि लोकक पयर
सुन्न भ' गेल अछि लोकक माथ
टूटि गेल अछि सम्बन्धक डोरि
थमि गेल अछि कलम
नमरल जा रहल अछि
लोकक स्वार्थक क्षेत्रफल
धरती बनि गेल अछि फुटबालक मैदान
लोक गेंद जकाँ खा रहल अछि
आजुक बुधियार लोकक पायरक ठोकर
कतेको गमा' देलक अपन प्राण
बहि गेल गंगाधारमे

श्मशानमे अंत्येष्टिक इन्तिजार करैत
निभरोस भ' रहल अछि असंख्य लहास
लहाससँ बहराइत अछि डेराओन गंध
एहि गंधमे मदमस्त भ'
प्रफुल्लित मुद्रामे नाच' लागैत अछि कोरोना
नदीमे बहैत लहाससँ
बहरा रहल अछि कोरोना
गाबि रहल अछि नव-नव मृत्युगीत
नव-नव परिधानमे सजि-धजि
गली-गली घूमि रहल अछि कोरोना
क' रहल अछि महामृत्युक नृत्य
कोरोनाक संगीतक विध्वंस-रागसँ
दलमलित भ' गेल अछि हवा
पतनुकान लेनय लोकक मोनमे
जनम' लागल अछि एकटा संगीत
संगीतमे मिझरायल अछि एकटा राग
राग-अदंकक राग।

आखिर एना कियैक लागि रहल अछि

एखन पूव क्षितिजसँ
हुलकि रहल छथि बालारुण सूर्य
निशाक घोर तिमिरकें
ललकारि रहल छथि बाल-दिवाकर
फूला गेल अछि राजीव
पंकजक मुस्किआइत पाँखिक प्रतिबिंबसँ
आह्लादित भ' गेल अछि
सरोवरक निर्मल तल
पोखरिक महार पर ठाढ़ पाकरिक गाछ पर
चुनमुना' रहल अछि चिड़ैं
हरियर-हरियर दूभिपर
चमकि रहल अछि मोती
हम घरसँ बहरयबाक क' रहल छी प्रयास

आँखिक आगू देखाइत अछि अन्हार
हम जंगलासँ हुलकि-हुलकि
जोह' लगैत छी कोनो इजोतक आश
चारूकात देखाइत अछि अन्हार
अन्हार अन्हारे-अन्हार
हमर हृदयमे पैसल अदंकक नागफेनी
क' दैत अछि लोहुलोहान हमर आत्माकें
हम डेराइत-डेराइत
घरसँ बहरेबाक लेल
संगोर' लगै छी धैर्य आ साहसक अमृत
सुरूज तँ प्रारंभहिसँ
अपन ज्योति आ धाहसँ
अपन अजस्र ऊर्जाक स्रोतसँ
करैत रहल अछि सदिखन
आवेशित हमर आत्माकें
हमर जिजीविषाकें
सदिखन करैत रहल अछि उद्वेलित सुरूज
सुरूजे तँ परसैत रहल हमरा लेल
समस्त जीव-जगत लेल जीवन अमृत
पता नहि कियैक आइ
हमर आँखिक आगू
देखा रहल अछि
भय आ अदंकक हवा
हमर जीवन-संघर्ष आ साहस
हमर अक्खड़पन
आ अपराजित होयबाक अटल संकल्प
तिलमिला रहल अछि आइ।

जीवन जीवाक लेल
जरूरी अछि रोटी
रोटीक लेल जरूरी अछि श्रम
श्रम करबाक लेल जरूरी अछि शक्ति
शक्तिक लेल जरूरी अछि रोटी
रोटीक लेल जरूरी अछि अन्न
अन्नक लेल जरूरी अछि श्रम
श्रमक लेल जरूरी अछि ताकति आ आरोग्य

आरोग्यक लेल जरूरी अछि स्वच्छ हवा
स्वच्छ पानि आ स्वच्छ माटि
हमर कानसँ टकराइत अछि बेर-बेर
जे हवामे मिझरा गेल अछि कोरोनाक जहर
सुनैत छियैक जे ई कोरोना
ल' लैत अछि मनुक्खक प्राण
हम अपना आपकें
अपन घरमे बन्न करबाक लैत छी निर्णय
सोच' लगै छी जे
किछु दिन धरि भूखल रहबाक करी अभ्यास
सुरूज जे हमरा जीवित रखबाक लेल
एहि पिरथी पर अस्तित्वक संरक्षण लेल
जरैत छथि स्वयं अजस्र धाहमे
अपन धाहसँ सिरजैत अछि
जीवन एहि पिरथीपर
दैत रहल छथि साहसक सनेश
एहि पिरथीक समस्त जीवकें
पता नहि कियैक
आइ भोरे भोर ओ कहि रहल छथि हमरा
घरेमे रहू, जुनि बहराउ कोनो आन ठाम।

पेटमे धधकैत भूखक आगिकें मिझेबाक
लेल
आवश्यक अछि रोटीक जोगार
हमर घरक पछुआरमे
एकटा मैदानमे
फुदकैत किछु खंजन चिड़ैया
हमर झुर्रियायल चेहरा देखि
हमरा पर ठठाकें हँसल छलीह
चरी करैत-करैत मुँह दुसने छलीह हमरा
हमरा विस्मय भेल छल ओहि खजन चिड़ैयाँपर
हम तँ एकरासँ करैत छी आत्मिक प्रेम
कतेको बेर जखन ओ
लुब-लुब करैत हमर छरियायल दानाकें खाइत
होइत छलीह अत्यंत प्रसन्न
ओकर आँखिमे चमकैत छलैक कृतज्ञताक

इजोत
शायद ओ हमर अकर्मण्यता आ विवशताक
उड़ा रहल छलीह मजाक
हमर अन्तरमे जन्मैत विस्मयक औंकुरी
सुखा जाइत अछि अनायास
हम सोच' लगै छी अपन नियति
नाप' लगै छी जीवन आ मृत्युक बीचक दूरी
देख' लगै छी मनुक्खताइ आ
सामाजिकताक बदलल परिदृश्य
आँखिक आगू अत्यंत निर्मम मुद्रामे ठाढ़
देखाइत अछि यमराज
डोल' लगैत अछि हमर आत्मविश्वासक
कैलाश
हमर मोन कहियो नञि सोचने छल जे
हमर आँखिक आगू ठाढ़ होयताह यमराज
आइ अनायास सोचि रहल अछि मोन
जे हम आबि गेल छी मृत्युक लगीच
मृत्यु-भूखसँ मृत्यु
मृत्यु-कोरोनासँ मृत्यु।

अप्पन-अप्पन ताल

प्रजातंत्रक आशक इजोतकें
बूझैत अछि जनता
अप्पन हिस्साक इजोत
कखनो-कखनो जनताकें
लगैत अछि जेना
ई प्रजातंत्र छियैक
ओकर अप्पन बखरा
एकर इजोतक धवल किरिणमे
बिला जेतैक
ओकर निराशाक अन्हार।

प्रजातंत्रक आशक इजोतकें
आओर बेशी दैदीप्यमान बनेबाक लेल
भोटक पंचवर्षीय पावनिकें
ओ मनबैत अछि धूमधामसँ
नेता सभक भाषणकें
अकानैत अछि ओ
नेताजीक भाषणमे
तकैत अछि ओ
अप्पन जीवनक आश
सोचि-समझि
अछताइत-पछताइत ओ
टिपैत अछि इवीएमक बटन।

भोटपर्वक विसर्जनक पश्चात
जनताक आँखिसँ
बहराइत अछि प्रसन्नताक इजोत
नेताजीक वचनबद्धतासँ
ओकर हृदयक जमीनपर
जनम' लगैत अछि
अप्पन अधिकारक गाछ
दिन पर दिन
बितैत जाइत अछि
आश्वासन पूर्तिक आशमे
ओकर अधिकारक गाछमे
फुलाबय लगैत अछि
असंख्य संकटमोचक फूल
लगैत अछि जेना सत्ते
एखनहि धमकि जेतैक
ओकर हृदयक बाड़ीमे
निम्मन दिनक फुलबाड़ी।

ओ सोचय लगैत अछि
सत्ते बदलि रहल अछि ओकर दिन
आब ओकरा नञि रहय पड़तैक
उपासमे दिनक दिन
आब ओकरा जरूरे भेटि जेतैक
फुटपाथी जिनगीसँ मुक्ति
आब जरूरे ओकरा भेटि जेतैक

एकटा अप्पन छत
बेमारीक आश्रय बनल ओकर कायासँ
जरूरे भागि जेतैक जिदियाह व्याधि
ओ जरूरे आब
सीखि लेत अपन दसखत
अपनेसँ पढ़त दरखास्त
ओ बूझय लागत
आधार कार्ड आ भोटकार्डक महत्व।

नेताजीक आगमनक आशमे
मोटा गेल अछि ओकर आँखि
नेताजी विकासक नाराकें
आओर बेशी प्रभावी बनेबाक लेल
बेश शक्तिशाली माइक्रोफोनक
भ' रहल अछि आविष्कार
जनताक दुखकें दूर करबाक लेल
भगवानसँ कयल जा रहल अछि प्रार्थना
आयोजित भ' रहल अछि
असंख्य पूजा-पाठ आ यज्ञ
भगवानसँ कयल जा रहल अछि कामना
भूखल-पियासल रहबाक अभ्यासी जनताकें
राखल जाय संतुष्ट
बढ़ैत रहय हुनक सुख-समृद्धि।

कल जोड़ने जनता
पूजा-पाठमे भ' रहल अछि शामिल
नेताजीक चेहरामे
जनताकें
देखाइत अछि भगवानक साकार रूप
जनताकें विश्वास अछि
भगवान हुनक बात नहि सुनताह
भगवान जरूरे सुनताह नेताजीक बात
जनताकें बुझाइत अछि जे
नेताजीक बड़का पूजा-पाठ लग
ओकर छोट-छीन गोहारिक
नञि अछि कोनो महत्व।

जनताक अधिकारक स्वप्नक
आस्थामे होम' लगैत अछि परिवर्तित
दुख-दर्दकें जनता
मान' लगैत अछि अपन नियति
शोषणकें ओ
मान' लगैत अछि नेताजीक परसाद
अपन रोगाह कायाकें ओ
मानैत अछि अपन पूर्वजन्मक फल
नेताजीक विजय जुलूसमे
भूखल पेट आ सूखल ठोरक संग
होइत अछि शामिल
एखनो ओकरा आश अछि
ओकर जीवनक समस्त दुख-दर्द
जरूरे पड़ा जेतैक सात समुद्दर पार।

कानि रहल अछि पिरथी

आइ पिरथी दिवस अछि
ग्लोबक कोन-कोनमे
भ' रहल अछि
माय धरती के जयजयकार
पिरथीक संरक्षणक लेल
ठाम-ठाम भ' रहल अछि जुटान
गणपति सभ मना रहल छथि
पिरथी-दिवस के उत्सव
समस्त लक्ष्मीपतिक भीजल ठोरसँ
निकसि रहल अछि
ओजपूर्ण वक्तव्य
धरतीकें हरियर कचोर बनेबाक लेल
पिछला बर्ख जकाँ
पुनः दोहराओल जाइत अछि संकल्प
गणपति सभ पिरथीकें बचेबाक लेल
सिरजैत अछि असंख्य विधान
धरतीक मुस्कानकें अक्षुण्ण रखबाक लेल
जंगलकें बचाकें रखबाक
लेल जाइत अछि सपथ

सदानीरा नदी
जे मिझबैत अछि पिरथीक पियास
तकर अस्तित्वक संरक्षणक लेल
बनाओल जाइत अछि कानून
आब एहि ब्रह्मांडक कोनो देश
नहि करत एक्कोटा परमाणु-परीक्षण
टी. वी. पर मचैत छैक अनघोल
पीचरोड पर आब
कम भ' जेतैक धूइयां वला गाड़ी
आब चिमनीसँ बहरेतैक
प्रदूषणकारी धूइयां बहुत कम
आब किसानीक लेल
बचाओल जयतैक धरती
गाय-महीस आ बरदक पालनकें
कयल जयतैक उत्साहित
रासायनिक खादसँ बाँझ होइत
धरतीकें बचेबाक लेल
गोबरक खादसँ
बढ़ाओल जेतैक धरतीक ताकति
लागि रहल छैक जेना
पिरथीक समस्त समस्याक
आइये भ' जेतैक समाधान।

मुदा किछुए दिनक पश्चात
समस्त गणपति आ लक्ष्मीपति
अर्थयुद्धक दौड़मे
एक दोसराकें पछाड़बाक लेल
लगब' लगबैत अछि सरपट दौड़
न'कें निन्यानवे करबाक
नव-नव तकनीकक
होम' लगैत अछि आविष्कार
स्वयंकें सर्वश्रेष्ठ साबित करबाक लेल
कर' लगैत अछि प्रकृतिक दोहन
काटल जाइत अछि हरियर-हरियर गाछ
अन्धाधुन्ध लगाओल जाइत अछि फैक्ट्री
देश आ देशक बीच
अपन प्रभुत्वकें बढ़ेबाक लेल
होम' लगैत अछि हथियारबन्दीक होड़
असंख्य गाड़ी
दौड़' लगैत अछि बाटपर
गरम होब' लगैत अछि हवा
पटपटाब' लगैत अछि पिरथीक काया
औनाब' लगैत अछि पिरथीक सन्तान
पिरथीक आँखिसँ
बह' लगैत अछि
कोशी कमला बलान
हवामे गुंज' लगैत अछि
पिरथीक क्रन्दनक कारुणिक स्वर।

अपन सन्तानक समस्त दुखकें
दूर करबाक लेल
रोगाह काया रहितो
पिरथी सिरज' चाहैत अछि जीवन
उच्च तापक्रमक बोखारसँ पीड़ित रहितो
अपन घबाह वक्षपर पिरथी
रोपि लैत अछि असंख्य गाछ
लुटब' लगैत अछि
असंख्य स्वादिष्ट फल
विपरीत परिस्थिति रहितो
अपन कायापर पिरथी
सिरजैत अछि हरियरी
गम्हरैत धानक शीशमे
भरैत अछि जीवन रस पिरथी
गहुमक सोनुहला शीशमे पिरथी
भरैत अछि जीवनक सुगंध
चाहैत अछि पिरथी जे
ओ मुक्तहस्तसँ परसय
सुख-समृद्धिक समस्त सनेस
दूर करय जीवक समस्त क्लेश
पिरथीक वक्षपर जे मनुक्ख
लगौने जा रहल अछि
पजेबा, बालु आ सीमेंटक जंगल

ओहि जंगलमे
संताप आ खतराक अदंककें
अपन हियामे जोगने
कछमछाइत जीबि रहल अछि लोक
पिरथीक आँखिसँ
बह' लगैत अछि ममताक नोर
पता नहि कियैक
आइ जखन सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड
मना रहल अछि पिरथीक पाबनि
हमर कानसँ टकरा रहल अछि
पिरथीक कर्णभेदी झौहरि।

मो. 9874274019



गजल

सारंग कुमार

दिवंगत कथाकार बलराम के पुत्र सारंग कुमार के जन्म एक जनवरी, 1966 कें भेलनि। हिन्दी साहित्य मे एम.ए. धरि शिक्षाक बाद ई पत्रकारिता करय लगलाह। दैनिक जागरण, दिल्लीक संपादन विभाग सँ दस साल धरि संबद्ध रहलाक उपरांत संप्रति इंडो-एशियन न्यूज सर्विस (आईएएनएस) मे डिप्टी न्यूज एडीटर।

पहिल रचना कविता, 'संदर्भ असम : नहि फुलायत पलाश?' मिथिला मिहिर, 13 मार्च, 1983क अंक मे प्रकाशित। मैथिलीक विभिन्न पत्रिका सभ मे दू दर्जन सँ बेसी कविता, गजल, किछु लघुकथा आ आलेख प्रकाशित। प्रसिद्ध कथाकार ललितक प्रसिद्ध कथा 'रमजानी'क रेडियो नाट्यरूपांतर आकाशवाणी, दरभंगा सँ प्रसारित। किछु वर्ष धरि मैथिली पत्रिका 'अंतिका'क संपादन मे योगदान। मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्लीक संचालन समिति आ कार्यकारिणीक सदस्यक रूप मे 2012 सँ 2015 धरि सेवा। एखन धरि कोनो पोथी प्रकाशित नहि। मिथिला लोक फाउंडेशन, दिल्ली सँ 'पाग सम्मान' प्राप्त।

एक

किसान किसाने रहत
बइमान बइमाने रहत
भने भ' जाय पावरफुल
हेमान तँ हेमाने रहत
लाठी-गोली स' नै झुकते
किसान तँ उताने रहत
तौं रटैत रह दाग दाग दाग
हमर चान तँ चाने रहत
दीप सिद्धू तोरा मुबारक!
'सरकारी गुंडा' माने रहत
जवान सहत बापक अपमान?
बर्दी उतारि अगुरबाने रहत
कत' कत' स' बैलेब' हौ जी
जत' ध'र वैह ठेकाने रहत
बैलेत' तँ लोक आब तोरा
जा रहब', देश जियाने रहत
बिनु साख बातक की मोजर
बोल तोहर आने-माने रहत
मरब' तौं अपटी खेतमे जहिया
हमरा सभक घरमे लवाने रहत

दू

जनसँ दूर, बहुत दूर जा क' तंत्र ठाढ़ छै
पोल्हौआ रसमलाइक चासनी बड़ गाढ़ छै

चासनी सन बोलसँ लपेटै छै लपेटन लाल
पछाति पता चलै छै जे ई तँ दागल साँढ़ छै

कपचि रहल नहुएँ नहुएँ अधिकारक कमची
जन जाठि आ ओ सत्ता पोखरिक पाढ़ छै

मन जकर नै हरखित, ओ गीत कोना गाओत
'यस' कहलकै 'नो' आब करोना डरें एकाढ़ छै

नागरिक छी कि नै, से तन पूछल करैए मनसँ
ओम्हर बिकौआ विधायक लेल चैते अखाढ़ छै

न्याय-त्याय बहुत भेलै, आब खाली मनो-रंजन
कानूनवेत्ता आ सत्तामे दोस्ती केहन प्रगाढ़ छै!

तीन

आबि गेलैए समैया केहन विकराल
चौबगली बूलैए जेना कालक गाल

गाल झाँपल रहै छै सभक आइकाल्हि
काँपल सभक हिया, के बैसेतै चौपाल

कमाइ लेल जे गेल छलै, पड़ा क' एलै
हजारो मंगलाक घसेलै पयरक छाल

छाल छोड़ेने रहै छलै केहन ठीकेदरबा
पाइ दैक बेर कहलकै, आब' दही माल

माल भेलै सभक दूभर दू बेर महाबंदी मे
छोटकासँ बड़का धरिक हाल बेहाल

बेहाल छली माय कमौआ पूत देखै ले'
एकांतवाससँ छुटलै तखन कहलकै हाल

हाल तँ बाबू-भैया सभक सेहो तेहने
घरघुसना बनल करथि समय हलाल

एक-दोसराक मुँह ताकथि टीवी देखैत
उठि-उठि गुम होइ छै पचासो सवाल

तीन करोड़सँ उपरे देशमे संक्रमित
लाखो जे मुइला, उचित अंत्येष्टि मोहाल

छोट-मोट रोग एखन दबौनहि कुशल
ओपीडी आ क्लीनिक पर सिग्नल लाल

नोटबंदी लेने छलै सवा सय लोकक जान
महाबंदीमे भूखसँ मुइलै कतेको बाल

बिनु तैयारी अचानक सनक, माफी फ्री
केओ अहुरिया काटै, केओ काटै बवाल

मानि रहला फरमान भक्तसँ बेबस धरि
मना रहला, कहुना टरय ई काल-जंजाल

लहूलुहान अर्थतंत्र, आगू अन्हारे अन्हार
नौ मिनटक दीयाबाती केलक कोन कमाल!

कमाल करत कारी धन, बनलै नवका फंड
देखा चाही युद्ध लेल बनै छै केहन ढाल!

चारि

जे सभ पेट भरै छै देशक तकरेसँ छल
छद्‌दू 'चौकीदार' झोंकने छै सत्ताक बल

साल भरि बादो किसान लेल दिल्ली दूर
सीमा पर डटल छै तैयो क्रांतिकारी दल

जाड़मे कठुआ 60 किसान गमेलनि जान
शाहीनबाग दोहरा रहलै सिंघु गामक भूतल

कान्ह पर हर राखि फोटो लेलक खिचबा
'बिकौआ' ढेकरैए तेना जेना साँढ़ हो दागल

वार्ता लेल पहिने दैत रहलै तारीख पर तारीख
तखन संशोधन प्रस्ताव द' सुलह लेल बेकल

आब मंत्रीगण कहै छै हमहूँ सभ छी किसान
सत्ताधारी बूझि रहलै सौंसे दुनियाकें पागल

असली किसानसँ तँ डेरायल अछि डरपोक
नकली सभकें बजा-बजा रहैए न्यूजमे बनल

नेत जकर नै साफ से क' सकतै की निसाफ?
झुका क' रहतै ओ सभ जकर प्राण छै निहुँछल

मो. 9599673242



स्मरण

संगीत-कला, साहित्य आ इतिहास क्षेत्रक तीन गोट एहन मनीषीक स्मरण हमरालोकनि क' रहल छी, जनिक चर्चा करब अत्यावश्यक बुझाइत रहल अछि। अपन-अपन क्षेत्रक उत्कर्षकें स्पर्श कयनिहार तँ ई तीनू छथि। एहिमेसँ दू गोट व्यक्तित्व जुड़ल छथि कोसीसँ। कोसी-कातक एहि दुनू पुरुखाक स्मरण हमरा सभकें पुलकित क' रहल अछि। सद्यः प्रीति करो रागाः मे गायक चूड़ामणि पं. रघू झाक स्मरण हुनक पौत्र सर्वेश कुमार झा क' रहल छथि आ दूररहितो लग हमर पिता शीर्षकसँ राजेश्वर झा कें आत्मीय संलग्नतासँ मोन पाड़ि रहल छथि हुनक पुत्र कथाकार अमरनाथ झा। संगहि आचार्य किशोरनाथ झा अत्यन्त आत्मीयताक संग डा. जयकान्त मिश्रकें स्मरण क' रहल छथि। हुनक विराट व्यक्तित्वक अनेक प्रसंग एहि संस्मरणमे देखार पड़ैत अछि।

सद्यः प्रीति करो रागाः

सर्वेश कुमार झा

पावन भूमि मिथिलामे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत आ लोक संगीतक समृद्ध परंपरा रहल अछि। कोशीक उर्वर माटि-पानि पर एकसँ बढ़िक' एक संगीतरत्न जन्म लेलनि, जाहिमे संगीत चूड़ामणि स्व. पंडित रघू झाजीक नाम सर्वोच्च स्थान पर सुशोभित अछि। हुनकर असली नाम रघुनंदन झा छल मुदा ओ रघू झा नामसँ बेसी प्रसिद्ध भेलाह। हुनकर जन्म धर्मपरायण बुधवारे परिवारमे भेल छल। पुरखा जगतपुरसँ उपटि पंचगछियामे बसि गेल रहनि। पिता पं. छोटकन झा आ माता जानकी देवीक छठम ओ सबसँ छोट संतान रघू झा मात्र पाँच बरखक उमरिमे पितृविहीन भ' गेल छलाह। किशोरावस्था धरि हुनकर जीवन बड़ कष्ट ओ संघर्षमे बीतल छलनि। माता जानकी देवी अपन पैघ संतान नकछेद झाजीक सहारे जेना-तेना गृहस्थी चलाबैत रघू बाबूकें पोसलनि। परिवारक विपन्नता एतबे जे हर-बरदक अभावमे नकछेद झा कोदारियेसँ खेती करैत छलाह। दुनू भाइमे वयसक बीस बर्खक अंतर छल। नकछेद बाबूक लेल रघू बाबू पुत्रवत रहथि। दुनू भ्राताक बीच अगाध प्रेम छलनि। गाममे एहि प्रेमक किरिया खायल जाइत छल।

कहल जाइछ जे संगीतक माध्यमसँ मनोरंजन आन विधाक अपेक्षा शीघ्र ओ सहज रूपमे होइत छैक। संगीतमय वातावरणमे श्रेष्ठ गायकक भावनाक संग श्रोतागणक भावना एकरस भ' जाइत छैक। संगीतकलाक वेदी पर भगवती सरस्वतीक आह्वान होइत अछि आ गायक ओ श्रोता दुनू अपन-अपन श्रद्धांजलिक पुष्प अर्पित करैत लोकोत्तर आनंदमे

विभोर भ' जाइत छथि, जेकि अतीतक एकटा मधुर स्मृति बनि जीवनमे सदिखन संग रहैत छैक। रघू बाबूक गायनक एहेन स्मृतिक प्रसाद जिनका भेटल छनि ओ अपनाकें धन्य बुझैत छथि। हुनक गायकीक संग-संग हुनकर विनोदी स्वभाव, सुरूचिपूर्ण भोजन विन्यास, पहिरावा, कार्यक्रम सबहक रोचक प्रसंग आर कतेको आन-आन संस्मरण बूढ़-पुरान सबहक मुँहें सगरो नेनहिसँ सुनबाक अवसर भेटि रहल अछि।

पंडित रघू झाजीक जन्म सन 1912 ई.क तिलासंक्रातिक दिन मिथिलाक कोसी अंचलक धेमुरा नदीक कछेर पर बसल गाम पंचगछियामे भेल छल। मात्र पचपन बरखक अल्पायुमे अनेको रागमे अपन स्वरक रंग भरि हिंदुस्तानी संगीत परंपराकें समृद्ध करैत ओ अपन गंधर्व गायनसँ संपूर्ण संगीत जगतकें चमत्कृत करैत अमर भ' गेलाह। भागक जोरगर छलहुँ जे हुनकर पौत्र भेलहुँ मुदा अफसोस जे हमरा जन्मसँ पहिनहि ओ स्वर्गवाणी भ' गेल छलाह।

पंडित रघू झा हिंदुस्तानी संगीतक राष्ट्रीय स्तरक प्रसिद्ध गायक भेलाह। संगीत जगतमे हिनक नाम पूर्ण श्रद्धा आ सम्मानक संग लेल जाइछ। लालित्यपूर्ण, बुलंद आ पल्लेदार आवाजक धनी पंचगछिया संगीत घरानाक अमूल्य धरोहर पंडित रघू झा अपन श्रेष्ठ गायकीसँ मिथिलाक नाम राष्ट्रीय फलक पर जगजगार कएलनि। क्षेत्रीय आ राष्ट्रीय मंच पर शास्त्रीय संगीतक गायनक संगहि विद्यापतिक पदक गायन कए विद्यापतिक गीतकें पंडित जी विशिष्ट पहचान देलनि आ मैथिलीक माधुर्यसँ पूरा देशकें अवगत करओलनि। पंडित जीकें शास्त्रीय गायनक संग-संग सुगम संगीत आ लोकगीतक गायनमे बराबरे महारत हासिल छलनि। खयाल गायकीमे हुनकर कोनो जोड़ नहि छल। ध्रुपद-धमार पर सेहो ओतबे पकड़ छलनि। पंडित जी ऑल इंडिया रेडियो केर स्थापित कलाकार छलाह। पटना रेडियो स्टेशनसँ हुनकर बड़ा खयाल आ छोटा खयालक नियमितरूपसँ मासमे दुइ बेर प्रसारण होइत छलनि। विजिटिंग आर्टिस्टक रूपमे हुनक गायनक प्रसारण जयपुर, जालंधर, जोधपुर रेडियो स्टेशन सभसँ सेहो होइत छल। गाममे तहिया दुइये-चारि गोटा लग रेडियो होइत रहैक, से रघू बाबूक प्रोग्राम रेडियो पर सुनबाक लेल पंचगछियामे बिरेन डाक्टरक दुआरि पर लोकक करमान लागि जाइत छल। म्यूजिक कॉन्फ्रेंस सबमे भाग लेबाक लेल प्रायः ओ मुम्बई, कोलकाता, दिल्ली, आगरा, बनारस, जालंधर आर आन-आन शहर जाइत छलाह। समकालीन संगीत मार्तंड पं. ओंकारनाथ ठाकुर, उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ, आफताबे मौशिकी उस्ताद फैयाज खाँ सन-सन महान गवैया सभक संग रघू बाबू कतेको मंच साझा कएलनि।

सन् 1956मे पटनाक वीणा टॉकीजमे 14 मार्चसँ 18 मार्च धरि आयोजित द्वितीय ऑल इंडिया म्यूजिक कॉन्फ्रेंसमे देशभरिक महान गायक-वादक उपस्थित छलाह।

उद्घाटनक तुरंत बाद बिस्मिल्ला खां साहेबक शहनाई वादन भेल, ओकर बाद भेल रघू बाबूक गायन। सारंगी पर छलाह पं. गोपाल मिश्र आ तबला पर संगत कएने रहथि पं. किसन महाराज। राग जैजैवंतीमे बड़ा खयाल आ मध्यलयमे छोटा खयालक प्रस्तुति पर पूरा हॉल तालीक गड़गड़ाहटिसँ गूँजि उठल। ओहि कार्यक्रमक दुर्लभ रिकार्ड संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के संग्रहालयमे सुरक्षित अछि। पटना रेडियो स्टेशनमे सेहो सैकड़ो रिकार्ड छल। मुदा अधिकांश कुव्यवस्थाक कारणे नष्ट भ' गेल। बाकी पचहत्तरक बाढ़िक भेंट चढ़ि गेल।

रघू बाबू द्वारा रचित ओ स्वरबद्ध रागक प्रकाशन हाथरससँ प्रकाशित प्रसिद्ध पत्रिका संगीतमे होइत छल। छत्तीस-सैंतीसक ध्रुपद अंकमे हुनकर पगड़ीधारी मनोहारी फोटो सेहो छपल छल। विश्वप्रसिद्ध प्रकाशन Reference Asia : Asia's Who's Who Men and Women के चारिम संस्करणमे एशियाक महान व्यक्तित्वक श्रेणीमे हुनकर नाम शामिल करबाक निर्णय लेल गेल छल। बिहार माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा कइएक विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रममे संगीतक क्षेत्रमे हुनकर योगदानक बारेमे पढ़ाओल जाइत अछि।

रघू बाबू अपना जीवनकालमे संगीत चूड़ामणि, गायक-नायक, गायनाचार्य, स्वर सम्राट, बिहार गौरव सन अनेकानेक शब्दावलंकरण, अनेको मैडल तथा वस्त्रालंकरणसँ अलंकृत भेलाह। आगरा, बनारस आ नौगछियामे प्रदत्त मैडल हमहुँ देखने छी। दादी-काकी सबहक मुहेँ सुनने छी जे भतीजी कासी दाइक बियाहमे अर्थाभावे सोनाक मैडल सब गला' क' मोहनमाला देने छलथिन।

बीसम सदीक पचासक दशकमे रघू बाबू सुपौलक प्रसिद्ध विलियम्स स्कूलमे रहि संगीत अध्यापनक कार्य कएलनि। सन पैंसठिमे पटु शिष्य स्व. देवेंद्र झा देबु जीक आग्रह पर अपन दायित्व द्वितीय पुत्र विजयनाथ झाजीकें सौंपि स्वयं गर्ल्स हाई स्कूल, मधेपुरा चलि गेलाह। एहि कालमे सुपौल आ मधेपुरा दुनू ठाम ओ संगीत शिक्षार्थीक फौज ठाढ़ कए समृद्ध विरासत तैयार कएलनि।

रघू बाबूक शिक्षा लघु सिद्धांत कौमुदी धरि सीमित रहल। बाल्यकालहिसँ ओ तीक्ष्णबुद्धि आ विनोदी स्वभावक छलाह। कंठमे साक्षात् सरस्वतीक वास छलनि। दशहरामे दुर्गा सप्तशतीक सस्वर पाठ करएबाक लेल लोक निहोरा करैत छलनि। भजन तन्मय भ' गबैत छलाह। किशोरवय अबैत-अबैत रघू बाबूक पहचान भजन ओ सुगम संगीतक नीक गायकक रूपमे चारूकात होमय लागल छल।

बीसम सदीक प्रारंभिक दू दशक धरि सिनेमा के चलन नहि भेल रहैक। देशमे पारसी थियेटर मनोरंजनक सर्वश्रेष्ठ साधन मानल जाइत छल। मिथिलामे ओहि समय पारसी

थियेटर कंपनी सबहक चलती रहैक। एहि क्षेत्रमे शेरपुरक उमाकांत नाटक कंपनी, नंद कुमार झाक नाट्य परिषद् आ राधेश्याम कथावाचक अपन-अपन धाख जमौने रहथि। दरबारी दास आ नेपाली दासक भावनृत्य सेहो पसिन कएल जाइत छल। किशोरवय रघू बाबूक मधुर कंठस्वरक चर्चा सुनि उमाकांत नाटक कंपनी हिनका अपन नाटक कंपनीमे भर्त्ती क' लेलकनि। कंपनी सिंहेश्वरक मेलामे प्राय: सब साल अबैत रहैय। संभवत: सन् 1922 ई.मे पंचगछिया स्टेटमे सेहो आयल छल। कंपनीक नाटक 'असीरे हिस्त्र', 'लैला मजनू', 'देश-विजय', 'भयंकर भूत', 'श्रीमती मंजरी', ओ 'भक्त सूरदास' खूब धूम मचौलक। ईर्ष्या ओ दुर्भावनावश सहकर्मी पानमे सिनुर द' खुआ देलकनि, जाहिसँ हुनकर गला खराब भ' गेलनि। नतीजा भेल जे पंडित जी कंपनी छोड़ि गाम आबि बैसि रहलाह। गला खराब भेलासँ ओ भीतरे-भीतरे टूटि गेल छलाह। हुनकर आत्मा संगीतमे बसैत छल जकर कि बध भ' गेल छल।

पछिला शताब्दीक शुरूआतेसँ देशक सांस्कृतिक परिदृश्यमे बिहारक बेतिया संगीत घराना, दरभंगा संगीत घराना, पंचगछिया संगीत घराना आओर गया संगीत घराना स्थापित भ' गेल छलैक। बनारस, कोलकाता आ पटना उपशास्त्रीय संगीत विद्याक पैघ केंद्र छल। उत्तर पूर्वी भारतमे ठुमरी, दादरा, टप्पा, गजल खूब प्रचलित छलैक। पटना सिटीक बड़ी जोहराबाई, बौराही कनीज, मोहम्मद बाँदी, रोशन आरा बेगम, रामदासी नामी छलीह। पंचगछिया सेहो सांस्कृतिक गतिविधिक केंद्र बनि उभरि रहल छल। ड्योढ़ीमे एकसँ बढ़ि एक नामी कलाकार सबहक आगमन होइत रहय। पंचगछियाक जमींदार बाबू प्रियव्रत नारायण सिंह आनरेरी मजिस्ट्रेट रहथि। प्राच्य संगीत सम्मेलन, पटनाक सभापति सेहो रहथि। हुनकर दुनू पुत्र रायबहादुर लक्ष्मी नारायण सिंह आ बाबू योगेंद्र नारायण सिंह रैय्यतक पृष्ठपोषक आ उच्च कोटिक संगीत प्रेमी छलाह। रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहकें संगीत शास्त्रक विशद ज्ञान छलनि। हारमोनियम आ पखावजक स्वयं श्रेष्ठ वादक छलाह। हाथरससँ प्रकाशित प्रसिद्ध संगीत पत्रिकामे रागमाला प्रकाशित होइत छलनि। रायबहादुर अपन टहलु खबास मांगनि जीकें सिखाक' शास्त्रीय आ उपशास्त्रीय संगीतमे पारंगत बना देने रहथिन। मांगनि खबास साधारण चाकरसँ गंधर्वपुरुष बनबाक यात्रा पर छलाह। एक दिस ड्योढ़ीमे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत संरक्षित होइत छल जतय गवैया पं. बटुक झा, पखौजी पं. बलदेव झा, तबला नवाज पं. बालमुकुंद झा, पं. युगेश्वर झा सन एकसँ बढ़ि एक गायक-वादकक हुजूम लागल रहैत छल तँ दोसर दिस बाबू ब्रह्मनारायण सिंहजीक दुआरि पर विविध लोक संगीत विधाक विकास भ' रहल छल। ओहि दुआरिसँ कला मंडली संचालित होइत छल, जाहिमे शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, सुगम संगीत, भगैत, विदापति नाच, नटुआ नाच सबहक लोक कलाकार शामिल होइत छलैक।

मंडलीक सट्टा उत्तर प्रदेश, नेपाल आ बंगाल धरि होइत रहय।

पंचगछियाक एहि सांस्कृतिक परिवेशक प्रभाव पं. नकछेद झा पर एहेन पड़लनि जे प्रतिभाक धनी अपन अनुज रघू बाबूकें राष्ट्रीय स्तरक गवैया बनेबाक लेल प्रण ल' लेलनि। जेना-तेना एकटा हारमोनियमक जोगाड़ भेल। बाबू ब्रह्मनारायण सिंहजी लग निहोरा कय नकछेद बाबू हुनका मंडलीक संग रियाज कराबय लगलाह। सरस्वती प्रसन्न भेलीह। रघू बाबू फेरसँ गाबय लगलाह। मुदा गलामे खरास रहिये गेलनि।

सन् 1931-32 ई.मे किनको बहकावामे आबि रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहक प्राणक पल्लैय सुर सम्राट मांगनि गबैया आ तबला नवाज पं. बालमुकुंद झा दरभंगा महाराजक दरबार चलि गेलाह। रायबहादुर एहि घटनासँ मर्माहत भ' पलंग पकड़ि लेलनि। पछाति हुनका ज्ञात भेलनि जे एकटा अनमोल रत्न उमाकांत थियेटर छोड़ि गाम अगोड़ने छथि, जे बहुत सुरमे गाबैत छथि। मुदा गलामे खरास छनि। रायबहादुर स्वयं रघू झाजीक परीक्षा लेलनि जाहिमे ओ पास भ' गेलाह।

रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंह अपना संरक्षणमे राखि रघू बाबू सन हीराकें तराशयमे लागि गेलाह। रायबहादुर ओ जौहरी छलाह जे साधारण चाकर मांगनिकें ताराशि हीरा बना देने छलथिन। आब रघू बाबूक बारी छल। हुनकर गलाक खरास कें दूर करबाक लेल आयुर्वेदक दवाइ संग-संग व्यायाम आ खान-पान पर विशेष ध्यान देल जाइत छल। ड्योढ़ी के पोखरिक पानिमे ठुढ़धरि डूबि पंडित जी दुई-तीन घंटा धरि गल-गली करैत छलाह। संगीत कॉन्फ्रेंस सभमे देशक नामी गवैया सभक गायन सुनबाक लेल हुनका रायबहादुर अपना संग ल' जाथिन। पटना, बनारस, कोलकातामे मास-मास धरि राखि प्रसिद्ध गायक-गायिकासँ प्रशिक्षण दियाओल गेल। गुरु रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहजीक सान्निध्यमे कठिन तपस्याक बल पर दुईये-तीन बरखमे बड़ा ख्याल, छोटा खयाल, ध्रुपद धमार, ठुमरी, दादरा, टप्पाक गायनमे रघू बाबू निपुण भ' सिद्धहस्त गायक के रूपमे स्थापित भ' गेलाह। तीसक दशकक उत्तरार्द्धमे नेपाल, उत्तर प्रदेश, बंगाल सहित संपूर्ण उत्तर-पूर्वी भारतमे पंडितजीक स्वर लहरी गुँजय लागल।

मिथिलांचलमे ओहि कालावधिमे पंचगछिया घरानाक ठुमरी सम्राट मांगनि गवैया, पं. बटुक झा, पं. बालमुकुंद झा, सोल्हनी के ठुमरी नवाज पं. चंद्रशेखर खाँ, अमता घरानाक पं. रामचतुर मल्लिक, पनिचोभक पं. रामचंद्र झा, बेतिया घरानाक उस्ताद गनी खाँ, बनैली स्टेटक राजा कुमार श्यामानंद सिंह, खुर्जाक उस्ताद अल्ताफ हुसैन सभक नाम इज्जतसँ लेल जाइत छल। एहि सूचीमे रघू बाबूक नाम सेहो जुड़ि गेलनि। पचासक दशकमे पं. रघू झा, पं. रामचतुर मल्लिक आ पं. सियाराम तिवारीक तिकड़ी संपूर्ण भारतवर्षमे नामी भेल। पंचगछिया घरानाक बीज पुरुष रायबहादुर लक्ष्मी नारायण सिंहजी

पंचगछिया संगीत घराना स्थापित करबाक लेल जाहि गाछकें रोपि सींचलनि ओ मांगनि गवैया लग आबि पल्लवित पुष्पित भेल आ रघू बाबू लग आबि अपन संपूर्णताकें प्राप्त कयलक। संगीत शिरोमणि मांगनि कामति आ संगीत चूड़ामणि रघू झाजीक रूपमे दुइटा अनमोल रत्न पाबि पंचगछिया संगीत घराना पूर्ण यौवन पाओल। दुनू संगीत रत्न एहि घरानाक प्रतिष्ठाकें पराकाष्ठा तक पहुँचा देलनि।

स्वतंत्रता प्राप्तिसँ पहिने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत जमींदार सभक ड्योढ़ीमे पल्लवित, पुष्पित आ संरक्षित होइत छल। पंचगछियाक जमींदार रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहजीक अनुज बाबू योगेंद्र नारायण सिंहक असामयिक निधन भ' गेलासँ ओ मर्माहत भ' गेलाह आ वैराग्य धारण क' काशीवास करय लगलाह। पंडितजीक सोझाँ पुनः बेरोजगारीक समस्या ठाढ़ भ' गेलनि। ताहि दिनमे नजरगंजक (पूर्णिया सिटी) राजा पी. सी. लाल चौधरीक दरबारमे भारत रत्न बिस्मिल्लाह खान साहेब शहनाई वादकक रूपमे नियुक्त छलाह। सन् 1938 ई.मे लखनऊमे रेडियो स्टेशन खुजला पर राजाजीसँ अनुमति ल' क' खान साहेब लखनऊ रेडियो स्टेशन ज्वाइन क' लेलनि। राजा पी. सी. लालक दरबारमे बिस्मिल्लाह खान साहेबक जगह पर रघू बाबू नियुक्त भ' गेलाह। दरबारमे नित्यदिन हुनकर गायन होमय लागल। राजाजीकें हुनकासँ बड्ड स्नेह। प्रसिद्ध गुलाबबागक मेलाक सांस्कृतिक आयोजनक समस्त व्यवस्था पंडितजीक जिम्मा रहैत छलनि। पूर्णियामे ओ चारि साल धरि प्रवास कएलनि आ ओहि अवधिमे अपन स्वरक लालित्यसँ पूर्णियाक धरतीकें रससिक्त करैत रहलाह।

रघू बाबूक आवाज बुलंद, गंभीर, जवारीदार ओ मनमोहक छलनि। हुनकर आवाजमे नादक गहराइ छलनि। पंडितजीक गायकी जोरदार आ दमखम बला मानल जाइत छल। हुनकर गायकीमे रागालापक प्रधानता छल। तीनो सप्तकमे ओ स्वरक उचित संचरण करैत रागक स्पष्ट निरूपण करैत छलखिन। मध्य आ तार सप्तकक स्वरकें मीड़सँ मंद्र सप्तक स्वर संग मधुर संवाद स्थापित करैत षड़ज पर जखन ओ नादक सुर लगाबथि, श्रोतागण मंत्रमुग्ध भ' जाइत छल। वातावरणमे एकटा अलगे शांति ओ नीरवता व्याप्त भ' जाइत रहैक, जाहिमे भ्रमरक गुंजन सन अनाहत नाद सर्वत्र प्रकंपित भ' जाइत छल। षड़ज पर नादक सुरसंधान करब हिनकर गायकीक प्रमुख विशेषता छलनि। रागालापमे ध्रुपद अंगक नोम-तोमक प्रयोग सेहो करैत छलखिन। रघू बाबू छूट ओ गमक दुनू तान करबामे प्रवीण छलाह जकर ओ खुजिकें प्रयोग करैत रहथिन। मशहूर हारमोनियम वादक आ संगीतज्ञ धनंजय नारायण सिंह 'भैय्याजी'क कहब छनि जे रघू बाबूक आवाज आफताबे मौशिकी उस्ताद फैयाज खाँ साहेबक टक्करक छलनि। गमकदार तान करबामे ओ संगीत मार्तंड पं. ओंकारनाथ ठाकुर जकाँ समर्थ छलाह। ओ हिंदुस्तानी संगीत

पद्धतिक पालन करैत बुलंद आवाजमे गायन करयबला निर्भीक गायक छलाह।

प्रसिद्ध तबलावादक स्व. युगेश्वर झाजीक सुनायल एकटा प्रसंग मोन पड़ैत अछि जाहिसँ हुनकर निर्भीकता उजागर होइत छनि। वर्ष 1964 ई.मे मोतिहारीमे आयोजित तानसेन संगीत समारोहमे संगीत मार्तंड पं. ओंकारनाथ ठाकुर पधारने छलाह। मंच पर कोनामे दू टा तानपुरा राखल छल। पं. रघू झाजी अपन गायन शुरू करयसँ पहिने दुनू तानपुरा आनबाक आग्रह कएलनि। संचालक महोदय पशोपेशमे पड़ैत ठाकुरजी दिस तकबैत कहलथिन, *'यह तानपुरा पंडितजी के लिए मिलाकर रखा गया है।'* मुँह तँ लाल भ' गेलनि मुदा मुस्कुराइत सहज भावें रघू बाबू बजलाह, *'तब यह माइक भी हटा लीजिए। हॉलमे बैठे लोग वैसे भी मेरा गायन मजे से सुन लेंगे।'* पूरा हॉल स्तब्ध! पं. ओंकारनाथ ठाकुरजीक सोझाँ एहन जवाब! खैर ठाकुरजीक सहमति पाबि रघू बाबू गायन शुरू कएलनि। आजू-बाजू बजैत तानपुराक आवाजक संग रघू बाबू दमदार आवाजमे जखन मध्य आ तार सप्तकक स्वरक ताना-बाना बुनि मंद्र सप्तकक षड्क पर नादक सुर टेरलनि, समूचा हॉल तालीक गड़गड़ाहटिसँ गुंजए लागल। गायन समाप्त भेलापर पं. ओंकारनाथ ठाकुर उठिक' हुनका छातीसँ लगबैत बजलाह, *'वाह झाजी! क्या नैसर्गिक आवाज पाए हो।'* एहि प्रसंगक चर्चा प्रसिद्ध वकील आ कलाप्रेमी पं. हेमकांत झा सेहो कएलनि।

संगीत प्रेमी स्व. जितेंद्र सिंह प्राय: गवैयाजीक संग प्रोग्राम सबमे श्रोता बनि दूर-दूर तक जाइत छलाह। हुनकर मुँहें अनेको संस्मरण सुनबाक अवसर भेटल। चंपानगर ड्योढ़ीक एकटा प्रसंगक एतय चर्चा करब उचित होयत। दशहराक कार्यक्रममे जमींदार कुमार श्यामानंद सिंहजीक आग्रह पर आफताबे मौशिकी उस्ताद फैयाज खाँ पधारने छलाह। कार्यक्रमक पहिल दिन बाबू ब्रह्मनारायण सिंहजीक कहला पर रघू बाबू रागदरबारीमे सुर टेरि देलनि। राग दरबारी उस्ताद फैय्याज खाँ साहेबक राग मानल जाइत अछि, जहिना राग मालकोश पं. ओंकारनाथ ठाकुर जीक। उस्ताद फैय्याज खाँ साहेबक भृकुटि शनै: शनै: तनय लागल। रघू बाबू जखन द्रुत लयमे गमकक तान खींचि सम पर आबथि कि फैय्याज खाँ साहेब क्रोधपूर्ण मुद्रामे जोरसँ बाजि उठलाह, *'बंद करो।'* गायन बंद भ' गेल। पुन: कहलनि, *'यहीं से राग मल्हार का तान खींचो।'* पंडितजी तान खींचलनि। उस्तादक परीक्षामे ओ पास भ' गेलाह। उस्ताद आशीर्वाद दैत कहलखिन, *'वाह! क्या खूबसूरत आवाज पाए हो। इसी तरह अगर रियाज करते रहे तो एक दिन तुम हिंदुस्तानमे नाम रौशन करोगे।'*

मुंगेरक एकटा आओर रोचक संस्मरण। राजाजीक ठाकुरबाड़ीमे कार्यक्रम भ' रहल छल। रघू बाबू गमकक तान एतेक लंबा खींचलनि जे भागलपुरक एकटा बंगाली श्रोता

उत्तेजनावश बीचेमे ठाढ़ भ' बाजि उठलाह, *'उई दादा! इस गवैया का तो पेट ही फूट जाएगा।'* पूरा महफिलमे एकाएक ठहाका गूँजि उठल।

रघू बाबूक कार्यक्रमक तुरत बाद दोसर गवैया प्रोग्राम देब' सँ कतराइत छल। एहिपर युगेश्वर झाजीक सुनायल एकटा प्रसंग अछि। कोनो म्यूजिक कॉन्फ्रेंसमे, संभवत: मुजफ्फरपुरमे, रघू बाबूक गायन शुरू होइतहि प्रसिद्ध गायनाचार्य सीताराम हरि दांडेकरजी हॉलसँ बहराय दुनू कानमे रूईया ठूँसि चहलकदमी करय गलाह। युगेश्वर बाबू सेहो हॉलसँ बाहर आबि हुनका टोहलनि, *'रघू बाबू का गायन आपको पसंद नही है क्या?'* दांडेकरजी बाजि उठलाह, *'झाजी का गायन किसे पसंद नहीं है। असलमे बात यह है कि आयोजकों ने रघू बाबू के बाद मेरा ही प्रोग्राम रख दिया है। अब उनकी झिंगुर सी आवाज मेरे कानों में गूँजती रहेगी तो मैं कैसे गा पाऊँगा? इसीलिए कानों में रूई लेकर टहल रहा हूँ।'*

पंडितजी घरानादार परंपराक अंधानुकरण नहि कएलनि। अपन गायकीमे ओ परंपरागत आ प्रचलित रीतिकालीन बंदिशक संगहि भक्तिपरक पद सभक समावेश सेहो करैत छलाह जाहिसँ हुनकर गायकीमे एकटा अलगे ताजगी बुझाइत छल। विद्यापति, सूरदास, कबीरदास, नानक, तुलसीदास, मीराबाईक भक्तिपरक पदमे भावरसक सुंदर समन्वय करैत रघू बाबू अपन प्रभावशाली गायकीसँ भक्तिमय भाव उत्पन्न क' श्रोतालोकनिकें मंत्रमुग्ध क' दैत छलखिन। चंपानगर ड्योढ़ीक राजा कुमार श्यामानंद सिंह हिनका 'भजनानंद' आ पं. सियाराम तिवारी के 'गणेशजी' कहि संबोधित करैत छलखिन। पंडितजीक गायकी पर भक्तिपरक भाव के समावेश भरिसक माता जानकी देवीक प्रतापे पड़लनि। जानकी देवी अपने नीक गीतगाइन छलीह। ओना तँ हुनकर पेटारीमे एकसँ बढ़ि एक भजनक संग्रह छलनि मुदा राधेश्याम विषयक भजन ओ तन्मय भ' गाबैत छलीह। हुनकर पराती सुनबाक लेल टोलबैय्या सभ भिनसरे उठि जाइत छल। माताक देल ई संस्कार रघू बाबू बाल्यकालहिसँ आत्मसात क' लेलनि, जे कि हिनका महान गायकक श्रेणीमे स्थापित होयबामे सहायक भेल।

कहल जाइछ जे साहित्य आ संगीत जाहि वातावरणक सृष्टि करैत अछि ओ सर्वत्र अजेय होइछ। रघू बाबूक गायनमे साहित्य आ संगीतक अद्भुत संगम दृष्टिगोचर होइत छल। पंडितजी प्राय: गंभीर राग सभक जेना दरबारी कानड़ा, छायानट, राग-जोग, नायकी कानड़ा, मालकोश, परज, देसराग, बसंत, जैजैवंती, राग बिहागक शास्त्रीय गायन करबाक उपरांत विद्यापतिक पदक संग-संग महाकवि निराला, पंतजी, प्रसाद, दिनकरजी, शिवमंगल सिंह सुमन, किसुनजी, मायानंद बाबू सभक रचनामे अपन स्वरक रंग भरि गायन करैत छलाह। बरैल ग्रामवासी स्व. महेंद्र नारायण सिंह (जज साहेब) कहैत छलाह जे रघू

बाबू राष्ट्रीय भावनासँ ओत प्रोत रचना सबहक गायन कए राष्ट्रीयताक संचार करैत छलखिन, युवा छात्र सबहक लेल ओ आदर्श स्वरूप रहथिन। जयशंकर प्रसादक 'अरुण यह मधुमय देश हमारा', शिवमंगल सिंह 'सुमन' जीक 'चलना हमारा काम है' आ 'पथ भूल न जाना पथिक' के गायन ओ प्रायः हरेक मंच पर करैत छलाह। पिताजी कहैत छथि, एकबेर कोनो कार्यक्रममे 'पथ भूल न जाना पथिक' के गायन सुनि राष्ट्रकवि दिनकर जी ओहि गीतक रचयिता कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन'जीकें कहने रहथिन, 'गवैयाजी ने तुम्हारी कविता का गायन कर तुम्हें आसमान की बुलंदी पर पहुँचा दिया।'

रघू बाबू नवोदित कवि सबहक गायन योग्य नीक-नीक रचनाक गायन सेहो करैत छलखिन। हुनकर गाओल ओ रचना सब बादमे लोकप्रिय भ' जाइत छल। एहने एकटा नवोदित कविक रचना हुनका बड्ड पसंद छलनि—

ऐसा मधुमय देश बनाएँ।।
काम न जहाँ कुटिलता छल का,
हो प्राबल्य न द्वेषानल का,
हरे न स्वत्व किसी का कोई,
बाँट सभी मिल खाएँ
ऐसा मधुमय देश बनाएँ।।

रघू बाबू पचास-साठि केर डेढ़ दशक धरि सुपौल प्रवास कयने छलाह। विलियम्स स्कूलमे हिनका संग-संग लब्धप्रतिष्ठ कवि रामकृष्ण झा 'किसुन'जी ओहि स्कूलमे अध्यापन कार्य करैत छलाह। दुनू गोटामे आत्मीय आ मधुर संबंध छल, सार-बहनोइक। दुनू गोटाक बीच अद्‌भुत तालमेल छलनि। साहित्य ओ संगीतक ई मणिकांचन योग सुपौलक सांस्कृतिक पटल पर अविस्मरणीय दृश्यालेख अंकित क' देलक। राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला समितिक तत्वावधानमे साहित्य आ संगीत समारोहक प्रतिवर्ष आयोजन होइत छल। सर्वश्री लहटन बाबू, लखन बाबू, राधा बाबू, रामबहादुर बाबू, हरि बाबू, कमलू बाबू, निरभूषण झा, ठाकुर बाबू सन सुधी श्रोता लोकनिक उपस्थितिमे राति-राति भरि साहित्य ओ संगीतक सरिता बहैत रहय। रघू बाबूक आग्रह पर प्रसिद्ध गायक पं. सीताराम हरि दांडेकर, पं. मुसलगाँवकर, पं. रामचतुर मल्लिक, पं. सियाराम तिवारी आओर किसुनजीक आग्रह पर सुमनजी, चंद्रनाथ मिश्र 'अमर', राजकमल चौधरी सन साहित्यके नामचीन हस्ताक्षर सभक सुपौलमे जुटान होइत रहनि। बीसम सदीक पचास-साठिक दशककें जँ सुपौलक सांस्कृतिक उत्कर्षक स्वर्णिमकाल कहल जाय त' अतिशयोक्ति नहि होयत। सन् 1954मे कोसी बाँधक नींव रखबाक खातिर देशक प्रथम राष्ट्रपति

महामहिम स्व. राजेंद्र प्रसाद सहरसा होइत सुपौल पधारने छलाह। सहरसामे आयोजित सभामे पं. रामकृष्ण झा 'किसुन' जीक रचित ओ रघू बाबू द्वारा संगीतबद्ध स्वागत गानक प्रस्तुति सर्वश्री विजय नाथ झा आ रमण बाबू कएने छलाह, जकर बोल छल—

मंडन भू फिर मंडित करने,
दैन्य अविद्या खंडित करने,
याज्ञवल्क्य की याद दिलाने,
करने ज्योति प्रसार,
हमारा स्वागत हो स्वीकार।

मंच पर उपस्थित स्व. लहटन चौधरीजी स्वागतगानकें संक्षिप्त करबाक इशारा कएलनि। मुदा देशरत्न राजेंद्र बाबू भाषणक समय काटि पूरा पद सुनलनि। एहेन उदाहरण विरले भेटत।

चालीसेक दशकसँ रामकृष्ण झा 'किसुन'जी आ चंद्रनाथ मिश्र 'अमर'जी मैथिलीक प्रचार-प्रसारमे अपन तन-मन-धन झोंकने छलाह। बादमे एहि यज्ञमे किसुनजीक भागिन स्वनामधन्य मायानंद मिश्र सेहो जुड़ि गेलाह। मैथिली भाषा-भाषी क्षेत्रमे विद्यापति समारोहक आयोजन राखल जाइत छल जाहिमे काव्य पाठक संगहि विद्यापति गीतक गायन सेहो होइत छल। रघू बाबू एहि यात्राक अनिवार्य अंग होइत छलाह। वर्ष 1949मे विद्यापति गोष्ठीक गठन भेल। पछाति वैद्यनाथ मिश्र 'यात्रीक' जीक प्रेरणासँ 1954मे चेतना समितिक स्थापना भेल। समितिक वार्षिक अधिवेशनमे पटनामे साहित्य ओ संगीतक अद्‌भुत संगम होइत छल। श्रोतागण, सप्ताह धरि साहित्य ओ सुरक सागरमे डुबकी लगबैत रहथि। एकर प्रभाव देश भरिमे पसरल मैथिल समाज पर पड़ल। 'अखिल भारतीय मैथिल महासभाक' महाधिवेशन देशभरिमे आयोजित होमय लागल। रघू बाबूकें महासभाक महाधिवेशनमे जयबाक अवसर खूब भेटनि। वर्ष 1954-55मे आगरा महाधिवेशनमे माता वाग्देवी सरस्वती अंकित स्वर्ण प्रतिमा हुनका प्रदान कएल गेल। वर्ष 1961-62 ई.मे मुंबईमे कार्यक्रम भेल छल। ओतय हुनका पर्याप्त यश भेटल छलनि। सुपौलवासी समाजसेवी स्व. मुरारी प्रसाद तिवारी एकटा प्रसंगक चर्चा बेर-बेर करैत छलाह। तिवारीजी कलाप्रेमी आ शौकीन आदमी छलाह। मुंबईमे फिल्मी गानाक रिकार्डिंग देखबाक हुनका इच्छा भेलनि। प्रसिद्ध संगीतकार ओ. पी. नैय्यर साहब स्टूडियोमे मौजूद छलाह। तिवारीजीकें कोनो जोगाड़ नहि बैसैत रहनि। एकटा जुगुत फुरलनि। कागज पर अपन नामक संग केयर आफमे पंडित रघू झा, पंचगछिया घराना लीखि अंदर पठा देलनि। तुरंत बुलावा आबि गेल। चाहक चुस्कीक संग मुरारी बाबू भरि दिन गानाक रेकार्डिंग देखलनि।

पंडित जीक व्यक्तित्वमे चुंबकीय आकर्षण छलनि। जेहने सुंदर ओजसँ भरल मुखमंडल रहनि, ओहिने हाजिर जबाब आ हास परिहासमे प्रवीण सेहो छलाह। ताहि परसँ सुरुचिपूर्ण भोजनक शौकीन। ओ जाहिठाम जाइत छलाह, लोक हुनक मुरीद भ' जाइत छल। एहि बातक उदाहरण एहि पत्रसँ भेटि जायत। हुनका लिखल बहुत रास पत्रमे एहि पत्रक उल्लेख जरूरी बुझना जाइछ।

कोलकाताक रायबहादुर मोतीलाल चमड़िया परिवारक श्री जगदंबा प्रसाद शर्माजीक 15 जनवरी, 1954क लिखल पत्रक किछु अंश एतय उल्लेखित अछि—*'आप तो यहाँ से चले गए। लेकिन मेरे हृदय पर आपके व्यक्तित्व की इतनी गहरी छाप है कि जीवन भर अमिट रहेगी। यह आपके व्यक्तित्व की विशेषता ही है कि आप यहाँ अपना मनोरंजन करने आए थे। पर आप स्वयं हमारे मनोरंजन के साधन बन गए। आप जब तक रहे हमें समय का पता ही नहीं चला।'*

शर्माजी अपन व्याकुलता व्यक्त करैत आगू लिखैत छथि—*'आपके चले जाने के बाद यहाँ चारों ओर उदासी और मायूसी छा गई है। मैं किसी के संपर्क में जल्दी नहीं आता। लेकिन संपर्क में आ जाने के बाद बिछड़ना मेरे लिए बहुत दुःखदायी होता है। आपके जाने के बाद इस बात को बहुत गहराई से महसूस कर रहा हूँ।'*

ई छलनि रघू बाबूक व्यक्तित्व। जे एक बेरि जुड़ि गेलाह, ओ जीवन भरि हुनका बिसरि नहि सकैत छथि।

रघू बाबूकें माछसँ विशेष लगाव छलनि। सबतरहक माछक अलग-अलग स्वादसँ परिचित त' रहबे करथि ओकरा अलग-अलग ढंगसँ बनेबाक विधि हुनका सेहो ज्ञात छलनि। गाममे एकटा प्रसंगक बराबर चर्चा होइत अछि। एकबेर सांझुक ट्रेनसँ रघू बाबू गामक स्टेशन पर उतरलाह। टोलक अर्जुन सिंह सेहो उतरलाह। स्टेशनसँ गामक दूरी तीन-चारि किलोमीटर अवस्से होयत। कोनो सवारी नहि छल। दुनू गोटा पैदले विदा भेलाह। अर्जुन बाबू एकटा नम्हरसन मांगुरक गलफड़मे डोरी फँसाक' हाथमे टाँगने छलाह। कतौसँ परि लागल रहनि। रास्तामे रघू बाबू माछक चर्चा करैत कहलखिन, एहि माछकें बनैब सबकें नहि अबैत छैक। छिलय-काटयसँ ल' क' ओकरा रान्हबाक संपूर्ण विधि आ ओकर स्वादक वर्णन सुना देलनि। ई चर्चा करैत-करैत दुनू गोटा टोल पर पहुँचि गेलाह। अर्जुन बाबू अपन घर लग आबि नौकरकें आवाज द' बजौलनि आ ओकरा हाथमे माछ दैत कहलथिन, *'एकरा गवैयाजीक ओतय पहुँचा दहुन।'* रघू बाबू असमंजसमे पड़ि अपन सफाइ देलनि, *'औ बाबू! रास्ता नम्हर छल तैं हम जानि-बूझि प्रसंग उठौलहुँ आ अहाँ त...'* अर्जुन बाबू विनती करैत कहलनि, *'गवैयाजी एहि माछक इज्जत हमरा ओहिठाम नहि भ' सकत। एकरा अपने निर्देशनमे बनबाओल जाए।'*

एकटा आर प्रसंग। रघू बाबू अपन शागिर्द सभक संग कोनो वैवाहिक कार्यक्रममे पूर्व विधानसभा अध्यक्ष राधानंदन झाजीक क्षेत्रमे आयल छलाह। पं. बालमुकुंद झा आ शिष्य शिवनंदन सिंह संगमे रहनि। प्रोग्रामक क्रममे पंडित जीक गला फँसि गेलनि। भरि राति शिवनंदन सिंह गबैत रहलाह। राधाबाबू जखन ई बुझलनि त' अपनहिसँ पहुँचि विशेष आग्रह करैत हुनका अपना ओतय ल' गेलाह। गला ठीक करबाक लेल ताबड़तोड़ इलाज शुरू भेल। एकटा तजुर्बेकार वृद्ध कहलनि जे गवैयाजीकें भून्ना माछक पलय तरिक' खुआओल जाय। भून्ना माछ आनल गेल आ ओकर पलय तरिक' गवैयाजीकें खुआओल गेल। पंडित जीक गला ठीक भ' गेलनि। फेर तँ मित्र राधा बाबूक आग्रह पर देर राति धरि गबैत रहलाह। शिवनंदन सिंह गाम आबि एहि प्रसंगक सरस वर्णन कएलनि। हुनका अपना सासुर ढंगाक शुद्ध लोक आ कबैय माछ बड्ड पसिन। ढंगा जाथि त' तरल आ झोड़ायल कबैय माछ अरबधिक' भोजनमे शामिल रहैत छलनि। जाधरि रहथि सार नाथो झा जुतिगर माछ सभक जोगाड़मे लागल रहैत छलाह।

मिथिलाक गौरव रघू झाजी देशभरिक पैघसँ पैघ मंचकें सुभोभित केलनि संगहि अपन माटि-पानिकें कहियो नहि बिसरलाह। आत्मीयजन सभक स्नेहपूर्ण आमंत्रण पर रघू बाबू सगरो जाइत छलाह। बनगाँवक होली नामी होइत छैक। तारणी बाबूक आग्रह पर प्रायः हरेक साल होलीमे बनगाँव जाइत छलाह। धुड़खेलक साँझ भगवती स्थानमे, होलीक साँझ बिषहरा स्थानमे आ होलीक परात दुपहरमे ललित झाक बँगला पर प्रोग्राम होइत छल।

सहरसा आर. एम. कॉलेजक पूर्व प्राचार्य डॉ. पी. सी. खाँ कहैत छथि जे होली के दस-पंद्रह दिन पहिनेसँ गाम-घरमे चर्चा होमय लागैत छल जे होलीमे रघू बाबू बनगाँव आबैत छथि वा नहि। हुनकर प्रोग्राम सुनबाक लेल समूचा गाम खाली भ' जाइत छलैक। बनगाँव के बाद महिषीमे प्रोग्राम होइत छलनि। महिषीमे पं. नारायण झाजीक ओतय विश्राम होइत छलनि। चानीक चमकैत थारी-बाटीमे नाना तरहक व्यंजन परोसल जाइत छलनि। अनंत पूजामे रहुआ, कोजगरामे बभनगामा, झूलनमे सुपौल ओ पूर्णियामे कार्यक्रम होइत रहनि। दशहरामे चंपानगर ड्योढ़ीमे प्रोग्राम देब' जाइत छलाह। पछाति धर्मनाथ बाबूक स्नेहपूर्ण आमंत्रण पर दशहरामे सर्वसीमा (दरभंगा) सेहो जाइत छलाह। दशहरामे पटनामे दसो दिन संगीतक कार्यक्रम होइत छल, जाहिमे देशभरिक पैघ-पैघ कलाकार अबैत छलाह। रघू बाबू आ मांगनि गवैयाक प्रोग्राम प्रायः होइते छलनि।

एकटा प्रसंगक एतय चर्चा क' रहल छी जाहिसँ हुनकर लोकप्रियताक अनुमान लागैत अछि। वर्ष 1997मे पहिल ताहिर हुसैन कप महिला फुटबॉल चैम्पयनशिपमे लोहरदग्गा गेल छलहुँ। सुपौल जिला फुटबॉल संघक सचिव सुमन सिंह सेहो संगमे

छलाह। एकदिन साँझुक पहरमे बिहार रेफरी एशोसिएसनक सचिव ग्याशुल हक साहेब कहलनि जे एकटा सज्जन, जेकि एतय पदाधिकारी छथि, हमरा लोकनिकें आइ संध्यामे अपना ओतय चाय पर आमंत्रित कएने छथि। सुमनक संग हमरो बाजार घूमयके मोन छल, से कहलिएनि जे हमरा दुनू गोटाकें छोड़ि देल जाउ। गयाशुल दा' नहि मानलनि, कहलनि जे ओ सज्जन हमरा आ सुमनजी दुनू गोटाकें' अवस्से संग ल' क' अयबाक लेल आग्रह कएने छथि। अंततः सबहक संग हमहुँ दुनू गोटा हुनकर बासापर पहुँचलहुँ। पछाति ज्ञात भेल जे ओ सज्जन महनारक छथि। हिनकर पुतोहु मैथिली भाषी थिकीह। हम आ सुमन दुनूगोटा मिथिलांचलसँ छी ई जानि ओ हमरासभकें चाहपर आमंत्रित कएने छलाह। परिवारक इच्छा छलनि जे हम दुनू गोटा हुनकर पुतोहुसंग मैथिलीमे गप्प गरी। परिचयक दरम्यान दादाजीक जिक्र भेलापर ओ सज्जन चिहुँकि उठि बजलाह, *'अरे! आप रघू बाबू गवैयाजी के पोता हैं? वे तो बहुत बड़े गवैया थे। मुझे पटना में दो बार उनका गाना सुनने का अवसर मिला। एकबार दशहरा में और दूसरी बार चेतना समिति के वार्षिक कार्यक्रम में। मैं तो अपने को धन्य समझता हूँ कि मुझे यह अवसर मिला। अब वो बात कहाँ!'* ओकर बाद त' कतेको जिज्ञासा भेल। असमंजसमे सेहो पड़लहुँ, किएक त' हम गाब' नहि जनैत छी, से कियो मानय लेल तैयार नहि छल। खैर, चाहक बाद भोजनो भेल।

रघू बाबू अपन मात्रिक आधारपुर (दरभंगा) ओ बहिनक सासुर गोगरी जमालपुर बेसीकाल जाइत छलाह। राका सेहो जात-अबरजात रहनि। जमालपुरमे त' मास-दू-मास धरि प्रवास होइनि। हुनक द्वितीयक पुत्रक जन्म जमालपुरेमे जाहि दिन भेल ओहि दिन हुनकर बहनोइकें एकटा मुकदमामे कोर्टसँ डिग्री भेटल रहनि। तैं नवजातक नाम 'विजय' राखल गेल। हुनक बचपनक परममित्र जमालपुरवासी योगेंद्र नारायणसिंहजीक एकटा पोस्टकार्ड भेटल। एहि पत्रकें अभूतपूर्व कहि सकैत छी। रघू बाबूक मृत्युसँ बेकल मोन भ' मृतात्मा कें' संबोधित करैत लिखैत छथि—

'श्रीमान् स्वर्गीय रघू झाजी को योगेंद्र सिंह का अंतिम प्रणाम।

आप जैसे महान संगीतज्ञ के ऐसे चले जाने का मुझे बहुत दुःख है। बिहार का गौरव चला गया। अब कौन मुझे मनमुताबिक गाना सुनाएगा। बहुत बड़े-बड़े गवैया को सुना है लेकिन कुदरती आवाज सिर्फ रघु झाजी आप की ही थी।'

आगू अपन उद्गारमे ओ बच्चा सबहक भविष्यक चिंता करैत लिखैत छथि—

'रघू झाजी के लड़के विजय नाथ झा का जन्म जमालपुर में हुआ है। वह भी गाना सीखें, अच्छा करें। तभी ही हमारी आत्मा को शांति मिलेगी।'

एहि पत्रसँ रघू बाबूक प्रति लोकक स्नेह आ हुनक सामाजिक संबंधक विशालता

प्रकट होइत अछि। योगेंद्र बाबू टोहैत-टोहैत सुपौल धरि आयल छलाह। हमरा सबसँ भेंट भेला पर हुनका आँखिमे नोर आबि गेल रहनि। एहन स्नेह अपूर्व छल!

रघू बाबूकें लगनपातीमे दुनू तरफसँ नोत पड़ैत छलनि। महफिलमे हुनकर उपस्थितिसँ चारि-चान लागि जाइत छल। गीत-नादक संगहि हास-परिहासक दौर देर राति धरि चलैत रहय। सुपौलक प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. शांतिभूषण जीक पिताजी स्व. प्रो. नर्मदा प्रसाद सिंह हुनकर अनेको संस्मरण सुनौलनि। बरूआरीक एकटा बबुआनक बरियाती ननौती दिस कोनो गाम गेल छल। प्रोफेसर साहेब सेहो ओहि बरियातीमे छलाह। बरियाती-सरियाती दुनू तरफसँ हास-परिहासक केंद्रमे छलाह रघू बाबू। किछु कालक बाद महफिलसँ थोड़बे हटिक 'युवकसभ बाइजीकें नचायब शुरू क' देलनि। आठ-दस गोटाकें छोड़ि पूरा महफिल खाली भ' गेल। दुनू पक्षक गार्जियन सबहक आग्रह पर महफिलमे पंडित जीक गाना प्रारंभ भेल। विद्यापतिक पदक बाद शुरू भेल रसभरी ठुमरी, *'बाजू-बंद-खुलि खुलि जाय।'* बाइजी लग आठ-दसटा युवककें छोड़ि सभगोटा ससरिक' महफिलमे आबि गेल। फेर शुरू भ' गेल फरमाइश-एकटा आर, एकटा आर। एहन-एहन अनेको संस्मरण छनि रघू बाबूक।

रघू बाबू सुरकें बुझयबला सुधि श्रोताक संगहि साहित्यप्रेमी श्रोताकें आगूमे बैसबाक आग्रह करैत छलखिन। बी. एस. एस. कॉलेजक पूर्व प्राचार्य डॉ. परमेश्वर झाजी आ विलियम्स स्कूलक पूर्व प्राचार्य राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त कालीचरण मिश्रजी कहलनि जे प्रायः हुनका सबकें आगूमे बैसेबाक हुनकर प्रयास रहैत छलनि। साहित्यिक पद सभक विशिष्ट भाव कोना अपना गायकीमे प्रभावशाली ढंगसँ उतारल जाय, एहि पर हुनका सबसँ सलाह मशविरा होइत रहनि। ओ बेसुरोकें आशीर्वाद दैत छलखिन। हुनकर कहब रहनि जे लगन-पातीमे गवैयाक जान बेसुरे बंचबैत छैक। थाकल-मारल, जेना-तेना, दूर-दराजसँ महफिलमे पहुँचि तानपुरा खोलि गवैया अपन सुर लगबैत छथि कि तखनहि बेसुराक पदार्पण होइत अछि, आ कहैत छथि जे *'गाना-बजाना त' काल्हियो हेतैइ, एखन भोजन सेराय रहल अछि। भोजन पर चलले जाउ।'* गवैयाजी ओहि क्षण प्रसन्न होइत मोने मोन बेसुराकें आशीर्वाद दैत कहैत छथिन *'जीबह हे बेसुरा।'*

पंडितजी अपना पाछू भरल-पुरल परिवार आओर समृद्ध शिष्य परंपरा छोड़ि गेलाह। पुत्रद्वय सर्वश्री विजयनाथ झाजी ओ मदननाथ झाजी हुनकर विरासत सम्हारि रहल छथि। विजयनाथ झाजीक ख्याति प्रखर शिक्षाविद, शास्त्रीय संगीतक मर्मज्ञ, गायक ओ सुधी श्रोताक रूपमे छनि। मदननाथ झाजी जनसंपर्क विभागसँ सेवानिवृत उच्च कोटिक कलाकार छथि। शास्त्रीय गायनमे निपुण आ बुलंद आवाजक स्वामी छथि। रघू बाबूक शिष्य सबहक नम्हर नामावली अछि, जाहिमे पद्मभूषण शारदा सिन्हा, स्व. पं. देवेंद्र झा 'देबु',

पं. राणा झा, पं. आदित्य खाँ, स्व. जदु ठाकुर, पं. पुरंधर झा, स्व. अनमोल सिंह, स्व. लक्ष्मीकांत झा, शिवनंदन सिंह, शिवन झा, उपेंद्र यादव आदि प्रमुख छथि। पंडितजीक शिष्य बिहार कोकिला पदम्भूषण शारदा सिन्हा राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय मंच पर हुनकर नाम रौशन कएलनि। सुर सम्राज्ञी शारदा सिन्हाक गाओल विद्यापतिक गीत 'जय-जय भैरवी' मैथिली भाषाक गीतक पहिचान बनि गेल।

दू-तीन बरख पहिलुक बात थीक। पदम्भूषण शारदा सिन्हाजी सुपौल पधारने छलीह। किसान भवनमे ठहराव छलनि। 'प्रभात खबर' अखबारक जिला प्रभारी अमरेंद्र कुमार 'अमरजी', हमर सबहक मुन्ना भैया, फोन कएलनि, *'दस मिनटक खातिर किसान भवन अबितह।'* हम किसान भवन पहुँचलहुँ। मुन्ना भैया हमर परिचय पद्मभूषण शारदा सिन्हा, हुनकर पति डॉ. ब्रजकिशोर सिन्हा आ पुत्र अंशुमानजीसँ करओलनि। गप्पक क्रममे शारदा सिन्हाजीक बड़प्पन बुझना गेल। हुनक इच्छा छलनि जे गुरुजीक परिवारक कोनो सदस्यसँ भेंट होइत, तैं मुन्ना भैय्या हमरा बजौलनि। भरिपेट गप्प भेल। पूरा परिवारक कुशल-क्षेम लेलनि। विनम्रता आ सरल स्वभावक प्रतिमूर्त्ति। कहलनि जे कार्यक्रम शुरू करयसँ पूर्व मंच पर गुरुजीक स्मरण अवस्से करैत छी। गुरुक प्रति ई श्रद्धा देखि हमर आँखि डबडबा गेल।

प्रसिद्ध संगीतकार स्व. पं. देवेंद्र झा 'देबु' आ हुनकर पुत्र पं. राणा झा दुनू पिता-पुत्र रघू बाबूसँ संगीतक ज्ञान प्राप्त क' यशस्वी भेलाह। स्व. देबु झा कोसी क्षेत्रमे अनेको संगीत विद्यालयक स्थापना कएलनि। कठिन साधनाक बलसँ संगीतशास्त्रक विशद ज्ञान प्राप्त कए देबु बाबू राग प्रभात किरण, भिन्न जोश, शंकर प्रिय सन किछु रागक रचना सेहो कएलनि, जकर प्रकाशन प्रसिद्ध 'संगीत' पत्रिकामे भेल छल। पं. देबु झाजीक एकटा पुत्र पं. अजय झा संप्रति अमेरिकामे रहि संगीत साधना कए रहल छथि। अमेरिकामे हुनक म्यूजिकल ग्रुप चलैत छनि आ नामी म्यूजिकल बैंडक ओ डायरेक्टर सेहो छथि।

रघू बाबूक एकटा शिष्य पं. आदित्य खाँ छपरामे रहि हिंदुस्तानी संगीत परंपराकें समृद्ध क' रहल छथि। डॉ. प्रतिभा सहाय, डॉ. लावण्य कीर्त्ति सिंह सहित खाँजीक अनेको शिष्य-शिष्या हुनकर कार्यकें आगू बढ़ा रहल छथि। दुखन चौपालजी सुपौलमे रघू बागूक कार्यकें आगू बढ़ा रहल छथि।

हुनकर पटुशिष्य स्व. जदु ठाकुरजी अपना समयमे पर्याप्त यश अर्जित कएलनि। ठाकुरजीकें रघू बाबूक संग पैघ-पैघ संगीत कार्यक्रम सबमे भाग लेबाक अवसर भेटैत रहलनि। नेपालमे चीफ जस्टिससँ पुरस्कृत भेलाह। नवीनगर स्टेट तथा कुरसेला स्टेटमे हिनकर गायन सराहल गेल। स्व. जदु ठाकुर जीक शिष्य सोहन झाजी एखन पंचगछिया संगीत घरानाक ध्वजवाहक छथि आ पर्याप्त यश अर्जित क' रहल छथि।

रघू बाबूक हृदयमे शिष्य सबहक लेल स्नेहक अविरल धारा बहैत छल। शिष्यो सब हुनका भगवानसँ कम नहि मानैत छथिन। एकटा कार्यक्रममे स्व. जदु ठाकुर हिनकर उपस्थितिमे राग जै-जैवंतीमे विलंबित एक तालमे बड़ा ख्याल आ द्रुत तीनतालमे छोटा ख्याल प्रस्तुत कएलनि। राग जै-जैवंती रघू बाबूक प्रिय रागमेसँ एक छल। ओहि कार्यक्रममे मंदारक राजकुमार बाबू सरयू प्रसाद सिंह सेहो बैसल छलाह। स्व. जदु ठाकुरक उत्तम गायनसँ अभिभूत भ' गुरु रघू झाजी अपन प्रिय शिष्यकें आशीर्वाद दैत कहलखिन, *'जदु आइ हम तोरा राग जै-जैवंती दान दैत छियह। जाहि महफिलमे तूँ एहि रागक गायन करबह तोरा अपार प्रतिष्ठा भेटतह।'* सैह भेल। ओहि दिनक बाद रघू बाबू कहियो राग जै-जैवंतीक गायन स्वयं नहि कएलनि। हुनकर विषयमे जतेक लिखल जायत से कमे होयत। हरि अनंत हरि कथा अनंता।

रघू बाबूक स्वास्थ्य 1966 ई.क उत्तरार्द्धसँ खराब रहय लागलनि। लीभरक बीमारी छलनि। शुभेच्छु सबहक सलाह पर काशीक प्रसिद्ध वैद्य ब्रजमोहन दीक्षितक जीक इलाजमे 23 मार्च, 1967सँ 13 अप्रील 1967 धरि रहलाह। काशीएमे 13 अप्रील, 1967 ई.क भोरका पहर 10:30 बजे हिंदुस्तानी संगीतक ई देदीप्यमान नक्षत्र डूबि गेल।

रघू बाबू देवपुरुष छलाह। हुनका अपन मृत्युक पूर्वाभास भ' गेल छलनि। काशी जायसँ पहिनहि पटना रेडियो स्टेशनमे हुनकर अंतिम प्रोग्राम राग देसीमे रेकार्ड भेल छल, जकर बोल छल, 'नैय्या मोरी भई पुरानी'। काशीक लेल विदा होइतकाल सहरसा स्टेशन पर प्रिय पुत्र विजयनाथ झाजीक भावुक भेला पर सांत्वना दैत कहने छलखिन, 'नूनू हमरा दुनू हाथमे लड्डू अछि, जँ घूमिक' आबि गेलहुँ त' तोरासबहक बीच रहब आ नहि घुमि सकलहुँ त' सीधे बैकुंठ जायब।' काशीमे सबसँ पैघ पुत्र स्व. वैद्यनाथ झाजी संग रहथिन। हमरा सबहक बड़का कक्का, स्व. वैद्यनाथ झा स्वयं हिंदी व मैथिलीक स्थापित कथाकार, नाटककार आ कवि छलाह। पूज्य दादाजीक मृत्युक वर्णन करैत कहैत छलाह जे हुनकर मृत्युकाल अद्भुत दृश्य उत्पन्न भ' गेल छलैक। लागैत छल जे गाजा-बाजाक संग ओ गंधर्व लोक प्रस्थान क' रहल छथि। कहलनि जे काशीमे पं. जयानंद मिश्रजीक बासा पर हुनका सबहक ठहराव छलनि। रघू बाबूक मोन 13 अप्रीलक भोरमे विशेष खराब भ' गेलनि। पं. जयानंद बाबूक सलाह पर हुनका बनारस विश्वविद्यालयक अस्पतालमे इलाजक लेल जीपसँ ल'जाइत गेलाह। शहरमे जामक स्थिति एहेन जे पूरा काशी घूमि गेलाह। बाबा विश्वनाथक मंदिर लग पहुँचला पर रघू बाबू बाबा विश्वनाथक दर्शन करबाक इच्छा प्रकट कयलनि। मंदिरक रास्तामे स्त्री-पुरुषक एकटा हुजूम आगू-आगू झुमैत-गाबैत चल जाइत छल। हुजूमक आगू ढोल-पीपहीक संग नटुआसब सेहो नचैत जाइत छल। स्त्री-पुरुषक हुजुमकें ओ सब टपि गेलाह, मुदा किन्नर सब मंदिर तक

आगुए-आगू नचैत रहल। कहलनि जे ओहिकाल बुझाइत छल जेना हुनकर बारात निकलल हुअय, जाहिमे स्त्री-पुरुष ओ किन्नर सब मगन भ' नाचि-गाबि रहल होइथि। ज्ञानवापी पहुँचि रघू बाबूक इच्छानुसार बाबाक समक्ष हुनका राखल गेल। एकबेरि आँखि खोलि ओ 'जय बाबा विश्वनाथ' कहैत अपन नश्वर शरीर त्यागि देलनि। बाबा विश्वनाथक दरबारमे बाबाक समक्ष प्राण उत्सर्ग कए ठीके ओ देवपुरुष शिवलोकक लेल महायात्रापर विदा भ' गेलाह।

आकाशवाणी पटनासँ संझुका साढ़े सातक समाचारमे बिहारक गौरव महान संगीतकार संगीत चूड़ामणि पं. रघू झाजीक काशीमे असामयिक निधनक समाचार प्रसारित होइते पूरा देश हतप्रभ रहि गेल आ शोकमे डूबि गेल। तत्कालीन केंद्रीय मंत्री ललित नारायण मिश्र, कथाकार नागार्जुन, पं. रामकृष्ण झा किसुन, विद्याकर कवि सभकेओ हुनक असमय निधनकें हिंदुस्तानी संगीतक लेल अपूरणीय क्षति माननलि। विद्याकरजी कहलनि जे, *'स्वरक माधुर्य आओर शास्त्रीय ज्ञान दुनूक समन्वित रूपक प्रतीक छलाह रघू बाबू। संगीत जगतमे अपन आकर्षण आर विशिष्ट गुणक कारणे ओ मिथिलाक गौरवक रूपमे सदैव स्मरणीय रहताह। नि:संदेह मिथिलाभूमिक गौरवक एकटा अध्याय खत्म भ' गेल।'*

मिथिलांचलक एहि पावन भूमि पर एखनहुँ रघू बाबूक स्वरलहरी अनेकानेक सुधिजनक स्मृतिमे गुँजि रहल अछि। कोसीक कछेरमे संगीतक रसधार एखनो सुखायल नहि अछि। हिंदुस्तानी संगीत परंपराक ज्योति प्रज्ज्वलित रखबाक लेल नव पीढ़ीक दुखन चौपाल, रंजना झा, नीतू सिंह, वंदना ठाकुर, आगाजी, सोहन झा, गिरधर श्रीवास्तव 'पुटिस', भारती झा, प्रवीण झा, सुनील पोद्दार, ईश्वरजी, गौतमजी, नंदजी सन अनेको संगीत पुत्र-पुत्री प्रयासरत छथि।

कोसीक संगीत रत्न स्व. रघू झा आ स्व. मांगनि कामति दुनू गोटा गंधर्वलोकसँ आयल छलाह, गंधर्वगायन कए गंधर्वलोक चलि गेलाह। बीसम सदीमे हिंदुस्तानी संगीत परंपराकें बुलंदी पर पहुँचेबामे पं. रघू झाजीक योगदान सदति स्मरणीय रहत। कहल जाइछ, जे ई संसार समाप्त भ' सकैत अछि मुदा संगीत जीवित रहत। मिथिलांचलमे प्रतीक्षा अछि फेरसँ ओहि तरानाक जे रघू बाबू आ मांगनि गवैयाक जमानामे मिथिलाक आकासमे गुंजित होइत छल।

मो. 9431247575



दूर रहितो लग : हमर पिता

अमरनाथ झा

मार्च, 1978क 10 तारीख। हम नई दिल्ली-हैदराबाद एक्सप्रेससँ सूर्यक किरण फुटलासँ पूर्वहि हैदराबाद स्टेशन पर उतरैत छी। उमेरि बीसक लगभग मुदा देखलासँ कियो 15-16सँ बेसीक नहि कहत। दुब्बर-पातर, खियैल-मियैल। हैदराबाद हम नई दिल्लीसँ नहि आयल छी। आयल छी पटनासँ। कनेक्टींग मेल एक्सप्रेस इटारसी जंक्शनमे पकड़िक'। ताहि समयमे पटनासँ डायरेक्ट ट्रेन हैदराबादक नहि छलै। हम एतय मैथिली भाषा एवं साहित्यक लेल वर्ष 1977क साहित्य अकादेमी पुरस्कार ग्रहण करबाक लेल आयल छी। पुरस्कार हमर पिताकें देल गेल छलनि जे किछु मास पूर्व दिवंगत भ' गेल छलाह। ओना हम अपन जन्मदात्री मायकें सेहो हुनकर फोटोएसँ चिन्हैत छलियनि। हमरा लग हुनकर एकटा फोटो छल। असगरमे हम ओहि पोस्टकार्ड साईज ब्लैक एंड व्हाइट फोटोकें बड़ी काल तक देखैत रहै छलहुँ। मौन आ मूक फोटोक पैघ-पैघ आँखि जेना किछु कहि रहल हुअए। मुदा हम किछु बुझियै नहि। जेना-जेना बालमन कागज आ काठक नाहमे अंतर बुझैत गेल तेना-तेना ई स्वभाव बदलैत गेल। परिवारमे हुनकर चर्चा होइत रहैत छलनि, हम गुम-सुम सुनैत रहैत छलहुँ। एहि विषयकें खतम करबासँ पूर्व लोक कहै—भगवान नीक लोक कें जल्दी बजा लै छथिन।

हुनका प्रसंगमे एकाध टा गप्प मोन अछि जे अपन छोट पित्तीसँ सुनने छी, जिनकर सेवानिवृत्तिक बीस बरससँ ऊपर भ' गेलनि अछि आ अखनहुँ सुनबैत भावुक भ' जाइत छथि—ताहि दिन बाढ़िक विकराल रूप। पानि उतरलाक बाद कोसीमे कबइ-सिंगही, मांगुर, भुन्ना, रोहुक कोनो कमी नहि, सौराठी-बुआरीक कथे कोन। भोरे बंशी ल' क' निकलि जाय। उमेरि दस-बारह बरस भेल हैत। बेरहटक बेरमे घुरि आबी। यैह दिनचर्या छल। माछ मारनाय, कबड्डी खेलेनाय, कोसी धारमे हेलनाय। यैह जीवन छल आ यैह जीवनक आनंद। एकदिन ओहिना हाफ-पैंट पहिरने माटि-थालमे लेटैल आँगन पहुँचलहुँ। पहुँचैत देरी हुनक प्रश्न—आँए यौ, अहाँ स्कूल नहि जाइ छियै। पढ़ै नहि छियै? हमरा एहन प्रश्नक प्रत्याशा नहि छल। भौजी छथि, ताहूमे नवागता। कहलियनि—पढ़िकें की हेतै, पढ़नेसँ लोक बड़का बनि जाइ छै। हमर जवाब दैमे एहन ऐंठी छल जेना हम हुनका हुनकर सीमा बुझा रहल होइयनि। अहाँक सीमा आँगन तक अछि। एम्हर हमर उत्तर, ओम्हर हमरा गाल पर सटाक थापड़ पड़ल। घरक सरस्वती, दुर्गामे अवतरित भ' गेलीह। तीक्ष्ण आँखिमे भौंहु तनैत आदेश—काल्हिसँ स्कूल जेबै!

रुग्न आ जर्जर सासुक सेवा करैत ओ नीक-नाहित बुझि गेल छलीह कि जेठ

भाउजक संग अपन दियर सभक मायक भूमिकाक निर्वाह सेहो करय पड़त। हुनकर नैहर सहरसा जिलाक (आब सुपौल) कर्णपुर छलनि। शिक्षाक प्रचार-प्रसारमे कर्णपुर एहि बांधक बीच बसल सुविधाविहीन, कोसी बाँधक बीच बसल हमर गाम रसुआर जकाँ शून्य नहि। पिता कुसेश्वर झा मधेपुरामे मुहर्रिर रहथिन। फौजदारी, दीवानी मामलाक नीक जानकार। इलाकाक लोक राय-मशविराक लेल अबैत रहैत छलनि। हुनक दूरदर्शिता शिक्षाक महत्त्वकें बुझय लागल छल। खानदानी समृद्ध घर। देखबा-सुनबामे राजपुरुष सन व्यक्तित्व। लोक मालिक बाबू कहि संबोधित करनि।

साहित्य अकादेमी पुरस्कारक आयोजन सामान्यतः दिल्लीमे होइत छै। मुदा वर्ष 1977क आयोजन बैंगलोरमे भेल छल जखन कि कन्नड़ साहित्य परिषद अपन हीरक जयंती वर्ष पर आमंत्रित कैने छल। 1978मे साहित्य अकादेमीक रजत जयंती वर्ष पर आंध्रप्रदेश साहित्य अकादेमीक आमंत्रण पर हैदराबादमे भ' रहल छल। ओहि अवसर पर गुजराती भाषाक महान कवि, गांधीवादी चिंतक एवं ऋषि कवि नरसी मेहताक परंपराक उमाशंकर जोशी अपन अध्यक्षीय अभिभाषणमे कहने छलाह कि भारतवर्षक भाषा सभ एक-दोसरक पूरक अछि। विभिन्न नगरमे एहि तरहक आयोजन भाषायी समृद्धि आ समन्वयक दिशामे एकटा सकारात्मक प्रयास हैत जे राष्ट्रीय एकता आ अखंडताकें प्रगाढ़ आ प्रबल बनेबामे सहायक सिद्ध हैत। साहित्य अकादेमी पुरस्कार कार्यक्रमक आयोजन काल्हि 11 मार्चकें छैक। पुरस्कार हमर पिता राजेश्वर झाकें हुनक कृति 'अवहट्ठ: उदभव ओ विकास'क लेल देल गेल छनि।

होटलमे हमरा ठहरायल गेल अछि। ने हम ककरो जनैत छी, ने कियो हमरा जनैत अछि। होटलक बेड पर पड़ल-पड़ल गोलकुंडाक मुगल शासक द्वारा अपन प्रेमिका भागमतीकें प्रेमक प्रतिदान स्वरूप देल भागनगर जे आइ हैदराबादक रूपमे प्रसिद्ध अछि, देखबाक इच्छा प्रबल भ' जाइत अछि। हम ऑटो ल' गोलकुंडा फोर्ट देखै चल जाइत छी। किलाकें देखबैत आ बुझबैत ओ गाइड हमरा आकर्षित करैत अछि। गाइड द्वारा ओहि किलाक निर्माता कुतुबशाही राजवंशक शौर्य, साहित्य-संगीत, दानशीलता, न्यायप्रियता, रानीसभक सौंदर्य, रंगशालाक रोचक वर्णनमे अद्भुत आकर्षण छलै। सालारजंग म्यूजियम आ उसमानिया यूनिवरसिटी देखैत साँझ भ' जाइत अछि। संध्याकालक उपयोग लता टॉकीजमे सिनेमा देखिक' करैत छी। पता नहि आइ ओ टॉकीज छैक वा नहि से हैदराबादक प्रवासी या निवासी कहि सकैत छथि। राति तक होटल अबैत देह आ मन दुनू थाकि जाइत अछि।

एक क्षण पता नहि चलैत अछि कि हम कोन ठाम छी। आँखि खोलै छी तँ चारूकात अन्हार। मोन पड़ैए होटलक कमरामे सुतल छी। हम जागि गेल छी मुदा देह अखनहुँ

सुतल अछि, जेना हमर यात्रा आ यातनाकें उघि रहल हुअए। खिड़कीसँ कतौसँ एकटा महीन प्रकाश आबि रहल अछि। हम सुतबाक प्रयास करैत छी मुदा निन्न कतए?

आध पहर राति आ निन्न उचटि जाय तँ मनुखक मोन खुट्टा तोड़ल माल भ' जाइ छै। कोनो जजात लागल खेतक रखबार नहि हुअए तँ जानवर बेधड़क भ' खेत चरत, धाँगत, उमकत। स्मृतियो तहिना कखनो सुनैत नहि अछि ओ तँ सुतलोमे जगले रहैत अछि। मोन पड़ै छथि पिता। जिनकर व्यक्तित्व ओहि निविड़ अन्हार पर भारी पड़ि रहल छल, जेना प्रकाश बाट देखा रहल हुअए। चाहे केहनो अंतहीन अन्हार कियै नहि हुअए। ओहि बाट पर बढ़ैत ई पाँति भेटैये—

ममतासँ भरल सिनेह सरल
बाहरसँ अतिशय रूच्छ मुदा
अंतरमे अमृत कलश भरल।

मोन पड़ैत अछि उपर्युक्त पाँति जे मिथिला भारतीक राजेश्वर स्मृति अंकमे श्रद्धांजलि अर्पित करैत मैथिलीपुत्र श्रीप्रदीप लिखने छथि। हम सभ भाय-बहीन हुनका बाबूजी कहै छलियनि। पिताकें संबोधित करबाक आर कोनो शब्दक तुलनामे ई अधिक आत्मीयपूर्ण संबोधन अछि। मुदा एहि निकटतासूचक संबोधनक बावजूद हमरा सभसँ मर्यादाक एकटा दूरी रखैत छलाह। हम सभ भाय-बहीनमे (जे सभ बहुत छोट छला हुनका छोड़ि कए) कतबो झगड़ा होइत रहय, हुनकर आफिससँ एला पर हम सभ शांत आ अनुशासित भ' जाय। जावत ओ घरमे रहैत छलाह हमर प्रयास रहै हुनका सामने कम आबी। जहिना अपने अध्ययनरत रहैत छलाह तहिना हमरोसँ अपेक्षा करथि। हुनका प्रति हमरा मनमे भयमिश्रित सम्मान छल।

साधारण कद, दुब्बर-पातर शरीर, श्यामवर्ण, प्रशस्त ललाट, तीक्ष्ण नाक, छोट-छोट छाँटल मोंछ आ छोट केश। स्वच्छ धोती-कुरता, बिना फीताक बढ़ियाँ जूता, हुनक यैह आकृति कार्यालय जाइत आ कार्यालयसँ अबैत बेसीकाल हमरा स्मृतिमे अबैत अछि। दोसर स्मृति जे कैमराक फ्लैश लाइट सदृश चमकि उठैत अछि ओ अछि जखन अधरतियामे लघुशंकासँ निवृत हैबाक लेल हम उठी तँ हुनका अपन रूममे फर्श पर बिछाय कंबल पर पसरल पोथी सभमे हेरायल देखियनि। जे धोती पहिरने वैह अदहा ओढ़ने तँ लगै जेना स्तब्ध रात्रिमे कोनो योगी अखंड साधनामे लीन हुअए। आब बुझैत छियैक ओहि साधनाक तपसँ बहरैल मैथिली साहित्यक आदिकाल, मिथिलाक्षरक उद्‌भव ओ विकास आ अवहट्ठ: उदभव ओ विकास।

संगहि मोन पड़ैए जाड़क राति। ईंटा पर राखल कड़ाहीमे चेरा जरि रहल अछि। कमरामे जरैत बिजली बल्ब आ चेरासँ निकलैत आगिक प्रकाश जेना एकाकार भ' गेल अछि। पीठपर राखल शॉल लिखबाक क्रममे कखन ने कंबल पर खसल पड़ल अछि।

रहि गेल अछि पीठ पर वैह अदहा धोती आ सामने कड़ाहीमे जरैत आगि। कागज पर चलैत कलम आ रहि-रहि कए सेकैत हाथ। तँ लगैए कि अग्निक आवाहन केने बिना यज्ञक पूर्णाहुति संभव अछि ? कि ई नहि कहल जा सकैत अछि कि ओहि अग्निकें साक्षी राखि ऐतिहासिक एवं पौराणिक चरित्र विद्याधर कथा, धर्मव्याध कथा, एकादशी, कंदर्पी घाट, उर्वशी, मेनका, शास्त्रार्थ एवं हिंदीक पोथीक शाक्यश्रीभद्र की जीवनीक निर्माण भेल।

सन 1923 ई.क 25 अप्रैलकें सहरसा जिलाक सुपौल सवडिविजनक निर्मली स्टेशनक डेढ़ माइल पूरब कोसीक उपधार तिलयुगाक कात बसल रसुआर गाँवमे राजेश्वर झाक जन्म नोखेलाल झा आ देवरानीक ज्येष्ठ पुत्रक रूपमे भेल छलनि। दुलारसँ बुच्ची कहल जाइत छलनि। सामान्यतः मिथिलामे कन्या संतानकें बुच्ची कहल जाइत अछि। नोखेलाल झाकें पाँच टा पुत्र भेलनि मुदा पुत्री एकहु टा नहि। भ' सकैए कन्या रत्न प्राप्तिक मनोकामना नहि पूर्ण हेबाक कारण मनक संतोषक लेल पुत्रकें बुच्ची कहि संबोधित कैल जाइत हैत। राजेश्वर झा टकवारे ऑक्सी मूलक वत्स गोत्रीय ब्राह्मण छलाह। हुनक पूर्वज रसुआर कए पीढ़ी पूर्व अयलाह ई कहनाइ कठिन अछि। संभवतः ओ सभ सिंहवाड़, लखनौर होइत रसुआर अयलाह। मुदा एकर आधार मात्र जनश्रुति अछि। एहि परिवारमे कए पीढ़ी पूर्व ब्रह्मदत्त झा सनातनी ब्राह्मण छलाह। ब्रह्मदत्त झाक पौत्र बनबाली झा वैदिक छलाह जे राजेश्वर झाक पितामह छलाह। यद्यपि पिता नोखेलाल झाकें गुजर-बसरक लेल नीक खेत-पथार, कलम-गाछी मुदा कोसीक आगमनक पश्चात एहि सभक कोनो अर्थ नहि रहि गेल छल। कोसीक विकराल रूप गामक-गाम निपत्ता कयने जाइत छल आ घरक-घर सुन्न। सुनै छी साबिकमे निर्मलीसँ सुपौलकें रेलपथ जोड़ने छल मुदा रहल-सहल कसरि 1934क भूकंप निकालि देलक। बादक पीढ़ी जखन कतौ-कतौ चओर-चाँचरमे ईटाक खंडहरनुमा घर देखय तँ बूढ़-पुरान कहथिन एतए हाल्ट छल, ई रेलक गुमटी अछि। बादमे बिहार आ मिथिलाक पैघ भूभागकें बचेबाक लेल 1955मे कोसी नदीकें नियंत्रित करबाक लेल बनल बाँध कतबो वैज्ञानिक आ व्यावहारिक निर्णय किएक नहि हुअए मुदा एहि क्षेत्रक निवासीक लेल वैह 'सुख सपनहुँ नहि भेल'।

1939मे मैट्रिक पास केलनि। जीवनयापनक समस्या राजदरभंगा बौंसी सर्किल, इंडियन नेशन, पटना होइत बिहार रिसर्च सोसाइटी अनलकनि। एहि संस्थामे एला पश्चात् हुनका ओहने तृप्ति भेलनि जेना जेठक दुपहरियामे बौआइत पियाससँ क्लांत पथिककें जलाशय भेटि गेल होइ। बंगाल विभाजनक पश्चात एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल जकाँ पटनामे बिहार एवं उड़ीसा रिसर्च सोसाइटीक स्थापना 20 जनवरी, 1915 कें तत्कालीन गवर्नर सर चार्ल्स एस बेलीक अध्यक्षतामे भेल। जे उड़ीसा अलग प्रांत

भेलाक बाद बिहार रिसर्च सोसाइटी रहल। प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृतिक विश्वप्रसिद्ध संस्थान म्यूजियम बिल्डिंग पटनामे अछि।

बाबूजी वर्तमानमे रहियो कए सनातन संस्कृतिक प्रति अतिशय निष्ठावान छलाह। एतए स्पष्ट क' दी सनातनक अर्थ मुख्यतः पुरातन मूल्यक संरक्षणसँ अछि। प्रायः ओ कहथि—जाहि द्रुतगति सँ औद्योगिक यांत्रिक सभ्यताक प्रचार-प्रसार भ' रहल अछि जँ शीघ्रातिशीघ्र लोकगाथा, लोकनृत्य, लोकगीत आदिकें स्वरबद्ध आ लिपिबद्ध नहि कैल गेल तँ देखितहि-देखितहि हमरालोकनिक ई सभ अमूल्य निधि बिला जायत। एहि दिशामे कैल गेल प्रयास छल—लोकगाथा विवेचन, जट-जटिन, श्यामा-चकेबा, नैना-योगिन आदि।

जखन आइ हम विचार करैत छी तँ कहि सकैत छी कि पटनामे ओ मैथिलीक नव-केंद्र खोललनि मैथिली साहित्य संस्थानक रूपमे। बाबूजी ओकर संस्थापक सचिव छलाह। नव एहि लेल कि पटना मैथिली भाषा आ साहित्यक केंद्र बनि गेल छल। चेतना समितिक स्थापना भ' गेल छल। भाषा आंदोलनकें गति प्रदान करबाक लेल विद्यापति पर्व समारोहक भव्य आयोजन होइत छल। तथापि ई कहल जा सकैत अछि कि 1966-67सँ पटनामे समारोहपूर्वक जँ दोसर आयोजन विद्यापति पर्वक प्रारंभ भेल तँ ओ मैथिली साहित्य संस्थानक छल। संस्थानक महत्त्वपूर्ण योगदान छल मैथिलीमे अनुसंधानमूलक पत्रिका मिथिला भारतीक प्रकाशन। मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे मिथिला भारती सन शोध पत्रिकाक स्वरूप अद्वितीय बनल रहल। किछु सालक विरामक बाद ई पत्रिका अखनहुँ प्रकाशित भ' रहल अछि। संस्थानक उल्लेखनीय कार्य अछि अल्प समयमे 20-22 टा पोथीक प्रकाशन। 1977मे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित पोथी 'अवहट्ठ: उदभव ओ विकास' मैथिली साहित्य संस्थानक पुष्प अछि। हुनक अंतिम पोथी मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णवसाहित्यक प्रकाशन मैथिली अकादमी, पटनासँ भेल।

बाबूजी उदार, सदाशयी आ विचारवान छलाह। जीवनयापनक संतोषप्रद व्यवस्था रहितहु ओ अभावमे रहैत छलाह। कखनो लगै अभावग्रस्तता हुनक अपन ओढ़ल छनि। कोसी अंचलक दरिद्रता, दुख-दैन्यक ओ द्रष्टा आ भोक्ता दुनू रहल छलाह। जाहिमे कोसीक दुर्दम्य स्थितिसँ प्राणरक्षा सेहो छल। हमरे लोकनि टा नहि बल्कि कतेको परिवारकें विस्थापनक असह्य पीड़ा सहै पड़ल छलै। रसुआर छोड़ि महादेव मठ लगक ग्राम भवानीपुर (बेलही-भवानीपुर), मधुबनीमे लगभग पंद्रह साल रहै पड़ल छल। परिवारक कतेको सदस्य ओहि समयक दारुण प्रसंगक चर्चा करैत हमरा कहै छला—अहाँ तीनू भाय-बहीनक जन्म भवानीयेपुरमे भेल अछि। स्थिति सभक प्रवाह वेग, विस्थापन आ पुनः स्थापनक पीड़ाक मात्र कल्पना कैल जा सकैत अछि। पहिल पत्नीक देहावसान। द्विरागमनसँ पूर्व विवाहक किछु माह पश्चात। वयस चौदहक करीब। नौवाँमे

पढ़ैत छला। पत्नी नौ-दस वर्षक। प्रेमक कोपल फुटबाक उम्र। कोपल फुटबासँ पहिनहि मुरझा गेल। दोसर पत्नी तीन टा संतान दय सदा-सदाक लेल संग छोड़ि गेलीह। जे हमर माय छलीह। दोसर पत्नीक देहांतक पश्चात वैरागी मन अपना दिश घिचनि तँ छोट-छोट बच्चाक मोह सांसारिक बनबाक लेल बाध्य करनि। तहन तेसर विवाह। पिता नोखेलाल झा कोसीक अंतहीन कथा-व्यथाक चर्चा करैत कहथि—हम असगरे भायमे नहि छलहुँ। भाय सभकें कोसी लील गेली। सभ कमासुत। पाँच हाथक जवान। काया-धुआ सेहो तेहने। मोटगर-डटगर। मुदा सभ कोनो ने कोनो रोगक बहन्ने कालक गालमे समा जाइत गेला। मात्र एकटा हम बचलहुँ सोखा-शंभूनाथ। की एहि अंतहीन छिड़ियायल कोसीक हाहाकारकें समेटि रेणुक मैला आँचल आ परती परिकथा साकार नहि भेल हैत?

जेना जीवनक क्षणभंगुरताक बोध भ' गेल होइनि। आ तें अंत-अंत तक ओ कोसी अंचलक अभावग्रस्त मनुक्ख बनल रहला। निर्धनता आ विपन्नताकें साटने विद्वान तेज आ निर्भीकता। मुदा याचकत्व कतौ नहि। यचनाक कोनो क्षण आयल तँ परपीड़ासँ वशीभूत भ'। दरिद्रता विद्वानक सबसँ पैघ कवच होइत अछि। एकटा सुरक्षित, नैतिक, लौकिक बल सांसारिक संपन्नतासँ मायाग्रस्त लोक पर हँसैत संतुष्ट रहबाक आधार। हुनक यैह कवच जे शहरी भद्रता जकाँ देखार नहि होइत अछि, किछु हद तक जिद्दी, भदेश आ देहाती बना देने छलनि। किछु घटना प्रासंगिक अछि जकर उद्देश्य आत्मश्लाघा नहि मात्र व्यक्तित्व परिचय अछि।

गाम घरक कोनो खगल-बेसाहलमे हुनका अपन प्रतिरूप देखाइन। बिहार रिसर्च सोसाइटी जतय ओ कार्यालय सचिवक रूपमे मृत्युपर्यंत कार्यरत छलाह। कार्यवाहीक मिटींग चलि रहल अछि। जस्टिस सुशील कुमार झा, इतिहासकार के. के. दत्त, डा. बी. पी. सिंहा, डा. जे. सी. झा, डा. उपेंद्र ठाकुर, एक-दू टा आइ. ए. एस. पदाधिकारी लोकनि विचार-विमर्श क' रहल छथि। एहि बीच गाम-परिवेशक लोकक आवेदन बढ़ा—सरकार एकरा राखि लियौ। बढ़ गरीब छै, अन्न-अन्नकें मरि जेतै। अपन निछच्छ ठेठपनसँ बाध्य क' देथि आ कतेको बेर नियम शिथिल क' हुनक बात मान' पड़नि। एकटा प्रसंग मोन पड़ैए जकर चर्चा ओ हास-परिहासक सृजन करैत सुनबैत रहथि। ताहि समयमे डा. के. के. दत्त अध्यक्ष (अवैतनिक प्रमुख) छलाह। एक बेर कार्य करैत ओ पीबाक लेल सेवकसँ जल मंगलखिन। हड़बड़मे वा ग्लास नहि भेटलाक कारण ओ व्यक्ति पानिसँ भरल जग आनि दत्त साहबक टेबुल पर राखि देलखिन। दत्त साहेब ओकरा दिश कनडेरिये ताकि खिन्न होइत बजला—'राजेश्वर झा आर सब तो ठीक कोरता है लेकिन कहाँ से ई बंदर सब को फँसा-फँसा के लाता है।' दरअसल बाबूजी बुझथिन कि दस सालसँ जे अपन समय महिसक पीठ पर बितौने हो ओकरा साहबी तहजीब बुझबामे किछ तँ समय लगतै।

वेतन भेटलाक बाद घरक चिंतासँ बेसी एकटा विपन्नक बहीनक चारि दिनक बाद द्विरागमनक चिंता। अपन विश्वसनीयतासँ सभ सरंजामक व्यवस्था क' वेतनक पाय सँ हुनका चिंतामुक्त क' गाम पठा निश्चिंत भेला। जखन कि ओ बुझैत रहथि जे ओहि व्यक्तिक स्थिति पाय लौटेनाय तँ दूरक गप्प पटना लौटि क' एनायो संदिग्ध छलनि। पत्नी प्रतीक्षामे जे मास भरिक बाद पाइ आओत। आश्रमक बेगरता सब शांत हैत। मुदा...। पत्नी अलट-बिलट बाजथि। हुनका लेल कोना चिंता नहि। कारण भगवान पर अगाध विश्वास रहनि। आ विश्वास रहनि अपन श्रम पर, अपन संघर्ष पर। कैएक अवसर पर ओ अपन आत्मीय आ अंतरंग मित्र लोकनिकें कहथि—'जे कोसीकें नहि देखने छथि ओ कोसीसँ डेराइत छथि आ ओकरा अपन शत्रु बुझैत छथि। कोसी तँ हमर अपन छी। कोसिकन्हेमे जन्म भेल, कास-पटेर आ बालु पर खेलेलहुँ-धुपेलहु आ ओहि कोसीसँ लड़बो करी। बेर-बेर कोसी हमर घर दहा भसिया क' नेस्तनाबुद क' दिअए आ हम बेर-बेर बनाबी। कोसीक संग हमहूँ जिद्दी बनि जाय।' वस्तुतः संघर्ष करबाक शक्ति हुनका कोसी प्रदान कयने छलनि।

साहित्य हुनक साधनाक क्षेत्र छलनि। जीवन संघर्षक थकानकें दूर करबाक लेल ओ साहित्यक आश्रय ग्रहण करैत छलाह। ओ स्वयं निर्मित व्यक्ति छलाह आ जीवन संघर्षक आंचसँ तपि कुंदन बनल छलाह। जीवनरूपी संघर्षक यैह आँच हुनका बाहरसँ कठोर बना देने छलनि; जाहि आवरणक पाछू करुणा आ ममताक अक्षय स्रोत छल जे कैक अवसर पर छलकि उठनि। की वैह करुणाक स्रोत हुनका नंदलालक प्रति नहि फुटल रहनि। बालक नंदलाल हुनका कतय आ कोना भेटलखिन से पता नहि अछि। सुनबामे अबैत अछि पटनामे रहैत एकटा अति गरीब मरणासन्न वृद्ध अपन पौत्रकें हुनका सौंपि कहलखिन आब अहीं एकर अभिभावक, गुरु, माता-पिता छियै। उत्तर प्रदेशक कुशीनगर जिलाक कोनो गाँवक निवासी नंदलालकें पुत्रवत स्नेह दैत अपनहि कार्यालयमे रखबा स्वाबलंबी बनौलनि। ओहो पुत्रधर्मक निवाह करैत अंतिम यात्रा तक संग रहलखिन। आइ नंदलाल जीक अनुपस्थिति हमरा भावविह्वल क' रहल अछि। पिताक असमय परोक्ष भेला पर जीवनक कतेको कठिन घड़ीमे ओ हमरा संग ठाढ़ रहि हमरा संबल देलनि।

अपन गामसँ, गामक चारूकात बहैत कोसीसँ बेस लगाव रहनि। पटनासँ गाम जेबाकाल निर्मली बान्हसँ नीचाँ नाओ पर चढ़वासँ पूर्व ठेहुन भरि पानिमे पैसि कोसीक प्रखर बेगवती धारसँ आँजुर भरि जल उठा माथ पर स्पर्श करथि। जेना घर एला पर मायकें प्रणाम क' रहल होथि। अपन कर्मभूमि पटनामे भने गंगाकें देखैत रहला मुदा ओ आकुल रहैत छलाह कोसीक लेल। तें 23 अप्रील 1977कें देह त्याग भनहि पटनामे गंगा कातक अस्पतालमे केलनि मुदा अंतिम विसर्जन कोसीमे भेलनि।

मो. 9110932557



डा. जयकांत मिश्र : एक संस्मरण

किशोरनाथ झा

डा. जयकांत मिश्रक संपर्कमे हमरा 1970 ई.सँ रहबाक सौभाग्य भेटल अछि से निरंतर बत्तिसवर्ष धरि प्रयाग प्रवासमे ओ हमर स्थानीय अभिभावक रहलाह। हुनकासँ हम बहुत व्यावहारिक विषय तथा मैथिली साहित्यक प्रसंग सिखलहुँ जे जीवनयात्राक पाथेय भेल।

ओ जखन गङ्गानाथ झा शोध संस्थान इलाहाबादक सचिव छलाह तहिया एहि संस्थाक अध्यक्ष छलाह प्रातःस्मरणीय गोपीनाथ कविराज तथा उपाध्यक्ष छलाह प्रसिद्ध इतिहासविद् डा. ईश्वरी प्रसाद तथा महामहोपाध्याय डा. सर झाक साक्षात् शिष्य प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डा. बाबूराम सक्सेना। 1970 ई.मे मैनस्क्रिप्ट पंडितक विज्ञापन उक्त संस्थाक 325सँ 550क स्केलमे देखि सीनियर रिसर्च फेलोशिपक अवधि समाप्त प्रायः रहने हम आवेदन कएने रही। जुलाईमे साक्षात्कार हेतु बजाओल गेलापर उक्त पद पर हमर नियुक्ति पत्र सचिव रहने डा. मिश्रहिक हस्ताक्षरसँ भेटल छल। पछाति एकहिवर्षक बाद ई संस्था भारत सरकार द्वारा अधिगृहीत भेला पर हमर पदस्थापन रिसर्च औफिसर (अनुसंधान अधिकारी) पद पर भेल तथा व्याख्याताक स्केल भेटए लागल।

प्रयाग पहुँचितहिं हम हिनक परिवारक सदस्यजकाँ रहए लगलहुँ। जें कि अपन परिवारमे जेठ रहने हिनका तहिया घरक लोक दादा कहैत छलनि तें हमहूँ हिनका 'दादा' कहए लगलिऐनि। दिनानुदिन डा. मिश्रक वर्धमान स्नेह आ प्रसादक कारणे आजीवन हिनक विश्वासपात्र भए रहलहुँ। पारिवारिक समस्या तथा शास्त्रीय समस्या उपस्थित भेला पर बजाओल गेला पर पारस्परिक विचार-विमर्शमे हमरहु सहभागिता रहैत छल।

दादाक पुण्यश्लोका माइक स्वर्गवास भेला पर प्रायः 1980क दशकमे विचार होइत रहैक जे माएकें मुखाग्नि हिनक छोट भाइ देथिन। भाइजी दशमा दिन उतरी पहिरि दशगात्रक पिंडदान कए श्राद्ध करताह। हेतु जे विश्वविद्यालयमे अंग्रेजी विभागक अध्यक्ष रहबाक कारणे हिनका बहुत कार्य रहैत छनि। दादाक इच्छा छलनि जे जखन उपस्थित छी तँ हमहीं मुखाग्नि दिएनि, हमरे ई कर्तव्य थिक। हमरासँ पूछल गेल तँ हमहूँ दादाक पक्षक समर्थन कएलहुँ। सभ भाइ एहिबात पर सहमत भेलाह। हिनक अनुज मान्य रमाकांत बाबू हमर पक्षेमे बजलाह जे हमरा सभक अभिभावक पहिने पिता छलाह। हुनक स्वर्गवास भेला पर माए अभिभावक छलीह, आइ हुनक स्वर्गवास भेला पर भाइजी हमरा सभक अभिभावक छथि, सभ भाइ हिनके बात मानबनि।

हमरा रमानंद रेणुक कचोट तथा दूध फूल कथा संग्रह तथा जीवकांत जीक सूर्य

गलि रहल अछि कथा संग्रह रिक्सा पर सङ्ग चलैत काल बुझाएकें पढ़ौने छथि। पछाति ओ पुस्तक देखि तथा कहथि जे पढ़ि लेब। ई बरोबरि कहैत रहथि जे शास्त्रैक अध्ययन जकाँ मैथिली साहित्यहुक अध्ययन करबाक छैक। तत्त्व निकालि शास्त्रीय रीतिसँ प्रस्तुत करबाक छैक। जेना संस्कृत साहित्यमे रस, ध्वनि तथ अलंकार आदि तकैत छी–तहिना मैथिलीक काव्यहुमे काव्यक व्यङ्ग आदि तथा कथाक शिल्प आदिक आलोचन करबाक चाही। मैथिली भाषा तथा साहित्यक प्रति रुचि जगौनिहार हमरा दादा थिकाह। हिनके प्रेरणा तथा प्रसादसँ तथा मित्रमणि डा. जगदीश मिश्रक उद्बोधन आग्रहसँ मैथिलीमे अनेक निबंध तथा विनिबंध हमर प्रकाशित भेल अछि। हिनकहि आदेशें हम मैथिलीमे 'लोकवेद'क प्रणयन कएलहुँ। दादाक अविस्मरणीय मार्गदर्शन लोकवेदकें भेटल छैक। प्रत्येक पंक्ति ध्यानसँ पढ़ि काट छाँट कए देथि। कतेको पृष्ठक पुनर्लेखन कराबथि। धर्मशास्त्रीय पुस्तक पढ़ि विचार कए ओहि विषयक निर्णय लिखए कहथि।

इलाहाबादक विद्यापीठमे कार्यारम्भ कएलाक चारि-पाँच दिन भेल होएत कि दादा एक दिन कार्यालय आबि कहलनि जे संस्थानक जर्नल (शोध पत्रिका)मे प्रकाशनार्थ एकटा आलेख दिअ। हमरा लगमे हिंदी वा संस्कृतमे कोनो आलेख नहि छल, कहलिएनि जे मैथिलीमे एकटा आलेख अछि 'विद्यापतिमे उत्प्रेक्षा'। दू-चारि दिनमे हिंदी वा संस्कृतमे अनुवाद कए दए सकैत छी। कहलनि जे मैथिलीऐक ओ आलेख देखाउ। एक दिनक बाद कहलनि सत्ताइसम अंक शोध पत्रिकामे प्रकाशन हेतु ओ आलेख प्रेस पठाए देलिएक। प्रूफ भेटलापर संधोधन कए देबैक। भारतीय विद्याक विषय यदि हिंदी, अंग्रेजी तथा संस्कृतमे छपैत छैक तँ ई मैथिलीक आलेख किएक नहि छपतैक। शोध पत्रिकामे शोधपरक आलेख कोनहुँ भाषामे छापल जाए सकैत छैक। मैथिलीओक पाठक तँ एहि शोध-पत्रिकाक बहुतो छथि।

भवभूति उत्तररामचरितमे कहने छथि जे विशिष्ट लोकक हृदय वज्रहुसँ अधिक कठोर तथा फूलहुसँ अधिक कोमल होइत छनि।

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति।।

से दादाक हृदय हमरा ओहने प्रतीत भेल।

समय पर टेलीफोनसँ कार्यालयमे कर्मचारीक उपस्थितिक सूचना पाबि विलंबसँ अएनिहारकें विलंबक कारण पूछि देथि। उपस्थित कर्मचारीकें कार्यक निर्देश देथि, पूर्वसँ देल कार्यक प्रगति पूछथि। कार्यालयक समयमे ककरहु यदि अत्यावश्यक घरक कार्य उपस्थित भए जाइक तँ कहथिन जे एखन अपन कार्य करए घर चल जाउ। आजुक निर्दिष्ट कार्य सुविधासँ राति वा भिनसर कए कार्यालयकें देखाए देबैक आओर काल्हि जे कार्यालय कहए से कए देबैक।

दादाक पितामह महामहोपाध्याय जयदेव मिश्र म.म. डा. सरझाक मातृक गंधवारिमे खंडवलाकुलावतंस बाबू वासुदेव सिंहक आश्रित छलाह। तें शैशवहिसँ म.म. डा. सरझाक गुरु महामहोपाध्याय उक्त मिश्रजी छलाह। डा. मिश्रक विद्यावंशमे डा. सर झा अबैत छलाह। एहिसँ दूनू परिवारक संबंध तथा अनुबंधक घनिष्ठतो तहिया तहिना छलैक। एहि दूनू परिवारक संबंधक घनिष्ठताक प्रसङ्ग एकटा गप्प दादाक कहल स्मरण भए रहल अछि। 1932ई.मे म.म. डा. सरझाक पत्नीक वैकुंठवास भेल छलनि। स्वदेशी विलायती आंदोलन चरम पर छलैक। डा. सर झा विलायती गोलमे छलाह तथा दादाक परिवार स्वदेशी गोलमे। डा. सर झाक विश्वासपात्र रहने दादाक पिता महामहोपाध्याय मिश्रजी सभ कार्य करैत रहथि मुदा डा. सर झाक घरक अन्नजल मिश्रजी ग्रहण नहि करैत छलाह।

एकादशाह दिन महामहोपाध्याय मिश्रजी ब्राह्मण भोजन हेतु बाजारसँ रसगुल्ला अनने छलाह। म.म. डा. सरझा मिश्रजीसँ कहलखिन जे एखनधरि हम वा हमर धियापुता एहि टीनक स्पर्श नहि कएलक अछि। अहाँ जयकांतकें कहिऔनि जे स्वयं टीनसँ एकटा पात पर जतबा खाए सकथि ताहिसँ अधिके रसगुल्ला अपना हाथसँ एहि टीनसँ बाहर कए एहिठाम हमरा सोझाँमे खाए लेथि तँ हमरा संतोष होएत जे नहि गुरुक बालक तँ गुरुक पौत्र एहि श्राद्धक अवसर पर किछुओ तँ खएलक। अन्यथा आजन्म कचोट रहत जे हमर गुरुक संतान एहि कार्यमे किछुओ नहि खएलक। दादा पिताक आदेश पाबि रसगुल्ला बहार कए भरिपेट खएलनि आ चारि-पाँचटा नहि खाए सकलाह तँ बाहर जाए फेकि देलखिन। डा. सरझाकें एहिसँ बड़ संतोष भेलनि।

दादाक पिता महामहोपाध्याय डा. उमेश मिश्र, म.म. डा. सरझाक समयहिसँ हुनक कौलपत्य कालमे एहि विश्वविद्यालयमे संस्कृत विभागक प्राध्यापक छलाह। प्रसिद्ध शिक्षाविद् तथा उक्त विश्वविद्यालयक तहिया स्वनामधन्य अमरनाथ झा दादाक गुरु तँ छलाहे, दूनूमे पारस्परिक सम्मान ओ वात्सल्य भावो नीक छलनि। डा. अमरनाथ झा अपन पिताजकाँ कुलपति रहितो बी.ए. तथा एम.ए. कक्षामे पढ़ाएब नहि छोड़ने छलाह जाहिसँ छात्र सभक संग संपर्क बनल रहैत छलनि से प्रयागमे हुनका सभक छात्र सभसँ सूनल अछि।

दादा अनेको दिन कहने होएताह जे मैथिली साहित्य पर शोधकार्य करबाक हिनका इच्छा नहि छलनि। अंग्रेजी साहित्यमे एम.ए. कएलाक बाद अंग्रेजी साहित्यक कोनो विषय पर शोधकार्य करए चाहैत छलाह। मुदा पितृवत् शुभचिंतक डा. अमरनाथ झाक विचारसँ मैथिली साहित्य पर शोधकार्य करए पड़लनि। दादाक शोध प्रबंधक प्रसंग दूरद्रष्टा डा. अमरनाथ झाक कहब छलनि जे अंग्रेजी साहित्यक विषयमे कतबो परिश्रमसँ कतबो सुविचारित शोध प्रबंध प्रस्तुत करब भारतीय विद्वानक लिखल रहने उपेक्षा भावेसँ आनदेशक विद्वान् देखत ओ अपेक्षित प्रचार प्रसारो नहि पाओत। दोसर, मैथिली

साहित्य पर कोनो कार्य नहि भेलैक अछि। तें अहाँक शोध प्रबंध चिरस्थायी महत्त्वक होएत, अहाँकें यशस्वी बनाओत। हँ, परिश्रम बेसी करए पड़त। दादाकें एहि कार्यमे परिश्रमक प्राचुर्य एहिसँ आँकल जाएत जे मिथिलाक यात्राक तँ कथे की तीन खेप नेपालो जाए सामग्रीक संकलन करए पड़लैनि।

डा. झा अपन देखरेखमे हिनक शोध प्रबंधक सार संक्षेप (सिनौप्सिस) तैयार करबाए तत्काल अंग्रेजी विभागक अध्यक्ष (इलाहाबाद विश्वविद्यालयक) प्रो. सतीशचंद्र देवकें मार्गदर्शक बनाए कार्य करए कहलथिन। ओकरे सुपरिणाम थिक ई मैथिली साहित्यक इतिहास।

एहि तरहें डा. झा अपन आशीर्वाद तथा प्रयासकें सफल करैत मैथिली साहित्यक विकासमे भविष्णु तथा आत्मीय शोधप्राज्ञ दादाकें तँ यशस्वी बनएबे कएलनि जे परंपरया मातृभाषा मैथिली साहित्यहुक सेवा कएलनि।

एहन दूरदर्शी सरस्वतीक वरपुत्र तथा भविष्णु छात्रक शुभचिंतक विरले विद्वान देखल जाइत छथि जेहन डा. झा छलाह। एतबे नहि, शोधकार्यक अवधिमे कतेको ठाम दादाक शोध आलेख सूनि कहथि–ई पाराग्राफ आगू करू–ई पाराग्राफ पाछू करू, ई अंश पुनः लिखू, ई विषय छूटल अछि। वस्तुतः डा. झा स्वयं हिनक मार्गदर्शक छलाह नामहि लेल प्रो. सतीशचंद्र देव मार्गदर्शक छलाह।

दादा कहने छथि जे शोध प्रबंधमे मैथिली साहित्यकार लोकनिक फोटो देबाक हेतु खर्च आश्रमसँ पचासोटा हाफटोन ब्लौक बनबौने छलाह मुदा डा. झा ओ नहि देबए देलखिन। कहलखिन जे पुस्तककें हल्लुक नहि करू, कोनो गंभीर पुस्तकमे कतहु फोटो देखलिऐक अछि। दादा गुरुक आज्ञा शिरोधार्य कए लेलनि श्रम तथा खर्चक व्यर्थताक दुःख पीबि गेलाह।

डा. झाकें ई गप्प बुझल छलनि जे दादाक पिता म.म. उमेश मिश्रक आदेशसँ हुनक कृतविद्य शिष्य रामनरेश मिश्र (इलाहाबादक निकटहिक कोरवा गामक रहनिहार) दादाक मैट्रिक परीक्षाक समयसँ किछु दिन पूर्व सभ परीक्ष्य विषयक मौखिक परीक्षा लेने छलखिन आओर अपन गुरु दादाक पिताकें कहने छलखिन जे जयकांत नीक अंकसँ प्रथम श्रेणीमे मैट्रिक परीक्षा निश्चय उत्तीर्ण होएताह। तें स्वनामधन्य डा. अमरनाथ झा हिनक भविष्णुता जनैत छलाह। ओना, हिनक उच्च कक्षाक शिक्षाक रहबाक कारणसँ हिनक योग्यता तथा क्षमताक परिचय रहल होइनि।

1948ई.मे प्राच्यविद्या महासम्मेलनक चौदहम अधिवेशन मिथिलेश कामेश्वर सिंहक सत्प्रयासे दरभंगामे आयोजित भेलैक, जकर स्वागताध्यक्ष छलाह पुण्यश्लोक डा. अमरनाथ झा तथा स्थानीय सचिव छलाह महामहोपाध्याय डा. उमेश मिश्र। दादा ताधरि इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे अंग्रेजी विभागक प्राध्यापक भए गेल छलाह। एहि सम्मेलनक तहिया

सदस्यता ग्रहण कए एहि अधिवेशनमे पिताक डेन पुरैत छलाह। एकर किछुए दिनक बाद मैथिली साहित्यक इतिहास अंग्रेजीमे एकवर्षक अंतरालमे दू भागमे प्रकाशित भेलैक। सुधी समाजमे एहि इतिहासक प्रचुर आदर भेलैक।

एही समयमे दादा मैथिली साहित्यिक सद्यः प्रकाशित उपन्ययास सुशीलाक आलोचना लीखि मिथिला मिहिरमे प्रकाशित करौलनि जाहि पर आलोचना प्रत्यालोचना दूनू पक्षसँ होअए लगलैक जे पछाति भुवनेश्वर सिंह भुवनजीक हस्तक्षेपसँ बंद भेलैक। मुदा दादाक वैदुष्यक प्रचार प्रसार एहिसँ नीक जकाँ भेलनि।

2002 ईस्वीमे साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित इलाहाबादमे दादाक लेखकसँ भेंट (मीट द औथर) कार्यक्रममे प्रशासनिक सेवासँ अवकाश प्राप्त दादाक अनुज मान्य रमाकांत मिश्र प्रसङ्गवश विस्तारसँ एकर चर्चा कएने रहथि। तहिया प्रो. रामदेव झा मैथिली साहित्यक प्रतिनिधित्व साहित्य अकादेमीक करैत छलाह। एहि अवसर पर हमहूँ दादाक अनुरोधसँ अवकाश प्राप्तिक बाद गामसँ इलाहाबाद जाए उपस्थित भेल रही।

1950-51क समयमे इलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ मैथिलीक लोकगाथा हिनक संपादन वा विस्तृत आलेख दू भागमे फोक लिटरेचर नामसँ प्रकाशित भेलनि। पहिल भागमे पद्य तथा दोसर भाग गद्यक संकलन भेल छैक जे सुधीसमाज द्वारा समादृत भेल।

प्रशासनक दक्षताक साक्षी अछि हिनक पाँच संस्थाक सचिव पद पर ओहि संस्था सभक अग्रगतिए समृद्ध अभिवृद्धि करब। प्रो. ईश्वरी प्रसाद शोध संस्थान, इलाहाबादक संस्थापक सचिव रहने संस्था सुचारू रूपसँ आगाँ बढ़ौलनि, डा. सर गंगानाथ झा शोध संस्थान पिताक परोक्षमे सचिव पदपर आबि कार्य सम्हारलनि। एहि संस्थाक रजत जयंतीक अवसर 1969ई. भारतक राष्ट्रपति वराह गिरि वेंकट गिरि आयल छलाह–तीन-चारि दिन धरि समारोहपूर्वक उत्सव मनाओल गेलैक, खूब प्रतिष्ठा अर्जित कएलनि पछाति ई संस्था भारत सरकार द्वारा अधिगृहीत भेलैक। चित्रकूटक नव विश्वविद्यालयक स्थापनामे हिनक अविस्मरणीय योगदान रहनि साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक स्वीकृतिक प्रयासमे तात्कालिक भारतक प्रधानमंत्रीक जवाहरलाल नेहरूकें 1964ई.मे मैथिलीक पुस्तक प्रदर्शनीक उद्‌घाटन करबौलनि।

इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी एवं युरोपियन विभागक अध्यक्ष पद पर रहि एतहु प्रशासनक दक्षतासँ विभागकें अभिवृद्ध समृद्ध कएलनि। साहित्य अकादेमीक जखन मैथिली भाषाक प्रतिनिधि भेलाह तँ मैथिली भाषा तथा साहित्य हेतु अनेक तरहक कार्यक्रम, पुरस्कारक पारदर्शिता तथा प्रकाशनमे तत्पर रहलाह।

दादाक विवेकपूर्ण कुसुम कोमल हृदयक परिचय भेटल गंगानाथ झा शोध संस्थान इलाहाबादक एकटा अदना कर्मचारी ज्ञानचंद्र श्रीवास्तवक प्रति निर्हैतुक ममतामे। संस्थाक सरकारी तंत्रक अधीन भए गेला पर एहि व्यक्तिक संग किछु अन्यआय करैत

छलैक। हिनके साचिव्यमे एहि व्यक्तिक एहिठाम नियुक्ति भेल रहैक। तें दादाक एहि व्यक्ति पर ममत्व स्वाभाविके छलनि। हमरासँ एक दिन कहलनि जकर जन्म दिऐक ओकर प्रतिपालनोक भार व्यक्तिकें होइत छैक। ज्ञानचंद्र श्रीवास्तवक प्रति भेल अन्यायक प्रतिविधान ई दिल्लीक शास्त्री भवन जाए शिक्षा सचिवसँ एहि प्रसंग गप्प करब आओर न्याय दिएबैक। एहू व्यक्तिकें संग लए जएबैक।

संयोगसँ शिक्षा सचिव दादाक ट्यूटोरियल कक्षाक छात्र रहथि–दादाकें से संस्मरण नहि छलनि मुदा अधिकारीक द्वारा स्मरण दिऔला पर से स्मरण भेलनि। ओ अधिकारी पहिने छात्रोचित शिष्टाचारक निर्वाह कए हिनक सभ बात सावधान भए सूनि कहलखिन जे हमरासँ जे संभव होएत से प्रयास करबैक। दू-चारि दिनमे अहाँकें अनुकूले सूचना भेटत। ई कार्य तँ पत्रहु देलासँ होइत मुदा अपनेकें व्यर्थ हरानी ओ खर्च भेल अएबामे, तकरे हमरा कष्ट होइत अछि।

एहिना इलाहाबादक निकटक गाम कोरबाक मान्य जे.एन. मिश्र जखन रेलमंत्री कमलापति त्रिपाठीक प्रायवेट सेक्रेटरी भेलाह तँ गुरुसँ आशीर्वाद लेबए इलाहाबाद दादाक घर पर अएलाह। कहलखिन जे हम अहाँक आशीर्वादसँ रेलमंत्रीक सचिव पद पर कार्यरत छी। अहाँकें स्मरण होएत हम अमुक ई.मे बी.ए. कक्षामे अहाँक छात्र रहल छी। हमर योग्य जँ कोनो कार्य हो तँ सेवाक अवसर दी।

दादा प्रसन्नतासँ नीक जलपान करौलखिन–आओर इलाहाबाद विश्वविद्यालयक इतिहास विभागक प्रो. चंद्रप्रकाश झाक भागिन निर्झर जीक बायोडाटा दए बिना प्रमादक कहलखिन जे विपन्न बच्चा छैक जँ मदति कए सकिऐक तँ अनुग्रह मानब आओर सतत आशीर्वाद अहाँकें दैत रहब। जे.एन. मिश्र आश्वासन देलखिन जे ई कार्य अवश्य होएत से वचन दैत छी। देर सबेर भए सकैत अछि। अपने एकर तगादा नहि करब। हमरा निश्चय ध्यान रहत।

लगभग छह मास बीति गेलापर निर्झर जीक धैर्यक बान्ह टूटि गेलनि। एक दिन दादाकें बहुत किछु कटु कहि देलखिन। हुनक घर परसँ आबि हमरहु विद्यापीठमे निराशभेल निर्झरजी समटा बात सुनओलनि। एकाध घंटा रहि चल गेलाह। तावत् दादाक फोन आएल जे जे.एन. मिश्रक फोन ऐखन आएल अछि। निर्झरजीसँ भेंट करएबाक प्रयास करू। आइए हुनका दिल्ली जाए पड़तनि, काल्हि ओतए नियुक्ति पत्र भेटतनि आओर यथासंभव शीघ्र लखनऊ जाए कार्यारम्भ करए पड़तैनि। प्रो. चंद्रप्रकाश झाजीक घर पर ओ नहि छथि। हम अपन चपरासीकें इंडियन प्रेस दिशि दौड़ौलहुँ तँ ओ चंद्रशेखर आजाद पार्कक बाहर पानक दोकान लग भेटि गेलखिन। ओ हमरासँ शुभ समाचार सभ बात बूझि कहलनि जे हमरा एकसरे हुनकर भेंट करबाक साहस नहि होइत अछि। एके घंटा पूर्व हुनका हम बहुत किछु कटु सुनाए आएल छिएनि।

तँ अहूँ चलू हमरा संग। हमरा संग दादाक घर पर जाए हुनक दूनू पएर अपन अश्रुसँ स्नपन करए लगलाह। दादा पहिने हिनका एक प्लेट मधुर देलखिन आओर दिल्ली यात्रा टिकट आरक्षित करौलखिन। हाथ पर पाँच सय रुपया दैत कहलखिन जे निर्दिष्ट स्थान पर मान्य श्री जे.एन. मिश्रक भेंट कए लखनऊक टिकट कटाए लेब परसू लखनऊ कार्यालयमे (डी.आर.एम. औफिस)मे ज्वाइन कए लेब। दिन वेरागन नहि देखए लागब। की एहन उदारलोकक हृदय कुसुम सन कोमल नहि कहबैक।

एहिना अवसर पाबि पाहीटोल–मधुबनीक प्रसिद्ध वैद्य राम झा हरिनन्दन झाक परिवारक चि. चेतनाथ जीक तथा बनगाम-सहरसाक निवासी श्री बमशंकर झाजीकें हिंदी साहित्य सम्मेलन इलाहाबादमे योग्यताक अनुरूप जीविका दिओलखिन। हिनक कोनो दूरहुक संबंधमे ई दूनू व्यक्ति नहि छलाह। बनगामहिक निवासी डा. यमुनाप्रसाद झाकें चित्रकूटक विश्वविद्यालयमे संस्कृत विभागक प्राध्यापक पद पर प्रतिष्ठित कएलनि। बहेरा दिसक एक बढियां जवान झाजीकें (हिनक नाम बिसरैत छी) डा. ईश्वरी प्रसाद शोध संस्थान इलाहाबादमे रात्रिप्रहरी (नाइट गार्ड)मे स्वयं नियुक्ति कएलनि। एकरा सभक हम प्रत्यक्षद्रष्टा छी।

हमर दृष्टिमे दादामे व्यक्तित्वक तथा वैदुष्यक सौरभ तँ छले मुख्य रूपसँ ई संस्था छलाह व्यक्ति नहि। संस्था जकाँ कार्य करबाक शील छलनि।

दादाक पूरा परिवारे सभ दिनसँ सारस्वत उद्यममे तत्पर रहल अछि। पिता महोपाध्याय भेलाह, प्राच्य विद्या महासम्मेलनक दरभंगा अधिवेशनक स्थानीय सचिव भेलाह, मिथिला संस्कृत शोध संस्थान दरभंगाक पहिला निदेशक तथा कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक पहिल कुलपति भेलाह। प्रयाग विश्वविद्यालयमे संस्कृत विभागक लब्धप्रतिष्ठ प्राध्यापक रहि भारतीय दर्शनक अभिज्ञमे अन्यतम छलाह। प्रभूत शिष्य धन अर्जित कएलनि। अध्यापन ग्रंथलेखनहिसँ समय-यापन करैत रहलाह। एहिसभ कार्यक संग मैथिली साहित्यक अभ्युदय हेतु चिंतनशील रहलाह। सभ संतति वैदुष्यक बल अपन उन्नतिक प्रयासमे संलग्न भए सफलता अर्जित कएलक।

बीसम शताब्दी उत्तरार्धमे लगभग 1950 ई.मे दादा अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समितिक स्थापना कए मैथिली साहित्यक बहुत कार्य कएलनि। आरंभमे पिता महामहोपाध्याय डा. मिश्र एकर अध्यक्ष छलाह तथा दादा सचिव। यात्रीजीक चित्रा कविता संग्रह, प्रो. उमानाथ झाक रेखाचित्र (कथा संग्रह) कुमार वैद्यनाथ चौधरीक बच्चा सभक शिक्षाप्रद उपयोगी पुस्तक ईशोपशतक अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद नेपालसँ आनल। मैथिली साहित्यक पांडुलिपिक संपादन प्रकाशन स्वयं कएलनि। पं. रामाश्रय झा (मधेपुरक निकट-खजुरा ग्रामवासी) इलाहाबाद विश्वविद्यालयक संगीत विभागक मैथिलीमे लिखल संगीत विषयक पुस्तक तथा महिला शिक्षाक हेतु गृह विज्ञानक पुस्तक सभक प्रकाशनतँ

ई समिति करबे कएलक जे पाक्षिक पत्रिका 'मैथिली समाचार'क प्रकाशन कए देशभरिमे डाक द्वारा वितरण करैत रहल। कतएसँ कोन मैथिलीक पुस्तक वा पत्र प्रकाशित भेल वा भए रहल अछि, के कोन विधाक रचना कएल अछि–एकर विवरण रहैत छल। मिथिला मैथिलीक प्रसंग कतए के बाजि रहल छथि–की के कए रहल छथि–एकर सूचना संग मिथिलाक्षरक शिक्षाक हेतु उपयोगी पुस्तकक प्रकाशन सेहो करैत छल। शिमलाक भारतीय उच्च अध्ययन संस्थानसँ अनुदान पाबि मैथिली बृहत् कोशक निर्माण तथा प्रकाशनमे संलग्न छल, मातृभाषा मैथिलीमे आरंभिक प्राथमिक शिक्षा होइक तदर्थ हाइकोर्ट धरि ई समिति विजय पओलक। एहि कार्य हेतु शिक्षक तथा अभिभावककें उद्‌बोधन-जागरण हेतु दादा उक्त समितिक अध्यक्षक रूपमे मिथिलांचलमे कतोक गामक पदयात्राक अभियान चलाओल। इएह संस्था मैथिलीक पुस्तक प्रदर्शनी दिल्लीमे आयोजित कए तात्कालिक भारतक प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरूक ध्यान मैथिली भाषा तथा साहित्यक प्रति आकृष्ट कएलक ओकर सुपरिणाम भेल साहित्य अकादमीमे मैथिलीभाषाकें स्थान भेटलैक। तें हम पूर्वहिं कहलहुँ जे ई व्यक्ति नहि संस्था छलाह। तत्पर भए मनोयोगसँ कोनो संकल्पित कार्य करबाक हिनका शील छलनि। ई समिति महिला सभकें शिक्षित करबाक हेतु गृह विज्ञानक परीक्षोक संचालनक उपक्रम कएलक, जकर मिथिलाक हृदयस्थली मधुबनीमे केंद्रक स्थापना भेल। मुदा आठ-दश वर्षक बाद लोकरुचिक अभावमे एहिमे शिथिला आबि गेलैक। ईहो बूझब एतए आवश्यक अछि जे तहिया महिला शिक्षाक एतेक प्रचार प्रसार नहि छलैक।

एहि समितिक पूर्वमे कहि आएल छी जे म.म. डा. मिश्र दादाक पिता अध्यक्ष छलाह। हुनक परोक्ष भेला पर हम जहिया प्रयाग गेलहुँ दादा अध्यक्ष तथा कुमार वैद्यनाथ चौधरी एहि संस्थाक सचिव छलाह।

दादासँ सुनल एकटा गप्प मन पड़ैत अछि जे हिनक पिताक जन्मकुंडलीसँ हिनक जन्मकुंडली सर्वांशतः मिलैत छलनि। ज्योतिषशास्त्र कहैत छैक जे एहन जातक अपन पिताक उत्कर्ष अपनामे समाहित कए लैत छैक। संभव छैक ईहो कारण भेल होइक जे दादाक लोकोत्तर क्रियाकलाप रहल हो।

एक बेर जखन ई हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयागक प्रबंध मंत्री रहथि, पटना रेडियो स्टेशनक प्रसिद्ध अधिकारी लोहा सिंह एहि सम्मेलनमे भाषण करए आयल रहथि। सभामे दादाक बगलमे हमहूँ बैसल रही। लोहा सिंह मैथिलीकें बोली मानैत छलाह। भाषणमे बजलाह जे 'ग्रियर्सनसँ लए डा. जयकांत मिश्र धरि मैथिल कें भाषा कहैत आबि रहल छथि किंतु हम एकर आजीवन विरोध करैत रहब'। दादा कने तमतमाएल जकाँ बूझि पड़लाह। हम कहलिएनि जे आब तँ अपनेकें मधुर खुआबए पड़त। मैथिली भाषाक नेता तँ अहाँकें विरोधियो मानैत अछि। दादा शांत भए कहलनि जे एहि भाषणक ईहो व्याख्या भए सकैत

छैक। मुदा ई व्यक्ति धरि अछि मैथिलीक परम विरोधी।

दादा अध्ययनकालहिसँ P.E.N. संस्थाक सदस्यता ग्रहण कएने छलाह। थियोसोफिकल सोसाइटी औफ इंडिया शाखाक मुख्यालय बंबईमे स्थापित छल। एहि संस्थाक अध्यक्षा छलीह आयरिश महिला सोफिया वाडिया जे P.E.N.क सेहो संचालिका छलीह। मैथिली भाषाक उन्नति हेतु दादा एहि संस्थासँ संबद्ध भेल छलाह। संस्थाक अध्यक्षासँ पत्राचार द्वारा बहुत कार्य करबाक उत्साह पाबियो कए लखनऊ अधिवेशनमे भाषण कएलाक उपरांतो विशेष मैथिलीक उन्नति देखि किछु मंद पड़ि गेलाह से कतेक बेर गप्पमे कहने छलाह। पी सँ एतए पोएट एंड राइटर्स–ईसँ एडिटर एसेइस्ट तथा एनसँ नोभेलिस्ट लेल जाइत छल।

एहि तरहें हम देखैत छी जे दादा मैथिलीक हेतु समर्पित भए संघर्षरत रहलाह विपरीत परिस्थितिमे धैर्यच्युत कखनो नहि भेलाह–व्यक्ति जकाँ नहि संस्था जकाँ संलग्न भए कार्य करैत रहलाह। दयालुता औदार्य रहने कतेकोकें जीविका प्रदान कएलनि। प्रशासनक प्रवीणतासँ संस्था सभक उन्नतिमे लागल रहलाह। संस्कृतमे एकटा पद्य छैक जकर अमल ई जीवनमे करैत रहैत रहलाह। उखारलकें रोपब, कुसुमितकें चयन करब, लघुकें संबर्धन करब, शुष्क लता तथा काँट बला लताकें बाहर फेकि देब, म्लान लताकें सेक कए हरियर करैत, उग्रकें नम्र करब, नत व्यक्तिकें उठाएब, संगठनकें फुटका कए राखब ई मालाकार जकाँ कए मनहि मन प्रसन्न रहैत छलाह।

उत्खातान् प्रतिरोपयन् कुसुमितांश्चिन्वन् लघून्वर्ध्यत्
शुष्कान् कण्टकिनो बहिर्निरसयन् विश्लेषयन् संहतान्।
उग्रान् प्रोन्नमयन् नतान् समुदयन् म्लानान् भुहुः सेचयन्
मालाकार इव प्रयोग निपुणो राजा चिरं नन्दिति।।

एहिठाम जहिना राजा प्रशासनपटु होइत छथि तहिना लोकोत्तर व्यक्तिओ होइत छथि। तें हिनका प्रसंगमे हम ई पद्य उद्धृत कएल अछि।

किछु वैयक्तिक–1980 ई.मे हमर जेठ बालक प्रथम श्रेणीमे नीक अंकसँ इंटर परीक्षा उत्तीर्ण कएने छलाह। हमरा कैडर पोस्ट रीडर पद पर साक्षात्कार द्वारा पदोन्नति भेल छल।

दू टा पूजा सत्यनारायण भगवानक हम कएने छलहुँ। डा. मिश्र स्वयं दम्पति आबि पूजाक पौरोहित्य कएलनि, कथावाचन कएलनि आओर आदेशक स्वरमे कहलनि जे पुरोहितकें भोजन कराओल जाइत छैक से तरहुत नहि करू चूड़ा दही नोन मरचाइ आ तरकारीक इंतजाम करू। पूजाक हेतु फल फूल दूबि बेलपात आदि सेहो छलाह–ई छल हमरा प्रति हुनक आत्मीयता।

मो. 9431473683



बिसबिस्सी

एहि स्तम्भक अन्तर्गत एखन लिखल जा रहल व्यंग्य रचनासँ पाठकवर्ग कें दरस-परस करयबाक अछि। एतय प्रस्तुत अछि परिचित लेखक आ वैज्ञानिक योगेन्द्र पाठक वियोगीक आरक्षणक अर्थशास्त्र। सरकारी तंत्रमे आरक्षणक एहिसँ नीक विश्लेषण की भ' सकैछ। तकरा संग मैथिलीमे नव-नव मुदा समधानल डेगें आबि रहल विभूशेखर झाक किछु हमरो सुनियौ। विभूशेखरजी अवकाशप्राप्त प्राध्यापक छथि। कवि-कथाकार महेन्द्रजीक बहन्ने, हुनक कविताक बहन्ने बहुत रास नव तथ्यक उद्‌भेदन ई अपन लेखमे कयलनि अछि।

आरक्षणक अर्थशास्त्र

योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

आर्थिक आधार पर आरक्षण लागू भ' गेल। एखन तक पिछड़ा, अतिपिछड़ा वर्गक आ आदिवासी वर्गक जतेक आरक्षित पद लेल आवेदन अबैक ताहिमे बेसी तँ ओहिना योग्यताक आधार पर छँटा जाइत छलैक, ओहुना बहुत कमे उमेदवार राजनैतिक संरक्षण प्राप्त रहैत छलाह। कतेक बेर पोस्ट खालिये रहि जाइत छलैक। मुदा एहि आर्थिक आधार पर आरक्षणमे उमेदवार सब योग्यताक आधार पर छँटै बला नहि, संगहि जे जतेक योग्य से तेहने दरिद्रभंजन तें कोनो ब्योतें ककरो छाँटब कठिन छलैक। तखन की कएल जाए? मुदा धन्य कहू सरकारी बाबू लोकनिक तीक्ष्ण बुद्धिकें, समस्याक समाधान ताकिये लैत गेलाह।

राज्यक एकटा सरकारी विभागमे 10 टा पद लेल वैकेन्सी बहरेलैक, आर्थिक आधार पर आरक्षित वर्ग लेल एकटा पद रहैक। पदो एहन जकरा लेल इन्टरव्यूक कोनो गुंजाइस नहि। प्रारम्भिक चयन लेल लिखित परीक्षा लेल गेल। तकर बाद छँटनीक जोड़-तोड़ शुरू भेल।

चयन समिति लग छँटैत छँटैत पाँच टा उमेदवार बचि गेलखिन। आगू छँटबाक कोनो आधार नहि छलैक। सब उमेदवार विभिन्न जातिक, आर्थिक पिछड़ापन के सब मानदण्ड के आधार पर योग्य आ राजनीतिक रूपें सेहो समर्थ। सबहक पौआ मजगूत। लिखित परीक्षाक अंक समान। कोनो नियम एहन नहि भेटि रहल छलनि जाहि द्वारा ओहि पाँच मेसँ एकटा कए राखल जाए आ बाकी चारिटाकें छाँटल जाए।

अन्तमे बाबूमंडलीसँ एक गोटे मीटिंगमे बजलाह 'मनरेगा स्कीममे लोककें मात्र सौ दिनक नोकरीक गारंटी रहैत छैक आ सब खुसी अछि ओतबेमे'।

दोसर एहि अनटोटल बात पर कने खौंझाइत बजला 'एतए मनरेगा स्कीमक कोन काज? अनेरे समय नष्ट करैत छी, किछु सार्थक बाजू'।

तेसर टीप देलखिन 'एहि पदमे दिहारी मजूरीक कोनो प्रावधान नहि छैक'।

पहिल बाबू कोनो प्रकारें हतोत्साहित नहि भेलाह। ओ आगू अपन प्रस्ताव रखलनि 'हमर विचार जे पाँचोकें नियुक्ति पत्र पठाओल जाए। प्रत्येक व्यक्ति सालमे मात्र तेहत्तरि दिन काज करताह। ओतबे दिनक वेतन लेताह। तकर बाद ओ स्वतंत्र छथि, जे करथु। लीपइयर के दिन ओहि विभागमे काज बन्द रहतैक। सरकारी सेवाक सब सुविधा तथा अवकाश प्राप्तिक समय भेटद्द बला लाभ सेहो पाँच भागमे बाँटल जाएत।'

ई तँ बूझू शताब्दीक सबसँ पैघ क्रांतिकारी प्रस्ताव छलैक। एहि प्रस्ताव पर बहुत बहस भेल मुदा पहिल बाबूकें अपना पर आ हुनक संरक्षक राजनीतिक नेतृत्व पर बहुत विश्वास छलनि। ओ कहि देलखिन 'यदि हमर बात पसिन्न नहि हो तँ विभागीय मंत्रीजीसँ विचार पूछि लेल जाए'। मंत्रीजीक नाम आबि गेलासँ आन सब अपन विरोध तत्काल समेटि लेलनि आ सब मिल कए मंत्रीजी लग प्रस्ताव रखलनि।

एहन क्रांतिकारी समाधानसँ मंत्रीजी सेहो कने घबरेलाह। डर छलनि जे अनेरे पब्लिक इन्टरेस्टक लिटिगेसनमे सरकारकें बेइज्जती ने होइक। ओ अपना पर एकर दोष नहि लेबए चाहैत छलाह। बात चल गेल राजनीतिक नेतृत्व लग। ओ तँ बहुत खुसी भेलाह जे एके पदमे अनेककें रोजगारक जोगार लागि गेलैक तें शीघ्रे बेरोजगारीक समस्याक पूर्ण समाधान भेटिए जाएत। ओ अपन स्वस्ति द' देलखिन। लिटिगेसनक चिन्ता हुनका नहि छलनि।

अस्तु, एहि तरहें नियुक्ति पत्र पठा देल गेल। पाँचो उमेदवार खुशी भेलाह। ओ सब अन्त समयमे भेट बला ग्रैच्विटीक बीस लाखक अपन अपन चारि लाखक हिस्सा पर मोंछ पर ताव देब' लगलाह। संगहि खुसी ईहो जे सरकारी ऑफिसमे एक बेर घुसि गेला पर अनेक तरहक दलालीक काज सेहो भेटबे करतनि। जे जतेक होसियार ओ ओतेक कमा सकैत छल। ओहुना वेतनसँ ककर गुजर चललैकए? कतेक नोकरीमे सालक साल वेतन नहिए भेटैत छलैक तें की लोक नोकरी छोड़ि दैत छलैक? सब ज्वाइन करबाक मोन बना लेलनि।

मुदा एकटा समस्या आबिए गेलैक।

पाँचो उमेदवार अपन नियुक्ति पत्र ल' कए पहुँचि गेलाह कोर्ट। मुद्दा ई नहि जे एहन नोकरी पसिन्न नहि छनि। हुनका सबकें ई नव प्रयोग पसिन्न छनि, तिहत्तरि दिनक नोकरी सेहो मंजूर छनि, कारण बैसलसँ बेगार भला, मुदा पैघ समस्या छैक जे सालक पाँचटा टुकड़ीमे छुट्टीक संख्या समान नहि छैक। अक्टूबर-नवम्बरक समय जे काज करताह हुनका दुर्गापूजा-दिवाली-छठि सबके बहुत रास छुट्टी भेटतनि मुदा जून-जुलाइ मासमे काज केनिहार लेल कोनो छुट्टी नहि। विद्वान जजसँ प्रार्थना कएल गेल जे एहि समस्याक समाधान करथु।

जज बेचारे की करितथि? ओ संबंधित विभागकें नोटिस पठा देलखिन। विभागमे फेर एहि विषय पर माथापच्ची भेल। फेर समाधान ताकल गेल जे पाँच सालक भीतर सब गोटे चक्रीय रूपें सालक विभिन्न खंडमे काज करताह, पहिल वर्ष जे जनवरीमे योगदान देथिन तिनका अगिला वर्ष मार्च खंड भेटतनि, एहिना अवधि घुसकैत रहतैक, जाहिसँ पाँच सालक अन्तमे सब गोटे एके समान छुट्टीक उपभोग क' लेताह।

जज अपन फैसला सुना देलखिन। सब गोटे खुसी खुसी नोकरी पर योगदान केलनि।

राजनीतिक नेतृत्वकें ई फर्मूला ततेक पसिन्न पड़लैक जे आब एके पद पर दस बीस व्यक्तिक नियुक्ति होमए लागल। सब खुसी। बेरोजगारीक समस्या ओहिना विलुप्त होमए लागल जेना चैत मासक ओस। मुदा फेर एकटा पेंचमे सब किछु फँसि गेलैक।

किछुए दिनमे नवनियुक्त लोक सबकें बुझबामे आबि गेलैक जे नोकरीमे छुट्टिए जकाँ आमदनीक सीजन सेहो होइत छैक। किछु मास अगहनी जकाँ जेना कि मार्च जतए बेसी बिल पास, बेसी आमदनी आ किछु अन्य मास सुखार जकाँ जखन उपरी कमाइ किछु नहि। मुदा एहि मुद्दा पर कोर्ट जाएब कठिन छलैक। उपरी कमाइक चर्चा कोर्टमे कोना कएल जाए?

फेर सब अपनामे मिल बैसि राजनैतिक स्तर पर एकर समाधान ताकए लगलाह। नेता सबकें अपन समस्यासँ अवगत कराओल गेल आ हुनका समाधान सेहो बता देल गेल। नेता लोकनि अपन सर्वोच्च नेतृत्व लग एहि समस्या आ ओकर समाधानक चर्चा केलनि। बस, सरकार नियम बना देलकै जे सालक बारहो मासमे समान भावें बिल पास कराओल जाएत। चैतक अगिलग्गी हो कि भादवक बाढि, लोककें मुआवजा अपना समयेसँ पार एला पर भेटतैक। ठीकेदार सबकें सेहो पेमेंट किस्ते पर देल जेतैक जाहिसँ प्रत्येक मासक सरकारी खर्च समान राखल जा सकए।

आब राज्यमे कोनो समस्या नहि रहलैक। एही फरमूलासँ अनारक्षित आ अन्य आरक्षित वर्गमे सेहो नियुक्ति होमए लागल।

एहन क्रान्तिकारी प्रयोगक खबरि केन्द्रीय नेतृत्वकें सेहो लगलैक। सब राज्यक चीफ सेक्रेटरीक मीटिंग बजाओल गेल आ नव क्रांतिकारी प्रयोगक जानकारी देल गेल। सबकें आश्चर्य लगलै जे बेरोजगारीक समस्याक एहन सरल किन्तु क्रांतिकारी समाधानक विचार पहिने ओकरे दिमागमे किएक नहि एलैक। अस्तु, सम्पूर्ण देश एहि सूत्रक प्रयोग करए लागल।

बेरोजगारीक समस्या समूल नष्ट भ' गेल। आ देशमे शांति सेहो पसरि गेल।

मो. 9831037532



किछु हमरो सुनियौ

विभुशेखर झा

कवि/कथाकार सभ मन-दुक्का होइत छथि। सभहक मनमे पैसि-पैसि ओकर मनोभावक आकलन क' अपन लेखनीसँ कागतकें रंगैत रहताह। जेना माय अपन संतानक संवेदनाकें भाँपि लैत छथि, जेना शिल्पी पाथरमे छिपल मूर्त्तिकें अकानि लैत छथि। तें कहल गेल छैक–'जतय ने जाय रवि, ओतय जाय कवि'। पता नहि कोनो काज-रोजगार रहैत छनि कि नहि। हाट-बाजार, कोर्ट-कचहरी, दागदर-वैद्य आ परिवारक नोन-तेलक ओरिआओनोमे कोनो-ने-कोनो नोछार खोजबाक प्रयासमे लागल रहैत छथि। हमरो एक गोट अग्रज आ मित्र छथि डा. महेन्द्र जी। हम जखन कखनो हुनका ओहिठाम जाइत छी, ओ किछु-ने-किछु लिखा-पढ़ी करिते रहैत छथि। छोट सन दरबज्जा पर तीन चारिटा कुर्सी गेंटल आ एकटा छोट सन चौकी पर कागत सब छिड़िआएल-बितिआएल देखैत छी। एक गोट कुर्सी पर बैसल रहताह आ चौकीकें टेबुल बूझि ओहि पर अपन कलाकारी करैत रहताह। जखन केओ पहुँचैत छथि तँ ओ हाँ-हाँ गेंटल कुर्सीमेसँ कुर्सी निकाल' लगताह आ प्रेमसँ मुँह दुसैत (आउ-आउ) स्वागत करताह। ठीक-ठाक समाचारक बाद मीठ-मीठ गप्प आ अनेको चर्चा होइत रहत आ ओ सचर श्रोता जकाँ गप्पकें ठेकनाबैत रहताह। फेर चाह तँ कम्पलसरिये बूझू। किएक तँ आहट पबितहि चाह भीतरमे चढ़ि जाइत छैक। बगलमे खिड़की पर एक गोट पुरनका रेडियो, लगैत अछि जेना सासुरसँ भेटल होनि, पर पुरनका गीत सब बजैत रहत आ ओ ओहि धुन पर मूड़ी हिलबैत रहताह। शास्त्रीय-संगीतक धुन पर कनेक बेसिये जोरसँ। कतेक कहब! हुनक सादगी देखि केओ प्रभावित भ' जाइत छथि। परंच पांडित्यमे तेहने तीख आ धरगर। ठोकि-ठोकिकें गप्प बाजब, ध्यानसँ ककरो सुनब, जुनि कोनो प्रसंग किएक नहि होउ। अथाह सागर जकाँ शान्त, निश्चल, सब हिलोड़िकें अपनामे समाहित करैत धीर, गंभीर छथि हमर डा. महेन्द्र जी अपन नामक सार्थकताकें सिद्ध करैत। गायक एहेन जे मैथिलीक कोना टा मंच हिनकासँ बाँचल नहि जत' हिनका सम्मानित नहि कएल गेल होइ। एहन विवेकी, मिलनसार, सहृदय आ परोपकारी व्यक्तिक सम्पर्कमे आबि नेहाल भ' गेलहुँ। पहिल बेर सहरसा कॉलेजक मंचसँ हिनक मधुर आ उड़ियाइत स्वर लहरी सुनि मन प्रफुल्लित भेल छल। फेर चिह्न-पहचिह्न पक्का भेल। परंच जिनगीक भाग-दौड़मे उलझिक' रहि गेलहुँ आ रिटायरमेंटक बाद आपकता आओर बढ़ि गेल। मातृभाषा 'मैथिली'सँ सिनेह पहिनहिसँ छल, सेवा करबाक प्रेरणा हिनकहिसँ भेटल। समय-समय पर टोक-टाक करैत मनोबल बढ़बैत रहलाह। हमरो लिलसा किछु लिखबाक लेल जागि उठल परंच शुरू कत'सँ करी फुरिते नहि छल।

हमरा शब्द-कोषमे शब्दक अकाल आ भाषा साहित्यसँ दूर-दूर तक परिचय नहि आ ने साहित्यिकीक कोनो अनुभव। किएक तँ हम सदति विज्ञानसँ जुड़ल रहलहुँ आ विज्ञानक मूलभूत सिद्धांत 'प्रयोग-निरीक्षण-निष्कर्ष'मे उलझल जिनगीक वास्तविक आनन्दसँ कोसो दूर। तें विस्तारित व्याख्या लिखब हमरा सन अनाड़ीक लेल संभव नहि आ ने कोनो विषय-वस्तु सुझैत छल लिखबाक लेल। मन पर बहुत जोर देला पर सामने ठाढ़ छलाह डा. महेन्द्र जी। परंच हिनक व्यक्तित्वक लम्बाइ, चौड़ाइ आ ऊँचाइ देखि हिम्मत नहि भ' रहल छल। परंच हमर लिलसा बेर-बेर धिक्कारैत हमरा उकसाबैत रहल। ओहि समय डा. महेन्द्र जीक कविता पढ़बाक सौभाग्य प्राप्त भेल। बेर-बेर पढ़लाक उपरांत विश्वास घनीभूत होमय लागल। उपरांत, किछु लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान डा. ललितेश मिश्र, डा. विनय कुमार चौधरी आ केदार कानन जीक पुस्तक सेहो हस्तगत भेल आ सबकें सरसरी निगाहसँ पढ़ि गेलहुँ। डा. ललितेश जीक कथाक भाव चंचल परंच शब्दक शालीनता आ वाक्यक विनम्रता लाजवाब, गुदगुदी लगब' बला। डा. विनय जीक शब्द आ वाक्य दुनू प्रहार कर' बला परंच भावमे व्यापकताक साम्राज्य। कानन जीक भाव गंभीर परंच शब्द आ वाक्यक प्रवाह संयमित, ठुमकैत, लरजैत, लजायल द्विरागमनक कनिया जकाँ। आ हमरा लिखबाक सूत्र सभ हाथ लागि गेल आ हमर प्रयास ससरय लागल। सोचलहुँ जे माथ फुटतैन्हि तँ 302 दफामे नहि जेताह, नीक लोक छथि। कान कटबाक हमरा औकाते नहि। हँ! नाक कटत तँ हुनक शिष्य आ मित्र-बन्धु खर-दूषण जकाँ युद्ध ठानि देताह। परंच कान पकड़ि लेब तँ भलमानुष जकाँ माफ जरूरे करताह। तें डा. महेन्द्र जी आ हुनक कविताकें हम जतेक बूझि सकलहुँ सभक समक्ष प्रस्तुत एकटा व्यंगात्मक आलेख–'किछु हमरो सुनियौ'।

डा. महेन्द्र जी कवि, कथाकार, गायक आ संगहि गीतकार सेहो एक नम्बर के। हिनक कविता, कथा मानवीय संवेदनाकें सद्यः स्पर्श कर' बला, यथार्थपरक आ जिनगीक सभ तीत-मीठक अनुभूति करब' बला होइत छनि। लिखबाक काल लगैत अछि जे ई अपन अस्तित्वकें बिसरि ओहि परिदृश्यमे अपनाकें समाहित करैत बह' लगैत छथि। आ तें कविता कथा जीवन्त आ प्राणवान भ' जाइत छैक। सबसँ पैघ बात ई जे ई भूत, वर्त्तमान आ भविष्य तीनोकें संग ल' क' चलैत छथि तँ कविता प्रवहमान लगैत छैक आ पाठक सभ ओहि प्रवाहमे उबडुब करैत चलायमान भ' जाइत छथि। मार्मिकसँ मार्मिक तथ्यकें हँसिक' उजागर करबामे हिनका महारत हासिल छनि। प्रकृतिसँ ओकर विशेषता आ रस एना निचोरि लैत छथि जेना फूलसँ मधुमक्खी मधुकें। ओतबे नहि, पुरनका आ नवका सांस्कृतिक उठा-पटक आ एकसँ दोसर जेनेरेशनक बीच कम होइत सिनेह, ममता, आदर आ सदाचार दिश सेहो भृकुटि तनने रहैत छथि आ ओकरो आकलन आ उद्‌भेदन करबामे कोनो हिचकिचाहटि

नहि। 'सच' प्रकट होएबाक चाही से हिनक संधानमे रहैत छैक। समय आ वयसक विवशताकें रेखांकित करबामे सेहो पाछू नहि रहैत छथि। सामाजिक विद्रूपता आ निरंकुशताकें उघाड़ करबामे कोनो कसमसाहटि नहि। असंभवोकें संभवक दृष्टिकोणसँ देखब हिनकर व्यक्तित्वक ऊँचाइकें आसमानोसँ ऊपर पहुँचा दैत छैक। कविताक प्रवाहमे कोशीक चंचलता, पहाड़ी नदीक उच्छृंखलता आ गंगाक घुमरैत गंभीरता दृष्टिगोचर होइत अछि। जहिना पाथरसँ टकरा-टकरा क' कल-कल ध्वनि करैत पानिक प्रवाह 'जलतरंगक' ध्वनिक आभास करबैत छैक, तहिना कविताक लय आ भाव-भंगिमा समाजक विभिन्न अवरोधसँ टकरा क' प्रेरणादायक संदेश उत्सर्जित करैत छैक। शब्दक चयन आ संयोजन विलक्षण आ अप्रतिम। आरोह आ अवरोहक बीच शास्त्रीय संगीतक स्वर-लहरी जकाँ खिलखिलाइत। भावक प्रगाढ़ता अतुलनीय। माय, मातृभाषा आ मातृभूमिसँ जुड़ल लोक हमरा बड्ड पसिन्न। आ ई ओकर चरमोत्कर्ष पर विराजमान छथि।

डा. महेन्द्र जीक एक गोट कविता-संग्रह 'मेटायल पता पर अबैत चिट्ठी'कें कतेको बेर पढ़ने होएब आ जतेक बेर पढ़लहुँ ओतेक तरहक अर्थ बुझना गेल। मेटायल पता पर चिट्ठी कोना औतेक, एहि प्रश्नक उताराक लेल पाठक सभ पुस्तकमे उबडुब करैत ओकर मंथनमे निमग्न भ' जाइत छथि। जहिना समुद्र-मंथनसँ कतेको तरहक रत्न बाहर भेल छल ओहिना पुस्तकक मंथनसँ सामाजिक सरोकारक बहुत रास यक्ष-प्रश्न ठाढ़ भ' जाइत छैक आ पाठकगण ओहिमे उलझिक' रहि जाइत छथि। प्रश्नक समाधानक लेल चर्चा आवश्यक बूझि हम ओहि दिस आगू बढ़ैत छी। राष्ट्रपिता गाँधी जीक तीन टा बानर आँखि झपने, कान मुनने आ मुँह दाबने सभ कियो जनैत छी जे 'बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, बुरा मत बोलो'क संदेश दैत खूब चर्चित भेल। परंच ई चारिम बानर कत'सँ आएल पता नहि। लगैत अछि चारिम बानर 'बुरा मत करो' किंचित हुनक बात नहि सुनलक आ ओ हारिक' कवि जीकें सपनामे आबि कहलकनि जे चारिम बानरकें अहाँ अप्पन कविताक माध्यममे उद्घाटित करू आ आक्षेप इहो देल गेल जे चारिम बानर उज्जर-उज्जर परिधानमे चकभाओर मारने अपन लपलपाइत जीहसँ सभकें डँसैत रहत आ ओकर विष पसरि-पसरि क' समाजक संस्कृति आ सभ्यताकें नष्ट करबाक भरिसक प्रयास करैत रहत। इहो कहैत छथि जे ई चारिम बानर अपन ओजपूर्ण भाषण आ कूटनीतिक चपलतासँ शहीदक शोणितकें सुखा क' अपन निहित स्वार्थक एजेंडामे सभकें लपेटबाक प्रयास करत। गाँधी जीक तीन टा बानरक स्वच्छ संदेश उलटवासीमे फँसि गेल। चारिम बानर बुझलक जखन हमर कुकृत्य आ अनाचार कियो देखबे-सुनबे नहि करत तँ बाजत कोना। कोनो रोक-टोक नहि। एकदम छुट्टा। जे मन होएत सएह करब। आ गाँधी जीक बेसी सिद्धांत फाइले तक सीमित रहि गेल। नियम-कानूनकें मानवतासँ समन्वय रहबाक

चाही से कम होइत गेल। समाज आ देशक व्यवस्था चरमराइत गेल। महेन्द्र जीक चारिम बानर गाँधी जीक तीनू बानर पर भारी पड़ि गेल छैक। अभिव्यक्तिक स्वतंत्रताक नाम पर किछु अराजक तत्व देशक अखंडता पर प्रहार क' रहल छैक। संविधान आ तिरंगाक आड़िमे किछु देशद्रोही आ गद्दार देशकें हिरोसिमा आ नागाशाकी बनयबाक प्रयासमे सक्रिय छैक। तें चारिम बानरक मादे देशक प्रहरीकें एहि समस्याँ दू-दू हाथ करबाक महेन्द्र जीक संदेश अति सराहनीय। एतेक गूढ़ आ गंभीर संवेदनाकें उजागर क' समाजक समक्ष एकटा उदाहरण प्रस्तुत केने छथि। जे समाजक सुव्यवस्थाकें तोड़ि-मरोड़िकें घुन जकाँ पिसबामे लागल छैक, ओकरा नांगट करब जरूरी छल। एहि साहस आ दूरदर्शिताक लेल कविकें धन्यवाद। ओना चारिम बानर हिनकर मोनक कल्पना आ कि गाँधी जीक सपना, से वैह कहताह।

कोनो बातक गंभीरतामे किछु रहस्य छिपल रहैत छैक, जकरा उजागर करबाक विवेक होएबाक चाही जे डा. महेन्द्र जी अपन कवितामे सदति करैत रहैत छथि। कविता 'मेटायल पता पर अबैत चिट्ठी'क किछु पंक्ति पर दृष्टिपात करू, ई लिखैत छथि–

हम स्टेच्यू/आँखि रहैत नहि देखा सकै छी आँखि/तामसे बिसभेर, डाँटियो नहि सकै छी ककरो.../संवेदहीन सम्बन्धक कड़ीमे जकरल काटि रहल छी सजा अपनहि लोकक बीच।

आजुक परिप्रेक्ष्यमे कतेक करूवाहटि भरल सत्य। लगैत अछि जेना सभक मोनमे ढुकि-ढुकि ओकर अन्तरात्माक कसमसाहटिक अनुभव कए हुनक अकुलाइत, छटपटाइत मनोवेदनाकें उघाड़ करबामे कोनो कसरि नहि छोड़लनि। आन लोकक बीच सजा काटब पीड़ादायक आ जखन अपने लोक पीड़ा दैत छैक तखन असहनीय पीड़ा, जे मनुक्खकें भीतरसँ तोड़ि दैत छैक। हिला दैत छैक ओकर अस्तित्वकें आ ओ जीविते मुर्दा भ' जाइत छैक। आजुक पीढ़ीक ई अभिशाप सभ केओ भोगि रहल छी। परंच बजबाक साहसि केकरो-केकरोमे विद्यमान्। 'स्टेच्यू' तँ सभ बुझैत छी परंच चलैत-फिरैत, देखैत-सुनैत, कानैत-खिजैत, बजैत-भुकैत स्टैच्यू संभव नहि, परंच ई धरिया फहराक' कहैत छथि जे एहन स्टैच्यू घर-घरमे टुकुर-टुकुर, मुलुर-मुलुर ताकि रहल छैक, जे समय अएला पर सभ कियो अनुभव करैत छैक आ करैत रहताह। समय, परिस्थिति आ सम्बन्धक संवेदनहीनता मनुक्खकें निचोड़ि रहल छैक आ सभ कियो एक दोसरक मुँह ताकि हाथ-पर-हाथ ध' क' बैसल छी। सोचबाक बात ई जे एहि विकट समस्याक समाधानक लेल हम केकर बाट जोहि रहल छी? एकर समाधान सभकें मिलजुलिक' करय पड़त, एक गोटेक बसक बात नहि। एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीक बीच मृत-प्राय होइत मान, सम्मान, आदर, सदाचारकें पुनर्जीवित करबाक लेल एक दोसराक बीच श्रद्धा आ विश्वास बढ़ेबाक जरूरति अछि।

गामक कण-कणमे रचल-बसल हिनक स्मृतिसँ कतेको स्वाद आ सुगन्धिक अनुभूति हिनक कविता, कथामे समाहित भेटैत छैक। जेना, हिनका बकेन महिषक पीयर-पीयर छाली आ पीयर-पीयर मकइक रोटी ओहिना आनन्दित करैत छैक जेना नून आ पियाजुक संग सोहारी। माछ ओतबे स्वादिष्ट जतबा तिलकोर आ अड़िकोंच। सूट-बूटसँ सुसज्जित लोक सभकें देखि जतेक प्रसन्न होइत छथि ततबे गामक रिक्साबलाक फाटल अंगाक तरसँ झलकैत ओकर हाड़कें देखि उदास। समाजमे पसरल जाति-पाति हिनका अवसाद दैत छनि आ खतियानी जमीन पर नांगट आ अकिलविहीन लोक सभक अनेरुआ बदर देब सेहो नै सोहाइत छनि। बालुक चद्दरि पर टघरैत आ दौड़ैत नदीकें देखि मोनमे स्पन्दन होइत छनि। सड़क पर घर होएब गर्वक बात परंच हिनक घरक आगाँ सड़के ओंघराइत रहैत छैक। एहेन दार्शनिक भावकें पचाएब कठिन। गाम-घरसँ एहन सिनेह, एहने आपकता जे हिनक रचनामे देखबामे अबैछ आओर कत्तहु नहि भेटत। पढ़ैत काल एहेन लगैत अछि कि हिनका गामक घर-द्वार, खेत-खरिहान, गाछी-बिरछी, गली-कूची, चौक-चौराहा, इनार-पोखैर, चर-चाँचर, माल-जाल, नेता-भगता, नदी-नाला, कास-पटेर, कौआ-कुक्कुर, चिरै-चुनमुन, छागर-पाठी, पावन-तिहार, भूत-प्रेत सब नीक-बेजाय आँखिक सोझाँ नाचए लगैत अछि। सिनेमा जकाँ सभटा द्रष्टव्य। रचनाकारक ई विशेषता अवलोकनीय आ अकल्पनीय। कतेको नामक पोखरि सभ ठाम रहैत छैक परंच हिनका गाममे 'गुहमा पोखरि' छनि से ई ताल ठोकिक' कहैत छथि। गामक हिनस्ताइक कोनो चिन्ता नहि। हमरा गामक रहितथि तँ लोक सभ दुरः छी क' देतियैनि। शायद सिहौलक लोक सभकें बूझल नहि छल तें बिवाह भ' गेलन्हि। गुहमा पोखरिक माछ खाइत छथि कि नहि से पूछय पड़त। ओना गड़ई-गरचुन्नीकें गोढ़ियाक जालमे बाझल छटपटाइत देखि हिनक हृदय द्रवित भ' जाइत छनि आ ओकरा किनि क' पीयर (हल्दी), लाल (मरचाई), हरियर (धनियाँ) रंगमे रंगि, तड़ि ओकरा मुक्त क' दैत छथि। नहि किनतथि तँ गोंढ़ि ओकरा आगिमे झरका क' भरकुस्सा बना दितथि। एकरा हास-परिहासक बात ने बुझल जाय। हिनके टाकासँ गोढ़िक परिवार सेहो तृप्त भेल होएत। दू-तरफा यशक भागी। धन्य छथि ई आ हिनक विचार। हमरो मोन पड़ि गेल जे जाड़क मास हम सासुर (तेलहर) गेल छलहुँ। चर्चाक क्रममे एक गोटे बजलाह माछकें निषेध मानल गेल छैक तें अशुद्ध भोजन नहि करबाक चाही। बातकें अनठियबैत हम कहलियैक जे आइ बेस जाड़ छैक। ओ डिटो दैत बजलाह जे हम शीतलहरीमे स्नान नहि क' पानि छीटिकें शुद्ध भ' जाइत छी। हम कहलियैनि जखन अहाँ पानिक किछु बुन्न छिटलासँ शुद्ध भ' जाइत छी तखन माछक जनमसँ ल' क' सब संस्कार पानियेमे होइत छैक तँ ओ अशुद्ध कोना भेल। सभ हँसि देलक ओ लजा गेलाह। कहबाक ई जे कोनो वस्तु आ घटनाकें जाहि नजरिसँ देखब ओकर अर्थ ओहिना लागत।

कोशीक विभीषिकासँ उजरल, उपटल गाममे विकासक किरण फुटैत देखि मन हर्षित होइत छनि। डिबिया-ढिबरीक जमाना लदि गेल, सगरे चुकभुक करैत बल्बक रोशनी। ढेकी-जाँतक ओजि पर पुक-पुक करैत मशीन हिनका गुदगुदा रहल अछि। मोटर आ फटफटिया गाड़ी सब चलैत देखि सोहनगर लगैत छनि। बेदरा सभकें टेबुल लैम्पमे पढ़ैत आ धरिया छोड़ि जीन्स पहिरैत देखि मनमे संतोष आ प्रसन्नता होइत छनि। चरवाहाक बंशीसँ बहराइत मधुर संगीत आ बूढ़-पुरानक पराती हिनका एखनो आकर्षित करैत छनि। बाढ़िक विनाशलीला बाँध बनि गेलासँ कम भ' गेल छैक। एहिसँ उत्साहित भ' नेनपनमे अपन जोरी-पारी संग बाँधक उद्घाटन समारोहमे दूर पैदल चलि गेलाह। एहन उत्स आ समर्पण गामक लेल ककरो-ककरोमे देखबामे अबैछ।

पाबनि-तिहारक अनुपम परम्परा जेना फगुआक जोगीरा, दशहराक ढोल, कोजगराक पान-मखान, छठि मैयाक डाली, दियाबातीक ऊक सभटा हिनका स्मृतिमे एखनो स्थापित। परंच नवतुरिया सभकें मोबाइलमे आँखि सटाक' टिपटिप करैत देखि भविष्यक चिन्तामे डूबि जाइत छथि। कानमे ठूसल 'ईयर फोन' मुँह चिढ़ाबै छनि। नेबूक शर्बतक ओजिमे अनेको प्रकारक 'कोल्ड-ड्रिंक्स'क चलनि देखि मनमे संताप होइत छनि। माटिक बासनक कोनो मोल नहि। ताड़ आ खजूर-बन्नीमे रंग-बिरंगक लटकल पोलिथीनक थैला आ चुकड़ीक खोजमे प्लास्टिक कोटेड कपक साम्राज्य। पारम्परिक रोजगारकें श्री-हीन होइत देखि मन हहरि जाइत छनि। विकासक बाढ़िमे थाल-कादो सेहो आबि गेल। परंच कुटीर उद्योग आ सांस्कृतिक धरोहर पर कुठाराघात असह्य आ बेचैन कर' बला। गुणवत्तासँ कोनो समझौता नहि होयबाक चाही जाहिसँ भविष्यमे पछताब' पड़य। ताहि लेल समाजक साकांक्ष रहब आवश्यक। सभक ई दायित्व जे उपयोगीकें अपनाबी आ अनुपयोगीकें नकारि दी। तखने स्वस्थ समाजक परिकल्पना हम क' सकैत छी। समाजमे पसरैत कुरीति आ दुर्व्यसनकें उजागर करब हिनक प्रशंसनीय डेग बुझना जाइछ।

कविता 'बैठनमा'मे गाछक मनोभावक विशालताकें प्रकट करैत कहैत छथि जहिना गाछ छाया प्रदान करैत अछि, कतेको जीव-जन्तुकें आश्रय दैत अछि परंच मिसियो टा अहंकार नहि। अजगुत बात ई जे अपन ईहलीला समाप्त होएबाक ओतेक दुख नहि जतेक एहि बातक गर्व जे ओकर बलिदान व्यर्थ नहि होएत आ ओ दोसरक सुखक भागी बनत। गाछकें अपन कटबा, मरबा आ जड़बाक कोनो परवाहि नहि, परवाहि छैक तँ अपन जिनगीकें दोसराक लेल उत्सर्ग करबाक। सरिपहुँ प्रकृतिक एहि उपादानक प्रेरणादायक संदेश अनुकरणीय। तहिना मनुक्खोकें परोपकारी होएबाक चाही आ अपन सुकर्मसँ मरणोपरांत धरि अपन अस्तित्वक एहसास आ मानवोचित व्यापकताक बोध करेबामे समर्थ होएबाक चाही। किएक तँ स्वार्थलोलुपता आ संकीर्ण

मानसिकताक दंश समाजक समरसताकें झकझोरि रहल छैक। एहि हालतिमे उदारता आ भाइचाराकें प्रश्रय दैत एक दोसरक सुख-दुखमे सहभागी बनब आवश्यक। तखने मनुक्खक जिनगीक सार्थकता सिद्ध होएत जखन ओ अपन कर्त्तव्य आ दायित्वसँ समाजकें परिचय कराबैत एकटा आदर्श उपस्थित करताह। मनुक्ख परमेश्वरक सर्वोत्कृष्ट रचना आ ततबे सामर्थ्यसँ संपोषित। एहि बातक ज्ञान भ' गेलासँ लोक अमर भ' जाइत छैक। समाजक लेल जे जतेक त्याग आ बलिदान करताह ओ ओतबे पूज्य। 'बैठनमा'क मादे कविक अन्तरमनसँ निःसृत आध्यात्मिक उर्जाक प्रवाह जनमानसक चेतनाकें उद्वेलित क' विवेक आ बुद्धि जगेबाक संदेश यथार्थपरक आ समीचीन–'सर्वं खल्मिदं ब्रह्म'कें परिभाषित करैत'।

कविता 'आरोग्यधाम'मे गाम-घरक अदौसँ अबैत परम्पराक सदृश्य चित्रण अलौकिक। एहन बुझना जाइछ कि हमहूँ कवि जीक संगहि ओहि गह्वरमे बैसल ओतुका परिदृश्यक दर्शन क' रहल छी। एहन सटीक आ जीवन्त चित्रण भेटब मोसकिल, एकदम सिनेमा जकाँ द्रष्टव्य। हिनक स्मृतिक जतेक प्रशंसा कएल जाय कमे होएत। गह्वरक कोनो टा पहलू विस्मृत नहि भेलनि अछि। कविताक किछु पाँती प्रस्तुत अछि–

'खेलाइत रहता गोसाईं।/दौड़ैत रहता सलहेसक घोड़ा पर।/मुँहमे आगिक भुभूर ल' झुमैत रहती मैया जलपा।/फुफकार पर फुफकार मारैत।/छाती बलें ठाँव पर ससरैत रहती माँ विषहरा।/आ उठैत रहत धर्मराजक दण्ड.../अपना ठाम पर।

शब्द आ वाक्यक संयोजन अद्‌भुत आ नैसर्गिक। ओना आजुक पीढ़ी ओहि घटनाक्रम सभकें नकारैत मखौल उड़ेबामे कोनो कसर नहि छोड़ताह। परंच ओहि समयक हालतिमे वैह व्यवस्था कारगर मानल जाइत छल। किएक तँ कोशीक कछेरमे अस्पताल आ दागदरक दूर-दूर तक पता नहि आ यातायातक (अबै-जाय) व्यवस्था बहुत खराब। कोनो शंका-समाधान आ दुखित भेला पर लोक सभ 'डालीक' संगे गह्वरमे उपस्थित होइत छलाह। ढोल-झालि बजा आ गीत गाबिकें गोसाईंक आह्वान कएल जाइत छल। अबिते देरी गोसाईं झूमरि खेलाइत-खेलाइत कारणी (रोगी) सभकें फूल, दूभि आ अच्छत द' क' उपचार करथि। एहन आस्था छल जे लोक सभ निश्चिन्त भ' जाइत छलाह। हमरा लगैत अछि एहिमे गोसाईंक मंत्र-शक्तिक संगहि लोक सभक श्रद्धा आ विश्वासक योगदान सेहो रहैत होएत। किएक तँ विश्वास आत्म-शक्तिकें मजगूत करैत छैक आ शरीरक रोग-प्रतिरोधक क्षमताकें बढ़ेबामे सहयोग करैत छैक जे रोगक निदानक लेल आवश्यक। उपहास कर' बला सभकें आजुक घटनासँ सबक लेब जरूरी जे उन्नत चिकित्सा उपचारक रहितहुँ एकटा अदृश्य वायरस 'कोरोना' सगर संसार कें भयाक्रांत क' चुनौती द' रहल अछि, यैह छी आजुक अपूर्ण सत्य। एहि मिलावटि आ छल-छद्मक युगमे श्रद्धा आ विश्वास अलोपित भ'

रहल छैक, जे मनुक्खक लेल आत्मघाती। श्रद्धा आ विश्वास पोजीटिव ऊर्जा उत्पन्न करैत अछि जे रोग निवारणमे सहयोग करैत छैक। तें समाजक पौराणिक व्यवस्थाक प्रासांगिकताकें संज्ञानमे आनब कविक प्रयास सराहनीय।

हमरा नहि बूझल छल जे डा. महेन्द्र जी सक्खर ओझा-गुणी सेहो छथि। किएक तँ जतेक भूत सब हिनका संगमे ओतेक हमरा सभ नामो नहि सुनने छी। एकटा भूतक कल्पना मात्रसँ देह रोमांचित भ' जाइत अछि। भूतक सपनो देखलासँ सभकें घिग्घी बँधि जाइत छैक आ घामसँ सराबोर। जतेक भूतक चर्चा अपन कवितामे केने छथि ओकर नामो लिखबामे डर' लगैत अछि। नहि लिखब तँ कोन भूत लगा देताह कोनो ठेकान नहि। तें रंग-बिरंगक भूतक नामावली प्रस्तुत अछि हुनकहि शब्दमे–'गोरका भूत, करिक्का भूत। नककट्टा भूत आ कनफट्टा भूत। पुरुषक पोशाकमे महिला भूत। सक्खर भूत, अक्खर भूत। कठपिंगल भूत। अन्हरा भूत, बहिरा भूत। आलिम भूत, फाजिल भूत।' बाप रे! एहन लगैत अछि जे सभ भूतकें सारासँ उखाड़ि-उखाड़ि ओकर गुणक अनुरूपें नामकरण संस्कार कएल गेल अछि। तात्पर्य ई जे एतेक प्रकारक भूत परिवार आ समाजमे पसरल अछि। आ जे शरीर, व्यवहार, मन आ आर्थिक रूपसँ कमजोर छथि तकरा पर सवारि कसि तांडव शुरू क' दैत अछि। मुइलका भूत सभ जिन्दा भूतकें देखि पड़ा गेल। जँ बाँचलो होएत तँ ओकरा काँटीक संग गाछमे ठोकि देल जाएत। परंच जिन्दा भूतसँ पार पाएब कठिन, किएक तँ ई चारू दिससँ हमला करत। ओझा-गुनी सभ फेल। एहि समस्याक निदानक लेल कविक सुझाव उचित प्रतीत होइत अछि। ओ की कहै छथि से हुनकहि शब्दमे सुनू– 'आउ भूत। तबला लिय' डुग्गी लिय'। ढोलक आ मजीरा लिय'। ई झालि आ मृदंग पर सहियारू हाथ। त्रिताल-झपतालकें छोड़ि। करताल पर नाचू हे भूत।' आ चुपचाप सभकें नचैत, उछलैत देखैत रहू, जखन सभ थाकिकें चूर भ' झूर-झमान भ' जाएत तखन वातावरण अपनहि शांत। मजबूरीक ई सलाह सभकें पसिन्न पड़त कि नहि, पता नहि। परंच तत्काल एहिसँ त्राण पाबि सकैत छी। परंच स्थायी समाधानक लेल प्रयास परमावश्यक जे सभहक दायित्व। हमरा नजरिमे सबसँ पहिल आ बड़का भूत माय-बाप होइत छैक जे जनम आ पालन करबाक कारणे संतानकें अपन जागीर बूझै छथि। होयबाको चाही किएक तँ संतानक लेल कतेको दुख आ कष्ट भोग' पड़ैत छैक। दोसर भूत संतान जे आँखि-पाँखि भ' गेला पर अपन वर्चस्व स्थापित करबाक लेल आँखि देखेताह–नाक फरकेताह। तेसरका भूत बाहरसँ पढ़ल-गुनल जे अबिते देरी चिकरै-भोकरै लागत, कूद'-फान' लागत आ दोसरका भूत लीलडाउन आ सटक सीताराम। आओर एतहिसँ शुरू होइत अछि दू पीढ़ीक अहंकरक टकरावक समस्या। आ परिवारमे महाभारत शुरू। कहबाक ई जे समाजक एहि विषम परिस्थितिक सामना सभ क' रहल छी। कमोवेश ई हालति घर-धरमे विद्यमान आ दिन दुगुना

बढ़ि रहल छैक आ हमसभ झूठका मान-सम्मानक आड़िमे मूरुत जकाँ हाथ पर हाथ धेने बैसल छी जे स्वच्छ आ स्वस्थ समाजक परिकल्पना पर प्रश्न ठाढ़ करैत छैक। दिनानुदिन पारिवारिक सम्बन्धमे बढ़ैत खटास चिन्तनीय। पारिवारिक संतुलन बिगड़लासँ समाज बिखरि जाएत आ अदौसँ अबैत सांस्कृतिक सौहार्द्र हहरि जाएत। ओकर पुनर्स्थापनाक लेल दरकि रहल समाजक गूड़ (घाव)क चीर-फार आ मरहम-पट्टी करब आवश्यक अछि। ताकि फेरसँ सम्बन्धक तादात्मय स्थापित भ' सकय आ एकर पूर्ण दायित्व समाजक विचारवान आ चिन्तशील व्यक्तित्वक थीक। आ तें कविताक मादे सभकें सचेष्ट आ साकांक्ष करब कविक संदेश सार्थक आ औचित्यसँ संपोषित। किएक तँ मनुक्खक दृढ़ संकल्प शक्ति असंभवोकें संभव करबामे पूर्णतः सक्षम।

डा. महेन्द्र जीक कवितामाला 'मेटायल पता पर अबैत चिट्ठी' सुन्दर-सुन्दर सुगन्धित पुष्पसँ सुसज्जित आ हृदयस्पर्शी। कविताक प्रवाह कोशी नदी जकाँ हहाइत-उधिआइत, शब्दक चयन आ संयोजन लरजैत-गरजैत मनुक्खक जिजीविषा पर हथौड़ा जकाँ चोट करैत आ सृजन प्राकृतिक आ भावनाकें उद्वेलित कर' बला। कोनो पुष्प समुद्र जकाँ विशाल आ गहींर, आ कोनो आसमानक वितान पर फहराइत। गाम-घर, देश-विदेशक संवेदना पाठककें रससँ भिजबैत अन्तस्तलकें सराबोर करैत छैक। ओतबे नहि, वैज्ञानिक अनुसंधान 'स्काइ-लैब' आ 'अणु-बम' आ ओकर दुष्प्रभावसँ पीड़ित मानवताक रक्षाक उद्देश्य हृदयग्राही आ पाठकक अन्तरात्माकें आन्दोलित कर' बला। कोनो-कोनो कथ्य तँ हमरा सनक पाठकक माथक उपरसँ बहि जाइत छैक। 'मेटायल पता पर अबैत चिट्ठी' आओत कोनाक संग बहुत रास यक्ष-प्रश्नक रहस्योद्घाटनक लेल राजा युद्धिष्ठिरकें अवतरित होमय पड़त वा कवि स्वयं करताह ई विचारणीय। परंच हमरा लगैत अछि, जेना एवरेस्टक ऊँचाइ कोनो पताक मोहताज नहि होइत छैक तहिना मनुक्खक असाधारण व्यक्तित्व ओकर नामधन्य पता बनि सभतरि व्याप्त भ' जाइत छैक आ ओकर यश-कीर्त्ति मेटायल पताकें संजीवनी प्रदान करैत छैक तें पता मेटायल अर्थहीन। दोसर ई जे आडम्बर आ मोह-मायाक मकड़जालमे फँसल निराश आ हताश मनुक्ख अपन जिनगीक अटल-सत्य दिश प्रयाणक लेल मेटायलो पता पर चिट्ठी अबैक प्रतीक्षाक दंश झेलबाक लेल तैयार रहैत छथि। तात्पर्य ई जे मनुक्ख जखन स्वयंसँ हारि जाइत छैक तखन लिखल आ मेटायल सब अस्तित्वहीन, कोनो काजक नहि। तें जरूरति ई जे समाजक दुरवस्था पर ध्यान केन्द्रित क' त्याग आ शालीनताक सहयोगसँ एक दोसरक मनक मैलकें दूर करैत उत्पन्न होइत खाधिकें पाटबाक प्रयास हेबाक चाही। निर्मल मन सकारात्मक ऊर्जाक स्रोत जाहिमे परमात्माक वास होइत छैक। एहिठाम संत कबीरक ई पंक्ति मन पड़ैत अछि–

कबिरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर।
पाछे-पाछे हरि फिरै, कहत कबीर-कबीर।।

काव्य-संग्रहमे किछु संदर्भक पुनरावृत्ति सहजहि भेल छैक जे कविक सामाजिक सरोकारसँ चिंतित होयबाक द्योतक अछि आ मनुक्खक बिसरबाक मनोवृत्तिक परिचायक। बिसरभोर लोकक लेल सहिराएब आवश्यक। परोपकारक लेल आकुलता, दोसरक व्याधिक लेल व्याकुलता जखन बढ़ि जाइत छैक तखन स्थान, काल आ पात्रक ध्यान नहि रहि जाइत छैक। जरैत घरकें मिझेबाक लेल गंगाजल वा डबराक पानिक विचार नहि कएल जाइत छैक। तें कवि अपन उद्देश्य पहुँचेबाक लेल सदिखन आ सगरे स्वतंत्र। आध्यात्मिक कसौटी पर कसल कविताक भाव लोकक अन्तर्मनकें स्पर्श करैत सकारात्मक सोच उत्पन्न करैत छैक, जे मनुक्खक सुप्त शक्तिकें जाग्रत करैत छैक। आ ई शक्ति मनमे नैसर्गिक दया आ परोपकार प्रस्फुटित करैत छैक जाहिसँ मनुक्खक मनोबल आ संकल्प-शक्ति मजगूत होइत छैक आ असंभवो काज संभव भ' जाइत छैक। शास्त्रक अवधारणामे 'पूत-ऋण' सेहो मानल गेल छैक, जे मनुक्खक पर समाजक ऋण होइत छैक। ओहि ऋणसँ उऋण होएब मनुक्खक कर्त्तव्य आ धर्म सेहो। योगी बनबासँ उपयोगी होएब समाजक लेल बेसी उपयुक्त। समाधान सदिखन समस्येमे समाहित रहैत छैक जकरा खोजबाक अन्तर्दृष्टि होएबाक चाही। समस्याकें नकारब आ दोसराक भरोसे छोड़ि देबाक प्रवृत्ति चिन्तनीय आ अपराधबोधसँ भरल। किएक तँ सभ जखन यैह सोचताह तँ निदानक बदला ओ बढ़िते जाओत आ ई परिस्थिति अत्यन्त विस्फोटक साबित होएत। मनुक्खक नैतिक-मूल्यक क्षरण आ आपसी सम्बन्धक तार-तार होएबाकें उघाड़ करबामे कवि शत-प्रतिशत सफल आ हिनक ई प्रयास श्लाघ्य आ वंदनीय। विविध रंजना-अभिव्यंजनासँ रंजित कविक काव्यांजलि जनमानसक चेतनामे प्राण फूँकि लोकोपयोगी ऊर्जाक संचार करथि आ कविक लेखनी अहिना 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय'क लेल कागत पर ससरैत आ दौड़ैत रहय यैह मंगलकामना। एहन सृजनशील व्यक्तित्त्वकें मैथिली भाषाक 'धरोहरि' कहब सर्वथा उचित बुझना जाइछ।

'दरादेक माथ पर हाथ'क बहन्ने अपन लिखबाक सिहन्ता सेहो साधि लेलहुँ ताहि लेल कविकें लाख-लाख धन्यवाद। धन्यवाद प्रधानमंत्री मोदी जीक 'लॉक-डाउन'कें सेहो जे घरमे रहबाक पर्याप्त समय प्रदान कएल आ घरक चार पर बागवानीक संगहि एकान्तमे चिन्तन-मनन करबाक सुअवसर सेहो भेटल आ लिखबाक आकांक्षा प्रबल होइत गेल। अन्तमे 'बच्चन जी'क कविताक ई पंक्ति उद्धृत करब सौभाग्यक बात जाहिसँ हमरो उद्गार टपकैत अछि–

मालूम है कोई मोल नहीं है मेरा, फिर,
कुछ अनमोल लोगों से रिश्ता रखता हूँ।

मो. 9931566699





साक्षात्कार

एहि अंकमे तीन गोट ऐतिहासिक साक्षात्कार प्रस्तुत कयल जा रहल अछि। मैथिलीक महत्वपूर्ण कथाकार आ मिथिल मिहिरक यशस्वी संपादक शेखर जीसँ कथा पर, मैथिलीक अन्यतम गवेषक-विचारक राजेश्वर झासँ मैथिलीक स्थिति-परिस्थिति पर आ मैथिलीक श्रेष्ठ कवि-आलोचक कुलानंद मिश्रसँ मैथिली कविता आ आलोचना पर। एहि तीन मान्य लेखकसँ कवि-संपादक भीमनाथ झा वार्त्ता कयलनि अछि। पैंतालीस बर्ख पूर्व लेल गेल ई तीनू साक्षात्कार एखनो प्रासंगिक थिक। तीनू महत्वपूर्ण लेखककें स्मरण करैत एहि साक्षात्कारक पुनर्प्रकाशन मैथिली दर्शनसँ साभार कयल जा रहल अछि।

'शेखर' अनुसार जीवनानुभूतिक साधन थिक कथा

भीमनाथ झा

मैथिलीक कथा-विधापर किछु प्रश्न ल'क' 'मिथिला मिहिर'क संपादक सुधांशु 'शेखर' चौधरीजीक टेबुल पर जखन उपस्थित भेलहुँ तखन ओ ओहि दिनक दैनिक पत्रमे डूबल छलाह। हमरा ओत' गेलाक तीन-चारि मिनट धरि समाचारकें 'चाटि' लेलक बाद जखन तृप्तिसूचक मुद्रामे हमरा दिस ओ तकलनि तँ हम कागज बढ़ा देलियनि। यावत् ओ ओकरा पढ़ैत रहलाह, तावत हम सोचैत रहलहुँ जे हमर प्रश्न सभक प्रामाणिक उत्तर हिनकासँ अधिक के द' सकैत अछि ? ई ने केवल अपन पीढ़ीक कथाकार लोकनिमे सशक्त हस्ताक्षर छथि, अपितु ओकर बाद जेना-जेना कथाक विकास होइत गेलैक अछि, ताहिमे प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपसँ हिनक योगदान अप्रतिम रहल अछि। 'वैदेही'क संपादन विभागक सक्रिय सदस्य रहलाक कारणे तथा साठि इसवीसँ 'मिहिर'क प्रधान संपादक होयबाक कारणे मैथिली कथा जे आगाँक बाट बनौलक अछि, से हिनका स्पर्श कयलाक बादे। ओकर स्पर्शक स्पंदन आइयो धरि हिनक शरीरमे विद्यमान छनि, तें स्वाभाविके, कनेक तार छुबि देला उत्तर नाना राग-ताल-लय-समन्वित संगीत प्रवाहित होब' लगैछ हिनक वाणीसँ।

प्रश्नावली पढ़ि लेलाक बाद हिनक स्वाभाविक गंभीरता आर सघन भ' गेल आ ई हमरा दिस तीक्ष्ण दृष्टिएँ ताक' लगलाह। तात्पर्य बुझि, बिना किछु कहने ओहि ठामसँ आबि अपन कुर्सी पर हम बैसि रहलहुँ आ काजमे बाझि गेलहुँ। घंटो नहि बीतल होयतैक कि संपादकजी प्रश्न सहित तीन-चारि पन्ना कागज हमर टेबुल पर रखैत कहलनि—'लिअ' अपन उत्तर।'

प्रश्न-की अपने मानैत छी जे प्रत्येक भाषाक रचनात्मक साहित्यक अपन किछु जातीय चरित्र होइत छैक ? यदि अपने एहि स्थापनासँ सहमत छी तँ अपनेक विचारें मैथिली कथा साहित्यमे ओ कोन-कोन तत्त्व छैक जे ओकरा आन भाषाक कथासँ अलगाबैत छैक ?

उत्तर-हम ई मानैत छी जे प्रत्येक भाषाक एक क्षेत्र-विशेष होइत छैक जकर संस्कृतिक ओ संवाहिका बनैत अछि, तें स्वभावत: ओकर एक एहन चरित्र होयबे करतैक जे ओकर विशिष्टताकें दर्शौतैक। संस्कृतिक केवल ई अर्थ नहि जे क्यो की खाइत अछि; ईहो अर्थ नहि जे ओ की पहिरैत अछि, केहन पहिरैत अछि, कोना पहिरैत अछि; अपितु संस्कृतिक ईहो अर्थ होइत छैक जे ओ की सोचैत अछि, केहन सोचैत अछि, कोना सोचैत अछि। स्पष्टत: क्षेत्रविशेषक लोकक दिनचर्या, चालि-ढालिसँ ल'क' चिंतनक भंगिमाकें ल'क' कोनो भाषाक कथा-साहित्य आगाँ बढ़ैत अछि आ भाषा-समूहमे अपन व्यक्तित्व स्थापित करैत अछि। ओना सुख-दु:खक अनुभूति, हास्य-करुणाक उपस्थापन आदि क्रिया सभ क्षेत्रक मानवमे समाने होइत छैक, हँसबा आ कनबामे जे एक काट होइत छैक से सभ क्षेत्रक अपन होइत छैक आ तें यैह प्रकार भाषा-अभिव्यक्तिमे प्रकारताक सृष्टि क' एक भाषाक कथाकें दोसर भाषाक कथासँ भिन्न क' दैत छैक। एहिना पात्रक क्षेत्रगत आचरणक आधारपर चीन्हल जा सकैत अछि जे अमुक कथा अमुक भाषाक थिक। जँ चारि गोटेसँ घेराक' हिन्दीक गोटेक युवतीक मारिसँ बचबाक लेल 'बचाओ-बचाओ' चिचिआयत—'दौड़' हौ लोकसभ'। ओकर एहि अभिव्यक्तिये बचयबाक अनुनय सन्निहित रहतैक!

प्रत्येक भाषाक अभिव्यक्तिक प्रकार अपन होइत छैक—ई कहैत काल हमरा ध्यानमे वैह पात्रसभ नचैत अछि जखन मैथिलीक कथा अपना क्षेत्रमे भूमि धयने रहैत अछि। ओना क्षेत्रसँ बाहरो भ'क' कथा लिखल जा सकैत अछि, नीक जकाँ लिखल जा सकैत अछि, यदि पात्रक संग-संग अभिव्यक्तियो बहरिया नहि रहय। आन भाषाक अभिव्यक्तिक अनुवाद जँ मैथिली कथामे पचयबाक चेष्टा होयत तँ एकर अभिव्यक्ति होयत आ ओकर व्यक्तित्व खंडित होयतैक आ एहि तरहें ओ मैथिली कथा नहि भ'क' ओ भारतक कथा भ' जायत अथवा कोनो परदेशी कथा सिद्ध होयत। भाषाक चरित्र जे कि भाषाकें व्यक्तित्व प्रदान करैत अयलैक अछि तँ सजग साहित्यकार ओकर व्यक्तित्व-रक्षापर भ'र दैत छथि। ओना, लिखबाक व्यसन कोनो तरहें पूरा कयल जा सकैत अछि।

प्रश्न—कोनो भाषाक कथामे कथातत्त्व, भाषा आ शिल्प—ई तीनटा अवयव होइछ। हमरा विचारें मैथिली कथामे कथातत्त्व आ भाषाक तुलनामे शिल्पपर बड़ थोड़ ध्यान देल गेलैक अछि। की अपने एहिसँ सहमत छी ? एहि क्रममे की अपने शिल्पक दृष्टिसँ सफल किछु मैथिली कथाक उल्लेख क' सकैत छी ?

उत्तर—हम तँ ई कहब जे शिल्पेक आधार पर मैथिलीक कथा-साहित्य अन्यान्य साहित्यिक विधासँ आगाँ बढ़ल अछि। सन् 1945सँ 1950 धरिक मैथिली कथामे जे आकस्मिक परिवर्तन लक्षित होइत अछि से निस्संदेह शिल्पेक प्रसाद कहल जायत। वस्तुत: ताहिसँ पूर्व मैथिलीमे खिस्सा लिखल जाइत छल। ओकरा कथाक मर्यादा तखने भेटलैक जखन ओहिमे छुटिक' नव-नव शिल्पक प्रयोग होब' लागल। ओहि युगक रेखाचित्र, विडंबना ओ अश्रुकणक कथा सभकें शिल्प-प्रयोगक तीन बिंदुपर ठाढ़ कयल जा सकैत अछि। बादक हमरे कथा सभमे यथा—एक सिंघाड़ा : एक चाय, सरस गल्प, छुतहर, छोटछीन बात आदिमे शिल्पक नव प्रयोग देखल जा सकैत अछि। कथाक मर्म बुझनिहार ई जनैत छथि जे शिल्पक आवेशे ओ तत्त्व अछि जे ललित, राजकमल सदृश समर्थ कथाकारकें जन्म देलक आ कथा-जगतमे हुनका लोकनिकें प्रतिष्ठित कयलक। तखन हँ, हम ई मानैत छी जे एम्हर आबिक' कथाक कथ्यमे जे नवीनता आ विविधता आयल अछि, से विविधता शिल्पक क्षेत्रमे नहि अछि। ओना ई मान' पड़त जे एम्हुरका कथा-लेखन-शैली व्यक्तिपरक भ' गेल अछि आ समर्थ कथाकारक कथाकें मात्र शैलीक आधार पर चिन्हल जा सकैत अछि

प्रश्न—आधुनिक मैथिली कथाक ओ कोन-कोन नियामक तत्त्व छैक जे ओकरा प्राचीन मैथिली कथासँ भिन्न सिद्ध करैत छैक? प्रो. उमानाथ झासँ आगाँ बढ़ि ललितसँ आधुनिक मैथिली कथानक आरंभ मानबामे अपने कोनो आलोचकीय विडंबना देखैत छी वा नहि?

उत्तर—प्राचीन मैथिली कथाक की अभिप्राय? सन् 1945सँ पूर्वक जे कथित कथा-रचना थिक, तकरा हम पूर्वे खिस्सा कहि आयल छी। तें ओहिसँ आजुक कथाक तुलना करब निरर्थक। ओ कथा-रचना, जकर मूल उद्देश्य मात्र मनोरंजन होइक आ जकर कथा तत्त्वक मूलाधार कल्पना मात्र होइक तकरा आधुनिक परिवेशमे कथा मानिक' चलब आजुक समर्थ कथा विधाक उपहास करब होयत। वस्तुत: कथाक पूर्वक शास्त्रीय मान्यता आइ निरर्थक भ' गेल अछि। कथानकक प्रबलता, घटनावलीक ऊहापोह, कथा-स्थितिक चरमता आदि पुरान कथाक कथातत्त्व आइ महत्त्वहीन भ' गेल अछि। आजुक कथा गढ़ल नहि जाइत अछि, भोगल आ जीयल जाइत अछि, तें आजुक कथाक मूलाधार कथाक विश्वसनीयता भ' गेल अछि। छोटसँ छोट मन:स्थितिक चित्रण आजुक कथाक विशेषता ओ प्राण अछि जकर कल्पनो पूर्वक कथाकार लोकनि नहि कयने होयताह। वस्तुत: मैथिलीक आजुक कथाक नियामक तत्त्वक बलपर पुरान कथासँ भिन्न प्रदर्शित करबा लेल विस्तारसँ विचार करबाक प्रयोजन अछि, जे एत' संभव नहि। तें संक्षेपमे यैह कहल जा सकैत अछि जे कथातत्त्वक पुरान मान्यताक डीहपर आधुनिक कथाक भवन ठाढ़ कयल गेल अछि, जकर परिवेश ओ मान्यता अपन छैक आ जे शिल्पक दृष्टिसँ

नवीन, अभिव्यक्तिक दृष्टिसँ सूक्ष्म, कथ्यक दृष्टिसँ टटका आ अनुभूतिक दृष्टिसँ प्रामाणिक अछि आ तें आजुक कथा मनोरंजनक माध्यम नहि, अपन जीवनकें ओहिमे अनुभूत करबाक साधन सिद्ध भ' रहल अछि।

जतेक दूर धरि कथाक क्षेत्रमे आलोचकीय विडंबनाक प्रश्न अछि, हमर मन्तव्य अछि जे तटस्थ अथवा निरपेक्ष भ'क' साहित्यक कोनो विधापर विचार करबाक क्षमता मैथिलीक आलोचक कें नहि भेलैक अछि। आलोचनाक क्षेत्रमे एखन धरि जे भेल अछि से यैह जे अनपेक्षितो व्यक्तिकें सहजें रसातल पठा देल जाइत अछि। तें एहन प्रवृत्तिवला आलोचकक आलोचनाकें हम कहियो महत्त्व नहि दैत छी। रहल प्रो. उमानाथ झासँ आगाँ बढ़ि ललितक कथामे आधुनिक युग किंवा नव मोड़ अनबाक गप्प, से प्रो. झाकें हम ओहि युगक कथाकार नहि मानैत छियनि जे कथाक क्षेत्रमे हाबी भेल होथि अथवा अपन पीढ़ीक कथाकारमे अपन बाँहि पुजा लेने होथि। तें हम हुनकासँ कोनो युग किंवा कोनो प्रवृत्तिक अगुआ मान'लेल प्रस्तुत नहि छी। कारण, मुनरोक रचना-शिल्पकें मैथिली कथापर आरोपित क' देला मात्रसँ युग वा युग-प्रवृत्ति हुनका हाथमे नहि आबि गेल छलनि। हँ, यदि अंग्रेजी साहित्यक कथाशिल्पकें एनमेन ओही ढंगसँ भाषांतर क' देब कोनो नव वा विशेष प्रवृत्तिक द्योतक होअय तँ ताहि अर्थमे हुनक नाम लेल जा सकैत अछि। वस्तुत: अपन माटि-पानिकें ध'क' जे कथाकार भिन्न-भिन्न प्रवृत्तिक संग मैथिलीक कथा-क्षेत्रमे प्रवेश कयलक, ताहिमे हम ललितकें सभसँ उदग्र मानैत छी आ तें हमर मान्यता अछि जे आन-आन भाषाक अथच प्रवृत्तिसँ आगाँ बढ़िक' ललित आधुनिक कथाकें प्रौढ़त्व प्रदान करबामे अग्रणी सिद्ध भेल छथि। ओना हुनकासँ पूर्वे गोविंद झा, राधाकृष्ण, मनमोहन झा, सुधांशु 'शेखर' चौधरी आदिक कथामे आधुनिक प्रवृत्तिक आविर्भाव भ' गेल छल।

प्रश्न—मैथिली साहित्यक संदर्भमे कवि राजकमल एवं कथाकार राजकमलक कवि रूप अधिक महत्त्वपूर्ण मानल जा रहल अछि। एहि प्रसंग हम ई मानैत छी जे राजकमलक कविक अपेक्षा हुनक कथाकार मैथिलीक प्रकृतिक लग अछि। की एहिमे अपने कें कोनो ओझराहटि नहि बुझाइत अछि? यदि हँ तँ अपनेक दृष्टिमे एकर कोनो तर्कसम्मत व्यवस्था भ' सकैछ?

उत्तर—राजकमल कवि आ कथाकार दुनू छलाह। ओ कवितामे कवित्वक प्रतिभा देखौलनि आ कथामे समर्थ कथाकारक क्षमता प्रदर्शित कयलनि। जे लोकनि प्रतीकमूलक अभिव्यक्तिक कारण हुनक कथामे कविताक आस्वादन कयलनि अथवा हुनक स्वप्न कविता सन काव्य-रचनामे कथाक आनंद पौलनि, भलें अपन ओझरायल मानसिक ग्रंथिकें कोनो रूपक वाणी देने होथि, हम धरि राजकमलक संबंधमे एकदम स्पष्ट छी आ तें स्पष्टताक संग हम ई मानैत छी जे राजकमल प्रथम कथाकार छथि, कवि बादमे।

प्रश्न—आधुनिक मैथिली कथा अपन दूरस्थ वा निकटस्थ पूर्ववर्ती कथाक विकास मानल जाय अथवा अपनामे पूर्णतः स्वतंत्र अगिला फसिल ? भिन्न-भिन्न कारणसँ हम आधुनिक मैथिली कथामे चारि टा प्रस्थान-बिंदु देखैत छी। उमानाथ झा, ललित, राजमोहन झा आ सुभाषचंद्र यादव हमरा क्रमशः ओहि चारू प्रस्थान-बिंदुपर स्थित लगैत छथि। की कोनो एहन रेखा खीचब संभव छैक जे ओहि चारू बिंदुकें छुबैत हो ? सुभाषकें दृष्टिमे रखैत की अपने मैथिली कथाक अगिला यात्राक संबंधमे कोनो संकेत द' सकैत छी ?

उत्तर—आधुनिक मैथिली कथा किंवा नव कथाकें हम पूर्ववर्ती कथाक विकास मानैत छी। सन् 45क लगभग जाहि कथाक बीजारोपण कयल गेल तकरे विकास-वृक्ष नव कथामे लक्षित भ' रहल अछि। बीजारोपण कयनिहारमे सन् 45क पीढ़ीक कथाकार लोकनिमे गोविंद झा, राधाकृष्ण, मनमोहन झा आदिक सामूहिक, किंतु सामाजिक मर्यादाक ढेङसँ दाबल यथार्थ अनुभूति-अभियुक्ति पौलक तँ सन् 55 धरि ललित, राजकमल, मायानंद आदिमे आबिक' ओ ढेङसँ घसक' लागल आ सन् पैंसठि अबैत-अबैत प्रभास, गुंजन, धूमकेतु, राजमोहन आदिक रचनामे सहज रूपसँ ओ ढेङ विलुप्त भ' गेल। जीवकांतक रचनासँ जाहि ढेङरहित रचनाक आरंभ भेल अछि से संप्रति चलिए रहल अछि आ तें हम एहि प्रसंग कोनो सीमा-रेखा अंकित करब निरर्थक बुझैत छी। हँ, एतबा धरि हम अवश्य मानैत छी जे सन् 45क कथाक स्वरूपसँ वर्तमान स्वरूप एहन भिन्न प्रतीत भ' रहल अछि, जकर तुलना पितामहक शैशवसँ सांप्रतिक कोनो शिशुक कयल जा सकैत अछि। एहि कथायात्राक प्रति हम परम आस्थावान छी आ विश्वास पोसैत छी जे वर्तमान शिशु अपन कलेवरकें पुष्ट आ प्रौढ़ करैत मैथिलीक कथा साहित्यकें विशेष प्रौढ़ता प्रदान करत।

['मैथिली दर्शन' कोलकाता, दिसंबर, 1975]



श्री राजेश्वर झाक दृष्टिमे मैथिली मोसिमे आ मंचपर

प्रश्न—अपने मैथिलीक सर्जनात्मक साहित्यक विशिष्ट लेखक थिकहुँ। संगहि एक महत्त्वपूर्ण संस्थाक सजग प्रहरी सेहो अपनेकें मानल जाइछ। धाराक दुनू दिस पूलक काज करैत अपने कें केहन अनुभव भ' रहल अछि ?

उत्तर—दुनू दू वस्तु थिक। साहित्यक सृजनक निमित्त अनुभव आ अध्ययन दुनूक आवश्यकता होइछ। समृद्धशील साहित्यक सृजन तखने संभव भ' सकैछ जँ लेखककें एहि दुहू वस्तुक परिपूर्ण ज्ञान रहतैक। एहि वस्तुक अभाव हमरा सतत खटकैत अछि। जखन-जखन हमरा मिथिलाक संस्कृति, साहित्य एवं इतिहासक पैघ-पैघ विद्वान लोकनिक ग्रंथक अध्ययन करबाक अवसर भेटल अछि तँ ओहि ग्रंथमे प्रायः विषय-वस्तुक अभाव तँ परिलक्षित होयबे कयल अछि, संगहि अनुभूतिक कमी सेहो प्रतीत भेल। हमर अपन विचार अछि जे लेखककें अध्ययन करब आवश्यक थिक। जहाँ तक दोसर प्रश्न अछि, एकर संबंध पूर्णतः संघटनसँ अछि। मैथिलीक संस्था एवं समितिक अधिकारी लोकनिमे प्रायः पदलोलुपता, ईर्ष्या आ विद्वेषक भावना रहैत छनि, जे मैथिलीक प्रगतिमे बाधक थिक। एकर अतिरिक्त अधिकारी लोकनि पथ-प्रदर्शनक द्वारा तरुण साहित्यकारकें प्रोत्साहन देबाक भावनासँ सर्वदा विमुख रहैत छथि। फलस्वरूप योग्य एवं उत्साही व्यक्ति ने तँ संबंधे मैथिली संघटनसँ रखैत अछि आ जँ रखितो अछि तँ ओ पश्चात् विद्वेषीक आचरणसँ तंग भ' अपन संबंध ओहि संस्थासँ विच्छेद क' लैत अछि। एहि तरहक प्रवृत्ति केवल हमरे टा संग चरितार्थ नहि भेल अछि, अपितु मैथिलीक प्रायः सभ संस्थामे कोनो ने कोनो रूपमे ई प्रवृत्ति सन्निहित अछि जे मैथिलीक अभ्युदयक निमित्त अभिशाप थिक।

प्रश्न—मैथिलीक संघटनक कार्यकर्तामे कोन प्रकारक योग्यताक अपने अपेक्षा रखैत छी ?

उत्तर—कार्यकर्ताकें सर्वप्रथम संवेदनात्मक होयब आवश्यक। यावत काल धरि कार्यकर्तामे मैथिलीक प्रति भक्तिभावनाक उदय नहि होयत, तावत धरि मैथिलीक सेवामे कार्यकर्ताक अभिरुचि उत्पन्न होयब असंभव थिक। अतएव मैथिलीक प्रति भक्तिक संगहि मैथिलीक कार्यकर्ताकें मैथिलीक समस्यासँ अवगत होयब नितांत आवश्यक थिक आ ओ तखनहि संभव भ' सकैछ जखन कार्यकर्ताकें अपन 'ज्ञान आ जगतक कान'क अवगति रहतैक।

प्रश्न—मैथिलीक समस्याक सीमा नहि अछि, तथापि जँ किछु समस्या सभकें प्राथमिकताक दृष्टिएँ लेल जाय तँ अपनेक केहन सुझाव रहत ? ओकर समाधानक सूत्र ?

उत्तर—मैथिलीक साहित्य-सृजनमे शैलीक एकरूपताक होयब आवश्यक। उदाहरणस्वरूप क्यो पठाओल और क्यो पठौल शब्दक प्रयोग करैत छथि। आ जखन मैथिलीकें साहित्य अकादेमी, बिहार लोकसेवा आयोग एवं आन-आन सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्था द्वारा मान्यता प्राप्त भेलैक अछि तँ साहित्य-सृजनमे एकरूपताक होयब आवश्यक प्रतीत होइछ।

मैथिलीमे प्रारंभिक शिक्षा-प्रसंगक चर्चा प्रायः उठैत अछि, जे आवश्यक एवं अनिवार्य तँ थिक, किंतु एहिमे एक जबर्दस्त व्यवधान अछि। साधारणतः मैथिली भाषा-भाषी छात्रक उच्चारण अंगरेजी एवं हिंदीमे ओतेक समुचित नहि रहैत छैक आ ओकर आधार

मजगूत नहि रहतैक तँ पश्चात् ओ जखन उच्च शिक्षाक निमित्त अपनाकें प्रस्तुत करत तँ ओकरा कठिनाइ औतैक। अतएव विविध विषयक ऊपर ग्रंथक रचना मैथिलीमे होयब नितांत आवश्यक थिक। मैथिलीक ग्रंथक रचनामे तखनहि प्रगति औतैक जखन केंद्र ओ राज्य सरकारक ध्यान एहि दिस जयतैक तथा हिंदी अकादमी सन मैथिली अकादमीक स्थान होयतैक आर ई तावत काल धरि संभव नहि, यावत मिथिला क्षेत्रक विधायक एवं सांसद लोकनि एहि दिस सजग नहि होयताह। आश्चर्य अछि जे मैथिली भाषाभाषी एवं मैथिली कार्यकर्ता लोकनि मिथिला क्षेत्रक विधायककें, जे मैथिलीमे चुनाव-घोषणापत्र एवं एहिसँ संबद्ध प्रचार एवं प्रसार नहि करैत छथि, कोना बर्दास्त करैत छथि? जाहि दृष्टिकोणकें अपनाक' बंगला साहित्यक प्रगति भेल तथा जाहि भावनाक वशीभूत बंगाली लोकनि बंगलाकें बुझैत छथि, ओही भावनाक आवश्यकता मिथिला आ मैथिलीक प्रगतिक हेतु अनिवार्य अछि।

प्रश्न—अपने मैथिलीमे साहित्य-सृजनक आवश्यकताकें रेखांकित कयलहुँ अछि। किंतु साहित्य ककरा लेल? जँ पाठक लेल तँ कतेक पाठक छथि मैथिलीक? अपने स्वयं अनेको ग्रंथक प्रणेता थिकिऐक। ओकर बिक्रीक प्रति अपनेक अनुभव केहन अछि? पाठक कोना मैथिली दिस टूटत?

उत्तर—साहित्य दू कोटिक होइत छैक। प्रथम कोटिमे ओ साहित्य अबैत अछि जकर संबंध अध्ययन एवं अध्यापनसँ रहैछ और दोसर कोटिक साहित्य लोकसाहित्य थिक, जकरामे लोकक समस्या, लोकक अभिरुचि और ओहि समस्याक समाधानक विषय-वस्तु रहैत छैक। मिथिलांचलमे युग-युगांतरसँ अबैत लोकगाथामे एही तरहक प्रवृत्ति सन्निहित अछि, जकर संबंध विशुद्ध लोकजीवनसँ अछि। अध्ययन एवं अध्यापनक निमित्त जे साहित्यक सृजन होइछ ओ सामान्य लोकसँ सर्वथा पृथक रहैछ तथा ओकर संबंध केवल अध्ययनकर्ता एवं अध्यापक-वर्ग तक सीमित रहैत अछि और लोकसाहित्यक संबंध लोकक जागृतिसँ रहैछ, जे तखने संभव होयत जखन लोककविक कविता ओ गीत अपढ़ जनताक कानमे पड़ि ओकर सुप्त अंतःकरणकें जगौतैक। जहाँ तक मैथिलीमे पाठकक प्रसंगक प्रश्न अछि, ओकर संख्या यथापि अपन भाषाभाषीक संख्यासँ अल्प अछि, किंतु ओकरा बिल्कुल नगण्य मानब समुचित नहि। साहित्य सर्वमान्य ने तँ कहियो भेलैक अछि और ने भविष्यमे कहियो होयतैक। लोक सर्वमान्य तखने होइछ जखन ओ लोकक अंतःकरण आ कंठमे परिव्याप्त होइछ। विद्यापतिक साहित्यकें कतेक मिथिलाक नारी लोकनि अध्ययन कयलनि जे युग-युगांतरसँ अपन निधिक रूपमे संजोगिक' रखलनि?

मैथिलीक हेतु ई संक्रमण-काल थिक। एकर अतिरिक्त लोकसाहित्यक साहित्यकार सतत उपेक्षित एवं शोषिते रहलाह अछि। जँ से नहि रहितैक तँ ओ लक्ष्मीकें छोड़ि सरस्वतीक प्रश्रयमे किएक जैतथि?

मैथिलीक पाठकक ध्यान आकृष्ट करबाक लेल स्वतः मैथिलीक साहित्यकारेपर उत्तरदायित्व छैक। विद्यापति एवं गोविंददासक गीत जँ तथ्यपूर्ण नहि रहितैक तँ मिथिलाक सीमाक बाहर कोना समादर होइतैक? भोजपुरी भाषामे रचित बिदेसिया एवं फिरंगिया की मिथिलाक घर-घर एवं गाम-गाममे नहि प्रवेश कयलक? अतएव जँ साहित्यकारक साहित्य वर्ग, वर्ण आ सीमामे आबहु मुक्त भ' लोकक जीवनसँ संबद्ध होयत, तखनहि सर्वमान्य होयत आ एहि तरहक कविक काव्य एकदेशी नहि, अनेकदेशी भ' कालविजयिनी बनत।

प्रश्न—अपनेक आँखिक सोझाँ विद्यापतिक नामपर एकटा विराट जुटान होब' जा रहल अछि। ओ देखि अपने केहन अनुभव करबैक? जँ अपनेक हाथ ओकर राशि द' देल जाय तँ अपने द्वारा ओकर उपयोग कोन रूपमे होयतैक?

उत्तर—एकरा हम विद्यापति सर्कस कहैत छिऐक, जत' ने तँ विद्यापतिसँ आ ने विद्यापतिक 'देसिल बयने'सँ ओकरा कोनो टा तात्पर्य छैक। ओत' विद्यापतिक नामपर आमोद-प्रमोद और मनोरंजनक साधन एकत्रित कयल जाइछ आ जकरा मैथिलीसँ कोनो टा संपर्क नहि छनि, सैह लोकनि एहि सर्कसक सूत्रधार थिकाह। एहि प्रसंगमे हम साधिकार कहब जे प्रायः तेसर सालक विषय थिक जे एक उड़िया विद्वान् एक गोट मैथिलीक प्राध्यापक कें अपना हाथक स्मारिका, जे ओहि सर्कस कंपनी द्वारा प्रकाशित भेल छल, देखबैत कहलथिन—You say that you are doing for maithili. You spend huge amount over this decoration and bring out this thing. What Maithili will gain from it.

जहाँ तक सांस्कृतिक कार्यक्रमक संबंध अछि, ओहिसँ हमहूँ सहमत छी, किंतु की उमापतिक 'पारिजात-हरण' नामक गीत, झूमर, बटगबनी आदिक आधारपर नृत्य नहि बनि सकैत अछि? की मिथिलामे लोकनृत्य एवं नाट्य-परंपरा नहि छलैक? एहिसँ संबद्ध लोककलाक प्रगति—की एहिमे व्यय होयब असंख्य धनराशिसँ संभव नहि भ'सकैछ? मिथिलाक संस्कृति, शालीनता एवं सरलतापर निर्भर छल। स्वतः विद्यापति, जनिका नामपर ई सर्कस होइत अछि, ओ जे ज्ञानक निधि हमरा लोकनिकें सौंपि गेलाह अछि, ओ एखन धरि ओहिना पड़ल अछि। विद्यापति एवं हुनक प्रश्रयदाता राजा शिवसिंह कोन रूपें एवं कहिया अपर लोकक यात्रा कयलनि, ईहो धरि नहि हमरा लोकनिकें बुझल अछि। की एहि सभ तथ्यक उद्घाटन करब एहि विशाल 'सर्कस'क उद्देश्य नहि? जाहि 'देसिल बयना'क निमित्त कविकोकिल अपन लेखनीकें गतिमान बनौलनि, कमसँ कम ओहि 'देसिल बयना'क रक्षा करब एहि सर्कस अधिकारी लोकनिक कर्तव्य की नहि थिक? आश्चर्य जे एतेक रास सिंह, बाघ, भालु, हाथी आ गीदरकें रहितहुँ मैथिलीकें संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान नहि भेटलैक अछि। एकरा प्रपंचक जाल कहू कि विधिक विडंबना?

['मैथिली दर्शन' कोलकाता, नवंबर 1975]



श्री कुलानंद मिश्रक मतानुसार—विलाप आ अभियोगक तीव्र अनुभूति ले' कविता

'सन्निपात'क संग मैथिली साहित्य संसारमे जे दू टा नाम लोकक नजरिपर एकाएक नाचि गेलैक, से छल कुलानंद मिश्र आ मोहन भारद्वाजक। 'सन्निपात'कें जँ एक्केटा कारणे मन राखल जायत, आ हमरा दृष्टिएँ ओहीटा कारणे ओकरा बिसरल नहि जा सकैछ, तँ ओ कारण होयत साहित्यिक समालोचनाक स्पष्ट आ सुपुष्ट दृष्टिकोण। कोनो साहित्यिक कृतिक भावभूमिक विश्लेषणक नजरिसँ निरीक्षण क' ओहि माटिक गुणक गणना आ ओकर उपजाक मोनीक हिसाब बैसा देबाक कलामे जेहन माहिर कुलानंदजी छथि, ताहि प्रकारक लोकक हिसाब आंगुरेपर कयल जा सकैछ। सर्जनात्मक साहित्य दिस अपन रुचिकें जगौलनि अवश्य, मुदा हिनक ज्ञानक सम्यक परिष्कार, हिनक लेखनीक निर्मम किंतु निर्मल चमत्कार जेहन समालोचनाक क्षेत्रमे हमरा भान होइछ, तेहन आनमे कहाँ? हँ, हिनक अंतरक कविक छविछटा धरि देखिते बनैछ। समालोचनाक क्षेत्रमे हिनक प्रत्येक मान्यतासँ सहमति सभ मतिमान लेल अनिवार्य नहि, किंतु हिनक आँखिक जोतिपर शंका करब की संभव?

मैथिलीक आधुनिक कविताक संदर्भमे हिनक खास दृष्टिकोण जनबाक लेल निम्नलिखित पाँच टा प्रश्न ल'क' हिनका समक्ष जखन उपस्थित भेलहुँ तँ ई बड़ उल्लासपूर्वक ओकर उत्तर देबाक निमित्त तैयार भ' गेलाह आ बिना बहुत बेसी तगेदाक कृपापूर्वक पाँचो प्रश्नक उत्तर हमरा थम्हा देलनि। हिनक उत्तर पढ़ि मैथिली काव्य साहित्यक अध्येता अवश्यमेव किछु सोचबा लेल, जँ ओ बेसी सजग होयताह तँ किछु लिखबो लेल बाध्य होयताह। हमर प्रसंग उठाक' ओहिपर हमर सहमतिक बिना कोनो ध्यान देने, जे बात कुलानंदजी कहलनि अछि, ताहि प्रसंग हमरा एत' किछु कहब ने उपयुक्त होयत, ने ओहि अंशकें प्रकाशित करबासँ रोकब उचिते। परस्पर ईमानदारीक प्रति आस्थाक निर्वाह होयब आवश्यक। अस्तु, जँ हमर प्रश्न आ हिनक उत्तरक बिंदु सभपर फरिच्छ दृष्टिसँ अवलोकन-चिंतन होअय तँ आधुनिक मैथिली काव्य साहित्यक इतिहासमे कतेको स्थलपर मोसि ढबकयबाक प्रयोजन पड़ि जा सकैछ।

प्रश्न—भुवनजी आधुनिक कविताक प्रवर्तक मानल जा चुकल छथि। अपने जँ सहमत छी तँ काव्यक कोन-कोन वैशिष्टयक कारणे हुनका ई श्रेय दैत छियनि? असहमतिक स्थितिमे, अपनेक दृष्टिमे, एकर अधिकारी के थिकाह?

उत्तर—हम एहि मान्यतासँ असहमत छी जे भुवनजी आधुनिक कविताक प्रवर्तक छथि। ओना किछु विद्वान लोकनि तँ एकर प्रवर्तनक श्रेय महाकवि चंदा झाकें दैत छथिन, जे स्पष्टतः हास्यास्पद लगैत अछि। भुवनजीकें आधुनिक कविताक प्रवर्तनक श्रेय देब ओहिना होयत जेना हिंदीमे छायावादक प्रवर्तनक श्रेय श्रीधर पाठककें देल गेलनि। भुवनजी अपन संस्कारमे अपन संस्कृतक कविलोकनिक किंवा कविशेखर बदरीनाथ झाक समीप रहलाह। ओ हिंदी-अंग्रेजी पढ़ने रहथि, हिंदीमे कवितो लिखैत रहथि आ तें हिंदी-अंग्रेजी कविताक प्रभावो हुनकामे देखबामे अबैछ। किछु एहने कारणसँ तथा आभिजात्यक प्रति फैशनेबुल विरोध ल'क' हुनक कवितामे क्रमशः लोकसँ हँटबाक प्रयास अस्पष्ट रूपें देखबामे अबैछ, मुदा तैयो टटका पानिक स्थानपर बसिये पानि पीबा लेल ओ सुलभ बना सकलाह। भावनाक पक्षमे कतहु नवीन होइतो शब्दगत तथा अभिव्यक्तिगत पारंपरिकता हुनक पाछु धयने रहलनि। 'विभूति'क फाइलो एही तथ्यक पुष्टि करछ आ हुनक बादोक रचना सभमे एहने मिझरायल तथ्य भेटत। 'नहि क्षमा करब प्रतिशोध लेब'—सन कवितोमे मात्र आवेगात्मक अनुभूतिए भेटैछ, ठोस रूपसँ नवीन परिपाटीक अवधारणा नहि। यात्रीजीक भुवनजीक संबंधमे ई कहब बड्ड सार्थक थिक—'प्राचीन परिपाटीक शब्दशिल्प नवीन भावनाकें अभिव्यक्त करबा काल नङराय लागल तँ ओ आगाँ आबि मैथिली कविताकें हिंदी छायावादी कविताक सम्मुख ठाढ़ कय लेल।' हिंदीक छायावादी रूझान मैथिलीक आधुनिकतासँ बड्ड दूरक संबंध रखैत अछि। भुवनेजी जकाँ श्री किरणजीकें आधुनिक मैथिली कविताक प्रवर्तनक श्रेयसँ फराक राखल जयबाक चाही।

आधुनिक मैथिली कविताक संदर्भमे 1947 ई. कें विभाजनक रेखा मानल जयबाक चाही। 'चित्रा'क प्रकाशन संग मैथिली कवितामे नव चेतना, नव शिल्प आ नव भावाभिव्यक्तिक ठोस रूपसँ प्रवेश देखबामे आओत। यात्रीजी तावत् धरि अनस्पृष्ट मिथिलाक माटिक सोन्ह गंध, अनास्वादित अभिव्यंजनाक उल्लासक संग-संग ओहन अनेक नवीन कथ्य ल'क' कविता रचलनि जे हुनका आधुनिक मैथिली कविताक जनक बना दैत छनि। ओ सेहो परंपरासँ परिचित छथि, मुदा से मात्र अपनाकें नवीनरूपसँ अभिव्यक्त करबाक सुरक्षा लेल जे.बी. कनिंघमक ई कहब मोन रखबाक वस्तु थिक जे—'Consequently to be modern depends upon tradition to be different from, to be modern depends upon a firm existence of custom expectations to be disappointed. The new is harasitic upon the old.'

यात्री जी मैथिलीक अपन वर्गीकरण नहि रहलासँ प्रगतिवादी धाराक कवि मानल जाइत छथि। ओ 'कुजाति' कम्युनिष्ट सेहो कहल जाइत छथि। मुदा हुनक कवि—

> दुखोदधिसँ संतरण हेतु,
> चिर विस्मृति वस्तुक स्मरण हेतु
> सूतल सृष्टिक जागरण हेतु।

अपन बात कहबा लेल व्यग्र भेलनि। 'बूढ़ वर, विलाप, फेर गोइठबिछनी' आदि कविता अपन स्वरभिन्नता आ अभिव्यक्ति भिन्नता ल'क' परंपरागत लौकिक एवं शास्त्रीय कविताक 'सहृदय' पाठक लोकनिकें बड्ड क्लेश देने रहनि। विद्यापति बड्ड महान कवि छथि तँ मात्र 'देसिल बयना सबजन मिट्ठा' ल'क' नहि। हुनक मैथिली प्रदेशक बाहरोक वृहत्तर भूभागसँ सांस्कृतिक आ रागात्मक चेतना ग्रहण कयलनि आ तकर दु:ख-दर्दसँ अपनाकें जोड़लनि। ई तथ्य हुनका अमैथिल नहि बनबैत छनि, मात्र हुनक दृष्टिकोण अपन भावबोधक विशदीकरणक संग-संग हुनक भाषा आ अभिव्यक्ति कें नव शक्तिसँ समन्वित बनबैत छनि। समुदायक मंगलकामनासँ ओतप्रोत होइतो, सामाजिक शोषणक विनाश चाहितो यात्रीजी अपन काव्यकें दुर्निवार कठोरता तथा विद्रोही दुर्दम घृणासँ पाट' नहि देलनि, ई हुनक महान उपलब्धि छनि। हुनक व्यक्तित्वक कोमलता हुनक समस्त काव्यमे स्पष्ट अछि आ तें आश्चर्य होइछ जे ई कोन कारणे अपन रचनामे रूपविधान पर कहियो अधिक जोर नहि देलनि।

प्रश्न—समकालीन होइतो मधुपजी, सुमनजी आ यात्रीजी स्पष्टत: भिन्न-भिन्न स्वरक कवि छथि। अपने एहि भिन्नताकें रेखांकित करैत कृपया स्पष्ट कयल जाय जे आजुक कविता उक्त तीनू कविसँ कतेक दूर धरि प्रभावित अछि ?

उत्तर—हम एहि प्रश्नक प्रथम भागसँ सहमत छी जे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित ई तीनू कवि मधुपजी, सुमनजी आ यात्रीजी समकालीन होइतो स्पष्टत: भिन्न-भिन्न स्वरक कवि छथि। यात्रीजीक काव्यगत स्वरक संबंधमे हम ऊपर कहि आयल छी। मधुपजीक संबंधमे स्व. रमानाथ झाक कहब छनि जे कविताक रचना हिनक स्वभाव आ व्यवसायो छनि। नहि जानि ई बात ओ प्रशंसा बूझि कहने छथि वा आर किछु। परिमाणमे मधुपजीक रचना थोड़ नहि छनि। संस्कृत बहुल भाषामे पारंपरिक आ परंपरासँ भिन्नो काव्यक रचना कयलनि अछि। लोकभाषाक समीपो मधुपजीकें देखल जा सकैछ, मुदा हिनक प्रकृत संस्कारक दृष्टिएँ 'राधा-विरह' जकाँ 'घसल अठन्नी, नवान्न अथवा कोजागराक मखान' किंवा कतोक लोककंठमे रसल-बसल लोकगीत सभ मधुपजीक ओतेक लग नहि छनि। ओ कविक रूपमे निश्चित रूपसँ संस्कृत परंपराक कवि छथि, मुदा सुमनजी जकाँ रूढ़िवादी नहि।

सुमनजी भावसँ ल'क' भाषा, शब्दयोजना आ बिंब-विधान—सभमे शुद्ध रूपसँ माघ-भवभूति आदि संस्कृत कविक परंपराक कवि छथि, कतहु फेंटायल नहि, एकदम बेछप। ई मात्र मैथिलीक व्याकरणक किछु ऋणी छथि, आन सभ क्षेत्रमे ई विद्यापतियोक अपेक्षा संस्कृतेक कवि सभक लग ठाढ़ छथि। हिनक नजरिमे काव्यक परिभाषा एखनो भरत, भामह, कुंतक आदिक आचार्य लोकनिक चारू कात चकभाउर द' रहल अछि। जँ कहियो ई लीखसँ हँटिक' किछु कहबो कयलनि तँ एना सब जेना संकोच होइत होइन

आ क्यो सुनिक' एहन-ओहने ने मानि लेनि। ओना सुमनजी जाहि वर्गक लेखक छथि ताहिमे प्रौढ़ आ सामर्थ्यवान छथि। हमरा ई कहबामे कोनो असौकर्य नहि अछि जे ई परंपरासँ सटिए क' कविता लिखबकें श्रेष्ठत्व सिद्ध होइत होइ तँ सुमनजी निश्चित रूपसँ अपन समकालीन दुचित्ता कवि मधुपजीसँ पैघ कवि छथि। संस्कृत परंपराक वैशिष्ट्य आ उदात्तता जतेक सुमनजी अपनामे पचा सकलाह, मधुपजीक हेतु ओ कठिन रहनि।

आब हम एहि प्रश्नक दोसर खंडक संबंधमे किछु कहब। आजुक सही कविता सही अर्थमे मात्र यात्रीजीसँ प्रभावित अछि, ई कहब कतोक गोटेकें तीत लगतनि, मुदा हमरा ई सत्य लगैछ। मधुपजी आ सुमनजीक प्रभाव-क्षेत्रसँ बाहर भेलाक बादे आइ क्यो अपनाकें निस्संकोच एखनुक कवि कहि पबैत अछि। मधुपजी आ सुमनजीक परंपराक एखनुक सभसँ समर्थ कवि भीमनाथ झा छथि, मुदा ओ सेहो अपनाकें हिनका लोकनिसँ फराक होयबाक कम ललक मोनमे नहि पोसैत छथि। ठाम-ठाम हिनको लोकनिसँ काफी फराको भेलाह अछि। मायानंद मिश्र हमरा मात्र गीतकार लगैत छथि आ तें हुनका अछैत भीमनाथ झाक नाम सकारण ऊपर उल्लेख कयल अछि। दोसर दिस यात्रीजीक प्रभाव-क्षेत्रमे एखनुक कविक एकटा विशाल वाहिनी अछि। राजकमल, सोमदेव, जीवकांत, कीर्ति नारायण मिश्र, गुंजन, विनोद, सुकांत, महाप्रकाश, गंगानाथ, उपेंद्र आदिक काव्यगत उपलब्धिसँ यात्रीजी द्वारा काव्यक क्षेत्रमे बहाओल गेल पसेनाक गंध ककरो सहजें बुझि पड़तैक। ई स्वाभाविके छलैक जे आधुनिक युगक ज्ञान-विज्ञान, संचार-सुविधा, स्वतंत्रताक मीठ स्वाद जमींदारी आदि सामंती प्रथाक विनाश आ आभिजात्यक महत्त्वक संग-संग Little Manक महत्त्वक पहिचान आदिक कारणे रूढ़िवादी परंपरामे निष्ठापूर्वक लिखल जा रहल काव्य-प्रथाक ह्रास आ अंत हो तथा नव-नव भावभूमि पर नव उल्लास आ साहससँ लिखल जा रहल कविता प्रतिष्ठित हो।

अपन बातकें संक्षेपमे हम एना कहब जे मधुपजी आ सुमनजी आजुक कविताक रचनाकार ले आब पूज्य तँ रहि गेलाह अछि, मुदा अनुकरणीय नहि। यात्रीजीक बात दोसर छनि। एखनो हुनक आङ्कुर पकड़ि अजुका कतोक समर्थ कवि बहुतो रास एहन क्षेत्रमे विचरण करैत छथि, विचरण क' सकैत छथि, जतय जायब ओना असंभव नहि तँ कठिन अवस्से छल। मधुपजी आ सुमनजी कविता लिखलनि मात्र, तकरा जीलनि नहि। यात्रीजीक कवितामे हुनक जीवन उभरैत बुझाइ पड़त आ तें अजुका कवि समुदाय हुनकेसँ अपनत्व जोड़ि पबैछ।

प्रश्न—'राजकमल यात्रीजीक आगाँक कवि बुझल जाइत छथि, समय आ काव्यप्रवृत्ति—दुनू दृष्टिसँ।' अपने एहिसँ कतेक दूर धरि सहमत छी ? अपने कृपया ईहो स्पष्ट कयल जाय जे आजुक मैथिली कविता कत' अछि ?

उत्तर—मैथिलीक कवि राजकमल यात्रीजीसँ आगाँक कवि छथि, समय आ

काव्यप्रवृत्ति दुनू दृष्टिसँ—ई मानबामे हमरा असौकर्य भ' रहल अछि। 'स्वरगंधा'मे संकलित कविता सभक बादो राजकमल कविता लिखलनि, मुदा से एक ठाम उपलब्ध नहि अछि। जे एक-दू टा कविता उपलब्ध भेल अछि, तकरा देखैत स्पष्ट रूपसँ किछु कहब कठिन थिक, मुदा ओहिमे यात्रीजीक परवर्ती होयबाक थोड़ेक संकेत अवश्य भेटैत छैक। 'स्वरगंधा'क भूमिका आ ओहिमे संकलित कविता सभमे खूब तारतम्य नहि बुझि पड़ैछ। राजकमल विचारक स्तरपर अवस्से यात्रीजीसँ आगाँ—भने विशृंखलिते रूपमे—नजरि अबैत छथि, मुदा कविता सभमे नव मन:स्थितिकें सम्यक रूपें प्रतिबिंबित करब हुनका लेल संभव नहि भेलनि। कमसँ कम 'स्वरगंधा'मे यात्रीजीक आगाँक मन:स्थिति तँ नहिएँ अभरि सकलनि। वर्ष 1975मे बजैत आ यात्रीजीक 'पत्रहीन नग्न गाछ' ध्यानमे रखैत तँ ई बात आर नहि मानबा जोगर लगैछ। 'स्वरगंधा'मे राजकमलक मोनक गीतात्मकता आ संस्कारक आभिजात्य तँ मोन छोट क' दैछ। प्राय: ओ जे कह' चाहलनि से कवितामे उतारि नहि सकलाह। जत यात्रीजीमे मानवक समष्टिक आग्रह भेटैछ, राजकमल व्यष्टि मानवमे ओझरा क' रहि गेलाह। व्यष्टिसँ समष्टिक प्रति आग्रह हुनका यात्रीजीसँ किन्हु आगाँ नहि आब' देलकनि। यात्रीजी तँ एखनो 'गाइड' जकाँ छथि, मुदा हुनके 'गाइडेंस'मे जीवकांत हुनकासँ आगाँ आयल बुझि पड़ैत छथि। जीवकांतपर हमरा दृष्टिएँ राजकमलसँ अधिक यात्रीजीक प्रभाव छनि, जे उचिते।

क्यो आब अनका लेल नहि घोकचैत अछि
अपने पसरैत अछि,
अनके पर आब ओ खूब नमरैत अछि
लोकेक नापसँ घरसभ बनबैत अछि।

जीवकांतक एहन पाँति सभमे यात्रीजीक 'गाइडेंस'मे आगाँ अयबाक बात स्पष्ट अछि। व्यष्टिक रक्षा करैत समष्टिक चिंता अजुका समयमे प्राय: सभसँ जोरगर आस्था मानल जा सकैछ। जीवकांत लफ्फाजीसँ दूर छथि आ तें कीर्ति नारायण मिश्र जकाँ वायवीय नहि छथि। हुनकामे और दृढ़ता अपेक्षित मानल जा सकैछ, मुदा हुनक पयर माटिपर छनि आ ई बहुत आश्वस्त करैछ। जीवकांतक परंपरा मे अयनिहार सुकांत सोम, गंगानाथ गंगेश, उपेंद्र, महाप्रकाश आदि कवि लोकनिमे जीवकांतोसँ आगाँ बढ़ि सम्यक विषयकें पकड़बाक चेष्टा बुझि पड़त, मुदा हिनका लोकनिक पयर एखन सुदृढ़ नहि भेलनि अछि। सुकांत अधिक दमगर छथि, तें किछु बात सरिआइयोक' क' सकलाह अछि, मुदा अनका सभमे तँ कखनो काल नव-नव आग्रहक लौलक आपाधापिये बुझि पड़ैछ। मैथिलीक एखनुका कविता स्पष्ट रूपसँ एखनो जीवकांतकें टपि नहि सकल अछि, हुनके एम्हर आ ओम्हर चकभाउर द' रहल अछि।

प्रश्न—कहल जाइत अछि जे नवकविता अभिव्यक्तिमे गद्यक निकट भ' गेल अछि। अपनेक विचारसँ ई मान्यता कत' धरि उचित? जँ अपने मानैत छी तँ कोन एहन विवशता छैक जे कविताकें गद्यात्मक बनौने जा रहल छैक? कृपया ओहि बिंदुकें स्पष्ट कयल जाय जे कविताकें कविता आ गद्यकें गद्य बनबैत अछि।

उत्तर—हम ई स्वीकार करैत छी जे नवकविता अभिव्यक्तिमे गद्यक निकट भ' गेल अछि। अजुका समयमे जीवनक विषमता, संबंधक टूटब आ पारस्परिक अविश्वाससँ उपजल मन:स्थितिमे मोनक गीतात्मकता आ लयात्मकता समाप्त भ' गेलैक अछि। तें गीतसँ छंदहीन कविता आ आब छंदक बंधनसँ मुक्तियोसँ आगाँ बढ़ि गद्यक समीप कविता आगमन। लोक असुरक्षित वा सशंक भ'क' गीतात्मक आ लयात्मक स्वरमे अपन अभिव्यक्ति नहि क' पबैछ। तें हकमैत आ तोतराइत स्वरमे गद्य-खंडेक माध्यमसँ अपन अभिव्यक्ति संभव रहि गेलैक अछि। एक टा आर बात छैक—पहिलुका सुरक्षित आ सुखी जीवनमे रचि-रचिक', रेघा-रेघाक' वायवीय उड़ानो भरब संभव रहैक, मुदा से आब नहि। छंद-लयसँ युक्त अभिव्यक्तिमे एहन अवकाश भेटैत रहैक जे लोक दोसरो दुनियाक गप्प क' पबैत छल। आब यथार्थसँ सोझ साक्षात्कार मनुक्खकें वायवीय होयबाक अनुमति नहि द' सकैछ। तें गद्येक समीप आबिक' अधिक यथार्थवादी आ विश्वसनीय ढंगसँ अपन अभिव्यक्ति संभव रहि गेलैक अछि। कविताकें गद्यक समीप आबि गेलोपर ओकर आंतरिक लयात्मकताक रक्षा आवश्यक रहैछ। एही बिंदु पर आबिक'ओ गद्यसँ आ तकर रुच्छतासँ फराक भ' जाइछ।

प्रश्न—आधुनिक कविताक नव्यतम शिल्पक रूपमे दीर्घ कविता अपनाओल जा रहल अछि। आधुनिक भावबोधक दृष्टिसँ अपने एहि स्वीकारक पाछाँ कोनो विवशताक अनुभव करैत छी? जँ हँ तँ मैथिली साहित्यमे दीर्घ कविताक अभावक कारण अपने की बुझैत छी?

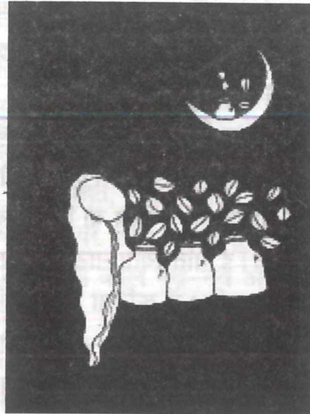
उत्तर—मैथिलीमे दीर्घ कविता पहिनो लिखल गेल अछि। पहिलुका दीर्घ कवितामे कोनो-ने-कोनो प्रकारक कथा होइत छल, कविताक पैघ होयब ओहि कथाक लंबाइपर निर्भर करैत छल। तहिया ई कविक एकांत इच्छापर निर्भर छल, मुदा आइ से बात नहि रहलैक। पहिने लोक आनक यथार्थपर कविता रचैत छल, आइ कवि अपन अनुभूत यथार्थक अभिव्यक्ति लेल कवितापर निर्भर रहैछ। अजुका कवि सभ लोकजकाँ अपन सुरक्षाक खोजमे अछि, दुनियाक औन्हल विषमतासँ व्यग्र। ओकरा एखने सभ किछु कहि देबाक हड़बड़ी छैक। जीवनक यथार्थ भाव, बिंब वा विचार बनि कवितामे प्रस्तुत होइछ आ तकरामे गतिमयता होइत छैक। ई गतिमयता नाटकीय हाइछ आ तें कोनो कविताक समापन पूर्वनियोजित ढंगसँ संभव नहि। तें कविता समाप्त भैयोक' असमाप्त रहैछ आ हिंदीक कवि स्व. मुक्तिबोधकें ई कह' पड़लनि जे—'नहीं होती, कहीं भी कविता खतम नहीं होती।' अपन समकालीन परिस्थितिक कुचक्रपूर्ण दबावक विरुद्ध संघर्ष हो अथवा

फोंक पड़ल आभिजात्यक गहुमन। फन तोड़बाक चेष्टा—लोक आब विकल्पहीन भ' गेल अछि आ तें आइ ओकर अभियोग आ विलापकें तुरत अभिव्यक्ति आवश्यक छैक। तें प्रक्रिया कोनो तरहक हो, कविक लग कहबाक लेल बहुत-किछु छैक। एहि स्थितिमे कविताकें सपाटो होयबाक बड्ड आशंका रहैत छैक, मुदा से जे हो, कविक लेल कवितापर निर्भर करैत अपन सभ बात तुरत्ते कहि देबाक स्थितियोकें सहजे स्वीकार कयल जयबाक चाही।

आजुक मैथिली कवितामे दीर्घ कविताक अभाव वस्तुत: ध्यान आकृष्ट करैछ। थोड़ेक जे उपलब्धो अछि से कोनो विवशतासँ नहि, कथावाचक कविक निस्पृह कलाकारिताक रूपमे गढ़ल गेल अछि। प्रश्न अछि जे एहि भाषामे दीर्घ कविताक अभावक की कारण? की मिथिलाक एखनुक विभीषिकासँ एकदम्मे अनस्पृष्ट अछि? की एखनो ओ खंड-खंडमे रचि-रचिक' अपन मोनक बातकें शांतिपूर्वक अभिव्यक्ति देबा लेल सुविधा ताकि लैछ? हमरा एखन ई बात ओझरायल लगैछ। ओना एतबा एखन सुरक्षित ढंगसँ कहल जा सकैछ जे विद्यापतिक मृतात्मा एखनो एतुक्का जनमानसपर भार जकाँ लादल छथिन आ तें यथार्थसँ हँटिक' अपन डफली आ अपन राग लोककें कहुना उपलब्ध भैए जाइत छैक। प्राय: एतुक्का जनमानसक निस्पृहता सेहो एकटा कारण भ' सकैछ। कदाचित सत्यकें नुकयबाक स्वभावपर आ गोंतलो रहलापर हरदा नहि बजबाक निर्लज्जतापर सेहो मैथिल जातिक एकाधिकार छैक। सही बात जे होउक। ई स्थिति तँ अछिए जे अजुका मैथिली साहित्यमे दीर्घ कविताक अभाव अछि। हम विद्वान आलोचक आ अचेत कविवर्गसँ एहि प्रश्नक उत्तरक अपेक्षा रखैत छी।

मो. 7482066855

['मैथिली दर्शन' कोलकाता, मइ 1976]





मूल्यांकन

कमलानंद झाक आगमन मैथिली साहित्यक आलोचना लेल निःसन्देह एक शुभ संकेत थिक। हिन्दीमे ओ अनेक महत्वपूर्ण काज कयलनि अछि। मैथिलीमे एखन उपन्यास साहित्य पर हुनक आलोचनाक दृष्टिसंपन्न पोथी आयल छनि। एहि अंकमे ओ चारिटा महत्वपूर्ण कथाकार पर विमर्श कयलनि अछि। एहि चारू लेखकक अतिरिक्त कवि-उपन्यासकार दिलीप कुमार झा कवि मिथिलेश कुमार झाक कविता संग्रह पर विचार कयलनि अछि, सेहो एहि अंकमे जा रहल अछि।

ललितेश, सुस्मिता, अशोक आ शिवशंकर कथाक चारि आयाम

कमलानंद झा

'मानव मनक अंतर्द्वन्द्व, उहापोह, किंकर्तव्यविमूढ़ता आदिक सुंदर विश्लेषण ललितेश मिश्रक कथासभमे भेल अछि। हिनक कथा जटिलताक भार नहि उघैत अछि, अपितु सामान्यो पाठक लेल सहज-संप्रेष्य अछि। ई एक प्रासंगिक आ महत्वपूर्ण पक्ष थिक जे हिनक कथाकारकें नव शिखर प्रदान करैत अछि। अपन कथा सभमे चरित्रक एहन मेंही चित्रण सामान्य कथाकार नहि क' सकैत अछि, अपितु, ताहि लेल जतेक श्रम, दृष्टि, अनुभवक व्यापकताक जरूरति होइत अछि, से ललितेशजीक लग सहज रूपें उपलब्ध अछि।'—**केदार कानन**

बीच वैतरणीमे (2018) ललितेश मिश्रक अठारह गोट कथाक संग्रह अछि। ई कथा सभ सन 1968सँ ल' क' सन 1978 धरि विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित भेल अछि। ई बात स्पष्ट जे संग्रहक कथा सभ आइसँ पचास-साठि साल पूर्व लिखल गेल अछि। ई अकारण नहि जे आजुक सचेत पाठककें एहि कथा सभमे कोनो विशेष नवताक दर्शन नहि हो। कारण विगत पाँच-छह दशकमे कथा-लेखनक वस्तु आ प्रस्तुति आदिमे आमूल-चूल परिवर्तन भेल अछि। यद्यपि कालजयी कथा संग ई बात लागू नहि होइत अछि, कियैक तँ कालजयी रचना कतेको तरहक सीमाक अतिक्रमण क' जाइछ। ध्यान देबाक बात ई जे जाहि समयक ई कथा सभ अछि ओही समयमे लेखकक अवस्था अट्ठारह वर्षसँ ल' क' अट्ठाइस वर्ष छलनि। महत्वपूर्ण बात ई जे ललितेश मिश्रक कथा-प्रवृत्ति आ साहित्य-विवेक किशोरावस्थामे जागि गेल छल।

ललितेशजीक कथा मिथिलाक गामक भयावहे नहि अपितु क्रूर यथार्थसँ साक्षात्कार

करबैत अछि। साठि-सत्तर दशकक मिथिलाक अभावग्रस्त, विपन्न आ निरन्न गाम आँखिक सोझाँ ठाढ़ भ' जाइत अछि। अर्थ लोकक परस्पर संबंध धरिकें चरमरा दैत छैक। हिनक कथामे गाम, गामक समाज, परिवार, परिवारक अंतर्कलह, टूटैत-बनैत संबंध आदि सभ किछु अत्यंत सुनियोजित रूपें आयल अछि। ओहि समयमे गामसँ पलायन ओतेक व्यापक स्तर पर नहि भ' रहल छल फलस्वरूप मनिआर्डर संस्कृतिक विकास नहि भेल छल। गाममे रुपैयाक (कैश) घोर अभाव छल। कृषि-कर्म भाग्य भरोसे छल। ठीको-ठाक परिवारमे बीमारीक इलाज तक लेल कैंचाक दर्शन दुर्लभ छल। हिनक कथा सभ ओहि समयक मिथिलाक कुहरैत आ हकमैत गामक बिम्ब उपस्थित करैत अछि। स्त्री-पुरुष संबंध हिनक कथाक आवश्यक कथ्य थिक। सेक्स मानव जीवनक अभिन्न हिस्सा रहल अछि आ तैं भारतीय कथा साहित्ये नहि अपितु विश्व कथा साहित्यमे सेक्सकें बुझबाक प्रयास निरंतर कयल गेल अछि। ललितेशजीक कथा सभमे दमित यौनाकांक्षाक विविध रूप देखबामे अबैत अछि।

कथाकारकें ग्रामीण समाजक बहुत फड़िच्छ पहिचान छनि। ध्यान देबाक बात ई जे जाहि समयमे अन्य भारतीय भाषामे गामकें अनावश्यक महिमामंडन कयल जाइत छल, गामक प्रति लेखक लोकनि नोस्टेलजिक भ' जाइत छलाह, ओहि समयमे ललितेशजी गाम-मोह नहि घेरैत छनि। एतए स्पष्ट करब आवश्यक जे गाम-प्रेम आ गाम-मोहमे अंतर होइछ। गाममे जे कोनो कमी छैक ओहि कमी संग गामसँ प्रेम संभव, प्रेम वास्तविकताक अवहेलना नहि करैछ। एकर विपरीत मोह वास्तविकता पर परदा द' दैछ। कहबाक आवश्यकता नहि ललितेशजीक कथा गाम-प्रेमसँ भरल अछि तथापि गामक विद्रूपताकें ओ अंदर तह तक जाक' देखि आयल छथि आ पूर्ण आत्मविश्वासक संग ओकर विवेचन प्रस्तुत करैत छथि।

संग्रहक महत्वपूर्ण कथा निर्वासन जतय भाइ-भाइक बीच स्वार्थलिप्साक कथा कहैत अछि ओतहि भय अग्रजक क्रूरताक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करैत अछि। निर्वासन कथामे ज्येष्ठ भाइ देवदास जखन दीर्घ अवधि धरि निर्वासित जीवन बिता गाम घुरैत अछि तँ दूनू छोट भाइकें प्रसन्नताक बदला बहुत अनसोहांत बुझि पड़ैत छैक। कारण, दूनू भाइक गिद्ध-दृष्टि रामदासक छोटछिन घराड़ी पर लागल छलैक। दूनू भाइ रामदासकें ततेक ने दिक कयलक जे ओ पुनः एक दिन गामसँ पड़ा जाइत अछि। एहिसँ दारुण स्थिति आर की भ' सकैत अछि जे अपन घर आ भाइसँ बेसी सुख ओकरा निर्वासित जीवन बुझि पड़लैक। भय अग्रजक निष्ठुरताक शिकार एकटा छोट भायक मार्मिक कथा अछि। भारतीय संस्कृतिमे पिताक अभावमे ज्येष्ठ भाइकें पिताक स्थान देल गेल अछि। भय कथाक अग्रज अपन छोट भाइकें देख' नहि चाहैत अछि। बात-बात पर मारि आ फज्जति। छोट-सँ-छोट वस्तु लेल ओ तरसि जाइत अछि, मुदा जेठ भाइक लेल धन सन। लेखक अग्रजक कोपभाजन बनल पितृहीन बालकक व्यथाकें अत्यंत भावुकताक संग प्रस्तुत कयलनि अछि।

ललितेशजीक कथामे ग्रामीण और शहरी मध्य आ निम्नवर्गक समस्या अपन सम्पूर्ण विकरालताक संग उपस्थित होइछ। कखन हरब दुख मोर एकटा रिटायर व्यक्तिक पुत्रक मोहभंगसँ उपजल अवसादपूर्ण कथा अछि। कथाक विशिष्टता ई जे डायरीक माध्यमसँ कथाकार यथार्थक चित्र खिचलनि अछि। मामाक छूटि गेल डायरी जखन कथानायक पढ़ैत अछि, तखन ओकरा वास्तविकताक परिचय होइ छै। ओकरा ज्ञात होइत छैक जे मामा कोन भीषण दुखसँ गुजरि रहल छथि। जाहि पुत्रक लेल लोक जान-प्राण देने रहैत अछि ओ पुत्र लगमे रहितो, लगमे नहि रहैछ। कोन तरहें रिटायर वृद्ध पितासँ कतेक अइंठ ली ताही पर पुत्र सभक बकोध्यान। मामाक डायरी पढ़ैत-पढ़ैत कथानायकक आँखि नोरा जाइत अछि। 3 मइ 1970क मामा अपन डायरीमे लिखैत छथि, 'आइ भोर धरि हमरा पाँजरमे बड़ जोर दर्द रहल। छटपटाइत रहलहुँ। हमरा पूर्ण विश्वास भ' गेल छल जे आब नहि बाँचि सकब। मुदा भगवानक इच्छा...। रातिमे तँ मरिये गेल छलहुँ...। ततेक जोरसँ पाँजरमे दर्द भ' उठल छल जे कान' लगलहुं जोरसँ...। क्यो लग पर्यंत नहि आयल। कतेक चिकरलहुँ, हौ ब्रह्मानन्द- हौ महानन्द क्यो आबह कनेक लग, मरैत छी, मुदा क्यो कथी लेल आओत? एक्कोटा नेना पर्यंत नहि...। रातिमे एहने बुझायल जे हमरा कोनो बेटा, बाल-बच्चा नहि अछि। ककरो लेल हम जे किछु कयलहुँ आ जे आशा ककरोसँ करैत छी से सभटा भ्रम थिक। कोनो टा सत्य, यथार्थ नहि। भगवान बचौनिहार छलाह। वैह तँ हमर रक्षक छथि।' (बीच वैतरणीमे, पृष्ठ 35)

भूख आ सेक्स मानव जीवनक आदिम प्रवृत्ति रहल अछि। ललितेश मिश्रक कथामे एहि दूनू प्रवृत्तिक कतेको रूपसँ साक्षात्कार होइत अछि। प्रेम आ सेक्सक बीच महीन अंतरकें कथाकार कतेको कथाक माध्यमसँ स्पष्ट कयलनि अछि। आगि आ पाथर कथामे कथाकार सेक्सक पाछू बेहाल आ मातल प्रोफेसर त्रिभुवननाथ आ जानकीनाथक विचित्र व्यवहारक रेखांकन कयलनि अछि। एहि दूनूक लोलुप दृष्टि कम वयसक सुन्नरि विधवा इन्द्रबाला पर लागल रहैत अछि। इन्द्रबाला शदीह सैनिक अधिकारीक पत्नी रहैछ। समाजमे असगर स्त्रीक जीवन कतेक दुरूह भ' सकैछ तकर वस्तविकताक उद्घाटन एहि कथामे भेल अछि। गिद्ध-लोलुप-पुरुष-दृष्टि असगरुआ जनानीकें गीड़ लेब' चाहैत अछि। अपनाकें सुरक्षित बचा लेब एहन स्त्रीक लेल बड़ पैघ चुनौती भ' जाइछ। ई कथा दमित स्त्री-यौनिकता पड़ताल सेहो करैत अछि। एक दिस कथा नायिका इन्द्रबालाकें त्रिभुवननाथ आ जानकीनाथक यौन आकांक्षा अत्यंत अनसोहांत लगैछ, मुँह पर थूक फेकि देबाक मोन करैछ। दोसर दिस, अपन देहक विवशतासँ सेहो परेशान रहैत अछि। समाजक आगू ओ वैधव्य जीवनक निर्वाह क' लैत अछि, मुदा एकांतमे यौनाकांक्षा ओकरा पीड़ित-प्रताड़ित करैत छैक। मैथिली कथामे स्त्री यौनिकता आ ओकर उद्दाम प्रवाह पर बहुत कम कथा लिखल गेल अछि। मुदा ललितेश मिश्रक कथामे स्त्री यौनिकता पर कतेको कथामे विस्तारसँ बात भेल अछि। आगि आ पाथरमे कथाकार इन्द्रबाला पर यौनोत्तेजनाक

अत्यंत मार्मिक वर्णन कयलनि अछि, 'एहन अनुभव भेलनि जेना आदमकद अयनामे जानकीनाथ आ त्रिभुवननाथ उठा-पटक आ मारि पीट क' रहल छथि।...एहन बुझि पड़लनि जेना ओहि अयनामे एकटा कोठली समायल छैक। आ ओही कोठलीमे यत्र-तत्र नुआ, ब्रेसरी, पेटीकोट, आंगी छिड़ियाअल छैक। आ एकटा मस्त हिरणी सन एकटा निवस्त्र समर्थि मौगी सेहो ओही कोठलीमे बताहि जकाँ ठाढ़ि अछि। ओ आख्यान करैत छथि जे ई तँ हुनके प्रतिरूप थिक। ओ केशराशि सोझरायब बंद क' दैत छथि। अपन दूनू केहुनीकें ठेहुन पर टिका क' दूनू तरहत्थीसँ अपन गुदगर गालकें दाबि लैत छथि। आ कान' लगैत छथि-दहोबोर...।' (बीच वैतरणीमे, पृष्ठ 47)

स्त्रीजाति प्रेमक भूखल होइछ, मुदा ओकरा परिवारमे कदाचिते प्रेम भेट पबैत छै। दायित्व आ कर्तव्यक निर्वाह करैत-करैत ओकर प्रेम नहि जानि कत' बिला जाइत छैक। पतिक ध्रुव उपेक्षा कोनो स्त्रीकें अन्य पुरुषसँ सामीप्यक अवसर प्रदान करैत छैक। कथा ठेसक महालक्ष्मी अपन पतिक उपेक्षाक शिकार छथि। चन्नो भाइकें खेत किनबा आ संपत्ति अरजबामे मोन लागनि 'अड़हूल फूल' सन पत्नीक प्रति कोनो आकर्षण नहि छलनि। महालक्ष्मी जीवनमे वसन्तक बाट तकिते रहि गेलीह, मुदा हुनका भाग्यमे पतझरे लिखल छल। 'कतेको बरिसात आयल, जड़काला गेल, पुरिबा-पछबा लहरायल, किन्तु महालक्ष्मी ओहिना बरहमासा-बिरहा गबैत रहलीह, फूल काढैत, तुलसी चौड़ा आ चिनबार निपैत रहि गेलीह। आ चन्नो भाइ भांग खाइत, खेत कीनैत रहि गेलाह। मुदा महालक्ष्मीक अंगमे, देहमे, आँखिमे कहियो कोनो उजाहि नहि चढ़लनि, कोखि नहि भरलनि।' थाकि-हारिक' एक दिन महालक्ष्मी डाक्टरसँ देखेबाक बात कहि दैत छथिन। ई बात चन्नो भाइकें ततेक खराब लगलनि जे घर छोड़ि चलि जाइत छथि। पत्नी बहुत चिट्ठी-पतरी कयलनि, मुदा कोनो फायदा नहि।

चन्नो भाइक बाल संगी लूटन झाक अबरजात महालक्ष्मीक घर पर रहनि। अपन मित्रक एहि उदासीनतासँ ओहो दुखी रहैत छलाह। महालक्ष्मी अपन दुख लूटन झाकें छोड़ि आओर ककरा कहि सकैत छली। यैह सहानुभूति एक दोसराक समीपताक कारण बनल। लूटन झा महालक्ष्मीक दुख कम करबाक उद्देश्यसँ गंगा स्नान जयबाक प्रस्ताव दैत छथिन, जकरा महालक्ष्मी सहर्ष स्वीकार क' लैत छथिन। 'बालसंगीक एहि सहयोग-वचन, आत्मीय वचनसँ अपन मोनक दुख केर अन्हरियामे सुखक एकटा कोनो किरन देखलनि। स्नेहक रेशमी डोरि जेना खूब कसा गेल होइनि।' संगे-संगे गंगा स्नानक सुख भोगि दूनू गाम आबि जाइत छथि। कथामे दूनू गोटाक सघन आत्मीय सम्बन्धक स्पष्ट संकेत कयल गेल अछि। मुदा गाम घुरि अयलाक बाद महालक्ष्मीक बिमार पड़ब आ ओकर मृत्युक कोनो तारतम्य कथामे स्पष्ट नहि होइछ। दूनू गोटाक बीच संबंध विकसित होयब जहिना सहज घटना मानल जायत तहिना महालक्ष्मीक मृत्यु असहज। संभव जे एहि विकसित होइत संबंधकें लेखक कोनो परिणति धरि पहुँचेबाक द्वंद्वसँ

बचबाक हेतु कथाकें एहि तरहक अंत कयलनि अछि।

बीच वैतरणीमे कयकटा कथा स्त्री-पुरुषक बीच विकसित होइत संबंधक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करबाक प्रयास करैत अछि, मुदा अधिकांश कथामे संबंधक कोनो स्पष्ट रूपरेखा नहि बनि पबैछ, आ ने कोनो सुव्यवस्थित यौन-मनोविज्ञानक आधार प्रस्तुत क' पबैछ। स्त्री-पुरुषक संबंधक दृष्टिकोणमे लेखक असमंजसपूर्ण स्थिति स्पष्ट अछि। कोनो कथामे सम्पूर्ण आत्मविश्वासक संग विवाहेत्तर संबंधक स्वीकारोक्ति नहि भेल अछि। मान्य सीमा रेखाकें लेखक पार नहि क' सकलाह अछि।

फाटह हे धरतीक बुचिया अपन पिताक बिमारी आ पेटक आगि लेल अपन देह तकसँ समझौता क' लैत अछि। बड़ा बाबूक घरक काज करैत-करैत बुचिया बड़ा बाबूक मोनक आगि सेहो शांत कर' लगैत अछि। कारण, बड़ा बाबूक 'उदारता' पर बीमार पिताक इलाज संभव छैक। भूख आ बिमारी नैतिकताक सभ आवरणकें छिन्न-भिन्न क' दैत अछि। कथा ई कहबामे सफल रहल अछि जे पेटमे जखन आगि लागल रहैत छैक तँ नैतिकताक उपदेश निरर्थक सिद्ध होइछ। नैतिकता भरल पोख लेल होइत अछि। पतिया, नटुआक नाचमे जे देखलक से ओकरा अपना जीवनमे बिसा गेलैक। नाचमे युवतीक विवाह सत्तर सालक दंतहीन बूढ़सँ भ' जाइछ। नाचमे ई देखब आ जीवनमे एकरा झेलब, दूनूमे बड़ अंतर होइछ। पतियाक सभ स्वप्न बूढ़वरसँ विवाह होइते स्वाहा भ' जाइछ। चतुर्थीक पराते ओहि वृद्धवरकें जे सुलबाहि उखड़ैत छै, से ओकर परान ल'क' जाइत छैक। अभावग्रस्त परिवारक स्त्रीक दुर्गतिक जेहन सिलसिलेवार कथा ललितेश मिश्र लिखैत छथि, अन्यत्र ताकब दुर्लभ।

जीवनमे सुख, दुख, अवसाद, उत्साह, प्रसन्नता सभ किछु होइत छैक। अभावग्रस्त समाजमे जतय दुखक कोनो ओर-छोर नहि रहैत छै, ओतहु उछाह आ उत्साह हुलकी मारि लैत छैक। यैह हुलकी अवसादपूर्ण जीवन के सरस बनबैत अछि आ सम्पूर्ण दुख अछैत लोक जीवन चलबैत अछि। यैह मनुष्य जीवनक प्रेरक तत्व होइछ। दुखमे सुखक खोज मनुष्यताक जिजीविषा होइछ। घोर अभावग्रस्त जीवनमे सेहो सभ तरहक रंग होइत अछि। रेणुजीक कथा एहि विविध रंगी जीवनक सर्वोत्तम कोलाज मानल जाइछ। ललितेश मिश्रक कथामे एकहिटा रंग बेर-बेर अबैत अछि। दुख, अवसाद आ पीड़ाक रंग। ओ जिजीविषा जे लोक कें सम्पूर्ण संकटक बावजूद जीवन-रागसँ बन्हने रहैत अछि, ओकर अभाव हिनक कथामे भेटैत अछि।

सुस्मिताक बेधक दृष्टि

'अपन कथा सभक द्वारा सुस्मिता मैथिली स्त्री-विमर्शक एक मॉडल पेश करैत छथि। कहल गेल अछि जे पृथ्वी पर जँ स्त्री नहि होइत तँ मानव-समुदाय व्यवस्थित आ संगठित भ' नहि जीबि सकैत छल ने विकास क' सकैत छल। स्त्री जँ आत्मस्थ हो तँ ओ मात्र

जोड़ब जनैत अछि। सुस्मिताक कथामे अनेक स्त्री, कतियाएल-बाड़ल स्त्री सभ अबैत अछि। क्यो चमाइन, क्यो मुसलमानिन। सभक अपन दुख छै। ई सब आपकताक संग आयल अछि जेना मैथिली कथामे एहिसँ पहिने कहियो नहि आयल छल। एहि सब कथूकें जोड़ै छै कथाकारक संवेदना।'

तारानंद वियोगी

सुस्मिता पाठक कथा लिखबाक हेतु कथा नहि लिखैत छथि, मैथिल जीवनक विडंबना हुनकासँ कथा लिखबा लैत अछि। मिथिला समाजक वंचित वर्ग विशेषक' पीड़ित आ दुखसँ झमारल स्त्रीगण अपन समस्त दयनीयताक संग हुनक कथामे विन्यस्त अछि। रस्ता चलैत कोनो पीड़िताकें देखैत लोकबाग आगू बढ़ि जाइत अछि, सुस्मिता ओतहि ठमकि जाइत छथि, ओहि स्त्रीक पीड़ाकें बुझबाक प्रयास करैत छथि, ओकर घनीभूत वेदनाक अनुभव करैत छथि, ओकरा प्रति गहींर संवेदनासँ जुड़ि जाइत छथि। यैह सघन जुड़ाव हुनकासँ करुण रससँ पगल-भीजल कथा लिखबा लैत अछि। निरालाजी अपन प्रसिद्ध कविता सरोज स्मृतिमे लिखलनि, 'दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ जो आज तक नहीं कही।' सुस्मिताक कथा एहि 'अनकहल' दुखक कथात्मक रूपांतरण अछि। हिनक अधिकांश कथामे एहन स्त्रीसँ आत्मसाक्षात्कार होइत अछि जकरा जीवनमे कहियो उजासक छोटछिन कतरा नसीब नहि होइत छैक। कथामे ओ इहो स्पष्ट करैत छथि जे एहि अंतहीन दुखक कारण 'भाग्य' नहि अपितु वंचक, धूर्त आ घोर स्वार्थी लोकक काइयांपन आ अहंकार होइछ।

घर परिवारमे नुकायल-सन्हियायल छोट-छोट क्षुद्रता आ संकीर्णताकें सुस्मिताक बेधक दृष्टि पकड़ि लैत अछि। कथाकार इहो संकेत करैत छथि जे ई क्षुद्रता मैथिल संस्कारमे रचि-पचि गेल अछि। आगंतुक, अपन-अपन धर्म, बिस्कुट, योद्धा, दखल तथा सांपिन आदि कथामे एहि क्षुद्र भावक अनेक रूपक दर्शन होइत अछि। आगंतुक कथामे सासु-ससुरक स्नेहिल प्रिय जनकें कहियो-काल भोजन करायब पुतौहुकें सह्य नहि। थाकल-ठेहियाल आगंतुककें पुतौहुक घोकचल आँखि आ तनल भृकुटिक कारण चीन्ह'मे देर नहि लगैत छै। ओ दूर जयबाक बहन्ना बना अविलम्ब घुरि जाइत अछि। ओकरा भोजन करयबाक सासुक आकांक्षा पूरा नहि भ' पबैत अछि। सासुक दयनीयता, आगंतुकक द्विविधा आ पुतौहुक 'व्यावहारिकता'क द्वंद्वसँ कथामे चमक आबि गेल अछि। योद्धा पराजित रधबाक 'विजय' कथा अछि। कथाक वैशिष्ट्य ई जे रधबा हारियो क' जीति जाइत अछि। हिन्दीमे सुदर्शनक (प्रेमचंदकालीन कथाकार) एकटा अत्यंत प्रसिद्ध कथा अछि हार की जीत। ओहि कथासँ एकदम भिन्न धरातल पर रधबा हारिक' जीतियो नहि जाइत अछि बल्कि घाघ मालिकाइन आ मालिकक क्षुद्रताकें विलक्षण सांकेतिक ढंगसँ देखार सेहो क' दैत अछि। रधबा काज कर'मे दिनकें दिन आ रातिकें राति नहि बुझैत

अछि। मलिकाइनक 'ब्याजस्तुति' पर लहालोट भ' जाइत अछि, 'आर जे कहथुन काकी, ई लछमी थिक। अन्नक अनादर नहि करैत अछि। बासि-तेबासि, ऐंठ-कांठ जे द' दियौ, खा लेत।'

मलिकाइनक आगंतुक काकाजीकें रधबाक हाड़तोड़ परिश्रमक एवजमे डेढ़ सौ महिनवारी बड्ड बेसी बुझि पड़लनि, ताहि परसँ नित्य गोबर ल' जायब आरो अखरलनि। कक्का अपन भतीजीकें 'दिव्यज्ञान' दैत कहैत छथिन, 'ई नोकरबा तँ बड्ड महग छौक। नहि-नहि गोबरेक तरमे काज करबा। टाका देब बन्न क' दही।' जे गोबर भतीजीकें बलाय लगैत छलनि, से कक्काजीक 'गीता ज्ञान'सँ चानन बुझाय लगलनि। कक्काजी एकटा टेल्हु (बाल श्रमिक)कें देबाक प्रस्ताव द' दैत छथिन। पाइक जिज्ञासा पर कक्काजी अपन व्यापक आ विस्तृत अनुभवक परिचय दैत कहैत छथिन, 'धुर, अखन पाइक कोन गप्प? बच्चा छैक। पाँच छओ मास तँ अहिना टराइलमे। जँ ओकर माय-बाप जोर करतै तँ बेदरा कहि क' पचास टाका पर बात पक्का क'लिहें।' बड्ड सस्ता पड़तौक। एहि तरहें रधबाकें हटेबाक 'चक्रव्यूह' रचल जाइछ। एक दिन रधबा आगि तपबाक लेल दू टा चेरा घर ल' जाइत अछि। देखैत-देखैत ओ चेरा दूटा सीलमे बदलि जाइत अछि। ओकरा पर दूटा बड़का-बड़का सील चोराक' लय जयबाक दोष लगैत छैक। रधबा ई बर्दास्त नहि क' पबैछ। ओ अपन छतमेसँ दू टा मोट बत्ती घीचि ल' अनैत अछि। एहि दृश्यक चित्रात्मक आ गत्यात्मक वर्णन कथाकें गरिमासँ भरि दैत अछि, 'फट्टी उठौने मलिकाइनक आँगन धड़धड़ाइत पहुँचि गेल। मालिक कुरसी पर बैसल निचैनसँ चाह पीबि रहल छलाह। मलिकाइन मधुर हास्यक संग कातमे बैसलि पान लगबैत छलि। रधबाकें एहि हालतमे देखि दूनू गोटे चकित भ'उठलाह। ओ फट्टीकें मलिकाइनक पयर लग बजारलक-'मलिकिनी लिअ, मोटका गाछक सील। यैह हम ल' गेल छलहुँ।'

एहन-एहन क्षुद्रता हम सभ सब दिन देखैत छी, मुदा एहि क्षुद्रतासँ दोसराक कतेक हानि भ' जाइत छैक, तकर अनुभव नहि क' पबैत छी। गरीबक विवशतासँ लाभ उठाब'मे कोनो संकोच नहि। नौकरकें कमसँ कम पाइ देब वा बोझ ढोइत फेरीवालासँ मोल-भाव क' कमसँ कम पाइमे समान खरीद लेब चतुराइ मानल जाइछ। कतेको बेर फेरीवाला लागत भावमे समान बेचि दैत अछि। साग-सब्जीकें खराब भ' जयबाक डर वा भारी समान माथ पर लदने-लदने तंग आबि ओ मोल-भावमे पराजित भ' जाइछ। दोसर दिस कमसँ कम दाममे वस्तु मोल ल' लयबाक उत्साह आ प्रसन्नता देख' जोगरक होइत अछि। मुदा जाहि विवशतामे नौकर कम पाइ पर खटैत अछि वा कम दाममे समान द' दैत अछि, ओकर घरक चूल्हि जरलै वा नहि, ओहिसँ कोन सरोकार? सुस्मिताक कथा एहने-एहने क्षुद्रताक यथार्थ उद्घाटित करैत अछि। संगहि हारल, झमारल लोकक उदास आँखिकें पढ़बाक प्रयास सुस्मिताकें सरोकार सम्पन्न कथाकार बनबैत अछि।

राग-विराग ओहि स्त्रीक कथा कहैत अछि जे पाँचटा बेटाक माय होयबाक गर्वसँ

भरल अछि। पितृहीन पाँचों बेटाकें कोन तरहें ओ पोसैत अछि से वैह जनैत अछि। मुदा वृद्धावस्थामे कुष्ठ रोगसँ पीड़ित भ' जयबाक कारणे वैह पाँचो बेटा ओकरा घरसँ दूर एकटा खोपड़ीमे पटकि अबैत छै। एक-एकटा अन्नक दाना लेल ओ तरसि जाइत अछि। गाम-घरमे आइयो कुष्ठ रोगक ई भ्रान्ति आ अंधविश्वास पसरल अछि जे ई देवी प्रकोप आ लाइलाज बिमारी अछि। कतेको लोककें ई बिमारी समाजसँ तिरष्कृत क' दैत अछि। सुस्मिताक ई कथा एहि सामाजिक बहिष्कारक मार्मिक कथा बुनैत अछि।

संवेदना जतायब आ संवेदित होयब सर्वथा दू भिन्न चीज होइछ। जतयबामे प्रदर्शनक भाव प्रमुख रहैछ। एहिमे लोककें किछु नहि जाइत छैक-'वचनम किम दरिद्रता'। लेखिका अपन कथामे बहुत महीन बुनावटि संग एहि दूनूक अंतर स्पष्ट कयलनि अछि। प्रतीक्षा कथामे सासुर आ नैहर दूनू ठामसँ ठुकरायल गेल वृद्धाक प्रति कथा नायिकाक संवेदनाक 'हिलोड़' प्रदर्शनक उदाहरण बनि जाइछ। विपत्तिक मारल ओहि वृद्धाकें दू सै टाकाक खगता रहै। राकस भाइ ओकर सभटा गहना-गुड़िया छीनि लेने छलैक। गरमे मात्र एकटा चेन बचल छलै, 'हमर साहेब अपनहि हाथे पहिरौने छलाह...पहिल कमाइक सनेस।' एकर साहेब सेनामे कोनो छोट पद पर कार्यरत रहैक, युद्धमे कत' मरि-खपि गेलै, कोनो पता नहि। एहि वृद्धा लेल 'प्राण तक देबाक लेल' तत्पर कथा नायिका ओ चेन ल'क' ओकरा दू सै टाका दैत छै। अपन साहेबक पहिल कमाइक प्रेमपूर्ण सनेस दैत ओहि वृद्धा पर की बीतल हैत तकर अनुमाने कयल जा सकैत अछि। जाइत-जाइत वृद्धा जे कहैत गेल ओ हृदय कें चाक क' दैत अछि, 'अहाँकें हमरा पर विश्वास अछि ने? अहाँक पाइ घुरा देब। हम अपन साहिब जकाँ झूठ नाहि बजैत छी...। ओ कहने रहय...हम चारि दिनमे घुरि आयब...मुदा नहि आयल। मुदा बेटी, हम चारि दिनमे अबस्से घूरब अहाँ लग।...हम अपन साहेब जकाँ झूठ नहि बजैत छी...।' ओहो अपन 'साहेब' जकाँ फुसिये बाजल। चारि दिन के कहे चारि बर्ख बीत गेल ओ घुरि क' नहि आयल। दू सै टाकामे कथा नायिकाकें हजार टकाक गहना परि लागि गेलै। ओकर अनुभवी आँखि बुझि गेल रहै जे 'ने राधा के नौ मन घी हेतनि आ ने राधा नाचती'।

कलाकार आ साहित्यकार सेहो कम पाखंडी नहि होइत अछि। सुस्मिताक कथा ककरो रियायत नहि दैत अछि। एहन तरहक पाखंडी कलाकार- साहित्यकारक पर्दाफाश करबामे हिनक कथा पाछू नहि रहैछ। 'सत्यक चेहरा'मे ओ एहने दू गोट कलाकारक पाखंडकें उद्घाटित कयलनि अछि। स्टेशन पर गरीब, दुखिया, भूखल बच्चाकें देखि दूनूगोटाकें 'कोंढ़ फाट' लगैत छनि। मार्मिक आलेख लिखबाक निश्चय करैत छथि। 'भिखमंगाक उपेक्षा आ कुलीक रूपमे बालश्रमिकक शोषण ओहि दूनूसँ देखल नहि जा रहल छलै।' मुदा दोसराक दुख देखि अपन भूख तँ मेटाइत नहि छै। जखन दूनूकें भूख लागल त'अपन-अपन बैगसँ भोजन निकालि खयबामे तल्लीन भ' गेल। भोजनक दिव्य आनंद दूनूकें गरीबक प्रति जागल संवेदनाकें ढाहि दैछ। भूखल बच्चा जखन अपन दूनू कोमल हाथ ओकरा सभ

दिस बढ़बैत अछि तँ दूनूक क्रोधक सीमा पार क' जाइछ। ओहिमे एक बाजि उठैछ, 'कुकूर कहीं के...देखलहुँ एकर ढीठपनी।' दोसर बाजल 'एहि सार सभक यैह धंधा थिकै। एकर सभक गैंग होइत छैक। एकरा पर दया करब एकर सभक एहि प्रकृतिकें बढ़ावा देब थिक।' कनियें काल पहिने जागल संवेदना कपूर जकाँ उड़ि जाइछ।

पितृसत्तात्मक समाजमे पुत्रक महिमा अपार। भले लोक कतबो पढ़ि-लिखि जाय, शिक्षक भ' जाय वा वैज्ञानिक, मुदा पुत्रक महात्म्य ओहिनाक ओहिना। खाहे पुत्र वृद्धावस्थामे दुत्कारै, मारय, मुदा पुत्ररत्न सन दोसर रत्न नहि। एकरे कहैछ आधुनिक कालक मध्ययुगीनता। कतेको मामलामे समाज मध्यकालमे जीबैत अछि। यथार्थ तँ ई जे आधुनिकता वाह्य अछि आ मध्ययुगीनता आंतरिक। वर्ण-श्रेष्ठता आ लिंग-भेद आदि घोर मध्ययुगीनताक परिचायक। लेखिका सुस्मिता एहि मध्ययुगीन-बोध पर करगर चोट करैत छथि। मिथिले नहि अपितु भारतीय समाज 'पुत्रः प्रयोजन भार्याः' रस्ता पर आँखि मुनि चलल जा रहल अछि। हिनक कथा यात्रा, छहोछित्त, बिसरल-बिसरल आदि पितृसत्ताक मजबूत आड़िकें तोड़बाक प्रयास करैछ। यात्रा पुत्र प्रयोजनार्थ मालतीक दुर्गम आ भीषण यात्राक नाम थिक। एहि कथामे मालतीकें दू बेर मूइल संतान उत्पन्न होइ छै। आ तकरा बाद शुरू होइत छैक घोर उपेक्षाक अंतहीन सिलसिला। पुतोहूकें नैहर पठा बेटाक दोसर बियाहक लेल उत्साहित सासुक 'सुभाषित' बेटाक महात्म्य प्रदर्शित करबाक लेल पर्याप्त अछि, 'एक तँ किछु देबो-लेबो नहि कयलक एकर बाप। देबो कयलक तँ यैह कोखिसुन्नी...।' बेटाकें उपदेश दैत माता कहै छथिन, 'एकरासँ ने तोहर घर चलतह ने वंश बढ़तह। तों निरवंशी भ' जयबह बेटा।' अर्जुन जकाँ मातृभक्त पुत्र आदेश पारित करैत अछि, 'चलू अहाँकें नैहरि छोड़ि अबैत छी।' माताक दुलारू पुत्र 'नैहरिमे मालतीकें कोनो मोटरी जकाँ पटकि' घुरि अबैत अछि। राम सेहो एही अवस्थामे सीताकें जंगल पठा देने छलाह। सीता वनवासक क्रम अबाध गतियें चलि आबि रहल अछि। एहने-एहने मातृभक्त पुत्रक सौजन्यसँ दहेजप्रथा, कन्याभ्रूण हत्या, बहूहत्या आदिक ग्राफ खसि नहि रहल अछि।

पतिक उपेक्षासँ प्रताड़ित स्त्री-मनोदशाक विलक्षण 'चित्रकार' छथि सुस्मिता। भारतीय जीवन आ धर्म-दर्शनमे पतिकें ततेक विशाल आसन द' देल गेल छै जे ओहि विशालता आ भव्यताक त'रमे कतेको स्त्रीक जीवन, मृत्यसँ गेल-गुजरल भ' जाइछ। मरीचिका कथामे पतिक आगमन किरणक लेल भयावह दुस्वप्नक आगमन भ' जाइ छैक। भावजक प्रति विशेष अनुरक्त 'परमेश्वर' पति देयादनीक सेवार्थ पत्नी किरणकें नैहरसँ ल' अनैत अछि। पति जयंत लेल किरण घरक दासी। सासुकें जखन बेटाक किरदानी बर्दास्तिसँ फाजिल भ' जाइछ तँ एक दिन ओ निसभेर सूतल बेटाक घरमे किरणकें धकिया बाहरसँ केबाड़ी बंद क' दैछ। एहि 'अपराध' लेल पति किरणकें कोनो दशा बाकी नहि रखलक। सभ अपमानकें सहैत किरण नियमित ओहि घरमे नीचामे सूति रहै छल। एक दिन शराबक नशाक आवेगमे जयंत पलँगसँ उतरि किरण लग सूति रहैछ। भोर भेलोपरांत

ओकरा रातिक कोनो बात स्मरण नहि रहैछ। परिणामस्वरुप किरण मातृत्व-बोधसँ भरि जाइछ। देयादनीकें ई बात लेस दैछ। भावज अपन देअरकें उकसेलक-झूठ-फूस गढ़ि सुनौलक। देअर सर्प जकाँ फुफकारैत 'जरैत चेरा उठा किरण पर बजारि देलक' आ कहलक, 'एक तँ नहि जानि कत'सँ पेटमे उठा अनलहुँ आ ताहि पर एहन हेंकड़ी?' किरण लेल सासुरक दरबज्जा हमेशाक लेल बंद भ' जाइछ। जखन सीता पर लांछना लागल छल तँ किरणक कोन लेखा? किरण सन हजारों-लाखों स्त्रीगण एहि तरहक अभिशप्त जीवन जीबाक लेल बाध्य भ' जाइछ। विडंबना ई जे एहनो पतिक पत्नीकें 'सौभाग्यवती'क आशीर्वाद देल जाइछ। सुस्मिता पाठक अपन कथा सभमे मिथिलाक जनी-जातिकें एहन-एहन पतिसँ सचेत करबाक प्रयास करैत छथि।

सुस्मिताक कथा सीमा रहित नहि अछि, भइओ नहि सकैत अछि। हिनक कथाक सभसँ पैघ सीमा अछि अतिशय भावुकता। भारतीय कथा भावुकताक पल्ला भुत पहिने छोड़ि चुकल अछि। कथा आब भावुकतासँ आगू बढ़ि यथार्थ आ ओहोसँ बेसी यथार्थकें ओकर सम्पूर्ण जटिलताक संग उद्घाटित करैत अछि। दुखी व्यक्तिक दुखसँ बेसी ओहि दुखक कारण आओर ओकर कर्ताक चक्रचालि नब-नब शिल्पसँ स्पष्ट करैत अछि। छोट-छोट कथामे एहि तरहक जटिलता संभव नहि। पाठककें नोरे-झोरे क' देब पुरान कथाक लक्षण। करुणा एक सीमे धरि उचित। कयक बेर करुणा मुख्य मुद्दाकें पृष्ठभूमिमे द' दैछ। सुस्मिताक कथाक दोसर सीमा अछि विषय विविधताक अभाव। स्त्री पीड़ाक जतेक फड़िच्छ पहिचान लेखिकाकें छनि ओतेक साहस ओ अपन कथामे संस्कृतिमे सन्हियायल स्त्री पीड़ाक उत्सकें नहि देखि पबैत छथि। यद्पि किछु कथामे ओहि दिस संकेत अवश्य कयलनि अछि। मुदा ई सभ सीमाक परिहार एहिसँ भ' जाइत अछि जे मैथिलीमे गनल चुनल स्त्री कथाकार छथि। गृहिणीक दायित्व निर्वाह करैत कोनो स्त्री कोना लिखैत अछि, से बूझब कठिन नहि। एतबा अवश्य जे सुस्मितामे पैघ कथाकार बनबाक सब संभावना अछि। तारानंद वियोगी ओहि संभवनाकें रेखांकित करैत लिखैत छथि, 'सुस्मिताक कथा सभकें पढ़ैत रहब तँ कएक बेर अहाँकें लागत जेना पृष्ठभूमिमे कोनो करुण धुनक, उदास भासक संगीत बजैत होइ। सब किछु भने ठीक-ठाक होइत देखाब दैत हो, मुदा एकटा मातम जेना अंतर्लयमे कतहु गुँजित होइत बुझाइत रहत। हम बुझबाक चेष्टा केलहुँ जे एना किएक अछि। अहूँ गौर करब तँ पकड़ि लेबै जे इतिहासक धुन थिक, हमरा लोकनिक कलंकित इतिहासक।'

श्रेष्ठतम निकलबाक उमेद

समकालीन कथाकारमे अशोकक विशिष्टताक एकटा आरो कारण अछि। हिनक कथाक कथ्य सार्वभौम होइत अछि, मुदा ओकर बनावटि, मैथिल रहैत छैक। कथाक तानी-बानी अर्थात संरचनामे मैथिल सुवास रहैत अछि। ई काज अशोक दू तरहें करैत छथि-खिसक्कड़ बनिक' आ यथार्थ वर्णनक विस्तारमे जाक'। हिनक कथाक कथा-शक्ति (नैरेटिव इनर्जी)

अद्भुत अछि। गाम-घरमे खिस्सा कह'बला जेना श्रोताकें बान्हिक' रखैत छल। तहिना अशोक कथा पाठककें अपनामे लपटा लैत अछि। कथा कहबाक ढंग आ भाषा खांटी मैथिल खिस्सकड़क होइत अछि आ से ओकर आकर्षणकें दोबर क' दैत अछि।

मोहन भारद्वाज

किछु कथा एहन होइत अछि जे ओ पाठककें यथार्थसँ साक्षात्कार करबैत अछि, संवेदनशील बनबैत अछि, पाठककें नव-नव जानकारी दैत अछि। दोसर दिस किछु कथा एहन होइत अछि जे ओ पाठकक बोधकें विस्तारित करैत अछि, पाठकक मानसिकतामे तोड़-फोड़ करैत अछि। परम्पराक प्रति, संस्कृतिक प्रति, नैतिकताक प्रति आलोचनात्मक बनबैत अछि। एही सभ प्रश्न पर दुबारा सोचबाक लेल विवश करैत अछि। संक्षेपमे सकारात्मक परिवर्तन लेल पाठकक चित्तकें तैयार करैत अछि, ओकरा बेसी-सँ-बेसी चेतनशील बनबैत अछि। अशोक एही तरहक कथाकार छथि। मैथिलीक वरिष्ठ आलोचक मोहन भारद्वाज लिखैत छथि, 'सामाजिक यथार्थक वर्णन करयबला कथाकार पैघ कथाकार नहि होइत छथि। जे कथाकार सामाजिक यथार्थकें सामाजिक चेतना धरि पहुँचा दैत अछि, वैह कथाकार पैघ कथाकार भ' सकैत अछि।' एहि दृष्टियें मातबरक बाद डैडीगाममे संकलित कथा सभ आश्वस्त करैत अछि। हिनक कथा पाठकक विवेक-बोधमे सार्थक हस्तक्षेप करैत अछि।

अशोक कोनो विषयकें कथा रूप द'सकैत छथि। हुनका लेल कोनो विषय अछोप नहि। मुदा सभ कथामे मैथिल संस्कृति, मैथिल अस्मिता अपन सम्पूर्ण अस्तित्वक संग उपस्थित रहैत अछि। विषय खाहे 'मेरिटल रेप'क हो वा हाईवे बनबाक, 'जेनरेशन गैप' हो वा अंतरजातीय विवाह मिथिलाक मह-मह करैत परिवेश, ओकर राग-रंग, रूप-वेश हिनक कथाकें विशिष्टता प्रदान करैत अछि।

अशोकजीक कथासंग्रह डैडीगामक नामकरण पुस्तक दिस आकर्षित कयने छल। विदेशज आ देशज शब्दक एक संग प्रयोग कने विचित्रो, कने अजगुतो आ कने रमनगर लागल छल। अत्यंत सहज नामकरण। आब गामोमे पिताजीकें पप्पा वा डैडी कहल जाइछ। नव पीढी अपन गाम शहरेकें बुझैत अछि आ गामकें पिताजीक गाम यानी डैडीक गाम। कारण डैडी ओकरा अपन गामक सरस वा नीरस कथा सभ सुनबैत रहैत छथिन। मामागाम तँ पहिनेसँ छल आब डैडीगाम सेहो भ' गेल। मातृसत्ता आ पितृसत्ता बराबर।

अशोकजीकें मिथिला जन जीवनक, ओकर छोट छोट अभिलाषाक, ओकर संकीर्णता आ उदारता आदिक महीन पहचान छनि। कहि सकैत छी जे हुनका अपन संस्कृतिसँ गहींर लगाव छनि। कोनो श्रेष्ठ कथाकार लेल ई स्वाभाविक। महत्वपूर्ण बात जे ई लगाव हुनका अंधभक्ति दिस नहि ल' जाइछ। अपन संस्कृतियोक प्रति अशोक नीर-क्षीर विवेकक पगहा नहि छोड़ैत छथि। ताहि हेतु संस्कृतिक नाम पर पसरैत अपसंस्कृतिक प्रतिरोधमे कनियो हिचकिचाइत नहि छथि। शीर्षक कथा डैडीगाममे उजड़ैत गाम आ

बांझ होइत लोकक मन-मस्तिष्कक रेखांकन बहुत यथार्थ ढंगसँ भेल अछि। कोनो सपना नहि, आगू बढ़बाक कोनो लालसा नहि। जिंदगी कोनो तरहें कटि जाए, सैह बहुत। मैथिल, मैथिलीक खूब हंगामा, मुदा ककरो मैथिली साहित्यक कोनो जानकारी नहि, मैथिलीक प्रोफेसर साहेबकें सेहो हरिमोहन झाक कन्यादान आ तंत्रनाथ झाक कीचक वधसँ आगू किछु पता नहि। तथापि गाममे उमेद बचल अछि, एखनहु गाममे एहन चेतस युवा अछि जे लंदनसँ कमाक' आनल पाइसँ गाममे मंदिर बनयबा पर प्रश्न ठाढ़ करैत अछि। मंदिर बनयबाक लेल बजाओल गेल सभामे एकटा युवक बजलाह, 'हमरा सभकें मुदा आपत्ति अछि। मंदिर निर्माणसँ हमरा सभकें कोन उपकार होयत? कतेको मंदिर तँ चरूकात अछिये। रघुवंश बाबू डॉक्टर छथि। सुनै छी लंदनमे बेस यश अर्जित कयने छथि। रुपया छनि। हमर अनुरोध होयत जे ओ अस्पताल किएक ने बनबैत छथि। एहि इलाकामे नीक अस्पताल नहि अछि।' एहि बात पर खूब घोंघाउज भेल। मुदा युवक सत्य सवाल उठौने छल। सभामे अस्पताल बनेबाक निर्णय भेल। कथाकार अशोकक संवेदनशीलता कयक बेर हठात अंतस्तलमे धँसि जाइत अछि। पिछला एक दू दशकसँ देशमे व्यापक स्तर पर हाइवे बनल। एहि पर अन्य भारतीय भाषामे एकसँ एक कहानी लिखल गेल।

मुदा ई हाइवे कोना लोकसँ ओकर गाम छीन रहल छैक, से पढ़बामे नहि आयल छल। ई हाइवे ततेक ऊंच बनल अछि जे कातक सभ गाम बौना भ' गेल। अशोकजी अपन कथा गाम कातक हाइवेमे देखेलनि अछि जे कोना गामक अनेरुआ मुदा गामभरिक प्रिय कुकूर कोना भारी ट्रकक नीचा पिचरी-पिचरी भ' जाइत अछि, ककरो जीवनक आधार बकरी कोनो बसक चक्काक आहार बनि जाइछ। गामक चेन्ह (अस्तित्व) कोनो बड़ वा पीपरक गाछ ओहि हाइवेक उदरमे समा जाइछ। एतेक मामूली सन देखैत मुदा जरूरी बात पर अशोके जीक ध्यान जा सकैत अछि। कथा शुरू करैत छथि गोला कुकुरसँ आ 'बात निकलेगी तो दूर तलक जाएगी' कहबीकें चरितार्थ करैत हाइवेक कारण गामक अस्तित्व, गाछ-वृक्षक अस्तित्व, जीवजंतुक अस्तित्वक लड़ाइ धरि चलि जाइत अछि। मनुक्खक जीवनदायिनी गाछ हाइवेमे कोना नहुएँ-नहुएँ घिसीओर कटैत मरैत अछि, तकर अद्भुत चित्रण अशोकजी एहि कथामे कयलनि अछि, एहन दुर्लभ संवेदनशील वर्णन ताकब कठिन, 'अपन स्मृतिमे धड़कैत ओहि बड़क गाछक मादे सोचैत-विचारैत हमरा लागल जे ओ गाछ एहिना नष्ट नहि भेल अछि। ओकर मृत्यु अकस्मात नहि भेल। खाली मशीनक झटकासँ नहि भेल। वस्तुतः पहिने गाछक आत्मविश्वास कें मारल गेल। जे गाछ गौरवसँ अकास दिस तकैत रहैत छल ओहि गौरव कें नष्ट कयल गेल। से बहुत सुनियोजित रूपसँ। पहिने ओकर बगलमे माटि के पहाड़ ठाढ़ भेल। ओकरा समतल कयल गेल। ईंटा बिछाओल गेल। फेर कंक्रीट। फेर अलकतरा। तप्पत, गरम-गरम, लस्सेदार अलकतरा ओहि पर ढारल गेल। एहि पहाड़, ईंटा, कंक्रीट,

अलकतराक पकड़ आ अकड़सँ बड़क गाछ अवांछित आ अजनबी होइत गेल। ओकर ऊंचाई के धीरे-धीरे छोट कयल गेल। ओकर विशालता सिकुड़ि गेल आ तुच्छ सन लाग' लागल। एहनामे बड़क गाछक जिजीविषा सकचुन्नी होइत गेल। मृत्युसँ पूर्वे मृतप्राय भ'गेल।'

बड़े गाछ जकाँ हाइवे कातक गाम मरि रहल अछि। ओकर सौंदर्य, ओकर चुहचुही मरि रहल छैक, हाइवेक ऊंचाई तर गाम ठूठ गाछ जकाँ भ' गेल। हाइवे बनल तँ कथित रूपसँ आमजन लेल मुदा अकथित लाभ बड़का-बड़का उद्योगपतिकें। ओकर तँ किछु ने बिगड़लै। बिगड़लै तँ गामक। बिगड़लै तँ सकली मायक, जकर जीवनक आश्रय बकरी हाइवेक भेंट चढ़ि गेलै। छुट्टीक एक दिन कथाक माध्यमसँ अत्यंत रोचक ढंगसँ कथाकार अशोक मैथिली भाषा, कथा-उपन्यासक स्थिति, पाठकक उदास रिस्पॉन्स आदि पर गहमा-गहमी बहस करौलनि अछि। युवा दम्पति अंकिता आ अभिनवक कोर्टमे स्वयं लेखक अपनाकें कठघरामे पबैत छथि। एहि बहसमे लेखकक पत्नी नीलम बम फोड़ैत कहलथिन, 'हमरा जनैत मैथिलीमे रहैत अछि की जे लोक पढ़त। मैथिलीक सहित्यकारकें एक-दोसराक अदगोई-बदगोईसँ फुर्सति होइन तखन ने पढबा जोगरक रचना करता।' जखन अंकिता लेखकसँ किछु नव रमनगर उपन्यासक नाम पुछैत छथिन तँ हठात एहन कोनो उपन्यासक नाम मोन नहि पड़ैत छनि तँ नीलम ठोकल गप्प कहै छथिन, 'ई सभ अपन पोथीक नाम छोड़ि अनकर नीको पोथीक नाम नहि लेता। जखन यैह सभ मैथिलीकें एना अबडेरने छथिन तँ अनका कोन गर्ज पड़लै अछि।'

छुट्टीक एक दिनमे कथाक समाजशास्त्र, कन्यादान उपन्यासक विगत सतर्कता आ वर्तमानमे ओकर अर्थवत्ता, मैथिली रचनामे आधुनिक भावबोधक कमी, गतिशील समाजक नाड़ीकें पकड़बामे लेखकक असमर्थता आदि गूढ़ विषयकें अत्यंत सरल आ हल्लुक बना प्रस्तुत कयल गेल अछि। बहसोन्मुखी एहि कथामे वाद-विवाद-संवादक रोचक शैली अशोक अपनौलानि अछि। अशोक मैथिलीक श्रेष्ठ कथाकार एहि कारणें छथि जे हुनक कथा-दृष्टि अत्यंत चौकस रहैछ। देश-दुनियाक संवेदनशील हलचलकें अकानैत ओ ओकरा कथा-वस्तुमे उतारि दैत छथि। उदाहरण लेल हुनक कथा स्वाधीन 'मैरिटल रेप' आ कोखिक अधिकारकें संबोधित करैत अछि। मैरिटल रेप अर्थात पति द्वारा पत्नीक बलात्कारक मुद्दा अखन दुनिया भरिमे चर्चाक विषय अछि। भारतीय समाजमे पतिकें परमेश्वरक स्थान देल गेल अछि। ओकरा सभटा अधिकार प्राप्त अछि, बलात्कारोक अधिकार। भारतीय कानून आरपीसीक धारा 375 कहैत अछि जे कोनो व्यक्ति अगर कोनो महिलाक संग ओकर इच्छाक विपरीत दैहिक संबंध बनबैत अछि तँ ओ बलात्कारी कहल जैत, जे दंडनीय अपराध अछि। मुदा ओहन पति जिनक पत्नीक उमर सोलह सालसँ बेसी छैक ओकरा पर ई धारा लागू नहि होइछ। दुनियाक मात्र पैंतीस गोट देश एहन अछि जाहिमे मैरिटल रेपकें दंडनीय अपराध नहि मानल जाइछ। राजस्थान पत्रिका अपन एकटा सर्वेमे

पौलक जे प्रति वर्ष भारतमे दू करोड़ विवाहित स्त्री मैरिटल रेपक शिकार होइत छथि। ई रेप होइत अछि पत्नीक अस्वस्थताक हालतमे जोर-जबरदस्ती कयने, मानसिक रूपसँ सेक्स लेल तैयार नहि रहबाक स्थितिमे आ जबरदस्ती अप्राकृतिक यौन संबंध स्थापित करबाक हालातमे। 2005-06मे भेल नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे-3कें अनुसार भारतक 29 राज्यमे 70 प्रतिशत महिला स्वीकार कयलनि कि हुनक पति जबरन हुनका संग सेक्स करैत छथि। एतबे नहि तथ्य ई जे पुरुषो ई बात स्वीकार कयलनि। इंटरनेशनल सेंटर फॉर वीमेन और यूनाइटेड नेशन्स पापुलेशन फण्ड दिससँ 2014मे आठ राज्यमे करायल गेल सर्वेक मुताबिक एक तिहाइ पुरुष माननलि जे ओ एहन तरहक कार्य करैत छथि। भारतमे किछु संगठन मैरिटल रेपकें दंडनीय अपराध मानल जाय, ताहि हेतु प्रयासरत अछि। मुदा सरकार आ न्यायालय अखन मानसिक रूपसँ एहि लेल तैयार नहि अछि। एकर कहब छैक जे एहि कानूनक दुरूपयोग हैत। कानूनविद अरविन्द जैनक कहब छनि जे कानूनक दुरुपयोगक डर अन्याय वा इन्साफ नहि देल जयबाक कारण नहि बनि सकैत अछि। हुनकहि शब्दमे, 'अगर पति को कानूनन पत्नी के बलात्कार की इजाजत देते हैं तो घरमे पत्नी का दर्जा सेक्स वर्कर से भी बदतर हुआ। कम से कम सेक्स वर्कर न तो कह सकती है। पत्नी को तो आपने न कहने का अधिकार भी नहीं दिया। उसकी सुनवाई कहाँ होगी, क्योंकि कानून आपने बनाया नहीं और इसलिए अदालतें बात सुनेंगीं नहीं।' (बीबीसी.कॉम, 6 मई 2015) घरेलू हिंसाक अधिनियममे सेहो मैरिटल रेपकें शामिल नहि कयल गेल अछि।

अशोकक कथा-दृष्टि एहन गंभीर विषय दिस कथाकें ल' जाइत अछि। कथा स्वाधीनमे पेशासँ चिकित्सक अजय अपन पसंदसँ जयाक संग बियाह करैत छथि। जया पढ़ल-लिखल सचेत स्त्री छथि आ एकटा कॉलेजमे लेक्चरर छथि। अजय एक दिन शराबक नशामे जयाक संग जबरदस्ती करैत छथिन, 'जयाक निन्न टुटलनि तँ मना कयलथिन। हाथ हटेबाक लेल कहलथिन, ओ बिगड़ल छली। मुदा अजय पर तँ कीदन सवार छल। जयाक विरोध अजयकें आर उत्तेजित क' देलकनि। ओ जयाक ब्लाउजक हुक तोड़ि देलथिन। जया कसमसाइत रहली। अपनाकें छोड़ेबाक चेष्टा कयलनि। मुदा अजय बलजोरी क' छोड़लनि। जया बादमे कान' लागल रहथि। अजय दिस अजीब घृणासँ देखने रहथि।'

एहि घटनाक बाद दूनूक बीच संवादहीनताक स्थिति आबि गेल। मात्र नियमित गृहकार्य दूनू करैत रहलाह। किछु दिनक बाद घटना मोड़ लैत अछि। एक दिन जया एकटा कागज अजयकें देलथिन-'एहिपर दस्तखत क' दी।' ओ कागज गर्भपातक सहमति-पत्र छल। जया ओहिपर दस्तखत क' चुकल छली। अजयकें ई बात कोनादन लगलनि। मनेबाक प्रयास कयलथिन। पहील संतानक वास्ता देलथिन। जया साफ-साफ कहलथिन, 'ई संतान हमर इच्छाक विरुद्ध अछि।...पतिक बलात्कारसँ उत्पन्न संतानक माय हम नहि बनि सकैत छी। सभ दिन एहि संतानकें देखि हमरा ओ राति मोन पड़ैत रहत। हम एबोरशन जरूर

करायब। अहाँ दस्तखत क' दिअ।' अजय हुनक भावनाक सम्मान करैत ओहि कागज पर दस्तखत क' दैत छथि। जयाक चेहरा प्रसन्नतासँ भरि जाइत छनि।

कथा स्वाधीन मैरिटल रेपक अतिरिक्त कोखिक अधिकारक बात सेहो करैत अछि। पेटमे पोसाइत बच्चा पर ककर अधिकार? भारतक महान नाटककार भिखारी ठाकुरक नाटक गबर घिचोड़ आ जर्मनी भाषाक महान नाटककार ब्रेख्तक नाटक कॉकेशियन चॉक सर्किल कोखिक अधिकार पर विलक्षण नाटक अछि। यद्यपि ओहि दूनू नाटकक सन्दर्भ दोसर अछि। गर्भपात सामान्यतया कानून विरुद्ध मानल जाइछ। मुदा नव कानून कहैत अछि जे गर्भ धारण करब स्त्रीक अधिकार आ इच्छा अछि, तँ ओकरा हटायब सेहो ओकर अधिकार। एहि तरहक एकटा मामलामे राजस्थान हाईकोर्टक सिंगल बेंच गर्भपातक अनुमति नहि दैत कहलक जे संविधानक अनुच्छेद 21 अनुसारें लड़कीक पेटमे पलि रहल बच्चाकें सेहो जीबाक अधिकार छै। यैह केस जखन पुनः डिविजन बेंचमे गेल तँ फैसला उलटि गेल। जज साहेब अपन फैसलामे कहलनि, 'इसमे कोई शक नहीं कि महिलाएँ रिप्रोड्युस करने का फैसला खुद ले सकती हैं, पर उसका फैसला बच्चा नहीं करने का भी हो सकता है। और हमे उनके इस फैसले का सम्मान करना ही होगा। क्योंकि ये उनका अपना डिसीजन होता है, उनके अपने शरीर से जुड़ा सवाल होता है। ये च्वाइस उनकी खुद की होनी चाहिए।' एहि तरहें विवाहित वा कुमारि स्त्रीकें 20 महीना धरिक गर्भकें स्वेच्छानुसार हटेबाक कानूनन अधिकार प्राप्त अछि। जयाकें कोखि पर अपन अधिकार छनि आ ताहि लेल अजय नहि चाहितो ओहि कागज पर दस्तखत क' दैत छथिन।

डैडीगामक किछु कथा (स्वाधीन, खुशीक नाम जीवन)मे अशोक बियाहक मादे आधुनिक दृष्टिसँ विचार करैत छथि। जाहि घरक लड़का-लड़की अपना मोनसँ बियाह क' लैत अछि ओकरा आ पूरा परिवारकें समाज हेय दृष्टिसँ देखैत अछि। अपन मिथिला समाजमे तँ ओकर खिधांस आवश्यक। एहि डरे माता-पिता स्वेच्छासँ बियाहक अनुमति नहि द' पबैत छथि। खुशीक नाम जीवन कथामे अंतरजातीय बियाहक सहर्ष अनुमति कथा नायकक माता-पिता दैत छथिन। अपनहि ऑफिसमे कार्यरत केरलक मीनाक्षी नायरसँ संदीप विवाह करैत छथि। दूनू परिवार हँसी-खुशी बियाह संपन्न करबैत अछि। ई विवाह मिथिला आ केरलक दूरीकें मेटबैत अछि। एहन तरह दुर्लभ विवाहमे दू संस्कृति, दू भाषा, दू वेशक संगम-समागम होइत अछि। भारतीयता मजबूत होइत अछि। संदीपक पिता एहि तरहक बियाहक मादे तार्किक विचार रखैत कहैत छथि, जखन पढ़ाइ-लिखाइ, नौकरी-चाकरी, रोजगार सभ किछुक संबंधमे युवक-युवती आब अपने निर्णय लिय' लागल अछि तँ जीवनसंगीक चुनाव माय-बापक अनुसार करय ताहिमे कोन तुक छैक। (वैह, पृष्ठ 94) बात ई छैक जे पूर्वमे बियाह बहुत छोटमे भ' जाइक। लड़का-लड़की अबोध रहैत छल, अपन निर्णय लेबामे असमर्थ। एहना स्थितिमे माता-पिताक भूमिका महत्वपूर्ण छल। आब जखन लड़का-लड़की पूर्ण वयस्क भ' विवाह करैत अछि, तखन अभिभावकक

अनावश्यक हस्तक्षेपक महत्व नहि रहि गेल अछि। पढ़ल-लिखल बुझनुक धीया-पुता जँ अपन निर्णयसँ जीवनसंगीक चुनाव करैत अछि, ओकर नीक-बेजायक दायित्व ग्रहण करैत अछि तँ ओकर स्वागत होयबाक चाही।

अशोक बरोबरि अपन कथा (राग, छल, दूनू साइकिल सिखैत अछि)मे मुसलमान समुदायक प्रति पसरल भ्रांति आ मिथ्या-प्रचारसँ टकराइत छथि आ वास्तविकताक उद्घाटन करैत छथि। अशोक ई मानैत छथि जे एहि तरहक दुष्प्रचारसँ सामाजिक समरसता टूटैत अछि आ दू समुदायक बीच वैमनस्यक खाइ चौरस होइत अछि। मुसलमानक संदर्भमे मैथिल समाज सेहो बहुत तरहक भ्रांतिसँ गछारल अछि। अशोक अपन कथामे ओहि मिथ सभकें तोड़बाक जतन करैत छथि। उदाहरणक लेल एहि बातक खूब प्रचार कयल जाइत अछि जे मुसलमान गाय खाइत अछि। मुदा एहि बात पर चुप्पी साधि लेल जाइत अछि जे व्यापक स्तर पर एहि काज लेल गाय बेचैत के अछि? हिन्दू विष्णुक अवतार (मत्स्य) माछ खूब आनंदसँ खाइत अछि आ ओ सभ गाय खाइत अछि। हिंदूओ तँ बकरा-बकरी खाइते अछि। दोसर भ्रांति ई पसरल अछि जे मुसलमान ओतय किन्नहु नहि खयबाक चाही, कारण ओ सभ भोज्य पदार्थमे गोमांस मिला दैत अछि वा ओकरा अइंठ क' दैत अछि। कथा रागमे जखन पहिल बेर गणेश्वर बाबू बकरीदक अवसर पर अहमदक आमन्त्रण तँ स्वीकार क' लेने छलाह मुदा खयबा काल मोन बहुत असोथकित भ' गेलनि, 'हुनका सुनल छलनि जे मुसलमान सभ मलेच्छ होइत अछि। भानस करबा काल सभ वस्तु-जातकें अइंठ क' दैत अछि। गोमांसक दुइयोटा बूटी मासुमे देने बिना ओ सभ खाइये नहि सकै अछि। हिन्दू सभकें भ्रष्ट करबामे ओकरा सभकें बड़ मोन लगैत छै। एहिमे इयार-दोस्तक कोनो रोच नहि रखैत अछि।' (राग, डैडीगाम, पृष्ठ 59) एहि भ्रांतिक शिकार हमहूँ भेल छी। आब सोचैत छी तँ हँसी अबैत अछि-अपन अज्ञानता आ मूर्खता पर।

जखन 1987मे स्नातकमे रही तँ एनसीसीक कैम्पमे हमरा बगलमे एकटा एकटा मुस्लिम मित्र छल। ओ खूब नीक खयबाक वस्तु घरसँ अनने छल, हमरो आग्रह करै, मुदा हम लाथ क' दियै। ओ खूब आग्रह करै, हमरा ओकर आग्रहमे चालि बुझना जाय। अशोकजीक कथा एहि सभ दिस ध्यान आकर्षित करैत अछि। कथाकार अशोक प्रत्येक एक कथाक बाद दोसर कथामे कथाक विषये नहि बदलि दैत छथि अपितु कथन-भंगीकें सेहो बदलि देबाक प्रयास करैत छथि। ई अकारण नहि जे हुनक कथा पाठककें आवृत्तिपरक नहि बुझाइत छैक। कथा छल एकटा छोटछिन छलसँ आरम्भ होइत अछि, मुदा अंत तक अबैत-अबैत ओ एकटा दोसर तरहक सत्यक उद्घाटन क' जाइछ। ओ सत्य अछि बहुत सरल मुदा सामाजिक संरचना ओकरा सायास जटिल बनौने अछि। ओ सत्य ई जे एहि कथामे एकटा सहज-सरल ग्रामीण हिन्दूक आत्मामे मुसलमान प्रवेश क' जाइछ। हिन्दुस्तानक सन्दर्भमे हिन्दू आ मुसलमान दू शरीर एक आत्मा अछि। भारतीय खान-पीन, पहिरन-ओढन, भारतीय शिल्प, कला-संगीत, भाषा, मुस्लिम संस्कृतिक बिना पूरा नहि भ' सकैछ। भारतीय

मुस्लिम संस्कृतिमे तँ स्वभावतः हिन्दू संस्कृति सन्हियाल अछिये। एकटा साँच हिन्दूक कर्तव्य ई होयबाक चाही जे क्यो अगर मुसलमानक बारेमे मिथ्या प्रचार करै तँ ओ ओकर प्रतिवाद करै। तहिना कोनो साँच मुसलमानोकें करबाक चाही। राही मासूम रजाक उपन्यास आधा गाँव एहि दृष्टियें अद्भुत अछि। संकीर्ण आ साम्प्रदायिक सोच राखय बला मुसलमान आ हिन्दूकें ओ कोनो दशा बाकी नहि छोड़लनि अछि। छल कथामे भोली झा एकटा ब्रीफकेसक लोभमे अनुपस्थित मुसलमान डेलिगेटक वेश धारण क' मीटिंग अटेंड करैत छथि। ओहि मीटिंगमे प्रसंगवश मुसलमानक बारेमे प्रचारित स्टीरियो टाइप जे बात सभ होइ छै से होअ लागल। ई अनटोटल बात सुनि भोली झाक क्रोध टिकासन चढ़ि जाइछ। ओ मुसलमानक पक्ष ल' लड़बाक लेल उतारू भ' जाइत छथि। ओहि क्षण विशेषमे ओ ई बिसरि जाइत छथि जे ओ एकटा नकली मुसलमान छथि, आ बेसी बजने-चिकरने पकड़ल जा सकैत छथि। आवेशमे आबि ओ चिकरि-चिकरि कह' लगैत छथि, 'ई हाकिम तखनीसँ हमर मजहबकें की कहाँ कहि रहल छथ जे इस्लाम बहुत कट्टर मजहब हय, तलवार के जोर पर चलै हय।...मुसलमान सभ हिन्दू के काफिर कहै हय। हम तब्बे से हिनका समझा रहल छली। अरे भाइ एमे हमर की कसूर हय। इतना दिनसँ हम सब एक दोसराक संग रहल छी। तब्बो एक दोसरा के नहि समझली। कौआ के पाछू दौड़ल जाइ छी। पर ई मानिते नहि छथ। की-कहाँ बकने जाइ छथ।' (छल, डैडीगाम, पृष्ठ 23) एहि कथाक माध्यमसँ अशोक कयकटा कार्य एक संगे करैत छथि। मिथकें तोड़बाक, सहज ग्रामीणकें चेतना सम्पन्न देखायब (गामक लोक गमारे नहि होइत अछि) संगहि इहो देखायब जे भोली झाक मुसलमान वेश धारण करब मात्र वाह्य नहि रहि जाइछ ओ अंदरसँ सेहो मुसलमान रूप ध' लैछ। भोली झाक ई कायांतरण सायास नहि अनायास होइछ।

राम मंदिर अभियान आ मस्जिद विध्वंससँ पहिने भारतक गामक अधिकांश हिन्दू भोली झा रहै। मुदा आब ओ भोली झा कतौ-कतौ भेटत। अशोक 'छल'सँ नहि हृदयसँ गाम-गाम पसरल ओहि भोली झाकें ताकि-हेर रहल छथि। अशोकजी सामाजिक विसंगति पर तँ मारक चोट करैत छथि मुदा ओकर जड़ि राजनीतिक सत्तातंत्र पर चोट नहि क' पबैत छथि। दुनिया भरिक अधिकांश श्रेष्ठ कथाकार राजसत्ताकें प्रश्नांकित करैत अछि, ओकर छल-छद्मकें अनावृत्त करैत अछि। तहिना भारतीय समाजकें धर्मसत्ता जोंक जकाँ पकड़ने अछि। यात्री जी लगातार एहि 'जोंक'सँ लड़ैत रहलाह। अशोकजीक कलमसँ अखनो श्रेष्ठतम निकलबाक उमेद अछि।

मैथिलीक जातीय कथाकार

आधुनिक मैथिली कथामे जे संपन्नता आ विविधता आयल अछि ओहिमे शिवशंकर

श्रीनिवासक 'आभा' सेहो अछि। मिथिलाक गाम तँ मैथिली कथाक मुख्य थीम रहल अछि, मुदा शिवशंकरजीक मिथिला एकरेखीय आ नयनाभिराम मिथिला नहि अछि। हुनक व्यापक कथा-दृष्टि परम्परासँ पसरल विषमताजन्य विडंबनाकें गसिया क' पकड़ि ओकर कारण आ परिणति पर नब तरहें बात करैत अछि। कोनो सफल कथाकारक जे दायित्वबोध होइछ ओहिसँ सम्पन्न शिवशंकरजी मिथिलाकें ओकर सम्पूर्ण सीमा आ संभावनाक संग उद्घाटित करबाक प्रयास कयलनि।

शिवशंकर श्रीनिवास मैथिलीक जातीय कथाकार छथि। जातीय कथा ओ कहबैछ जकरा असली अर्थमे ओहि स्थान विशेषक कथा कहल जा सकैछ। ओहि स्थानक जनताक दुख-दर्द, संघर्ष, इच्छा-आकांक्षाक अभिव्यक्तिक प्रयास कयल गेल हो। ओहि ठामक सांस्कृतिक विरासतकें बुझैत-गमैत सामाजिक जीवनमे संघर्षरत स्वस्थ आ विकासशील प्रवृत्तिकें प्रेरित कयल गेल हो। जातीय साहित्यिक अर्थ अत्यंत व्यापक होइत अछि। जातिगत साहित्यसँ सर्वथा विपरीत जातीय साहित्यमे स्थान विशेषक सभ वर्ण, जाति, वर्ग, धर्म, लिंग आदिक उपस्थिति जगजियार रहैछ। समाजक विकासमे सभक भूमिका महत्वपूर्ण मानल जाइछ आ ओकर रेखांकन होइछ। ककरो भूमिकाकें कम क' अंकबाक चेष्टा एहिमे नहि होइछ। हाशियाक समाज जे दबल-कुचल रहल अछि आ जकर योगदानकें इतिहाससँ सायास विलोपित कयल गेल ओकर भूमिकाकें विशेष क' रेखांकित करबाक बेगरता जातीय साहित्यमे देखल जाइछ। समाजमे विन्यस्त प्रतिगामी शक्तिक फड़िच्छ पहचान जातीय साहित्य करैत अछि। एहि अर्थमे शिवशंकर श्रीनिवासक अधिकांश कथा मिथिला जातिक कथा कहैछ। हिनक कथा 'जमनिया धार' मुस्लिम मैथिलानीक व्यथा-कथा कहैत अछि तँ 'पिजराक सुग्गा' ब्राह्मण मैथिलानीक पीड़ा व्यक्त करैत अछि। 'पटोर' कथामे धानुख बेलाहीबाली आ रामगुलामक दाम्पत्य प्रेम-कथा कहल गेल अछि तँ 'गाछ-पात'मे ब्राह्मण वृद्ध दंपत्तिक नेह-छोह उद्भासित भेल अछि। 'सिनुरहार' कथामे उच्च वर्णीय सांस्कृतिक छवि-छटाक दर्शन होइत अछि तँ 'फर्क' कथामे मिथिला समाजक निम्नजातिक सांस्कृतिक सुवास भेटैत अछि। 'सहरजमीन' कथामे निम्नवर्णीय समाजक अंतर्विरोधसँ साक्षात्कार होइत अछि तँ चिड़ै नहि मनुक्ख थिक'मे उच्च वर्णक अंतर्विरोध खुलि क' सामने अबैत अछि। समग्र मिथिलाक अंकन कथाकारकें मिथिलाक जातीय कथाकार बनबैत अछि।

शिवशंकरजी आतुर आ व्याकुल 'प्रतीक्षाक' कथाकार छथि। हिनक कथाक पात्र सभमे प्रतीक्षाक अपार धैर्य संगहि प्रतीक्षाक असह्य पीड़ाक विलक्षण व्यंजना भेल अछि। पति शापित अहिल्या तँ पाथर भ' गेलीह तँ हुनक व्यथा साहित्यमे ओहि तरहें दर्ज नहि भ' पाओ, मुदा शिवशंकरजीक कथामे हाड़-मांसक मनुक्खक सुदीर्घ प्रतीक्षा भेटैत अछि। निराशा आ अवसादकें धकियबैत प्रतीक्षामे पल-पल सुनगैत स्त्रीक दारुण

दिशाक दर्पण थिक हिनक कथा। 'जमुनिया धार' मे पति बिछोहिनी सलमाक प्रतीक्षा तँ 'एक सत'मे नाग नामसँ प्रचलित नागेश्वरीक अन्तहीन प्रतीक्षा। 'महतोक बहुरिया'मे पतिक लेल गुलबियाक आकुल प्रतीक्षा तँ 'अपन घर'मे रिटायर बूढ़ा फकीर झाक बेटी-बेटाक प्रतीक्षा। गाछ-पात कथामे बुढ़हीक मृत पतिक स्मृतिपूर्ण प्रतीक्षा। ध्यान देबाक बात ई जे एहि प्रतीक्षामे हिनक पात्र ने टूटैत नहि अछि आ ने असगरुआ भ' अवसादमे जाइत अछि। अपितु संघर्षक कठिन रस्ता चुनि प्रतीक्षा करैत अछि। संघर्ष आ प्रतीक्षाक अन्तरगुम्फन कथाकें निट्ठाह भावुक नहि बन' दैछ।

मांसल सौन्दर्यप्रेमी पतिक उपेक्षाक शिकार नागेश्वरीक दमघोंटू प्रतीक्षाक कथा अछि-एक सत। अपन रूपक घोर निंदा आ अवाच कथा सुनि सासुर आगमनक ओकर सभ उछाह माटिमे मिल जाइ छै 'केहन पुतोहु अनलहुँ! दैव रे दैव! उसनिया टीन सन लगै छै। तइमे मनसा एतेकटा जनाना। असर्ध। बाप रे बाप!' नागेश्वरीक बेटाकें राखि ओकरा प्रताड़ित क' नैहर बसबाक लेल अभिशप्त क' देल जाइछ। पति उपेक्षिता स्त्रीक जे गति नैहरमे सामान्यतया होइत छै सैह ओकर भेलै। हाड़-तोड़ परिश्रम क' बेटाक स्मृति आ प्रतीक्षामे जीबैत चलि जाइत अछि नागेश्वरी। पति तँ दोसर बियाह क' लैत अछि लेकिन ओकर बेटा हाकिम भ' जाइ छै। 'उजड्ड' पिता जखन ओकर बियाह कर' चाहैत छै तँ ओ मायक अनुपस्थितिमे विवाह करबासँ साफ मना क' दै छै। अंततः पिता-पुत्र नागकें मनब' अबैत अछि। प्रतीक्षाकुल नागक स्वाभिमान सासुर नहि जाय चाहैत अछि। ओ बेटासँ एकटा 'सत' करबैत अछि। यैह सत कथाकें अद्भुत रूपसँ नारी-दृष्टिक विस्तार क' दैछ आ स्त्री विमर्शक बहिनापाक अवधारणाकें कलात्मक रूपसँ सामने रखैत अछि, 'तों अपन कनियाँ संग ओहन व्यवहार कहियो ने करबें जेहन व्यवहार तोहर बाप हमरा संग केलक। बाज करै छै सत?' कहैत नाग बेटा पर आँखि गाड़ि देने अछि।...बापक आँखि धरती दिस रहे। बेटा नागक दूनू हाथ पकड़ि क' कहलकै–'हाँ माय करै छी सत।'

मिथिलामे सौंदर्य प्रेमी पति द्वारा उपेक्षित कतेको परित्यक्ता हेतीह। ई कथा सुन्दरताक बनल बनायल प्रतिमान पर सेहो सवाल ठाढ़ करैत अछि। जाहि प्रकृति प्रदत्त रूप पर अपन वश नहि तकर उपेक्षा आ प्रताड़नासँ बेसी अमानवीय किछु नहि। पुरुष निर्मित स्त्री सौंदर्यक प्रतिमानसँ हमरा लोकनि ततेक ने अनुकूलित भ' गेल छी जे विविधतापूर्ण सौंदर्यबोधकें बिसरि गेलौं। देशमे कतौ श्याम वर्ण, कतौ भुट्ट, कतौ बैसल नाक वाली स्त्री अपूर्व सुंदर मानल जाइत अछि। एहि अनुकूलनक ई दुष्परिणाम जे कतेको श्यामवर्णी लड़कीक विवाह नहि होइत अछि, अपन तथाकथित कुरूपताक कारणे कतेको स्त्री हीनताग्रंथिक शिकार भ' जाइत छथि।

दांपत्य प्रेम पर कविता वा कथा लेखन साधारण बात नहि। कारण विवाह पूर्व

आ परकीया प्रेममे कल्पनाक स्पेस बेसी रहैछ। रोमांसक विविध आयामकें दरसेबामे सहूलियत होइछ। मुदा दांपत्य प्रेममे कोनो कुतूहल, जिज्ञासा वा उत्तेजना नहि रहैछ। ओहिमे एकरसताक संभावना बेसी। हिंदीमे केदारनाथ अग्रवाल दांपत्य प्रेमक विलक्षण कवि मानल जाइत छथि। यात्री-नागार्जुन सेहो किछु विरल दांपत्य प्रेम कविता लिखलनि। ई अकारण नहि जे संपूर्ण साहित्यक बहुलांश परकीया प्रेमसँ भरल अछि। शिवशंकर श्रीनिवास मैथिलीमे दांपत्य प्रेमक उत्तम कथाकार छथि। 'गामक लोक' आ 'गुणकथा' संग्रहमे कतेको कथा दांपत्य प्रेमकें जाहि सुकोमलता आ संवेदनशीलता संग सिरजला ओ प्रशंसनीय। जमुनिया धार, पटोर, गाछ-पात, आ रूमाल आदि कथामे दांपत्य जीवनक प्रेमक कतेको रूपक दर्शन होइछ। गाछ-पात, दांपत्य प्रेमक भावुक कथा नहि अछि। कथाकारक कथा-दृष्टि दांपत्य प्रेमकें गाछ-वृक्षक प्रेम संग अभिन्न रूपसँ जोड़ि दैत अछि। यैह जुड़ाव कथाकें नवता प्रदान क' जाइछ। बूढ़ाकें बारीमे गाछ-वृक्ष लगेबाक बहुत शौक। एक-सँ-एक गाछ-वृक्ष लगाबथि। दूनू प्राणी एहिसँ जुड़ायल रहथि।

बुढाक काज गाछ-वृक्ष लगेबाक आ बुढ़ीक काज तीमन-तरकारी तोड़ब। से बुढ़हा स्वर्गवासी भ' जाइत छथि। बेटा–पुतोहु बुढहीकें असगर गाममे रह' नहि देब' चाहैत अछि। मुदा, 'चारुकात गाछ-पात लहलहा रहल छलै। बुढ़हीकें भेलनि जेना बुढहाकें रोपल गाछ-वृक्ष हिनका कहि रहल होइन–'बूढ़हा मुइलाहे कहाँ? हमरा सभमे वैह तँ छथि। देखियो ने जीविते छथि।' एहि गाछ-पातक लाथे कयक बेर बेटा पुतोहुकें परतारि लैथ। मुदा एहि बेर बेटा मुस्तैद छल। सपरिवार बाल बच्चा संग आयल छल। बुढ़ही पोता-पोतीमे रमि गेलीह। बेटा संग जाए लेल तैयार भ' गेली। भोरमे सब तैयार भ' रहल छल आ बुढ़ही बारीमे छलीह। बेटा कहलकनि 'चल जल्दी तैयार हो' बुढहीक मुँहसँ निकललनि 'बच्चा आब हमरा एत्ते रह' दैह। एही गाछ-पातक बीच। एकर सभक सेवामे रहब। कतौ जायब, मन एतै टाँगल रहत। तहन फेर जाक' हेबे की करत?' बेटा अवाक, मायके मुँह ताक'लागल। कथा दांपत्य प्रेम आ गाछ–प्रेमकें एक दोसरासँ मिज्झर क दैछ। मोन पड़ैत अछि रस्किन बांडक कथा संग्रह 'ट्री स्टिल ग्रो इन आवर देहरा' (देहरामे आइयो उगैत अछि हमर गाछ, साहित्य अकादमी) कथा संग्रह जाहिमे गाछ-वृक्ष पर अद्भुत कथा सभ संकलित अछि।

'रुमाल' कथा पत्नी-प्रेम आ पत्नी लाथे स्त्री कार्यक महिमाक कलात्मक रेखांकन करैत अछि। साधारणतया पत्नी कार्यक अवमूल्यन पुरुषक स्वभाव होइछ। पत्नीक बनायल भोजन, स्वेटर, रुमाल अथवा घरक रख-रखाव आदि पर पुरुषक विशेष ध्यान नहि जाइछ। जखन कि पत्नी ई सभ कार्य अत्यंत मनोयोगपूर्वक करैत अछि। कथामे साहेबक रुमाल हरा जाइ छनि। ओ एतेक खिन्न जे सौंसे कार्यालय हुनक खिन्नतासँ

सहमल। सभकें आश्चर्य एहि बातक जे एतेक बड़का हाकिम आ एकटा रुमाल लेल एतेक खिन्न। ऑफिसमे हुनक मित्र जहन एकर कारण जनलक तँ चकित रहि गेल, 'हमर पत्नी जाहि तरहें परिश्रम क' ओ रुमाल बना हमरा देलनि। आ ओ आइए हमरा देलनि, आ हमहूँ हरा देल, ओकर माने की? हम हुनक परिश्रम ओ स्नेहकें मोजर नहि देल।' ई बात ककरो साधारण लागि सकैत अछि, मुदा से अछि नहि। भरि दिन पत्नीक नैहरक खिधांस बदला एक दोसराक काजक सम्मान करब, ओकरा गरिमामय बूझब, ओकर प्रशंसा करब, ओहि बारेमे बातचीत करब जीवनकें ऊर्जा आ ऊष्मा सँ भरि दैछ। एकर अभावमे जीवन कखनो कलहपूर्ण तँ कखनो नीरस आ ऊसर भ' जाइ छै।

एहि कथामे एकटा बुढ़ाक आ बुढ़ीक अत्यंत रोचक उपकथा अछि। ओ दूनू एतेक कमजोर आ कृशकाय छल जे ठीकसँ चलबो कठिन। कथावाचककें एहि बातक चिंता जे एहि अवस्थामे दुनू असगरे यात्रा पर चलल अछि। ओ अलग-अलग दुनूसँ एकर कारण पुछैत अछि। बुढ़हीक उत्तर सुनू, 'अपने रहै छथिन तँ हमरा कोनो दिक्कत नहि होइए। दोसर दिस बुढ़हा सेहो यैह उत्तर दैत छथि। यैह थिक वृद्ध दाम्पत्य प्रेमक पारस्परिकता। अपन-अपन जान लेल झखैत मुदा संगे रहने प्रेमक अपार बल। मोन पड़ैत अछि अद्भुत फिल्म 'सारांश'क अंतिम संवाद। जवान बेटाक मृत्युक उपरांत वृद्ध-वृद्धा एक दोसराकें सम्बल दैत अछि। वृद्ध अनुपम खेर बारीक घासमे किछु ताकि रहल अछि। वृद्धा (रोहिणी हटंगरी) पुछैत अछि की ताकै छी। वृद्ध कहैत अछि, 'तुम्हारे चेहरे की झुर्रियोंमे मैं जीवन का सारांश खोज रहा हूँ।'

वर्णव्यवस्था भारतीय सामाजक कटु यथार्थ रहल अछि। मिथिलामे स्वतंत्रता प्राप्ति आ लोकतंत्रकें स्थापित भेलाक एतेक वर्षक बादो वर्ण व्यवस्थाक विद्रूपता देखा जाइए। सामान्यतया कथाकार एहिसँ कतियाक' निकलि जेबाक प्रयास करैत छथि, लेकिन शिवशंकर श्रीनिवासक कथा मिथिला समाजमे वर्णव्यवस्था आ एकर क्रूरताक साहसपूर्ण अभिव्यक्ति करैत छथि। वर्णव्यवस्थाक जटिलता, स्तरीकरण, आंतरिक द्वंद्व आ दुष्परिणाम आदि सभसँ हिनक कथा मुठभेड़ करैत अछि। दिशा, सहरजमीन, चक्का, लड़ाई आदि कथामे एहि वैशिष्ट्यकें चिह्नित कयल जा सकैए। 'दिशा' कथा मिथिलामे समय-समय पर जातिगत साम्प्रदायिकताक तिक्त अनुभवकें साझा करैत अछि। कएक बेर एहनो घृणित स्थिति मिथिलामे आएल जखन निम्न जाति सवर्ण टोलसँ निकलि अपन जाति-बिरादरीक टोलमे रहब बेसी सुरक्षित बुझैत छल। एहि कथामे वर्ण-श्रेष्ठता आ तदजन्य दबंगताक सूक्ष्म विश्लेषण भेल अछि।

कथानायक सरजू रायकें जखन पता लगलनि जे हुनक तबादला कटरा उच्च विद्यालय भ' गेलनि तँ हुनक तरबा तरक जमीन खिसकि गेलनि। ओ सवर्ण बहुल

एहन स्कूल छल जत' निम्न जातिक लोक टिकिये नहि सकैत छल। भूलचूकमे जे कियो चलि जाइत छल तँ ओकरा मारि-पीट क' भगा देल जाइ। स्कूलक सेक्रेटरी ठाकुर नरपति सिंहक दबंगताक कतेको कथा-उपकथा सरजू रायकें सुनबामे आएल। ठाकुर नरपति सिंह जखन अपन रोबदार आवाजमे पुछलखिन, 'जाति'? तँ अकस्मात सरजू रायक मुँहसँ' निकलि गेलनि–'ब्राह्मण'। तकरा बाद ओ ब्राह्मण बनि ओहि गाममे मास्टरी करैत रहला। एक दिन सरयू रायकें द्विविधा घेरि लेलक। ठाकुर साहेब विष्णु-प्रीति निमित्त ब्राह्मण भोजन हेतु आमंत्रित केलखिन। सरयू राय डरे स्वीकारो क' लेलनि। बादमे हिनक आत्मा हिनका कोंच' लागल। अपन जीवन झूठक पर्याय लाग' लगलनि। सोचैत-सोचैत सरयू राय ठोस निर्णय पर पहुँचैत छथि। ठाकुर नरपति सिंहक आँखिमे आँखि गड़ा कहैत छथि, 'अहाँ तँ ब्राह्मण निमित्त नोत देने छी, मुदा हम ब्राह्मण नहि छी।' सरयू रायक आत्मविश्वाससँ लबरेज मुँह देखि ठाकुर नरपति सिंह किछु कहबाक साहस नहि जुटा पौलनि।

'गामक लोक'मे संकलित कथा 'चक्का'क पाट अत्यंत चौरस अछि। शिक्षाक प्रति वर्णवादी दृष्टि आ शिक्षाक निजीकरणक संपृक्तिसँ कथाक ठाठ ठाढ़ कयल गेल अछि। कथाक अंतर्दृष्टि ई जे शिक्षाक निजीकरण सवर्णवादी दृष्टिक नव संस्करण निर्मित करैत अछि। कथामे एहि तरहसँ विषयक अन्तरगुंफन कथाकें विशिष्ट बनबैत अछि। सूर्यनारायण मास्टर साहब उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय, मकुनमाक निजीकरणक सख्त खिलाफ छथि। सरकार आ किछु गामक लोक संगहि स्कूल किछु मास्टर एहि निजीकरणक पक्ष मे। निजीकरणक पक्षमे बहुतो कारण ओ सभ गनबथि आ प्राइवेट स्कूलक गुणवत्ताक महिमामंडन करथि। मुदा नितांत विपन्नक धीया-पुता कोना पढ़त से हिनका सभक चिंतामे शामिल नहि छल। सूर्यनारायणकें सदानंद गुरुजीक बात मोन पड़नि। सदानंद गुरुजी एहि स्कूलकें कोन तरहें सवर्ण लोकक झोंझसँ घीचि क' सामान्य लोकक बीच अनने छलाह, ताहि स्मृतिसँ ओ रोमांचित भ' जाइत छथि। एहि स्कूलक गौरवपूर्ण इतिहासक स्मरण भ' जाइ छनि। दलित जातिक चौठी जकरा सब चौठिया कहै, दीनाभद्री अद्भुत गवैत छल। कोना ने कोना अंग्रेज हाकिम ग्रियर्सनकें ई बात पता चलल। ओ चौठीक दरवाजा पर आबि नीचामे बैसि क' दीनाभद्री सुनलक आ नोटो केलक। गामक महा 'प्रतापी' बड़ा सरकार भूपति मिश्र जे कहियो चौठिया छोड़ि चौठी नाम उच्चारण नहि कयल अंग्रेज हाकिम द्वारा चौठीक ई सम्मान देखि अचंभित छलाह।

हाकिम चौठीक गायनक बदला गामकें एकटा स्कूल देलक, जकरा बड़ा सरकार अपन प्रभावसँ अपन दरबज्जा पर खोलबेलाह। ओहिमे बड़के लोकक धीया-पुताक शिक्षा-दीक्षाक प्रधानता। जखन सदानंद गुरुजीक बदली एहि स्कूलमे भेलनि तँ सभसँ

पहिने ओ एहि स्कूलकें हुनक दरबज्जा परसँ निकालि सार्वजनिक स्थान पर अनलनि आ सभक लेल समान रूपसँ शिक्षाक रस्ता खोललनि। बड़ा सरकारक ई सोच छलनि जे छोटका जातिक लोक सभ जे पढ़ि-लिखि लैत तँ हरबाही, चारबाहीकें करत? नब्बेक दशकक बाद मंथर गतिसँ आ विगत पाँच-छह सालसँ बिहाड़ि जकाँ निजीकरणक बसात चलल। एकरो उद्देश्य वैह जे बड़ा सरकारक छल। सत्तामुखापेक्षी आजुक बड़ा सरकार उद्योगपति गरीब दलितकें शिक्षित नहि कर' चाहैत अछि। ओकरा व्यापक पैमाना पर कुशल मजदूर चाही, चिंतन कर' बला लोक नहि। दोसर दिस स्कूल-कॉलेजक निजीकरणसँ हुनक सभक व्यवसाय चलत। सायास सरकारी स्कूल-कॉलेजकें तहस-नहस कैल गेल। लोकक बीच सरकारी स्कूलक नकारात्मक छवि बनाओल गेल। सोचबाक विषय ई जे आइयो केंद्रीय विद्यालय खूब नीक किएक अछि? ओहो तँ सरकारी अछि। तात्पर्य ई जे सरकार जकरा चलब' चाहत से बढ़ियासँ चलत जकरा भुस्सा तरे बैसाब' चाहत तकरा बैसा दैत। मुकेश अम्बीनक जियो खातिर बीएसएनएलकें नष्ट कयल गेल। कथानायक सूर्यनारायणकें गुरुजीक ओ दृष्टिदायक बात एखनहु मोन छै, 'सूर्य, तोरा बुझल छौ ने? एहि स्कूलकें हम कोना व्यक्तिक मुट्ठीसँ छोड़ा क' समाजक बीच अनलहुँ।...आइ देखही फेर चक्का उलटि रहलहुए। दोसर रूप मे, मुदा बात ओतै जा रहलहुए जत'सँ स्कूल समाजक बीच अयलहु। सावधान हो। एहि षडयंत्रसँ सावधान भ' जो।' शिक्षाक निजीकरणक पक्षधरकें ई कथा अवश्य पढ़क चाही। सच्चिदानंद गुरुजी एहि बातसँ चिंतित रहैत छलाह जे मिथिलामे शिक्षा सवर्ण समूह धरि सीमित अछि। ओ डांड़ सक्क्त क' अपन लक्ष्य बनौने छलाह जे निम्न जातिक अधिक सँ अधिक लोक कोना शिक्षित हो। हुनक कहब छलनि, 'विद्याक क्षेत्रमे एहिठाम कतेको एहन व्यक्ति भेलाहे जे एहि देशक गौरव छथि, किंतु दुखक बात ई जे एहि ठाम शिक्षा खास-खास जातिक बीचसँ बहरा नहि सकलै। जे एहि स्वतंत्र देशमे सभसँ पहिने आवश्यक छै।' हिनक कथामे जातिक सहअस्तित्व सेहो देखबामे अबैछ। निम्नजातिमे पसरल ब्राह्मणवाद अर्थात वर्ण श्रेष्ठताक बोध पर सेहो कथाकारक दृष्टि गेल अछि। ब्राह्मणवादक वैशिष्ट्य ई जे प्रत्येक जाति अपनासँ छोट जाति ताकि लैत अछि, आ ओकर यथासाध्य शोषण करैत अछि। हिनक कथा अहू दिस संकेत करैत अछि जे ब्राह्मणक भीतर सेहो जाति श्रेष्ठताक पदानुक्रम बनल अछि। जाहिमे एक ब्राह्मण दोसर ब्राह्मणसँ निम्न होइत अछि। आशय ई जे जाति व्यवस्थाक आंतरिक जटिलता, संश्लिष्टता आ विद्रूपतासँ सीधे मुठभेड़ करैत अछि हिनक कथा।

जनसंख्याक आधा हिस्सा पर हल्लुक मनसँ बात करब वा कथाकें रोचक बनेबाक लेल स्त्री अवतरण शिवशंकर श्रीनिवासकें मंजूर नहि। हिनक कथा सभमे मिथिलाक स्त्री सतहसँ ऊपर उठैत देखाइत छथि। खाली स्त्रीक दारुण दशाक वर्णन करब हिनक लक्ष्य

नहि अपितु ओहि दशाक कारणकें बिकछा क' ताकब हिनक कथाक प्रयोजन। 'पिजराक सुग्गा' मनुस्मृतिमे स्त्री पराधीनंताक प्रतिपाठपरक कथात्मक रूपांतरण अछि। मनुस्मृतिक 'ऐतिहासिक श्लोक 'बलाया वा युवत्था वा वृद्धया...भजेतस्त्री स्वतंत्रताम' जकर मैथिली अनुवाद ई जे बालिका हो वा युवती वा वृद्धा स्त्रीकें स्वतंत्रतापूर्वक घरक कोनो काज नहि कर' देबक चाही। स्त्री बालिकामे पिताक अधीन, यौवनावस्थामे पतिक अधीन आ वृद्धावस्थामे पुत्रक अधीन रहै। मनुस्मृति स्त्री स्वतंत्रताक हननक महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रंथ अछि। जे माय 'पिजराक सुग्गा'क कथावाचककें पालि-पोसि क' ठाढ़ कयलक, मनुक्ख बनौलक, जीवन-संघर्षसँ साक्षात्कार करब सिखौलक अचानक पिताक मृत्युक बाद ओ अपन मायक गार्जियन कोना भ' जायत? नानीक मृत्यु पर मायकें नैहर जेबाक छै आ एहि हेतु माम भागिनसँ परमिशन मँगैत छथि-'बहिनकें बिदागरी करब' अयलियनि अछि, जाय दहुन'। जे आइ धरि मायसँ पूछिए क' कतौ जाइत अछि ओ कोना परमिशन द सकैत अछि? लेकिन मामाक स्पष्ट मान्यता जे, 'आब तों घरक गार्जियन भेलह। तोरे आदेश ने घरमे चलतह। पुरुष—पातमे सभसँ जेठ तोहीं ने छहक।' ओ हतप्रभ जे मायक सेहो यैह विचार, 'से बौआ कहतै तखन ने?' कोनो सैद्धांतिक कथन वा सूत्रकें रोचकता संग उतारब दुरुह कथा-कर्म होइछ। 'पिजराक सुग्गा' मनुस्मृतिक उपरियुक्त स्त्री स्वतंत्रता विरोधी सैद्धान्तिक श्लोकक बिनु नाम लेने ओकर निरर्थकता आ विसंगतिक अभिव्यक्ति करैछ। कथावाचककें मायक अविभावके रूप मंजूर। ओ मायसँ कहबबैत अछि, 'की भेलह? किए एना करै छह। एना नहि कर'। अधीर नहि होअ। बाप ने चल गेलथुन, हम तँ छियहे। तोरा कथीक चिंता।' मायक एहि कथनसँ श्लोकक विपरीत एकटा गरिमामयी स्त्रीसँ मुखामुखम होइत अछि।

शिवशंकर श्रीनिवासक नब कथा संग्रहक शीर्षक कथा 'गुण-कथा'मे स्त्री अपन व्यक्तित्वक अद्‌भुत विस्तार करैत अछि। पतिक मृत्युक बाद अंजनी देवी खूब सुखितगर बेटा-पुतोहु लग रहि व्यर्थता बोधसँ उबर' खातिर स्लम एरियामे गरीब बच्चा सभकें पढ़ब' लगैत छथि, पेंटिंग सिखबैत छथि आ एहि तरहें पूरा कॉलोनीक 'बड़ी माँ' बनि जाइत छथि। ई 'बड़ी माँ'क पदवी प्रदत्त नहि अर्जित अछि। पूरा कॉलोनीक धीया-पुताक स्नेहक अमूल्य उपहार। श्रीनिवासजीक कथामे सशक्त आ सार्थक स्त्री छविक दर्शन होइए।

समाजमे बेटी-रोटीक संबन्धे वर्णव्यवस्थाक लौह शृंखलाकें तोड़ि सकैये। अंतरजातीय आ अंतर्धार्मिक विवाहसँ, जाति-धर्मक विद्रूपताकें नियंत्रित कएल जा सकैत अछि आ एकटा समतापरक, सहनशील आ उदात्त समाजक निर्माण कएल जा सकैये। मैथिलीमे एहि विषय पर कथा नहिये जकाँ लिखल गेल अछि। मधुमाछीक छत्तामे के हाथ लगाबए? अंतरजातीय वा अंतर्धार्मिक विवाह प्रेमे विवाहसँ सम्भव। चौदहवीं शताब्दीमे विद्यापति कहलनि 'परबस जनु हो हमर पियार'। मुदा अखनो मिथिलामे (पूरा देशे मे)

प्यार परबस अछि, अंतरजातीय-अंतर्धार्मिक विवाह नाकाबिले बर्दास्त। कारण, 'मर्यादा'क रक्षा आ स्त्रीक आत्मनिर्णय पर पाबंदी। स्त्री स्वतंत्रता बेटीकें बेटा संबोधन, कुमारि भोजन, दुर्गाक प्रतीक आदिसँ नहि ओकरा आत्मनिर्णय आ आर्थिक स्वतंत्रताक लेल कतेक तैयार कएल गेल तैसँ होइ छै। आत्मनिर्णय विवाहक लेल, विधवा विवाहक लेल आ विषम परिस्थितिमे विवाह तोड़ि देबाक धरि आत्मनिर्णय। शिवशंकर श्रीनिवास पूर्ण साहस संग एहि विषयकें कथावस्तु बनबै छथि। 'सिनुरहार' कथामे विधवा विवाहक बाद मायक द्वंद्व आ कश्मकशकें विलक्षण कथा-युक्ति सँ कथाकार प्रस्तुत करै छथि। पितृसत्तासँ पूर्णतः अनुकूलित एकटा स्त्रीक द्विविधापूर्ण चित्त आ ओकर उलझनकें देखायब, 'सिनुरहार' लेखकक अंतर्निहित उद्देश्य। कथाकार अपन उद्देश्यमे पूर्ण सफल भेल छथि।

'सतभैंया' कथा अंतर्धार्मिक विवाहक विडंवना-बोधकें उद्‌घाटित करैत अछि। प्रतिभा आ मेधाक धनी बैंक अधिकारी अपर्णा ता धरि नीक आ अति सुशीला मानल जाइए जाधरि ओ अपन विवाहक मादे आत्मनिर्णय नहि लइये। माता-पिता पर बज्रपात तखन होइ छै जखन पता लगै छै जे अपर्णा एकटा सुंदर, सुशील आ दक्ष पत्रकार जावेद हुसैनसँ विवाह करबाक निर्णय क' लेने अइ। पिता तँ यथासाध्य अपनाकें नियंत्रित कयने रहलाह लेकिन डरायल रहथि जे पत्नी 'गड़बड़ा' नहि जाथिन। पति-पत्नीक द्वन्द्वात्मक भय आ आशंकासँ कथाक अत्यंत महीन तानाबाना बुनल गेल अछि। एहि संकटसँ उबारैत छथि अपर्णाक दादी। दादी समय संग चलयबाली प्रगतिशील सोचक छथि। हुनक क्रांतिकारी सोच एहि स्थापनाकें खारिज करैत अछि जे रूढ़ि आ पछुआया सोच वृद्ध समुदायसँ संचरित होइत अछि। ओ अपन बेटाकें कहैत छथि, 'किछु नहि अपर्णाक विवाह करू। ओकर पसिन्न हमरा पसिन्न। जाति-धर्म कारणे बेटीकें नहि काटू। ओकर भविष्य हमर प्रसन्नता थिक। दादी स्वयं 'छोट' ब्राह्मणक बेटी होयबाक कारण सासुरमे शोषित-लांछित भेल छलीह। ओ मनुष्यता विरोधी जाति दंशसँ परिचित छलीह। ओ एकर निरर्थकता बतबैत कहैत छथि, 'हमरा सक्क चलैत तँ ई जाति-पाँति-धर्म सभकें चूल्हिमे डाहि क' भस्म क' दीतियै। मात्र मनुक्ख रहिते ओ गुण रहितै।'

शिवशंकर श्रीनिवास स्त्री पराधीनताक सभ छल-छद्‌मसँ परिचित छथि। तथापि ओ एकर असली कारण धर्मसत्ता आ ओकर सृजन पितृसत्ताकें मुखर रूपसँ प्रश्नांकित नहि क' पबै छथि। कथाक कएक टा प्रसंग सँ ई स्पष्ट अछि जे कथाकार स्त्री पराधीनताक कारण स्त्रीकें मानैत छथि। आमजनमे प्रचलित ई धारणा धर्मसत्ता आ पितृसत्ताकें क्लीन चिट द' दैछ। स्त्रीक विरोध कयनिहार स्त्री पुरुषक लिखल धर्मग्रंथ, धार्मिक प्रचार, कथावाचन आ पाखंडसँ ततेक ने अनुकूलित भ' गेल छथि जे हुनक मुंह आ व्यवहारसँ पुरुष पोषित धर्मसत्ता बहराइत अछि। गाममे पुरुख-पात द्वारा

जतेक तरहक धार्मिक आयोजन होइछ ओ एही अनुकूलनक चतुर पाठ्यक्रम। जहिया गामक स्त्रीगण पुरुखक एहि चतुर चालिकें बूझि जैत ताहिया असली स्त्री जागरण हैत। आ तखन गामक एक स्त्री दोसराक शोषण नहि करत बल्कि बहिनापा जोड़ि सासु-पुतोहु मिलि क' पुरुखक किलाबंदीक खिलाफ लामबंद हैत।

स्त्री 'पिजराक सुग्गा' एहि लेल बनल रह' चाहैत अछि जे गर्भेसँ ओकरा यैह सिखैल गेलै। वास्तविकता ई जे स्त्री स्वयं अपनाकें 'अन्हरा पिंजरामे नहि सठैत अछि', बल्कि बच्चेसँ ठोकि-पिटी क' ओकरा आन्हर बनाएल जाइ छै। परिवारक सभ टा पाठ स्त्री लेल होइछ। ओ कोना उठत-बैसत, चलत, फिरत, हँसत-बाजत, सभटा पाठ्यक्रम तैयार रहैछ। एहिसँ एको मिसिया बाम-दहिन भेल नहि कि कुलकलंकिनीक खिताब ओकरा लेल राखल रहै छै। दरअसल ओकर बोध, विचार, सोचक अपहरण क' लेल जाइए। ई अकारण नहि जे दुनियाक नामी स्त्री चिंतक सीमेन द बुआ लिखैत छथि 'स्त्री जन्म नहि लैत अछि, बनाएल जाइत अछि। जन्म तँ मादा लैत अछि।'

भारतीय शिक्षा व्यवस्थाक एकटा पैघ सीमा ई रहलए जे एतय श्रम आ ज्ञानकें फराक-फराक क' बुझल गेल। दुनूक बीच निरंतर आवाजाहीक बदला देबाल ठाढ़ क' देल गेल। जकर दुष्परिणाम ई जे हाथसँ करय बला श्रम हीनतम मानल गेल आ मस्तिष्क बला श्रेष्ठतम। भारतीय सामाजिक संरचनामे निम्न जातिक जिम्मा यैह हीन कार्य आ सवर्णक खातामे श्रेष्ठतम कार्य। मस्तिष्कक छोटसँ छोट कार्यक महिमामंडन आ हाथक नीको कार्यक अवमूल्यन एहि सामाजिक संरचनाक वैशिष्ट्य। श्रीनिवासजीक कथा 'फर्क' हाथक काजक गरिमामय चित्रण करैत अछि। जोखन कामति हाथक बाँटल जौड़क वैशिष्ट्यकें जाहि तरहें कथाकार विश्लेषित केलनि अछि ओ अद्भुत। श्रमक गौरव-गाथा लिखैत अछि-'फर्क'-'केओ साहदिया बच्छा कीनि क' आनय तँ ओकरा इच्छा होइक जे एकरा गारामे जोखन कामतिक हाथक जँ गरदामी बला घुंघरू दितियैक। ओह! कमाल शोभतैक।' क्यो ककरो खरिहानमे हिलसगर कराम देखि क' पुछैक-की ओ फल्लां, ई जोखन बला कराम थिक।' 'हाँ' जोखन बला लोक आह्लादसँ उत्तर दैक।

जोखन एहि कलाक प्रति पूर्ण समर्पित छलाह, तहिना जेना माँगन खबास विद्यापति गीत ल'क' छलाह। माँगन प्राचीनकालीन नहि छथि। एहन टॉप क्लास गायककें मिथिलामे कतेक आम लोक जनैत अछि। मान, सम्मान, यश, प्रतिष्ठा काजक गुणवत्तासँ हेबाक चाही ने कि ओकर वर्ण श्रेष्ठतासँ। गाँधीजीक नयी तालीम काज आ ज्ञानक पारस्परिकताक बात करै छल। भारतक उत्पादन पद्धति, शैली, कारीगरी आ जतेक तरहक पारंपरिक निपुणता अछि ओहि माध्यमसँ ज्ञान धरि पहुँचबाक बाटक नाम छल नयी तालीम। नयी तालीमकें सायास समाप्त कयल गेल। ओ शिक्षा व्यवस्था रहैत तँ

हाथक काजक सम्मानमे कमी नहि होइत। काजक दुनिया आ ज्ञानक दुनियाक बीच एकटा विशेष तरहक शिक्षाशास्त्रीय रिश्ता बनैत। फर्क कथाक ऐतिहासिक महत्व एहि पृष्ठभूमिमे अछि।

सादा और सरल शिल्प संरचना शिवशंकरजीक कथाक वैशिष्ट्य। छोट आ साधारण सन बातसँ कथाक आरंभ क' धीरे-धीरे कथाकें कोनो वृहत्तर सरोकार स'जोड़ि देब हिनक कथा-कला रहल अछि। कथाक बीचमे कोनो प्रचलित ग्रामीण कथा वा लोककथाकें आनि विषयवस्तुकें गंभीर आ रोचक एक संगे बना दैत छथि श्रीनिवास। लोककथाक (सतभैंया) माध्यमसँ मिथिला परंपरामे हस्तक्षेप क' ओहिमे प्रगतिशील दृष्टिएँ बदलावक आकांक्षा व्यक्त करब हिनक कथा-युक्ति रहल अछि। भाषा हिनक सहज अछि। जेना बाजल जाइत अछि तहिना लिखबाक प्रयास हिनक कथामे कैक ठाम देखबामे अबैए। कथा-वस्तुक दृष्टिसँ हिनक कथा–भाषा अभिजात्य नहि भ' सकैत अछि।

शिवशंकर श्रनिवास ग्रामबोधक श्रेष्ठ कथाकार छथि। मिथिलाक गाम अपन संपूर्ण सांस्कृतिक विलक्षता आ अधोपतन संग हिनक कथामे अवतरित होइत अछि। मुदा ग्राम केंद्रीयताक कारणे कथामे वैविध्य नहि आयल अछि। कथामे वैविध्य लाब' लेल ग्रामेतर समकालीन समस्या, मुद्दा, सरोकार, चिंता आ समस्या सभकें लक्षित करब आवश्यक। ग्रामीण कथामे कथाकें बहुत बेसी जटिल (सकारात्मक रूप मे) वा गहींर विन्यास नहि देल जा सकैछ। ई अकारण नहि जे हिनक कथा सरल शिल्पक अछि। एक विषय पर कथा लिखबाक समस्या ई होइछ जे समान परिस्थितिसँ बेर-बेर टकरेबाक कारणे जीवन दृष्टि किछु अतिरिक्त उपलब्ध करवासँ वंचित भ' जाइत अछि और ओहिमे आंतरिक गति उपलब्ध करब कठिन भ' जाइ छै।

'गामक लोक' श्रीनिवासजीक श्रेष्ठतम संग्रह कहल जा सकैत अछि। 'गुण-कथा' संग्रह एहि कथा–संग्रहक गुणवत्ताकें अतिक्रमण क' आगू नहि जा सकल अछि। यद्दपि 'गुण-कथा'मे आधुनिक भाव-बोधक किछु कथा अवश्य अछि मुदा जे संश्लिष्टता, कथा-विन्यास, कथाक भीतरिया अंतर्द्वंद्व, कशमकश जाहि मात्रामे 'गामक लोक' संग्रहमे आएल अछि 'गुण-कथा'मे नहि। श्रीनिवासजी कथाक माध्यमसँ मिथिलाक परंपरामे सार्थक हस्तक्षेप करबाक प्रयास निरंतर करैत छथि। समयक संग जे परंपरा अपन सार्थकता समाप्त क' देने अछि तकरा प्रति मोह नहि रखै छथि कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास। आजुक दृष्टिएँ मनुष्यता विरोधी, स्त्री विरोधी परंपराक प्रति घोर आलोचना-दृष्टि श्रीनिवासजीकें समकालीन और सन्दर्भवान कथाकार बनबैत अछि।

मो. 8521912909



जाबत धरि सपना अछि शेष

दिलीप कुमार झा

सपना देखब बहुत जरुरी अछि। स्वप्न मरि जायत तँ साइत हमहुँ मरि जायब तें स्वप्न देखब जरुरी छैक। स्वप्नकें पूरा करबाक चेष्टा करब सेहो जरुरी छै। एखन हम बात क' रहल छी कविता संग्रह 'जाबत धरि सपना अछि शेष' क, कवि छथि मिथिलेश कुमार झा। मिथिलेश कुमार झा मैथिलीक एकटा साकांक्ष सेवक छथि। भाषाक लेल समर्पित व्यक्तित्व जे सम्प्रति कोलकातामे रहैत छथि। एहिसँ पहिने हिनक दूटा पोथी प्रकाशित भ' चुकल छनि। 'टीस' लघुकथा संग्रह आओर 'सोना आखर' नेना सभक लेल कविताक संकलन। ई हिनक तेसर पोथी छनि। भारतमे सय प्रतिशत मैथिलीकें देबयवला जे आँगुरपर गनल जायवला लोक छथि से ताहिमेसँ छथि मिथिलेश कुमार झा। पेशासँ शिक्षक छथि। पत्रकारिता हिनक स'ख छनि। एकटा हिनक आर स'ख छनि डाक टिकट संग्रह करब। मिथिला सन्दर्भित अनेको डाक टिकटक संग्रह कयने छथि। एकटा जनतब जे बेस महत्वपूर्ण अछि। बहुतो गोटेकें साइत नहि बुझल होनि जे बिस्फी डाकघरमे विद्यापतिक रेखाचित्र पाड़ल मोहर पड़ैत छैक। ओहि मोहरक रेखाचित्रक डिजाइन मिथिलेश कुमार झा बनौने छथि।

मिथिलेश कुमार झा बहुत दिनसँ कविताक अतिरिक्त कथा ओ आलेख सेहो नीक लिखैत छथि। आब अबैत छी हिनक कविता संग्रहपर। जाबत धरि सपना अछि शेष कविता संग्रहमे दू शताब्दीक रचना संग्रहित अछि। दू शताब्दीसँ मतलब अछि बीसम शताब्दी अंतिम दू दशक ओ एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक कविता एहिमे संग्रहित अछि ओना 2010 के बादक जे रचना अछि से कविता संग्रहमे संग्रहित नहि अछि। सब कविताक रचना वर्ष देल छैक। जिज्ञासा शीर्षकसँ पहिल कविता लिखलनि सन 1984 ई. मे। संग्रहमे बिना बिछल -बेरायल एकदिशसँ कविता देल गेल अछि तें पाठक आओर समीक्षककें हिनक कविताक विकासक क्रम बुझबामे कोनो बेसी तरद्दुत नहि कर' पड़तनि। संग्रहमे जे कविता सब संग्रहित अछि तकरा हम दू भागमे बाँटि क' देखय चाहब। मिथिलेश कुमार झाक बीसम शताब्दीक कविता तथा एकैसम शताब्दीक कविता। संग्रहमे पहिल कविता महाकवि यात्रीक निधनक समय लिखल गेल अछि। ओ श्रद्धांजलि कविता थिक। तकर बादक कवितासब तिथिक्रमसँ लिखल अछि। बीसम शताब्दीमे लिखल रचना थोड़ अछि। ई हिनक आरंभिक रचना अछि मुदा कवि कर्म एकटा व्याकुलता थिक। औनाहटि दूर करबाक लेल अभिव्यक्तिक एकटा सशक्त माध्यम थिक से हिनक रचनामे आरंभहिसँ परिलक्षित होबय लागल अछि। जिज्ञासा शीर्षक कविताक पाँती देखल जाय—

नहि कम होइछ मनक जिज्ञासा/नील अकासक ओहिपार/छै कोन देश/तकर कोन भेस/मन औनाइत अछि तकरा देखबा लय।

मिथिलाक विकास मैथिलीक विकास कविक आरंभिके रचना सबमे दृष्टिगोचर होब' लागल छल। मिथिलाक छी जँ मिथिलाक लेल चेतना नहि रहत तँ निश्चितरुपसँ मैथिली रचना पूर्ण नहि भ' सकत। कवि अपन चेतना कवितामे लिखैत छथि—

महासागरहुँमे उठै अछि बड़वानल/दावानलसँ धधकि उठै अछि चंदन जंगल/थिर गहींर मिथिला उपेक्षासँ अधीर/आब चेतना लहरि सौंसे मिथिला पसरल/असुर भयाओनि भैरवि छथि जागि रहल/मिथिला हित मैथिल निद्रा त्यागि रहल/भू-भाषाअभिमान जागल मिथिलामे/सलहेसक वाणीकें नहि कियो जाबि सकत।

आइसँ तेइस वर्ष पूर्व ई कविता लिखल गेल। की एखनो मिथिलाक लोकमे अपना मातृभाषाक प्रति गौरवबोध उत्पन्न भेलैक अछि। समाजमे भाषा चेतना प्रसार दिन- दिन कमे बुझा रहल अछि। प्राथमिक शिक्षा हिन्दी-अंग्रेजीक माध्यमसँ भ' रहल अछि। नेना सबकें ई बोध सेहो समाप्त भेल जा रहल अछि जे हम जे बाजि रहलहुँ सेहो भाषा छी। हमर मातृभाषा छी। कतेक दुर्भाग्य बात छैक जे गाममे जखन बच्चा सबसँ पुछैत छी जे अहाँक मातृभाषा की छी तँ बहुतो नेना अपन मातृभाषा हिन्दी कहैत अछि। तथापि जाबे धरि बाँचल अछि गाम मैथिलियो बाँचल रहत। मैथिलीक संग भ' रहल राजनीतिक वितण्डा जे ठाढ़ कयल जा रहल अछि से अलगे बात छैक। दीप ज्ञानक प्रतीक होइछ। दीप शीर्षकसँ शृंखलाबद्ध चारि गोट कविता अछि। ओहो कविता सब बहुत विलक्षण अछि। किछु कविता एहन अछि जे कवि सबहक आरंभिक रचनामे पाओल जाइछ। जेना नेता शीर्षकसँ लिखल कविता। बीसम शताब्दीक लिखल हिनक रचना जे आरंभिक रचना अछि ताहि हिसाबें बहुत सुगढ़ कविता सब अछि। विचार प्रधान अछि। लोकोन्मुखी रचना सब अछि। मिथिला कविक केंन्द्रमे अछि। मानवीय पीड़ा सेहो कविताक मूलमे अछि। मातृभाषा प्रेम कविक रोइयाँ-रोइयाँमे भरल छनि। से जखन कविकर्म करबा लए बैसैत छथि तँ अनेक ठाम मैथिली प्रेम उमड़ैत भेटैत अछि। मैथिलीक नामपर जे एखन अनेक रंगक विवाद उत्पन्न कयल जाइत अछि तकरा प्रति मिथिलाक समाजकें साकांक्ष करैत 'उद्‌बोधन' नामक कवितामे कहैत छथि—

पछिमा-पुबहा-दछिनाहा-थिक बकवास/मैथिल छी सभजन मिथिला सबहक वास/गंडकसँ महानन्दा कछेर चिर चंदनक/थिक सब मिथिला भूभाग, सब मिथिला केर चास/अमेरिकाक दू रंगी चालिकें उघार करैत कविता 'जखन पड़लह सिर फन्ना तखन बुझलह भगवन्ना'मे 09/11 क' जखन अमेरिकापर हमला भेलैक तँ अमेरिकाकें बुझेलै जे आतंकवाद संसारक लेल कतबा खतरनाक अछि। भारत सन देश तँ कतेक दशकसँ आतंकवादक दंश झेलि रहल अछि।

कविक नेनपन गाममे बीतल छनि। आरंभिक शिक्षासँ उच्च शिक्षा धरि गाममे भेल छनि। पछाति कवि चलि गेलाह कोलकाता। महानगरमे रहैत छथि। गामक अबरजात बनल छनि। गाम हिनका छुटियो क' नहि छूटैत छनि। गाम शृंखलामे कवि सत्रह गोट कविता लिखने छथि। जे सबटा एहि संग्रहमे प्रकाशित छनि। मिथिलाक गाममे जे सब समस्या रहरहाँ देखबामे अबैत अछि से सब हिनका कवितामे भेटैत अछि। जेना रस्ताकें छेकब मिथिलाक गामक चरित्र अछि ताहिपर करगर व्यंग्य अछि। तहिना बिजलीक समस्या, टेलिफोनक गाममे आयब। जाहिदिन कवि बिजलीपर कविता रचलनि तकर बादसँ मिथिलामे बिजलीक हालतिमे बहुत अंतर आयल अछि। आब प्रायः गाममे बिजली अछि से बिजली टिकल रहैत अछि। तहिना मोबाइलसँ गाममे संचार क्रान्ति आबि गेल अछि। मुदा की मिथिलाक लोक बिजली ओ संचारक लाभ औद्योगिक ओ वाणिज्यिक

रुपमे ल' रहल छथि? गामक शिक्षाक हालतिपर कविता लिखने छथि। बीस बर्ख पहिने लिखल हिनक कविता शिक्षाक अधोगतिमे अनामति अपन प्रश्नक संग ओहिना ठाढ़ अछि। आइयो मिथिला ओ बिहारक शिक्षा व्यवस्था मात्र प्रमाणपत्र बटबाक कार्यशाला मात्र रहि गेल अछि। तहिना सरकारक योजनामे दलाल संस्कृतिक संग सरकारी टाकाक बनरबाँट ओहिना चलि रहल अछि। हमरा गामक परिवर्तन उर्ध्वमुखी हेबाक बदला अधोमुखी भ' रहल अछि। से हमरा सबहक लेल चिंताक विषय अछि। गामक चिंतामे कविता रचबाक एकटा प्रमुख आयाम छनि। गामक अधोगतिसँ कवि बहुत सीदित छथि। हेबाको चाही। गाम अछि तें जे किछु सांस्कृतिक तत्व बाँचल अछि।

मिथिला एकटा विचित्र भूभाग भ' गेल अछि। जतय कहियो रौदी तँ कहियो दाहीसँ जनगण फिरीशान रहैत अछि। मिथिलामे बाढ़िक समस्याक निदान सरकार द्वारा बहुत अवैज्ञानिक ढंगसँ तकबाक चेष्टा कयल गेलैए। अनेको नदीपर बान्ह, छहर बना क' पानिक धारकें रोकबाक प्रयास कयल गेलैए। जे बहुत कारगर नै भ' सकलै उनटे अकस्मात पानिक दबावक कारण अनेको बेर, अनेको ठाम बान्ह टुटैत रहलैक आ प्रलय अबैत रहलैक। कवि 2008मे कोशीक प्रलयक भयंकर ताण्डव जे कुसहामे भेलैक ताहिसँ बहुत द्रवित भेलाह। कुसहा त्रासदीमे अपार जन-धनक हानि भेलैक। ओहि मानवीय त्रासदीपर सेहो कविता लिखने छथि। कवि कहैत छथि हमर पूर्वज सब जे कहि गेलाह 'रौदिये मरी आ दाहिये जीबी 'से एकदम साँच अछि। तटस्थता बहुत खतरनाक होइछ से कवि साकांक्ष करैत कहैत छथि हे तटस्थ महामानव जँ अहाँ एखन तटस्थ छी तँ आबयवला समयमे अहुँक इतिहास लिखल जायत। जनतंत्रमे सत्ता भेटिते लोक मदमस्त भ' जाइत अछि। जनता सबटा खजाना लुटि क' अपन जेबी भरैत लगैत अछि। से ओहेन व्यक्तिकें साकांक्ष करैत कहैत छथि जे आमजनकें नै बुझियौ निमूधन / शक्तिसँ हीन।

कोलकाता शहरमे रहैत छथि ओतयक परिवेशसँ सेहो प्रभावित होइते रहैत छथि से एकटा विलक्षण कविता अछि 'पार्क स्ट्रीटमे दूटा बच्चाक मिलन जे दुनू दू देशक अछि। अपरिचित अछि। ओहि बच्चा सबकें सीमा-सरहदक ज्ञान नहि छैक। तँ, केहन निश्च्छलता ओ निर्मलतासँ भेटैत अछि। तहिना महाकवि विद्यापतिक डीहक उपेक्षा कविकें सीदित करैत छनि।

कविकें समाजक छोट-छोट घटना उद्वेलित करैत छनि आओर आम जनजीवनक पीड़ा अपन कवितामे जहपटार व्यक्त केलनि अछि। मिथिलेश कुमार झा आशा ओ उमेदक कवि छथि। कठिनसँ कठिन परिस्थिति किये नै हो धैर्यक त्याग नहि करक चाही।

जाबत धरि/एहि समाजक एकहुटा नेनाक आँखिमे/छै मनुक्ख बनबाक सपना/अपन पैरुख जगेबाक कामना/एहि समाजक एकहुटा नवतुरियामे/जाबत धरि छै/समाजक प्रति हित- चिंतन/मातृभूमिसँ भक्ति/ताबत धरि सपना अछि शेष।

एहि संग्रहमे हिनक 2010 धरिक रचना शामिल कयल गेल अछि। ओकर बादो अनेक कविता लिखनहि हेताह। किछु तँ पढ़लो अछि तें आगाँ उमेद बनले अछि तावत पढ़ू हिनक कविता संग्रह जाबत धरि सपना अछि शेष।

मो. 6207627509



ललित निबंध

एहि स्तम्भक अन्तर्गत प्रस्तुत अछि कवि-समीक्षक रमण कुमार सिंहक 'प्रतीक्षा मे उमेद होइ छै' नामक ललित निबंध। हिनक 'हमर पसार संसार सार' नामक ललित निबंधक पोथी अंतिका प्रकाशनसँ आयल अछि। हुनक एहि पोथीक खूब चर्चा भेल अछि। ओ निरन्तर सृजनरत रहि नव-नव विषय, नव-नव कथ्य आ कथात्मक ताना-बाना बुनैत ललित निबन्ध लिखि रहल छथि। प्रतीक्षा मे केहन उमेद होइ छै, से हिनक विचार-सरणि पर टहलैत-बुलैत अनुभव कयल जा सकैत अछि।

प्रतीक्षा मे उम्मेद होइ छै

रमण कुमार सिंह

ओना तँ प्रतीक्षा बड्ड उबाउ मानल जाइत छैक, खाहे ओ कोनो व्यक्ति केर हो, अथवा अवसर केर, मुदा प्रतीक्षा मे एकटा उम्मेद होइ छै। संभवतः तें प्रतीक्षा करबाक अनुभव कें खराब मानितो लोक प्रतीक्षा करब नहि छोड़ैत छैक। कतहु जयबा लए रेलवे स्टेशन अथवा हवाइ अड्डा पर रेल अथवा विमानक प्रतीक्षा करैत भनहि अहाँ खौंझाइत होइ, मुदा जखन ओहि रेल अथवा विमान सँ कोनो प्रियजन केर अबैया होइ छैक, तँ ओहि प्रतीक्षा केर आनंद अलगे होइत छैक। कोनो चीज जँ बिना परिश्रम के, सहजता सँ बिनु इंतजार के भेटि जाइत छैक, तँ ओकर मोल घटि जाइत छैक, मुदा कतेको प्रतीक्षाक बाद जँ अपन प्रियजन सँ भेंट होइत छैक अथवा अपन इच्छित वस्तु हाथ अबैत छैक, त' ओहि सँ अनिर्वचनीय सुख भेटैत छैक। एकर अनुभव प्रायः अपनहुं सभ कें भेले होयत।

ओना अनेक लोक एहनो छैक, जकरा ककरो प्रतीक्षा नहि होइत छैक। एहन लोक कें वीतरागी कहि सकैत छी, जकरा एहि संसार सँ कोनो मतलब नहि रहैत छैक अथवा जकरा ई संसार निस्सार बुझाइत छैक। मुदा जिनगी मे प्रतीक्षाक खतम होयब, उम्मेद के खतम होयब अछि, कम सँ कम हम तँ यैह सोचैत छी। एतय हमरा एकटा खिस्सा मोन पड़ैत अछि। हमरा गाम मे एकटा आजी मैंया छलखिन। निरंतर व्रत-उपवास करैत रहबाक कारण हुनक स्वास्थ्य खराब रहैत छलनि। बीमार पड़ला पर हुनका बड्ड कष्ट होइत छलनि, मुदा तइयो हुनक जिजीविषा खत्म नहि होइत छलनि। कारण-प्रतीक्षा। ओ कहैत छलखिन, बाउ, सोचै छी, भगवान पोता के मुंह देखा दितथि, तँ चैन सँ मरि सकितहुं। भगवान हुनकर बात सुनलकनि आ शीघ्रे पोताक मुंह देखबाक सौभाग्य प्राप्त भेलनि। तकर बाद ओ कहय लागलखिन, आह, पोता के उपनयन भ' जायत, तँ चैन सँ मरब। पोता केर उपनयनो भ' गेलनि। तकर बाद कहय लागलखिन, जे आब पौत

पुतौहु कें देख ली, तँ मोन कें चैन भेटत। एवंप्रकारे हुनक हुनक इच्छा बढ़िते जाइत छलनि आ ओकर पूर्ति केर प्रतीक्षा करैत ओ जीबाक इच्छा कें कैक वर्ष धरि जगौने रहलीह। सय वर्ष सँ बेसी उमेर मे अंततः भगवाने के प्रतीक्षा चूकि गेलनि आ किछु इच्छा अपूर्ण रहैत हुनका भगवान बजा लेलखिन।

कखनहुँ काल एहि शहरक अपन अपार्टमेंटी घरक अन्हार बालकोनी मे एकांती मे बैसल रहैत छी, तँ एकटा अनाम सन प्रतीक्षा मोन मे उगैत अछि, जे बाहर जे इजोत झिलमिला रहल अछि, ओहि सँ थोड़ेक प्रकाश हमरो आलोकित करत आ ई सब सोचैत बुझाइत अछि, जे सांचे प्रतीक्षा एकटा उम्मीद थिक। असल मे प्रतीक्षा स्वयं मे एकटा प्रकाशपुंज अछि, जेकर रोशनी मे अहाँ ककरो आमदक बाट निहारैत छी। नीक सँ नीक होयबाक प्रतीक्षा सदति बनल रहैत छैक। जखनहि ई प्रतीक्षा खत्म होइत छैक, बुझू जे यात्रा खतम भ' गेल। मंजिल धरि पहुंचि जेबाक लेल उताहुल हैब कोनो बेजाय बात नहि, मुदा मंजिल पर पहुंचि जेबाक बाद आब अहाँ लग की बचैत अछि? मंजिल पर पहुंचि जेबाक मतलब यात्रा खतम। यात्रा खतम मतलब सबटा रोमांच खतम। बस शेष रहैत छैक यात्राक थकान आ हजारो-लाखो लोक कें पाछू छोड़ि मंजिल पर पहुंचि जेबाक आत्ममुग्धता। नहुएं-नहुएं ओकरो चमक अलोपित भ' जाइत छैक। तें जे आनंद, जे रोमांच कोनो चीज कें प्राप्त करबाक प्रतीक्षा मे होइत छैक, ओ ओहि वस्तु कें सुलभता सँ पाबि के नहि भेटैत छैक।

प्रतीक्षा लोक जिनगियो लेल करैत छैक आ अनकर मृत्यु लेल सेहो, अपन मृत्युक कामना केनिहार तँ मृत्युंजय होइत अछि। बहुत दिन सँ ओछाइन पर बेमार पड़ल लोक स्वस्थ होयबाक प्रतीक्षा करैत अछि। ओहि खातिर परिजन-पुरजन समेत समस्त शुभचिंतक लोकनि अरज-नेहोरा करैत अछि। असह्य कष्ट भोगैत लोक जखन संकट निवारणक प्रतीक्षा करैत अछि, तँ प्रतीक्षाक ओ क्षण कालरात्रि बुझाइत छैक, जकर जल्दी अंते नहि देखाइत छैक। मुदा एहनो देखल जाइत अछि, जे घर-परिवार मे जखन चलय-बुलय मे असमर्थ केओ वृद्ध ओछाइन पर पड़ल कष्ट भोगैत अछि, तँ हुनक कष्ट सँ दुखी परिजन लोक हुनक मृत्यु केर सेहो प्रतीक्षा करैत अछि आ ईश्वर सँ प्रार्थना करैत अछि, जे हे भगवान, एहि कष्ट सँ बढ़िया, हुनका मुक्ति दियौ।

फसिल तैयारक होयबाक प्रतीक्षा किसानो करैत अछि। बिनु प्रतीक्षा केर ओकरा अपन मेहनतिक फल नहि भेटतैक, कियैक तँ समय सँ पहिने फसिल पाकि जयबाक मतलब, जे ओकरा रौदी मारि देलकै। किसानक धैर्य अजगुत होइत अछि। ई अलग बात, जे कहियो प्रतीक्षा केर बाद ओकर मोन हरियर भ' जाइत छैक आ कहियो ओकर प्रतीक्षा प्रतीक्षे रहि जाइत छैक आ सबटा उम्मेद दाहि-भासि, सुखाय जाइत छैक। समय सँ पहिने किछुओ होयब हानिकारके होइत छैक। जाहि नेनाक जन्म समय सँ पहिने भ' जाइत छैक, ओ अपरिपक्व रहैत अछि आ ओकर ओजन कम होइत अछि। प्रतीक्षा

विद्यार्थियो करैत अछि अपन मेहनतक फल पयबा लेल।

नेतागण के प्रतीक्षाक मादे कहले की जाय! ओ सभ पहिने टिकट पाबै खातिर, फेर चुनाव जीतै खातिर, फेर जितलाक बाद मंत्री बनै खातिर आ फेर अपन घर भरै के संग-संग सात पुश्तक उद्धार करैक खातिर प्रतीक्षा करैत रहैत अछि। चुनाव सँ पहिने मतदाता कें भगवान कहै बला, अपना कें सेवक बताबै बला नेतागण चुनाव जीतते देरी जनताक खून चोंसय लगैत अछि, जेना काठक कुर्सी पर बैसिते ओकर संवेदना कठुआय गेल होइ। प्रतीक्षा तँ मतदाता कें सेहो रहैत छैक चुनावक, मुदा पांच वर्ष बाद मौका भेटबाक बादो ओकर वाक्हरण भ' जाइत छैक अथवा ओ स्वयं गोंग भ' जाइत अछि आ सब दिन उपेक्षाक शिकार रहलाक बादो वोट मांगै खातिर आबय बला नेतागण सँ प्रश्न नहि पूछि पबैत अछि। थोड़बे पाइ, दारू मे ओ प्रश्न पूछब बिसरि जाइत अछि। अपन दियादक आड़ि छाँटे बला मतदाता चुनावक समय मे वोट आ बेटी जातिये मे देबाक शपथ खा लैत अछि। सभ दिन एक-दोसरा सँ लड़ैत-झगड़ैत रहय बला पड़ोसी धर्मक नाम पर एकजुट भ' क' वोट खसबैत अछि।

दिहाड़ी श्रमिक आ कर्मचारीगण सेहो अपन उचित मेहनताना पयबा लेल प्रतीक्षा करैत अछि। ई अलग बात थिक, जे ओकर प्रतीक्षा प्रतीक्षे रहि जाइत अछि। मुदा प्रतीक्षा एकटा उम्मेद तँ मोन मे जिया के रखिते अछि। प्रतीक्षा फुलबारियो करैत अछि कोनो सुंदर फूल फुलेबाक, ताकि ओहो भ' सकय सुगंधित। चान सेहो पूर्णिमाक प्रतीक्षा करैत अछि, ताकि अपन सोलहो कलाक संग ओ आकाश मे चमकि सकय।

प्रतीक्षा मनुष्यक स्वाभाविक प्रवृति थिक। असल मे मनुक्खक ई प्रवृत्ति होइत छैक जे सुलभ अछि, उपलब्ध अछि, से नहि चाही। जे नहि अछि, वैह चाही, खाहे ओहि खातिर कतबो प्रतीक्षा करय पड़य अथवा संघर्ष करय पड़य। यैह संघर्ष आ प्रतीक्षा मनुक्खक प्रगति आ विकासक मूल कारक रहल अछि। निराश आ हताश क्षण मे मनुक्ख किछु नीक होयबाक प्रतीक्षा करैत अछि, कियैक तँ प्रतीक्षा मे उम्मेद सन्हियाएल रहैत छैक। यैह उम्मेद बाकी निराशा कें खत्म क' दैत छैक।

सबसँ विरल होइत छैक प्रेम मे प्रतीक्षा। किछु खट-मधुर सन बुझाइत छैक। ई एहन प्रतीक्षा होइत छैक जाहि मे स्थान आ कालक कोनो भान नहि रहि जाइत छैक। प्रेम मे पड़ल लोक भूख-पियास सँ तँ निरपेक्ष भइये जाइत छैक, लोक की कहत-ओकरा तकरो कोनो परवाहि नहि रहैत छैक। प्रेमी जन युग-युग धरि प्रतीक्षा करबाक दम भरैत छथि। कहल जाइत छैक जे प्रेम देरी सँ नहि दूरी सँ डरैत छैक। तें प्रेमीजन ओहि दूरी कें पाटबाक लेल प्रतीक्षाक पुल पर उम्मेदक दीया जरबैत अछि। अपन प्रियजनक प्रतीक्षा करैत कोनो लोक कें देखने छी, ओ अपन लग-पासक वातावरण सँ पूर्णतः निरपेक्ष रहैत अछि। ओकरा अगल-बगल होइत कार्य-व्यापार नहि देखाइत छैक, जेना प्रार्थना मे लीन कोनो व्यक्ति कें अपन आराध्यक सिवा आर किछु नहि देखाइत छैक।

प्रतीक्षा करैत लोक स्वयं सँ बतियाइत बुझाइत अछि, पता नहि ओ स्वयं सँ बात करैत अछि अथवा देबाल सँ अथवा सड़क सँ अथवा हवा सँ। भ' सकैछ प्रतीक्षारत व्यक्ति एना ओहि प्रतीक्षा केर दुष्कर काल कें कटबा लेल करैत हो, कियैक तँ कहल जाइत छैक जे बतियाइत रहला सँ एकसरुआ हेबाक बोध नहि होइत छैक आ दुर्गम बाटो आसानी सँ पार कयल जा सकैत अछि। कोनो एकांत कोन मे, कोनो गाछ-बिरिछ के निच्चा ककरो प्रतीक्षा करैत लोक कें देखि कें बुझाइत छैक, जेना ओकरा सँ पूरा दुनिया रूसि गेल हो अथवा वैह दुनिया सँ रूसि कें एकांत कोना ध' लेने हो। मनुक्खक सबसँ पैघ शत्रु होइत छैक अनिच्छा सँ भेटल एकाकीपन।

प्रेम मे प्रतीक्षा करब कम साहसक बात नहि थिक। हम उम्मेदक एक दीया मोन मे बारने ठाढ़ रहैत छी आ निराशाक अन्हार चारू दिस सँ घेरबाक कोशिश करैत अछि। जखन कखनहुँ पल भरि लेल बुझाइत अछि, जे अभीष्ट व्यक्ति नहि आओत, तँ यैह सोच समूचा आत्मा कें सिहरा दैत अछि। एकटा बेचैनी मोन के कछमछा दैत अछि आ जिनगी निरर्थक बुझना जाइत अछि। लगैछ जेना एकटा सुंदर कहानी मरि गेल अछि, जेना कोनो फूल कें केओ लतिखुर्दन क' देने अछि, जेना लय पर चढ़ैत-चढ़ैत कोनो गीतक पांति टूटि गेल अछि, जेना पकैत धान पर कीड़ाक झुंड हमला क' देने अछि। प्रतीक्षाक खत्म होयब एकटा निराश वातावरण उत्पन्न क' दैत अछि, खाहे अहाँक अभीष्ट व्यक्ति, वस्तु, आकांक्षा सँ भेंट कियै नहि भ' जाय, तइयो थोड़े काल बाद एकटा खालीपन जरूर अवतरित भ' जाइत छैक।

तखन की प्रतीक्षा कयल छोड़ि देल जाय? किन्नहु नहि। प्रतीक्षा करैत रहबाक चाही। प्रतीक्षा करैत रहला सँ उम्मेदक दीया जरैत रहैत अछि। प्रतीक्षा एकटा सकारात्मक ऊर्जाक संचार करैत अछि। जँ प्रतीक्षाक उपरांत प्रियजन सँ भेंट होइत अछि, तखन प्रतीक्षाक खत्म भेलाक बाद उत्पन्न खालीपन कें दूर करबा लेल एक बेर फेर सँ कोनो आन शुभ चीजक प्रतीक्षा शुरू भ' जाइत छैक। जाधरि मनुष्यक मोन मे इच्छा अछि, आ ओहि इच्छा कें पूर करबाक सेहन्ता रहैत अछि, ता धरि प्रतीक्षाक क्रम खत्म नहि होइत छैक। एक प्रतीक्षाक अंत भेल तँ फेर दोसर प्रतीक्षा। ई क्रम चलैत रहैत छैक आ चलैत रहबाक चाही। आकांक्षाक आकाश मे उड़ैत रहबाक सपना खत्म नहि होयबाक चाही।

मो. 9711261789



भाषान्तर

एहि अंकमे पंजाबीक बलविंदर सिंह बराड़क एक महत्वपूर्ण आ संवेदनशील कथाक अनुवाद वैद्यनाथ झा कयलनि अछि। कथा महत्वपूर्ण आ सामयिक अछि। एकरा संग हिन्दीक कवि-आलोचक डा. वरुण कुमार तिवारीक चारि गोट कविताक अनुवाद सेहो जा रहल अछि।

पंजाबी कथा : पोस्टमार्टम

बलविन्दर सिंह बराड़, *अनुवादक :* **वैद्यनाथ झा**

कुलदीप कन्डियाली तार फानिक' खेत दिस बिदा भेल। ओकरा भेलै जे ई तार ओकरे रोकबा लेल लगाओल गेल छलै। ओकरा ईहो मोन नहि रहलै जे ई तार माल-जालसँ बचब' लेल वैह लगौने छल। आब तँ फसिलो कटाक' खेतसँ आबि गेल छलै।

ओ मूड़ी लिबौने ओही फसिलक बोझ सभ दने खेतक आरि पर आबि क' ठाढ़ भ' गेल। ओ मूड़ी उठौलक। ओकर नजरि खाली खेत पर गेलै। ओ ओहि खाली खेत दिस आश्चर्जसँ तकलक, गहीर ममत्वसँ। ओ समुच्चा खेतकें अपन आँखिमे समेटिक' कैद क' लेब' चाहैत छल। ओकर चेहरा झखरल सन बुझाइत छलै आ अस्त होइत सूर्यक किरिण ओकर ओहि उदास, असोथकित, निराश चेहरा पर हरियरी आनबाक सहज प्रयास कए रहल छलै।

कुलदीप एक बेर चारू दिस नजरि घुमौलक आ दोसर दिस मुँह फेरि लेलकै। फेर सूर्य दिस पीठ कए सोझामे देख' लागल। खेतसँ गाम लगेमे छलै। ओकर नजरि गुरूद्वाराक निशान साहब, मोबाइल टावर, घर सभक देबार, गामक सीम पर ठाढ़ कोठी सभक तिरपेच्छन करैत गामक दोसर दिस मौलाएल ठाढ़ शीशोक गाछ सभक झोंझिसँ ससरैत ओहि टिनहा शेड पर अटकि गेलै जाहि तरमे चिता जरि रहल छलै। धुआँइन भेल 'शेड' जेना ककरो बाट देखि रहल हुअय।

ककर प्रतीक्षा? हमर? हम जल्दिए आबि रहल छी। कने थमि जो। कुलदीप अपनहिसँ बाजल। बड़बड़ाइत स्वरमे। ओ भारी डेगे खेतक आरि पर चल' लागल। ओकरा बुझाइ जेना ओ टिनहा शेड चारू पयरे झूमैत लहराइत ओकरे पछोर धेने चलल आबि रहल हुअय। ओ पाछू घूमिक' तकलक। शेड अपने जगह पर छलै।

ओकरा ई आभास आब रहरहां होइत छैक। ओ जखन खेत दिस आबय, ओकर नजरि शेड पर अवस्से पड़य। शेड देखिते ओकर मोनमे ई प्रतीति हुअय जेना ओ शेड ककरो बाट तकैत होइ। जाहि दिनसँ ई'शेड' बनलइय, तहियेसँ ओ एकरा नीचाँ कतोक लहास जरैत देखैत आबि रहल अछि। गामक कतोक लोकक कठियारीमे एत' घाट पर आएल अछि। मनुष्य-देहक यात्रा एतहि आबिक' समाप्त होइत छैक। जौं दू-तीन मास

शेडक नीचाँ कोनो लहास नहि जरय तँ कुलदीपकें होइ जे ई शेड बेकल भ' ककरो प्रतीक्षा क' रहल छैक।

पनरह दिन पहिने एहि शेडक नीचाँ रणधीरक चिता जरल छलै। ओहिसँ एक सप्ताह पहिने शिंदरक चिता। दुनू आत्महत्या कएने छल। रणधीर कीड़ामार दवाइ खा लेने छल। शिंदर गाछसँ लटकि गेल छलै। कुलदीपकें बुझेलै जे आब ओकरे बारी छैक।

चारि बरख पहिने कुलदीप अही शेडक नीचाँ अपन पत्नी रजिन्दर कौरक दाह-संस्कार कयने छल।

बीसम शताब्दीक अंतिम दशकमे 'नरमे' (कपास सन) पौधाक फसिल पर अमेरिकन कीड़ाक हमला भेलै। फसिलमे डाही लागि गेलै। एहि कीड़ासँ फसिलक रक्षा लेल हर तेसर दिन कीड़ामार दवाइ छिड़कल जाइत छलै। कतोक मन दवाइ फसिल पर छिड़का गेलै। दस बरख धरि यैह क्रम चलैत रहलै।

जखन मंडीमे बीटी नरमाक महग बीया अयलै तखन जाक' एहि अमेरिकन कीड़ाक प्रकोप कम भेलै। आब कएकटा किसानकें आब नरमेक रोपनीक प्रतिए अरुचि भ' गेलै। ओकर धेआन आब धान दिस गेलै। मुदा पानिक खगता छलै तें किसान हारिक' नरमे रोपै लेल विवश भ' गेल।

अमेरिकन कीड़ासँ मुक्ति तँ भेटलै मुदा ताधरि फसिल सभ पर ततेक ने दवाइ रूपमे बिखाह रसायन छिड़का चुकल छलै जे ओ बिख भयावह रोग कैंसरक प्रमुख कारण बनि सोझाँ अयलै। बूढ़, जुआन, नेना सभ पर कैंसरक प्रभाव पड़लै। ओहूसँ भयावह ई जे लगपासक के कहओ, दूर-दूर धरि एहि घातक रोगक इलाज लेल कोनो अस्पताल नहि छलै। लोक कैंसरसँ छटपटाक' मरि रहल छल। राजस्थानक बीकानेरमे कैंसरक पैघ अस्पताल छलै। एहि इलाकाक रोगी सभकें ओकर परिवारक लोक भटिण्डासँ चल'बला एकटा पैसेंजर ट्रेनसँ ल' जाय लगलै। एहि गाड़ीमे सभ दिन पचाससँ सत्तर धरि रोगी भीड़-भड़क्कामे बिना सीट-आरक्षणेक भयावह कष्ट सहैत यात्रा करय। ओतुका लोक आ मीडिया ओहि ट्रेनक नामे 'कैंसर-ट्रेन' राखि देने छलै।

अही ट्रेनमे कुलदीपक पत्नी रजिन्दर कौर सेहो कैंसरक भयावह कष्ट सहैत यात्रा करैत छलि। संगमे कुलदीप आ परिवारक दू-तीन गोटय रहैत छलै। ओ एहि ट्रेनसँ मासमे एक वा दू बेर यात्रा करैत छलि। गाड़ीक भितरका दृश्य ई रहय जे रोगीकें सीट पर पड़बाक के कहओ, नीचाँमे सेहो भरि राति पयरो सोझ करबाक जगह नहि भेटय। राजिन्दर कौर दू-बरख धरि ई यात्रा करैत-करैत थाकि गेलि। आब ओकर देह, सामर्थ्य, सहास जवाब द' देलकै आ एक दिन ओ तेहन यात्रा पर बहराएलि जत'सँ केओ कहियो घुरिक' नहि अबैत छैक।

पत्नीक अंतिम संस्कार करबाकाल कुलदीपकें अनुभव भेलै जे सरकार एतेक भयानक रोगक इलाज लेल कोनो नीक, साधन-सम्पन्न अस्पताल तँ नहि खोललकै, हँ, हर गाममे

श्मशानक नाम पर टीनक एक-एकटा शेड अवश्य बनबा देलकै जाहिसँ लहास जरेबामे कोने बाधा नहि आबओ। बरखा किंवा बुनछेक कोनो बाधा नहि ठाढ़ करओ।

एहि शेड सभमे चिताक आगि निरंतर धधकौने रह' बलामे मात्र कैंसरेटाक रोगीगणक नहि अपितु, गामक गंजेड़ी, जुआन, कर्जमे डूमल किसान द्वारा कएल जा रहल आत्महत्याक सेहो योगदान छलै।

आब गाम-घरमे बियाहो-दान कम होब' लागल छलै। बियाह ई सभमे होब'बला ताम-झाम, तड़क-भड़क समाप्ते भेल जा रहल छलै किएक तँ आब ई सभ काज गाम-घरसँ शहरक समुदाय-केन्द्र/बरियाती-घर, बैंक्वेट-हाल सभमे होब' लगलै। शहर सभमे तँ बियाहबला घरमे बियाहक दिन ताला लागि जाइ, सभ गोटय ओतहि पहुँचि नाच-गाना, मेंहदी, डी. जे. पर कानफाड़ू संगीत, पर नेना सभक नाच खूब पाइ द' बजाओल गेल बेक्खर, अल्पवस्त्रधारिणी नचनियाँ छौंड़ी सभक संगे शराबी छौंड़ा सभक भंगड़ा नाच पर लोक नोट फेकैत सन काजमे व्यस्त भ' जाइल छैक। एहि हुड़दंगमे नबतुरिएटा नहि, उज्जर दाढ़ीबला बुढ़बो सभ निर्लज्जताक हद पार क' जाइत छैक। एहने नबका चालि-खालिसँ बियाह नामक संस्थाक गरिमा खतम भ' रहल छैक।

कुलदीप अपन बेटी बिट्टीक बियाह पाँच बरख पहिने क' देने छलै। ओकर कैंसरग्रस्त पत्नीकें अपन मृत्युक पूर्वाभास भ' गेल छलै। तें ओ बेटीक बियाह जल्दी-सँ जल्दी सम्पन्न क' देब' चाहैत छलीह।

कुलदीप बेटी लेल अपन बुत्ताक अनुसार घर-बर देखि रहल छल। ओ बेटी लेल एहन बर देखि रहल छलै जकरा माथ पर चारि-पाँच बिगहा जमीन होइ मुदा राजिन्दर कौर एहिसँ सहमत नहि छलि। ओकर मानब छलय जे जाहि बरक नामे दस-बारह बिगहा जमीन नहि हेतै, ओहन घरमे ओकर बेटीक गुजर नहि हेतै। जौं बर नौकरिहारा भेल तँ सभसँ नीक। एहन कथा लेल कने बेसियो पाइ लगाओल जा सकैत अछि।

दौड़-बरहा कए क' ओ सभ अपन बेटी बिट्टी लेल एहन बर ताकि लेलक मुदा बियाहक खर्चा ओकर डाँड़ तोड़ि देलकै। ओ भरिगर कर्जातर आबि गेल...

कुलदीप आरि पर चलैत-चलैत शीशोक गाछ तर आएल। एहि गाछक छाहरि तर ओ कतोक टहाटही रौदबला दुपहरिया बितौने अछि। ओ एक बेर शीशोक मोटका धड़ि आ ठाढ़ि सभकें देखलक। सोचलक जे एहि गाछ पर आसानीसँ चढ़ल जा सकैय। सभसँ नीचाबला ठाढ़ि पर बैसिक' उपरका ठाढ़िसँ पगड़ी बान्हिक'...।

ओ चारू दिस नजरि दौड़ेलक। दूर धरि खेत खाली छलै। गहूमक फसिल कटाक' खरिहान जा चुकल छलै। दस बिगहा दूर लीलू ट्रैक्टरसँ खेत जोति रहल छलै। ओहिसँ आगू केओ खेतमे खर-पतवारमे आगि लगौने छलै। कुलदीपक मोनमे ई डर पैसले जे कतहु केओ देखउ नहि वा अचानके केओ आबि जाइ। साँझ धरि अनुकूल अवसरक प्रतीक्षा करबाक चाही।

कुलदीप ओहि गाछक ढरैत छाहरिमे आरि पर बैसि गेल। ओत' एकटा पुरान, टुटही खाट टेढ़-मेढ़ अढ़ाएल छलै। ओहि खाट पर बैसबाक ओकर कनेको मोन नहि छलै। ओ खेत पर हरदम एकटा पुरान खाट रखैत छल। गर्मी मासक दुपहरियामे सुस्तयबा लेल किंवा जाड़क रातिमे अनेरूआ माल-जालसँ गहूमक फसिल बचब' लेल एम्हर आबय तँ घूर जराक' आगि तापय।

ओ खाट दिस तकलकै। मोनमे तँ कोनो तेसरे गप चलि रहल छलै। खाट देखि ओकरा ओ राति सभ मोन पड़लै जाहिमे गेजा ओकर दोसराइत होइत छलै। ताहि बरख ओ पनरह बिगहा जमीनक ठीका लेने छल। बेटा हरप्रीत दसमामे पढ़ैत छलै।

हरप्रीत जुआन भ' रहल छल। कुलदीप दोसराइत राखब छोड़ि देलकै। जखन ओकर बेसी बेगरता बुझाइ तँ ओ कोनो बोनिहारकें राखि लय।

ओहि राति ओ गेजा संगे नरमेक फसलिमे पटौनी कए घुरि रहल छल। गेजा ओतहि टार्च राखिक बोरिगंक कने आगू बनल पानिक हौंदी पर हाथ पयर धो रहल छलै। कुलदीप डाँड़ सोझ करबा लेल कनेकाल लेल निच्चा ओछाओल पुआरि पर खाट ध' क' ओहि पर पड़ि रहल आ खाली खेतमे मुक्त आकाशक छत्ता तर तरेगण सभकें देख' लागल। टिमटिमाइत तरेगणकें। दृश्य देखिक' ओकर मोन भकरार भ' गेलै। बुझेलै जेना लगपास ठाढ़ नरमेक फसलि पछिला कसर पूरि लेलकै। बस...किछु दिन आओर, फेर तँ नरमेक फड़ो सभ तरेगण जकाँ दिप-दिप करतै। ई विचार मोनमे अबिते ओकर मुँहो भकरार भ' गेलै। तरेगणकें निहारैत ओकर नजरि राजाक खाट पर गेलै। ओकरा नेनपनमे सूनल राजाक खाटबला खिस्सा मोन पड़ि गेलै।

एकटा राजा खाट पर सूतल छल। ओकर पौवाक गोड़ामे सोनक ईंटा जड़ल छलै। एकटा चोरबाक नजरि ओहि सोनक ईंटा सभ पर छलै। ओ ओहि ईंटाकें पार करबाक उपाय सोच' लागल। एक दिन ओ ईंटा लए क' पड़ाएल। आगू चोरबा, ओकर पाछाँ राजाक कुक्कुर, तकरा पाछूँ राजाक सिपाही छलै। खाटसँ दूर बला तारा चोर, ओकर पाछू राजाक कुक्कुर आ खाटक लगबला तारा राजाक पहरेदार छलै। अचानके ओकरा सात ताराक ई कथा विचित्र लगलै। ई केहन राजा भेलै जे खाट पर सूतैय? ओहो खाटो तेहने, हमर खाट जकाँ टूटल, जौर सभ ढील, लटकल, चर्र-मर्र करैत। राजाकें तँ चाननक पलंग पर सुतबाक चाही। राजा भ' क' एहन पुरानू-धुरान, टुटल सन पलंग पर। मुदा पलंगक गोड़ा तर सोनक ईंटा! ई केहन राजा जकर रक्षा एकटा कुक्कुर आ एकटा सिपाही करैत छैक। चोर बड्ड आरामसँ गोड़ा तरक सोनक ईंटा निकालिक' पड़ा सकैत अछि। फेर ओकरा ई लगलै जेना ओहन राजा आओर केओ नहि, वैह अछि। ई बात मोनमे अबिते ओकरा हँसी छूटि गेलै। ओ ठहक्का मारलक।

कुलदीपक हँसी सूनिक' गेजा चौंकल। कुलदीपसँ पुछलकै 'की भेलौ भाइ, असगरे ठहक्का? कुशल छै ने?'

'सब किछु ठीक छै, तें तँ ठहक्का द' रहल छी। दुखोमे केओ हँसलैय?' कुलदीप हँसैत बाजल।

गेजा बजलै–'एहि असगरूआ हँसी पर कान नहि ठाढ़ होएत? हमरा डर भेल जे कोनो डाइन-जोगिन तँ ने किछु क' देलकै।

'गेजा, तों जनैत छें जे ओ राजा के छैक'?

'कहू ने?'

'ओ राजा हमहीं छी।' ई बाजि कुलदीप उठिक' बैसि गेलै ओ गेजा दिस सहटि अयलै।

गेजा एक बेर अकास दिस तकलक आ फेर कुलदीप दिस तकैत बाजल-

'अलबत्ते भाइ, टुटली खाट पर पड़िक' तों राजा भ' गेलैं। अजगुत गप। मुदा राजा साहब, अहाँक सिपाही आ ओ कुक्कुर कत' अछि आ सोनक ईंटा?'

'आहि रे बा, तों छें हमर पहरेदार...आ कुक्कुर...एतहि अपन भूचर बौआइत फिरैत अछि। गेल होएत कतहु माल-जालकें खेत-तेतसँ बैलाबए लेल।'

ओ ओहि सिलेटी रंगक कुक्कुरक नाम भूचर रखने छल। एम्हर-ओम्हर बौआइत-ढहनाइत रहैत छलै। जखन कुलदीप आ गेजा भोजन कर' बैसय, तखने भूचर कोम्हरो ने कोम्हरोसँ ओत' पहुँचि जाइक। ओ दुनू गोटय किछु ने किछु ओकर आगू फेंकि दय। जँ ओ नहियो आबय तइयो कुलदीप ओकरा लेल रोटी बचाक' राखि दैत छलै। बादमे ओकरा खुआ दय।

'मुदा राजा साहब, हम तँ अहाँक खाटक गोड़ातरमे सोनक ईंटा देखिते नहि छी।' गेजा ठिठिआयल।

'सोनक ईंटा। ठीकसँ देखै ने। गोड़ा तर सोनक ईंटा छैहे। ई माटि सोने तँ छैक। एहिसँ जतेक चाहे ईंटा बना लीअ। सभसँ बड़का बात- लोककें मोनसँ राजा होएबाक चाही।' कुलदीप बाजल। ई बजैत काल ओकरा अनुभव भेलै जेन सरिपहुँ ओ राजा हुअय। ओकर एहि अनुभवकें गेजा 'खाटबला राजाक जय हो' कहि आओरो ताड़क गाछ पर चढ़ा देलकै।

दुनू जोरसँ ठहक्का मारलक।

कुलदीप पथरायल नजरिसँ खाट दिस ताकि रहल छल। ओ मोने-मोन बाजल, 'गेजा, खाटबला राजा लग तँ टुटली खाटेटा बाँचि गेलैक। सभटा सोनक ईंटा तँ चोरबा सभ चोरा लेलकै। कैंसर, बियाहक खर्च, मिलीबग, उज्जर मच्छर, नकली कीड़ामार दवाइ-ई सभटा चोर बनिक' हमर सोनक सभटा ईंटा चोरा लेलक। सोन सन जमीन चोरा ल' गेल। ई जमीनो राजाक नहि रहि गेलै। काल्हि अहि जमीन पर देविन्दर महाजनक ट्रैक्टर चलतै।'

देविन्दरक चेहरा मोन पड़िते लचारी ओकर समुच्चा चेहराकें झाँपि लेलकै। ओ मूड़ी डोलबैत खौंझाक' बाजल–

'जहियासँ ई जाट सभ महाजनीक काजमे उतरल, तहियासँ बनिया- लालाकें पाछू छोड़ि देलकै।'

पछिला किछु बर्खसँ धन-सम्पतिसँ सम्पन्न जाटो, खेत-पथारक बन्हकी, ऋण-पैंच, सूदक व्यापारमे लागि गेल। आन जातिबला महाजनकें बाजारमे लगाओल अपन मूलधन आ सूदेटाक चिन्ता रहैत छैक। ई सभ खेतीबारी नहि करइय तें ओकरा सभकें जमीन-जथाक लोभ नहि होइत छैक मुदा जाट सभ स्वयं जमींदार होइत अछि। ओ सभ छोटका किसान सभ पर 'बकोध्यानम्' लगऔने रहैय। जौं ओकर सभक मूलधन आ ब्याज अयबामे देरी होइत छैक तँ मूल आ सूद देबामे असमर्थ असामीक खेतक रजिस्ट्री कराब' लगैत छी।

देविन्दर सिंह कुलदीपक पड़ोसिया गामक जाट छलै आ शहरमे ओकर आढ़तिक दोकान छलै। अे कुलदीपकें सूद पर कर्जा दैत छलै। ओ पाइयो दय आ उपकारक भारसँ सेहो जाँतय–'रौ भाइ कुलदीप, आइ-काल्हि केओ पाइ तँ सधबैत नहि छैक। तों तँ हमर पड़ोसिया छें। ताहीसँ तोरा पर हमरा बड्ड विश्वास अछि।'

कुलदीपकें तँ डेग-डेग पर कर्ज लेब' पड़य। रेह-स्प्रे, ट्रैक्टरक किश्त, पत्नीक कैंसरक इलाज लेल, कन्यादान लेल कर्ज। बैंकसँ सीमित ऋणक मतलब-किसान क्रेडिट कार्डक किश्त आ सूद घुरयबा लेल कर्जा। आब फसिलक गप-कुलदीप लग साढ़े चारि बिगहा जमीन छलै। ओ सभ बरख दस-बारह बिगहा ठीका पर ल' लैत छलै। जँ उपजा ठीक भेलै तँ जमीनक ठीकाक पाइ, फसलिक खर्चा, घरक खर्चा पुरलाक बाद थोड़ बहुत पाइ बाँचि गेल तँ ओ छओ मासक सूदि नहि पुरतै। मूलधन तँ दूरक गप। उपजा तँ एक सन नहि होइत छैक, कोनो बेर नीक तँ कोनो बेर अपेक्षासँ कम। फसिलक नीक दाम कत' भेटैत छैक?

पछिला चारि-पाँच बर्खसँ उपजा कम होब' लगलै। कर्जा बढ़ले जा रहल छलै। एक दिन तँ देविन्दर आओरो कर्जा देब'सँ मना क' देलकै। एतबेटा नहि, पछिला सभटा ऋण सूद संगे घुरबय लेल ओ ओकर कण्ठ पर सवार भ' गेलै। ओ तँ जमीन-जथा सेहो ओकरा नाम रजिस्ट्री करय लेल कहलकै–'तोहर पछिला सभटा हिसाब-किताब सधाक' चारि लाख नगदी द' दियौ?

ई सूनि कुलदीप पाथर भ' गेल। बड़ी काल धरि ओकर मुँहसँ बकारे नहि फुटलै। ओ कहुना अपनाकें सम्हारैत बाजल–'देविन्दर भाइ, खेत बेचिक' हम कतहुकें नहि रहब। हमरा बेटाक बियाह करबाक अछि। जमीन-जथासँ छुच्छ लोक-परिवारमे कोन अभागल बाप अपन बेटी देतै? दुआरि पर कोन घटक आओत? प्रतिष्ठा तबाह भ' जाएत।'

देविन्दर ओकरा परितोसलकै–'भाइ, तों चिन्ता किएक करैत छें। पड़ोसिए पड़ोसीक काज अबैत छैक। तों हमर पड़ोसी छें। एहन समाधान सोचलियौ जे साँपो मरि जाय आ लाठियो नहि टुटय। लोक जमीनक मालिक तोरे ने बुझैत छौ। तों चुपचाप जमीन हमरा नामे रजिस्ट्री क' दे। खेत तोंही जोतिहें। रजिस्ट्रीबला गप हमरे दुनू गोटयक बीच रहत। तोहर बेटाक बियाह सेहो भ' जेतौ। पहिनेहो तँ तों जमीन-कर्जक लिस्ट बनयबा लेल बैंकसँ एकरारनामा कएने छलह। तोहर बैंक-कर्जो तँ हमहीं ने भरबौ।'

कुलदीप तँ भारी सोचमे पड़ल छल। कएक राति ओ इएह सोचैत रहलै जे पाइ असूलय लेल देविन्दर मोकदमो क' सकैत छैक। ई गप सबतरि पसरि जयतै। सभ बूझि जाएत जे हमरा पर भारी ऋण अछि। बेटाक बियाहो नहि होएत। किएक नहि तरेतर जमीनक मालिक बनल रही। एक बेर बेटाक बियाह भ' जाए, फेर देखल जयतै।

ओ बेटा हरप्रीतसँ विचार कएलक आ जमीन देविन्दरकें द' देलकै। अपने जमीनक ठेका अपनहि भर' लागल। आंठ-दस ठेका आओरो लए क' खेती कर' लागल।

तीन बर्ख अहिनाते बीति गेलै। ओ अपने जमीन जे ओ देविन्दरकें बेचने छल, पर खेती करैत छल। एहि तीन बर्खमे ओकर स्थिति नहि सुधरलै। दू डेग आगू बढ़य, तीन डेग पाछू आबि जाइ। एक बर्ख तँ गहूमकें पाला मारि देलकै। पछिला साल पहिने तँ सुखाड़ फेर अचानके बर्खा भेलै। नहरि टूटि गेलै जाहिसँ नरमेक फसिल डूमि गेलै। कनमो पड़ि नहि लगलै। एहि बर्ख नरमेक फसिल नीक भेलै मुदा ओकरापर उज्जर मच्छरक हमला भ' गेलै। देखिते-देखैत नरमेक ठाढ़, हरियर फसिल खेतमे एहन भ' गेलै जेना आगिसँ झरकि गेल हुअय। दैवकें अहूसँ संतोष नहि भेलनि। फसिल सुड्डाह होब'मे जे बाँचि गेल छलै ओ नकली कीड़ामार दवाइ पुरा देलकै। खाद, स्प्रे, बीया, डीजल, बोइनि कप्पार पर अलगे। समुच्चा गहूमो हाथ नहि लगलै। फसलिक भावक मादे की कहल जाय, ओकर तँ किसानसँ दुश्मनी रहैत छैक आ बेपपारीसँ दोस्ती। जमीनक ठीका सेहो कुलदीपेक हिस्समे पड़लै। पहिल किश्त तँ ओ द' चुकल छलै, मुदा रबी फसलिक बेर दोसर किश्त नहि द' सकलै। ई पाइ ओ खरीफ फसिलक बेर देबाक वचन देलकै। भजनेक जमीन ओकरा लग छलै। ओ तँ मानि गेलै मुदा देविन्दर नहि मानलकै। ओ कहलकै जे ठीकाक बाकी किश्त पर छः मासक सूदो लेतै। मुदा गहूमक ओतेक कम उपजा भेलै जे ओ ठीकाक किश्त धरि नहि सधा सकलै। एक बर्ख बीति गेलै। आब तँ ओ आन ठीकाक लेबाक मादे सोचियो नहि सकैत छल। पछिले ठीका ओकर कपार पर कर्जा बनिक' बिसायल छलै, आगू लेल पाइ कत' सँ अबितय।

देविन्दर ओकरा दोकान पर बजाक' कहलकै–'कुलदीप भाइ, फेर हमरा नहि कहिहे जे नहि कहलियौ। तों पछिलो ठीकाक पाइ नहि देलह। आबसँ ई जमीन पर हमहीं खेती करब। ई जमीन हमरे रहत।'

ई सूनि कुलदीपकें ठकमुरी जकाँ ध' लेलकै। ओ कहुना क' बाजल–'हे भाइजी, एना नहि करू। ई ठीक नहि क' रहल छी। अहाँ हमर बेटाक बियाह धरि कहने छलहुँ जे जमीन पर कब्जा नहि लेबै। हमहीं खेती करब।'

देविन्दर बजलै–'हँ, हम कहने छलियौक। आ ईहो कहने छलियौक जे तों एकर ठीका लेबे। आब तों ठीकाक पाइयो नहि द' रहल छें। तीन बर्ख भ' गेलौ। जौं तीन बर्खमे बेटाक

बियाह नहि भेलै तँ आब भविष्यमे भ'ए जेतैक, तकर कोम भरोस?' ओकर स्वर करगर छलै।

'भाइ, क'ल जोड़ैत छियौ। तोरा बुझले छौ जे एखन हमरा लग ठीकाक पाइ नहि अछि। बस, एक बर्ख लेल ई जमीन हमरा लग छोड़ि दे, फसिल घर अएला पर हम सूद संगे ठीकाक पाइ द' देबै। घरमे चूल्हि तँ पजरओ, भोजन तँ बनओ। हमर माय सत्तर बर्खक अछि। ओकरा ने सूझै छै आ ने ओ सूनि पबैत अछि। टोहि-टोहिक' चलैत छैक।...प्रतिष्ठाक गप अछि। भाइ...हम कतहुके नहि रहब। हम घरमे बेटी-जमाय, सर-कुटुम, ककरो नहि कहलियै जे हम जमीन बेचि चुकल छी।' कुलदीप देविन्दरक आगू खेखनी कर' लागल।

'मुदा एकर कोन गारंटी जे एहि बेर फसिल नीकसँ हेतै। आ फसिल नीको भ' गेलै तँ मोस्किलसँ हमर पछिला बकियौता आ सूदिए घुरत। एखुनका नबका ठेका कोना आओतै? जँ तों किछु बेचिक' हमर पाइ चुकब' चाहैत छें तँ तोरा लग ट्रैक्टर-ट्राली आ औजारक अलाबे आर की छै? एक बात आओर, तोहर जमीन किनला हमरा तीन बर्ख भ' गेल। कीन' बला लेल जमीनक कब्जा लेनाइ जरूरी छैक। जँ बादमे केओ कब्जा देबासँ मना क' देलक तखन? तखन तँ फेर, बलजोरी लीअ।' देविन्दरक अभिप्राय स्पष्ट छलै जे ओ आब जमीनक कब्जा लेब' चाहैत छल।

ओ पुनः बाजल—'हम तोरा एहि लेल एतय बजौलियैक जे तों गहूमक फसिल काटि लेने छें। एहि बेर खेतमे हम अपनहि पानि पटायब।...आ दू-दिन पछाति हमर ट्रैक्टर खेत जोतबा लेल एतै। आब ओहि खेतसँ तोहर कोनो सम्बन्ध नहि छौ। मुदा हमरा एखन तोरासँ सूद संगे पछिला ठीकाक पाइ लेबाक अछि। कोनो दिन आबिक' ओकरो हिसाब क' लीहें।' ओ पछिलो बकियौताक मोन पाड़लकै।

कुलदीप मूड़ी लिबौने बड़ी काल धरि ओकर दोकान पर चुपचाप बैसल रहल।

खेतक आरि पर बैसल कुलदीप जमीन पर हाथ फेरलक आ एक बाकुट माटि उठा लेलकै। ओ मुट्ठी सोझाँ कए क' खोललकै तँ ओकर आँगुरक बीचसँ फँसल माटि नीचा खसि पड़लै। तरहत्थी पर बाँचल माटिकें ओ बड्ड माश्चर्जसँ देखलक, फेर हाथ टेढ़ क' सभटा माटि छिड़िया देलकै। एखनो ओकर कानमे देविन्दरक बजलाहा शब्द गनगना रहल छलै—'आब तोहर एहि खेतसँ कोनो सम्बन्ध नहि छौ।'

ओ परसुएसँ दिन-राति यैह सोचि रहल छल जे आब ओ की करय। आब तँ ओकरा देविन्दर आ भजनेक पाइ सधब' लेल ट्रैक्टर, ट्राली आ औजार बेच' पड़तै, खेतक मालिक छल, आब ककरो खेतमे बोइनि कर' पड़तै वा ककरो संगे दोसराइत बन' पड़तै। अपने सर-सम्बन्धीक खेतमे बोइनिहारी करू। समाजमे हमर की प्रतिष्ठा रहल?

'हरप्रीत की करतै?' ई यैह सभ सोचि ओ धरतीमे धँसल जा रहल छल। ओकर हृदय-गति तेज भेल जा रहल छलै। समुच्चा परिस्थिति ओकर विरूद्ध जा रहल छलै। कोनो

तँ परिस्थिति जीब' जोग होइ! सभ दिससँ हारिक' ओ आत्महत्याक निर्णय कएलक। आत्महत्या कर'बला किसानक परिवारक लोककें सरकार तीन-तीन लाख टका मोआवजा द' रहल छलै। ओ सोचने छल जे ओकरा मरला पर बेटाकें तुरंते तीन लाख भेटि जयतैक जाहिसँ ओ देविन्दर आ भजनेक कर्जा सधा देतै आ ट्रैक्टर-ट्राली बाँचि जेतै। ओकरा किराया पर द' बेटा अपन खर्चा निकालि लेतै। ककरो खेतमे बोइनिहारी नहि कर' पड़तै।

ओ उठिक' ठाढ़ भ' गेल। चारू दिस नजरि घुमौलक। सूर्यास्त तँ कखने भ' चुकल छलै। अन्हार पसर' लागल छलै। गाममे घर सभमे दीया-बाती भ' गेल छलै। लग-पास खेतमे ठाढ़ गाछ सभ परछाँइ जकाँ देखा रहल छलै। ओ अपन माथ पर बड्ड पुरान, मैल पाग पहिरने छल। पगड़ी खोलिक' बीचमे दुनू हाथसँ पकड़िक' खीचिक' जाँचलक जे ओ कतेक मजगूत छैक।

ओ शीशोक गाछक एकदम्मे लगमे आबि गेलै। पगड़ीकें कन्हा पर लटकाक' ओहि पर चढ़बा लेल गाछक मूल स्थानकें हाथ लगौलकै आ साँस लैत बाजल—'रौ भाइ रणधीर, रौ भाइ शिंदर। हमहूँ तोरा लग आबि रहल छियौ।'

आँखिक सोझाँ रणधीरक चेहरा अबिते ओ ठामे ठमकि गेल। ओ सोच' लागल—'मुदा अँय हो रणधीर, हम तँ सुनलियै जे तोरा घरक लोककें मोआवजा भेटबे नहि कएलै। काल्हि हम चौपाल दिससँ जाइत छलहुँ। ओत' ई गप चलि रहल छलै जे ओकर सर-सम्बन्धी सभ ओकर पोस्टमार्टमे नहि हुअय देलकै। मोआवजाक दरखास्त पोस्टमार्टम-रिपोर्टक अभावमे निरस्त भ' गेलै।

कुलदीपक माथ ठनकलै-'हमरो संगे एना ने भ' जाय। हम हरप्रीतकें कहि देबै जे हमर पोस्टमार्टम अवश्य कराबउ मुदा ओकरा कहियौ कोना? हमरा लग तँ मोबाइलो नहि अछि। एहि लेल हमरा अपन डेरा जाय पड़त। डेरो जाक' कहबैक कोना? मोबाइल पर तँ कहब आसान छैक। जाधरि केओ रोक-थमैती कर' आओत ताधरि तँ खेला खत्तम। एक बेर तँ घर जाइए पड़त। कोनो बहन्ने गप्प तँ करहि पड़त।'

अहीमे ओझरायल कुलदीप माथ पर पगड़ी बान्हैत घर दिस विदा भेल।

ओ घरक दुआरिक आगू पहुँचल। गलीमे अन्हार छलै। केबाड़ी बन्न छलै मुदा खिड़की खुजल छलै। जेना केओ ओकरे प्रतीक्षामे खुजल छोड़ने होइ। ओ भीतर आबिक' खिड़की बन्न क' देलकै। अंगनाक पार ओसाराक बाहर लागल बल्ब जरि रहल छलै। ओकर झलफल सन इजोत समुच्चा आंगनामे पसरल छलै। ओकरा बूझल छलै जे माय सूति रहल हेतै। ओ तँ साँझ हेबासँ पहिनहि रोटी-दालि बनाक' राखि दैत छैक। जखन मोन होइ, अपनहिसँ परसि लओ। ओकर मायकें तँ बल्बक इजोतमे आओरो कम सुझाइत छलै।

हरप्रीत अंगनामे खाट पर पड़ल छलै। कुलदीप ओकरासँ पोस्टमार्टमबला गप कर' चाहैत छलै। ओकरा फुराइते नहि छलै जे कोना गप्प शुरू करओ। हरप्रीतो चुपचाप पड़ल छल जेना मौनक भारसँ जाँतल हुअय आ अपनहिसँ लड़ि रहल होइ।

कुलदीप ओकरा लग जाक' खाटक पावा पर बैसि गेलै। ओ गप्प शुरू करय लेल बेटासँ पुछलकै–'आइ तों कत' गेल छलेंहे?'

हरप्रीत नहुए बाजल–'हम सड़कबला ठीकेदारक मुंशी लग गेल छलहुँ। ओकरा लग सड़कक ऊँचाई बढ़यबाक काज छैक। सड़क पर माटि खसयबाक लेल ट्रैक्टर-ट्राली किराया पर चढ़एबाक जोगाड़मे गेल छलहुँ।'

'की भेलै?'

'ओ जवाब द' देलक। ठीकेदार कहलक जे पहिनेहेसँ बहुत ट्रैक्टर–ट्राली सभ छैक। कोनो बेगरता नहि छैक।' हरप्रीत ठंडा सांस लेलक।

'अच्छा!' कुलदीपो दीर्घ सांस लेलक।

पिता-पुत्रक बीच मौन पसरल रहलै। कुलदीपकें ने तँ सहास भ' रहल छलै आ ने फुराइते छलै जे ई बात ओ कोन तरहे शुरू करय। ताहि दिन तँ ओ मोनकें सक्कत कए क' बड्ड मोस्किलसँ देविन्दर द्वारा जमीन कब्जा कर' बला बात बतौने छलै। तखनेसँ हरप्रीत गहीर उदासीमे जीबि रहल छल।

ओ उठिक' पिताक पाँजरमे बैसि रहल। ओ मन्द स्वरमे चुप्पी तोड़ैइत पुछलकै–'पापा, की अहाँ जनैत छी?'

कुलदीप पुछलकै–'की?'

'रणधीरक परिवारक लोक मोआवजा लेल गेल छलै। सरकार मना क' देलकै। ओ सभ कहलकै जे मोआवजा नहि भेटि सकैत छैक। ओहि लेल पोस्टमार्टम रिपोर्ट जरूरी छैक। कुटुम सभ ताहि दिन पोस्टमार्टम नहि होब' देने छलै।' हरप्रीत कहलकै।

बेटाक मुँहे ई सुनि पिताक मुँहसँ अनायास 'हाय' बहरेलै। ड'रक तेज रीढ़क हड्डीकें, थरथराइत सन लहरि ओकर ऊपरसँ नीचाँ धरि थरथरा देलकै।

'मुदा...मुदा...तों ई सभ बात हमरा किएक कहि रहल छें? कहीं तहूँ हमरे जकाँ तँ नहि सोचि रहल छें?' ओकर समुच्चा देह डरे थरथराय लगलै। ओ लगमे बैसल हरप्रीतकें अपन ग'रसँ लगाक' कसि लेलकै। ओ बड्ड कातर स्वरमे बाजल–'नहि बेटा, नहि। एहन काज करबाक तँ बहुत दूर, सोचबो नहि करिहें। एखन तों जिनगीमे देखबे की कयलैं।'

ओ बेटाकें ग'रसँ लगौने हुकरि हुकरिक' कान' लागल। बाझले कण्ठसँ बजलै–

'जँ जमीन चलि गेल, इज्जत चलि गेल, तँ की भेलै? जमीन तँ फेरो भेटि जाएत मुदा जिनगी! किन्नहु नहि। बेटा, तों हमर सप्पत खो। हमर माथ पर हाथ धए क' सप्पत खो जे तों मरबाक बात कहियो सोचबो नहि करबें।' कुलदीप बेटाक हाथ पकड़िक' अपन माथ पर ध' लेलकै।

'नहि पापा, अहाँक सप्पत।'

कानिक' दुनू बाप-पुत हल्लुक भेल। दुनू अपन नोर पोछलक। सरियाक' बैसि गेलै। कुलदीप कने काल पहिने अपनहि आत्महत्याक बात सोचि रहल छल मुदा बेटा द्वारा

आत्महत्याक बात सोचबे मात्रसँ समुच्चा देह काँपि गेलै। ओ अपन सोचसँ आत्महत्याबला जाल उतारि फेंकलक। आकाश दिस तकलक। ओकरा राजाक खाट देखाइ पड़लै। ओ ओम्हर इशारा करैत बाजल–

'देख बेटा, किसान ओहि खाटबला राजा जकाँ होइत छैक जकर खाट ढील-ढाल, लटकल जौरबला होइत छैक आ गोड़ा तरमे सोनक ईंटा होइत छैक। जँ सोनक ईंटा चोरि भ' जेतै तँ की राजा आत्महत्या क' लेतै? मरि जेतैक? नहि, राजा मरैत नहि छैक आ ने आत्महत्या करैत छैक। राजा-महाराजकें तँ राज-पाट, ताज-मुकुट चलि जाइत छैक, तइयो ओ सभ नहि मरैत छैक। ओ सभ फेरसँ अपन तागति जुटबैत अछि आ लड़ैत अछि। मोन छौ ने बेटा, पांडव जूआमे अपन सभ किछु हारि गेलै-राजपाट, प्रतिष्ठा, पत्नी। सभ किछु। की ओ सभ आत्महत्या कएलकै? नहि। हम सभ अपन जमीन जूआमे नहि हारलहुँ अछि। हम किएक आत्महत्या करू?'

कुलदीपक अवचेतनमे पड़ल असिद्ध ज्ञान कोनो विद्वान लोकक अमृतवाणी बनिक' धार जकाँ फूटि पड़ल छलै–'बेटा, तों ओहि राजाक मादे सुनने होयबे जे लड़ाइमे सत्रह बेर हारि गेल छलै। ओ अपन शिविरमे उदास बैसल छल। ओकर नजरि सोझाँमे देबाल पर पड़लै। एकटा चुट्टी देबाल पर चढ़ि रहल छलै। ओ चढ़य आ ऊपर पहुँचैत देरी नीचाँ खसि पड़य। राजा ओकर चढ़ब-उतरब गनि रहल छल। अठारहम बेर ओ चढ़ि गेल। चुट्टीक ई सफलता ओकर मोनमे सहास भरि देलकै। ओ अठारहम बेर दुश्मन पर हमला कयलकै आ जीति गेल। अपन गमाओल राज पुनः प्राप्त क' लेलक।'

हरप्रीत पिताक बात सुनैत-सुनैत फेर राजाक खाट दिस देख' लागल। अचानके ओकर मोबाइलक घंटी बजलै। हरप्रीत फोन उठौलकै–'हेलो...हँ बड़का बाबू, सतश्री अकाल।...बेश...बेश...ठीक...हम पापासँ गप कए क' काल्हि भोरमे अहाँकें कहि देब।...बेश...बेश...सतश्री अकाल।'

'के छलै?' कुलदीप पुछलकै।

'मिल्लाक लाखा।'

'की कहैत छलै?'

'ओ कहि रहल छल जे एहि बेर ओकर जमीन ठीका पर नहि लगलै। ठीका बहुत कम भेटैत छैक। तों हमर जमीन आधा-आधा पर जोति ले। लागत आ फसिलक उपजामे आधा-आधी।' हरप्रीत कहलकै। ओकर ठोर पर मुस्की छलै।

ईहो कोनो पूछ'बला बात? कहबी सुनने छें ने–'उग्गह चान कि लपक' पूआ।' बुझले ने, मौका भेटिते तत्काल काजमे जुटि जाइ।' 'हँ' कहि दही।' कुलदीप मुस्किआइत बाजल आ हरदीप सेहो मुस्किआयल।

कुलदीप आकाश दिस तकलकै। तरेगन सभ ओकरा नरमेक फड़ जकाँ आ समुच्चा आकाश नरमेक खिलल खेत जकाँ बुझा रहल छल।

मो. 9582221968



वरुण कुमार तिवारीक कविता

दिनारंभ

कुहेसक चादरिमे
लेपटायल कोसी नदी
आ देखाइ पड़ैत अछि
बान्हक कतबहिमे
कास-वनमे सारसक झुंड

चतरा पहाड़ आच्छादित अछि
उज्जर बादरिमे
आ विद्यमान एखनो
आकासक तरेगन
कछुआ जा रहल अछि
जालक संग
तट पर बान्हल नाह दिस

तट पर प्रतीक्षारत छी हम
पूर्वी क्षितिजसँ
अबैबला सुरुजक
तखने अनुभव करैत छी
अकस्मात
अपन दहिना कान्ह पर
ककरो कोमल हाथ

वसंत अयबा धरि

हमर अगणित आकांक्षा
चाहैत अछि
उन्मुक्त आकाशमे
चिड़ै जकाँ गयबाक
हमर अनंत इच्छा
चाहैत अछि
नदी भ' जायब
आकांक्षा आ
जिजीविषाक सागर
बनि हम
पृथ्वीक कोमल
आलिंगनमे बद्ध
होब' चाहैत छी
वसंत अयबा धरि

आकास भ' गेल अछि
सघन नील
चिड़ै अतिशय चंचल
आ गाछ-वृक्ष
पहिनेसँ बेसी प्रेमपूर्ण
पुष्परथ पर
ऋतुराज भ' रहल
आरूढ

एहन अन्हारसमयमे

जीवन कतबो हो छोट
कतबो विषादपूर्ण
आ मृत्यु कतबो निश्चित
तैयो उदास हेबाक
कोन अर्थ?

मुदा बिक्ख भरल
ध्वनि सुनबेमे
छूटि जाइछ जीवन-रस
ओ समयक माथ
घोकचैत धरि नहि अछि

एहन अन्हार समयमे
प्रकाशक एक किरिन
देखार पड़य तँ
आंजि ली आँखिमे
आ झूठ साबित क' दी
दुख आ मृत्युकें।

एक श्रावणी भोरमे

क्षितिज पर पहुँचि
पिआसल इन्द्रधनुष
मेटा रहल अछि अपन पियास

गाछक कोमल जड़ि
सोखि रहल अछि
पृथ्वीक स्तनसँ दूध
पात सब झूमि रहल अछि
बरखाक बुन्नमे नहाक'
आ एहि बरखामे
कादोसँ लथपथ
एहि सड़कक ऊपर
एक उज्जर छोट तितली
पहुँचा रहल अछि
नाचि-नाचि ई खबरि
ओहि थाकल-हारल
लोक सब लग
जे बरसैत रातिक
भयावहताक बाँहिमे
कैद अछि एखनधरि
आ जकर उदास भरल
ओससँ भीजि गेल अछि
सम्पूर्ण पृथ्वी

8860478066



अबैत लोक

एहि स्तम्भक अन्तर्गत एहि अंकमे मुकेश आनन्द, सरिता मिश्र, भावना मिश्रक कथा आ साकेत ठाकुरक कविता देल जा रहल अछि। निरंतर अभ्यास आ परिश्रमसँ ई लोकनि स्वयंमे निखार आनि सकैत छथि से हमर विश्वास थिक। साकेत ठाकुरक कविता अपन बात कहबामे सफल भेल अछि। नव लोकक, नव लेखकक स्वागत हमसब उदारतापूर्वक करी, से अनुरोध।

आब ओ समय छै

मुकेश आनन्द

जीबछ बाबूक फोन बाजल और एकटा नव आदमीक आवाज आयल। ओ किछु कहलखिन। बाबू ई समाचार सुनि सन्न रहि गेला। बहुत जतन सँ दू टा बेटी पर बेटा भेल रहनि। बेटाक जन्म पर जीबछ बाबू कें भरोस भेल छलैन जे आब मुक्ति के द्वार खुलि गेल। परंच ओकर एहेन कृत्य? घोर अनर्थ भेल। जीबछ बाबूक सौंसे देह निष्प्राण

जकाँ बुझेलनि। जेना असह्य कष्ट और वेदना नस नस मे बिख जकां घुसि गेल होनि और सब दिस सँ पीड़ा द' रहल होनि। मस्तिष्क अचेतावस्था मे पहुंचि गेलैन। कुर्सी पर जे बैसला से स्पर्शक कोनो अनुभव नहि भेलनि। वेदना हुनक संवेदनाक शून्य कय देने छल। कतेक काल पर चेतना एलनि से नहि बुझलखिन, परंच आंगनवालीक सोर पाड़लखिन, ताहि पर ओ सचेत भेलाह।

गंगौली वाली जोर सँ चिचियै लगली, दूध खसि पड़ल अछि, कनी धोतीक टुकड़ा दिय', हमरा भंसाघर साफ करबाक अहि। मुदा जीबछ बाबू के अपन जगह पर सँ हिलय के इच्छा सेहो नहि भेलनि। बौआ माय के जीबछ बाबूक ई व्यवहार किछु असहज बुझना गेलनि। दौड़ क' एली, त' जीबछ बाबू के देख सन्न रहि गेली। चेहरा भावशून्य और निष्प्राण जेना बुझेलनि। हुनकर प्राण उड़ि गेलैन, तुरंत बांहि पकड़ि क' हिलेलखिन आ पुछलखिन–

की भेल, एना किऐ मुह बनौने छी? कोन विपति पड़ि गेल अछि?

बौआ अपन मोन सँ बियाह ठीक क' लेलनि!

सुनितहि बौआक मां सोझे खसि पड़ली। कनेक आगू टेबुल छल, यदि कपार मे कोन लगितनि त' फूटिए जयतनि माथ। बौआक माय जोर जोर सँ छाती पीट' लगली, जेना बौआ मरि गेल होथि। जीबछ बाबू अपन चिंता छोड़ि बौआक माय के सम्हारय मे लागि गेलाह। घंटा दू घंटा कनला और खीजलाक बाद दुनू गोटे ई नव घटनाक्रम पर चर्चा शुरू केलनि। बहुत काल धरि चर्चा चलल, आ दुनू व्यक्ति सुभ्यस्त भेला। नतीजा ई निकलल, जे जखनि विवाह भइए गेल त ओकरा स्वीकार कय आगू के दिशा निश्चित कयल जाय।

जीबछ बाबू परिवार मे सबसँ पैघ छलाह। परिवार और समाज मे अत्यंत सम्मानित। मुदा हुनक पहिल दुनू संतान बेटिए छलनि। बेटी जन्म के बाद जीबछ बाबूक सम्मान घर मे कम होमय लागल। दोसर बेटीक बाद त' ओ मात्र निरीह प्राणी रहि गेल रहथि। सहानुभूतिक पात्र धरि। ओना बाहर सँ सब टा नीक छलनि, मुदा अंदर सँ बहुत कमजोर बुझाय पड़नि। धन, पद और प्रतिष्ठा बहुत छलनि, मुदा बेटी होय के पीड़ा हुनका भीतर सँ खेने जानि। सबसँ पैघ गप जे बेटा नहिं रहत त मुखाग्नि के देत। आ बिना बेटा के मुक्ति असंभव। ई बड्ड पैघ बात छल। मुक्तिक आकांक्षा जीवनक मूल अछि, ओकर यदि संभावनाओं नहि रहत, ई बात जीबछ बाबूकें रहि रहि क कचोटय छलनि। मोन पड़य छलनि परमेश्वर बाबूक घरक खिस्सा, जतय भातिज मुखाग्नि दय के एवज मे संपति मे हिस्सा सेहो लेलक, आ अंत मे सबटा हुनक संपति पर कब्जा कय लेलक।

अंततः नहियो इच्छा रहैत, तेसर बच्चा भेलनि और आखिर मे पुत्ररत्न के प्राप्ति भेलैन। सैह छलाह बौआ। खैर जे किछु। बौआ लेल अपन काटल कष्ट और त्याग के दुनू गोटे स्मृति सँ तिलांजलि देलैन। मुदा इहो स्पष्ट भेलैन जे अपन सपना सभ के पूर्ण

करहि के ई स्वर्णिम अवसर छी।

निर्णय ई केलैन जे बौआ, ओकर कनियाँ और कनियाँक परिवार वला सभकें बजाओल जाय और वार्तालाप कय आगू के दिशा सुनिश्चित कयल जाय। फोन लगेलखिन भोरका नंबर पर। वैह जे फोन कयने छलनि।

हेलो, बौआ से बात कराउ कनी?

कौन बोल रहे हैं?

हम जीबछ।

ओह आप विमल के पिताजी, नमस्कार।

जी नमस्कार, आप कौन?

हम आपके समधी हैं, आपका बेटा मेरी बेटी से शादी किया है। यहीं है। आपसे बात करने से डरता है।

ओह, डरने की क्या बात है, बात कराइए।

जी, अजय इधर आओ, तुम्हारे पिताजी हैं।

जी, बाबू जी, प्रणाम।

खूब प्रसन्न रहू। सब ठीक ने।

जी।

बियाहे करबाक छल त हमरा सभकें कियैक नहि कहलहुँ?

हमरा डर होइ छल। मुदा पप्पा, अहाँ बूझय छियइ आब ओ समय नहि छय जे माँ बापक हिसाब सँ बियाह कयल जाय।

हँ, से हम बुझय छी। गलती हमरे छल, कनी हम अहाँसँ दूरे दूर रहय छलहुँ, तें अहाँक मोनक बात नहि बुझि सकलहुँ। कोनो बात नहिं, अहाँक आगू की प्लान अछि।

अखनि त एतहि छी। सोचने छलहुँ जे अहाँ सबहक क्रोध कम होयत त आयब। मुदा-....

हम सब दुखी छी, मुदा क्रोधित नहि।

और माँ?

ओहो ठीक छथि, फोन स्पीकर पर अछि, सबटा सुनै छथि।

गप क' सकय छी हुनका सँ?

जीवछ बाबू किछ बजतथि ओहि सँ पहिले माँ बजली, डेरा पर आयब त गप भइए जायत।

सुनि लेलहुँ ने?

जी।

बियाह कत' सँ करब?

जी, कोर्ट मैरेज त भ' गेल, ओना पारंपरिक तरीका सँ जखनि अहाँ सब कहब।

ओह, दोबारा करहि के कोन काज?

कखनो आऊ कनियाँ के ल' क'?

जी, अबै छी। हम फोन क' देब।

ठीक अछि, लेकिन जल्दी आयब, अहाँ लेल सर्प्राइज रखने छी।

कथी?

गोआ मे छुट्टीक पैकेज, एक महीनाक। अहाँक मांक इच्छा, जे हनीमून ओतहि हुअय।

ओह, त काल्हिये अबय छी।

स्वागत, मुदा सपरिवार।

हँ, जरूर।

दोसर दिन भोरे दस बजे बौआ अपन ससुर संगे एलाह। कनी काल बाद कनियाँ अपन माय संगे एली। स्वागत सत्कार सोहाग के बाद जीबछ बाबू गोआ छुट्टीक टिकट बौआ कें देखा देलखिन। बौआ प्रसन्न होइत बजलाह, छुट्टीक बाद हम सब अपन घर आबि जायब।

अपन घर? जीबछ बाबू पुछलखिन। घरो कीन लेलहुं की?

नहि, अपन घर मतलब अहाँ सभ लग।

अच्छा अच्छा।

बौआक ससुर जे एहि घटनाक्रम के बहुत ध्यानसँ देखै छलाह, बाजि उठला,

हाँ, मेरी बेटी आपलोगों की सेवा करेगी।

बौआक माय मोनेमोन मुस्काइत सोचली, ने खाना बनाबय अबइ छै, ने आफिस के काज सँ एकरा छुट्टी, त जे सेवा करत से बुझले अछि। आर हमरे सँ करायत।

बौआ अहाँ सब गोआ घुमि आउ। जीबछ बाबू मास दिनक टिकट दैत कहलखिन। बौआ और ओकर कनियाँ प्रसन्न भ' गेला। जीबछ बाबू के घर सँ बिदा भ' जाय के तैयारी करय लगला।

एक मासक बाद बौआ घुरि कय एला त घर के रूपे रंग बदलल छल। घर नव रंग सँ टीपल और गेट पर ककरो औरक नाम लिखल। घंटी बजेलखिन त एकटा वृद्ध व्यक्ति निकलला।

कहलखिन, क्या बात है?

मेरे पिताजी कहाँ हैं?

वो तो मकान बेच कर चले गए।

ओह, ऐसा कैसे हो सकता है?

आप उनके लड़के हैं क्या?

हाँ जी।

आपका सामान सामने वाले मकान में है, जिसका दो महीने का एडवांस दे गए थे जीबछ बाबू, ये चाभी है।

चाभी बौआ के पकड़ा कय वृद्ध दरवाजा बंद कय लेलक।

बौआ पप्पा के फोन लगेलनि, पप्पा ई की केलहुं?

अपने मोने कोना बेच देलियइ?

ओ हमर संपति छल बौआ। पापा बजलाह।

ओह, छी कतय अहाँ सभ?

हम सभ मायानगरी मे छी।

से कियै?

अहाँक मांक इच्छा रहनि, जिंदगीक सपना पूर्ण करय के।

खूब मजा करू, मुदा ध्यान राखब, जे अंतिम संस्कार के करत?

बौआ, अहाँक प्रताप सँ हम सब जीविते मुक्त भय गेल छी, तैं आब मुक्तिक आकांक्षा नहि।

तइयो, अपन संपति मे बच्चा के हिस्सा देबै ने?

हँ देबै, मुदा अहाँ ई बिसरि गेलहुं जे अहाँ के दू टा बहीनो छथि।

बेटी के हिस्सा थोड़े होइ छै?

बौआ, ओ पहिले होइ छलहि, आब ओ समय छै। कहि कय पप्पा फोन राखि देलखिन। बौआ आ हुनकर कनियाँ एक दोसर के मुंह देखय लगला।

मो. 9811478243



ओझराएल बात

सरिता मिश्रा

विवाहक दस वर्षक बाद जखन त्रिपुरारी बाबूक घर मे कन्याक जन्म भेलनि तखन परिवार मे प्रसन्नताक ठेकान नहि रहल, लागि रहल छल जेना पाथर पर दूभि जनमि गेल हो। वास्तव मे ओ दूनू बेक्ती सन्तानक प्रति निराश भए चुकल रहथि। स्त्री हुनकर नित दिन गोसाओन के गोहरबैत रहथिन आ हुनका पूरा विश्वास छलनि जे गोसाओन अवश्य हुनकर कोर भरथिन्ह। हुनकर विश्वासक जीत भेलनि आ हुनकर कोखि सँ भगवती सन कन्याक जनम भेल। परिवार हुनकर बड़ पैघ छलनि ताहि पर सँ चारि भायक भैयारी साझी छलनि। भगवानक कृपा सँ चारु भाय पैघ पैघ ओहदा पर कार्यरत छलाह संगहि गाममे खेतीपथारी सेहो बेश बढ़िया छलनि। मात्र त्रिपुरारी बावू के संतान द्वारे मन सदिखन चिन्तित रहैत छलनि सेहो मनोरथ ईश्वर पूरा कए देलखिन। नेना तँ देखबा मे चन्द्रमा सन छल ते ओकर नाम पूर्णिमा रखलखिन। ओहि नेना के आबय सँ हुनका लोकनिक अन्हार मन मे इजोत भए गेलनि। तें दुलार सँ ओकरा चानदाइ कहैत छलखिन। चानदाइ के पालन पोषण त्रिपुरारी वावू राजकुमारी जेकाँ केलेन। दूनू बेक्ती सदिखन

ओकरा तरहत्थी पर रखने रहैत छलखिन, एते तक जे क्षणो भरि लेल नेना सँ अलग नहि होथि। ओना ओ दूनू बेक्ती बहुत शिक्षित रहथि तें कन्या के सेहो सबसँ नीक स्कूल मे दाखिला करौलखिन। चानदाइ सेहो पढ़वा मे ततेक नीक छलीह जे स्कूल मे नामे नाम छलनि, संगहि रूपक तँ कोनो कथे नहि, अपूर्व सुन्दरि रहथि।

त्रिपुरारी बाबूक परिवार मे कोनो तरहक समस्या अबैत छलनि तँ पूरा परिवार मिल कय समाधान करैत छलाह वा कोनो निर्णय लेबाक होइत छलनि सब एकठाम बैस कए, सब भैयारी मिलि कए निर्णय लैत छलाह। किछु वर्षक बाद चानदाइ समर्थ भए गेलीह तखन हुनकर विवाहक चर्चा सेहो होमय लागल। मुदा मायबाप हुनकर दृढ निश्चय केने छलाह जे कम सँ कम ग्रेजुएट भेलाक बाद चानदाइ के विवाह करेबनि नहि तँ हुनकर करियर खराब भए जेतैन। मुदा ईश्वर किछु आओर हुनकर कपार मे लिख देने छलखिन। लेकिन जखन ओ बारहमी मे पढ़ैत छलीह तखन हुनकर परिवार मे कोनो एकटा बहिन लेल कथा छलै जाहि मे बड़का भाइक छोटकी बेटी के मातृक दिस सँ अधिकार नहि भेलै। मुदा लड़का ततेक नीक छलै जे केकरो छोड़वाक मन नहि भए रहल छलै। लड़का सरकारी नौकरी मे सभसँ पैघ पद पर छलै सेहो सबसँ नीक रैंक। ताहि परसँ देखबा मे सेहो गंधर्व सन छलै। त्रिपुरारी बाबूक बड़का भाइ के मन मे ठनकै लगलनि जे पाँच वर्षक बाद त चानदाइ के सेहो विवाह कराबहि पड़तनि, यदि कने पहिने भए जाय तँ कोन बेजाय। कन्यादान जतेक जल्दी भए जाय ततेक नीक। ओ त्रिपुरारीबाबू के बजा कए कहलखिन जे ई कथा तों कए लैह। फेर एतेक नीक नहि भेटतह। कतबो त्रिपरारी बाबू कहलखिन एखन चानदाइ के वएस नहि छनि ताहि पर सँ पढ़ाई पूरा नहि भेल छनि। तँ ओ कहय लगलखीन बेटीक पढ़ाइ विवाह के बादो लोक करबैत छै। सभ भाइ लोकनि एकदम जिद पकड़ि लेलखिन जे एहन विलक्षण कथा हाथ सँ छुटबाक नहि चाही। अन्त मे हारि कए त्रिपुरारी बाबू मानि गेलाह। चारुभाई बरागत लग प्रस्ताव जा कए देलखिन। वरवला एके बेर मे स्वीकार कए लेलखिन किएक तय चानदाइ के स्कूल मे लड़का के पितियौत बहिन मास्टरनी छलखिन। ओ चानदाइ के रिजल्ट आ आनो तरहक प्राइज जे भेटैत छलनि ताहि सँ जनैत छलखिन। चानदाइ कें स्कूल मे सभ बच्चा चिन्हैत छलनि जे ततेक नाम छलनि। हुनकर प्रतिभा विलक्षण छलनि। मुदा चानदाइ के शिक्षा सँ ततेक लगाव छलनि आ संगे रिजल्ट सेहो तेहने उत्कृष्ट छलनि जे बिना शिक्षा पूरा केने विवाहक मूड मे नहि छलीह मुदा मिथिला मे कन्या के विवाहक प्रसंग मे बजवाक कोनो टा अधिकार नहि छैक। सभ भैयारी के दवाव में विवाह एक वर्षक भीतरे सम्पन्न भए गेल। लड़का देखवा सुनवा मे एकदम कामदेव सन ताहि पर सँ सभसँ बड़का ओहदा के नौकरी, लड़का असगर भाय आ माथ पर तीस बीघा जमीन, दिल्ली मे अपन मकान, आब की चाही। सभ कहय लगलै जे चानदाइ के सूर्य भगवान भेटि गेलखिन। ततबे मृदुभाषी जमाय। आन लोकसभ कहैत

छलै जे वर के बाजय काल मे मुँह सँ जेना मधु टपकैत हो से त्रिपुरारीबाबूक बेटी लेल राखल छलनि। विवाह दान खूब नीक सँ सम्पन्न भय गेल आ चानदाइ सासुरो चल गेलीह। फेर हुनकर माय बाप असगरे रहय लगलखिन किएक तँ कलेजाक टुकड़ा सासुर चल गेलीह। दोसर जे हमरा लोकनि मे कहबी छै बेटी सासुरे नीक कि स्वर्गे नीक ताहि कारणे सभ माय बापक इच्छा रहैत छैक जे विवाहक बाद बेटी सासुरे बसै। सासुर सँ कोनो उपराग नहि आबय से माय बापक सौभाग्य मानल जाइत छैक।

मुदा आबक युग एकदम बदलि गेल छै। पहिने स्त्रिगणक काज छलै भानस भात, घरक काज, सबहक सेवा, बच्चा के जन्म देनाइ आ ओकर पालन पोषण केनाइ। शिक्षाक छूति तक नहि छलै। घरक सभ निर्णय पुरुषपात लोकनिक हाथ मे रहैत छलै। जे बेटी सासुर मे सभ तरहक प्रतारण सहि कए सासुरक गुणगाण करैत अपन प्राणो त्यागि दैत छथि तँ ओकरा बहुत सम्मान देल जाइत छैक। बेटी के सासुर मे भरि पेट भोजन आ देह झाँपय लेल दू टा नूआ भेट गेनाइ सौभाग्यक बात मानल जाइत छलैक। अधिकार शब्द सँ परिचय कोनो स्त्रिगण के नहि रहैत छलै किएक तँ ओकरा शिक्षाक शत प्रतिशत अभाव छलैक। बूझू जे स्त्रिगण समाज के पालतू सामाजिक प्राणी छलैक बल्कि एखनो छै। कोनो अपन अस्तित्व नहि छलैक। मुदा आब जेना जेना स्त्रिगण लोकनि शिक्षित भेल जाइत छथि अपन अधिकार बूझय लगलीह। ओना स्त्रिगण अगर अपन अधिकार लय डेग आगू बढ़बैत छथि तँ हुनका पर बहुत तरहक लाँछन सेहो लगाओल जाइत छनि, कखनो बदचलन, कलियुगाहि आदि शब्द सँ संबोधित कएल जाइत छनि। मुदा अगला पीढ़ी के ओकर लाभ जरुर भेटैत छैक।

चानदाइ के सेहो बड़ सिखा पढ़ा कय सासुर पठाओल गेल छलनि। जे सभ दिन सूतबाकाल सासुक पैर मे तेल लगा कए जाँतब, घरवलाक आज्ञाक पालन करब, माथ सदिखन झपने रहब, केओ कोनो काज कहय तँ झटदय कए लेब आदि। स्त्रिगण के पतिक सेवा सँ बढ़ि कय कोनो धर्म नहि होइत छैक। पतिक पैर दबौने बिना कहियो नहि सूती आदि। मुदा आबक समय के संगे मनुक्खो बदलि गेल छै। आब सभ सन्तान के एकसन शिक्षा दैत छै जे बेटा जेकाँ बेटी सेहो योग्य हेबाक चाही जे भविष्य मे ककरो मुहतक्की ओकरा नहि हो। आब बेटी बेटा बराबरे अर्थोपार्जन करैत छै। अपन अधिकार बुझैत छैक। जखन विवाह भेल तँ बेदियेतर सँ चानदाइ सासुर चल गेलीह। विवाह मे नहिरे जेकाँ सासुरो मे धमगिज्जर सँ द्विरागमन मे भोजभात आ दूर-दूर के संबंधी सभके लियाओन बजाओन कएल गेल छलनि। चानदाइ सासुर मे आज्ञाकारी पूतहु जेकाँ घोघ मरौत काढ़िके एक मास धरि रहि गेलीह। तकर बाद घरवला अपना संगे जतय नौकरी करैत छलाह ओतय लेने गेलखिन। कतबो घरक लोक सभ कहलकनि जे साल भरि पाबनि तिहार हेतैन ताहि पर सँ कनेक सासु के सेहो सेवाक मौका भेटतनि। मुदा आशीष 'चानदाइक घरवला' नहि मानलैन। ओ एकेठाम जिद पकड़ि

लेलनि जे हम कनियाँ के छोड़ि कए नहि रहब। अन्त मे हारि कए घरक लोक मानि गेल। केओ कहय लागल जे जाय दियौ दूनू समर्थ छै। जल्दी जल्दी समान सभ बान्हि छान्हि कए आशीष चानदाइ के संगे विदा भए गेलाह। जखन मोटरगाड़ी पर चानदाइ चढ़य लगलीह त घरवला अपने सँ गाड़ीक गेट खोलि कए बैसौलखिन। ओहिठाम दियादबादक सभ स्त्रिगण लोकनि वर कनिया के विदा करबा लेल आएल छलीह। ओ लोकनि अपना मे कनफुसकी करय लगलीह जे एहन लीला कहियो नहि देखने छलहुँ जे तुरन्ते विवाह भेलै आ सभ ससुर भैंसुर के सामने अपन घरवाली के डेग पकड़िकए गाड़ी मे बैसा रहल छैक। आबक लोक सभ लाज धाक पिबि गेल छैक। मुँह चमका कए स्त्रिगण लोकनि अपना मे गप करय लगलीह जे केहन निर्लज्ज छै। लगैत छै जे भरि दुनिया मे एकरे कनिया बड़ दुलारु छै, जेना आन ककरो कनिये नहि छै। ओमहर आशीषक माय हींग राय करय लगलीह जे एतेक दिन तक आशीष के कोनो लड़की पसिन्न नहि पड़ैत छलैक मुदा अपन पसिन्न के भेटि गेलै।

पहुँचलाक बाद जखन घरवला हाथ पकड़ि कए चानदाइ के मोटरगाड़ी सँ उतारलकनि आ अपन घर मे प्रवेश कएलनि तँ घर के सुन्दरता देखि कए क्षण भरि लय मुग्ध भय गेलीह। लगैत छल जेना कोनो परी के आँखि मुनि कए सीधा स्वर्ग मे राखि देल गेल हो। चानदाइ के प्रसन्नताक ठेकान नहि छलनि, लगैत छलनि जेना गोसाउन हुनकर आँचर मे भरि दुनियाक प्रसन्नता उजैहि कए दए देलखिन। अपन कल्पना मे सेहो एतेक सुन्नर नहि सोचने छलीह। मुदा घर मे जखन सँ पएर देलनि तखन सँ घरवला खिड़की दिश तक नहि ताकए दैत छलखिन आ घर मे सूइ तकके छेद नहि छलै जाहि सँ घरक बाहरो देखि सकितथि। आफिस जएबा काल चानदाइ के घर मे बन्द कए दैत छलखिन। ओहि घर के बाहर कोन दुनिया छै से चानदाइ नहि जनैत छलखिन। ने केकरो सँ भेट घाँट, ने केकरो सँ गपशप, ने एनाइ गेनाइ, सभकाज भीतरे मे करय पड़ैत छलनि। जौ कखनो एकर कारण पूछैत छलखिन तँ हुनका पर अमानवीय रुप सँ प्रहार करय लगैत छलाह। अपन माय बाप सँ गप कराबय लेल कहैत छलखिन तँ गड़ियावए लगैत छलखिन। अन्त मे हरिकए चानदाइ बौक जेकाँ रहय लगलीह। जेकरा ओ स्वर्ग बुझलखिन से उपर सँ स्वर्ग छलै आ भितर सँ नर्क। चानदाइ के सदिखन दम घुटय लगनि मुदा करती की! कोनो उपाय नहि सूझनि। अहिना छह मास बीति गेलै। चानदाइ दुबरा कए काठी सन भए गेलीह ताहि पर सँ गढ़ुआर सेहो भय गेलीह। सदिखन जेल जेकाँ लगनि। विवाहक अर्थ नहि बुझाइन। कखनो मन करनि जे अहि सँ नीक अपना के समाप्त कए ली मुदा अन्तर्आत्मा ओकर आदेश नहि दैत छलनि। कोनो एहन दिन नहि बितनि जाहि दिन हुनका पर कोनो तरहक प्रहार नहि कएल जानि। एकोटा दुष्चरित्रवला व्यवहार हुनका पर हुनकर घरवला नहि छोड़लकनि। चानदाइ कें लगैत छलनि जेना हुनका कोनो गिद्ध के सामने नोचय लेल सौंपि देल गेल हो।

एक दिन एहन संयोग भेलै आशीष के ओफिस सँ कोनो अरजेन्ट खबरि अएलनि तें ओ धरफरी मे चानदाइ के घर मे बन्द केनाइ बिसरि गेलाह। जखन साँझ मे डेरा लय विदा भेलाह तँ मन पड़लनि जे आइ घर बन्द केनाइ बिसरि गेलौं। चानदाइ मौका तकिते छलीह, एकटा नरकैट मैल नूआ मे घोघ तनने घर सँ पड़ा गेलीह। आ अपन माय बाप लग आबि गेलीह। एहन स्थिति मे देखि माय आश्चर्य मे पड़ि गेलीह। चानदाइ भोकासी पारि कय माय कें भरि पाँज पकड़ि कय हिचकि हिचकि कए कानय लगलीह। माय हुनका धैर्य दैत आँचर सँ नोर पोछि कए जल पियौलखिन और अपन घरवला के औफिस सँ बजओलनि। बाप तँ बौक जेकाँ अपन बेटी के बगय बनि देखैत रहि गेलाह। आँखि बड़ी काल तक स्थिर भए गेलनि, पाथर जेकाँ हाथ पैर ठमकि गेलनि। बेटी पिताक पैर पर खसि कए मुर्छित भए गेलीह। पिता अलगे चित्कार कए कानय लगलाह। पत्नी हुनकर मुह पर हाथ दय कहय लगलखिन जे होश करु आ अपन नेना के देखू। जखन कनी होश भेलनि तखन चानदाइ के कलेजा सँ लगा कए फफकि फफकि कए कानय लगलाह। लगैत छलनि जेना अपने सँ अपन बेटीक गला मौकि देथि। कनेके बात चानदाइ सँ सुनलाक बाद कहय लगलाह जे हम ओकरा जान सँ मारि देबै। हमर बेटी पर हाथ उठयवाक अधिकार के देलकै ओकरा आ फेर फफकि फफकि कए चित्कार करय लगलाह। पत्नी हुनका शान्त केलखिन आ कहलखिन जे एकर समाधान सोचू। कनी काल मे अपन सभटा वृतान्त चानदाइ सुनौलखिन। माय बाप सुनि लेलनि आ अपना मे गप करय लगलाह जे हमरा लोकनि के किछु पैघ निर्णय लेबय पड़त। ओ सभ ई बात अपन भाय लोकनि के सेहो नहि कहलखिन किएक तँ समाजक प्रतिष्ठा के बात छलै। दोसर जे भाय लोकनि लड़का सँ समझौता के प्रस्ताव दय दितथिन तय चानदाइ के प्राण अवग्रह मे पड़ि जैतन्हि।

त्रिपरारीबाबू के एकटा लंगोंटिया मित्र डॉ. जितकान्त छलखिन जे देश विदेश सदिखन घूमैत रहैत छलाह। हुनका बहुत लोक सँ परिचय छलनि आ ककरो कोनों संकटक समय मे तुरत ठाढ़ होइत छलखिन। ताहि पर ई एकटा दुखदपूर्ण घटना छलैक। तुरन्त फोन लगाकए सभ वृतांत सुनौलखिन आ कहलखिन जे चानदाइ गढ़ुआर सेहो छथि। हुनका पूछलखिन जे एहि स्थिति मे की कएल जाय? त ओ कहलखिन जे अहाँ सीधा अपन सारि संगे हमर पत्नी लग पठा दियौ जैसँ ककरो शक नहि हेतै। नेना हेबाक समय मे पत्नी के पठेबनि। त्रिपुरारी बाबू अहिना केलनि। रातो राति चानदाइ दोसर शहर चल गेलीह जतय केओ सोचिओ नहि सकैत अछि। चानदाइ के गेलाक बाद अपन गढ़ुआर बेटीक उतरल चेहरा सोचि सोचि कय चानदाइक माय बाप सदिखन कनैत रहैत छलाह आ ओही सोच मे डूबल रहैत छलाह जे चानदाइक पहाड़ सन जिन्दगी कोना कटतै। अही वियोग मे दूनू बेक्ती गलल जाइत छलाह। त्रिपुरारीबाबू दुख सँ बौक जेकाँ रहय लगलाह से ककरो नहि कहथीन। मात्र चानदाइ के मन पाड़ि पाड़ि कय कनैत रहैत छलाह।

इम्हर चानदाइक घरवला डेरा अएलाक बाद पहिने डेराक चारु दिस ताकय लगलाह आ कतेको चानो चानो कए आवाज देलखिन तँ कतहु सँ आवाज नहि अएलै तखन थाकि हारि कए अपन माय के चुप्पे चाप फोन कएलखिन जे एना एना बात भए गेलै। तखन तँ हुनकर मायबाप चारु दिश चानदाइ कें तकबा लेल लोक सभ के पठा देलखिन आ अपन समधि के सेहो पुछलखिन मुदा कोनो हुनकर अता पता नहि चललनि। मुदा ओकरा सबकें शक भए गेलै जे माय बाप अपना लग रखने छथिन्ह। ओ सब सदिखन एकटा जासूस जेकाँ हुनका लोकनिक पाछू लागल रहैत छलनि। चानदाइक सासुरवला चाहैत छलै जे अपन घर मे आनि ली। सासुरवला पूछनि जे त्रिपुरारी बाबू चानदाइ कतय छथि तँ ओ कहथिन जे हमरा लग नै एलीह। मुदा केओ विश्वास नहि करनि आ अनेको प्रकारक धमकी देल जाइत छलनि। त्रिपुरारी बाबू के बहुत चौकन्ना भए कए रहय पड़ैत छलनि। जखन ओ चानदाइक पता नहि बतौलखिन तँ औफिस सँ अयबा काल मे हुनका देह पर तेजाब फेक देलकनि। अपने तँ बचि गेलाह मुदा दूनू पाएर बहुत जरि गेलनि। बहुत दिन तक इलाज चललाक बाद कोनोना ठीक भेलाह। मुदा फेर औफिस जयबाक काल कोना ने कोना फेर नुका कय गोली चला देलकनि जाहि सँ एकटा पैर सभ दिन लेल खतम भए गेलनि आ बैसाखी के शरण लेबय पड़लनि। मात्र जान बचि गेलनि। तैयो हुनकर जानक खतरा बनले रहैत छलनि। संयोग छलनि जे सरकारी नोकरी रहनि जाहि सँ इलाज मे टका केकरो सँ लेबय नहि पड़लनि मुदा डेरा सँ ऑफिस तक जेवा मे एक एक क्षण जानक खतरा बनल रहैत छलनि। मुदा अपन संतान लेल दूनू बेक्ती जान के दाव पर लगा देने छलखिन। माय बीच बीच मे जा कए चानदाइ के सेहो नुकाकए देखि आबथि आ अपन पतिक परिचर्या सेहो करथि।

इम्हर चानदाय, पिताक मित्रक घर मे वेशभूषा बदलि कए रहय लगलीह आ हुनकर देखभाल छोटकी मौसी करैत छलखिन। जखन पूरा गर्भधारण के समय भए गेलनि तखन एकटा प्राइभेट अस्पताल मे पुत्रक जन्म भेलनि। पुत्रक जन्म होइते देरी नार पूरैन लागले मे चान दायक माय आवि कए आँचर मे नेना के लपेट कय अपन कोरा मे लय लेलनि आ ओकरा बाहरी दूध पिया कय पोसै लगलीह। मुदा पुत्रक जनम आ रहबाक ठेकान मात्र चानदाइक पिता कें बूझल छलनि, केकरो कानो कान नहि खबरि होमय देलखिन। यदि कखनो केओ पुछनि जे केकर नेना छै तँ कहथिन जे चानदाइ के सासुरक लोक गायब कए देलक तँ पत्नी बड उदास रहय लगलीह। तखन अस्पताल सँ एकटा नेना के पोसै लेल कोरा मे दय देलियै जाहि सँ ओही मे ओझरायल रहतीह और चानदाइ के सोग सँ मुक्त रहल करतीह। हमरा लेल ईश्वर एतेक नीक नेना पठा देलनि। नेनाक जनमक किछु दिनक बाद चान दायके माय बाप असगर मे चुपचाप बजाकए कहलखिन बौआ अहाँ फेर सँ नया सिरा सँ जेना कुमारि मे पढ़ैत छलहु तहिना शुरु करु आ अपन वेशभूषा कुमारिये जेकाँ राखू। ककरो कानो कान खबरि नहि हेबाक चाही जे अहाँ के

विवाह आ बच्चा भेल अछि। अहाँ के नेना के हमसभ अपन दोसर बच्चा बुझि कए पोसब। ओकरा एकोरती कुशक कलेप तक नहि लागय देबै। चानदाइ दूनू मायबाप कें भरि पाँज पकड़ि कए कए हवोढ़कार भए कानय लगलीह। माय बाप संगे कनितो छलीह आ चानदाइ के नोर पोछैत धैर्य रखबा लेल कहैत छलाह। चानदाइ के कानय सँ मना करैत कहलखिन जे अहाँक संग हमसभ छी कोनो चिन्ता नहि करु। चानदाइ अपन माय बापक आज्ञाक पालन करैत संगे आशीर्वाद लैत विदा भय जाइत छथि। हुनकर पिताक मित्रक बेटीक संग जे बड़ शिक्षित छलखिन हुनका संग चुपचाप निकलि कए खूब नीक नीक विश्वविद्यालय मे दाखिला लय आवेदन पठाबय लगलीह आ हुनके संगे किछुदिन हुनकर छात्रावास मे रहय लगलीह। संयोग सँ किछुए दिनक बाद हुनका बहुत नामीगामी विश्वविद्यालय मे दाखिला भेट गेलनि तखन ओकरे छात्रावास मे रहय लगलीह। पढबा लिखवा मे चानदाइ उत्कृष्ट रहबे करथि संगहि देखबो मे ततबे सुन्दर छलीह। ओ ओहिठाम कुमारि कन्या जेकाँ रहय लगलीह। कखनो कखनो असगर मे लगैत छलनि जे विवाह हमर जिन्दगीक एकटा बड़ पैघ दुर्घटना छल लगैत छल जेना मारकेश सँ बचलहुँ। ओना सन्तान सेहो हुनकर माय बाप के माता पिता बुझय लगलनि। कखनो कए छुट्टी मे चानदाइ नुका कए अपन घर जाइत छलीह तँ जेना अपन छोट भाय लेल कोनो बहिन सनेश लय जाएत छै तहिना चानदाइ ओहि नेना लेल लय जाएत छलीह। ताहू पर सँ कखन अबैत छलीह आ कखन जाइत छलीह माय बाप के अलावे ककरो पता नहि चलैत छलै। एक तरह सँ अज्ञातवाश जेकाँ छात्रावास मे रहैत छलीह। अही तरहे कतेको वर्ष बीति गेल। नेना सेहो समर्थ भए गेल आ चानदाइ के सेहो पूरा पढ़ाइ कए लेलनि, नौकरी पर्यन्त करय लगलीह।

ओम्हर हिनकर घरवला के परिवार आ घरवला उच्छन्नर दैत दैत थाकि गेल छलाह। अन्त मे जखन चानदाइ नहि भेटलखिन तखन आशीषक विवाह कोनो नीक गृहस्थ परिवार मे करबा देल गेलनि यदि ओ लोकनि पुलिस मे खबरि करितथिन तय चानदाइ भेट सकैत छलखिन। मुदा पुलिस मे गेला सँ आशीषक नौकरी पर खतरा रहितनि आ आशीषक जिन्दगी नर्क सन भय जैतनि। ओना ओहि लड़का के मानसिक रूप सँ किछु गड़बड़ी छलैक जाहि द्वारे चानदाइ सन गुणी घरवाली सँ हाथ धोअए पड़लै। ई बात सासुरक लोक नुकउने छलै। ओ लोकनि सोचैत छले जे एतेक नीक विवाहक बाद बेटा ठीक भय जाएत।

किछु वर्ष बितलाक बाद चानदाइ के बेटा अपन नाना नानी के माय बाप बूझय लगलै आ चानदाइ के सेहो नेने सँ छोट भायवला प्रेम अबैत छलनि। विवाहक समय चान दायक बएस बड़ कम छलनि तें हुनकर नेना, हुनकर नौकरी करैत काल तक पैघ क्लासक पढ़ाई कए रहल छल। चानदाइक माय बाप के पूरा मददि करैत छलखिन आ चानदाइ सेहो अपन माय बाप के हृदय सँ चाहैत छलखिन। चानदाइ के कोनो तरहक

एहसास तक नहि होमय देलखिन आ कहैत छलखिन जे अहाँ अपना लेल जीवन साथी सेहो तकबाक प्रयत्न करु। अपन जाति मे तँ मुस्किल अछि तें आनो जाति मे अपना लेल योग्य व्यक्ति ताकू। चानदाइ ततेक बेसी शिक्षित भय चुकल छलीह जे कतेको व्यक्ति हुनकर मित्रवत रहलनि मुदा जीवन साथी योग्य एकोटा नहि बुझाइत छलनि। कतेको वर्ष जखन बीति गेलै हुनकर नेना सेहो ग्रेजुशन कए लेलकनि तखन तक नहि हुनका योग्य व्यक्ति भेटलनि। नेना सेहो अपन माय जेकाँ पढ़बा लिखबा मे बहुत उत्कृष्ट छलनि। ओकरा एम.बी.ए. लेल सेहो बहुत उच्च संस्थान मे चयन भए गेलै। चानदाइ के जखन सँ बहुत नीक नौकरी भए गेलनि तखन सँ अपन माय बाप के खूब सहयोग करैत छलखिन। आ जखन सँ बाप रिटायर कए गेलखिन तखन सँ कहय लगलखिन जे अहाँ सब हमरे लग आबि जाउ किएक तय ओहि समाज मे हमर रहनाइ दुर्लभ अछि। माय बाप सेहो जाहि शहर मे चानदाइ छलीह अपन सभ सम्पत्ति के बेच बिकीन के आबि गेलाह। त्रिपुरारी बाबूक दूनू बूेक्ती के बएस सेहो बहुत भय चुकल छलनि आ समांग सेहो दुनु के खसि पड़ल छलनि। अहुना बुढ़ारी अपने आप मे एकटा असाध्य रोग छैक। ताहि पर सँ दोसरो नेना पैघ छलनि।

आब एहन भेलै जे चानदाइ के एकटा परम मित्र छलखिन जे हुनकर बराबरी के छलखिन जिनका संग ओ दूनू सदिखन एकदोसरक सुख दय सेहो खुलि कय गप करैत छलनि। ओ मित्र हिनकर व्यवहार, शालीनता, अपन माय बाप लेल एतेक श्रद्धा सभ दय सोचैत रहैत छल। एहन संयोग भेलै जे एके औफिस मे दूनू के काज करवाक अवसर भेटि गेलनि। तखन तँ दूनू के आरो प्रगाढ़ता बढ़ि गेलनि आ दूनू एक दोसरक जिन्दगी पारदर्शिताक रुप सँ बूझय लगलखिन। एतेक तक जे दूनू के एक दोसरक क्षण क्षण के गप बुझल रहैत छलनि। संयोग सँ एक दिन दूनू एके संगे चाह पिबय लेल बैसलीह आ ओ मित्र किछु काल धरि किछु नहि बाजथि। लगैत छलनि जेना हुनका किछु कहवाक इच्छा भए रहल छनि, मुदा संकोच भए रहल छनि। चानदाइ तखन अपन मित्र सँ खोदि खोदि कय पूछय लगलखिन जे आइ एतेक चुप किएक छी? हम तखन सँ बरबर केने जा रहल छी मुदा अहाँ अपन कोनो रुचि नहि देखा रहल छी। की बात भेल हमरा सँ तँ कोनो बात नै नुकबैत छलौं? तैयो जेना हुनकर मित्र बजवाक साहस नहि जुटा पाबि रहल छलाह। कनेक काल धरि तैयो चुप्पी लगौने रहलाह। एक बेर आधा बाजि कए चुप भए गेलाह। चानदाइ तखन जिदद् पकड़ि लेलखिन जे जावत अहाँ नहि कहब तावत हम नहि उठब। हिनकर मित्रक नाम चन्दन छलनि। जेहने नाम तेहन मन पवित्र रहनि। अन्त मे हारिकए चन्दन चानदाइ के स्थिरे सँ कहलखिन जे हमरा अहाँसँ ततेक प्रेम भए गेल अछि जे अहाँ बिना हमर जिन्दगी अधूरा बुझा रहल अछि। हमरा सपना मे एहने जीवन साथीक तलास छल जेकरा संग कोनो बात नुकाएल नै रहय जाहि सँ आगूक जिन्दगी मे कोनो तरहक खटास नहि प्रवेश कए सकय। यदि हमरा

लोकनि वैवाहिक बंधन मे बंधि जाय कतेक नीक जिन्दगी बितत। दूनू के अपन माता पिता के परिचर्या करवा मे कोनो तरद्दुत नहि हएत। शायद हमरा लोकनि के ईश्वर किछु सोचि कए भेट करौलनि। ई सभ सुनि कए चानदाइ किछु काल धरि डरा गेलीह किएक तँ अपन विवाह मन पड़य लगलनि। मुदा किछु काल के बाद कहय लगलीह जे अहाँ के माय बाप के ई नहि होनि जे हमर बेटा के ई लड़की फँसा लेलक ते अहाँ किछु दिन तक एहि पर सोचू। किएक हमरा दय जनिते छी जे कतेक पैघ सदमा के एतेक वर्ष सँ घसीट रहल छलहुँ। हम आ हमरा संग हमर परिवार। मित्र कहलखिन एकर भार हमरा पर छोरि दियउ। यदि अहाँ कही तँ हम सभ के सूचित कए देबै आ नीकि मूहूर्त मे विवाहक दिन निश्चित कए लितहुँ। चानदाइ कहलखिन पहिने अहाँ सोचबा लेल किछु समय लिय। अहिना गपे गप मे छह मास बीति गेलै। एक दिन चानदाइ मित्रक संग कोनो काज सँ कतहु जाइत छलाह तँ मित्र कहलखिन जे चलू हमर घर एखन हमर जेठ बहिन सेहो आयल छथि हुनका सँ भेट करा दैत छी आ संगहि हमर माय बाप सँ सेहो भेट भए जाएत। हमर बहिन विदेश मे रहैत छथि ते तीन वर्ष पर अपन देश अवैत छथि। हमर बहिन सेहो अपने पसिन्न सँ विवाह कएने छथि आ हुनका लोकनिक जिन्दगी बहुत नीक सँ बीत रहल छनि। मित्रक घर मे बहुत प्रेम सँ चानदाइ के आदर सत्कार भेलैन। मित्रक बहिन चानदाइ सँ भेट कए बड प्रसन्न भेलीह। माय बाप सेहो बहुत नीक छलखिन। जखन चान विदा होमय लगलीह तय मित्रक बहिन कहलखिन जे अहाँ लोकनि एतेक दिन सँ एतेक नीक मित्र छी तँ विवाह किएक ने कए लैत छी। मित्रक माय बाप कहए लगलखिन जे एतेक नीक जोड़ी अछि हमरा हिसाबे कनेको देरी नहि करक चाही। मित्रक बहिन अपन बैग मे सँ जल्दी एकटा खूब सुन्दर हीराक अंगूठी अपन भाय के हाथ सँ चानदाइ के पहिरबा देलखिन। चानदाइ तुरत अपन सासु, ससुर आ मित्रक बहिन के चरण स्पर्श कए लेलखिन। मित्रक बहिन चानदाइ कें अपन गला लगाकए बहुत दुलार कएलखिन। चानदाइ जा कए अपन माय बाप के सभ गप कहलखिन त ओ सभ सहर्ष स्वीकार केलखिन। कनेक दिनक बाद दूनूक विवाह खूब नीक सँ भए गेलनि आ नीक सँ रहय लगलीह। दूनू परिवारक लोक के मन गदगद भय गेलै।

विवाहक बाद चानदाइ अपन घरवलाक संग प्रसन्नपूर्वक रहय लगलीह। किछुदिनक बाद चानदाइ अपन घरक बगल मे सटले एकटा खूब सुन्दर घर लय लेलनि आ अपन माय बाप के ओहि घर मे अयबाक हेतु कहलखिन। चानदाइक माय वाप आ हुनकर नेना सेहो ओहि घर मे रहय लगलनि। नेना सदिखन अपन होस्टल मे रहैत छलनि मुदा छुटट्टी मे कखनो नाना नानी लग रहैत छल। किछु दिनक बाद चानदाइ के फेर बच्चा सेहो भेलनि जेकर देखरेख हुनकर सास ससुर करैत छलैन किएक तँ ओ अपने औफिस चल जाइत छलीह। चानदाइ अपन सास ससुर कें अपने संगे

रखने छलखिन से चानदाइ के मायबाप के पसिन्न नहि पड़लनि। हुनकर सभक मन छलनि जे चानदाइ हमरा संगे रहथि।

एक तँ चानदाइ के माय बापक अपन स्वास्थ्य सए लाचार रहथि। दोसर जे चान दाइके पहिल नेना के पूरा शिक्षा करबा चुकल रहथि। कतवो चानदाइ हुनका लोकनि के सुख सुविधा देबय लेल तैयार छलखिन मुदा हुनका लोकनि के नेना वला बुद्धि भए गेल छलनि जेना लोक पुतहु के हमरा लोकनिक समाज मे करैत छैक जे आब ओ हमर कुलक भेल तें हमरे तरीका सँ चलि सकैत अछि, जमाय सेहो हमर बात मानि कए चलय जे असंभव छलैक। तें चानदाइ के माय बाप के अपन बेटी जमाय सँ मतभैद रहय लगलैन। जखन कि चानदाइ के दूनू नेनाक परवरिश हुनकर सास ससुर कए रहल छलखिन एकतय दूजोड़ा समैध समधिन के एक संगे रहनाई कतेक संकटपूर्ण हेते से केओ सपनो मे नहि सोचि सकैत अछि। जे संबंध दूरो रहि कए ठीक नहि रहैत छैक। कोनो कोनो फिल्म मे एकरा नीक देखा देल गेल छै। मुदा वास्तविकता किछु और रहैत छैक। शुद्ध कए भारत पाकिस्तान जेकाँ रहैत छै। बेचारी चानदाइ के दूध माछ दूनू बाँतर छनि ककरा छोड़ती ककरा बौंसती। माय बाप अलग गाल फुलौने छथि आ सासु ससुर अलग। चन्दन अपन चानदाइक संग पीसा रहल छथि। चानदाइ सदिखन अपन माय बाप लग असगरे अबैत छथि किएक तँ ओ अपन माय बापक गारि श्राप सुनि लेतीह मुदा चन्दन नहि सुनि सकताह। सदिखन माय बाप कहैत रहैत छथिन्हे जे चानदाइ हमरा लोकनि कें धोखा देलनि, चानदाइ मुड़ी झुकौने अपन घरवला लग आबि जाइत छथि।

एम्हर आब चानदाइ सँ बहुत दिन तक अलग रहबाक कारणे हुनकर पहिलका घरवला अपन विवाह कए परिवार बसा लेने छथि। चानदाइ के माय बाप अपन पहिल जमाय कें फोन कय कहैत छथिन जे अहाँक नेना आब पैघ भय गेल ओकरा हम अपन बेटा जेकाँ पोसि देलउँ तें हमरा लोकनिक मन अछि जे ओकरा सँ जरुर भेट करी। अपन नाइत कृष्णा के अपन बाप सँ भेट करवा लेल पठा दैत छथि। कृष्णा जखन अपन पिता सँ भेट करबाक सूचना दैत छथिन तखन हुनकर पिता किछु क्षण लेल सुन्न भय जाइत छथि मुदा अपन पुत्र कें भेट करबाक आज्ञा दय दैत छथिन। दूनू प्रेमपूर्वक भेट करैत छथि। कृष्णा देखबामे एकदम बापक दोसर रूप छथि। कृष्णा दय सुनि हुनकर पिता बहुत प्रसन्न होइत छथिन। आगू पढ़ाइ लेल विदेश पठेबा लेल तैयार भए जाइत छथिन। कृष्णाक माय बाप तँ नाना नानी छथिन्हे। मात्र नाम लेल चानदाइ आ हुनकर पहिल घरवलाक पुत्र। जखन चानदाइ कें ई सूचना हुनकर माय बाप दैत छथिन तँ ओ अवाक रहि जाइत छथि। कतबो चानदाइ कहैत छथिन जे ई कोन काज केलौं तेयो ओ लोकनि बुढ़ापा वला जिद नहि छोड़ैत छथि आ पहिल जमाय सँ खूब हेमक्षेम बढ़ौने छथि। जे जमाय हुनकर बेटीक जीवनसाथी छनि तकरा देखय नहि चाहैत छथि। ई दुख चानदाइ ककरो नहि कहि सकैत छथि मुदा बहुत अशान्त रहैत छथि। आव चानदाइक जिन्दगी मझधार मे छनि जेकर खबैया केओ नहि।

चानदाइक सहारा रूपी गाछ रहनि परिवार जाहि द्वारे अपन दोसर परिवार बनयबाक साहस भेलनि। जखन परिवार मे नीक सँ रहय लगलीह तखन माय बापक मन बदलि गेलनि। कृष्णा के चानदाइ सँ ततेक दूर रखलखिन जे हुनका अपन पहिल नेना लय वात्सल्य भावना सेहो तक नहि अयलनि। किएक तँ चानदाइक जीवनक सवाल छलनि। चानदाइ अपन माय बापक बात मानि अपना के नेना सँ ततेक दूर कय लेलनि जे अपन बेटा सँ भायक संबंध बनि गेलनि। जखन नेना पैघ भय गेलनि तखन होइत छलनि जे चानदाइ अपन नेना के नै देखैत छथि।

एतय एकटा विचित्र सवाल उत्पन्न होइत छैक जे जन्म केओ देलनि, पोसलनि केओ आ पैघ भेलाक बाद जनम दिएवाला लग जाथि। खास कय कृष्णा के नानी लय मायवला भावना छनि आ चानदाइ सँ बहिनवला। एकेटा बात भए सकैत छलै जे चानदाइ अपना के समाप्त कए लितथि तखन ओहि नेना पर सभके दयावला भावना अवितै। मुदा से नहि भेलै। चानदाइ धैर्यक संग अपन डेग आगू बढबैत गेलीह जाहि कारणे अपना के नीक सँ राखि रहल छथि। पहिलका बात आब नै छै जे बेटी सासुरे नीक वा स्वर्गे नीक। हम पाठक लोकनि सँ आग्रह करबनि जे चानदाइक सन परिस्थिति मे की समाधान हेबाक चाही।

मो. 7011799468



गुरु

भावना मिश्र

आइ गाम के ओहि गली सँ गुजरि रहल छी, जत' हमर बचपन बीतल रहै, ओ जानल पहचानल गली, लागैत रहै, जँ काल्हि के गप्प रहै, पर ओहो ककरो मुँह जानल-पहचानल नहि लगैत रहै। तीस बरख बाद ई गली-कुची सँ जा रहल छलीह। अतीतक याद मे चलि गेलीह रागिनी...

ओ गप्प, ओ हठ, ओ हँसी, ओ ठिठोली, ओ परेशानीक दौर कनि देरी लागल कि केना एतबा दिन बीत गेलै, केहेन कठिन समय सेहो बीत गेलै। हिम्मत, लगन आ मेहनत सँ हम-सब किछु क' सकैत छी, भगवान हमर सबक कुनू ना कुनू रूप मे मदद करे लेल आबि जाइत छथि।

एकटा गरीब परिवार मे जन्म लेलाक बाद आ पापा के जल्दी दुनिया छोड़िकए चलि जयबाक बादो आइ रागिनी एकटा जानल- मानल डाक्टर बनी गेलीह।

रागिनी स्कूल मे कानैत रहै, विज्ञान के शिक्षक मोहन बाबू रागिनी सँ पूछला– कियै कानै छी? की भ' गेल रागिनी?

सिसकैत रागिनी बजलीह–हमर पापा के मोन बड़ खराब अछि, आ हम ई मास

के स्कूल के फीस नहि द' सकब, हम पढै लेल चाहै छी।

मोहन बाबू–एतबा छोट गप्प पर अहाँ कानै छी, हम फीस द' देब।

रागिनी बजलीह–सर अहाँ फीस देबै।

मोहन बाबू–हँ जखन अहाँक पापा नीक भ' जएता, तखन अहाँ टाका वापस कर देब।

ऐना छः महीना चलल, आ एक दिन रागिनीक पिता दुनिया छोड़ि के चलि गेलाह।

मोहन बाबू रागिनी के घर पर आबि कें पूछलखिन–रागिनी, अहाँ स्कूल कियैक नहि जा रहल छी? की भ' गेल?

रागिनी फफकि फफकि कें कान' लगलीह, आ बजलीह–एतबा दिन तँ हम सोचैत रहियै कि पापा अहाँ के सबटा टाका धुरा देताह वापस, मुदा आव से कोना संभव अछि।

एतेक छोट बातक कारण अहाँ स्कूल नहि अबैत छी। हमरा बेटी नहि, मात्र एकटा बेटा अछि। आइ सँ अहाँ हमर बेटी थिकहुँ। अहाँ मेधावी छी, जतेक पढ़ब, हम पढायब।

ई सुनि रागिनी पापा कहि मोहन बाबू कें भरि पांज पकड़ि कानय लागलि।

सबटा पढाई-लिखाइ के खर्च मोहन बाबू पिता बनि कें निभौलनि।

पढ़ाइ करिते संगी अभि सँ ब्याह भ' गेल, आ अपन काम-काज मे पूरा लागि गेल।

मोहन बाबू–कोना छी बेटी।

रागिनी–हम निके छी।

रागिनी–अहाँक आवाज केना लागि रहलए, कतेक दिन सँ कहै छी, आबि जाउ, हमरा लग, मुदा अहाँ आबै नहि छी, आ किछु नहि किछु कहि के अनठा दै छियै। अहाँक मोन हमरा नीक नहि लागि रहल यै हम हूँ भी एतबा काज मे ओझरायल रहैत छी, अहाँक लग नहि आबि सकलौं।

हम अगला सप्ताह आबि रहल छी, अहाँक लग।

मोहन बाबू–नहि बेटी, हम आबि जाएब, कनि दिन मे।

रागिनी–हम आबि रहल छी अहाँक लेबै लेल।

गाड़ी के ड्राइवर–कतै लै चली?

रागिनी पुरनका याद सँ निकलि कें गाड़ी सँ इमहर-उमहर देखै लगलीह, हुनका मोहन बाबू के घर नहि देखार पड़लनि।

आगू मे आबैत एकटा लोक सँ पूछलीह, ओ बजलाह–आगाँ सँ ओहि चारिम

माटि घर मे मोहन बाबू रहैत छथि।

रागिनी हक्का-बक्का रहि गेलीह। कियै? की भ' गेलै?

ओ गाड़ी सँ उतरि कें भागैत ओहि घर मे पहुँचलीह।

चौकी पर मोहन बाबू पड़ल रहथि। हुनका ऐना देखि कें रागिनी कान' लगलीह।

अहाँ हमरा कियैक नहि कहलहुँ जे अहाँकें एतेक मोन खराब अछि।

हम कहियो कियैक नहि बुझलियै कि अहाँ हमर पढाई-लिखाई आ हमर ब्याह के लेल अहाँ अप्पन सब किछु (घर आँगन सब) बेचि देलियै।

रागिनी–अहाँक बेटा रमेश कत' अछि?

मोहन बाबू–ओ शहर मे अप्पन परिवार आ बच्चाक संग रहैत अछि, ओ हमरा पर तमसाएल अछि, कि हम अप्पन सबटा सम्पत्ति अहाँ पर खर्च क देलहुँ।

रागिनी–मोहन बाबू कें गोड़ लागि के फूटि-फूटि क' कानै लगलीह।

बजलीह–भरिसक आइ हमर अप्पन पिता रहतथि तँ ई नहि क' सकितथि, जे अहाँ हमर गुरु पिता हमरा लेल कयलहुँ...

मो. 9811651284



एकटा खेल

साकेत ठाकुर

कखनो कखनो हम
खेलैत छी
ई अजगुत खेल।
जाहिमे ठाढ़ भ' जाइत छी
कतहु दूर अपनासँ,
कोनो एहन जगह पर,
जत'सँ देखि पाबि हम
अपना-आप के सब तरफसँ
देखि पाबि अप्पन खूबी
आ अप्पन कमीके।
जानि पाबि कि
आन कियो हमरा बारेमे जे कहैत अछि,
की ठीके वैह साँच होयत हमरा बारेमे।
हम परत दर परत खोलैत छी अपना आपके।
जाइ छी तह तक
ताकि हम जे हम छी
ओहि अपन हमकें
निकालि आनी अपना आपसँ बाहर।
खाली ऐतबे नै अछि जे
हम खेलैत छी खेले टा
हमरा बुझल अछि जे
खेल कोनो हो किछु नै किछु
दर्शन छुपल रहैत अछि।
तैं हम अइ खेलसँ सिखैत छी जे
मानव बनवाक एहि दौरमे
हम कतेक पाछू छी।
हम अपना आप के कर्म के बाट पर

डेग बढ़बैत देखैत छी,
कि जेना देखैत अछि
कोनो वस्तु अपन छायाके
आ अनुमान लगबैत अछि कि
जतेक दूरी तय क'
सकलौं अछि अखन धरि
की ओ संतुष्ट करैत अछि
आगाँक यात्राक लेल कनिको?
ई पूरा खेलमे हम बहुत उत्साहित रहैत छी
जेना रहैत अछि कोनो धियापुता
अप्पन खेलमे।

बदलाव

जे जेना चलैत छै
चल' दियौ।
सब किछु सुधारबाक सोच राखि
परेशान कियैक छी?
बड़ कठिन छैक दुनिया के
सब चीज सुधारि पायब।
नै मानैत छी
त' अपना आपके सुधारि क' देखू।
आब एम्हर ओम्हर तकैत की छी,
एतेक हैरान कियैक छी?

मनुखताक खोज

कोन एहन कष्ट छल
जे ओकरा पर नै बितले
कोन एहन विषम-परिस्थिति
जाहिसँ रहि सकल ओ रितल
तपिक' जीवन ओकर सभ्यताके आगिमे,
छल पारस पाथर बनि गेल।
समाजक अन्यायसँ छल
ओकर युद्ध ठनि गेल।
मन ओकर पैघ छल अनन्त सागर सन।
कतेक रहि गेल ओहिमे डुबइत-उपलाइत,
बहुत बनि गेल की सँ की
एक टुकड़ा सीप के
ओकरा उरसँ पाबि क'।
के एहन छल समाजमे जे कहियो,
एक बेर ओकरा मनमे
गोता नै लगौने होयत
मुदा ओकरा छोड़ि कियो एहन छल नै
जे कहियो हृदयके वेदना
ओकर बुझि पौने होइ।
आलोचनासँ घबरायल बिना बेफिक्र भ'
ओ चलि रहल छल उम्मीदक माथ ध'।
सबसँ मिलैत, मुसकी दय बात करैत,
ओ छल बढ़ि रहल मानवताक
उमंगमे अपन बाट ध',
छल काल सेहो पसेनासँ तरबतर
ओकर ई जीवन जीबाक' हुनर देखिक'
काम, क्रोध, मद, लोभ जेहन पाप सब
नै लील सकलक
ओकरा कहियो अपन कोर मे,
ओ कस्तूरी मृग जकाँ
तेजीसँ छल बढ़ि रहल
दोसर मनुखके भीतर मनुखताके खोजमे।

मो. 8582044158



समांग

डा. कीर्तिनाथ झा निरन्तर सृजनरत रहैत छथि। एखन हुनक निबंध सभक एक अनुपम पुस्तक 'देखल-परेखल' अंतिका प्रकाशन सँ आयल छनि। 'समांग' स्तम्भक अन्तर्गत ओ एहि पत्रिका लेल लिखैत रहैत छथि। समयसँ पूर्व जन्मल बच्चाक आँखिक रोगक विषयमे ओ एहि लेखमे कहि रहल छथि। ई समस्या रहरहां बच्चा सभमे होइत अछि, जकर कारण आ उपचारक विषयमे सम्पूर्ण जनतब एहि लेखमे उपलब्ध अछि आ पत्रिकाक पाठक एहिसँ लाभ उठा सकैत छथि।

रेटिनोपैथी ऑफ प्रीमैच्यूरिटी (आरओपी)क हेतु आँखिक जांच

कर्नल (डाक्टर) कीर्तिनाथ झा

Retinopathy of prematurity (ROP) समय पूर्व जनमल (Preterm birth) शिशुक आँखिक रोग थिक ई रोग आँखिक संवेदी पर्दा, रेटिना कें प्रभावित करैछ आ दृष्टिहीनताक कारण भए सकैछ। ज्ञातव्य थिक, समय-पूर्व (Preterm) जन्म नवजातक मृत्युक प्रमुख कारण थिक। एकर अतिरिक्त, समय-पूर्व जनमल शिशुकें अनेक आनो बीमारीक खतरा रहैत छैक, एहिमे सेरेब्रल पाल्सी (लकबा), संज्ञा-शून्यता, मंद-बुद्धि आ श्वासक रोग प्रमुख थिक। स्वास्थ्य सेवा आ शिशु-चिकित्साक क्षेत्रमे गुणात्मक परिवर्तनक कारण नवजात शिशु (जन्मसँ 28 दिन धरिक वयसक) क मृत्युक संख्या घटलैक अछि। मुदा, रेटिनाक रोग-Retinopathy of prematurity (ROP)सँ अंधताक खतराक विषयमे जनसामान्य आ चिकित्सक समुदायमे जानकारी थोड़ छैक। एहि लेखक उद्देश्य Retinopathy of prematurity (ROP)क विषयमे जनसामान्यक हेतु आवश्यक सूचना देब थिक।[1]

समय-पूर्व शिशुक रेटिनाक रोग, Retinopathy of prematurity (ROP)

समय-पूर्व जनमल शिशुक रेटिनाक रोग, ROP, आँखिक पर्दा, रेटिनाक रोग थिक, एहिसँ अन्धता संभव अछि। जाहि नेनाक जन्म पूर-समयसँ चारि हफ्ता वा ओहिसँ बेसिए पहिने होइछ, आ जकर चिकित्सा सघन शिशु चिकित्सा केंद्र (Neonatal Intensive Care Unit)मे भेल होइछ, ओकर आँखिकें (ROP)सँ प्रभावित हएबाक खतरा होइछ।

ROPक मुख्य कारण थिक, अविकसित रेटिना पर अत्यधिक ऑक्सीजनक दुष्प्रभाव। ऑक्सीजनक दुष्प्रभावक कारण रेटिनाक रक्त-नली (शिरा आ धमनी)क अनियंत्रित विकाससँ रेटिनामे अनेक प्रकारक विकार उत्पन्न भए जाइछ जकरा वैज्ञानिक भाषामे

ROP कहल जाइछ। समय पर ROPक निदान आ चिकित्साक अभावसँ, रेटिना अन्ततः अपन स्थानसँ हंटि जाइछ, जकरा retinal detachment कहल जाइछ। Retinal detachment क कारण आँखिक ज्योति नष्ट भए जाइछ। एतेक कम वयसमे आँखिक ज्योतिक कम हयबाक दुष्परिणाम बूझब कठिन नहि। अतः, ROPसँ दृष्टिक बचावक हेतु नियमतः प्रत्येक समय-पूर्व शिशुक आँखि जाँचक हेतु राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रमक अंतर्गत भारत सरकारक दिशानिर्देश छैक। तथापि, जानकारी आ आँखिक जाँचक सुविधाक अभावक कारण दिशानिर्देशक पालनमे ढिलाईक दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम कदाचित समाचारक सुर्खी अबैछ। किन्तु, ततबे। वर्ष 2019मे दिल्लीक महाराज अग्रसेन अस्पतालक ROP क कारण समाचारमे आयल छल। ओहि अस्पतालमे चिकित्सा ले आयल एक शिशुक ROP क कारण आँखिक रोशनी नष्ट भए गेल रहैक। सुप्रीम कोर्ट महाराज अग्रसेन अस्पतालक डाक्टर लोकनिकें एहि त्रासदीक जिम्मेदार मानि पीड़ित परिवारकें 76 लाख टाकाक हर्जाना मंजूर कयने रहैक। तथापि, एखनो जनसामान्य आ स्वास्थ्य सेवामे ROP क विषयमे जानकारीक अभाव तं अछिए, अधिकतर अस्पतालमे समय-पूर्व शिशुक रेटिनाक नियमतः जाँच नहि भए पबैछ। हालमे हमर एक मित्रक परिवारमे एक समय-पूर्ण नेनाक जन्म भेल रहनि। हम ROP क हेतु आँखि जांचक सुझाव देलियनि। मुदा, बच्चाक रेटिनाक जाँच नहि भेलैक! ओना, प्रत्येक समय-पूर्व शिशु (preterm infant)कें रेटिनाक रोग नहि होइछ, से सत्य थिक।

ROPd हेतु शिशुक आँखिक जाँच (Screening for ROP)

भारतमे दिशानिर्देशक अनुसार सघन शिशु चिकित्सा केंद्र (Neonatal Intensive Care Unit)मे चिकित्सा भेल निम्नलिखित शिशुक आँखिकक पर्दाक जाँच अनिवार्य अछि :

1. गर्भ-धारणक 34 हफ्ता वा ओहिसँ पूर्व जन्मल शिशु, जकरा आनो रोग सबहक खतरा होइक वा सघन चिकित्सा भेल होइक।
2. जन्मक समय 2000 ग्राम वा ओहिसँ कम वजन
3. गर्भ-धारणक 34 हफ्ताक पछाति जन्मल शिशु जकरा आन रोग सबहक खतरा होइक.
4. शिशु-रोग चिकित्सक द्वारा समय-पूर्व (Preterm) मानल गेल शिशु

ROPक आँखिक जाँचक समय

1. ROPक हेतु शिशुक आँखिक पहिल जाँच जन्मक 25-30 दिनुक भीतर निर्दिष्ट छैक।
2. जँ शिशु जन्मक 25 दिनसँ पहिनहि अस्पतालसँ डिस्चार्ज होइत हो तं अस्पतालसँ डिस्चार्जसँ शिशुक आँखिक जाँच वांछित थिक।

शिशुक आँखिक जाँच अस्पतालक Neonatal Intensive Care Unit वा आँखि-विभागमे भए सकैत छैक। जाँचक परिणामकें तिथिक संग शिशुक केस-रिकॉर्डमे लिखल जयबाक चाही। जँ, जाँचक अनुसार शिशुक आँखिमे नुकसान करबा योग्य रोग (sight-threatening ROP) होइक, आ चिकित्सा आवश्यक होइक तं जाँचक 48 घंटाक भीतर लेजर द्वारा ROP क चिकित्सा आरंभ हेबाक चाही। संगहि, भविष्यमे शिशुक आँखिक पुनः जाँचक आवश्यकताक सूचना शिशुक माता-पिताकें उपलब्ध हेबाक चाही।

ROPक हेतु आँखिक जाँचक विधि

ROPक हेतु आँखिक जाँच सामान्य टॉर्चसँ असंभव अछि। ई जाँच आँखिक पर्दाक जाँच थिक। तें, जाँचसँ पूर्व शिशुक आँखिमे पुतलीक आकार बढ़यबाबला बूंद द' कए आँखिक पुतलीक आकार बढ़ाओल जाइछ। तकर पछाति आँखिक डाक्टर अथवा प्रशिक्षित तकनीशियन विशेष यंत्र-Indirect ophthalmoscopeक सहायतासँ आँखिक पर्दा-रेटिनाक-जाँच करैत छथि। जाँचक परिणामकें शिशुक केस रिकॉर्डमे तिथि आ समय सहित रिकॉर्ड कयल जाइछ। चिकित्साक आवश्यकता भेलासँ लेजरक द्वारा रेटिना विशेषज्ञ ROPक चिकित्सा करैत छथि। चिकित्सा कोना आ कहिया धरि हेतैक, से रेटिना विशेषज्ञ निर्धारित करैत छथि। ई सूचना माता-पिताकें देब आ अस्पतालक रेकॉर्डमे राखब अस्पताल / चिकित्सकक दायित्व थिक। जाहिसँ आवश्यकता पड़ला पर शिशुकें अस्पताल बजाओल जा सकय आ रोगक समुचित चिकित्सा भए सकैक।

सारांश

Retinopathy of prematurity (ROP) समय पूर्व जन्मल शिशु (Preterm birth) क आँखिक पर्दाक कठिन रोग थिक। ई रोग प्रत्येक समय-पूर्व शिशुकें नहि होइछ। मुदा, आँखिकें नुकसान करबा योग्य रोग (sight-threatening ROP) भेला पर दृष्टि बाधित भए सकैछ। Neonatal Intensive Care Unitमे खास कए ऑक्सीजन द्वारा सघन चिकित्सा, आ दोसर किछु शारीरिक रोगक संयोग Retinopathy of prematurity (ROP)क खतरा बढ़बैछ। तें, गर्भाधानसँ 34 हफ्ता वा ओहिसँ कम समयमे जन्मल, वा जन्मक समय 2000 ग्रामसँ कम वजनक शिशुक आँखिक रेटिनाक जाँच अस्पतालसँ डिस्चार्ज हेबासँ पहिने हयबाक चाही। शिशुक आँखिक रोशनीकें ROPक दुष्प्रभावसँ बचयबाक हेतु ई आवश्यक थिक। समय-पूर्व जनमल शिशुक (Preterm birth) बचबाक (survival)मे लगातार सुधारक कारण ई सूचना लोकहितमे प्रासंगिक अछि।

संदर्भ :

1. https://www.nhm.gov.in/images/pdf/programmes/RBSK/Resource_Documents/Revised_ROP_Guidelines-Web_Optimized.pdf accessed 15 Nov 2021

M. 9443655640



योगानंद पाठक वियोगीक दू गोट लघुकथा

पहरा

नव प्रशासनमे गाम सबमे पहरा बहुत कड़ा भ' गेल छलैक। राति दस बजेसँ भोरक चारि बजे तक लाउडस्पीकरसँ 'जागते रहो' के कैसेट जेना हरेक दस मिनट पर बाजि उठै। लाउडस्पीकर बहुत रास चौक चौराहा पर बैसा देल गेल। एकर अतिरिक्त सब मुख्य रस्ता पर सीसीटीभी कैमरा सेहो फिट क' देल गेल। गाममे बहुत दिनक बाद शान्ति छलैक। लोककें विश्वास छलैक जे सीसीटीभी लागि गेलासँ चोर पकड़ा जेबे करतै। यद्यपि रातिमे लोककें लाउडस्पीकरक चिकरब कने अखरैत छलैक मुदा लोक निश्चिन्त छल जे आब चोरि नहि हेतैक। शनैः शनैः लोक लाउडस्पीकर के आवाजक अभ्यस्त भ' गेल आ ओहिना गाढ़ निन्नमे सूतए लागल जेना रेल लाइनक कातक लोक सूतैत अछि।

किछु मासक बाद गामक चौकीदारकें एकटा चोरसँ भेंट भेलै। चौकीदार ओकरासँ अपन हप्ता मँगलकै तँ उनटे चोर शिकाइतिक स्वरमे बाजल जे 'तों सब तँ हमरा सबहक व्यवसाइये बन्द करबा देलहक। आब एतेक कड़गर पहरामे कोना कए हम सब काज सुतारू? तत्काल जँ नहियो पकड़ाएब तँ दू चारि दिनमे सीसीटीभी कैमराक जाँच भेलाक बाद जरूरे पकड़ा जाएब। तखन कोना कए तोहर हप्ता देबहु से तोंही बाजह'।

चौकीदार ओकरा कानमे किछु कहलकै। तखने चोर ओकरा हाथमे पाँच सौक नोट खोंसैत विदा भ' गेल। अगिला सप्ताहक भीतर गाममे अनायासे पाँच छओ ठाम चोरि भ' गेलैक। लोककें बड़ आश्चर्य लगलैक। चौकीदार गौआँकें दोष दैत कहलकै 'हम तँ अपना भरि सबकें जागि कए रहैक लेल चेतबैत रहलहुँ। आर हम कैए की सकैत छलहुँ?'

चौकीदारक बात अपना जगह पर ठीके छलैक। लोककें सीसीटीभी पर आस छलैक जे कोनहुना चोर पकड़ाइये जाएत। शिकाइति उपर तक गेलैक। जिला मुख्यालयसँ जाँच टीम गाम पहुँचल आ सीसीटीभीक रेकॅार्ड सबकें जाँच' लागल। ओकरा सबहिक आश्चर्यक कोनो ठेकान नहि रहलैक जखन देखलक जे सब कैमरामे खाली आकाशक तरेगणक चित्र आबि रहल छलैक। चोर कथी लेल पकड़ेतैक?

गुरुदक्षिणा

घर अएलहुँ तँ देखल जे तीनटा पैकेट पड़ल अछि।

जहियासँ हम पुरस्कार बटनिहार ओहि संस्थाक अध्यक्ष बनाओल गेलहुँ तहियासँ

लेखक सब द्वारा अपन किताब पठाएब नियमित भ' गेल अछि। लोककें बूझल छैक जे हम ने कोनो पैघ साहित्यकार छी आ ने साहित्य पढ़बामे कोनो रुचि रखैत छी। वाणिज्य शास्त्रक ट्यूसन आ साहित्यमे कोनो सम्बन्ध छैको नहि।

ओ तँ बूझू बुड़िबक गुड्डू हमरा पाछू लागि गेल जे सर, हम एकटा उपन्यास लीखल अछि से अहाँक नामे छपा दैत छी। ओकरा छपाइ के खर्चा नहि छलैक। हमरा एहिसँ कोनो सरोकर नहि, हम बहुत टारलियैक मुदा गुड्डू अपना जिद पर अड़ि गेल जे एकरा अन्यथा नहि लियैक, बस गुरु दक्षिणा बुझियैक। पत्नी सेहो लोभमे पड़ि गेलीह। हुनका लेल खाली ट्यूसनिया प्रोफेसरक पत्नी होएबसँ उपन्यासकार प्रोफेसरक पत्नी होएब बेसी नीक सामाजिक गौरवक रूप छलनि।

अस्तु, बूझू तीस हजारमे ओ उपन्यास छपि गेलैक। मुदा गुड्डू एतबे पर अपन गुरु दक्षिणा शेष नहि केलक। ओ उपन्यासक लोकार्पण लेल सेहो आयोजन केलक, शहरक अखबार सबमे ओकर समाचार छपबा देलकै आ जानि नहि कतएसँ कोन जोगार केलक जे महाराष्ट्रक सांगली जिलाक कोनो गामक एकटा अनाम मैथिल संस्था एहि उपन्यास पर हमरा एक हजार एकावन टाकाक पुरस्कार सेहो द' देलनि। चलू, तीस हजारक सूदि।

फेर गुड्डुएक जोगारक फल जे हमरा नवगठित कोसी-कमला-बलान ट्रस्टक 'गार्गी-मैत्रेयी पुरस्कार' लेल चयन समितिक अध्यक्ष बना देल गेल। की करू? किछु घटना एहन भैये जाइत छैक जाहि पर लोककें कोनो बस नहि चलैत छैक। भावी मानि स्वीकार करए पड़ैत छैक।

अस्तु, लेखक लोकनिक किताब सब आबए लागल। पहिने तँ पैकेट सबमे किताबे टा रहैत छल मुदा एक बेर देखल जे एकटा युवा लेखक किताबमे दस हजारक बियरर चेक सेहो घोंसिया देने छलखिन। मोनमे बड़ तामस उठल मुदा पत्नी कहलनि जे एहिमे अहाँक कोन दोख? जतेक समय ओहि किताबकें पढ़बामे लागत ओतेक समयमे ट्यूसनसँ जे कमाइ होइत ओ तँ उचिते अहाँक फीस हेबाक चाही। ओ तँ लेखक बुधियार छलाह जे अपने मोने चेक पठा देलनि, अहाँ माँगए तँ नहि ने गेल छलिएनि।

चलू ईहो स्वीकार कएल आ कोनहुना ओहि लेखककें अगिला खेपक गार्गी-मैत्रेयी पुरस्कार सेहो भेटि गेलनि। आब नियमित रूपें किताबक संग पढ़बाक फीस आबि रहल अछि। ओकर किछु अंश हम गुड्डूकें सेहो देब' लगलियैक अछि। गुरु दक्षिणाक रिटर्न गिफ्ट।

मो. 9831037532



बैकुंठ झाक चारिटा लघुकथा

देवदूत

पाठक जीक ई मास्टर स्ट्रोक रहल। कार्टून सोशल मीडियापर खूब वायरल भेल। पेट आ पीठ के जंजीरसँ बन्हैत ताला लटकल व्यंग्य चित्र लॉकडाउनक बीच भूख आ अभावक सटीक अभिव्यक्ति मानल गेल।

—महामारीक प्रसार रोकबाक लेल लॉकडाउनक निर्णय सरकारक विवशता छैक। नीक सँ लागू भ' जाइ त खतरा टलि जेतैक। तहन ... घरहिमे रहत लोक त व्यवसायक लॉकडाउन, आमदनीक लॉकडाउन ... ई सभ दुखद किंतु स्वाभाविक परिणति।

—मुदा मुंहपर जाबी कतेक दिन? पेटक लॉकडाउन कतेक दिन? दैनिक मजूरीवला सभकें बेसी समस्या ...

—से त छैके आ पाठकजी के बेसी चिंता ओकरे सबहक छनि। अपने छथि सरकारी नोकरीमे। प्रत्येक मास वेतन भेटबे करतनि मुदा सड़कक कात पथियामे तरकारी, फल, फूल आदि बेचनाहर सँ जे दैनिक वसूली करबैत छलाह ताहिपर लॉकडाउन भ' गेलैक।

—अहूँ भाइ ...

—इएह ने छैक नेतागीरी! अपन समस्या के जनताक समस्या बना क' संवेदनशीलताक देवदूत बनब। अखिल भारतीय नेता छथि। लाइक-कमेंट के कोन कमी? ओहि पथियावला बेचनाहर सबके एहन समयमे किछु सहायता करितथिन से कहाँ होइत छनि?

जरूरति

पाइ कटैत रहैए अहाँकें? एतेक तरकारी अछिए घरमे त आर किनबाक कोन प्रयोजन छलै एखन?

—कतेक रौद छै से देखै छिऐ?

—रौद सँ की भ' गेलै?

—एतेक गुमारमे, एहन दुपहरियामे जँ माथपर छिट्टा ल' पचास-साठि सालक कोनो बुढ़िया टोले-टोल बौआय रहलैए त कने सोचू जे ओकर समान बिकेनाइ कतेक जरूरी छै!

आदरणीया

नौशाद बैंकमे टहलुआ अछि।

पुरुष कर्मचारी सभ ओकरा नामसँ बजबैत छैक आ महिला कर्मचारी सभ भैयाक संबोधनसँ।

किरण ओहिठाँ लिपिक अछि। न'वे भर्ती भेलैए। संध्याकाल अवकाशक बाद किरण जहन बैंकसँ जाय लागल तँ नौशाद निगमवला पार्कमे प्रतीक्षा करै लय कहलकै जे ओ किरणसँ किछु गपशप करय चाहैत अछि।

—की बात?—किरण पुछलक।

—पार्कमे अबैत छी, ओतहि गपशप करब।

—किछु दिनसँ हम अहाँक नजरिमे परिवर्तन देखैत छी, से हमरा नीक नहि बुझाइत अछि। हम अहाँके भैया कहितो छी आ मानितो छी।

—त की भेलै? हमरा सभमे ई सभ चलैत छैक।

—मुदा हमरा सभमे ई सभ नहि चलैत छैक। एक बेर जकरा भाइ मानि लेलिऐक ओ सदति के लेल भाइये होइत छैक।

—तहन?

—तहन की? तहन अहाँ हमर भाइ छी —आदरणीय भाइ आ हम अहाँके आदरणीया बहिन।

चारण

—गामो सबमे भाट—चारण कहाँ देखाइत छै आब!

—हमरा गाममे एखनहुँ छैक।

—से सएह।

—की कहलिऐ?

—आब सब पार्टी ने पकड़ि लेलकैए!

मो. 9131432142



मिथिलेश कुमार झाक तीनटा लघुकथा

निचोड़

एकटा संगोष्ठीक विषय छल 'मैथिलीक विकास आ हमर सभक कर्तव्य'। आयोजक संस्था वर्ग, क्षेत्र, संप्रदाय आदिकें ध्यानमे राखि सात गोट वक्ता आमंत्रित कएने छला। विचारगोष्ठी समय पर आरंभ भेल। पहिल वक्ता अपन वक्तव्य आरंभ कएलनि—'...बेसीसँ बेसी मैथिली सिनेमा बनय। मैथिली चैनल आ दैनिक पत्र आरंभ हो। मिथिलामे मात्र मैथिली बाजी आ बाहरमे सेहो मैथिलसँ मैथिलीएमे गप्प करी...तखने वक्ताक मोबाइलक घंटी बजलनि। वक्ता—'हेल्लो, अरे सेमिनार में हैं...याद है...सब्जी भी लेते आऊँगा...रखो अभी...'सरकार पर भाषाक विकासक लेल जोर दी... ।' सभ वक्ता एहिना एक पर एक सलाह देलनि। अंतमे अध्यक्ष महोदय अपन अध्यक्षीय निचोड़ प्रस्तुत करैत बजलाह—'...सम्मानित वक्ता लोकनि जे विचार प्रस्तुत करैत गेलाह, से सबटा महत्वपूर्ण आ भाषाक विकासक लेल अत्यावश्यक। मुदा, मैथिलीक स्थान सबसँ पहिने समस्त

मैथिलक हृदयमे आ तकरा बाद निज घरमे देल जाए। हमरा बिसबास अछि जे तकरा बाद सबटा बाट अपने मने फुजि जाएत।'

नाङरि

छओ मास पहिने साफी जी किरानी पद पर बहाल भ' क' एहि ब्रांचमे आएल छलाह। ओहि ठाम ब्रांच मनेजर रहथि महतो जी। ई दुनू गोटे मैथिल आ एक्कहि जिलाक लोक रहथि से एहि महानगरमे दुनूमे भरि ठेहुन भरि छाबा होइत स्वाभाविके देरी नहि भेल रहनि।

एक दिन लंच करैत काल साफी जी कहलखिन महतो जीकें–

'सर, हमर तरकारी चिखबै कनी?'

'हँ्हँ, आर नीक आ हमरो तरकारी खाउ।

दुनू गोटेकें दू-दू तरकारीक स्वाद भेटत।'

'सर हम तँ कए दिनसँ नियारैत छलहुँ, लेकिन पुछबाक हिम्मत नै होइ छल।'

'से कियए यौ?'

'गाममे तँ हम छोट लोक छिऐ ने!'

'अरे छोड़ू ने, ई गाम नै ने छै।'

'हँ सर, से तँ ठीके। आ एत्तहु अपना दिसका बाभन थोड़बे हमरा घरक अन्न-तीमन खाएत! ओकरा सभकें तँ आरो लगै छै जेना बड़का नाङरि लटकल होइ। दुनिया कहाँसँ कहाँ गेल आ ई सभ एखनो ओत्तहि ठाढ़ अछि।'

'परिवर्तन आबि रहल छै साफी जी। चिन्ता नै करू।'

दुनूक मित्रता गाढ़ होइत गेलनि। एक दिन लंच करैत महतो जी पुछलखिन–

'साफी जी बियाह करबै?'

'ईहो कोनो पूछ' वला बात छै! अगिला सुद्धमे मन बना रहल छिऐ। हमर बाबू तँ कहियासँ ने तैयार छथिन।'

'कतहु गप्प चलैये की? दहेजो लेबै?'

'नै, दहेज नै लेबै। लड़िकी शिक्षित हेबाक चाही। आ एखन तक गप्प नै छै कत्तौ।'

'तँ एगो लड़िकी छै एही ठाम, बुझू जे हमरा डेरासँ कनिके हटि क'। हमर बेस परिचित अछि। अपने मैथिले छै। पढ़ितो छै बीकममे। देखमे सेहो बेजाए नै। की विचार अहाँक?'

'ओकर बाप की करै छै?'

'चप्पल बनबै छै, कंपनी सभक ऑर्डर पर।'

'बापक नाम?'

'तुलसी राम।'

'नै यौ सर, ओ तँ हमरासँ छोट जाति छै। हम कोना बियाह करब ओकरासँ!'

महतो जी अवाक्–हिनको नाङरि तँ लागले छनि!!

धन, मन आ तन

ओहि दिन कलावतीक बियाह रहै। भरि गाँ सभक ठोर पर ओकरे चर्चा। केओ नीक कहै, केओ बकलेल, केओ बुधियार, केओ चलाक तँ केओ धूर्त। एकटा गरीब गृहस्थ उग्रकांतक बेटी कलावती। रूप, गुण, बुद्धि, विचार, व्यवहारसँ संपन्न कलावती। तीन बहीनमे सबसँ छोट आ एकमात्र भाएसँ जेठ कलावती। बापक नचारीसँ झमारलि कलावती।

मुदा कलावतीकें ई की फुरेलै, कोना फुरेलै ताहि लए सब दाँते आँगुर कटइ। बेसी लोकक कहब रहै जे धन-वित्त देखि कए अन्हरा गेलि कलावती। नहि तँ ओहन बताहक आँगुर धरब किअए सकारितै!

पछिला मासमे कलावती ममिऔतक बियाहमे ममहर गेलि छलि। ओकर मामाक साढ़ू सेहो आएल रहथिन सपरिवार। हाथ फोलि खर्च कएने रहथिन। साढ़ुक बेटी तँ बेटिए ने भेलनि आ छथिहो बेस सुखितगर। आ से किअए ने रहताह? एक तँ पुरना इंजीनियर आ ताहू पर सरकारी नोकरी। दिल्ली, पटना, दड़िभंगामे मारिते जमीन आ मकान। गाममे बीस बीघासँ लकधकमे खेत। गाछी-बिरछी आ पोखरि-झाखरि से फराक। सामाजिक प्रतिष्ठा, नाँ, यश आदि सेहो बड्ड पसरल। मुदा एकटा बड़का कमी। एक्केटा बेटा आ सेहो निछच्छ बताह।

आ से इंजीनियर साहेब गँओ ताकि उग्रकांत जी लग कलावतीसँ अपन बेटाक बियाहक प्रस्ताव राखि देलखिन। उग्रकांत जीकें अनसोहाँत तँ बड़ लगलनि मुदा, एक तँ ओहन बड़का लोक आ दोसर–सारक साढ़ू। मुह तोड़ि क' कोना किछु कहितथिन! तैं बातकें टारबाक लेल कलावतिए पर फेकि देलखिन। इंजीनियर साहेब अपन साढ़ूकें पटियओलनि तथा साढ़ुक परिवारक संगहि कलावतीकें दड़िभंगासँ दिल्ली धरिक अपन समस्त संपत्ति देखा-घुमा देलखिन। कलावतीकें चकबिदोर लागि गेल रहै। धनक अमार देखि लोभा गेलि आ बताहक पल्ला रहब गछि लेलक। की, तँ–कनी बताहे छै किने, धरि एतेक टा राजक रानी बनबाक सौभाग्य तँ भेटबे करत। एहि दुनियामे गरीबक कतहु कि मोजर छै! पाइ ऐ तँ सब्ब किच्छु!

प्रायः तीन बर्खक बाद एक दिन पत्नी कहलनि–बुझलियै यौ, कहाँदन कलावती दिल्लीमे फँसरी लगा आत्महत्या क' लेलकै!

कनी कालक लेल तँ हम वाकहीन भ' गेलहुँ। फेर कहलिअनि–आत्महत्या तँ ओ बियाहसँ पहिनहि क' लेने छलि, एखन देहकें हतलक अछि।

96818 50557



धीयापूता

एहि स्तम्भक अन्तर्गत कथाकार-अनुवादक वैद्यनाथ झाक एक बालकथा 'भुतहा गाछी' प्रस्तुत अछि। बालकथाक बहन्ने आजुक जीवन, पर्यावरण-प्रदूषण पर ई एक सधल आ नीक कथा अछि। हुनक कल्पनामे नवसँ नव आ सार्थक बात सब अबैत रहैत छनि, जे आह्लादकारी थिक।

भुतहा गाछी

वैद्यनाथ झा

कुमर, मुन्नू आ विनोद बीरपुर गामक विद्यालयमे छठ्ठा क्लासमे पढ़इत छल। तीनू एक्के गामक बशिंदा छल। ओकर सभक स्कूल आ गामक बीचमे एकटा आमक बहुत पैघ गाछी छलै। छुट्टीक बाद विद्यार्थी सभ गाछीमे आबय, खेलय-कूदय, खूब तुफान तोड़य। गाछीक ओगरबाह एकटा बूढ़ा छलाह। ओ छलाह तँ नीक ओगरबाह मुदा ओइ अगत्ती छौड़ा सभक आगू ओहो त्राहिमाम् करथि।

ई कथा फागुन मासक अछि।

रौद ओतेक तिक्ख नहि छलैक। हवामे सिहकी छलै। गाछीमे गाछ सभ खूब मजरल छलै। कतेक गाछमे तँ टिकुला सेहो आब' लगलै। मज्जरक गमकसँ गाछिएटा नहि, समुच्चा इलाका गमक' लगलै। कोइलियो अपन तान टेरय।

आइ कुमर दुनू मित्र संगे गाछी आयल। हँसी-ठहक्का, चुटुक्का। क्रिकेट चललै। कने दम धर' लेल एकटा गाछ तरमे बैसि गेल। गप्प शुरू भेलै।

कुमर बाजल—'दोस, एहि बरख तँ आमे आम छैक। इलाकामे एकहुटा गाछ नहि जे मजरल नहि हुअय।'

मुन्नू बाजल—'हँ कुमर, से तँ ठीके। आब तँ टिकुला आयब सेहो शुरू भ' गेलै।'

एतबेमे, नहि जानि कुमरकें कि फुरेलै जे ओ ढेपा लए क' सामनेबला गाछ दिस पड़ायल। ओ मालदहक गाछ छलै, खूब झमटगर गाछ। ओकरा पाछू मुन्नू सेहो दौगल।

कुमर एकटा ठारि पर मज्जरक झोंझिमे किछु टिकुला देखलक। ओ निशाना साधिक' ढेप चलोलक। टिकुला खसलै आ ओ उठब' लेल दौड़ल। जखन ओ गाछक नीचा गेल तँ ओकर हाथ पर दू ठोप पानि सन किछु खसलै। कुमर ऊपर तकलक तँ ओहि झोंझिमेसँ एक जोड़ा आँखि देखा पड़लै। कुमरक मुँहसँ स्वतः शब्द निकललै—'ओह, तँ एहि आँखिसँ नोर खसलैय।'

कुमर पुछलके—'तों के?'

उत्तरमे एकटा मैना उड़ैत आबि नीचा उतरल। आ मनुक्खक आवाजमे बाजल। 'हम एकटा गाछक भूत छी।'

तीनोक मुँह सन एकसँगे निकललै—'अँय! गाछोक भूत होइत छैक?'

ओ भूत-मैना बाजलि—'कोनो नीक, हरियर गाछकें असमय काटि देबै तँ भूते न बनतै?'

विनोदकें हंसीबला गप फुरेलै—'सोझ गप, कोनो गाछकें काटि देल जेतै तँ ओ वर्तमानसँ भूते न भ' जेतै।'

भूत—'मैना बाजलि-किएक नहि? काल्हि साँझ एतै आउ।'

मुन्नू बाजल—'वाह, की फंटास्टिक आइडिया भाइ!! सहमत।'

भूत मैना बाजलि—'आ गाछ-वृक्षक भूत एहन गाछीमे नहि, भव्य, सुंदर स्थान पर रहे छै। दिन-राति इजोतसँ नहायल। सब किछु आटोमेटिक। ओत'सँ अयबाक मोने नहि करतै।'

आब तँ तीनूकें गाछ-वृक्षक भूत केर गाछी देखबाक उद्वेग उठलै। ओ सब कहलकै-हमरा ओ गाछी देखेबें?

ओ भूत-मैना बाजलि—'किएक नहि। काल्हि साँझ एत' आउ।'

तीनूक मोनमे बड्ड उत्सुकता रहै जे देखी गाछ-वृक्षक भूत ओहन आलीशान जगह पर किएक रहैत अछि?

अगिला दिन साँझखन कुमर, मुन्नू आ विनोद ओहि आमक गाछीमे जुमल आ कने कालक प्रतीक्षाक बाद ओ मैना तँ नहि आयलि मुदा एकटा नौ-दस बर्खक कन्या अवश्य आयलि—गुलबिया लॉन्ग फ्रॉक, छोट छोट सीटल केश, हेयर-बैंड माथ पर, गरमे लाल मोतीक माला। लगमे आबि बजलै—'जखन हम कहब, अहाँ लोकनि आँखि मूनब आ जखन कहब, खोलब। हम जादूसँ पहुँचा देब।' कुमर बाजल—'ओके'।

'बेश, आँखि मूनू'। तीनू ओहिना केलक। दू मिनट बाद कहलकै—'खोलू'।

'घोर आश्चर्य! ई तँ बहुत विशाल मॉल छैक। आ सड़कक दोसर कात एतेक पैघ पॉश कॉलोनी छैक। मॉलमे शीशाक आटोमेटिक दरबज्जा सभ, एयरकंडीशण्ड मॉल।

मुन्नू पूछलकै—'अंय है, तोरा हमहीं भेटलियौ ठकै लेल? बकलेल बुझने छें? मॉलकें गाछी कहै छें?'

'एना किएक बजै छी? एहि जगह पर पहिने बड्ड घनगर जंगल छलै। पचास, सय-सय फीट केर गाछसँ भरल छलै जंगल। किछु लकड़ीक बेपारी, किछु सरकार, किछु कॉलोनी लेल जमीन लेब' बला ठीकेदार सब मिलिक' ई जंगल समाप्त क' देलकै। ओ कटल गाछ सब भूते न बनतै? दस दस तल्ला मकानक कॉलनी। एतुक्का लोकक मोनमे क'ल नहि छै। बेचैन रहैय। दिन राति निन्न नहि पड़ैत छै। सुतलोमे हाय पाइ, हाय

पाइ। ठोर पर मुस्की आ हृदयमे आगि। ई गाछ सभक श्राप थिकैक।' ओ कन्या बाजलि।

विनोद बजलै–'स्कूलमे साइंस सर सेहो कहैत छलखिन जे जंगल कटने ओतुक्का खूंखार पशु सभ गाम आ शहर दिस अबैत छैक, लोककें, माल-जालकें खाइ छैक, वायरसबला रोग पसारै छै।'

'बेश, आँखि मूनू।'

ओ सब आँखि मुनलक।

'खोलू।'

खोललक। आब ओ चारु एकटा पेपर मिलक सोझमे ठाढ़ छल। कुमर आ दोस सभक आँखिमे जिज्ञासा उठलै। ओ कन्या बाजलि–'एतय पहिने बांसक विशाल जंगल छलै। सब कटा गेलै। आब एतय कागदक कारखाना, गत्ताक कारखाना आ कतोक रास मिल सब छैक।'

मुन्नू पूछलक–'एहन गाछी सब पहाड़ो पर छैक?'

कन्या बाजलि–'किएक नहि? पहाड़ो पर जंगल छैक। कतोक रास नदी बहैत छैक। ओत' जंगल कटाक' टूरिस्ट होटल बजार, बान्ह बनैत छैक। कतेक नदी सूखा गेलै। पहाड़ पर घूम' जाउ, आब धाह फेकइत छैक। पहाड़ सभ पर मारिते रास एहन चेन्हासी भेटत जाहीसँ बुझायत जे एत' कहियो कल कल नदी भेटै छलै।'

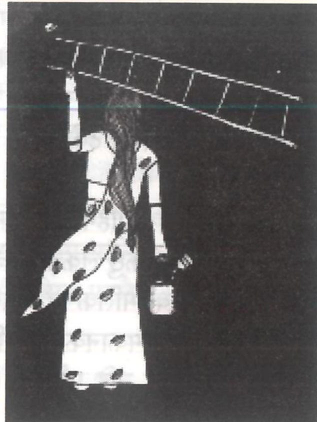
चारु उदास छल। निःशब्द।

कने काल बाद कन्या बाजलि–'आँखि मूनू।'

'खोलू'। कुमर, मुन्नू, विनोद आँखि खोललक।

आब ओत' ओ कन्या नहि छलि। यैह तीनूटा ठाढ़ छल एखनो मौन।

भारी डेगे अपन गाम दिस बिदा भेल। भरि रस्ता केओ ककरोसँ किछु गप्प नहि केलक।



चिट्ठी-पतरी

'भारती मंडन'क पंद्रहम् अंक 'मिथिलांक विशेष' जगजीत सिंहक गाओल गजल 'ओ कागज की कश्ती बारिश का पानी...' जकाँ बाल्यकालक मधुर स्मृति सरोवरमे ठाढ़ क' देलक आ हम सराबोर भेल पतवार खेबैत आचार्य सुरेंद्र झा 'सुमन' द्वारा संपादित मिथिला मिहिरक 'मिथिलांक' (1935) लग पहुँचि गेलहुँ। अइ अप्रतिम दिव्य अंकक पन्ना हम प्रकाशनक बीस बरखक बाद उनटौने हैब आ हमरासँ ओहि अंककें ततेक स्नेह भ' गेलैक—जे एखनो धरि हमर अंकमे पवित्र धरोहर बनल सुशोभित भ' रहल छथि आ बीच-बीचमे आवासीय स्थल बदलैत रहलाक कारण कोनो कार्टनमे सेहो सुति रहैत छथि—आ समय पर जखन नै अभरै छथि, तँ हुनक बिना मोन औनाइ लगै अछि—एहने सन मनःस्थिति मे जखन अहाँक रजिस्टर्ड डाकसँ ई मिथिलांक पहुँचल, तँ विषय-वस्तु देखि झूमि उठलहुँ।

अइ 'मिथिलांक विशेष'मे मुख्य पुलक एप्रोच आ एंड पर आदरणीय भीम भाइक आरोह आ अवरोहक स्मूथ (Smooth) ट्रेजेक्टरीक आलेखन संपूर्ण संरचना कें स्वतः सीमलेस 'टच' प्रदान केने अछि—जाहि लेल कुशल संपादन सहित सभ रचनाकार आ पूरा 'भारती मंडन'टीम हार्दिक बधाई स्वीकार करी।

लगैए, अहाँ कें, भीम भाइ, हमरा विषयमे तेहेन परिचय देलनि जे हमरा अहाँ 'विद्वान बुझ' लगलहुँ—हम विद्वान-तिद्वान नहि छी—हँ विद्वत जनक कुलमे जन्म भेल, तँ 'माँ मैथिली'क द्वारपाल' अहाँ हमरा बुझी। जेना भीम भाइ मिथिला मिहिरक प्रकाशन अवधिक विषयमे लिखने छथि जे 1909 सँ 1954 धरि दरभंगा सँ, पुनः 1960सँ 1989 धरि पटनासँ मुख्यतः साप्ताहिक रूपें, प्रकाशित होइत रहल—'तीन फूके चानी' पता नै, हमर दिवास्वप्न जे 'मिथिला मिहिर'—दैनिक अखबारक' प्रकाशन शुरू होअए—से अइ जन्ममे पूरा हैत कि नहि? 'संघे शक्ति कलियुगे'—पर हमर पितामह पं. जीबछ मिश्र आजीवन प्रयास करैत रहलाह आ विफल रहलाह। छोटकी बहीन (श्रीमती नीरजा 'रेणु') सहित हमर सभ गार्जियन सभ हमरा मैथिलमे लीखै ले प्रेरित करैत रहै छथि—हमरा 'नेम-फेम' नहि चाही, मैथिली रचना-संसार मे अहाँ आ भीम भाइ सन विशुद्ध साहित्य-सेवी—जिनका संपादन, लेखन आ प्रकाशनक एतेक पैघ सारस्वत-साधनाक अनुभव अछि, की 'मिथिला मिहिर' दैनिक अखबार निकालबाक सपना साकार क' सकै' छी?

नागेशचंद्र मिश्र

चिंतन मानवीय स्वभाव थिक। आध्यात्मिक चिंतन दर्शन कहबैछ आ सामाजिक बोध साहित्यसँ अभिहित होइत अछि। इएह चिंतन मानवकें अन्य प्राणीसँ अलग आ

विशिष्ट बनबैत अछि। संसारक ओ पदार्थ वा चिंतन जे गुणकारी, मंगलमय, लाभप्रद वा आह्लादकारी प्रतीत होइत अछि, तकर परीक्षण वा मूल्यांकन केओ ज्ञानी वा द्रष्टा वा वीक्षक-परीक्षके क' सकैत छथि वा क' पबैत छथि। तत्पश्चाते कोनो चिंतन परिष्कृत, व्यवस्थित, संतुलित वा संयमित संभव वा ग्राह्य/स्वीकार्य होइत अछि वा हेबाक चाही। एही ठामसँ कोनो पत्र-पत्रिका वा ग्रंथक समीक्षा वा परिचयक प्रबोधन प्रारंभ होइत अछि जे अनुरक्ति वा विरक्तिसँ विलग वा वीतरागक दृश्य आ दृष्टि उत्पन्न करैत अछि। ओहि दृष्टिमे साहित्यकारक मनोभाव/ परिस्थिति, प्रकाशक-संपादकक तत्त्वबोध, रचनाक स्वरूप—अंग, उपांग, तत्त्व, तथ्य, गुण-दोष, प्रभाव-प्रवाह, शब्द-वाक्य सामर्थ्य आदिक योगदान सर्वाधिक होइत अछि आ ओही आधार पर ओहि पोथी वा पत्रिकाक व्यक्तित्व वा स्वरूपत्व निर्माण संभव भ' पबैत अछि। स्वरूपत्वसँ अभिप्राय साहित्यमे युगधर्म वा युगचेतनाक समावेशसँ, प्रतिष्ठित आधार वा सांस्कृतिक पाथेयक सन्निवेशसँ आ युगदृष्टि वा भविष्यक भाव प्रवेशसँ बूझल जा सकैत अछि। तकरे साहित्यक गुणतत्त्व सेहो कहल गेल अछि।

एही गुण तात्त्विक परिस्थिति आ परिवशमे 'भारती मंडन'क पंद्रहम् अंककें पढबाक-गुनबाक चेष्टा कएल। पत्रिकामे की अछि वा की भ' सकैछ (?) ओ एकर मुखपृष्ठ पर छपल दस टा साहित्य दधीचि—सुनीति-विवेकानंद-हरेकृष्ण-प्रदीप-नगेंद्र कुमार-अमरेश-भारद्वाज-मौन-सुमन-रेणुक' जीवंत-बजैत चित्रसँ बुझल जा सकैत अछि अर्थात् एहिमे साहित्यसँ संधान धरि, रागसँ विराग धरि, सृष्टिसँ सृजन धरि, वाद-प्रतिवादसँ संवाद धरि, युग चक्रसँ युग परिवर्तन धरि, विचारसँ व्यवहार धरि आ अंतत: इतिहाससँ भविष्य धरिक विषयक प्रबोधनक अभिव्यक्ति उपरहिमे कएल गेल अछि। 391 पृष्ठक ई मैथिली पत्रिका (यद्यपि अनियतकालीन) स्वयंमे पत्रिका नहि, एक विचार वीथिका थिक, एक कृति ग्रंथ थिक। पृष्ठ-10सँ पृष्ठ 114 धरि मिथिला मिहिर मिथिलांकक' भाग थिक वा कथाधारा (111)क अंग थिक—पर चर्चा करब अनपेक्षित हैत। तत्कालीन विद्या वारिधि लोकनिक अजस्र साहित्यधारा थिक ओ। पंचानन मिश्रद्वारा शोधित 'विभूति गाथा' अंतर्गत नगेंद्र कुमारक साहित्यिक कृतित्वसँ परिचित कराएब वस्तुत: एक संगे कतेक सत्यकें उद्घाटित करैत अछि—माटि तर झांपल सत्य, सत्यसँ मुँह मोरल सत्य, रहस्यमे लपटल सत्य। सत्यक उद्घाटने करब भारती मंडलक यश-कीर्तिक निमित्त काफी थिक। प्रोफेसर साहेब आलेख मे—'केतना दिन बान्ह के पामर मिलल हैन' जा 'बाइली कतेक छन, गाममे इज्जत तऽ परफेसरसँ नहि पैसासँ हेतैन...' कुमर द्वारा एहि कालजयी विचारक प्रस्तुति अनुपम थिक। तेरहो कथाक स्वरूप तेरह रूपक थिक—कथ्यात्मक-तथ्यात्मक-पद्यात्मक-भावात्मक-रूपात्मक-रहस्यात्मक-रंगात्मक...।' बढ़िया लागल। प्रो. महेंद्रक आत्मसंस्मरणमे आइसँ छओ युग पहिलुका युगधर्म—सहजता, सहवाद, गरीबी, अशिक्षा, शिक्षाक प्रति ललक, परस्पर प्रीति,

सामाजिक औदार्य आ गुरुक प्रौढ़ प्रतिष्ठाक सजीव चित्र सम्मुख भ' पबैत अछि। ई संस्मरण एकटा इतिहास बोध सेहो थिक—कोशी, चीनी मिल, बांध निर्माण, सबडिवीजनसँ जिला धरिक गठन-संगठन, सुपौल नगर आ नगरपालिका, विलियम्स स्कूल, गीत संगीत-खेल-कूद, साहित्य सृजन आ चर्चा, मेला आ मेलाक विलक्षण उत्खनन सरिपहुँ ओ इतिहासक रेख थिक। एहिना मंत्रेश्वरजीक पदयात्रा तँ वस्तुत: साहित्यिक पदयात्राक संग राजनीतिक जातियात्रा-द्वेष यात्राक गाथा सेहो थिक, संगहि हिनक पदयात्रा साहित्यिक संकल्प आ भाषा अनुरागक प्राकट्य थिक। शोभाकांत जीक संस्मरण केवल देखल-बुझल घटनाक स्मरण मात्र नहि थिक, अपितु यात्रीजीक जीवनक आवेग-संवेग-प्रवेगक प्रेरक स्मृति शेष थिक। प्रेरणा एहि बातक जे जँ जीवन धारक प्रवाह मात्र नहि हो, सरगमक मात्र सुरगम नहि हो, भोगसँ निर्मित भोग धरि जेबाक मात्र मार्ग नहि हो; अपितु जँ जीवन अधुनातन रेखा खींचबाक संकल्प हो, साधन आ संवेदनाक अभिव्यक्तिक प्रकल्प हो, दीप्ति आ प्रदीप्तिक कीर्त्तिमान स्थापित करबाक उत्सीय अभिकल्प हो...तँ 'भवसागरमे वैद्यनाथ'क स्नान अनिवार्य बुझाइत अछि। स्मृतिशेष हरेकृष्णक प्रति वैयक्तिक वा साहित्यिक उद्गार नीक लागल, परंच हिनक व्यक्तित्व-व्यक्तिमत्व-कृतित्व आ प्रकृतित्वक समग्र चर्चाक अभाव बुझ'मे आएल। हिनक जीवनक साहित्यिक-राजनीतिक-पारिवारिक-शैक्षिक-आर्थिक-मनोवैज्ञानिक भटकाव वा टकरावक चर्चासँ बाँचक चेष्टा सर्वत्र बुझ'मे आएल।

जत' धरि कविता प्रसंग अछि तँ रमानाथ बाबू कहने छथि जे कविता वैह भेल जे श्रोतामे वनिता जकाँ आतुरता निर्माण करए। विनोद जीक कविता—'विकास भेलैए'मे ओहि तत्त्वक समावेश केओ देखि सकैत अछि। डॉ. कीर्त्तिनाथ झा जी क' उक्ति—'डाक्टरकें रोगक विश्वकोष नहि मानू' वस्तुत: बहुअर्थी थिक। डाक्टरकें अपन ज्ञान प्रतिभाक निरंतर मूल्यांकन करैत रहबाक चाही, संगहि आम जनकें सेहो हिनकामे देवताक छवि देखबाकसँ परहेज करबाक चाही। किछु साक्षात्कार सत्यक उद्घाटन छल तँ किछु झांपल। प्रो. भीम बाबूक पत्र-वेदना दुखी केलक। पत्रिका नामानुकूल थिक।

विनय कुमार चौधरी

भारती मंडन केर मिथिलांक विशेषांक भेटल। मिथिलांक विशेषांक मैथिली खंड विशिष्ट थिक; कारण केवल मिथिलांक ऐतिहासिक आ ओहि अनेक रचना एखनो प्रासंगिक छैक। सर्वश्री भीमनाथ झाजीक आलेखसँ मिथिलांकक हिंदी खंडक सामग्रीसँ सेहो परिचित भेलहुँ। एहि अंकमे साहित्यक विवेचनासँ ल' कय साक्षात्कार धरि, आ स्मरणसँ ल' कय संस्मरण धरि सब किछु अछि। सबटा उत्तम, उत्तम 'संपादकीय वृत्ति' तथापि, मिथिलांक विशेषांकक कथा-समवेत हमरा विशेषत: आकृष्ट केलक। अनेक कथामे नारी लोकनिक बदलैत सोच आ संकल्प, दुनूक संकेत देखबामे अबैछ। अजुका नारी जीवन-यापनक चुनौती ओ स्वीकारैत छथि, अपन मूल्यक प्रति प्रतिबद्धताक हेतु

नव 'दृष्टि'क उदाहरण सेहो बनैत छथि। सर्वविदित अछि, हमरा लाकनिक समाजमे बेटा पंथक पाकड़ि बूझल जाइत छथि। बेटी एखन धरि पराया धन छलीह। किंतु, आइ कोनो हीरादाइ जँ अपन बेटीकें अपन उत्तराधिकारी बनबैत छथिन, तँ ई उचिते थिक।

सदायसँ जाति-संप्रदाय, लिंग, आ वर्ण समाजमे मनुष्यकें मनुष्यसँ फूट करैत एलैये, सब कालमे अपना-अपना स्तर पर मनुष्य एहि आरिके तोड़ैत आबि रहल अछि, मुदा, जखन जाति-संप्रदायक विभेद पर प्रतिदिन टिपकारी आ नव-नव रंगक पोचारा कयल जाइछ, विरोधी विचारकें बोकियाओल जाइछ, तँ, सामाजिक सत्यकें कहबा लेल हिम्मत चाही। एहि हेतु श्रीमती रोमिशाक कथा-भय-हुनक सत्य कहबाक आग्रहकें रेखांकित करैछ। ई शुभ संकेत थिक।

हमरा विचारें मैथिली साहित्य परिवर्तनकें अकानबा कनेक विलंब करैत अछि। तें, मैथिली साहित्यमे 'Me too' वा 'Black life Matters'क ध्वनि कदाचित भेटत, किंतु, साहित्य केवल समाजक दर्पणे टा नहि थिक, साहित्य समाजमे नव चिंतन सेहो अनैत अछि। ताहि हेतु 'खखास' आन ठाम होइत मुहिमक आहटि मथिलीमे अनंत अछि।

देश आ विश्वक आन भाषाक साहित्यक अनुवादसँ साहित्य समृद्ध होइछ। 'भारती-मंडन'मे हिंदी कविताक मैथिली अनुवादक प्रकाशन एकरा रेखांकित करैत अछि। कविता खंडमे मुख्तार आलमक एकटा अदृश्यक कृपा स्वागत-योग्य अछि।

संस्मरणकार, व्यक्ति, समाज, गाछ-वृक्ष आ ओहि लोकक इतिहासकार थिकाह, जकर चर्चा मुख्यधाराक इतिहास मे नहि होइछ, सर्वश्री महेंद्रक संस्मरण एहने इतिहास थिक। हमरा विश्वास अछि, भविष्यमे श्री महंद्र जीक संस्मरण वृहत् पोथीक रूपमे हमरा लोकनिक आगाँ आओत।

समाजमे जन्म आ मृत्यु स्वाभाविक थिक। किंतु, हमर गुरु दिवंगत डाक्टर मोहन मिश्र कहथि, 'Some lives are more precious than others'। ताहि अर्थमे हरेकृष्ण जीक मृत्यु समाज आ साहित्यिक बड़का हानि थिक। हम एक बेर हुनक अनीसाबाद डेरा पर गेल रही। प्रकाशित स्मरण सबसँ, एकटा साधारण मकानक पहिल मंजिल पर, स्व. हरेकृष्ण झाक एक कोठलीक आवास, हुनक सरल स्वभाव, आ एकांतवासी छवि मोन पड़ि आयल।

अंतमे एकटा सुझाव—विदेशमे मैथिलीक पाठक छथि, जँ, 'भारती मंडनक'क Pdf फॉर्म उपलब्ध होइत, तँ, विदेशोमे 'भारती मंडन' पहुँचि सकैछ। संगहि, रचनाकार लोकनिक email-Id देलासँ हमरा लोकनिक संपर्क बढ़त।

कीर्तिनाथ झा

'भारती मंडन'क अंक 15 मार्च, 2021 विशेषांक जकाँ सजल-धजल, केदार भाइक सौजन्यसँ भेटल, हर्षित भेलहुँ। विलंब त' भेल मुदा अंक भेटि रहल अछि, से प्रसन्नताक बात थिक। एहि लेल संपादक आ संस्थापक सह प्रबंधककें विशेष बधाइ।

'धराउ' ज्ञानवर्धक आ मिथिला-मैथिलक लेल गौरवक स्तंभ अछि। अतीतसँ प्रेरणा ग्रहण करबा लेल अत्युत्तम प्रयास। हरिमोहन झाक पाँच पत्र, मात्र पत्रे नहि अपितु जीवनक यथार्थ अछि। पंचानन मिश्रक आलेख दमगर अछि।

'कथा समवेत'मे एकसँ एक नीक कथा संगृहीत भेल अछि जे संपादकीय दृष्टिकें उजागर करैत अछि। कमला चौधरी, वीणा ठाकुर, सुस्मिता पाठक, रोमिशा आ प्रेम चौधरीक कथा अपन कथ्य आओर शिल्पक लेल जानल जाएत। स्तंभ 'अयना', 'विविधा', आ 'दृष्टि' बेस प्रभावित करैत अछि। उदयनाथ झा 'अशोक'क शोधपूर्ण आलेख प्रशंसनीय।

'स्मरण'क माध्यमे यशः शेष हरेकृष्ण झाक जीवन, साहित्य आ हुनक चिंतनसँ परिचित भेलहुँ। विलक्षण व्यक्तित्व। प्रायः सब लेखक अपन विचार, अपन अनुभवकें हुनक जीवनक विविध संदर्भमे नीक जकाँ अभिव्यक्त कयलनि अछि, जे हुनक महत्ताकें स्वतः स्पष्ट क' दैत अछि। 'साक्षात्कार' एवं' मूल्यांकन'क नव दिशा आकर्षित करैत अछि।

अंततः कहल जा सकैत अछि जे अंक विविध सामग्रीसँ परिपूर्ण अपन लक्ष्य प्राप्त करबामे सफल भेल अछि। हँ, एतबा अनुरोध अवश्य करब जे अंक अर्धवार्षिक भ' सकै, तँ अत्युत्तम। एक बेर फेरसँ पत्रिका परिवारकें अशेष बधाइ। निरंतरता बनल रहय, से कामना!

मांगन मिश्र 'मार्त्तंड', फारबिसगंज,
मो. : 9973269906

'भारती मंडन'क पंद्रहम अंक (मार्च, 2021) आद्योपांत पढ़ल। हमरा दृष्टिसँ तँ आब ई मैथिलीक एकटा सुप्रतिष्ठित पत्रिके टा नहि, एकटा संग्रहणीय पोथी बनि गेल अछि जे प्रायः प्रत्येक मैथिली साहित्यानुरागीक लेल जोगाकें रखबाक सामग्री मानल जएबाक चाही। मैथिलीक अप्रतिम ऐतिहासिक 'मिथिलांक'क प्रमुख विषय सभकें जाहि तरहक संपादकीय सूक्ष्मेक्षिकाक संग श्रीमान भीमनाथ झाजी एक सय पृष्ठमे समाहित करैत आकर्षक रूपमे प्रस्तुत कएलनि अछि, ई हुनकहिसँ संभव। हुनका प्रसंग एतबे कहब जे 'तोहर सरिस एक तोहें माधव'। 'विभूतिगाथा' मे स्वनामधन्य नगेंद्र कुमारक मूल्यांकन जाहि रूपें पंचानन मिश्र जी द्वारा कएल गेल अछि, ई अपना-आपमे नीर-क्षीर विवेकी समीक्षात्मक दृष्टिक विलक्षण उदाहरण थिक। पंचू बाबूक असामयिक महाप्रयाणसँ मैथिली जगतकें अपूरणीय क्षति भेलैक अछि। यद्यपि 'कथा समवेत'मे एकसँ एक कथा आएल अछि, मुदा 'भिन्नरुचिर्हि लोकः'। हमरा नीरजा रेणुक मोह माया, वीणा ठाकुरक मुक्तात्मा, सुस्मिता पाठकक आलोड़न, अभिलाषाक खखास ओ रूपम झाक कुंजी बेसी प्रभावित कएलक। एहि कथा सभमे कथाकार लोकनिक भावयित्री आ कारयित्री-दुहू प्रतिभाक विलक्षण निदर्शन भेटैछ। हिनका सभकें हार्दिक बधाइ। एक्के टा साहित्यकार

हरेकृष्ण झा पर आठ-आठ गोटाक स्मरणाञ्जलि कनेक खटकैत अछि। अस्तु, एक-एक टा स्तंभ अपना जनैत खूब दमगर छैक। निष्कर्षत: कहब जे एहि अंकक अधिसंख्य सामग्रीक उपस्थापनमे संपादकीय प्रौढ़ि स्पष्ट रूपें दृष्टिगोचर होइछ। अंतमे मैथिलीक एहि सार्वकालिक महत्वक पत्रिकाक दीर्घायुष्यक लेल जगदंबासँ प्रार्थना करैत छिएनि जे एकरा कहियो कुशक कलेप नहि लगैक। असीम सम्मान ओ अनंत शुभकामनाक संग।

मित्रनाथ झा, दरभंगा

भारती मंडन पत्रिका पूर्ण लॉकडाउनक दुर्भाग्यपूर्ण समयमे भेटल—गृहकैदक स्थितिमे स्वातीक बुन्नक काज केलक, कतेक माससँ प्रतीक्षामे छलहुँ। अंक बहुत ज्ञानवर्द्धक आ इंद्रधनुषक रंगसँ सुसज्जित, हाथ अबिते पढबामे ऐना डूबलहुँ जे बाकी दिनचर्या पछुआ गेल।

'दृष्टि'मे मंत्रेश्वर झाक साहित्यिक पदयात्रा तँ सोझे गामक टीशन लोहना रोड, किरणजीक दरबज्जा आ बाबा विदेश्वरक स्थान लग ठाढ़ क' देलक। एतेक सरल भाषा आ सहज व्यक्तित्वसँ भेंट करबाक अवसर ताकि रहल छी, एक्के अपार्टमेंटमे रहबाक कारणे, भरिसक ई सुयोग शीघ्रहि भेटय। 'विविधा'मे शोभाकांतजी पहिल बेर बाबा यात्रीक संघर्षशील व्यक्तित्व, हुनक काशी प्रवास आ विद्वताक पथार पसारि देलनि अछि।

'बिसबिस्सी'मे योगानंद हीराजी पुरुषक जुझैत दिनचर्या आ पारिवारिक सामंजस्यक फोटो फरिछाकें देखौलनि अछि। महिला कथाकार लोकनिकें अनेक शुभकामना। पत्रिका परिवारक आभारी छी जे हमरो पहिल बेर लिखबाक अवसर प्रदान कयलनि।

प्रेम चौधरी, दिल्ली

मोबाइल नं.-9717485807

जीवनमे बहुत पत्रिका पढल मुदा भारती मंडनसँ साहित्यिक जीवनमे जे लाभ भेल, से कोनो भाषाक पत्रिका पढि क' नहि भेटल छल। पत्रिकाक प्रत्येक अंग आ साज-सज्जा सोचल-विचारल अछि। सबटा सामग्री उच्चस्तरक, अपनामे अनुपम।

हरिमोहन झा, सर गंगानाथ झा, सुरेन्द्र झा सुमन, सुनीति कुमार चटर्जी, भीमनाथ झा, भोलालाल दास, कुमार गंगानन्द सिंह आदि अनेको विभूतिक सारगर्भित लेखनी एहिमे भेटल।

मिथिलाक इतिहास बहुत गरिमामय अछि, मुदा वर्तमान नहि। हम एहि बातक पक्षधर छी जे विकास पाछूक इतिहास नहि, वर्तमानक धरातल पर आधारित हेबाक चाही। नव लेखक जे विभिन्न जाति आ विचारधाराक वाहक होथि, हुनक समावेश हेबाक चाही। हमर आग्रह जे साहित्यिक रुचि बला लोक सभ ई पत्रिका अवश्य पढथि।

मुकेश आनन्द, दिल्ली

मुख्य वित्त सम्पोषक श्री सम्पत्ति कुमार यादवजीक संक्षिप्त जीवनी

हिनक जन्म एक सामान्य कृषक परिवारमे 3 जनवरी 1957 कें भेलनि। हिनक माता स्व. मसिया देवी आ पिता स्व. सेवालाल यादव रहथि। कृषि योग्य अधिकांश भूमि कोसीक पेट मे रहलाक कारणे हिनका सभक आर्थिक स्थिति लचरल छलनि। माता-पिताक पहिल संतान हेबाक कारणे हुनका अतिरिक्त दादी स्व. फुलसरिया देवीक सेहो अत्यधिक दुलार आ आशीष भेटलनि।

हिनक प्रारंभिक शिक्षा घरहि पर चांदपीपरक श्री रामनारायण यादव द्वारा प्राप्त भेलनि। प्रा.वि. सरायगढ़ मे वर्ग तीन धरि, पछाति म.वि. भपटियाही मे वर्ग सात धरिक पढ़ाइ सम्पन्न भेलनि। तकरा बाद उ.वि. भपटियाही मे वर्ग आठ मे नामांकन करौलनि आ 1974 मे प्रथम श्रेणीसँ मैट्रिक केलनि।

आर्थिक स्थिति लचरल रहबाक कारणे हिनक आगाँक पढ़ाइ बाधित भेलनि मुदा हिनक आत्मबल एवं आगाँ बढ़बाक संकल्प रंग अनलक आ येनकेन प्रकारेण पारिवारिक असहमतिक अछैतहु पढ़बाक प्रयास कयलनि 12 जनवरी 1975 कें ई अपन नामांकन राजकीय पोलिटेकनीक, सहरसा मे करौलनि। अर्थसंकटक कारणे पहिल बर्खक पढ़ाइ कठिन रहलनि मुदा दोसर बर्खसँ छात्रवृत्तिक कारणे सभकिछु पटरी पर आबि गेलनि। पार्टटाइम ट्यूशन आ अवकाशक समय मस्टर रौल पर किछु-किछु काज सेहो करैत रहलाह। पढ़ाइक प्रति हिनक लगनशीलतासँ प्रभावित भ' भपटियाहीक तत्कालीन कनीय अभियंता श्री विश्वनाथ मिश्र अपन सहयोग द' हिनक आत्मबल बढ़ौलकनि। तत्कालीन अभियंता टेंगराहा निवासी श्री अरुण कुमार यादव सेहो हिनका आर्थिक सहयोग केलकनि। भपटियाही उ.वि. क तत्कालीन प्रधानाध्यापक श्री अयोध्या प्र. सिंहक कृपा सेहो हिनका पर बनल रहलनि। भूतपूर्व मुखिया, सरायगढ़ स्व. हीरालाल यादवक स्नेह सेहो हिनका भेटलनि। पोलिटेकनीकक अभिन्न मित्र श्रीकृष्ण कुमार यादवक सहयोग आगाँ बढ़बाक प्रेरणा दैत रहलनि तँ ओही संस्थाक पुस्तकालयध्यक्ष श्री पाठकजी सेहो विभिन्न उपयोगी किताबक सहयोग करैत रहलनि। हिनका लोकनिक स्नेह-सौजन्य आ सदाशयताक प्रति ओ एखनो आभारी छथि।

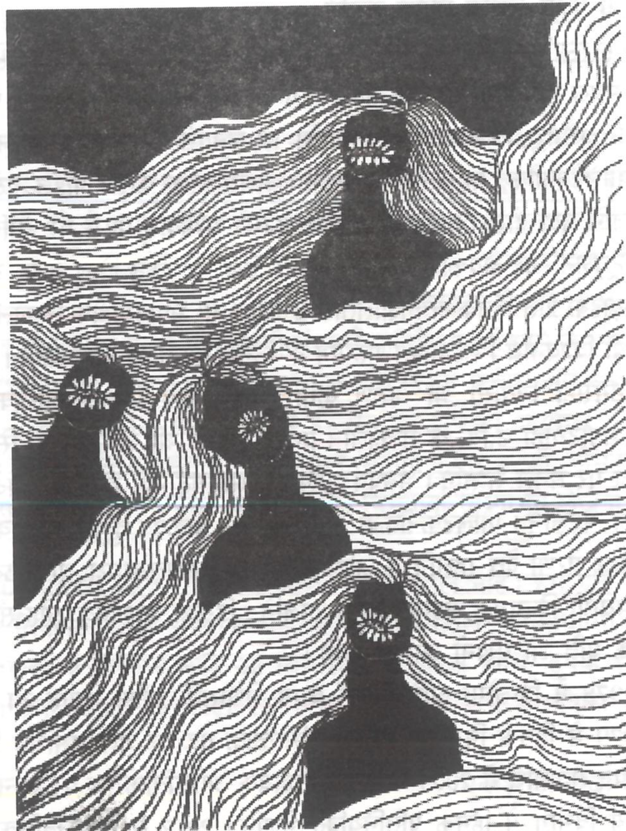
वर्ष 1978 मे डिप्लोमा अभियंत्रणसँ प्रथम श्रेणीससँ उत्तीर्ण भेलाह आ पीठउपारे जनवरी 1979 मे हिनक नियुक्ति कनीय अभियंताक पद पर जल संसाधन विभाग मे भेलनि। अपन सेवावधि मे 2009 मे हिनका सहायक अभियंताक पद पर प्रोन्नतिक संग ग्रामीण कार्य विभाग मे हिनक प्रतिनियुक्ति भेलनि। 2017 मे सेवानिवृत्तिक उपरान्त

ओही विभागमे संविदा पर बांका मे पुनर्नियुक्ति भेलनि। जनवरी 2022 मे पूर्णतः सेवानिवृत्त भ' अपन स्थायी आवास सरायगढ़ आबि गेल छथि।

जे.पी. आन्दोलन मे सक्रिय भूमिकाक कारणे कारावास सेहो भेलनि जतय बिहार सकारक काबीना मंत्री श्री विजेन्द्र प्र. यादव, राजद विधायक श्री यदुवंश कुमार आ पूर्व सांसद श्री आनन्द मोहनक सान्निध्य प्राप्त भेलनि।

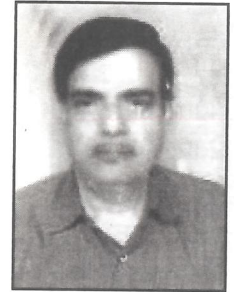
हिनक रुचि अंतरिक्ष विज्ञान, दर्शन, इतिहास आ धार्मिक पुस्तकक अध्ययन मे छनि। हिनक आस्था मूर्त्ति पूजा मे नहि छनि, संगहि ईश्वरक अस्तित्व कें स्वीकार नहि करैत छथि। मुदा ई स्वयं कें नास्तिक नहि मानैत छथि। ई अपनाकें पदार्थवादी मानैत छथि।

हिनका पारिवारिक ओ सामाजिक जीवनमे उत्तरोत्तर सफलता भेटनि, ताहि लेल पत्रिका परिवार दिससँ अशेष शुभकामना।



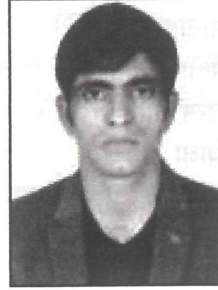
मुख्य वित्त सम्पोषक (आजीवन सदस्य)

सहयोग राशि–10,000/- पछाति प्रति अंक 5,000/- टाका



नाम	: **श्री सम्पत्ति कुमार यादव**
पिताक नाम	: स्व. सेवा लाल यादव
माताक नाम	: स्व. मसिया देवी
पत्नीक नाम	: श्रीमती दुर्गावती देवी
जन्म तिथि	: 3 जनवरी, 1957 ई.
शिक्षा	: डिप्लोमा इन सिविल इंजीनियरिंग
व्यवसाय	: ग्रामीण कार्य विभाग (बिहार सरकार)क अन्तर्गत सहायक अभियन्ताक पदसँ 31 जनवरी 2017कें सेवानिवृत्त
संतान	: 1. ऋचा कुमारी, एम.ए. समाजशास्त्र संगहि संगीतसँ शिक्षा प्राप्त। संप्रति प्रा.वि. मे शिक्षिकाक पद पर कार्यरत। 2. कुमार दीपक, एम.ए. (लोक प्रशासन) सम्प्रति गामे रहि आवासीय मिथिलांचल पब्लिक स्कूल, सरायगढ़क निदेशक 3. कुमारी ऋतम्भरा, एम.ए. (इतिहास) संगहि संगीत शिक्षा 4. मृणाल मंजरी, एम.ए. कयलाक बाद वैवाहिक जीवनक सम्पादन। 5. कुमार विक्रमादित्य, बी.टेक., सम्प्रति यू.एस.टी. ग्लोबल कम्पनी मे कार्यरत
स्थायी पता	: ग्राम+पोस्ट–सरायगढ़, भाया–भपटियाही, जिला–सुपौल (बिहार)
विशेष अभिरुचि	: साहित्य, दर्शन, इतिहास एवं अन्तरिक्ष विज्ञानसँ सम्बन्धित विषय-वस्तुक अध्ययन
विशिष्टता	: समाज सेवा एवं अध्यात्म चिन्तन
मोबाइल नम्बर	: 9931640804

मुख्य वित्त सम्पोषक (आजीवन सदस्य, अंक-15)
पहिल सहयोग राशि–10,000/- टाका (दस हजार टाका)
पछाति प्रति अंक 5,000/- (पाँच हजार टाका) न्यूनतम दस अंक



नाम : **श्रीयुत् संजय कुमार**
पिताक नाम : श्री सुकदेव यादव
पितामह : स्व. रामी यादव
माताक नाम : श्री मती भगिनी देवी
पत्नीक नाम : अमृता कुमारी
जन्म तिथि : 10 दिसम्बर, 1981 ई.
शिक्षा : एम.ए. (इतिहास)
वृत्ति : बिहार पुलिस सेवा (वर्ष 2005 ई. सँ)
संतान : पुत्री : अलीसा आनन्द
पुत्र : अंश अमृतराज
अभिरुचि : शिक्षा, खेल संगहि समाज सेवा
विशिष्टता : प्रतिभासम्पन्न, विनम्र एवं परोपकारी
क्रिया कलाप : सम्प्रति पत्नी अमृता कुमारीक निर्देशनमे अपन पैतृक आवास सिंगिआवन, किसनपुर प्रखण्ड (सुपौल) अन्तर्गत 'ग्रीन वैली इंटरनेशनल स्कूल'क सफल संचालन वर्ष 2014 ई. सँ।
स्थायी पता : द्वारा–श्री सुकदेव यादव, ग्राम+पोस्ट–सिंगिआवन (पंचायत-मेहासिमर), प्रखण्ड–किसनपुर, भाया– थरबिट्टा, जिला–सुपौल (बिहार), पिन–852138
वर्त्तमान पता : फ्लैट नं.–203, जया खुशी अपार्टमेंट
अपर्णा बैंक कॉलोनी, फेज I, राम जयपाल रोड, दानापुर, पटना (बिहार)।
मोबाइल नम्बर : 7070463800

दीर्घकालिक विशिष्ट वित्त सम्पोषक (दस अंकक लेल)
सहयोग राशि–10,000/- टाका (तीन बराबर किस्त मे)

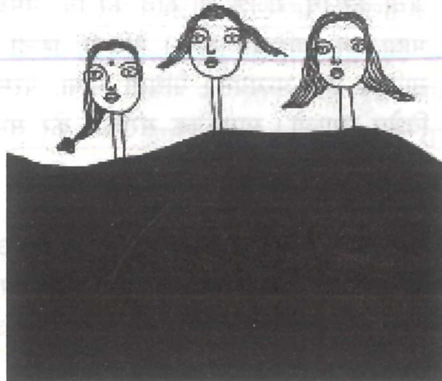


नाम : **श्री अरुण कुमार झा**
पिता : स्व. हरिश्चन्द्र झा
माता : श्रीमती मोती देवी
गाम : डेओढ़, पोस्ट : घोघरडीहा
जिला : मधुबनी (बिहार)
सम्पर्क : 08025877637, 9426807233
अनुज : श्री अशोक कुमार झा, अनुजा : श्रीमती इन्दु झा
शिक्षा : अभियांत्रिकी स्नातक (यांत्रिक), बी.आई.टी. सिन्दरी (धनबाद), राँची विश्वविद्यालय, वर्ष 1984, प्रथम श्रेणी (विशिष्ट)
व्यवसाय : वर्ष 1984 सँ अद्यतन एन.टी.पी.सी. (भारत सरकार केर महारत्न सार्वजनिक संस्थान)मे कार्यरत। एन.टी.पी.सी. केर विंध्याचल सुपर थर्मल आ झनोर गांधार गैस स्टेशनमे 30 वर्ष सेवा उपरान्त सम्प्रति अपर महाप्रबंधक (निरीक्षण सेवा) केर पद पर बैंगलोरमे सेवारत।
आश्रम : संयुक्त परिवार। अनुज गाम आ हम बैंगलोर। डीहक पताकाधारी चि. जयन्त सम्प्रति कोलकातामे आ हुनक अग्रजा सुश्री ज्योत्सना बैंगलोरमे।
वैवाहिक स्थिति : वर्ष 1984मे विवाह। धर्मपत्नी श्रीमती किरण झा।
संतान : पुत्रीद्वय श्रीमती ऋचा अरुण आ श्रीमती रुचि किरण। ऋचा इंटेलमे इंजीनियर आ रुचि आऊलटेकमे सिटी मैनेजर।
भविष्य निधि : ऋचा केर चि. राजेश आ रुचि केर चि. समर्थ।
व्यक्तिगत अभिरुचि : भाषा आ साहित्यमे रुचि। मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजी भाषा साहित्य केर अध्ययन। मैथिली भाषा, परम्परा आ संस्कृतिसँ विशेष लगाओ। सामाजिक सरोकार केर सम्मान। परम्परा केर तर्कसंगत आयामक समर्थक।
धर्म आ आध्यात्म : कर्मकांड केर अनुभव उपरान्त आध्यात्मिक साधनामे अग्रसर। हृदय केन्द्रित ध्यान केर नियमित साधक आ आध्यात्मिक संस्थान श्री रामचन्द्र मिशनसँ जुड़ल। भारती मंडन केर आरम्भिक यात्रासँ जुड़ल छी आ तकर श्रेय 'तरुण भाइ'कें आ स्व. जीवकान्त जीकें।

विशिष्ट वित्त सम्पोषक (दीर्घकालिक न्यूनतम दस अंकक लेल)
सहयोग राशि–10,000/- टाका (तीन बराबर किस्त मे)



नाम : **श्रीमती सरिता झा**
पिता : स्व. कामानन्द झा
माता : श्रीमती श्यामा देवी
ग्राम+पो.-बलुआ बाजार, सुपौल
पति : श्री अरुण कुमार झा
प्रोजेक्ट डायरेकटर, ऑरिएंटल स्ट्रक्चरल इंजीनियर्स प्रा. लि. भारतमाला परियोजना, कोच्चि, केरल
श्वसुर : श्री महेन्द्र झा
ग्राम+पो.-जयनगर, अररिया
पुत्र : श्री अभिनव आनन्द, सिविल इंजीनियर (पी.जी.) फिल्म उद्यागे मे कार्यरत
वर्त्तमान पता : स्वप्नलोक टावर, बी. 1004, गोरेगांव इस्ट, मुम्बई-400097
मोबाइल : 7085053444
स्थायी पता : निर्मला निकेतन, प्रोफेसर कालोनी, फारबिसगंज, अररिया
विशिष्टता : इतिहास सँ एम.ए.। साहित्य-संगीत सँ विशेष अभिरुचि। भावप्रवण, दानशीलता। अनर्गल आ अनुचित कार्य वा व्यवहारक प्रति विद्रोह करबाक साहस। गृह-कार्य एवं सामाजिक क्रियाकलापमे दक्ष।



अल्पकालिक विशिष्ट वित्त सम्पोषक
(तीन अंकक लेल)
(सहयोग राशि–10,000/- टाका)



नाम : **श्रीमती शकुन्तला देवी**
पति : कविचूड़ामणि डा. बद्रीनाथ झा विनीत
श्वसुर : स्व. पं. सृष्टिनारायण झा, वेदान्ताचार्य (राष्ट्रपति सम्मानित)
ग्राम : ठाढ़ी, मधुबनी
वर्त्तमान निवास : कबड़ा घाट, दरभंगा, बिहार
संपर्क : 9741800377
पिता : स्व.पं. कपिलेश्वर ठाकुर
भाषा ज्ञान : मैथिली, हिंदी, संस्कृत आ अंग्रेजी
अभिरुचि : आध्यात्मिक ओ धार्मिक कार्य संपादनक संगहि ज्ञानवर्द्धक ग्रंथक अध्ययन-मनन।
पुत्र : श्री ब्रह्मानन्द झा, एन.टी.पी.सी. कांटी मे अपर महाप्रबंधक श्री परमानन्द झा, दरभंगा न्यायालय मे अधिवक्ता, श्री विनयानन्द झा, हिंदुस्तान युनिलीवर लि. बैंगलूर मे वरिष्ठ विकास प्रबंधक
पुत्री : श्रीमती इन्दिरा झा, ए.एस-सी. (रसायनशास्त्र), साहित्य लेखन
: श्रीमती अर्चना झा, एम.एस-सी. (रसायनशास्त्र), मधुबनी चित्रकलासँ लगाव

एहि भरल-पुरल परिवारक प्रत्येक सदस्य शिक्षित ओ कर्त्तव्यनिष्ठ। पारस्परिक प्रेम सँ भरल परिवार, लक्ष्मी आ सरस्वतीक असीम कृपा आ एहि परिवार रूपी वृक्षक जड़ि छथि श्रीमती शकुन्तला देवी, जनिक त्याग ओ तपस्याक कारणे ई परिवार पल्लवित-पुष्पित अछि।

पूर्व विशिष्ट वित्त सम्पोषक (आजीवन सदस्य)
सहयोग राशि–10,000/- टाका (दस हजार टाका)

नाम	:	श्री सीतानन्द झा (सुनील कुमार झा)
पदनाम	:	मुखिया, ग्राम पंचायत मधुबनी (सुपौल)
पिता	:	स्व. कुलानन्द झा (बच्चे बाबू)
माता	:	स्व. शान्ति देवी
दादा	:	स्व. तारानन्द झा
पत्नी	:	श्रीमती शीला देवी (पूर्व मुखिया)
व्यवसाय	:	खेती
विशेष अभिरूचि	:	समाज सेवाक संग सामाजिक विकास सम्बन्धित कार्यक प्रति तल्लीनता
संतान	:	दू पुत्री एवं दू पुत्र पुत्री–श्रीमती सीमा कुमारी एवं श्रीमती सुषमा कुमारी पुत्र–परिणव कुमार एवं केशव कुमार दूनू पुत्र अभियन्ता पद पर कार्यरत
ज्येष्ठ भ्राता	:	श्री रुद्रानन्द झा, कनिष्ठ भ्राता–श्री अच्युतानन्द झा
पता	:	ग्राम+पोस्ट–मधुबनी, भाया–प्रतापगंज, जिला–सुपौल (बिहार), मोबाइल–9931518382
पारिवारिक विशिष्टता	:	हिनक दादा स्व. तारानन्द झा अपना समयक मिथिलांचलक गौरवमंडित नाम, सनातन धर्मावलम्बी, दानवीर, अतिथि सेवक, स्वयंमे अपवाद, विशिष्ट एवं अनुकरणीय गार्हस्थ्य जीवन। हुनका द्वारा स्थापित परम्पराकें सम्पोषित एवं संरक्षित रखबामे हुनक पौत्र श्री सुनील कुमार झा निरन्तर प्रयत्नशील रहि अपन समाजमे एक विशेष स्थान बनेबामे सफल भेल छथि।

पूर्व विशिष्ट वित्त सम्पोषक (आजीवन सदस्य)
सहयोग राशि–10,000/- टाका (दस हजार टाका)

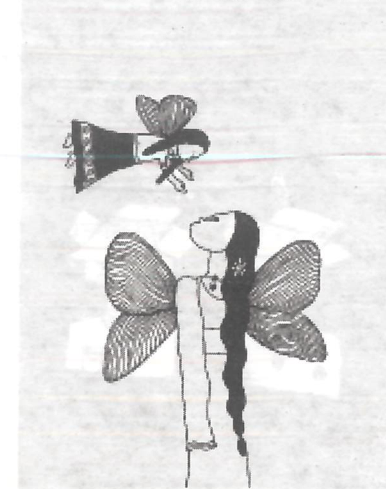
नाम	:	**श्री मिहिर कुमार झा**
पिता	:	श्री अनिल कुमार झा
माता	:	श्रीमती इंदिरा झा
गाम	:	डेओढ़, पोस्ट : घोघरडीहा
सम्पर्क	:	9850792948 (WhatsApp)
शिक्षा	:	कम्प्यूटर विज्ञानमे स्नात्तकोत्तर, व्ही.आइ.टी, वेल्लोर, (तमिलनाडु), प्रथम श्रेणी डिस्टिंक्शन
व्यवसाय	:	वर्ष 2004सँ कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग केर नौकरी। सम्प्रति : टेली कम्यूनिकेशन सॉफ्टवेयर क्षेत्रक बहुराष्ट्रीय कम्पनी ऍमडॉक्स मलेशियामे पदस्थापित।
वैवाहिक स्थिति	:	वर्ष 2007सँ श्रीमती पुष्पा झा संग परिणय सूत्रमे बन्हल।
संतान	:	सुश्री तनिष्का (10 वर्ष) आ चिरंजीवी कार्तिकेयन (4 वर्ष)
व्यक्तिगत अभिरुचि	:	कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग केर नव-नव भाषाक अध्ययन। भारतीय इतिहास एवं दर्शनमे घोर अभिरुचि आ अध्ययन। हिन्दी एवं अंग्रेजी साहित्यक सतही अध्ययन। मैथिली साहित्य एवं इतिहासक अध्ययनमे जिज्ञासु (गुरुक तलाशमे)।
मनकगप	:	मन यायावर अछि मुदा अछि सृजनात्मक। कोनो एक दिशामे केन्द्रित नै रहैत छी। किछु दिन एतय, किछु दिन ओतय, फेर चला चली केर बेरा। फिलहाल फेसबुकिया लेखक छी। अपन आस पास के विद्वतजनक प्रतिभाकें देखि दंग छी। अपन मातृभाषा और अपन माटिक लेल किछुक' क' प्रस्थान करब तँ जीवन सफल बुझब अन्यथा नै। खाइ पीबैमे अघोरी छी। कीड़ो मकोड़ो खा लैत छी और कोनो तरहक वर्जना नै तोड़ि सकैत छी तँ भोजनक वर्जना तोड़िक' ओकर आत्मा पर असर देखैक कोशिश करैत छी। फिलहाल एखन तक तँ कोनो असरि नै बुझना जाइए।
धर्म आ अध्यात्म	:	बुझै सब दर्शन छी मुदा रुचैए माँ दुर्गाक मनमोहक छवि। मनक सौंदर्य बोध अहिमे सत्य देखैत अछि। नवरात्रक सप्तशतीक पाठमे हृदय पुकार देखैत छी। कर्मकांडमे एतबी, बांकी जीवन दर्शनक लेल गीताकें खंघारैत रहैत छी।

विशिष्ट वित्त सम्पोषक (आजीवन सदस्य)
सहयोग राशि–10,000/- टाका (दस हजार टाका)

नाम : **श्री विश्वमित्र कुमार**
पिता : श्री बाल मुकुन्द झा
(सेवानिवृत्त) प्रशासनिक पदाधिकारी
माता : श्रीमती शीला झा (स्नातक)
शिक्षा : वर्ष 2011मे बी.आइ.टी. भेल्लोरसँ
स्नातक अभियंता
जन्म : 24 जुलाइ 1989 ई.
विवाह : वर्ष 2017 ई.मे श्रीमती दीप्ति मोना
(कार्डियोथेरेपिस्ट)क संग।
पारिवारिक वृतांत : प्रपितामह–स्व. पंडित रघुनाथ झा (प्रख्यात संस्कृत व्याकरणाचार्य)
पितामह : श्री गोविन्द झा (सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक जिला स्कूल, पूर्णिया)
अनुज : श्री विश्वबंधु कुमार (नौ सेनामे लेफ्टिनेन्टक पद पर कार्यरत)
अग्रजा : श्रीमती शिवानी मिश्रा, माध्यमिक शिक्षिका, दिल्ली सरकार
वृत्ति : 2011 सँ 2013 धरि एरिक्सनमे अभियन्ता पद पर कार्यरत। तत्पश्चात् वर्ष 2016 ई.मे संघ लोक सेवा आयोग द्वारा चयनक उपरान्त कर्मचारी भविष्य निधि संगठनमे क्षेत्रीय आयुक्तक पद पर कार्यरत।
विशेष अभिरुचि : मातृभाषानुराग, अध्ययन, पर्यटन आ शास्त्रीय संगीतक श्रवण।
स्थायी पता : ग्राम+पो.–गढ़बरुआरी (पुबारि टोल), जिला–सुपौल (बिहार)
पिन–852110
वर्त्तमान पता : Qr. No.-14, कपिला ब्लॉक
ईपीएफओ क्वार्टर 5/5, एच.एम.टी.
फैक्ट्री मेन रोड, राजगोपाल सर्किल
जालाहाली, बेंगलूरू-560013
मोबाइल नम्बर : 8130675479, 7982316895

विशिष्ट वित्त सम्पोषक (आजीवन सदस्य)
सहयोग राशि–10,000/- टाका (दस हजार टाका)

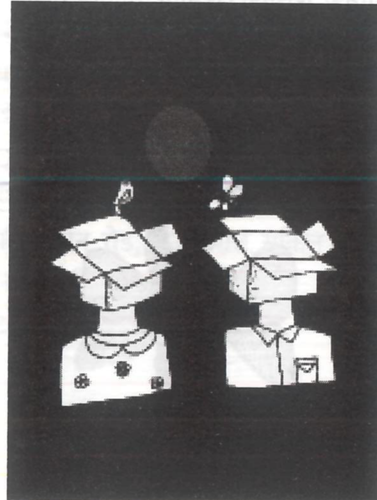
नाम : **श्री विजय कुमार झा 'ललन जी'**
पिता : स्व. सुगम्बर झा
माता : श्रीमती अतिमाया देवी
पितामहक नाम : स्व. देव नारायण झा
शिक्षा : सिविल इंजीनियरिंग
सेवा : मुख्य सिविल इंजीनियर, ज्योति ग्रुप
हिमाल आइरन एन्ड स्टील प्रा. लि.
परवाणीपुर, बीरगंज (नेपाल)
स्थायी पता : ग्राम+पो.–भारदह, वार्ड नं.–04, सप्तरी (नेपाल)
पत्नी : श्रीमती निशा मिश्रा (टुन्नी)
सुपुत्री : रुचिका झा (बिन्नी)
विद्युत अभियंता
सुपुत्र : सौरभ झा (हैप्पी)
एम.बी.बी.एस. (अंतिम वर्ष)
विशिष्टता : पारिवारिक एवं सामाजिक द्वायित्वक निर्वहनक लेल निरन्तर प्रयासरत। सौम्य स्वभाव, दोसरकें प्रभावित करय वला व्यक्तित्व। यांत्रिक शिक्षाक पश्चातो साहित्यमे रुचि।



विशिष्ट वित्त सम्पोषक (आजीवन सदस्य)
सहयोग राशि–10,000/- टाका (दस हजार टाका)



नाम : **श्री अमरेन्द्र कुमार झा**
जन्म तिथि : 24.07.1967
पिताक नाम : स्व. दर्प नारायण झा
माताक नाम : श्रीमती विमला देवी
पत्नीक नाम : श्रीमती सरस्वती झा
पितामहक नाम : स्व. अभिनाथ झा
मूल : एकहरे औप
गोत्र : भारद्वाज
शिक्षा : आई.एससी. साइंस कॉलेज, पटना, बी.ए., पटना कॉलेज, पटना
संतान : 1. सुश्री दीप्ति भारद्वाज
2. चिरंजीवी हंस भारद्वाज
व्यक्तिगत अभिरुचि : मैथिल, मिथिला एवं मैथिली भाषा आओर साहित्यक उन्नयनक प्रति जागरूक।
समाज सेवा एवं अध्यात्म चिन्तन।
स्थायी पता : ग्राम+पो.–बभनगामा, जिला–सुपौल
मोबाइल : 9051079666 एवं 7506287829



मानद वित्त सम्पोषक (नवीन)
(सहयोग–5,000/- टाका पछाति प्रत्येक अंक मे 1,500/- टाका)



नाम : **डॉ. प्रकाशचन्द्र झा**
पिता : स्व. डा. चक्रधर झा, एम.ए., एल.एल. डी.
माता : स्व. कुसुम देवी झा
पत्नी : श्रीमती पद्मिनी झा, एम.ए., (पटना वि. वि.)
ग्राम : सिकंदरपुर, भागलपुर
शिक्षा : एम.बी.बी.एस., एम.डी. (पैथोलोजी), पटना वि.वि. एम. एस-सी., सैइटो पैथोलोजी (कैंसरसँ सम्बन्धित) लंदन वि.वि.यू.के.
सम्प्रति : निजी क्लिनिक (सी.के. डॉयग्नोस्टिक्स, कृष्णापुरी, पटना)
महावीर कैंसर संस्थान एवं कुर्जी होली फैमिली हॉस्पीटल, पटनाक वरीय सलाहकार।
संतान : नेहा झा, अभियांत्रिकी स्नातक, एम.बी.ए., संप्रति दुबई मे कार्यरत
डा. सिद्धार्थ झा, चिकित्सक
आस्था झा, एम.ए. (दिल्ली वि.वि.)
विशिष्टता : सौम्य आ उदार स्वभाव। सामाजिक संरक्षण ओ मर्यादाक प्रति जागरूक। हिनक पिता भारतक प्रख्यात वकील, संगहि कानूनक अनेक ग्रंथक लेखक, जनिक प्रकाशित ग्रंथक पुनर्प्रकाशन एवं अप्रकाशित पांडुलिपिक प्रकाशन कार्य मे संलग्न। पिताक प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ रहि हुनक नाम कें आगू बढ़यबाक चेष्टा हिनक मुख्य उद्देश्य।
वर्तमान पता : सी.के. डॉयग्नोस्टिक्स, एल. 1/17, श्रीकृष्णापुरी, पटना-1
मोबाइल : 7004227902

मानद वित्त सम्पोषक (नवीन)

(सहयोग–5,000/- टाका पछाति प्रत्येक अंक मे 1,500/- टाका)



नाम : **जटाशंकर मिश्र**
पिता : श्री केदारनाथ मिश्र
माता : श्रीमती उषा मिश्र
स्थायी पता : ग्राम-लक्ष्मीपुर, कैथिनियाँ, झंझारपुर, मधुबनी
वर्तमान पता : फ्लैट नं.-612, डी डी ए-एस एफ एस फ्लैट, पॉकेट-01, सेक्टर-22, द्वारका नई दिल्ली-110075
व्यवसाय : शैक्षणिक निदेशक
जी एम पी एस, नारायणा, नई दिल्ली-110028
पूर्व निदेशक, एम आर ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस, झज्जर, हरियाणा
पूर्व शैक्षणिक निदेशक, आर पी एस, कोसली, हरियाणा
पूर्व निदेशक, स्टार पब्लिक स्कूल, अलवर, राजस्थान।
शिक्षा : एम.एस.सी., एम.बी.ए.
सम्मान : आर.सी. मेमोरियल सम्मान, 2012 मे।
रुचि : विज्ञान विषय मे कैरियर काउंसलिंग, वर्कशॉप, वेबिनार आदि केर आयोजन।
सक्रियता : संगीत, साहित्य, समाजसेवा, सांस्कृतिक गतिविधि आदि मे सक्रिय।
जीवनक उद्देश्य : तकनीकी शिक्षाक प्रति जागरूकता गामघर तक पहुँचायब आओर रोजगारोन्मुखी शिक्षाक प्रसार समाजक अंतिम शिक्षार्थी तक उपलब्ध करायब।



मानद वित्त सम्पोषक (अंक-13)

(सहयोग–5,000/- टाका पछाति प्रत्येक अंक मे 1,500/- टाका)

नाम : **श्री स्वप्निल सौरभ** (दीपकजी)
पिता : श्री चन्द्रमोहन कर्ण, संपादक : देसिल वयना
माता : श्रीमती ललिता कर्ण
पत्नी : डा. रुपाली दास (दंत चिकित्सक), एम.एस.
जन्मतिथि : 26.09.1981
शिक्षा : एम.टेक., एम.बी.ए.
व्यवसाय : सॉफ्टवेयर इंजीनियर, जे.डी.ए. सॉफ्टवेयर, हैदराबाद
स्थायी पता : जगन्नाथपुर, पो. बनैली, पूर्णिया-854201
वर्तमान पता : 118, एच.आइ.जी., मदीनागुडा, पो. मीयाँपुर, हैदराबाद-500049
मोबाइल : 9490467464

मानद वित्त सम्पोषक (अंक-15)

(सहयोग–5,000/- टाका पछाति प्रत्येक अंक मे 1,500/- टाका)

नाम : **श्री धीरेन्द्र मोहन झा, भा.प्र.से.**
पिता : स्व. मदन मोहन झा (से.नि. प्राचार्य, रा.सं. महाविद्यालय, पटना)
माता : स्व. कामेश्वरी देवी
पत्नी : श्रीमती ज्योतिर्मयी देवी
संतान : श्री चन्दन झा, एम.एस-सी, (कृषि), पी.ओ., बैंक आफ बड़ौदा, युगांडा मे पदस्थापित। श्री कुन्दन झा, बी.टेक., एम.बी.ए., सीनियर मैनेजर, एल एंड टी., एम.एच.पी.एस. वायलर्स प्रा.लि. फरीदाबाद संगहि इंटरनेशनल फाइनाल्स विशेषज्ञ
स्थायी पता : नवानी, झंझारपुर, मधुबनी
वर्तमान पता : 102/बी., वर्षा अपार्टमेंट, विवेकानन्द पार्क रोड, निकट कल्पना मार्केट, न्यू पाटलिपुत्र कालोनी, पटना-13
विशिष्टता : भाषा साहित्य, कला एवं संस्कृतिक विकास मे तत्पर। भाषा आ प्रकाशन समाज नामक साहितियक संस्थाक सचिव। माता-पिताक नामसँ वेलफेयर ट्रस्टक स्थापना। वर्ष 2013 सँ समाजक गरीब-गुरबाक सहायतार्थ अनेकानेक कार्यक सफल कार्यान्वयन।
मोबाइल : 9934394205

मानद वित्त सम्पोषक (अंक-15)

(सहयोग–5,000/- टाका पछाति प्रत्येक अंक मे 1,500/- टाका)

नाम : **श्री प्रवीण भारद्वाज**
पिता : श्री वेणी माधव ब्रह्मचारी
ग्राम : नवानी, झंझारपुर, मधुबनी
जन्म : 3 नवम्बर 1972, भागलपुर
शिक्षा : एम.ए. (संस्कृत), हिन्दू कालेज (दिल्ली वि.वि.), अनुवादमे पी. जी. डिप्लोमा (दिल्ली वि.वि.) एडवांस्ड डिप्लोमा इन बिजनेस मैनेजमेंट (आइ.एम.टी., गाजियाबाद)
गतिविधि : पत्रकारिता, नाटक, संगीत, साहित्यिक-सांस्कृतिक संगोष्ठी मे सक्रियता
प्रकाशन : हिंदी ओ मैथिली मे अनेक रचना ओ पुस्तक प्रकाशन
सम्मान : माइक्रोफाइनान्स एवं बीसम सदी मे भारत-चीन सम्बन्ध पर क्रमशः 2014 एवं 2017 मे राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत
विशिष्टता : मातृभाषा ओ राष्ट्रभाषाक संगहि अपन समाज ओ राष्ट्रक प्रति समर्पित व्यक्तित्व
संपर्क : जी-504, सूर्यविहार, सेक्टर-21, गुरुग्राम-122016, हरियाणा
मोबाइल : 9454920003

मानद वित्त सम्पोषक (अंक-15)

(सहयोग–5,000/- टाका पछाति प्रत्येक अंक मे 1,500/- टाका)

नाम : **डॉ. उदयनाथ झा अशोक**
पिता : स्व. गंगानाथ झा 'बुझबुक'
माता : श्रीमती निर्मला देवी (भानादाई)
पत्नी : श्रीमती नन्दा झा, एम.ए.
स्थायी पता : ग्राम-बिट्ठो, सरिसवपाही, मधुबनी-847424
शिक्षा : आचार्य (व्याकरण ओ साहित्यमे), एम.ए. (संस्कृत ओ भाषाविज्ञानमे) साहित्यरत्न (हिंदी), पी-एच.डी., डी.लिट्.
प्रकाशन : विभिन्न प्रकाशनसँ 40 गोट पोथी, विभिन्न भाषामे 250 गोट निबंध
अभिरुचि : शिक्षा, संस्कृति, अनुसंधानक संगहि लेखनक प्रति संलग्नता
सम्प्रति : आचार्य, साहित्य विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय, श्री सदाशिव परिसर, पुरी, ओड़िसा-752001
मोबाइल : 8895122312
ई-मेल : jha.udaynath@gmail.com

वित्त सम्पोषक (आजीवन सदस्य)

(सहयोग राशि–5,000/- टाका)



नाम : **डा. ललिता झा**
पिताक नाम : स्व. श्याम किशोर चौधरी, पनिचोभ, दरभंगा
जन्मतिथि : 3 फरवरी 1951
शिक्षा : एम.ए., पी-एच.डी. (मैथिली) सेवानिवृत्त शिक्षिका
स्थायी पता : ग्राम+पो.-हावी भौआड़, जिला-दरभंगा
पत्राचारक पता : द्वारा; श्री शिवकान्त झा, अधिवक्ता, बलभद्रपुर (बेंता रोड) निकट शर्मा डायग्नोस्टिक्स, लहेरियासराय, दरभंगा-846001
प्रकाशन : मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली (2011)
लागि गेल गाछ अकास
जाँच आयोग (सा. कंदास्वामीक तमिल उपन्यासक मैथिली अनुवाद) 2020
फड़िच्छ जखन भेल (सोमनाथ जुत्शीक कश्मीरी कथासंग्रहक मैथिली अनुवाद) 2020, तृष्णा (बालकथा संग्रह प्रकाशनाधीन)
सहभागिता : 1976 मे ल.ना.वि.वि मे आयोजित युवा महोत्सव मे मैथिली एकांकी मे अभिनय हेतु प्रशंसित
1976 मे चेतना समिति, पटनाक रंगमंच पर 'पसिझैत पाथर' नाटक मे अभिनय हेतु प्रशंसित
1994 मे सा.अ. द्वारा कोलकाता मे आयोजित 'इंडीजीनस ओरल नैरेटिव फार्म्स इन इस्टर्न इंडियन लैंग्वेजेज' सेमिनार मे सहभागिता
साहित्य अकादेमीक परामर्शदातृ समिति (2013-17)क सदस्य
सम्मान : मैथिली पुनर्जागरण प्रकाश द्वारा लेखकीय सम्मान पदक-2015
अ.भा.मि. संघ, नई दिल्ली द्वारा समारोहमे सहभागिता हेतु स्मृतिचिह्न-2016
मैथिली पुनर्जागरण प्रकाश पत्रिका मे उत्कृष्ट लेखन लेल सम्मान-2018
मोबाइल : 9667146989

वित्त सम्पोषक (आजीवन सदस्य)

(सहयोग राशि–5,000/- टाका)

नाम : राधा माधव भारद्वाज

पिता : आचार्य ब्रजमोहन झा शास्त्री
राजकीय संस्कृत कालेज, भागलपुर
संस्कृत-मैथिलीक कवि, समाजवादी विचारधारासँ सघन जुड़ाव। देवनारायण गुरमैता, सूरज नारायण सिंह, कर्पूरीठाकुरक निकटतम सहकर्मी। कल्याण औषधालयक स्थापना, 1942क बाद कालाआजार, प्लेगग्रस्त गरीब समाजक निःशुल्क सेवा।

माता : स्व. शकुन्ता देवी
ग्राम-नवानी, वाया-तमोरिया, मधुबनी

शिक्षा : दिल्ली विश्वविद्यालय सँ शिक्षा ग्रहणक पश्चात दीनदयाल उपाध्याय कालेज मे इतिहासक प्रोफेसर

प्रकाशन : इतिहासविषयक टूटा पोथीक अतिरिक्त 28 टा पेपर

संपादन : पूर्वांचल पत्रिका (1990-92)

अग्रज : स्व. मोहन भारद्वाज, डा. वेणी माधव ब्रह्मचारी
मिलिन्द माधव भारद्वाज, अधिवक्ता, उच्च एवं सर्वोच्च न्यायालय, दिल्ली

धर्मपत्नी : डा. पूनम भारद्वाज, एम.एस-सी. (भौतिकी), पीएच.डी., दिल्ली प्रशासनक अन्तर्गत लेक्चरर

पुत्री : प्रज्ञा पारमिता, अंग्रेजी आनर्स, दिल्ली वि.वि., अभिनय मे डिग्री

पुत्र : क्षेमेन्द्र भारद्वाज, अंग्रेजी आनर्स, दिल्ली वि.वि., एल.एल.बी., सिम्बयोसिस लॉ स्कूल, पुणे
मो. 9821398999

विशिष्ट वित्तीय सहभागी (अंक-16, नवांक-4)

(प्रति अंकीय सहभागिता)

सहयोग राशि–1,000/- टाका (एक हजार टाका)

1. श्री मंत्रेश्वर झा, सेवानिवृत्त भारतीय प्रशासनिक पदाधिकारी। स्थायी पता–लालगंज, पोस्ट–सरिसव पाही, मधुबनी। वर्त्तमान पता–ब्लाक–4, फ्लैट नं. –603, इस्ट एन्ड एपार्टमेन्ट, मयूर बिहार, फेज–1 एक्स्टेंशन, दिल्ली–96। विशिष्टता–मैथिलीक विशिष्ट लेखक आ व्यंग्यकार, अनेक विधाक पोथी मैथिली, हिन्दी एवं अंग्रेजीमे प्रकाशित। 'कतेक डारि पर' संस्मरणात्मक आत्मकथाक लेल वर्ष 2008मे साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत। भारती मंडन पत्रिकामे वर्ष 1995सँ अद्यावधि रचनात्मक एवं आर्थिक सहयोग करबाक निरन्तरता। मो.–9631857998 एवं 8789648029।

2. श्री गंगानाथ 'गंगेश', पिता–स्व. मुक्तिनाथ झा, ग्राम+पोस्ट–सनहपुर, भाया–रतनपुर, जिला–दरभंगा–847307 (बिहार) वर्त्तमान पता–201, कैलाश पैलेस, मजिस्ट्रेट कॉलोनी, जागृति नगर, आशियाना रोड, पटना–800014, बिहार अभियंत्रण सेवा (जल संसाधन विभाग)सँ जनवरी 2013मे सेवानिवृत्त। विशिष्टता–मैथिली भाषा एवं साहित्यक प्रति छात्र जीवनेसँ आत्मीय लगाव। कतिपय विधामे लेखन, 'असमाहि हमर हाथ' कविता संग्रह वर्ष 1970मे प्रकाशित (कविद्वयक संयुक्त प्रयास), वर्ष 2015मे 'समय सारथी' कविता संग्रहक प्रकाशन एवं 2017मे जीवकान्त पर संस्मरणात्मक आ समीक्षात्मक पोथी 'अधरतियामे चान' प्रकाशित। ई पोथी मैथिली साहित्य जगतमे प्रकाशनोपरान्त थोड़बे समयमे बहुचर्चित एवं बहु प्रशंसित। भारती मंडनक दीर्घ जीवनक कामनासँ एहि अंकसँ अपना संगहि अपन पत्नीकें सेहो विशिष्ट वित्तीय सहभागीक निमित्त प्रेरित क' सहयोग उपलब्ध करौलनि अछि। मो. : 9006007015

3. श्रीमती इन्दु झा, पति–श्री गंगानाथ झा 'गंगेश', स्थायी पता एवं वर्त्तमान पता–गंगेश जीक पताक अनुरूपे। शिक्षा–अन्तर्स्नातक, कुशल गृहिणीक रूपें पति एवं तीन संतानक संरक्षण एवं संपोषणक कुशल दायित्वक सफलतापूर्ण निर्वहन। तीनू संतान दू बेटी एवं एक बेटा पूर्णतः शिक्षित, एक बेटी (छोट) रूपम झा, एम.बी.बी.एस. एम. डी. डाक्टरक रूपें बेस ख्याति। सम्प्रति एन.एम.सी.एच.मे सहायक प्राध्यापक हिनक नैहरि सीतामढ़ी जिलान्तर्गत सामरि ग्राममे पड़ैत छनि। नैहरि सेहो पूर्ण समृद्ध। पिता स्व. वेदानन्द पाठक तात्कालीन शिक्षक समुदायमे अपना क्षेत्रक चर्चित नाम।

4. श्री अभिषेक कुमार झा, पिता–श्री शंकर झा, दादा–श्री योगनाथ झा, स्थायी पता : ग्राम+पोस्ट–अभुआड़, थरबिट्टा (सुपौल)। वर्त्तमान पता–अभिलाषा बिल्डिंग द्वारा–सुशान्त घोष, इन्दिरा पल्ली, कदम तला शिव मंदिर, सिलीगुड़ी, वेस्ट बंगाल–734011। सम्प्रति बोकारो के कोनो निजी प्रतिष्ठित संस्थानमे कार्यरत। विशिष्टता–प्रतिभावान छात्रक रूपें जवाहर नवोदय विद्यालय, सुपौलक लेल चयनित। इन्टर कक्षा धरि नवोदय विद्यालयमे रहि वाणिज्य विषयक पढ़ाइ पश्चात् कलकत्ताक

कोनो प्रतिष्ठित संस्थानसँ सी.ए.क डिग्री प्राप्त। भारती मंडनक अंक 13सँ अनवरत सहयोग। मो. 9064695635।

5. कर्नल (डा.) कीर्तिनाथ झा, कर्नल, सेना चिकित्सा सेवा कोर (सेवानिवृत्त), जन्म 08 सितम्बर 1955 ग्राम : अवाम, पोस्ट : रतौल, भाया–झंझारपुर रेलवे स्टेशन, जिला : दरभंगा (बिहार) पिन–847403। पिता : स्व. तारानाथ झा, माता : स्व. विन्देश्वरी देवी। शिक्षा : एम.बी.बी.एस. (आनर्स), एम.एस. (नेत्र चिकित्सा)। वर्त्तमान पता : बी. 7/202, संदीप विहार, एडब्ल्यूएचओ, ह्वाइट फील्ड-होस्कोटे, मेन रोड, पो. -कन्नमंगला, बैंगलोर-560067, मोबाइल : 9443655640। **कृति :** 'जड़ि' (कविता संग्रह), 2001, 'किछु पुरान गप्प-किछु नव गप्प (कथा संग्रह), 2005, 'टूटल पाँखि' (खलील जिब्रानक अरबी उपन्यासक मैथिली अनुवाद), 2016 आ तिरुवल्लुवर केर अमर तमिल काव्य-ग्रन्थ 'कुरल' केर मैथिली भावानुवाद। **रुचि :** पढ़ब-पढ़ायब आ रोगीक चिकित्सा, मैथिली लेखन, देश-विदेश भ्रमण। 'लोहना रोडसँ लास वेगस' यात्रा वृतान्त (2020) देखल-परेखल निबंध संग्रह, 2022 मे प्रकाशित।

6. श्री पारसनाथ मिश्र, पिता–श्री वैद्यनाथ मिश्र, स्थायी पता–ग्राम+पोस्ट–मलाढ़, भाया–थरबिट्टा, जिला–सुपौल, पिन–852138। वर्त्तमान पता–स्टेशन अधीक्षक, दौरम मधेपुरा, बिहार। विशिष्टता–छात्र जीवनेसँ मेधावी, विनम्र, अपनासँ पैघ लोकक (आयु एवं सम्बन्धमे) प्रति सम्मानित भाव। समाजमे कोनो प्रकारक संरचनात्मक कार्यमे बढ़ि-चढ़िकें सहयोग करबाक प्रवृत्ति। संयुक्त परिवारक समुचित कर्त्तव्यपालन एवं दायित्वक निर्वहन। भारती मंडन पत्रिकाक दीर्घ जीवनक लेल निरन्तर सहयोगात्मक प्रवृत्ति। मो. : 9771462637

7. श्री चन्द्रशेखर झा, सेवानिवृत्त (मुख्य अभियन्ता), पिता–स्व. पं. शिवशंकर झा, स्थायी पता : ग्राम+पोस्ट–राजेश्वरी, भाया–जदिया, जिला–सुपौल (बिहार)। विशिष्टता–शिक्षा सत्रमे एक मेधावी छात्रक रूपमे अनवरत उत्कृष्टतम सफलता प्राप्त। सरकारी सेवामे निरन्तर प्रमोशन। स्वभावें विनम्र, साहित्यानुरागी। भारती मंडनक संस्थापक सदस्यक रूपमे अनवरत सहयोगक। सम्प्रति सेवानिवृत्त भ' गामे मे रहि रहल छथि। मो.–9431780254

8. डा. (प्रो.) शिवाकान्त मिश्र, संस्कृत विभागाध्यक्ष पदसँ सेवानिवृत्त (ल.ना.मि. स्मारक महाविद्यालय, वीरपुरसँ), पिता–स्व. कपिलेश्वर मिश्र, ग्राम–अर्राहा, पोस्ट–संस्कृत निर्मली, भाया–बलुआ बाजार, सुपौल। वर्त्तमान पता–प्रोफेसर कॉलोनी, वार्ड नं.–12, बीरपुर, सुपौल। विशिष्टता–संस्कृत-हिन्दी एवं मैथिली तीनू भाषामे विज्ञता। संस्कृतमे आचार्यक उपाधिक पश्चात् स्नातक एवं स्नातकोत्तरमे उत्कृष्ट सफलता। संस्कृतक प्रतीक नाटकक समीक्षात्मक अध्ययन विषयसँ पी.एच-डी. संगहि गाइडक रूपे हिनका माध्यमे कतिपय छात्र पी.एच-डी. प्राप्त कयलनि। सम्प्रति सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नयनक लेल कटिबद्ध। मो.–6206479100

9. प्रो. लीलानन्द झा, सेवानिवृत्त प्राध्यापक (अर्थशास्त्र विभाग), पिता–स्व. सत्यदेव झा, चाणक्यपुरी वार्ड नं. 08, बसन्तपुर, वीरपुर (सुपौल)। विशिष्टता : अपना

विषयक निष्णात प्राध्यापकक रूपें अध्यापन जगतमे बहुचर्चित। छात्र समुदायमे एक विज्ञ एवं प्रतिष्ठित व्यक्तिक रूपमे सम्मानित। मातृभाषाक प्रति विशेष अनुराग। भारती मंडनक प्रकाशन हेतु सदति अपन स्नेहिल सहयोगक लेल तत्पर। मो. 9473144098

10. प्रो. नारायण झा, सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर, पिता–स्व. बबुआजी झा, ग्राम+पोस्ट–मोहनपुर, नौहट्टा (सहरसा)। वर्त्तमान पता–वार्ड नं. 13, प्रोफेसर कॉलोनी, वीरपुर (सुपौल)। विशिष्टता : 15.11.1979सँ ल.ना.मिश्र स्मारक महाविद्यालय वीरपुरमे अंग्रेजी विभागमे प्राध्यापकक रूपे प्रतिष्ठित। 1989मे एसोसिएट प्रोफेसरक पद पर प्रोन्नति। अंग्रेजी, हिन्दी एवं मैथिली साहित्यमे समान रूपें अधिकार। साहित्यक पठन-पाठनमे विशेष अभिरुचि। समाज निर्माण सम्बन्धी कार्यक प्रति क्रियाशीलता। मो. 9430585736 एवं 6206317932

11. श्री फुलेश्वर झा, सेवानिवृत्त प्राथमिक शिक्षक, पिता–स्व. सदानन्द झा, ग्राम–बेलदारा, पोस्ट–लालपुर, भाया–गणपतगंज, जिला–सुपौल (बिहार) मो. 6202050847। विशिष्टता : समाजिक उत्थानक लेल सदति तत्पर। अपना समाजक बीच एक प्रतिष्ठित व्यक्तिक रूपें ख्यात। मातृभाषानुरागी, भारती मंडनक दोसर खेपक प्रकाशनक पश्चात् अनवरत सहयोगक लेल प्रतिबद्ध।

12. श्री बदरीनाथ झा, पिता–स्व. पं. रामकृष्ण झा 'किसुन', किसुन कुटीर, सुपौल–852131। वर्त्तमान पता–निर्मायण, 13, आकांक्षा एन्क्लेव, हरिहरसिंह रोड, मोराबादी, राँची–834009। विशिष्टता : बैंकिंग सेवामे उच्चतम पदसँ सेवानिवृत्त। हिन्दी एवं मैथिलीमे विभिन्न विषयक आलेख लेखन, कविता लेखन जे समय-समयसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकासँ प्रकाशित आ आकाशवाणी एवं दूरदर्शनसँ प्रसारित। मो. 9006770821 एवं 9771458626

13. श्री सुधीर कुमार झा, वरीय अधिवक्ता, पिता–स्व. पारसनाथ झा, ग्राम+पोस्ट–मोतीपुर, भाया–करजाइन बाजार, सुपौल। वर्त्तमान पता–वार्ड नं. 09, लोहियानगर, निकट विलियम्स +2 स्कूल, सुपौल–852131। विशिष्टता : सुपौल परिसरक एक लब्ध प्रतिष्ठित अधिवक्ताक रूपमे चर्चित एवं प्रशंसित, जिला विधिज्ञ संघ सुपौलक सचिव पद पर वर्ष 2000 ई.सँ 2006 ई. धरि तत्पश्चात् अक्तूबर 2015 ई.सँ अद्यावधि रहि अधिवक्ता समूहक हित कार्यमे संलग्न। मातृभाषानुरागी। भारती मंडनमे निरन्तर सहयोग। मो. 9431497655

14. प्रो. विनय कुमार पाठक, सेवानिवृत्त सहायक प्राध्यापक (वनस्पति विज्ञान विभाग), पिता–स्व. बोधकृष्ण पाठक, ग्राम+पोस्ट–कर्णपुर, जिला–सुपौल। वर्त्तमान पता–नया नगर, वार्ड नं.–13, सुपौल–852131। वनस्पति विज्ञानक प्राध्यापक रहितहुँ साहित्यक प्रति विशेष लगाव। विशेषतः मातृभाषा मैथिलीक समुचित विकासक लेल समयानुकूल सहयोगी भावना। भारती मंडनक प्रकाशनक प्रारम्भहिसँ अनवरत सहयोगक लेल प्रतिबद्ध। मो. 9570344160

15. श्री घनानन्द झा, पिता–श्री मेदानन्द झा, स्थायी पता–ग्राम+पोस्ट–डहरिया, भाया–सुरपतगंज, थाना–छातापुर, जिला–सुपौल–852137। वर्त्तमान पता–प्रधानाध्यापक

मध्य विद्यालय, चकला, अंचल–छातापुर, जिला–सुपौल। विशिष्टता–मितभाषी, विनम्र, समाजोत्थान सम्बन्धी कार्यमे सक्रिय सहभागिता, मातृभाषानुरागी। भारती मंडनक लेल सहयोगक प्रति वचनबद्धता। मो. 9572248965

16. श्री अमित कुमार झा, पिता–श्री जयराम झा, ग्राम+पोस्ट–मलाढ़, भाया–थरबिट्टा, सुपौल–852138। वर्त्तमान पता–डी.ओ. जीवन बीमा निगम, सहरसा। विशिष्टता–विनम्र, सामाजिक कार्यमे सहयोगक प्रवृत्ति, भारती मंडनक सहयोगार्थ निरन्तर प्रतिबद्ध। मो. 9939082554

17. श्री चन्द्रमणि, पिता–स्व. राममूर्त्ति झा, ग्राम+पोस्ट–नवादा, बेनीपुर, दरभंगा। वर्त्तमान पता–शिवसागर, लहेरियासराय–846001, दरभंगा। विशिष्टता–रहि जो हमरे गाम, मैथिली गीताम्बुज, गीत मंजूषा (गीत संग्रह), श्री सीता शतक, उगना विद्यापति महात्म्य (कथाकाव्य), अनामिका (गीति काव्य), मुक्त उन्मुक्त (कविता संग्रह), हारि नहि मानब (वाजपेयीक हिन्दी कवितानुवाद), निधि निबंध (निबंध संग्रह), गुलरी (बाल उपन्यास) आदि प्रकाशित। सम्मान : मिथिला विभूति, मिथिला रत्न, गीत सम्राट, महेन्द्र सम्मान, मिथिला सेवा सम्मान, मिथिला शिरोमणि, पूर्वोत्तर मैथिल सम्मानसँ सम्मानित। पत्र-पत्रिकादिमे निरन्तर लेखन, मैथिली फिल्म, सीरियलमे गीत-लेखन एवं गायन कलामे प्रवीण। भारती मंडन लेल समर्पित। मो. 9430827795 एवं 9835224948

18. प्रो. विभुशेखर झा, सेवानिवृत्त प्राध्यापक, जन्तुविज्ञान विभाग, रमेश झा महिला कॉलेज, सहरसा। ग्राम : दोरमा, पत्रालय : बिहरा, सहरसा। स्थानीय पता : चाणक्यपुरी, वार्ड नं.–19, प्रतापनगर, गंगजला, सहरसा–852201। विश्वविद्यालय तथा कॉलेज संघमे रहि नीति निर्धारण तथा शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मीक लेल संघर्ष। मानवाधिकार संरक्षण प्रतिष्ठानक सचिव। स्वच्छता अभियान एवं पर्यावरणक लेल प्रत्येक बर्ख फलदार वृक्षक भिन्न-भिन्न क्षेत्रमे दान। सम्प्रति एक्यूप्रेसर चिकित्सा पर सघन रिसर्च तथा निकट भविष्यमे 'अदभुत आरोग्य' नामक पुस्तकक प्रकाशन। प्रेरणादायिनी पत्नी श्रीमती मंजू झा। आध्यात्ममे अशेष लगाव। मो.–9931566699।

19. योगेन्द्र पाठक वियोगी, हिनक जन्म लौफा, मधुबनीमे 1948 ई.मे भेलनि। भारत सरकारक परमाणु ऊर्जा विभागसँ 2012मे अवकाश ग्रहण कयलनि। मैथिलीमे निरन्तर लेखन। एखनधरि 'विज्ञानक बतकही', 'किछु तीत मधुर', 'अकटा मिसिया', 'रोबो', 'त्रिनाटकम', 'चुल्हिचन पुरान' पोथीक अतिरिक्त अनेक पत्र-पत्रिकामे रचनादिक प्रकाशन। अनेक सम्मानसँ सम्मानित। सम्पर्क : ग्राम + पो.–लौफा, वाया-झंझारपुर-847403, मधुबनी, चलभाष : 9831037532।

20. श्रीमती राखी झा, पति–स्व. नीरज झा, स्थायी पता–द्वारा श्री विद्यानन्द झा, ग्राम+पोस्ट–मलाढ़, भाया–थरबिट्टा, जिला–सुपौल (बिहार)। वर्त्तमान पता–पी.ओ., देना बैंक, सुराना काम्प्लेक्स, जिला–दुर्ग (छत्तीसगढ़)। आवासीय पता–16/बी. अनुष्ठा रेसीडेन्सी, जुनवाणी, भिलाई, जिला–दुर्ग (छत्तीसगढ़), मो. 9993166140। विशिष्टता : विवाहक वर्षान्तर्गत पतिक देहावसानक पश्चात् अथक प्रयाससँ अनुकम्पाक फलस्वरूप देना बैंकमे लिपिक पद पर नियुक्ति पुनः विभागीय परीक्षामे सफलतासँ पी.ओ. पद पर

पदोन्नति। एकटा पुत्री जकर नाम जागृति, एहि बेर सी.बी.एस.सी. कोर्ससँ उत्तम अंकक संग दसवींक परीक्षोत्तीर्ण एवं एगारहवीं कक्षामे नामांकन। अपन पुत्रीकें माता एवं पिता दुनूक प्रेम द' उत्कृष्टसँ उत्कृष्ट पालन पोषण करबाक दायित्व निर्वहन क' रहल छथि। साहित्यक प्रति अभिरुचि।

21. डा. (प्रो.) महेन्द्र, पिता–स्व. अभिराम झा, स्थायी पता–ग्राम–भेलाही, पोस्ट–खरैल, सुपौल–852131। वर्त्तमान पता–मिशन कम्पाउण्ड, पूरब बाजार, सहरसा। मो. 9431657543,8709597103। विशिष्टता–पटना विश्वविद्यालयसँ पी.एच.डी.। 1971सँ 2004 धरि सहरसा कॉलेज, सहरसामे मैथिली विभागमे प्राध्यापक पद पर सेवा तत्पश्चात् 2004सँ 2009 धरि पी.जी. सेंटर, सहरसाक विभागाध्यक्ष संगहि भू.ना. मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरामे मानविकी संकायाध्यक्ष। 2009मे सेवानिवृत्त। शैलेन्द्र मोहन झा एवं राजेश्वर झा पर साहित्य अकादेमी, दिल्लीसँ मोनोग्राफ प्रकाशित। मेटायल पता पर अबैत चिट्ठी (कविता संग्रह), दिकपाल (संस्मरण), पाठान्तर (समीक्षात्मक निबंध), धात्री पात सन गाम (संस्मरण) प्रकाशित। लगभग आधा दर्जन पोथी (विभिन्न विषयक) प्रकाशनाधीन। कतिपय मैथिली पत्रिका सभक सम्पादन।

22. प्रो. शिव कुमार झा 'निखिलेश', स्थायी पता–मिथिला कॉलोनी, मकान नं. 09, वार्ड नं. 11, मुकरी टोला, मेन रोड, जयनगर, जिला–मधुबनी (बिहार)। मो. 8709550451, ईमेल–shivakumarjha1950@gmail.com. विशिष्टता : ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालयक एक अंगीभूत इकाइ डी.बी. कॉलेज, जयनगरमे 40 वर्षक अध्यापनक पश्चात् सेवानिवृत्त। प्रथम दस वर्ष धरि असिस्टेंट प्रोफेसर, पछाति एसोसिएट प्रोफेसरक पद पर रहि अंग्रेजी विभागक अध्यक्ष रहलाह। हिन्दी आ मैथिली दुनू भाषामे कविता लेखन, कतिपय मैथिली कविता मिथिला मिहिरमे प्रकाशित एवं आकाशवाणी, दरभंगासँ प्रसारित। हिन्दीमे तीन काव्य संग्रह–1. अनुगुँज 2. जल एवं अन्य कविताएँ 3. लम्बी यात्रा में (आत्माराम एंड सन्स नई दिल्लीसँ) प्रकाशित। मैथिली कवितासंग्रह–'कविताक ककहरा लिखैत' शीघ्र प्रकाश्य।

23. प्रो. श्री कमल कान्त झा, पिता–स्व. पं. वीरेश्वर झा, स्थायी पता–ग्राम+पोस्ट–हरिपुर डीह टोल, प्रखण्ड–कलुआही, जिला–मधुबनी–847229 (बिहार) विशिष्टता : डी.बी. कॉलेज जयनगरमे कतेको वर्ष धरि प्राध्यापकक पद पर रहि अध्यापन, सम्प्रति सेवानिवृत्त मैथिली साहित्यकारक बीच अन्यतम स्थान। हिन्दी आ मैथिली दुनू भाषामे अनवरत लेखन मिथिला मिहिरसँ ल' अद्यावधि प्रकाशित कतिपय मैथिली पत्रिकामे विभिन्न विधामे, कविता, कथा, व्यंग्य एवं ललित निबन्ध आदि प्रकाशित। वर्त्तमान पता–शिक्षक निकेतन, सुभाष चौक, पोस्ट–जयनगर–847226 (मधुबनी)। आकाशवाणी पटना एवं दरभंगासँ सेहो प्रसारित। छात्र जीवनेसँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघसँ विशेष जुड़ाव। राजनीतिक क्षेत्रमे सेहो क्रियाशील। अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषदक संचालनमे अहम भूमिका। अनेकानेक पोथी (हिन्दी) एवं मैथिलीमे प्रकाशित। मैथिली लोकोक्ति संग्रह आ नेपाली उपन्यास उदासीन रुख हरक एवं नेपाली काव्य संकलन आधुनिक भारतीय कविता संचयनक मैथिली अनुवाद साहित्य अकादेमी दिल्लीसँ प्रकाशित।

साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित।

24. प्रो. श्री विद्यानाथ झा, पिता–स्व. गणेश झा, स्थायी पता–ग्राम+पोस्ट–मुरली, जिला–सुपौल (बिहार), वर्त्तमानमे संस्कृत कॉलेज हुलासमे प्राध्यापकक पद पर कार्यरत। शिक्षा–व्याकरण एवं साहित्यसँ आचार्य। विशिष्टता : कर्मकाण्डसँ सम्बन्धित कार्यक विशेष अनुभव, विभिन्न तरहक पूजा पाठ एवं अनुष्ठान आदिक अनवरत सम्पादन। सौम्य स्वभाव एवं शांतिप्रियताक कारणे अपन ग्रामीण क्षेत्रमे 'गाँधी जी'क उपनामे चर्चित। मातृभाषा मैथिलीसँ विशेष अनुराग, स्वभावसँ परोपकारी। भारती मंडनक प्रति सहयोगक भावना।

25. श्री वैद्यनाथ झा, पिता–श्री गंगेश्वर झा, ग्राम+पोस्ट–रुदौली, जिला–सीतामढ़ी (बिहार)। वर्तमान पता–क्वा. नं. 36, फेज II (पी.जी. जोन), न्यू पालम बिहार, गुरुग्राम, हरियाणा–122017। मो. 9582221968। विशिष्टता : मूलतः पंजाबी साहित्य पर बेस पकड़ जाहि कारणे कतेको रचनाक पंजाबीसँ मैथिलीमे सफल अनुवादक कारणे ख्याति प्राप्त। बाल साहित्य 'खिस्सा सुनू बाउ' पर पुरस्कृत (2018) 'रावीसँ बागमती धरि' (पंजाबी कथा)क अनुवाद, 'जमुनियाँ धार' (शिवशंकर श्रीनिवासक कथाक हिन्दी अनुवाद) प्रकाशित। अनेक पत्र-पत्रिकामे मूल एवं अनुवाद प्रकाशित। भारती मंडनक प्रारम्भहिसँ अपन रचनात्मक ओ आर्थिक सहयोग द' अनुगृहीत करैत आयल छथि।

26. श्री रंधीर कुमार झा, पिता–स्व. महेन्द्र झा, ग्राम–मड़किया, पो.–खजौली, जिला–मधुबनी (बिहार)। वर्त्तमान पता–आदित्य विरला कैपिटल, नियर सेंटर प्वाइंट होटल, भट्ठा बाजार, पूर्णिया। आवासीय पता–सिपाही टोला, नियर डॉलर हाउस चौक, पूर्णिया–854301। मो. 9473198255। विशिष्टता : 2007 सँ 2015 ई. धरि आइ.सी. आइ.सी.आइ प्रूडेंशियल कम्पनीमे प्रबंधक पद पर कार्यरत। पश्चात् पदोन्नतिक फलस्वरूप सम्प्रति आदित्य बिरला कैपिटल, पूर्णियामे वरिष्ठ प्रबंधकक पद पर सेवारत। कार्य कुशलताक कारणे वरिष्ठ पदाधिकारी लोकनिक स्नेह भाजन। मातृभाषानुरागी।

27. श्री कृपानन्द मिश्र, पिता–स्व. बुचन मिश्र, ग्राम–बेलदारा, पोस्ट–लालपुर, जिला–सुपौल (बिहार)। वर्त्तमान–प्राधानाचार्य, महन्थी देवी प्राथमिक सह मध्य संस्कृत विद्यालय, गोरधइ, पत्राचार–भूरा, त्रिवेणीगंज (सुपौल)। विशिष्टता : व्याकरणाचार्य संगहि कर्मकाण्ड, भागवत् पुराण विषयक गहन अध्ययन। कर्मकाण्डसँ सम्बन्धित कार्यक विशेष अनुभव। अनेको ठाम कर्मकाण्ड सम्बन्धी कार्यमे उपस्थित रहि अधिकृत रूपें सम्पादन। ताहि संगहि श्रीमद्भागवत कथावाचनमे सिद्धहस्त।

28. डा. (प्रो.) परमेश्वर झा, पिता–स्व. विश्वनाथ झा, ग्राम–भपटिया, पोस्ट–सुहथ, जिला–सहरसा। वर्त्तमान पता–सेवानिवृत्त प्राचार्य, वार्ड नं.–2, विद्यापुरी, जिला–सुपौल–852131 (बिहार)। मो. 9430941769। विशिष्टता : प्राचीन भारतक प्रसिद्ध वैज्ञानिक आर्यभट्टक गणितीय अवदानसँ सम्बन्धित शोध-कार्य पर 1969-70 ई. मे पी.एच.डी. प्राप्त। भारतीय गणितक विभिन्न पक्षसँ सम्बन्धित कार्य आ पी.एच.डी. हेतु अनेको शोधार्थी लोकनिक मार्गदर्शन। विभिन्न संस्थानमे आयोजित कार्यशालामे शोध विषयक आलेखक प्रस्तुति तथा सम्मानित। भारतीय गणित सम्बन्धी अनेकानेक

शोध आलेखक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशन। पुस्तक रूपमे उच्चतर माध्यमिक अंकगणित, आर्यभट्ट एंड हिज कन्ट्रिव्यूशन्स टू मैथमैटिक्स भारतीय विज्ञान के महान उन्नायक आर्यभट्ट, 'लाइफ्स एंड वर्क्स ऑफ मैथमैटिसियन्य ऑफ बिहार' एवं 'मिथिलामे ज्योतिषक परम्परा' प्रकाशित। एखनहुँ विभिन्न शोध संस्थान सभसँ जुड़ाव एवं कार्य सम्पादन। भारती मंडन पत्रिकासँ विशेष अनुराग एवं प्रारम्भहिसँ अनवरत आर्थिक सहयोग।

29. श्री अवध नारायण सिंह, सेवानिवृत्त प्राचार्य, पिता–स्व. हरिबल्लभ सिंह, मूल निवासी–कटैया, पोस्ट–बलथरबा, भाया–भपटियाही (सुपौल) वर्त्तमान पता–भपटियाही बाजार (सुपौल)। मो. नं. –9534654313 एवं 7488486537। ललित ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगासँ 1983मे स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त क' वर्ष 1985 सँ 30 सितम्बर 2018 धरि विश्वनाथ इन्टर महाविद्यालय, भपटियाहीमे प्राचार्यक पद पर रहि अपन दायित्वक सफल निर्वहन करैत सेवानिवृत्त भेलाह। सम्प्रति स्थानीय समाजान्तर्गत सामाजिक विकास सम्बन्धी कार्य एवं सांस्कृतिक कार्यमे विशेष सहभागिता रहैत छनि।

30. प्रो. कमला चौधरी, पति–श्री कन्हैया चौधरी, एम.पी. मिश्रा चौक, लहेरियासराय (दरभंगा)। पूर्व अध्यक्ष मैथिली विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय। वर्त्तमान पता–क्वा. नं.–6, एम.डी.डी.एम. कॉलेज कैम्पस, मुजफ्फरपुर। मो.–9905029611। विशिष्टता : मैथिलीक सिद्धहस्त कथा लेखिका। विशेष क' नारीक अन्तर्वेदनासँ ओत-प्रोत हिनक कथा पाठककें बहुते प्रभावित करैत छनि। किछु वर्ष पूर्व हुनक मैथिलीमे 'समय संकेत' नाम सँ चौदह गोट कथाक संग्रह प्रकाशित भेल अछि जे पाठकीय अभिरुचिक अनुरूप अछि। नवम्बर 84मे 'स्वाती' नामक मैथिली त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिकाक सम्पादन एवं प्रकाशन प्रारम्भ कयलनि जकर चारिटा अंक नवम्बर 1985 धरि निकलि बन्द भ' गेल। ओहि समयक ओ उत्कृष्ट पत्रिकाक रूपें चर्चित भेल।

31. डा. (प्रो.) कमलानन्द झा, पिता–श्री शारदानन्द झा, माता–श्रीमती प्रभावती झा, ग्राम+पोस्ट–न्यू चकदह, जिला–मधुबनी–847211, वर्त्तमान पता–प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़–202002 (उत्तर प्रदेश)। मो. 8521912909। विशिष्टता : वर्ष 2000 ई.मे जे.एन.यू.सँ पी.एच.डी.क उपाधि। विगत 20 वर्ष सँ प्राध्यापकीय पदक गरिमाक निर्वहनक संग एक कुशल समालोचक (हिन्दीक संगहि मैथिलीमे) हिनक लिखल एवं सम्पादित हिन्दीक पाँच टा महत्वपूर्ण पोथी अद्यावधि प्रकाशित।

32. श्री वैद्यनाथ झा, पिता–स्व. बाउ झा, स्थायी पता–ग्राम+पोस्ट–हटनी, भाया–घोघरडीहा–848402 (मधुबनी)। वर्त्तमान पता–म.नं.–1892/3, अस्थल मंदिर देवली एक्स्टेंशन, संगम विहार, नई दिल्ली, पिन–110080। विशिष्टता : एन.एच.पी. सी. लि. (फरीदाबाद) भारत सरकारक अन्तर्गत कार्यरत रहि वरिष्ठ संचालक (संचार) पद सँ नवम्बर 2018मे सेवानिवृत्त। सेवानिवृत्तक पश्चातो विभिन्न कर्मचारी संगठनमे पदधारक। कार्यकारी अध्यक्ष ऑल इन्डिया वर्क्स एन्ड एम्प्लाइज फेडरेशन संगहि चीफ एडवाइजर्स, सी.ओ. इन्टक यूनियन फरीदाबाद (हरियाण) एवं संगठन सचिव, इन्डियन बिल्डिंग कन्स्ट्रक्शन, फोरेस्ट एन्ड उड वर्कर्स फेडरेशन, बी.डब्लू.आइ. जेनेभा, मो.

–9582880304 एवं 9811539650

33. श्री दिलीप कुमार, पिता–श्री सूर्यनारायण दिनकर, स्थायी पता–ग्राम+पोस्ट–करिहो, जिला–सुपौल–852131। वर्तमान पता–प्रोपराइटर, दिनकर मेडिकल एजेन्सी, पिपरा रोड, सुपौल। विशिष्टता : वर्ष 2001 सँ 2006 धरि पंचायत समितिक सदस्यक रूपमे अपना पंचायत (करिहो)मे सक्रिय भूमिकाक निर्वहन। मृदुभाषी एवं अपना कार्यक प्रति विशेष निष्ठा एवं लगन। मो. 9570322232 एवं 8084115501

34. श्री सुकान्त 'सुमन' उर्फ निक्कू, पिता–श्री विनय कुमार झा, ग्राम+पोस्ट–सुखपुर, जिला–सुपौल (बिहार)। वर्तमान पता–अनुवाद पदाधिकारी, हिन्दी अनुभाग, प्रशासन भवन, इन्दिरा गाँधी परमाणु अनुसंधान केन्द्र कलवक्कम, काँचीपुरम, तमिलनाडु–603102। विशिष्टता : शिक्षाक प्रारम्भहिसँ मेधावी, नवोदय विद्यालय, सुपौलसँ इन्टर साइन्समे उत्कृष्ट सफलताक बाद दिल्ली युनिवर्सिटीसँ हिन्दीमे एम.ए. (प्रथम श्रेणी) पुनः ओतहिसँ एम.फिल. एवं शिलौंग (मेघालय)सँ पी.एच.डी.। मो. 9015243700 एवं 9499925853

35. श्री महेन्द्र प्रसाद चौधरी, सेवानिवृत्त प्राथमिक शिक्षक, पिता–स्व. किशोरी चौधरी, ग्राम+पोस्ट–सिंगिआवन, भाया–थरबिट्टा–852138 (सुपौल)। विशिष्टता : अपन पूर्ण सेवा अवधिमे एक निष्ठावान शिक्षकक रूपमे कार्य सम्पादन। शिक्षक समुदायमे चर्चित। शिक्षक संगठनमे सक्रिय भूमिकाका निर्वहन ताहि संगहि अपना गाममे चिकित्सा सेवाक सेहो सामान्य अनुभव जाहि कारणे ग्रामीण समुदायमे विशेष लोकप्रिय। मो. 9955338834

36. श्री सच्चिदानन्द सौरभ, पिता–श्री रामानन्द झा, ग्राम+पो.–सुखपुर, सुपौल। वर्तमान पता–आशीष ट्यूशन सेंटर, सतीशराज कैम्पस, सुपौल। शिक्षा–एम.एस-सी. (भौतिकी) विशिष्टता–मैथिली मे कविता–कथाक लेखन आ प्रकाशन। वर्ष 1994 मे 'कोसी' नामक पत्रिकाक संपादन। अगस्त 2018सँ टी.सी. उच्च माध्यमिक विद्यालय, चकला निर्मली, सुपौल मे अतिथि शिक्षकक रूपमे कार्यरत। संप्रति अतिथि शिक्षक संघक जिला अध्यक्ष। मोबाइल-6200653642

37. श्री रवि कुमार झा, पिता–श्री सुधाकर झा, ग्राम+पो.–पामा, थाना–पतरघट, सहरसा। वर्तमान पता–राजभाषा अधिकारी, बैंक आफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, द्वितीय तल, देवदूत कॉम्प्लेक्स, राधारानी सिन्हा रोड, घंटाघर, आदमपुर, भागलपुर-812001। विशिष्टता–जवाहर नवोदय विद्यालय, सुपौलसँ विज्ञान विषयक संग अंतरस्नातक, करोड़ीमल कॉलेज एवं रामजस कॉलेज, दिल्लीसँ उच्च शिक्षाक बाद मेघालयसँ एम.फिल.। घर आदमपुर, भागलपुर-812001।

38. श्री अनिल कुमार झा, माता–श्रीमती चंद्रकला देवी, पिता–स्व. लीलाकान्त झा, ग्राम+पो. मलाढ़ वाया–थरबिट्टा, सुपौल। वृत्ति–सब पोस्टआफिस, थरबिट्टा मे डाटा ऑपरेटरक पद पर विगत दस वर्ष सँ कार्यरत। विशिष्टता–सौम्य स्वभाव, व्यवहार कुशल एवं सामाजिक कार्यक प्रति संलग्नता। संपर्क : 9534357727, 9304084250

39. डा. रेणु कुमारी, पति–श्री राजकुमार झा। स्थायी पता–सुखपुर (गौरीपुर), वार्ड नं.-1, सुपौल-852130। वर्तमान पता–अतिथि प्राध्यापक, मैथिली विभाग, राजेन्द्र मिश्र कालेज, सहरसा। विशिष्टता–एक कुशल गृहणीक संगहि एम.ए., पी-एच.डी. कयलनि। मैथिली मे कविता एवं कथा ओ निबंध सभ विभिन्न पत्रिकादिमे प्रकाशित।

40. श्री कन्हैयानन्दन मिश्र, सहायक महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक, नई दिल्ली। पिता–स्व. नुनू मिश्र (पंजीकार)। स्थायी पता–ग्राम+पो.–ननौर, वाया–तुलापत गंज, मधुबनी–847109, बिहार। वर्तमान पता–फ्लैट नं. जी. 101, सूर्य विहार, सेक्टर-21, डुंडाहेड़ा, गुरुग्राम-122016, हरियाणा। शैक्षणिक योग्यता–बी.एस-सी. (गणित प्रतिष्ठा)। सी.ए.आई.आई.बी., एम.बी.ए. (मास्टर इन फाइनांसियल मैनेजमेंट, जमनालाल बजाज इन्स्टीट्यूट ऑ मैनेजमेंट स्टडीज, मुम्बई। विशेष अभिरुचि–मैथिली, हिंदी ओ अंग्रेजी साहित्यक अध्ययन आ समाज सेवा।

41. श्री धीरेन्द्र कुमार झा, अधिवक्ता, उच्च न्यायालय, पटना। पिता–स्व. उपेन्द्रनाथ झा व्यास (मैथिलीक विशिष्ट साहित्यकार)। स्थायी पता–ग्राम+पो.–हरिपुर बक्सी टोल, मधुबनी। वर्तमान पता–श्री भवन, 32, रमण पथ, बोरिंग रोड, पटना-800001। विशिष्टता–कनिएटा बात, अपनाकें अकानैत (मैथिली कविता संग्रह), एहि मोड़ पर (कथा संग्रह), उत्तरार्द्ध (उपन्यास) प्रकाशित। मैथिलीक विशिष्ट कवि–कथाकार। मोबाइल : 9835676152, 9631852460

42. श्री अनिश कुमार झा, पिता–स्व. शिवनंदन झा, ग्राम+पो.–अभुआड़, वाया–थरबिट्टा–852138, सुपौल। वर्तमान पता–जमादार, प्रमण्डलीय समादेष्टा, बिहार गृहरक्षा वाहिनी, भागलपुर। मोबाइल-7654793111। विशिष्टता–सत्यनिष्ठ, कर्तव्यपारायण संगहि अपन समाजक बीच चर्चित एवं प्रतिष्ठित व्यक्तित्व।

43. श्री बैकुंठ झा, पिता–स्व. सरयुग झा, ग्राम+पो. सनहपुर, दरभंगा। शिक्षा–मैट्रिक, एन.सी.टी.बी.टी., डी.एम.टी.। वर्तमान पता–2458/ए, 15/ए, अनुराधा कालोनी, वाटर वर्क्स रोड, जबलपुर-482001। विशिष्टता–संदर्भ समय सोपान (कविता), बुझनुक, संकेत (लघुकथा), रखवार (गजल संग्रह) प्रकाशित। नवतुरिया (मैथिली), दिव्या (हिंदी) एवं संवाद (विभागीय पत्रिका)क संपादन। निरन्तर सृजनरत। मोबाइल : 9131432142।

44. श्री रंजन कुमार झा (सी.ए.) पिता–श्री गुलाब झा, ग्राम+पो.–मलाढ़, वाया–थरबिट्टा–852138, सुपौल। वर्तमान पता–76/27, शिप्रा पथ, मनसरोवर, जयपुर-302020, राजस्थान। सम्प्रति-इन्फोरमेशन टेक्नोलॉजी मंत्रालय, दिल्लीक अन्तर्गत डी.जी.एम.क पद पर कार्यरत। विशिष्टता-उदारता, सौम्यता, सामाजिक दायित्वक प्रति सजग। सम्पर्क–8302374080, 8003403222।

45. श्री मुकेश आनन्द, अधिवक्ता। माता–श्रीमती गायत्री झा, पिता–डा, गंगानन्द झा। स्थायी पता–ग्राम+पो.–हरिपुर ड्योढ़ी, गुरमहा पंचायत, मधुबनी। शिक्षा–स्नातक (भौतिक प्रतिष्ठा), एल.एल.बी. (कैम्पस लॉ सेंटर), दिल्ली वि.वि.। विशिष्टता-कतिपय वि.वि. मे विजिटिंग प्रोफेसरक रूप मे अध्यापन, किछु एनजीओक संस्थापक सदस्य, राजनीति मे सक्रिय। हिंदी-मैथिली मे अनेक प्रकाशन। मैथिलीक प्रति समर्पित। सर्वोच्च न्यायालय, दिल्लीक अतिरिक्त विभिन्न न्यायालय मे समय-समय पर

न्यायकार्य मे अधिवक्ताक रूपें सहयोग। सम्पर्क–47+C, कामना, वैशाली, सेक्टर-1, गाजियाबाद-201010। मोबाइल-9811478243।

46. श्री भुवनेश्वर झा, से.नि. मुख्य अभियंता, जल संसाधन विभाग। पिता–स्व. फुलेश्वर झा। स्थायी पता–आनंदी शोभा भवन, वार्ड नं.-24, ब्राह्मण टोल, सुपौल-852131। विशिष्टता–योगक महत्वकें अकानि योगाभ्यास मे तत्पर, समयानुकूल लोक संगीत सँ अभिरुचि। जन्मभूमिक प्रति अनुरागक कारणे सेवानिवृतिक पश्चात सुपौल मे रहबाक निर्णय। मोबाइल–8076462193, 9431080835।

47. श्रीमती दीक्षा झा, पति–श्री लव कुमार (सोनू), स्थायी पता–ग्राम–दोरमा, पो.–बिहरा, सहरसा। वर्तमान पता–चाणक्यपुरी, वार्ड नं.-19, प्रताप नगर, गंगजला, सहरसा–852201। विशिष्टता–इग्नू (कोलकाता) सँ अंग्रेजी मे एम.ए., नेटक संगहि सिविल सर्विसक तैयारीमे संलग्न। पति पूणे सँ एम.बी.ए.। विभिन्न साहित्यिक विधाक अध्ययन। मोबाइल-9708652867।

48. श्रीमती शिखा झा, पति–श्री विकास कुमार झा, स्थायी पता–ग्राम-दोरमा, पो.-बिहरा, सहरसा। वर्तमान पता–चाणक्यपुरी, वार्ड नं. 19, प्रताप नगर, गंगजला, सहरसा-852201। विशिष्टता–इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर, एम.बी.ए. बैंगलोर सँ क' सम्प्रति एक्सेनचर, बैंगलोर मे कार्यरत। पति एम.टेक. एयरोस्पेस (इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ साईंस, बैंगलोर) प्रशासनिक पदाधिकारी, एशिया पेसिफिक एयरबस, बैंगलोर मे कार्यरत। मोबाइल-9886382272।

49. प्रो. कृष्णकुमार सिंह, पिता–स्व. खुशीलाल सिंह, मूल निवासी–बलथरवा, बनैनियां, सुपौल। वर्तमान पता–ग्राम+पो. भपटियाही, सुपौल। मोबाइल-7631577631। विशिष्टता–वर्ष 1982-83 मे एम.ए. (मैथिली) कयलाक बाद विश्वनाथ इंटर कालेज मे प्राध्यापक। जनवरी 2018 मे ओतहिसँ सेवानिवृत्त। सम्प्रति साहित्यिक अध्ययन एवं समाजसेवा मे संलग्न।

50. श्री मुरारी कुमार झा, पिता–स्व. शंकर झा, स्थायी पता–ग्राम–मलहद, सुपौल। वर्तमान पता–किसन इन्टरप्राइजेज, गजना चौक, वार्ड नं.-2, सुपौल-852131। विशिष्टता–बैरिया पंचायतक अन्तर्गत विगत दू वर्ष सँ पैक्स अध्यक्षक रूपें सुव्यवस्थित कार्य संपादन। सामाजिक समस्याक समाधानक प्रति तत्पर। वर्ष 2007 सँ भवन निर्माण सामग्री व्यवसायक संपादन। राजनीति मे सक्रिय सहभागिता। मोबाइल-6202639080, 9472526131।

51. श्री करुणा कान्त झा, अधिवक्ता। पिता–श्री सच्चिदानन्द झा, से.नि., माध्यमिक शिक्षक, स्थायी पता–ग्राम-मलहद, सुपौल-852131। वर्तमान पता–लोहिया नगर, वार्ड नं. 9, सुपौल। योग्यता–बी.ए. (अर्थशास्त्र प्रतिष्ठा), पटना वि.वि.। एल.एल. बी., कैम्पस लॉ सेंटर, दिल्ली वि.वि.। वृत्ति–अधिवक्ता, सिविल कोर्ट, सुपौल एवं पटना उच्च न्यायालय। मोबाइल-8809620522।

52. श्री सतंजीव सुमन, पिता–स्व. ढलाय झा, स्थायी पता–ग्राम+पो.–अभुआड़, थरविट्टा, सुपौल। वर्तमान पता–सहायक शिक्षक, उ.मा.वि., अभुआढ़, सुपौल।

विशिष्टता-सुयोग्य एवं कुशल शिक्षक रूप मे बहुप्रशंसित। शिक्षक संगठन मे प्रखंड सँ जिला धरि पदधारकक रूप मे सक्रिय भूमिका। गीत-संगीत मे रुचि, कुशल नालवादक, मंच संचालक, उद्घोषक। साहित्य लेखन ओ पठन-पाठन। भारतीय मंडन प्रबंधन मे निरन्तर सहयोग।

53. श्रीमती सरिता मिश्र, पति–स्व. समरेन्द्र मिश्र, माता–स्व. महेश्वरी देवी, पिता–स्व. मधुरानंद झा। नैहर–ककरौर, मधुबनी। सासुर–कोइलख (मोतीपुर), मधुबनी। स्थायी पता–गौरी निवास, लहेरियासराय-846001, दरभंगा। वर्तमान पता–सर्वहित अपार्टमेंट, फ्लैट नं. 500, पाकेट-ए, सेक्टर-17, नई दिल्ली-110078। मोबाइल-7011799468। विशिष्टता–समाजशास्त्र सँ एम.ए. केलाक पश्चात पारिवारिक जीवनक निर्वहण ओ पठन-पाठन मे संलग्न। मैथिली मे यदा-कदा कथा लेखन। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि सँ जुड़ल क्षेत्रक भ्रमण। श्वसुर डा. भवनाथ मिश्र, प्रख्यात चिकित्सक एवं सासु स्व. गौरी मिश्र सामाजिक-साहित्यिक व्यक्तित्व।

54. डा. हरिवंश झा, से.नि. प्राचार्य, बी.एस.एस. कॉलेज, सुपौल। पिता–स्व. पं. काली कान्त झा। स्थायी पता–ग्राम–फुलडोभी, पो.–धनेठा, कटिहार। वर्तमान पता–काली कुटीर, वार्ड नं. 2, विद्यापुरी, सुपौल। मोबाइल-9470051712, 8709311481। विशिष्ट–पटना वि.वि. सँ एम.ए., 'मैथिली लोकगीतक समाजशास्त्रीय अध्ययन' विषय सँ वर्ष 1978 मे पी.एच-डी.। 2009सँ 2015 धरि युनिवरसिटी प्रोफेसर, पी.जी. सेंटर, सहरसाक विभागाध्यक्ष 2010 सँ 2015 धरि सीनेट सदस्य, बी.एन. एम.यू., मधेपुरा। हिनका निर्देशन मे अनेक शोधार्थी पी.एच-डी. कयलनि।

55. श्री दिवाकर झा, पिता–स्व. रामचन्द्र झा (भू.पू. मुखिया), ग्राम+पो.–मलाढ़, थरबिट्टा, सुपौल। विशिष्टता-अंतर स्नातक धरिक शिक्षाग्रहण क'वर्ष 2007 सँ पंचायत सचिवक पद पर कार्यरत। सम्प्रति निर्मलीक मझारी पंचायत मे कार्यरत। स्वभावें सौम्य, कर्तव्यनिष्ठ। पारिवारिक परम्परा कें उत्तरोत्तर अग्रसर करवा मे संलग्न।

56. श्री हिमांशु शेखर मिश्र, पिता–स्व. रमानन्द मिश्र, स्थायी पता–ग्राम+पो. –परसरमा, वाया–सुखपुर, सुपौल। सम्प्रति–प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, किसनपुर मे यूनिसेफक तहत प्रखंड समन्वयक पद पर कार्यरत। विशिष्टता–भूगोल सँ प्रतिष्ठाक संग एम.ए.। अपन सेवा कार्यक संगहि साहित्यक अध्ययन, क्रिकेट सँ लगाव। सामाजिक क्रियाकलाप मे सघन सहभागिता। मोबाइल-9431888686।

57. श्रीमती अनुप्रिया योग, पति–श्री चैतन्य योग। स्थायी पता–ग्राम+पो. सुखासन चकला, वार्ड नं. 4, मधेपुरा, बिहार। वर्तमान पता–बी. 78, सेकेण्ड फ्लोर, एडल डिवाइन कोर्ट, सेकटर-76, ग्रेटर फरीदाबाद, हरियाणा। विशिष्टता–हिंदी मे तीन टा कविता संग्रह प्रकाशित, मैथिली मे सेहो रचनाशील। अनेक भाषाक पोथी पर रेखांकन। रेखांकन-दुनियाक प्रतिष्ठित आ सुपरिचित नाम। पत्र-पत्रिकामे रेखांकनक माध्यमे विशिष्ट स्वीकृति। संपर्क-9871973888।

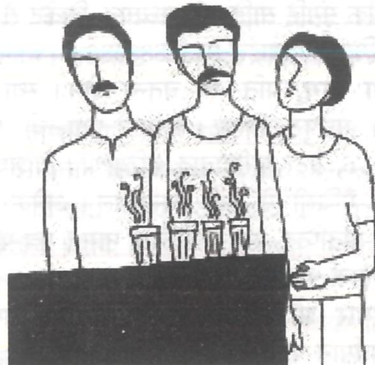
58. श्री उज्ज्वल कुमार झा, पिता–श्री राजेन्द्र झा, ग्राम + पो.–बिजई, वाया–झंझारपुर, मधुबनी। वर्तमान पता–आवास सं. 93, सेक्टर-8, आर.के. पुरम, नई

दिल्ली-2। विशिष्टता–उच्च शिक्षा प्राप्त क' सम्प्रति स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकारक अन्तर्गत वरिष्ठ प्रशासनिक सहायकक पद पर पदस्थापित। स्वभाव ओ व्यवहारमे सौम्य, निर्मल। मैथिलीक सेवा मे समर्पित व्यक्तित्व। मोबाइल-9278888436, 9431693352।

59. श्रीमती भावना मिश्र, पति–श्री प्रमोद मिश्र। पिता–स्व. विनोदानन्द झा, नैहर–कर्णपुर, सुपौल। वर्तमान पता–सी./65 डी., गंगोत्री एन्क्लेव, अलकनंदा, नई दिल्ली-19। शिक्षा–ग्रेजुएट, इनर इंजीनियरिंग (कोर्स–एन.एल.पी.) संगहि संगीत शिक्षाक पाँचम वर्षमे छथि। विशिष्टता–कतिपय पत्र-पत्रिका मे विभिन्न प्रकारक रचना प्रकाशित। किछु संकलन ओ पत्र-पत्रिकाक संपादन। अनेक गीतक रचना, भिन्न-भिन्न गायक-गायिकाक स्वर मे कैसेट उपलब्ध।

60. डा. कृष्णकुमार झा, वरिष्ठ पत्रकार, सेवानिवृत्त हिंदी विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर आवासीय पता–त्रिलोकीनाथ मंदिरक उत्तर, वार्ड न. 12, राजकुमारगंज, दरभंगा-846004, बिहार। एम.एल.एस.एम. कालेज, दरभंगा, ल.ना.मि.वि., दरभंगा-846004। मोबाइल-8298966754, 9430942224।

61. श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र, पिता–स्व सूर्यनारायण मिश्र, माता–स्व. दयाकाशी देवी। पैतृक गाम–अड़ेर डीह, मातृक-सिन्धिया ड्योढ़ी। भारत सरकारक उपसचिव पदसँ सेवानिवृत्त। शिक्षा–सी.एम. कालेज, दरभंगा सँ बी.एस.सी., भौतिक विज्ञान मे प्रतिष्ठा, दिल्ली वि.वि. सँ विधि स्नातक। मैथिली मे फसाद (कथा संग्रह), नमस्तस्यै, महाराज, लजकोटर, सीमाक ओहि पार, मातृभूमि, स्वप्नलोक, शंखनाद, ढहैत देबाल, हम आबि रहल छी, प्रलयक परात (उपन्यास), प्रसंगवश, विविध प्रसंग, समाधान (निबंध संग्रह), इएह थिक जीवन, पाथेय (संस्मरण), स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग), भोर सँ साँझ धरि (आत्मकथा) प्रकाशित। अंग्रेजी आ हिंदी मे सेहो किताब प्रकाशित। मोबाइल 9968502767। सम्पर्क–हाउस नं. सी. 42, एन एस जी एस ए एस लिमिटेड, ब्लैक कैट एन्क्लेव, पॉकेट नं. 6, विल्डर्स एरिया, ग्रेटर नोएडा, जिला–गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश-201315



वित्तीय सहभागी (अंक 16, नवांक 4)
(प्रति अंकीय सहभागिता)
सहयोग राशि–500/- टाका (पाँच सय टाका)

1. श्री संतोष कुमार झा पिता–स्व. कामानंद झा। स्थायी पता–बलुआ बाजार, जिला–सुपौल, बिहार। वर्तमान पता–सहायक माध्यमिक शिक्षक, गाँधी उच्च विद्यालय, बरमोतरा, पो.–हुलास, वायाराधोपुर, सुपौल। मो. 9931455629

2. श्री नवकान्त झा, पिता–स्व. गुणानन्द झा, स्थायी पता–ग्राम-ड्योढ़, पो. -घोघरडीहा, जिला-मधुबनी–847402 (बिहार)। मो.–9973017237

3. श्री योगानन्द हीरा, पिता–स्व. रासबिहारी दास 'सरस', स्थायी पता–'सरस' कुटीर, ग्राम–डुमरी, पो.–अचलपुर, भाया–गणपतगंज, जिला–सुपौल (बिहार)। मो. –9570596686 एवं 7667834359

4. श्री मनीन्द्र मोहन दास 'मणि' पिता–स्व. रासबिहारी दास 'सरस', स्थायी पता–'सरस' कुटीर, ग्राम–डुमरी, पो.–अचलपुर, भाया–गणपतगंज, जिला–सुपौल (बिहार)। मो.–9973879034

5. श्रीमती अजिता कुमारी, पति–श्री कुमार अंजन, काली कुटीर, सुपौल (बिहार), वर्तमान पता–सहायक शिक्षिका, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, लालपुर, पो.–लालपुर, भाया–गणपतगंज (सुपौल), मो.–7549820111 एवं 7061089542

6. श्री युगेश्वर ठाकुर, पिता–स्व. अभिनन्दन ठाकुर, सुदामा कुंज, ग्राम+पोस्ट–मलाढ़, भाया–थरबिट्टा–852138, सुपौल (बिहार)। मो.–8298290271

7. श्री सुरेन्द्र प्रसाद यादव, पिता–स्व. सत्यदेव यादव, ग्राम–बेलही, पो.–थरबिट्टा, जिला–सुपौल–852138(बिहार), प्रोप्राइटर, जय शिव मेडिकल हॉल, स्टेशन रोड, किसनपुर, सुपौल (बिहार)। मो.–7541934462

8. श्री शशिकान्त झा उर्फ दिलीप झा, पिता–श्री लीलाकान्त झा, अंजू जेनरल स्टोर, ग्राम+पोस्ट–मलाढ़, भाया–थरबिट्टा–852138, सुपौल (बिहार)। मो.–9570824678

9. श्री पवन कुमार सिंह, पिता–स्व. तारिणी प्रसाद सिंह, ग्राम–बिसनपुर, पो. –लाउढ़, जिला–सुपौल–852131 (बिहार)। वर्त्तमान पता–लिपिक, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, किशनपुर, सुपौल–852131 (बिहार), मो.–9431413140

10. श्री उत्तमलाल मेहता, सेवानिवृत्त अचिकित्सा पदाधिकारी, पिता–स्व. प्रेमलाल मेहता, ग्राम–रामनगर महेश, पो.–रामनगर बाजार, भाया–कुमारखंड, जिला–मधेपुरा (बिहार), मो.–9572612406

11. श्री दुःखमोचन झा, पिता–स्व. जीवछ झा, ग्राम+पोस्ट–साँगी (ब्रह्मपुर), भाया–घोघरडीहा, मधुबनी–847402 (बिहार)। वर्त्तमान पता–मिथिलांचल कॉलोनी, हसनपुरा, बेऊर, पटना। मो.–9431877203

12. श्री अरुण कुमार झा, पिता–स्व. दिगम्बर झा, स्थायी पता–ग्राम+पोस्ट–लालपुर, वाया–छातापुर, सुपौल (बिहार), वर्त्तमान पता–द्वारा प्रो. ज्वाला प्रसाद सिंह, प्रोफेसर कॉलोनी, मोहनपुर पम्प हाउस, पटना। मो.–9430887783

13. श्री धीरेन्द्र कुमार झा 'धीरू', पिता–स्व. युगल किशोर झा, स्थायी पता–ग्राम+पोस्ट–फत्तेहपुर, भाया–नरपतगंज, जिला–अररिया। वर्तमान पता–सरस्वती प्रेस, सिसोदिया पैलेस, गोरखनाथ कम्पाउण्ड, पूर्वी बोरिंग केनाल रोड, पटना–800001, मो–8002347276, 9304622963।

14. श्री राकेश चौधरी, पिता–स्व. काशीकान्त चौधरी, ग्राम+पोस्ट–महिषी, जिला–सहरसा–852216, वर्त्तमान पता–शाखा डाकपाल (बी.पी.एम.) मैना ग्राम (महिषी)। मो.–9661062046

15. श्रीमती बच्ची मिश्रा, सेवानिवृत्त माध्यमिक शिक्षिका, पति–श्री जयानन्द मिश्र, एकान्त निवास, राजबिराज, सप्तरी (नेपाल)।

16. श्री गजाधर ठाकुर, पिता–स्व. श्यामनारायण ठाकुर, ग्राम+पोस्ट–हिसार, बेनीपट्टी (मधुबनी), वर्त्तमान पता–द्वारा श्री विजयनाथ झा, शांति कुंज, विद्यापुरी, सुपौल। मो.–9470742132

17. श्री पशुपति नाथ झा, पी.जी.टी., डी.ए.वी. कपिलदेव, राँची। पिता–स्व. राम कृष्ण झा 'किसुन' स्थायी पता–किसुन कुटीर, सुपौल–852131। वर्त्तमान पता–एल. आइ.जी.आर./124, हरमू हाउसिंग कालोनी, रांची–834002। मो.–7909051442

18. श्री रमण कुमार सिंह, पिता–स्व. तारिणी प्रसाद सिंह, ग्राम–विसनपुर, पोस्ट–लाउढ़, भाया–सुपौल (बिहार)। वर्त्तमान पता–डिप्टी न्यूज एडिटर, अमर उजाला, सी–21, सेक्टर 59, नोएडा (उ.प्र.), मो. 9711261789

19. श्री मनोज कुमार झा, पिता–स्व. सुधीर झा, ग्राम+पोस्ट–मलाढ़, भाया–थरबिट्टा, जिला–सुपौल (बिहार), मो. 9408791627 एवं 9560974625। वर्त्तमान पता–क्वा. नं. 320, केन्द्रीय राजस्व कालोनी, रेस कोर्स सर्कल, बड़ोदर–39007 (गुजरात)।

20. डा. अशोकानन्द मिश्र (M.D., General Medicine), पिता–स्व. डा. विजयानन्द मिश्र, माता–स्व. महालक्ष्मी देवी, पेशा–Senior Consultant Physician, स्थायी पता–मिश्रानन्द भवन, तिलाठी–1 सप्तरी (नेपाल), मो. 0097731520280

21. श्री भुवनेश्वर प्रसाद, पिता–स्व. फनीलाल यादव, ग्राम+पोस्ट–नरही (शिवपुरी) भाया–थरबिट्टा–852138, जिला–सुपौल, वर्त्तमान पता–प्रधानाध्यापक उत्क्रमित मध्य विद्यालय, थरिया, पोस्ट–मलाढ़, प्रखण्ड–किसनपुर (सुपौल)। मो.–9006366709

22. श्री कन्हैया झा (बड़कू), पिता–स्व. निर्भय नारायण झा, ग्राम+पोस्ट–अभुआड़, भाया–थरबिट्टा, सुपौल–852138, वर्त्तमान पता–बम्बै क्लॉथ स्टोर, अभुआड़ रोड, कुमरगंज बाजार, किसनपुर, सुपौल। मो.–9939266185

23. श्रीमती ललिता पाठक, पति–श्री मनोज कुमार पाठक, ग्राम–चैनपुर, पोस्ट–बलुआ बाजार (सुपौल), वर्त्तमान पता–फ्लैट नं. 304, लावण्या होम्स, बजरंग विहार, भुवनेश्वर–751024 (उड़ीसा)। मो.–7906627715 एवं 9927067333

24. श्री वैद्यनाथ झा (सुशील), पिता–स्व. रामकृष्ण झा, किसुन कुटीर, सुपौल, वर्त्तमान पता–1/C वैष्णवी इन्क्लेव, अमेठिया नगर, नामकुम, राँची (झारखण्ड)। मो. 9835594772

25. श्री तारकेश्वर ठाकुर, पिता–स्व. गणपति ठाकुर, ग्राम+पोस्ट–यजुआर, टोला–लक्ष्मीपुर, जिला–मुजफ्फरपुर–843360, वर्त्तमान पता–महावीर वर्मा ब्लॉक, ए–3, फ्लैट नं.–टी.–29, कन्नामंगला, ग्राम–होसाकोटे ह्वाइट फील्ड रोड, बंगलोर–560067, मो.–9538919601

26. श्री प्रदीप जैन, पिता–स्व. राजचन्द जैन, सिंघी वस्त्रालय, वार्ड नं.–10, स्टेशन रोड, सुपौल–852131, मो.–9470663996

27. श्री विजय कुमार झा, पिता–स्व. केदार नाथ झा, ग्राम+पोस्ट–मलाढ़, भाया–थरबिट्टा, सुपौल। वर्त्तमान पता–भारतीय भवन, तृतीय तल्ला, 219, पी.डी. मेल्लो रोड, मुम्बई–1, मो.–9892190250 एवं 9507123774

28. श्री प्रमोद कुमार मिश्र, प्राथमिक शिक्षक, पिता–स्व. चन्द्रकान्त मिश्र, ग्राम+पोस्ट–महिषी (सहरसा), वर्त्तमान–सहायक शिक्षक, म.वि. झिटकी, कन्दाहा, सहरसा। मो. 9204563208

29. श्री राम नारायण झा, सेवानिवृत्त प्रधान लिपिक (लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग), पिता–स्व. भागवत झा, ग्राम+पोस्ट–श्रीपुर, भाया–करजाइन बाजार, सुपौल, वर्त्तमान पता–न्यू प्रोफेसर कॉलोनी, बंगाली टोला, वार्ड नं.–24, कोढ़ैली रोड, फॉरबिसगंज, अररिया। मो. 9546742334

30. प्रो. विश्वनाथ, अक्षर, शुभंकरपुर, दरभंगा–846004। मैथिलीमे 'अक्षर-अक्षर अमृत' आ 'युगान्तर' चर्चित-बहुप्रशंसित कृति। मैथिलीमे एहन आत्मीय, मनोबेधक साक्षात्कारक पोथी विरल अछि। वरिष्ठ साहित्यकार। चर्चित पत्रिका 'रचना'क संपादक। मो. 9334931266

31. रोमिशा, पिता–श्री वैद्यनाथ झा। पति–श्री विकास कुमार झा, स्थायी पता–ग्राम-बलहा, वाया मुखपुर, सुपौल-852130, बिहार। वर्तमान पता–लोटस जिंग, फ्लैट नं. 1705, टावर-4, सेक्टर-168, नोएडा एक्सप्रेसवे, उ.प्र., पिन-201305, मोबाइल-9810882109

32. श्री कामाख्या नारायण झा, पिता–स्व. चिरंजीव झा, ग्राम +पो. मलाढ़-वाया–थरबिट्टा-852138, सुपौल, बिहार। मोबाइल-9570521158

33. डा. गंगानन्द झा, से.नि. जिला पशुपालन पदाधिकारी। पिता–स्व. पं. कुमुदानंद झा, ग्राम + पो. गोविन्दपुर, वाया-प्रतापगंज, सुपौल, बिहार। मोबाइल 9430644525।

34. श्री शंभूनाथ झा, पिता–स्व. शांतिनाथ झा, ग्राम + पो.-शिवीपट्टी, मधुबनी। वर्तमान पता–हाउस नं. 23-22/टी-803, आर.आर. रेजीडेंसी, बिहाइंड ज्योति सिनेमा, ज्योथी नगर, रामचन्द्रपुरम, हैदराबाद-502032। मोबाइल 9440790927।

35. श्री रामलखन चौधरी (लखनजी), पिता–स्व. राजाराम चौधरी, माता–स्व. गुलाब देवी, ग्राम +पो.–थरबिट्टा, सुपौल। वर्तमान पता–दीपक ट्रेडर्स, किसनपुर, सुपौल। मोबाइल-6299796457, 8651017833।

36. डा. नंदकिशोर चौधरी, एसोसिएट प्रोफेसर, पिता–स्व. पं. अनन्त चौधरी, श्री उग्रतारा भारती मंडन संस्कृत कालेज, महिसी, सहरसा। मोबाइल 8340247335।

37. श्री संजय कुमार झा, पिता–स्व. जयनारायण झा, स्थायी पता–ग्राम +पो. –महिसी, सहरसा, सम्प्रति प्र.अ., हरिजन मध्य विद्यालय, महिसी, सहरसा। मोबाइल-9534779812।

38. श्री प्रत्यूष रंजन, पिता–स्व. डॉ. फुलेश्वर मिश्र, ग्राम +पो.–महिसी, सहरसा। सम्प्रति पटना विश्वविद्यालय मे प्रधान लिपिक केर पद पर कार्यरत। मोबाइल 9431411349।

39. डा. नरेश नारायण सिंह, पिता–स्व. हरिनारायण सिंह, स्थायी पता–ग्राम + पो. - महिसी, सहरसा। डी.एस. कालेज, मुजफ्फरपुर सँ प्रधानाचार्य पदसँ सेवानिवृत। मोबाइल 9031707303।

40. श्री मनोज कुमार झा, पिता–श्री राजेन्द्र झा, स्थायी पता–महिसी, सहरसा। सम्प्रति योजना एवं विकास विभाग, बिहार सरकारक अन्तर्गत पटना सचिवालय मे अवर सांख्यिकी पदाधिकारीक पद पर कार्यरत। मोबाइल 8936848814।

41. श्री नंद कुमार चौधरी (नंदजी), पिता–स्व. स्वतंत्र चौधरी, महिसी, सहरसा। एन.टी.पी.सी. सिंगरौली सँ सेवानिवृत पदाधिकारी। मोबाइल 8815307698।

42. श्री शैलेन्द्र कुमार झा 'अमोल', पिता–स्व. महेश झा, मलाढ़, वाया–थरबिट्टा, सुपौल संप्रति भारतीय जीवन बीमा निगम, सुपौलक क्षेत्रीय प्रबंधक क्लबक सदस्य (कोड 144/52 ए, मोबाइल 6205721788, 9430999247।

43. श्री विनोदानन्द झा, पिता–स्व. बिलट झा, ग्राम +पो. श्रीपुर, वार्ड न. 9, वाया–करजाइन बाजार, सुपौल। मोबाइ 8603731395।

44. श्री आशुतोष झा 'सृजन', डी.सी.एस. लंदन (वायस प्रेसिडेंट) पिता–श्री विनोदानन्द झा, ग्राम +पो.–श्रीपुर, वाया–करजाइन बाजार, सुपौल, बिहार। वर्तमान पता–मिजहो बैंक, पेनिन्सुला बिजनेस पार्क, ए-17वीं मंजिल, लोअर परेल-400013, मुम्बई, महाराष्ट्र। मोबाइल-9594197691।

45. श्री भारत भूषण, पिता–श्री यदुनन्दन मेहता, ग्राम + पो. भगवानपुर, भीमनगर, सुपौल। मोबाइल 9546950527।

■■■

क्षेत्रीय प्रतिनिधि

श्री देवेंद्र मिश्र, राजविराज, नेपाल	मो. 7798628501
श्री दिलीप कुमार झा, मधुबनी	मो. 9430989449
डॉ. योगानंद झा, लहेरियासराय	मो. 9334493330
श्री हीरेन्द्र कुमार झा	मो. 8169003125
श्री चंद्रेश, दरभंगा	मो. 8969129602
श्री अजित कुमार झा, मुजफ्फरपुर	मो. 9472834926
श्री कौशल कुमार, दरभंगा	मो. 9210369369
श्री चंद्रमोहन कर्ण, हैदराबाद	मो. 9491306010
श्री अमरनाथ झा, राँची	मो. 9471328208
श्री कृष्ण मोहन झा, राँची	मो. 9835903711
श्री विनोद कुमार ठाकुर, पूर्णिया	मो. 91350339470
श्री अरविंद ठाकुर, फारबिसगंज	मो. 9771842756
श्री रंधीर कुमार झा, पूर्णिया	मो. 9473198255
डॉ. महेंद्र, सहरसा	मो. 9431657543
श्री शरदिंदु चौधरी, पटना	मो. 9334102305
श्री संजीव कुमार झा, बड़ोदरा	मो. 9586836963
श्री तारकेश्वर ठाकुर, बंगलोर	मो. 9538919601
श्री शिवकांत मिश्र (अध्यक्ष) विद्यापति समिति, धनबाद	मो. 9431313687
श्री उदयचंद्र लाल दास, आसी, दरभंगा	मो. 9534176653
श्री प्रमोद कुमार मिश्र, महिषी, सहरसा	मो. 9204563208
श्री अभय शंकर झा, रानीगंज	मो. 7250612553
श्री उज्ज्वल कुमार झा, दिल्ली	मो. 9278888436

तारानंद झा तरुण केर शीघ्र प्रकाश्य पोथी

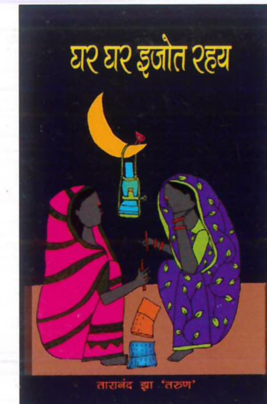
1. घर-घर इजोत रहय (गजल संग्रह)
2. आंगन-आंगन तुलसी चौरा (गीत संग्रह)
3. प्रार्थनाक स्वर (भजन संग्रह)
4. झात बौआ झात (बाल गीत संग्रह)

प्रकाशक : कामाख्या झिंगुर साहित्य कला परिषद
मलाढ़, थरबिट्टा, सुपौल

किसुन संकल्प लोक, सुपौल सं शीघ्र प्रकाश्य पोथी

1. किसुन समग्र-1—रामकृष्ण झा किसुन—संपादक—केदार कानन, रमण कुमार सिंह
2. किसुन समग्र-2—रामकृष्ण झा किसुन—संपादक—केदार कानन, रमण कुमार सिंह
3. मैथिलीक नव कविता—संयोजन—केदार कानन, रमण कुमार सिंह
4. प्रियवर (किसुन जीक पत्र संग्रह)—संपादक—केदार कानन, रमण कुमार सिंह
5. समय के पार (संस्मरण)—केदार कानन
6. महुअर बुज्झइ (आलोचना)—रमण कुमार सिंह
7. साहित्य-समाज आ विचार (वैचारिक निबंधक संग्रह)—रमण कुमार सिंह
8. प्रेम मे प्रतीक्षा (ललित निबंध संग्रह)—रमण कुमार सिंह

प्रकाशक : किसुन संकल्प लोक सुपौल







मान्यवर,

विश्वम्भर फाउण्डेशन एक टा चैरिटेबल ट्रस्ट अछि, जे सामाजिक, सांस्कृतिक आओर भाषा साहित्यक विकास लेल काज करैत अछि। मानव-सेवा सभसँ पैघ धर्म थिक, जकरा धेयानमे राखि क' फाउण्डेशन समाजक अनेक क्षेत्र मे काज करैत रहल अछि। एही उद्देश्यक संग आगुओ अपने लोकनिक सहयोगसँ फाउण्डेशन काज करत। शिक्षा आ भाषा साहित्यक संवर्धनक काज हएत।

प्राथमिकता

शिक्षा : समाजक ओहन वर्ग धरि फाउण्डेशन शिक्षाक दीप जरएबाक यत्न क' रहल अछि, जे अखन धरि अछूत रहल अछि, एहि परिप्रेक्ष्यमे फाउण्डेशन स्कूली शिक्षासँ ल' क' वैकल्पिक शिक्षा, कौशल विकास आ व्यावसायिक शिक्षाक लेल काज करत।

भाषा एवं साहित्यक संवर्द्धन : फाउण्डेशनक प्राथमिकताक सूचीमे भाषा आ साहित्यक संवर्द्धन केनाइ अछि, जकरा अन्तर्गत मैथिली सहित विभिन्न भाषा सभमे पत्र-पत्रिका आ पुस्तकक प्रकाशन कयल जाएत। एकर अतिरिक्त समय-समय पर साहित्यिक संगोष्ठीक सेहो आयोजन क' कए भाषा आओर साहित्यक विकासक काज करत। फाउण्डेशन डक्यूमेंटेशन काज सेहो करत, जकरा अन्तर्गत ऐतिहासिक स्थान, पर्यटन-क्षेत्र, खास व्यक्तित्वक जीवन पर आधारित डक्यूमेंटरी फिल्म बनाओल जाएत, जाहिसँ समाजकें मात्र लाभे नहि हेतैक, अपितु पर्यटनकें सेहो प्रोत्साहन भेटतैक।

स्वास्थ्य सेवा : सभकें स्वास्थ्यक सुविधा भेटैक, ई एकटा चुनौतीसँ भरल काज अछि। खास क' क' दूरदराज क्षेत्रक लेल, जतए अखन धरि एम्बुलेंसक सुविधा लोक देखि नहि सकल अछि! फाउण्डेशन अइ दिस सेहो काज करत आ नइँ केवल ई सुविधा लोककें उपलब्ध कराओत, वरन् समय-समय पर मेडिकल कैम्प आओर निःशुल्क दबाइयो द' क' लोककें चिकित्साक सुविधा उपलब्ध करैबाक काज करत।

सम्मान : फाउण्डेशन शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल, व्यवसाय, कला एवं साहित्यक क्षेत्रमे उल्लेखनीय काज केनिहार व्यक्तिकें सम्मानित करबाक काज करत।

जेना कि अपनेलोकनि जनैत छी जे विश्वम्भर मैथिली साहित्य सम्मान आरंभ कयल जा चुकल अछि, जकरा अन्तर्गत मैथिलीक जानल-मानल लेखिका श्रीमती लिली रे, पंडित श्री गोविन्द झा आ ख्यात कवि श्री कीत्तिनारायण मिश्र कें फाउण्डेशन मिथिला मंचक माध्यमसँ सम्मानित करैत एक लाख एगारह हजार टाकाक राशि प्रदान क' चुकल अछि। एहि बेर प्रसिद्ध कवि-संपादक डा. भीमनाथ झा कें एहि पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गेल अछि।

त' आउ हमर एहि अभियानमे अपनेलोकनि आगू आबि, हाथ बँटाक', निःस्वार्थ भावसँ समाज सेवाक परम धर्मक परिकल्पनाकें साकार करू, जाहिसँ स्वस्थ समाजक निर्माण संभव भ' सकय।

निवेदक

विश्वम्भर फाउण्डेशन परिवार
पता : 3ए, कुंज बिहार, अरगोड़ा, राँची (झारखण्ड), मोबाइल : 9471711557
ई-मेल : bishwambherfoundation7591@gmail.com